हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु ॥

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

श्री शंकर: शं करोतु।

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते ॥

शोध निबन्ध विशेषांक

अखिल भारतोपयोगी

विक्रम संवत् २०७३, शक संवत् १९३८
सन् २०१६-२०१७, जय हिन्द संवत् ६९-७०

पंचांग-प्रवर्तक:

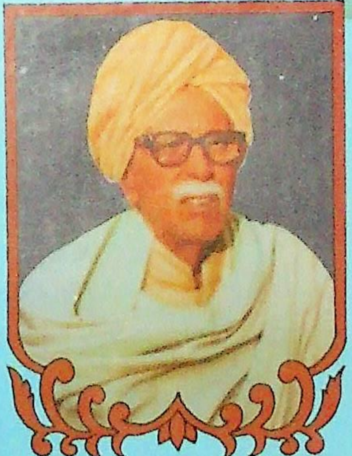

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शुक्र

मंत्री बुध

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व. पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण-रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व० डॉ० शक्तिधर शर्मा M.Sc, Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,

गौरवशाली ४९ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित संवत् १९८४

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स

टाइटल पर होलोग्राम लगा हुआ देखकर ही पंचांग खरीदें।

मूल्य
१५.००

सर्वाधिकार– 'M/S मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली' द्वारा सुरक्षित हैं।

इस पञ्चाङ्ग के पाठकों के लिए आवश्यक निर्देशन

(i) इस पञ्चाङ्ग का निर्माण चण्डीगढ़ (U.T.) के रेखांश पू. 76° 52′, अक्षांश उ. 30° 44′ के आधार पर किया गया है। अतः विशेष निर्देश न किया गया हो तो सूर्योदय, सूर्यास्त से हमारा अभिप्राय यहां सर्वत्र इसी स्थल के सूर्योदय, सूर्यास्त से रहता है।

(ii) यहां सूर्योदय, सूर्यास्तकाल किरणवक्रीभवन संस्काररहित (Free from Refraction) है, जो सूर्यबिम्बकेन्द्र का क्रमशः पूर्वापरक्षितिज से वास्तविक सम्पर्कक्षण है। सूर्य के इस उदयास्तकाल को **ज्योतिषशास्त्रीय उदयास्तकाल** कहा जाता है। लग्नादि–साधनार्थ इष्टकालादि–ज्ञान के लिए इसी को प्रयोग में लाया जाता है। इन्हें दृश्य (लोकव्यवहारोपयोगी) बनाने के लिए इनमें (उदय एवं अस्तकाल में) लगभग 3½ मि. क्रमशः घटाने या जोड़ने होंगे।

(iii) भारतीय ज्योतिषानुसार यहां वार की प्रवृत्ति स्थानीय सूर्योदयकाल से मानी गई है, अतः यह जान लेना चाहिए कि– यहां रवि, चन्द्र आदि वार स्थानीय सूर्योदय से प्रारम्भ होकर परवर्ती सूर्योदय पर समाप्त होने वाले वार हैं। भारतीय ज्योतिषशास्त्र एवं धर्मशास्त्र में इसी वार का प्रयोग होता है। **ध्यान रहे**– सामान्य लोकव्यवहार में सर्वत्र प्रयोग में आने वाला वार, जो पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी है, तो अंग्रेज़ी (Gregorian) तारीख के साथ रात्रि के 24घं 00मि. (क्षेत्रीय स्टैं.टा.) पर ही बदल जाता है।

(iv) पंचांगगत सभी गणना ऋषियों, आचार्यों द्वारा अनुमोदित दृक्तुल्यपद्धति से की गई है।

(v) सर्वत्र निरयणगणना है। जहां कहीं सायनगणना का प्रयोग है, वहां इसका निर्देश कर दिया गया है। चित्रापक्षीय स्पष्ट (धूननसंस्कृत) अयनांशों को प्रामाणिक माना गया है।

(vi) यहां प्रयुक्त भा.स्टैं.टा. (I.S.T.) 82° 30′ पूर्व रेखांशीय स्थल का स्थानीय मध्यमकाल (L.M.T.) है।

(vii) यहां दी गई दैनिक लग्नसारणियां निरयण लग्नों का समाप्तिकाल बतलाती हैं।

(viii) यहां प्राचीन परम्परानुयायी दैवज्ञों के लिए चैत्र शुक्लादि 24 पक्षों वाला तिथ्यादि पंचांग घटी–पलों में तथा सामान्य जनों के व्यवहारार्थ नवीन प्रणाली वाला **'जनवरी, फरवरी'** आदि मासानुसारी तिथ्यादि पंचांग घंटा–मिनटों (भा.स्टैं.टा.) में दिया गया है। घटी–पलात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति, ग्रहराशि–नक्षत्र प्रवेश आदि सभी काल घटी–पलों में दिए गए हैं, जो चण्डीगढ़ के सूर्योदय से व्यतीत घटी–पलात्मक काल बतलाते हैं। **किञ्च**– घण्टा–मिनटात्मक वाले पंचांगभाग में तिथ्यादि समाप्ति आदि सभी काल भा.स्टैं.टा. में हैं। यहां यह भी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि– घण्टा–मिनटात्मक, जो काल रात्रि के 24घं–00मि. के बाद पड़ता है, उसे पंचांग में 24 घं. जोड़कर उसी भारतीय ज्योतिषानुसारी वार में लिखा गया है, जो परवर्ती सूर्योदय तक रहता है। इसलिए ऐसे स्थलों पर दिए गए समय के घण्टा–मिनटों में से 24 घं. घटाकर शेष घं. मि. को सामान्य व्यवहार में प्रचलित (पाश्चात्त्य ज्योतिषानुसारी) परवर्ती वार का काल समझना चाहिए। **जैसे**– मान लीजिए– पंचांगानुसार एकादशी तिथि 10 मई शुक्रवार को 26 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त हो रही है। इसका अभिप्राय है– यह तिथि प्रचलित व्यवहारानुसारी 11 मई, शनिवार को रात्रि के 2 घं. 35 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी।

(ix) घटी–पलात्मक पंचांगभाग वाले (24 पक्षों वाले) पृष्ठों पर नीचे की ओर बाईं और दाईं ओर लगभग साप्ताहिक (अष्टमी, अमा, पूर्णिमा के आसन्न दिनों के) प्रातः 5 घं. 30 मि. भा.स्टैं.टा. कालिक सूर्यादि स्पष्टग्रह दिए गए हैं। इनके नीचे इनकी कलादि दैनिक गति, इसके नीचे मा. (= मार्गी), व.(= वक्री), इसके नीचे उ. (= उदित), अ.(= अस्त) तथा सबसे नीचे इन ग्रहों के तात्कालिक नक्षत्रचरण निर्दिष्ट हैं।

(x) घटी–पलात्मक पंचांगभाग में करण केवल सूर्योदयव्यापी ही दिए गए हैं। यहां क्षीण तिथि–नक्षत्र–योगों के समाप्तिकाल ही दिए हैं, प्राचीन– पंचांग प्रणाली की तरह इनके पूर्ण भोगकाल नहीं– **यह ध्यान रहे।**

(xi) जहां जिस तिथि–नक्षत्र व योग के आगे घटी–पलात्मक में 60 घ. 00 प. और घण्टा–मिनटात्मक में ––(डैश) लिखा गया है, उसकी वहां वृद्धि समझनी चाहिए और उसका घटी–पलात्मक तथा घण्टा–मिनटात्मक समाप्तिकाल परवर्ती वार में देखिए।

(xii) यहां दिए गए ग्रहों के भोगांश तथा शर भूकैन्द्रिक (Geo-centric) हैं।

इस पञ्चांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द

अ.	–अस्त।
अं	–अंश।
उ.	–उदित, उत्तर।
क.	–कला।
कृ.	–कृष्णपक्ष, कृत्तिका(नक्षत्र)।
क्रां.सा.	–क्रान्तिसाम्य (महापात)।
गोधू.	–गोधूलि (लग्न)।
ति.	–तिथि।
द.	–दक्षिण।
दा.	–दानपूजन।
दि.	–दिन।
दि.ल.	–दिन का लग्न।
प्रा.	–प्रारम्भ।
भ.	–भद्रा।
मा.	–मार्गी।
मि.	–मिनट।
रा.	–राशि।
ल.	–लग्न।
व.	–वक्री।
वा.	–वार।
वि.	–विकला।
वै.	–वैष्णवों के लिए।
स.	–व्रत सबके लिए।
शु.	–शुक्लपक्ष, शुक्रवार, –शुक्र (ग्रह)।
सं.	–संक्रान्ति, संवत्।
सां.का.	–साम्पातिक काल।
स्मा.	–स्मार्तों के लिए।

इस पंचांग की तिथ्यादि, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरण प्रवेश, उदयास्त, लोप–दर्शन तथा ग्रहण आदि की गणित "प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A. अभिजित् प्रकाशन, 59/6, P.O पंचकूला(हरियाणा), Pin-134 109 के निर्देशन में सम्पादित Computer Program द्वारा की जाती है।

हृदन्तरज्ञान-तमो-वितान-निवारणं पण्डित-मण्डलीड्यम्। 卐 त्रिकालदर्शी प्रसरन्मयूखं 'मार्तण्ड पञ्चांग' मिदं चकास्तु॥

श्री शंकरः शं करोतु।

भारतीय एवं पाश्चात्त्य ज्योतिष के विषयों से अलंकृत

पंचांग-प्रवर्तकः

भीमाय व्योमरूपाय शब्दमात्राय ते नमः।
महादेवाय सोमाय अमृताय नमोऽस्तु ते॥

शोध निबन्ध विशेषांक

विक्रम संवत् २०७३, शक संवत् १९३८
सन् २०१६-२०१७, जय हिन्द संवत् ६९-७०

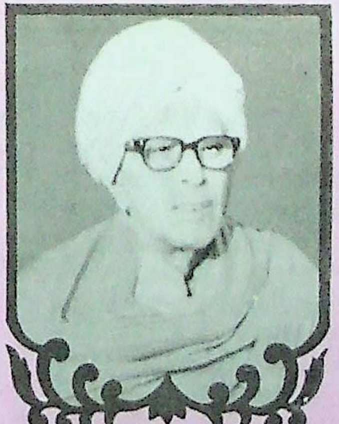

दैवज्ञरत्न राजज्योतिषी
स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगम्

राजा शुक्र

मंत्री बुध

पञ्चांगप्रवर्तक

अनेक ग्रंथों के यशस्वी लेखक स्व॰ पं॰ श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र ज्योतिषाचार्य

सम्पादक मण्डल

श्री प्रियव्रत शर्मा, M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), साहित्याचार्य, स्वर्ण रजत पदक प्राप्त

दृक्सिद्धान्तभास्कर स्व॰ डॉ॰ शक्तिधर शर्मा M.Sc., Ph.D. (Nuclear Physics), (U.S.A.), F.R.A.S. (LONDON), M.A., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य (बनारस), तीन स्वर्ण पदक प्राप्त

ज्योतिर्भूषण श्री इन्दुशेखर शर्मा शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य

गौरवशाली ८१ वाँ प्रकाशन वर्ष
स्थापित
संवत् १९८४

मूल्य
९५.००

प्रकाशक : रुचिका पब्लिकेशन्स
459, खारी बावली, दिल्ली -6 फोन : 23977110

सर्वाधिकार-श्री मार्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली द्वारा सुरक्षित

विशेष नोट : टाइटल पर होलोग्राम देखकर ही पंचांग खरीदें।

पूजा पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भण्डार
194, दरीबा कलां, दिल्ली 6 दूरभाष 23275344

संक्षिप्त विषयसूची (सं. 2073 वि.)

विषय	पृष्ठ
पंचांग में प्रयुक्त सांकेतिक शब्द, आवश्यक निर्देशन,	टा. पृ. 2
इनर टाइटल,	1
विषयसूची,	2
प्रमुख–प्रमुख एवं वर्गीकृत व्रतपर्व, सिक्खपर्व, अवकाश, मेले,	3–10
श्रीगणेश चतुर्थी /श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय,	11–12
संदिग्ध व्रतपर्व–व्यवस्था (सं. 2073 वि.),	13–17
गण्डमूल, पंचक,	18
अर्धकुम्भ हरिद्वार एवम् कुम्भ(सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन	19–22
ग्रहण–विवरण,	23–24
संवत् 2073 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–कुंडलियां	25–35
शनि–साढेसाती,	36–39
आकाशी कौंसिल (सं. 2073 वि.), जलवायु एवम् वर्षाविचार	40–59
व्यापारविमर्श (सं. 2073 वि.),	60–74
यंत्र, मंत्र, तंत्र –साधनाकाल एवं चमत्कार,	75–83
सौर परिवार का स्थावर एवम् जंगम् जगत् पर प्रभाव	84–93
प्रसूति लग्नविचार, नक्षत्र–राशिज्ञान चक्र आदि,	94–105
12 राशियों का मासिक फल (सं. 2073 वि.),	106–117
वर्षराजादि फल (सं. 2073 वि.),	118–126
तिथ्यादि 24 पक्ष (सं. 2073 वि.),	127–150
घण्टा–मिनटात्मक तिथ्यादि (मा.स्टैं.टा.),	151–165
चन्द्रमा का नक्षत्र–चरणप्रवेश (सं. 2073 वि.),	166–170

विषय	पृष्ठ
दैनिक ग्रहस्पष्ट, स्पष्टराहु,	171–185
चन्द्र–शृंगोन्नति,चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्त (सं. 2073 वि.),	186–188
यूरेनस आदि के भोगांश, भौमादि ग्रहों के क्रान्तिशर,	189–193
ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र–चरणचार, वक्र–मार्ग / उदय–अस्त,	194–199
अक्षांशादि सारणी,	200–209
दैनिक लग्नसारणी (चण्डीगढ़ के लिए),	210–215
प्रमुख–प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल,	216
प्राचीन पद्धति से लग्न एवं दशमसाधन आदि, सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नई सरल विधि, साम्पातिक काल कोष्ठक आदि,	217–226
विंशोत्तरी दशान्तर्दशा सारणी,	227
सूर्यसिद्धान्तीय एवं सूक्ष्म–शुद्ध वर्षप्रवेश सारणी, ग्रहशील चक्र,	228–230
आवश्यक मुहूर्त,	231–233
मेलापक–सारणी देखने की रीति और अष्टकूट–परिहार, मेलापक–सारणी,	234–241
लग्न–गण्डान्त, विवाहमुहूर्त्त में दस दोष, दिक्शूलादि विचार, यात्रा मुहूर्त्तादि,	242–255
शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2073 वि.),	256–260
सं. 2074 वि. में संभावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त	261
त्रिबलशुद्धि कोष्ठक (सं. 2073 वि.),	262–264
अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. 2073 वि.),	265–266
मुण्डन, उपनयन, देवप्रतिष्ठा आदि मुहूर्त,	267–269
सर्वार्थसिद्धि आदि योग,	270–272

इसवर्ष की नई विशेष सामग्री

विषय	पृष्ठ
अर्धकुम्भ हरिद्वार एवम् कुम्भ(सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन	19–22
सौर परिवार का स्थावर एवम् जंगम् जगत् पर प्रभाव	84–93

शोधनिबन्ध विशेषांक*

पूर्णिमा का महालय श्राद्ध किस दिन करें ?	275
सं. 2073 वि. में भारत में रसेश कहां, कौन–सा	277
जन्मकुण्डलियां कृत्रिम, लेकिन फलादेश यथार्थ	279
प्रणयविवाह का मुहूर्त्त	281
दशाप्रारम्भ का सूक्ष्म काल	283
किस ग्रह का रत्न धारण करें ?	289
समस्याएं और समाधान	294

*इस विशेषांक की विषयसूची के लिए पृष्ठ 273 भी देखें।

'अभिजित् प्रकाशन',

Kothi No. 59, Sector 6, Panchkula (HARYANA)

की अब तक प्रकाशित पुस्तकों के विज्ञापनपृष्ठ बारे निर्देश पृष्ठ 273 पर देखें।

अनन्त श्रीविभूषित श्रीकांचीकामकोटि- पीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य जी का शुभाशीर्वाद

(मुद्रा)

श्रीमत्परमहंस – परिव्राजकाचार्यवर्य्य – श्रीमच्छंकर– भगवत्पाद – प्रतिष्ठित – श्रीकांचीकामकोटिपीठाधिप – जगद्गुरु – श्रीमच्चन्द्रशेखरेन्द्र – सरस्वती – श्रीपादैः क्रियते नारायणस्मृतिः।

श्रीसदाशिव आप्टे- महोदयस्य शिष्यैः श्रीमुकुन्दवल्लभशर्मभिः प्रवर्तितम् अधुना श्रीप्रियव्रतशर्म- श्रीशक्तिधरशर्म- श्रीमदिन्दुशेखर- शास्त्रिभिः तन्त्रद्वारा शुद्ध- स्फुट- गणितरीत्या परिशोध्य' स्वीकृतया दृग्गणितपद्धत्या सम्पाद्यते। एतत्पञ्चांगं धर्मशास्त्रसम्मतैकमात्र- दृग्गणितपद्धत्यनुसारि व्रत–पर्वादि – धार्मिक – कृत्यानुष्ठाने धार्मिकैः प्रयोज्यम्–इति सम्मन्यामहे। एतस्य सम्पादकः डॉ.शक्तिधरशर्मा ज्योतिष- गणितादि–विषयेषु महत्प्रागल्भ्यं भजते, इति अस्माभिः सः सप्रसादं " दृक्सिद्धान्तभास्करः ' इति विरुदेन पूर्वमेव समाजितः। अधुना श्रीमार्त्तण्ड- पंचांगमेतत् स्वर्णजयन्ती–महोत्सवमनुभवत्, अशेषास्तिक- लोकोपकारकं सत् श्रीचन्द्रमौलीश – कृपया प्रचुरं प्रचारं प्राप्नुयादित्याशास्महे।

काञ्चीक्षेत्रम् नारायणस्मृतिः
'अनल' चैत्रामावस्या (सन् १९७६ ई.)

आगामी वर्ष (सं. 2074 वि.) में विशेष– अगले वर्ष (सं. 2074 वि.) के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में भी अनेक ज्ञानवर्धक विषय एवं महत्त्वपूर्ण विषयसामग्री देने का हमारा पूरा प्रयास रहेगा। – संपादक

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

(प्रो. प्रियव्रत शर्मा द्वारा रचित पुस्तक '' व्रत–पर्व विवेक'' पर आधारित)

जनवरी (सन् 2016 ई.)

इंग्लिश नववर्ष 2016 ई. प्रारम्भ	1 जन.	शु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	बु.
मकर–संक्रान्ति	14 जन.	गु.
पौषी पूर्णिमा	23 जन.	श.
माघस्नान प्रारम्भ	23 जन.	श.
संकष्ट(गणेश) चतुर्थी	27 जन.	बु.

फरवरी (सन् 2016 ई.)

मौनी अमावस	8 फर.	चं.
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	9 फर.	मं.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	11 फर.	गु.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	11 फर.	गु.
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	12 फर.	शु.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	12 फर.	शु.
रथसप्तमी /आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	14 फर.	र.
भीष्माष्टमी	15 फर.	चं.
गुप्त नवरात्र समाप्त	16 फर.	मं.
भीष्म द्वादशी	19 फर.	शु.
माघी पूर्णिमा	22 फर.	चं.
माघस्नान समाप्त	22 फर.	चं.

मार्च (सन् 2016 ई.)

श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च	चं.
खण्डग्रास सूर्यग्रहण (भारत में दृश्य)	9 मार्च	बु.
होलाष्टक प्रारम्भ	16 मार्च	बु.
महाविषुव दिन	20 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	20 मार्च	र.
होलिकादहन	23 मार्च	बु.
होलाष्टक समाप्त	23 मार्च	बु.
वसन्तोत्सव	24 मार्च	गु.

अप्रैल (सन् 2016 ई.)

वारुणीपर्व	5 अप्रै.	मं.
चान्द्र संवत् 2072 वि. पूर्ण	7 अप्रै.	गु.
चान्द्र संवत् 2073 वि. प्रा.	8 अप्रै.	शु.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	8 अप्रै.	शु.
वर्षफलश्रवण	8 अप्रै.	शु.
तैलाभ्यंग / ध्वजारोहण	8 अप्रै.	शु.
गौरी तृतीया (गणगौर)	9 अप्रै.	श.
आन्दोलन तृतीया	9 अप्रै.	श.
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	11 अप्रै.	चं.
नागपंचमी	11 अप्रै.	चं.
हयव्रत	11 अप्रै.	चं.
स्कन्द षष्ठी	12 अप्रै.	मं.
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	बु.
अर्धकुम्भ हरिद्वार	13 अप्रै.	बु.
श्रीदुर्गाष्टमी, अशोकाष्टमी	14 अप्रै.	गु.
श्रीरामनवमी	15 अप्रै.	शु.
वासन्त नवरात्र समाप्त	15 अप्रै.	शु.
नवरात्र–व्रतपारणा	16 अप्रै.	श.
दोलोत्सव	17 अप्रै.	र.
विष्णुदमनोत्सव	18 अप्रै.	चं.
अनंग त्रयोदशी	19 अप्रै.	मं.
श्रीमहावीर जयन्ती	19 अप्रै.	मं.
शिवदमनोत्सव	20 अप्रै.	बु.
वैशाखस्नान प्रारम्भ	22 अप्रै.	शु.
उज्जैन(सिंहस्थ)महाकुम्भ प्रारम्भ	22 अप्रै.	शु.

मई (सन् 2016 ई.)

श्रीपरशुराम जयन्ती	8 मई	र.
अक्षय तृतीया	9 मई	चं.
श्रीगंगा–जन्म	12 मई	गु.
श्रीजानकी–जयन्ती	14 मई	श.
श्रीनृसिंह–जयन्ती	20 मई	शु.
कुम्भ(सिंहस्थ)महापर्व उज्जैन (प्रमुखस्नान)	21 मई	श.
श्रीकूर्म–जयन्ती	21 मई	श.
वैशाखी पूर्णिमा	21 मई	श.
श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा	21 मई	श.
वैशाखस्नान समाप्त	21 मई	श.

जून (सन् 2016 ई.)

भद्रकाली एकादशी (पं.)	1 जून	बु.
वटसावित्री व्रत (अमापक्ष)	4 जून	श.
भावुका अमावस	5 जून	र.
रम्भा तृतीया	7 जून	मं.
अरण्य षष्ठी	10 जून	शु.
विन्ध्यवासिनी–पूजा	10 जून	शु.
श्रीगंगा दशहरा	14 जून	मं.
निर्जला एकादशी व्रत	16 जून	गु.
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष)	19 जून	र.

जुलाई (सन् 2016 ई.)

गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	5 जुला.	मं.
रथयात्रा (पुरी)	6 जुला.	बु.
कुमार षष्ठी	9 जुला.	श.
विवस्वत् सप्तमी	10 जुला.	र.
गुप्त नवरात्र समाप्त	13 जुला.	बु.
श्री विष्णु शयनोत्सव	15 जुला.	शु.
कोकिला व्रत	19 जुला.	मं.
शिवशयनोत्सव	19 जुला.	मं.
गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा)	19 जुला.	मं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रा.	19 जुला.	मं.

अगस्त (सन् 2016 ई.)

श्रावण शिवरात्रि	1 अग.	चं.
हरियाली अमावस	2 अग.	मं.
मधुस्रवा तृतीया, संधारा तीज	5 अग.	शु.
नागपंचमी	7 अग.	र.
श्रीदुर्गाष्टमी	11 अग.	गु.
ऋक् उपाकर्म	17 अग.	बु.
रक्षाबन्धन (राखी)	18 अग.	गु.
शुक्ल–कृष्ण–यजु उपाकर्म	18 अग.	गु.
श्रावणी पूर्णिमा	18 अग.	गु.
कज्जली तृतीया	20 अग.	श.
श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी	21 अग.	र.
बहुला चतुर्थी	21 अग.	र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)	24 अग.	बु.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)	25 अग.	गु.
गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव)	26 अग.	शु.
श्रीगुग्गा नवमी	26 अग.	शु.

सितंबर (सन् 2016 ई.)

कुशोत्पाटिनी अमावस	1 सितं.	गु.
पिठोरी अमावस	1 सितं.	गु.
साम उपाकर्म	4 सितं.	र.
गौरी तृतीया	4 सितं.	र.
हरितालिका तृतीया	4 सितं.	र.
सिद्धिविनायक व्रत	5 सितं.	चं.
कलंक चतुर्थी	5 सितं.	चं.
ऋषि पंचमी	6 सितं.	मं.
सूर्यषष्ठी व्रत	7 सितं.	बु.
श्रीराधाष्टमी	9 सितं.	शु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ	9 सितं.	शु.
बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव)	11 सितं.	र.
श्रीवामन जयन्ती	13 सितं.	मं.
अनन्त चतुर्दशी	15 सितं.	गु.
प्रोष्ठपदी श्राद्ध	16 सितं.	शु.
पूर्णिमा श्राद्ध	16 सितं.	शु.
महालय प्रारम्भ	16 सितं.	शु.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

(1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

पितृपक्ष प्रारम्भ	17 सितं.	श.
चन्द्रषष्ठी व्रत	21 सितं.	बु.
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त	23 सितं.	शु.
महालय/श्राद्ध समाप्त	30 सितं.	शु.
अक्तूबर (सन् 2016 ई.)		
शारद नवरात्र प्रारम्भ	1 अक्तू.	श.
उपाङ्गललिता व्रत	5 अक्तू.	बु.
सरस्वती आवाह्न	8 अक्तू.	श.
सरस्वती पूजन	9 अक्तू.	र.
श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी	9 अक्तू.	र.
सरस्वती के लिए बलिदान	10 अक्तू.	चं.
सरस्वती विसर्जन	10 अक्तू.	चं.
महानवमी (पूजा, उपवास एवं बलिदान के लिए)	10 अक्तू.	चं.
नवरात्र समाप्त	10 अक्तू.	चं.
नवरात्रपारणा	11 अक्तू.	मं.
विजयादशमी (दशहरा)	11 अक्तू.	मं.
भरतमिलाप	12 अक्तू.	बु.
कोजागर व्रत	15 अक्तू.	श.
शरत् पूर्णिमा	15 अक्तू.	श.
महर्षि वाल्मीकि–जयन्ती	16 अक्तू.	र.
कार्तिकस्नान प्रारम्भ	16 अक्तू.	र.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	19 अक्तू.	बु.
अहोई अष्टमी (पंजाब)	22 अक्तू.	श.
गोवत्स द्वादशी	26 अक्तू.	बु.
धन त्रयोदशी	28 अक्तू.	शु.
श्रीहनुमान् जयन्ती (उ. भा.)	28 अक्तू.	शु.
नरक चतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)	29 अक्तू.	श.
दीपावली, श्रीमहालक्ष्मीपूजा	30 अक्तू.	र.
गोवर्धनपूजा, बलिपूजा,	31 अक्तू.	चं.
अन्नकूट, गोक्रीड़ा	31 अक्तू.	चं.

नवम्बर (सन् 2016 ई.)		
यमद्वितीया, भाई दूज	1 नवं.	मं.
श्रीविश्वकर्मा पूजा	1 नवं.	मं.
सूर्यषष्ठी (बिहार)	6 नवं.	र.
गोपाष्टमी	8 नवं.	मं.
अक्षय नवमी	9 नवं.	बु.
कूष्माण्ड नवमी	9 नवं.	बु.
भीष्म पंचक प्रारम्भ	10 नवं.	गु.
हरिप्रबोधोत्सव	11 नवं.	शु.
तुलसी विवाह	11 नवं.	शु.
चातुर्मास्य व्रत-नियमादि-समाप्त	11 नवं.	शु.
वैकुण्ठ चतुर्दशी	13 नवं.	र.
कार्तिकस्नान समाप्त	14 नवं.	चं.
कार्तिक पूर्णिमा	14 नवं.	चं.
श्री गुरुनानक जयन्ती	14 नवं.	चं.
भीष्म पंचक समाप्त	14 नवं.	चं.
त्रिपुरोत्सव	14 नवं.	चं.
श्रीकालाष्टमी (भैरवाष्टमी)	21 नवं.	चं.
दिसंबर (सन् 2016 ई.)		
स्कन्द–गुह षष्ठी	5 दिसं.	चं.
चम्पा षष्ठी	5 दिसं.	चं.
मित्र सप्तमी	6 दिसं.	मं.
श्रीगीता जयन्ती	10 दिसं.	श.
श्रीदत्त जयन्ती	13 दिसं.	मं.
जनवरी (सन् 2017 ई.)		
इंग्लिश नववर्ष 2017 ई. प्रारम्भ	1 जन.	र.
पौषी पूर्णिमा	12 जन.	गु.
माघस्नान प्रारम्भ	12 जन.	गु.
लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू–काश्मीर)	13 जन.	शु.

मकर–संक्रान्ति	14 जन.	श.
श्रीगणेश (संकष्ट) चतुर्थी	15 जन.	र.
मौनी अमावस	27 जन.	शु.
गुप्त नवरात्र प्रारम्भ	28 जन.	श.
गौरी तृतीया (गोंतरी)	30 जन.	चं.
वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी	31 जन.	मं.
फरवरी (सन् 2017 ई.)		
श्रीपंचमी, वसन्त पंचमी	1 फर.	बु.
लक्ष्मी एवं सरस्वती पूजन	1 फर.	बु.
रथसप्तमी /आरोग्य सप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली)	3 फर.	शु.
भीष्माष्टमी	4 फर.	श.
गुप्त नवरात्र समाप्त	5 फर.	र.
भीष्म द्वादशी	7 फर.	मं.
माघी पूर्णिमा	10 फर.	शु.
माघस्नान समाप्त	10 फर.	शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	24 फर.	शु.
मार्च (सन् 2017 ई.)		
होलाष्टक प्रारम्भ	5 मार्च	र.
गोविन्द द्वादशी	9 मार्च	गु.
होलिकादहन	12 मार्च	र.
होलाष्टक समाप्त	12 मार्च	र.
वसन्तोत्सव	13 मार्च	चं.
होलामेला श्री आनन्दपुर सा.(पं.)	13 मार्च	चं.
महामहाविषुव दिन	20 मार्च	चं.
महावारुणीपर्व	25 मार्च	श.
वारुणीपर्व	26 मार्च	र.
चान्द्र संवत् 2073 वि. पूर्ण	28 मार्च	मं.
चान्द्र संवत् 2074 वि. प्रारम्भ	28 मार्च	मं.
वासन्त नवरात्र प्रारम्भ	28 मार्च	मं.

प्रमुख–प्रमुख व्रत–पर्व

आगामी वर्ष (वि. सं. 2074) के लिए

नाम मेला/पर्व	तारीख
सन् 2017 ई.	
नवरात्र प्रारम्भ	28 मार्च
श्रीदुर्गाष्टमी	4 अप्रै.
श्री रामनवमी	4 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती (जैन)	9 अप्रै.
मेष संक्रान्ति (वैशाखी)	13 अप्रै.
श्री परशुराम जयन्ती	28 अप्रै.
श्री बुद्ध जयन्ती	10 मई
श्री गंगा दशहरा	4 जून
गुरु पूर्णिमा	9 जुला.
रक्षाबन्धन	7 अग.
संकष्ट चतुर्थी	11 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मा.)	14 अग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	15 अग.
श्राद्ध प्रारम्भ	5 सितं.
शारद नवरात्र प्रारम्भ	21 सितं.
श्री दुर्गाष्टमी	28 सितं.
दशहरा (विजयादशमी)	30 सितं.
शरत् पूर्णिमा	5 अक्तू.
श्री वाल्मीकि जयन्ती	5 अक्तू.
करक चतुर्थी (करवा चौथ)	8 अक्तू.
दीपावली	19 अक्तू.
भाई दूज	21 अक्तू.
श्री गुरु नानक जयन्ती	4 नवं.
श्री भैरवाष्टमी	10 नवं.
(सन् 2018 ई.)	
मकर संक्रान्ति	14 जन.
वसन्त पंचमी	22 जन.
श्री गुरु रविदास जयन्ती	31 जन.
श्री महाशिवरात्रि व्रत	13 फर.

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

एकादशी व्रत

(सन् 2016 ई.)	
पौष कृष्ण(स्मा.)	5 जन.
पौष शुक्ल	20 जन.
माघ कृष्ण	4 फर.
माघ शुक्ल	18 फर.
फाल्गुन कृष्ण	5 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	19 मार्च
चैत्र कृष्ण (स्मा.)	3 अप्रै.
चैत्र शुक्ल	17 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	3 मई
वैशाख शुक्ल	17 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	1 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	16 जून
आषाढ़ कृष्ण (स्मा.)	30 जून
आषाढ़ शुक्ल	15 जुला.
श्रावण कृष्ण	30 जुला.
श्रावण शुक्ल	14 अग.
भाद्रपद कृष्ण	28 अग.
भाद्रपद शुक्ल	13 सितं.
आश्विन कृष्ण	26 सितं.
आश्विन शुक्ल	12 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	26 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल (स्मा.)	10 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण	25 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	10 दिसं.
पौष कृष्ण	24 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
पौष शुक्ल (स्मा.)	8 जन.
माघ कृष्ण	23 जन.
माघ शुक्ल	7 फर.
फाल्गुन कृष्ण	22 फर.
फाल्गुन शुक्ल	8 मार्च
चैत्र कृष्ण	24 मार्च

(स्मा. = स्मार्तों का व्रत)

वैष्णवों का व्रत स्मार्तों के व्रत के दिन से दूसरे दिन होता है। जिसके आगे "स्मा." नहीं लिखा है, वह व्रततिथि स्मार्त और वैष्णव दोनों के लिए है।

पक्षों का प्रारम्भ

(सन् 2016 ई.)	
पौष शुक्ल	10 जन.
माघ कृष्ण	24 जन.
माघ शुक्ल	9 फर.
फाल्गुन कृष्ण	23 फर.
फाल्गुन शुक्ल	9 मार्च
चैत्र कृष्ण	24 मार्च
चैत्र शुक्ल	8 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	23 अप्रै.
वैशाख शुक्ल	7 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	22 मई
ज्येष्ठ शुक्ल	6 जून
आषाढ़ कृष्ण	21 जून
आषाढ़ शुक्ल	5 जुला.
श्रावण कृष्ण	20 जुला.
श्रावण शुक्ल	3 अग.
भाद्रपद कृष्ण	19 अग.
भाद्रपद शुक्ल	2 सितं.
आश्विन कृष्ण	17 सितं.
आश्विन शुक्ल	1 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	16 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल	31 अक्तू.
मार्गशीर्ष कृष्ण	15 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	30 नवं.
पौष कृष्ण	14 दिसं.
पौष शुक्ल	30 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ कृष्ण	13 जन.
माघ शुक्ल	28 जन.
फाल्गुन कृष्ण	11 फर.
फाल्गुन शुक्ल	27 फर.
चैत्र कृष्ण	13 मार्च

उत्तरी भारत में कृष्णादि एवं दक्षिणी भारत में शुक्लादि मासों का प्रचार है। ऊपर दिए गए पक्ष कृष्णादि हैं।

श्रीसत्यनारायण व्रत

(सन् 2016 ई.)	
पौष	23 जन.
माघ	22 फर.
फाल्गुन	22 मार्च
चैत्र	21 अप्रै.
वैशाख	21 मई
ज्येष्ठ	19 जून
आषाढ़	19 जुला.
श्रावण	17 अग.
भाद्रपद	16 सितं.
आश्विन	15 अक्तू.
कार्तिक	14 नवं.
मार्गशीर्ष	13 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
पौष	11 जन.
माघ	10 फर.
फाल्गुन	12 मार्च

दशावतार जयन्तियां (सन् 2016 ई.)

श्रीमत्स्य जयन्ती	9 अप्रै.
श्रीरामनवमी	15 अप्रै.
श्रीपरशुराम जयन्ती	8 मई
श्रीनृसिंह जयन्ती	20 मई
श्रीकूर्म जयन्ती	21 मई
श्रीबुद्ध जयन्ती	21 मई
श्रीकल्कि जयन्ती	8 अग.
⊗ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	24 अग.
श्रीवराह जयन्ती	4 सितं.
श्रीवामन जयन्ती	13 सितं.

⊗ अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत करना चाहिए। श्रीमद्भागवत एवं स्कन्द – विष्णु पुराण आदि इसी का समर्थन करते हैं ।

श्रीगणेशचतुर्थी व्रत

(सन् 2016 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र	27 मार्च
वैशाख	25 अप्रै.
ज्येष्ठ	25 मई
आषाढ़	23 जून
श्रावण	23 जुला.
भाद्रपद(संकष्ट चतुर्थी)	21 अग.
आश्विन	19 सितं.
कार्तिक	19 अक्तू.
मार्गशीर्ष	17 नवं.
पौष	17 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ (संकष्ट चतुर्थी)	15 जन.
फाल्गुन	14 फर.
चैत्र	16 मार्च

श्रीसिद्धिविनायक चतुर्थी व्रत

पौष (2016 ई.)	13 जन.
माघ	11 फर.
फाल्गुन	12 मार्च
चैत्र	10 अप्रै.
वैशाख	10 मई
ज्येष्ठ	8 जून
आषाढ़	8 जुला.
श्रावण	6 अग.
भाद्रपद	5 सितं.
आश्विन	5 अक्तू.
कार्तिक	3 नवं.
मार्गशीर्ष	3 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ	31 जन.
फाल्गुन	2 मार्च

प्रदोष व्रत

(सन् 2016 ई.)	
पौष कृष्ण	7 जन.
पौष शुक्ल	21 जन.
माघ कृष्ण (शनि.)	6 फर.
माघ शुक्ल (शनि.)	20 फर.
फाल्गुन कृष्ण	6 मार्च
फाल्गुन शुक्ल	20 मार्च
चैत्र कृष्ण (भौम.)	5 अप्रै.
चैत्र शुक्ल (भौम.)	19 अप्रै.
वैशाख कृष्ण	4 मई
वैशाख शुक्ल	19 मई
ज्येष्ठ कृष्ण	2 जून
ज्येष्ठ शुक्ल	17 जून
आषाढ़ कृष्ण (शनि.)	2 जुला.
आषाढ़ शुक्ल	17 जुला.
श्रावण कृष्ण	31 जुला.
श्रावण शुक्ल (सोम)	15 अग.
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	29 अग.
भाद्रपद शुक्ल	14 सितं.
आश्विन कृष्ण	28 सितं.
आश्विन शुक्ल	13 अक्तू.
कार्तिक कृष्ण	28 अक्तू.
कार्तिक शुक्ल (शनि.)	12 नवं.
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि.)	26 नवं.
मार्गशीर्ष शुक्ल	11 दिसं.
पौष कृष्ण (सोम)	26 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
पौष शुक्ल (भौम)	10 जन.
माघ कृष्ण	25 जन.
माघ शुक्ल	8 फर.
फाल्गुन कृष्ण	24 फर.
फाल्गुन शुक्ल	10 मार्च
चैत्र कृष्ण (शनि)	25 मार्च

वर्गीकृत व्रत–पर्व (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

मासिक शिवरात्रिव्रत (सन् 2016 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	7 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.
वैशाख	5 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ़	2 जुला.
श्रावण	1 अग.
भाद्रपद	30 अग.
आश्विन	29 सितं.
कार्तिक	28 अक्तू.
मार्गशीर्ष	27 नवं.
पौष	27 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ	26 जन.
फाल्गुन(श्रीमहाशिवरात्रि)	24 फर.
चैत्र	26 मार्च

पूर्णिमा व्रत (सन् 2016 ई.) (स्नान–दानार्थ, उदयव्यापिनी पूर्णिमा में)	
पौष	23 जन.
माघ	22 फर.
फाल्गुन	23 मार्च
चैत्र	22 अप्रै.
वैशाख	21 मई
ज्येष्ठ	20 जून
आषाढ़	19 जुला.
श्रावण	18 अग
भाद्रपद	16 सितं.
आश्विन	16 अक्तू.
कार्तिक	14 नवं.
मार्गशीर्ष	13 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
पौष	12 जन.
माघ	10 फर.
फाल्गुन	12 मार्च

संक्रान्तियां (सन् 2016 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	13 फर.
चैत्र	14 मार्च
वैशाख	13 अप्रै.
ज्येष्ठ	14 मई
आषाढ़	14 जून
श्रावण	16 जुला.
भाद्रपद	16 अग.
आश्विन	16 सितं.
कार्तिक	17 अक्तू.
मार्गशीर्ष	15 नवं.
पौष	15 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ	14 जन.
फाल्गुन	12 फर.
चैत्र	14 मार्च

अमावस्याएं (स्नान–दानार्थ) (2016 ई.)	
पौष (शनैश्चरी)	9 जन.
माघ (भौमवती)	8 फर.
फाल्गुन	9 मार्च
चैत्र	7 अप्रै.
वैशाख	6 मई
ज्येष्ठ	5 जून
आषाढ़ (सोमवती)	4 जुला.
श्रावण (भौमवती)	2 अग.
भाद्रपद	1 सितं.
आश्विन	30 सितं.
कार्तिक	30 अक्तू.
मार्गशीर्ष (भौमवती)	29 नवं.
पौष	29 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ	27 जन.
फाल्गुन	26 फर.
चैत्र (भौमवती)	28 मार्च

मासिक श्रीदुर्गाष्टमी व्रत (2016 ई.)	
पौष	17 जन.
माघ	15 फर.
फाल्गुन	16 मार्च
चैत्र	14 अप्रै.
वैशाख	14 मई
ज्येष्ठ	12 जून
आषाढ़	12 जुला.
श्रावण	11 अग.
भाद्रपद	9 सितं.
आश्विन	9 अक्तू.
कार्तिक	8 नवं.
मार्गशीर्ष	7 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
पौष	6 जन.
माघ	4 फर.
फाल्गुन	5 मार्च

मासिक कालाष्टमी व्रत (2016 ई.)	
पौष	2 जन.
माघ	1 फर.
फाल्गुन	1 मार्च
चैत्र	31 मार्च
वैशाख	30 अप्रै.
ज्येष्ठ	29 मई
आषाढ़	27 जून
श्रावण	26 जुला.
भाद्रपद	25 अग.
आश्विन	23 सितं.
कार्तिक	22 अक्तू.
मार्गशीर्ष (श्रीभैरवाष्टमी)	21 नवं.
पौष	21 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ	19 जन.
फाल्गुन	18 फर.
चैत्र	20 मार्च

अरुणाय त्रयोदशी — श्रीसंगमेश्वर महादेव अरुणाय (पिहोवा) के शिवत्रयोदशी पर्व (उदयव्यापिनी कृष्ण त्रयोदशी) (2016 ई.)	
पौष	8 जन.
माघ	6 फर.
फाल्गुन	7 मार्च
चैत्र	5 अप्रै.
वैशाख	5 मई
ज्येष्ठ	3 जून
आषाढ़	2 जुला.
श्रावण	31 जुला.
भाद्रपद	30 अग.
आश्विन	28 सितं.
कार्तिक	28 अक्तू.
मार्गशीर्ष	27 नवं.
पौष	26 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
माघ	25 जन.
फाल्गुन	24 फर.
चैत्र	26 मार्च

आश्विन कृष्णपक्ष के श्राद्ध (सन् 2016 ई.)	
प्रोष्ठपदी / ⊙पूर्णिमा	16 सितं.
प्रतिपदा	17 सितं.
द्वितीया	18 सितं.
तृतीया / चतुर्थी	19 सितं.
भरणी	20 सितं.
पंचमी	20 सितं.
षष्ठी	21 सितं.
सप्तमी	22 सितं.
अष्टमी	23 सितं.
★नवमी	24 सितं.
दशमी	25 सितं.
एकादशी	26 सितं.
✳द्वादशी / संन्यासियों का श्राद्ध	27 सितं.
त्रयोदशी / मघा श्राद्ध	28 सितं.
⚔ चतुर्दशी	29 सितं.
सर्वपितृ, अमावस, पूर्णिमा एवं अज्ञात मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध	30 सितं.
नाना / नानी का श्राद्ध	1 अक्तू.

★सौभाग्यवती स्त्री का श्राद्ध सर्वदा नवमी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी हो।

✳संन्यासी का श्राद्ध हमेशा द्वादशी में ही किया जाता है, भले ही उसकी मृत्युतिथि कोई भी क्यों न हो।

⚔ शस्त्र–विष आदि से मृतों (अपमृत्यु वालों) का श्राद्ध चतुर्दशी के दिन होता है, भले ही उनकी मृत्युतिथि कोई भी हो। चतुर्दशी में सामान्य मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध अमावस्या में करना चाहिए।

⊙"जिनकी मृत्युतिथि पूर्णिमा हो, उनका महालय श्राद्ध प्रोष्ठपदी पूर्णिमा को करना चाहिए"–यह शास्त्रीय मत है। लेकिन पंजाब, हरियाणा आदि प्रदेशों में पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय सर्वपितृ अमा को करने की लोक–परम्परा है।

क्रिश्चियन त्योहार (सन् 2016 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.
पाम सण्डे	20 मार्च
गुड फ्राई डे	25 मार्च
ईस्टर सण्डे	27 मार्च
क्रिस्मस डे	25 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
इंग्लिश नया साल प्रारम्भ	1 जन.

वर्गीकृत व्रत-पर्व (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

जैन व्रतपर्व

(सन् 2016 ई.)	
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	4 जन.
श्रीमेरुत्रयोदशी	6 फर.
मर्यादा महोत्सव	14 फर.
आचार्य भिक्षु अभिनिष्क्रमण	15 अप्रै.
श्री महावीर जयन्ती	19 अप्रै.
श्रीमहावीर केवलज्ञान दिवस	16 मई
श्रीमहावीर च्यवन दिवस	10 जुला.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	19 जुला.
चातुर्मास्य व्रत–नियम आदि प्रारम्भ	19 जुला.
श्रीजयाचार्य निर्वाण–दिवस	29 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	30 अग.
संवत्सरी महापर्व	6 सितं.
श्रीकालू निर्वाण–दिवस	7 सितं.
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	11 सितं.
आचार्य भिक्षु निर्वाण–दिवस	14 सितं.
श्रीमहावीर निर्वाण–दिवस	30 अक्तू.
आचार्य श्रीतुलसी–जन्म	1 नवं.
ज्ञानपंचमी	5 नवं.
चातुर्मास्य व्रत–नियमादि–समाप्त	14 नवं.
श्रीमहावीर–दीक्षादिवस	23 नवं.
आचार्य श्रीतुलसी-दीक्षादिवस	18 दिसं.
जन्म श्रीपार्श्वनाथ जी	23 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
श्रीमेरुत्रयोदशी	25 जन.
मर्यादा महोत्सव	3 फर.

महापुरुषों के जन्मदिन

(सन् 2016 ई.)	
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
स्वामी विवेकानन्द	31 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	31 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	10 फर.
श्रीगुरु रविदास जी	22 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	4 मार्च
श्रीरामकृष्ण परमहंस	10 मार्च
श्रीचैतन्य महाप्रभु	23 मार्च
डॉ. अम्बेडकर	14 अप्रै.
श्रीवल्लभाचार्य	3 मई
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई
श्रीछत्रपति शिवाजी	8 मई
आद्य जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य	11 मई
श्रीरामानुजाचार्य (उ.भा)	12 मई
श्रीमहाराणाप्रताप	7 जून
लो. मा. बालगंगाधर तिलक	23 जुला.
गोस्वामी तुलसीदास जी	10 अग.
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं.
महाराज अग्रसेन जी	1 अक्तू.
श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.
श्रीलालबहादुर शास्त्री	2 अक्तू.
श्रीमाध्वाचार्य	11 अक्तू.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू.
श्रीवीर वैरागी	12 नवं.
श्रीजवाहर लाल नेहरु	14 नवं.
भगवान् श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं.
(सन् 2017 ई.)	
स्वामी विवेकानन्द	19 जन.
श्रीरामानन्दाचार्य	19 जन.
श्रीनेता जी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन.
लाला लाजपतराय	28 जन.
योगिराज बा. श्रीलालदयाल	29 जन.
श्रीगुरु रविदास जी	10 फर.
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	28 फर.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	12 मार्च

मुस्लिम त्योहार

(सन् 2016 ई.)	
फतिहायजदहुम	22 जन.
जन्म श्री हजरत अली	21 अप्रै.
शब–ए–मिराज	5 मई
शब–ए–बरात	23 मई
रमज़ान का पहला दिन	7 जून
शहादत–ए–हज़रत अली	27 जून
जमतुल विदा	1 जुला.
शब–ए–कद्र	3 जुला.
ईद–उल–फित्र	6 जुला.
इदुलज्जुहा	12 सितं.
मुहर्रम (ताजिया)	12 अक्तू.
चेहल्म	20 नवं.
शहादत–ए–इमाम हसन	29 नवं.
आखिरी चहार शम्बा	30 नवं.
ईद–ए–मिलाद	12 दिसं.
ईद–ए–मौलाद	17 दिसं.
(सन् 2017 ई.)	
फतिहायजदहुम	10 जन.

सूचना

सभी मुस्लिम त्योहार चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देने) पर ही निर्भर करते हैं। कई बार स्थानभेद या आकाशीय वातावरण के कारण चन्द्रदर्शन की तारीख आगे–पीछे हो जाने पर इन मुस्लिम त्योहारों के दिन में एक दिन का अन्तर संभव है।

क्या किससे पूछें ?

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' गत विषयों से सम्बद्ध अपनी शंकाओं का समाधान ऐसे प्राप्त करें।

'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग' में सिद्धान्त, गणित, फलित, मुहूर्त्त, व्रतपर्व, तेजी–मन्दी आदि अनेक विषयों का समावेश रहता है। इन विषयों से सम्बद्ध शंकाएं हमारे जिज्ञासु पाठकों के मस्तिष्क में कई बार उत्पन्न होती हैं, जिनके समाधानार्थ वे ठीक से समझ नहीं पाते कि किससे सम्पर्क साधा जाए। किस विषय की शंका के समाधानार्थ किससे सम्पर्क करना उचित है– यह हम यहां स्पष्ट किए देते हैं–

(i) तिथ्यादि पंचांग, ग्रहभोगांश, शर, क्रान्ति, राशि–नक्षत्र–नक्षत्रचरणप्रवेश, वक्रता–मार्गिता, उदयास्त, लोप–दर्शन, ग्रहण, ग्रहयुति आदि खगोलीय चमत्कार, अयनांश, अक्षांश, रेखांश, लग्न, सन्दिग्ध व्रतपर्व–निर्णय, विवाहादि मुहूर्त्त तथा अन्य सभी सिद्धान्त–गणित–फलित–सम्बन्धी जिज्ञासाओं के शान्त्यर्थ मुझसे सम्पर्क करें।

उत्तर के लिए मुझे जवाबी पत्र या Postal Stamps आदि न भेजें। आपकी उचित शंकाओं का निवारण मैं अपने व्यय से ही करुंगा। लेकिन मैं इसके लिए किसी भी तरह से बाधित नहीं हूं–यह ध्यान में रखें।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, M.A., 'अभिजित् प्रकाशन, 59/6,
P.O. पंचकूला– 134 109, Phone-0172-2565 303

(ii) राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र, राजनैतिकदलों के चुनावचक्र मे जय–पराजय, राजनेताओं का उत्थान–पतन, पाक्षिक–मासिक–वार्षिक फलादेश, यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–रहस्य, वृष्टि, वायुमण्डल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, बाढ़, भूकम्प आदि दैवी एवं प्राकृतिक आपदा तथा विश्वशान्ति–विप्लव आदि से सम्बद्ध पंचांगगत भविष्यवाणियों के विषय में तथा जन्मकुण्डली, टेवा, प्रश्नलग्न आदि के निर्माण एवं इनकी फीस वगैरह की जानकारी एवम् वायदा–हाजर बाजार के चांस, सोना, चान्दी, कापर आदि मैटल्स, चना, गेहूं, ग्वार आदि अनाज, तिल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन तथा रुई, कपास, ऊन आदि जिन्स की पंचाग में प्रकाशित वार्षिक–मासिक–पाक्षिक–दैनिक तेजी–मन्दी– सम्बन्धी पूछताछ के लिए हमसे सम्पर्क कीजिए–

पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, M.A., ज्योतिषाचार्य,
पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, कुराली,
ज़िला मोहाली (पंजाब), PIN 140 103,
PHONE: 0160-2641 277.

इसके अतिरिक्त पंचांग में प्रकाशित अन्य किसी लेख आदि के विषय मे अपनी शंकाओं के निवारणार्थ उसके लेखक से ही सम्पर्क करना चाहिए।

–सम्पादक मण्डल

सिक्ख–पर्व (सं. 2073 वि.) (सन् 2016–17 ई.)

सिक्ख–पर्व
संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार (2016–17 ई.)

नाम श्रीगुरु साहिबान	पुरातन परम्परा अनुसार तारीख – ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए	संशोधित नानकशाही कैलेण्डर अनुसार – ता. प्रकाश दिवस	ता. गुरयाई मिली	ता. जोतीजोत समाए
श्री गुरु नानकदेव जी	14 नवं., 2016 ई.	अवतार दिन से	25 सितं., 2016 ई.	*14 नवं., 2016 ई.	अवतार दिन से	22 सितम्बर
श्री गुरु अंगददेव जी	7 मई, 2016 ई.	21 सितं. 2016 ई.	10 अप्रै., 2016 ई.	18 अप्रैल	18 सितम्बर	16 अप्रैल
श्री गुरु अमरदास जी	20 मई, 2016 ई.	8 अप्रै. 2016ई.	16 सितं., 2016 ई.	23 मई	16 अप्रैल	16 सितम्बर
श्री गुरु रामदास जी	17 अक्तू., 2016 ई.	14 सितं, 2016 ई.	4 सितं., 2016 ई.	9 अक्तूबर	16 सितम्बर	16 सितम्बर
श्री गुरु अर्जुनदेव जी	29 अप्रै., 2016 ई.	3 सितं., 2016 ई.	8 जून, 2016 ई.	2 मई	16 सितम्बर	22 मई*
श्री गुरु हरगोबिन्द जी	21 जून, 2016 ई.	29 मई, 2016 ई.	11 अप्रै. 2016 ई.	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
श्री गुरु हरिराय जी	9 फर., 2017 ई.	26 मार्च 2017 ई.	24 अक्तू. 2016 ई.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
श्री गुरु हरकिशन जी	28 जुला. 2016 ई.	24 अक्तू., 2016 ई.	21 अप्रै., 2016 ई.	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
श्री गुरु तेग़बहादुर जी	27 अप्रै., 2016 ई.	21 अप्रै., 2016 ई.	4 दिसं., 2016 ई.	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवम्बर
श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी	5 जन., 2017 ई.	2 दिसं., 2016 ई.	5 नवं., 2016 ई.	5 जन., 2017 ई.*	24 नवम्बर	5 नवं., 2016 ई.*
खालसापंथ साजना दिवस	वैशाख 1, मुताबिक	13 अप्रैल, 2016 ई.		14 अप्रैल, 2016 ई.*		
प्रथम प्रकाश गुरुग्रन्थ साहिब जी	भाद्र. शुक्ल 1, मुताबिक	2 सितंबर, 2016 ई.		1 सितंबर, 2016 ई.		
गुरुग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली	कार्तिक शुक्ल 2, मुताबिक	1 नवंबर, 2016 ई.		13 नवंबर, 2016 ई.*		

संक्रान्ति*

*शिरोमणि गुरुद्वारा प्र[…] कमेटी, श्री अमृतस[…] ओर से प्रकाशित मा[…] पत्रिका 'गुरुमत प्रकाश' ([…] 2010 ई.) के पृष्ठ 89 अनुसार तारा अंकित पर्व […] संक्रान्तियां पुरातन प[…] (विक्रमी) के अनुसार ही […] को कहे गए थे।

सिख संप्रदायों में म[…] भेद के चलते हमने उ[…] कोई संशोधन नहीं कि[…] S.G.P.C. की ओर से […] कैलेण्डर के जारी होने […] उपरान्त ही हम भी संशो[…] कैलेण्डर देंगे।

भारत सरकार के अवकाश (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

(सूचना :– अवकाश की इस सूची को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लेना चाहिए।)

इंग्लिश नववर्ष (2016 ई.) प्रारम्भ	1 जन.	श्रीमहावीर जयन्ती (जैन)	20 अप्रै.	श्रीदुर्गाष्टमी	9 अक्तू.	(सन् 2017 ई.)	
मकर संक्रान्ति (बंगाल)	15 जन.	जन्म श्रीहजरत अली	21 अप्रै.	दशहरा	11 अक्तू.	इंग्लिश नववर्ष (2017 ई.) प्रारम्भ	1 जन
पोंगल	15 जन.	श्रीबुद्ध जयन्ती	21 मई	मुहर्रम (ताज़िया)	12 अक्तू.	*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	5 जन
*अ. दि. श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी	16 जन.	जमतुलविदा	1 जुला.	श्रीवाल्मीकि–जयन्ती	16 अक्तू.	मकर संक्रान्ति (बंगाल)	14 जन
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन.	रथयात्रा (पुरी)	6 जुला.	दीपावली	30 अक्तू.	पोंगल	14 जन
जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	22 फर.	इदुल–फित्र	6 जुला.	भाई दूज	1 नवं.	भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च	भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग.	श्रीगुरुनानक जयन्ती	14 नवं.	जन्मदिन श्रीगुरु रविदास जी	10 फर
होला, वसन्तोत्सव	24 मार्च	रक्षाबन्धन (राखी)	18 अग.	बलि. दि. श्रीगुरु तेग़बहादुर जी	24 नवं.	श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	24 फर
गुड फ्राई डे	25 मार्च	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	25 अग.	ईद–ए–मिलाद	12 दिसं.		
गुड़ी पड़वा	8 अप्रै.	श्रीगणेश चतुर्थी	5 सितं.	क्रिसमस डे	25 दिसं.		
वैशाखी (पंजाब)	13 अप्रै.	इदुलज्जुहा	12 सितं.				
विशु (केरल)	13 अप्रै.	ओणम् (केरल)	13 सितं.				
श्रीराम नवमी	15 अप्रै.	जन्म श्रीमहात्मा गांधी	2 अक्तू.				

* श्रीगुरु गोबिन्दसिंह जी का अवतारप[…] संशोधित नानकशाही Calander के अनुसार पौष शुक्ल सप्तमी को ही मनाया जाना चाहिए।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2016 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2016 ई.	
लोहड़ी दाऊं (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2016 ई.	
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
वसन्तपंचमी	12 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	20 फर.
मार्च 2016 ई.	
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	7 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	7 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	24 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	28 मार्च
श्री वीरभदास, बधौछी (पटियाला)	29 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	31 मार्च
अप्रैल 2016 ई.	
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	6 अप्रै.
माईसर खाना (पंजाब)	12 अप्रै.
अर्धकुम्भ हरिद्वार	13 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल–गुरदासपुर)	14 अप्रै.

नाम मेला/पर्व (सन् 2016 ई.)	तारीख
कशाधा नहयाणी सह (कुल्लू) प्रा.	15 अप्रै.
माता कांसादेवी (कांसल, मोहाली) प्रा.	19 अप्रै.
माता नैनादेवी, दाचर (करनाल)	20 अप्रै.
देवी मेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	20 अप्रै.
ज.दि. भाई दित्त सिंह ज्ञानी	21 अप्रै.
पीपल जातर (कुल्लू) प्रा.	28 अप्रै.
मई 2016 ई.	
पिंजौर (हरि.)	6 मई
आनी आऊटर सिराज (कुल्लू) प्रा.	7 मई
ढूंगरी जातर (मनाली) प्रा.	14 मई
बंजार (कुल्लू) प्रा.	14 मई
ज. दि. सं. बा. तेजा सिंह जी, बदरीपुर, पांवटा सा. (हि.प्र.) प्रा.	14 मई
क्षीर भवानी (जम्मू–काश्मीर)	14 मई
समागम (8 दिन) हरिहरघाट, मणिकर्ण(हि.प्र.) प्रा.	15 मई
साढ़ी जातर, नगर (हि.प्र.) प्रा.	18 मई
मेला पीरभीखनशाह (घड़ाम,पटियाला) प्रा.	19 मई
कुम्भ(सिंहस्थ)महापर्व उज्जैन(प्रमुखस्नान)	21 मई
जून 2016 ई.	
पुण्यतिथि सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्त– सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	10 जून
श्रीगंगा दशहरा	14 जून
सपोर यात्रा– धारलदा (उधमपुर)	14 जून
भून्तर (कुल्लू) प्रा.	14 जून
पाण्डवों का बाड़ी मेला (सरयांझ) सोलन	14 जून
नमाणी एकादशी, नौवें गुरु, बरहे (बठि.) पं.	16 जून
पीपलू , ऊना (हि.प्र.)	16 जून
शुद्ध महादेव यात्रा (उधमपुर)	20 जून
यादगारी दिवस बीबी शरण कौर जी, गु. श्रीअमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	28 जून

नाम मेला/पर्व (सन् 2016 ई.)	तारीख
जुलाई 2016 ई.	
ब. सं. बा. तेजा सिंह जी, नानकसर चीमा (पं.)/ बडू साहिब (हि. प्र.) प्रा.	1 जुला.
ब.बा. सन्तोख सिंह जी/भा. दर्शन सिंह गुरुद्वारा जन्मस्थान नानकसर, चीमा प्रा.	9 जुला.
जयन्ती सत्गुरु साईं टेऊँराम जी सप्त–सरोवर भूपतवाला, हरिद्वार	9 जुला.
शरीक भवानी (जम्मू–काश्मीर)	13 जुला.
धाटा गोशयन मेला(मण्डी.हि.प्र.),	16 जुला.
गुरु पूर्णिमा, नदीपार आश्रम (कुराली) पं.	19 जुला.
मुड़िया पूनौ (गोवर्धन), मथुरा (उ.प्र.)	19 जुला.
ग़ाड़ा गोशयन मेला (मण्डी,हि.प्र.),	30 जुला.
अगस्त 2016 ई.	
ब. सं. बा. निधान सिंह जी, ढींडसा (लुधि.)	4 अग.
ज. दि. सं. बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले), आलोवाल, पटियाला	5 अग.
बरसी सं. बाबा प्यारा सिंह जी गु. श्री अमरगढ़ साहिब, चमकौर साहिब प्रा.	5 अग.
नागपंचमी (जैत), मथुरा (उ.प्र.)	7 अग.
श्रीनयना देवी (हि. प्र.)	11 अग.
श्री चिन्तपूर्णी (हि. प्र.)	11 अग.
श्री अमरनाथ यात्रा (काश्मीर)	18 अग.
उर्स माणकपुर शरीफ (मोहाली) प्रारम्भ	18 अग.
ब॰ सं. बा. हरचन्द सिंह लौंगोवाल	20 अग.
ब.सं.बा. ईशर सिंह जी (राड़ा सा. वाले) प्रा.	24 अग.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी, मथुरा (उ.प्र.)	25 अग.
कैलाशयात्रा (काश्मीर) प्रा.	30 अग.

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू–काश्मीर व उ.प्र. के मेले (1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

नाम मेला/पर्व (सन् 2016 ई.)	तारीख
सितंबर 2016 ई.	
श्रीगोसाईआणां, कुराली (पंजाब)	3 सितं.
श्रीगणेशोत्सव (मण्डी, ऊना) हि.प्र. प्रारम्भ	5 सितं.
ब. भा. दित्त सिंह ज्ञानी, नन्दपुर-कलौड़ (पं.)	6 सितं.
मेला पट्ट (काश्मीर) प्रारम्भ	6 सितं.
श्रीगर्गाचार्य जयन्ती	6 सितं.
मेला श्रीबलदेव छठ, पलवल, हरियाणा	7 सितं.
गरुणगोविन्द (छटीकरा, मथुरा) (उ.प्र.)	9 सितं.
श्रीवामन द्वादशी (अम्बाला, पटियाला)	14 सितं.
बाबा सोढल (जालन्धर)	15 सितं.
छपार (पं.)	15 सितं.
श्रीगोईदवाल साहिब (तरनतारन) पं.	16 सितं.
श्री आशापति यात्रा (काश्मीर) प्रा.	29 सितं.
अक्तूबर 2016 ई.	
श्रीज्वालामुखी (हि.प्र.)	9 अक्तू.
श्रीतारादेवी (हि.प्र.)	9 अक्तू.
ज्वालामुखी (हरचोवाल,गुरदासपुर) पं.	9 अक्तू.
दशहरा (कुल्लू) प्रा.	11 अक्तू.
श्रीशाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	15 अक्तू.
मेला माता नयनादेवी, दाचर (करनाल)	15 अक्तू.
देवीमेला हथीहरा (कुरुक्षेत्र)	15 अक्तू.
पर्वत मेला (मण्डी–हि.प्र.)	18 अक्तू.
ब. सं. बा. गुरुचरण सिंह जी, गु. अमरगढ़ साहिब, श्रीचमकौर साहिब	24 अक्तू.

नाम मेला/पर्व (सन् 2016 ई.)	तारीख
भण्डारा श्री हरिओम् जी (माणकपुर शरीफ)	25 अक्तू.
दीपावली (अमृतसर)	30 अक्तू.
नवंबर 2016 ई.	
रेणुका (नाहन) हि.प्र.	10 नवं.
धनेश्वर मेला, सिरमौर (हि.प्र.)	10 नवं.
बाबा रुद्रानन्द, नारी (ऊना, हि.प्र.) प्रा.	11 नवं.
ज. दि. श्रीवीर वैरागी (नकोदर) (पं.)	12 नवं.
मेला बग्गीदेहरी कुण्डे लालोवाल (गुरदासपुर) प्रा.	13 नवं.
बाल मेला	14 नवं.
श्रीरामतीर्थ (अमृतसर–पं.)	14 नवं.
कपालमोचन (हरि.)	14 नवं.
श्रीपुष्करराज (राज.)	14 नवं.
पुरमण्डल, देविकास्नान (जम्मू)	28 नवं.
दिसम्बर 2016 ई.	
ब. सं. बा. विसाखा सिंह, दुदेहर सा.(तरनतारन)	4 दिसं.
ब. सं. बा. राम सिंह/ बूटा सिंह, नानकसर चीमा	9 दिसं.
ब. बीबी तेज कौर जी, मानपुर, फतेहगढ़ सा.	23 दिसं.
ज. दि. सं. बा. किशन सिंह जी (राड़ा सा. वाले), मसीतां (सिरसा–हरि.)	24 दिसं.
जोड़मेला श्री फतेहगढ़ साहिब, (पं.) प्रा.	26 दिसं.
संगीत मेला बाबा हरवल्लभ (जालन्धर) प्रा.	27 दिसं.
ब. सं. बा. किशन सिंह जी, गु. कर्मसर साहिब, राड़ा साहिब (लुधि.) प्रा.	30 दिसं.

नाम मेला/पर्व (सन् 2017 ई.)	तारीख
जनवरी सन् 2017 ई.	
लोहड़ी दाऊ (मोहाली) (पं.)	14 जन.
लोहड़ी बिंदरख (रोपड़,) (पं.)	14 जन.
मुक्तसर (पंजाब)	14 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी (रेरु साहिब) प्रा.	20 जन.
ब. सं. बा. बख्शीश सिंह जी	26 जन.
ब. सं. बा. अतर सिंह जी, (मस्तुआणा) (पं.) प्रा.	30 जन.
फरवरी 2017 ई.	
वसन्तपंचमी	1 फर.
ज. दि. गुरु हरिराय जी, सिंहपुरा–कुराली (पं.)	9 फर.
बलिदान दिवस बाबा दीप सिंह जी शहीद सोलखियां (रोपड़–पं.)	10 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी, हि.प्र.) प्रारम्भ	24 फर.
नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी–गढ़वाल)	24 फर.
मार्च 2017 ई.	
होला श्री आनन्दपुर साहिब (पं.)	13 मार्च
श्री वीरमदास, बधौछी (पटियाला)	14 मार्च
ज. दि. सं. बा. अतर सिंह जी, (नानकसर चीमा) प्रा.	15 मार्च
शीतला माता (कुराली) पं.	16 मार्च
श्री गुरु रामराय (देहरादून)	17 मार्च
ज. दि. सं. बा. निधान सिंह जी, (श्री हजूर साहिब वाले) ढींडसा (लुधि.)	25 मार्च
पिहोवा तीर्थ (हरियाणा)	26 मार्च

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2073 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
													स्मार्त	वैष्णव
नगर	25 अप्रै., 2016 ई. घं. मि.	25 मई, 2016 ई. घं. मि.	23 जून 2016 ई. घं. मि.	23 जुला. 2016 ई. घं. मि.	21 अग. 2016 ई. घं. मि.	19 सितं. 2016 ई. घं. मि.	19 अक्तू. 2016 ई. घं. मि.	17 नवं. 2016 ई. घं. मि.	17 दिसं. 2016 ई. घं. मि.	15 जन. 2017 ई. घं. मि.	14 फर. 2017 ई. घं. मि.	16 मार्च, 2017 ई. घं. मि.	24 अगस्त, 2016ई. घं. मि.	25 / 26 अग., 2016 ई. घं. मि.
अजमेर	21 43	22 11	21 43	21 52	21 15	20 38	21 01	20 41	21 25	21 05	21 37	22 04	23 31	00 22
अमृतसर	21 52	22 19	21 50	21 54	21 13	20 33	20 51	20 31	21 17	21 00	21 37	22 08	23 23	00 12
अलवर	21 37	22 05	21 37	21 45	21 06	20 29	20 51	20 31	21 16	20 56	21 29	21 57	23 21	00 12
अलीगढ़	21 32	22 00	21 31	21 39	21 00	20 23	20 45	20 25	21 09	20 50	21 23	21 51	23 15	00 05
अहमदाबाद	21 46	22 14	21 47	21 59	21 24	20 50	21 15	20 56	21 38	21 17	21 45	22 09	23 44	00 36
अयोध्या	21 13	21 41	21 13	21 21	20 43	20 07	20 29	20 09	20 53	20 34	21 06	21 33	22 59	23 50
आगरा	21 31	21 58	21 30	21 38	21 01	20 24	20 46	20 26	21 10	20 51	21 23	21 50	23 16	00 07
इन्दौर	21 33	22 00	21 34	21 46	21 11	20 37	21 02	20 43	21 25	21 04	21 32	21 55	23 31	00 23
इलाहाबाद	21 12	21 40	21 12	21 22	20 45	20 10	20 33	20 13	20 57	20 36	21 07	21 33	23 03	00 23
उज्जैन	21 34	22 01	21 35	21 46	21 11	20 37	21 02	20 43	21 25	21.04	21 32	21 56	23 31	00 22
उदयपुर(रा.)	21 45	22 12	21 45	21 56	21 19	20 44	21 08	20 49	21 32	21 11	21 41	22 06	23 38	00 22
ऊना	21 46	22 13	21 44	21 48	21 07	20 27	20 46	20 25	21 11	20 54	21 31	22 02	23 17	00 07
कपूरथला	21 49	22 17	21 47	21 52	21 11	20 31	20 50	20 29	21 15	20 58	21 35	22 06	23 21	00 15
करनाल	21 39	22 07	21 38	21 44	21 04	20 26	20 46	20 26	20 11	20 53	21 28	21 57	23 17	00 07
कांगड़ा	21 47	22 15	21 45	21 48	21 07	20 27	20 45	20 24	21 10	20 54	21 31	22 03	23 16	00 07
कानपुर	21 20	21 48	21 20	21 29	20 51	20 15	20 37	20 18	21 01	20 42	21 13	21 40	23 07	23 58
कुरुक्षेत्र	21 41	22 08	21 39	21 45	21 05	20 26	20 46	20 26	20 11	20 53	21 28	21 58	23 17	00 07
कुल्लू	21 43	22 11	21 42	21 46	21 04	20 24	21 42	20 22	21 08	20 51	21 28	22 00	23 14	00 04
कोटा	21 37	22 04	21 37	21 47	21 10	20 35	20 58	20 39	21 22	21 02	21 32	21 57	23 28	00 19
कोलकाता	20 41	21 09	20 42	20 54	20 19	19 45	20 10	19 51	20 33	20 12	20 40	21 03	22 39	00 24
गुरदासपुर	21 50	22 18	21 48	21 52	21 10	20 30	20 48	20 28	21 14	20 57	21 35	22 07	23 20	00 19
ग्वालियर	21 29	21 56	21 29	21 38	21 00	20 24	20 47	20 27	21 11	20 51	21 23	21 49	20 17	00 19
चण्डीगढ़	21 42	22 09	21 40	21 45	21 05	20 25	20 45	20 24	21 10	20 52	21 28	21 59	23 16	00 07
चम्बा	21 48	22 16	21 46	21 49	21 07	20 27	20 46	20 24	21 12	20 54	21 32	22 04	01 07	00 08
चूरु	21 45	22 13	21 45	21 52	21 13	20 35	20 57	20 36	21 21	21 02	21 36	22 03	23 27	00 31
चेन्नई	21 01	21 28	21 04	21 23	20 54	20 26	20 58	20 40	21 18	20 53	21 13	21 28	23 24	00 17
जम्मू	21 54	22 22	21 52	21 55	21 12	20 32	20 49	20 29	21 15	20 59	21 37	22 10	23 21	00 10
जयपुर	21 39	22 07	21 39	21 48	21 10	20 33	20 55	20 36	21 20	21 00	21 32	21 59	23 25	00 16
जालन्धर	21 49	22 17	21 48	21 52	21 11	20 31	20 50	20 30	21 16	20 59	21 35	22 06	23 22	00 11
जैसलमेर	22 00	22 27	21 59	22 08	21 30	20 53	21 16	20 56	21 40	21 21	21 53	22 20	23 46	00 37
जोधपुर	21 50	22 18	21 50	21 59	21 21	20 45	21 08	20 48	21 32	21 12	21 44	22 10	23 38	00 29
दरभंगा	20 56	21 24	20 56	21 06	20 28	19 52	20 15	19 55	20 39	20 19	20 50	21 17	22 45	23 36
दिल्ली	21 37	22 04	21 36	21 43	21 04	20 26	20 47	20 27	21 12	20 53	21 27	21 55	23 18	00 08

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2073 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.) 25 अप्रै., 2016 ई. घं. मि.	25 मई, 2016 ई. घं. मि.	23 जून 2016 ई. घं. मि.	23 जुला. 2016 ई. घं. मि.	21 अग. 2016 ई. घं. मि.	19 सितं. 2016 ई. घं. मि.	19 अक्तू. 2016 ई. घं. मि.	17 नवं. 2016 ई. घं. मि.	17 दिसं. 2016 ई. घं. मि.	15 जन. 2017 ई. घं. मि.	14 फर. 2017 ई. घं. मि.	16 मार्च, 2017 ई. घं. मि.	श्रीकृष्णजन्माष्टमी स्मार्त 24 अगस्त, 2016 ई. घं. मि.	श्रीकृष्णजन्माष्टमी वैष्णव 25 / 26 अग., 2016 ई. घं. मि.
देहरादून	21 36	22 04	21 35	21 40	21 00	20 21	20 40	20 20	21 06	20 48	21 23	21 54	23 12	00 01
नाहन	21 39	22 07	21 38	21 43	21 03	20 24	20 43	20 23	21 08	20 51	21 26	21 57	23 14	00 04
पटना	20 59	21 26	20 59	21 08	20 31	19 56	20 19	19 59	20 42	20 22	20 53	21 19	22 49	23 39
पटियाला	21 43	22 11	21 42	21 47	21 07	20 28	20 47	20 27	21 13	20 55	21 30	22 01	23 18	00 08
पठानकोट	21 49	22 17	21 48	21 51	21 09	20 29	20 47	20 26	21 13	20 56	21 33	22 06	23 19	00 08
पुणे	21 34	22 02	21 36	21 52	21 19	20 48	21 17	20 58	21 38	21 15	21 39	21 59	23 44	00 37
फगवाड़ा	21 47	22 15	21 46	21 50	21 09	20 30	20 48	20 28	21 14	20 57	21 33	22 04	23 20	00 09
फिरोज़पुर	21 51	22 19	21 50	21 54	21 14	20 34	20 54	20 33	21 19	21 02	21 38	22 08	23 25	00 15
बंगलोर	21 11	21 38	21 15	21 35	21 05	20 37	21 09	20 51	21 30	21 04	21 24	21 39	23 35	00 28
बरेली	21 27	21 55	21 26	21 34	20 55	20 17	20 38	20 18	21 03	20 44	21 17	21 18	23 09	00 13
बिलासपुर (हि.प्र.)	21 43	22 11	21 42	21 46	21 05	20 25	20 44	20 24	21 10	20 52	21 29	22 00	23 16	00 05
बीकानेर	21 52	22 19	21 51	21 58	21 20	20 43	21 04	20 44	21 29	21 10	21 43	22 11	23 34	00 25
बून्दी	21 38	22 05	21 38	21 48	21 11	20 35	20 59	20 39	21 22	21 02	21 33	21 59	23 28	00 20
भटिण्डा	21 49	22 17	21 48	21 53	21 13	20 34	20 54	20 33	21 19	21 01	21 36	22 07	23 25	00 15
भरतपुर	21 33	22 01	21 33	21 03	20 26	20 26	20 48	20 28	21 12	20 53	21 25	21 53	23 18	00 09
भोपाल	21 26	21 54	21 27	21 39	21 03	20 29	20 54	20 35	21 17	20 56	21 25	21 48	23 23	00 15
मण्डी (हि.प्र.)	21 43	22 11	21 42	21 45	21 04	20 24	20 43	20 22	21 08	20 51	21 28	22 00	23 14	00 04
मथुरा	21 33	22 00	21 32	21 40	21 02	20 25	20 47	20 27	21 11	20 52	21 25	21 52	23 17	00 08
मुम्बई	21 39	22 07	21 41	21 56	21 24	20 52	21 20	21 01	21 42	21 19	21 44	22 04	23 48	00 40
रोपड़	21 44	22 11	21 42	21 47	21 06	20 27	20 46	20 25	21 11	20 54	21 30	22 01	23 17	00 07
रोहतक	21 40	22 08	21 39	21 46	21 07	20 29	20 50	20 29	21 14	20 56	21 30	21 59	23 20	00 13
लखनऊ	21 18	21 46	21 18	21 27	20 49	20 12	20 34	20 14	20 58	20 39	21 11	21 38	23 04	00 07
लुधियाना	21 46	22 14	21 45	21 49	21 09	20 29	20 48	20 28	21 14	20 56	21 33	22 03	23 20	00 10
वाराणसी	21 07	21 35	21 08	21 17	20 41	20 05	20 28	20 09	20 52	20 32	21 02	21 28	22 58	23 49
शिमला	21 41	22 09	21 40	21 44	21 03	20 24	20 43	20 22	21 08	20 51	21 27	21 58	23 14	00 04
श्रीनगर (का.)	21 56	22 24	21 54	21 55	21 12	20 31	20 47	20 26	21 13	20 56	21 37	22 11	23 19	00 04
संगरूर	21 45	22 13	21 44	21 49	21 09	20 30	20 50	20 29	21 15	20 57	21 32	22 03	23 20	00 11
सहारनपुर	21 38	22 06	21 37	21 43	21 03	20 24	20 44	20 24	21 09	20 51	21 26	21 56	23 15	00 04
सीकर	21 43	22 11	21 43	21 50	21 12	20 35	20 57	20 38	21 21	21 02	21 35	22 03	23 27	00 18
हरिद्वार	21 35	22 03	21 34	21 39	20 59	20 21	20 40	20 20	21 06	20 48	21 23	21 53	23 12	00 02
हिसार	21 44	22 11	21 43	21 49	21 10	20 32	20 52	20 32	21 17	20 59	21 33	22 02	23 23	00 17
होशियारपुर	21 47	22 15	21 45	21 49	21 08	20 29	20 47	20 27	21 13	20 56	21 32	22 04	23 19	00 13

सन्दिग्ध व्रत–पर्व–व्यवस्था (सं. 2073 वि.)

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), पंचकूला(हरियाणा)–134109

(यदि इस स्तम्भ में चर्चित या अन्य किसी व्रत–पर्व की तिथि के बारे में किसी को सन्देह/शंका हो तो पत्र देकर मुझसे स्पष्टीकरण मांग लेना चाहिए. – प्रियव्रत शर्मा)

(सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)

(1) श्रीजानकी जयन्ती (वैशाख शुक्ल नवमी)

श्री सीता जी का जन्म वैशाख–शुक्ल नवमी मंगलवार को मध्याह्न के समय हुआ था–

"पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः।
भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीता विरासीत् व्रतमत्र कुर्यात्।।"

–(वैष्णवमताब्ज–भास्कर)

इसवर्ष यह नवमी दो दिन 14 और 15 मई, 2016 ई. को (दो दिन) मध्याह्नव्यापिनी है। **अतः युग्मवाक्यानुसार यह पर्व पूर्वविद्धा (अष्टमी–विद्धा) नवमी के दिन 14 मई को मनाया जाएगा।**

(2) वटसावित्री व्रत (ज्येष्ठी पूर्णिमा)

वटसावित्री व्रत के अनुष्ठान में दो परम्पराएं (पक्ष) हैं । एक (उत्तरभारतीय) परम्परा के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ अमा को और दूसरी (दक्षिण–भारतीय) परम्परानुसार ज्येष्ठ पूर्णिमा को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व(चतुर्दशी)विद्धा अमा या पूर्णिमा के दिन ही किया जाता है–

" भूतविद्धा न कर्त्तव्या दर्शः पूर्णा कदाचन।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम्।।"

–(ब्रह्मवैवर्त्त)

इस नियमानुसार इसवर्ष पूर्वविद्धा (चतुर्दशीविद्धा) ज्येष्ठीपूर्णिमा के दिन 19 जून, 2016 ई. को ही दक्षिण भारतीय लोग यह वटसावित्री व्रत करेंगे– यह स्पष्ट है।

ध्यान दें– वेध करने वाली और विद्ध होने वाली तिथियां त्रिमुहूर्त्तव्याप्ति की अपेक्षा रखती हैं। तदनुसार यहां ज्येष्ठ अमा चतुर्दशी से तभी विद्ध मानी जाएगी, जबकि वह (चतुर्दशी) सूर्योदय के बाद कम से कम तीन मुहूर्त्त तक व्याप्त हो और पूर्णिमा/अमा भी सूर्यास्त से पूर्व कम से कम त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी हो, अन्यथा यह व्रत दूसरे दिन होगा। **ध्यान रहे–** एक विशेष नियमानुसार चतुर्दशीतिथि यदि सूर्योदयानन्तर नौ मुहूर्त्त (अठारह घड़ी) तक विद्यमान हो तो वह परवर्त्ती अमा एवं पूर्णिमा को दूषित कर देती है, अर्थात् उस दिन अमा/पूर्णिमा से सम्बद्ध व्रत नहीं करना चाहिए, तब उसे परवर्त्ती दिन में करना होगा– **"भूतोऽष्टादशनाडीभिः दूषयत्युत्तरां तिथिम्"**। लेकिन यह विशेष नियम उसी स्थिति में प्रवृत्त होता है, जहां चतुर्दशी का वेध वर्जित हो। जहां चतुर्दशी का वेध विहित (ग्राह्य) है, वहां यह वाक्य प्रवृत्त नहीं होता। ***"कालमाधव"*** कार ने वटसावित्री व्रत के निर्णय में इस वाक्य की जो प्रवृत्ति दरसाई है, वह सर्वथा भ्रामक है। ***" पुरुषार्थ चिन्तामणि "*** और ***"धर्मसिन्धु"*** आदि के रचयिता आचार्यों ने **कालमाधवकार** के इस भ्रामक निर्णय का प्रतिवाद किया है। ***"पुरुषार्थ–चिन्तामणिकार"*** **का इस बारे यह वचन है,– " यद् भूत उत्तरां तिथिं दूषयति, तदष्टादश–नाडीभिरिति। यत्र पूर्व(चतुर्दशी)विद्धा निषिद्धा तत्रैवायं विशेषविधिः।" *"धर्मसिन्धुकार"* ने भी यही लिखा है –" भूतोऽष्टादश–नाडीभिः दूषयत्युत्तरां तिथिम्" इति वचनं सावित्रीव्रतातिरिक्ते ज्ञेयम्, सावित्री–व्रतोपवासेऽष्टादशनाडी–विद्धाया अपि (अमायाः/पूर्णिमायाः) ग्राह्यत्वात्।"**

(3) कज्जली तृतीया (भाद्र· कृष्ण–तृतीया)

इस पर्व को पर(चतुर्थी)विद्धा तृतीया में मनाने का नियम है। **'निर्णयसिन्धु'** कार का वाक्य है– **"भाद्र–कृष्णतृतीया 'कज्जली' संज्ञा। सा परा ग्राह्या।"**

श्रीगणेशचतुर्थी एवम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रत

[भारत के कुछ प्रसिद्ध नगरों के लिए चन्द्रोदय (संवत् 2073 वि.) (भा. स्टैं. टा.)]

नगर	श्रीगणेशचतुर्थी चन्द्रोदय (I.S.T.)												श्रीकृष्णजन्माष्टमी	
													स्मार्त	वैष्णव
	25 अप्रै., 2016 ई. घं. मि.	25 मई, 2016 ई. घं. मि.	23 जून 2016 ई. घं. मि.	23 जुला. 2016 ई. घं. मि.	21 अग. 2016 ई. घं. मि.	19 सितं. 2016 ई. घं. मि.	19 अक्तू. 2016 ई. घं. मि.	17 नवं. 2016 ई. घं. मि.	17 दिसं. 2016 ई. घं. मि.	15 जन. 2017 ई. घं. मि.	14 फर. 2017 ई. घं. मि.	16 मार्च, 2017 ई. घं. मि.	24 अगस्त, 2016 ई. घं. मि.	25 / 26 अग., 2016 ई. घं. मि.
देहरादून	21 36	22 04	21 35	21 40	21 00	20 21	20 40	20 20	21 06	20 48	21 23	21 54	23 12	00 01
नाहन	21 39												3 14	00 04
पटना	20 59												2 49	23 39
पटियाला	21 43												3 18	00 08
पठानकोट	21 49												3 19	00 08
पुणे	21 34												3 44	00 37
फगवाड़ा	21 47												3 20	00 09
फिरोज़पुर	21 51												3 25	00 15
बंगलोर	21 11												3 35	00 28
बरेली	21 27												3 09	00 13
बिलासपुर (हि.प्र.)	21 43												3 16	00 05
बीकानेर	21 52												3 34	00 25
बून्दी	21 38												3 28	00 20
भटिण्डा	21 49												3 25	00 15
भरतपुर	21 33												3 18	00 09
भोपाल	21 26												3 23	00 15
मण्डी (हि.प्र.)	21 43												3 14	00 04
मथुरा	21 33												3 17	00 08
मुम्बई	21 39												3 48	00 40
रोपड़	21 44												3 17	00 07
रोहतक	21 40												3 20	00 13
लखनऊ	21 18												3 04	00 07
लुधियाना	21 46												3 20	00 10
वाराणसी	21 07												2 58	23 49
शिमला	21 41												3 14	00 04
श्रीनगर (का.)	21 56												3 19	00 04
संगरूर	21 45												3 20	00 11
सहारनपुर	21 38												3 15	00 04
सीकर	21 43												3 27	00 18
हरिद्वार	21 35	22 03	[illegible]	[illegible]	20 59	20 21	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	3 12	00 02
हिसार	21 44	22 11	21 43	21 49	21 10	20 32	20 52	20 32	21 17	20 59	21 33	22 02	23 23	00 17
होशियारपुर	21 47	22 15	21 45	21 49	21 08	20 29	20 47	20 27	21 13	20 56	21 32	22 04	23 19	00 13

लेकिन इस वर्ष तृतीया 21 अगस्त, 2016 ई. को त्रिमुहूर्त्ताल्पा है, जिससे यह यहां चतुर्थी से विद्धा नहीं है। अतः इसे नियमानुसार पहले दिन 20 अगस्त, 2016 ई. को ही मनाया जाएगा।

(4) जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त–वैष्णव)

इसवर्ष 24 अगस्त, 2016 ई. को अष्टमी निशीथ(चन्द्रोदय)–व्यापिनी है, अतः स्मार्त्तों का यह व्रत इसी दिन होगा। 25 अगस्त, 2016 ई. को अष्टमी नवमीयुता है, जिससे वैष्णवों का व्रत इस दिन होना चाहिए। इस दिन रोहिणी नक्षत्र अष्टमी और निशीथ– दोनों का स्पर्श कर रहा है, अतः इस दिन **'जयन्ती'** योग भी बनता है। कुछ आचार्य जयन्तीयोग वाले दिन ही स्मार्त्तों व वैष्णवों– दोनों का व्रत एकत्र करने का निर्णय देते हैं, लेकिन **हेमाद्रि** आदि अनेक आचार्य ऐसा नहीं मानते। क्योंकि 25 अगस्त को केवल रोहिणी अर्धरात्रिव्यापी है, अष्टमी नहीं। अतः इसदिन केवल वैष्णवों का जयन्ती व्रत हो सकता है, स्मार्त्तों का नहीं। **स्मार्त्त तो अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी को ही महत्त्व देते हैं। अतः उनका जन्माष्टमी व्रत 24 अगस्त को ही होगा। मीमांसक भट्टोजिदीक्षित** ने भी **'तिथिनिर्णय'** में लिखा है कि–रोहिणीयोग न होने पर भी अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ही लेनी चाहिए। दूसरे दिन अर्धरात्रि के समय रोहिणी का योग कोई अर्थ नहीं रखता–" **रोहिणीयोगाऽभावेऽपि अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या। परदिने रोहिणीयोगः अकिञ्चित्करः।''**

इस प्रकार की स्थिति विगत वर्षों में भी अनेक बार आई है। लेकिन पंचांगकारों ने वहां इन दोनों सम्प्रदायों के व्रतों को एकत्र (Combined) नहीं किया।[⊗] इस परम्परानुसार भी ये दोनों व्रत 24 और 25 अगस्त, 2016 ई. को भिन्न–भिन्न दिनों में ही किए जाने चाहिएं। इस विषय पर धर्मग्रन्थों में तुमुल वाद–विवाद है। हम उसकी उपेक्षा करते हैं।

⊗ ***देखिए– सं. 2054, 2055, 2057, 2059, 2060, 2065, 2066 व 2068 में ऐसी ही स्थिति आ चुकी है। वहां सभी पंचांगकारों ने स्मार्त्तों व वैष्णवों के व्रत दो भिन्न–भिन्न दिनों में ही निर्दिष्ट किए थे।***

(5) दूर्वाष्टमी व्रत (भाद्र. शुक्ल अष्टमी)

यह स्त्रियों का व्रत है। इसव्रत को रौहिण मुहूर्त्त (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त भाद्र. शुक्ल अष्टमी में करने का निर्देश है। यहां रौहिण मुहूर्त्त के समय ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र वर्जित हैं। यदि इस दिन अगस्त्य तारा उदित (दृश्य) हो तो इसे भाद्र. शुक्ल से निरन्तर पूर्ववर्त्ती ऐसे पक्ष की अष्टमी में करने का निर्देश है, जहां अगस्त्य अस्त (लुप्त) हो। इसवर्ष भाद्र. शुक्ल अष्टमी ज्येष्ठादूषित है और वहां पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली आदि प्रदेशों में अगस्त्य भी उदित है। अतः इसवर्ष यह व्रत इन प्रदेशों में भाद्र. कृष्ण अष्टमी के दिन **(25 अगस्त, 2016 ई. को) रौहिण मुहूर्त्त में किया जाएगा।** इसदिन वैष्णवों का अष्टमी व्रत भी है। जन्माष्टमी का अनुष्ठान अर्धरात्रि में और दूर्वाष्टमी का पूजन रौहिण(दिन के नवम)मुहूर्त्त में होगा। अतः इसदिन इन दोनों व्रतों का अनुष्ठान भिन्न–भिन्न कालों में अनुष्ठेय होने से व्रतियों को कोई कठिनाई नहीं होगी।

(6) श्री उपाङ्गललिता व्रत

यह व्रत अपराह्णव्यापिनी आश्विन शुक्ल पंचमी के दिन किया जाता है–

"अत्र पंचमी अपराह्णव्यापिनी ग्राह्या, अपराह्णस्यैव तत्पूजाकालत्वोपपत्तेः।"

– *(धर्मसिन्धुः)*

यदि दोनों दिन पंचमी पूर्णतः अपराह्ण को व्याप्त करे अथवा समान एवम् असमानरूप से उसके एकदेश को व्याप्त करे तो यह व्रत पहले दिन होगा। दोनों दिन अपराह्ण में पंचमी की अव्याप्ति होने पर यह व्रत दूसरे दिन होता है।

इसवर्ष पंचमी 5 और 6 अक्तूबर, 2016 ई. को दोनों दिन अपराह्ण को व्याप्त कर रही है, अतः उक्त नियमानुसार यह पर्व 5 अक्तूबर, 2016 ई. को होगा।

(7) सरस्वती आवाहन / पूजन / बलिदान / विसर्जन

सरस्वती का आवाहन, पूजन, बलिदान और विसर्जन आश्विन शुक्लपक्ष में क्रमशः मूल, पू.षा., उ.षा. और श्रवण नक्षत्रों के प्रथम पाद में किया जाता है। यहां आवाहन आदि दिन के समय ही किए जाते हैं, रात्रि में ये नही होते। यदि मूल आदि नक्षत्र सूर्यास्त से पूर्व तीन मुहूर्त से कम हों या उनका प्रथम पाद रात्रि के समय विद्यमान हो तो आवाहन आदि दूसरे दिन मूल आदि के द्वितीय आदि किसी भी चरण में (दिन के समय ही) करने चाहिएं–

"तत्र मूलस्य प्रथमे पादे सूर्यास्तात् प्राक् त्रिमुहूर्त्तव्यापिनि–सरस्वत्यावाहनम्। त्रिमुहूर्त्तन्यूनत्वे रात्रौ वा प्रथमपादसत्त्वे तस्य विशेषवचनं विना ग्राह्यत्वाभावाद् द्वितीयादिपादे परदिन एवावाहनम्, एवं पूर्वाषाढादि–नक्षत्रं पूजादौ दिनव्याप्त्येव ग्राह्यम्।–" (*धर्मसिन्धुः*)

ध्यान दें– यहां विशेष बात यह है कि– केवल विसर्जन श्रवणनक्षत्र के प्रथमपाद में रात्रि के प्रथमप्रहर में भी किया जा सकता है,–**"विसर्जनन्तु श्रवण–प्रथमपादे रात्रिभागगतेऽपिकार्यम्, विशेष–वचनात्। तच्च रात्रेः प्रथमप्रहरपर्यन्तमेव इति भाति।"** - (*धर्मसिन्धुः*)

इसवर्ष आश्विन शुक्ल में मूल, पू.षा. व उ.षा. के प्रथम पाद क्रमशः 7, 8 व 9 अक्तू. को रात्रिगामी (रात्रिस्पर्शी) हैं, अतः उपरोक्त निर्णयानुसार इन नक्षत्रों के प्रथमपादों में अनुष्ठेय सरस्वती के आवाहन, पूजन व बलिदान-कृत्य इन नक्षत्रों में क्रमशः 8, 9, व 10 अक्तूबर को दिन के समय प्रथमपाद के अतिरिक्त अन्य किसी भी दिन द्वितीयादि पाद में किए जाएंगे। इसवर्ष श्रवण का प्रथमपाद पूर्णतया रात्रिगामी है, अतः इस नक्षत्र में अनुष्ठेय सरस्वती–विसर्जन तो उपरोक्त विशेष नियमानुसार 10 अक्तूबर को ही इस (श्रवण) नक्षत्र के रात्रिगत प्रथम पाद में (19 घं. 40 मि. से 25 घं. 43 मि. तक की अवधि में) किया जा सकेगा।

(8) करक चतुर्थी व्रत (कार्त्ति. कृष्ण चतुर्थी)

इसव्रत की तिथि का निर्णायक (Criterion) **'श्रीगणेशचतुर्थी व्रत'** वाला ही है। कार्तिक कृष्ण चतुर्थी 18, 19 अक्तूबर, 2016 ई.– दोनों दिन **चन्द्रोदय का स्पर्श नहीं कर रही है, अतः शास्त्रीय निर्णयानुसार यह व्रत 19 अक्तूबर, 2016 ई. को ही होगा–'दिनद्वये चन्द्रोदय–व्याप्त्यभावे परैव ।"**

–(*धर्मसिन्धु*)

(9) कार्त्तिक शुक्ल (हरिप्रबोधिनी) एकादशी व्रत

इसवर्ष कार्त्ति. शुक्ल द्वादशी का क्षय होने से स्मार्त्तों का एकादशी (प्रबोधिनी) व्रत सूर्योदयविद्धा एकादशी के दिन आ पड़ा है, जिससे कुछ लोग यहां भ्रान्त हो सकते हैं। उनकी भ्रान्ति के निवारणार्थ यहां नीचे स्पष्टीकरण है। देखिए–

द्वादशी का क्षय हो जाने पर स्मार्त्तों को दशमीयुता एवं वैष्णवों को द्वादशी–त्रयोदशीयुता एकादशी के दिन व्रत करना चाहिए। यहां **'पद्मपुराण'** का वाक्य है–

" एकादशी द्वादशी च रात्रिशेषे त्रयोदशी।
त्र्यहःस्पृक् तदहोरात्रं नोपोष्यं तत्सुतार्थिभिः।।"

इस वाक्यानुसार 11, 12, 13 तिथियों से मिश्रित दिन में स्मार्त्तों (गृहस्थियों) के व्रत का निषेध और वैष्णवों के व्रत का विधान है। अतः यहां **पद्मपुराण** का यह वाक्य प्रकारान्तरेण स्मार्त्तों को सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन एकादशीव्रत करने की ओर संकेत करता है। इसी स्थिति में दशमीमिश्रित एकादशी में व्रत करने का स्पष्ट निर्देश **'वृद्धवसिष्ठ'** के इस वाक्य में भी है–

"द्वादशी स्वल्पमल्पापि यदि न स्यात्परेऽहनि।
दशमीमिश्रिता कार्या महापातकनाशिनी।।"

ध्यान दें– यहां **'वृद्धवसिष्ठ'** के इस विशेष वचनानुसार सूर्योदयवेधवती दशमी के दिन स्मार्त्तों का व्रत निर्धारित किया गया है, जोकि **"उदयोपरि विद्धा तु............"**–इस सामान्य नियमानुसार निःसन्देह निषिद्ध है। लेकिन शास्त्रों द्वारा स्मार्त्तों के लिए त्रयोदशी में पारणा भी सर्वथा वर्जित मानी गई है। यदि इस (द्वादशीक्षय की) स्थिति में स्मार्त्तों

का व्रत भी वैष्णवों के साथ कर दिया जाए तो स्मार्त्तों को व्रत की पारणा त्रयोदशी में करने की स्थिति आ पड़ेगी। अतः अन्य विकल्प के अभाव में स्मार्त्तों को दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति दी गई है। **किंच**– इस प्रकार की स्थिति में जब स्मार्त्तों को त्रयोदशी में पारणा करने की नौबत आ पड़े तब दशमीमिश्रिता एकादशी में ही व्रत करने की अनुमति **'ऋष्यशृंग'** ने भी इस वाक्य में स्पष्ट दी है–

"पारणाहे न लभ्येत द्वादशी कलयापि चेत्।
तदानीं दशमीविद्धाऽप्युपोष्यैकादशी तिथिः।।"

इस प्रकार स्पष्ट है, इसवर्ष 10 नवंबर, 2016 ई. को सूर्योदय–वेधवती दशमी के दिन लिखा गया यह स्मार्त्तों का " कार्तिक शुक्ल (देवप्रबोधिनी) एकादशी का व्रत " सर्वथा शास्त्रीय है।

(10) भीष्मपंचक प्रारम्भ / समाप्त

शास्त्रों में **भीष्मपंचक** व्रत का अनुष्ठान (जैसा कि **'पंचक'** शब्द से ही स्पष्ट है) केवल पांच दिन (कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक) का ही लिखा है। "यदि एकादशी से पूर्णिमा तक की अवधि में कोई तिथिक्षय हो जाने से एकादशी से पूर्णिमा तक की दिनसंख्या चार ही रह जाए तब दशमीविद्धा एकादशी से ही यह व्रत प्रारम्भ करके शुद्ध (चतुर्दशी से अविद्ध) औदयिक पूर्णिमा के दिन, यदि पूर्णिमा का क्षय हुआ हो तो चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त किया जाए । **तथा च**– यदि इन पांच तिथियों में से किसी एक की वृद्धि हो जाने से व्रत के दिन 6 बनते हों, तो शुद्ध (दशमी से अविद्ध) एकादशी के दिन प्रारम्भ करके चतुर्दशी–विद्धा पूर्णिमा के दिन, यदि पूर्णिमा की वृद्धि हुई हो तो पहिली पूर्णिमा के दिन ही इसे समाप्त करना चाहिए"– ऐसा धर्मशास्त्र का प्रतिपादन है। इस बारे में ***'धर्मसिन्धु'*** का वचन है,–

"एकादश्यादि–दिनपंचके भीष्मपंचकव्रतमुक्तम्। तच्च शुद्धैकादश्यामारभ्य चतुर्दश्यविद्धौदयिक– पौर्णमास्यां समापनीयम्। यदि शुद्धैकादश्यामारंभे क्षयवशेन पौर्णमास्यां पंचदिनात्मकव्रतसमाप्तिर्न घटते, तदा विद्धैकादश्यामपि आरम्भः। शुद्धैकादश्यामारम्भेऽपि दिनवृद्धिवशेन परविद्धपौर्णमास्यां समापने यदि षड्दिनापत्तिस्तदा चतुर्दशीविद्ध–पूर्णिमायामपि समाप्तिः कार्या।"

इसवर्ष कार्ति. शुक्ल में द्वादशी का क्षय हो जाने से भीष्मपञ्चक के दिन केवल चार ही बच रहे हैं। अतः उपरोक्त नियमानुसार यहां दशमीविद्धा एकादशी (10 नवं., 2016 ई.) से भीष्मपञ्चक का आरम्भ माना गया है। स्पष्ट है, इससे पूर्णिमा तक के दिन पांच हो गए हैं।

(11) तुलसी–विवाह

जैसा कि पीछे लिख आए हैं कि– कार्तिक शुक्ल एकादशी (प्रबोधिनी एकादशी) की पारणा वाले दिन प्रबोधोत्सव मनाया जाता है। **" इसी दिन अथवा इससे अग्रिम चार (द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, पूर्णिमा वाले) दिनों में से किसी भी दिन विवाहनक्षत्र में तुलसीविवाह किया जा सकता है" – ऐसा शास्त्रनिर्देश है।** लेकिन प्रबोधोत्सव के साथ एकादशी व्रत–पारणा वाले दिन पूर्वरात्रि में (अर्धरात्रि से पहिले ही रात्रिकाल में) तुलसीविवाह करने की परम्परा है– ऐसा **'धर्मसिन्धुकार'** का निर्देश है। यदि पारणा के दिन पूर्वरात्रिकाल में विवाहनक्षत्र न हो तो दिन के समय प्राप्त विवाहनक्षत्र में, यदि वहां भी न मिले तो उसके बिना भी पूर्वरात्रि में तुलसीविवाह पारणा के दिन कर लेना चाहिए।

इसवर्ष 11 नवम्बर, 2016 ई. को प्रबोधोत्सव है। इसदिन पूर्वरात्रि में विवाहनक्षत्र उ.भा. भी है, अतः इसदिन 'तुलसी विवाह' शास्त्रविहित है।

(12) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (पौष कृष्ण)

16 दिसंबर, 2016 ई. को चतुर्थी 20 घं. 36 मि. पर प्रारम्भ होती है और इसदिन चन्द्रोदय 20 घं. 8 मि. पर ही हो जाता है। **किञ्च**– 17 दिसंबर को चन्द्रोदय चतुर्थीसमाप्ति (18 घं. 51 मि.) के अनन्तर 21 घं. 10 मि. पर

हो रहा है। इस प्रकार यहां दोनों दिन चतुर्थी चन्द्रोदय–स्पर्श से वर्जित है। अतः यहां श्रीगणेशचतुर्थी व्रत दूसरे दिन (17 दिसंबर) को ही होगा – **" दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।"**–(*धर्मसिन्धु*)

(13) सत्यनारायण व्रत (पौष शुक्ल)

सत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा में किया जाता है। **इसवर्ष पौष–पूर्णिमा केवल 11 जनवरी, 2017 ई. को प्रदोषव्यापिनी है। अतः यह व्रत इसी दिन लिखा गया है।** 12 जनवरी को तो पूर्णिमा प्रदोष से लगभग 32 मि. पहिले ही समाप्त हो जाती है।

11 जनवरी को (इस व्रत वाले दिन) पंजाब, हरियाणा आदि में प्रदोष लगभग 17 घं. 35 मि. से 20 घं. 22 मि. तक रहेगा।

(14) चन्द्रदर्शन (फाल्गुन शुक्लीय)

27 फरवरी, 2017 ई. को सूर्यास्त के समय भारत के किसी भी स्थल पर चन्द्रमा का उन्नतांश (altitude) 12° प्राप्त नहीं है। वहां यह उन्नतांश $11\frac{1}{2}^{\circ}$ के लगभग ही उपलब्ध है। अतः भारत में 27 फरवरी, 2017 ई. को चन्द्रदर्शन की सम्भावना नहीं है।

(15) वारुणी–महावारुणी पर्व

वारुणी पर्व 3 प्रकार का है–

(i) **साधारण वारुणी पर्व–** जब चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का शतभिषक् नक्षत्र से सम्पर्क हो तो इसे सामान्यतः **'वारुणीपर्व'** ही कहा जाता है।

(ii) **महावारुणीपर्व–** जब चैत्र कृष्ण–त्रयोदशी का शत–भिषक् नक्षत्र व शनिवार (इन दोनों) से सम्पर्क हो तो इसे **'महावारुणी'** पर्व कहते हैं।

(iii) **महामहावारुणीपर्व–** जब चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का शनिवार, शतभिषक् नक्षत्र व शुभयोग (इन तीनों) से सम्पर्क हो तो इसे **'महामहावारुणी'** पर्व कहा जाता हैं।

इन तीनों पर्वों में तीर्थस्थानों पर स्नान–दान–जप आदि का भारी माहात्म्य माना गया है। **ध्यान रहे कि–** इन तीनों पर्वों के रात्रिगत काल का कोई माहात्म्य नहीं माना जाता।

इसवर्ष तारीख 25 मार्च, 2017 ई. को 16 घं. 58 मि. से सूर्यास्त तक "महावारुणी पर्व" है, क्योंकि इस अवधि में चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का शनिवार और शतभिषक् नक्षत्र से योग है।

इसीवर्ष तारीख 26 मार्च, 2017 ई. को सूर्योदय से 12 घं. 29 मि. तक चैत्र कृष्ण त्रयोदशी का केवल शतभिषक् नक्षत्र से योग होने के कारण सामान्य 'वारुणीयोग' भी बनता है। ध्यान दें– यहां त्रयोदशी से शुभ योग का सम्पर्क होने पर भी **"महामहावारुणी "** योग नहीं बनता, क्योंकि इसके लिए शनिवार का सम्पर्क भी अपेक्षित है, जोकि यहां नहीं है। अतः यहां केवल त्रयोदशी और शतभिषा– इन दोनों के सम्पर्क से उत्पन्न सामान्य **"वारुणी पर्व"** ही सम्पन्न होता है।

(16) वासन्त–नवरात्रारम्भ (2074 वि.)

28 मार्च, 2017 ई. को चैत्रशुक्ल–प्रतिपदा का क्षय है। इस स्थिति में **'वासन्तनवरात्र'** का आरम्भ इसी दिन होगा। यहां अमायुता प्रतिपदा का दोष नहीं होगा। 'निर्णयसिन्धु' का वाक्य है– **" नवरात्रारम्भे परदिने प्रतिपदोऽत्यन्ताऽसत्वे तु दर्शयुता पूर्वैव प्रतिपद्ग्राह्या।"– इति।**

गण्डमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2016 से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016–17 ई.	घं.	मि.	2016–17 ई.	घं.	मि.
7 जन.	8	56	9 जन.	10	00	4 मई	16	00	6 मई	10	22	30 अग.	9	12	1 सितं.	10	53	27 दिसं.	6	27	29 दिसं.	11	17
16 जन.	2	32	17 जन.	23	57	12 मई	22	44	15 मई	1	52	9 सितं.	4	26	11 सितं.	8	44	5 जन.	16	45	7 जन.	14	18
24 जन.	20	44	26 जन.	23	39	22 मई	21	33	25 मई	1	19	18 सितं.	3	22	19 सितं.	22	28	13 जन.	23	49	15 जन.	22	43
3 फर.	18	08	5 फर.	19	43	1 जून	0	41	2 जून	20	16	26 सितं.	15	03	28 सितं.	17	25	23 जन.	13	56	25 जन.	18	46
12 फर.	9	07	14 फर.	5	32	9 जून	7	30	11 जून	9	29	6 अक्तू.	11	40	8 अक्तू.	16	46	1 फर.	22	06	3 फर.	20	01
21 फर.	3	59	23 फर.	7	22	19 जून	4	14	21 जून	7	30	15 अक्तू.	14	01	17 अक्तू.	8	16	10 फर.	9	39	12 फर.	8	39
2 मार्च	2	37	4 मार्च	5	19	28 जून	7	04	30 जून	3	55	23 अक्तू.	20	38	25 अक्तू.	23	02	19 फर.	22	06	22 फर.	3	17
10 मार्च	18	21	12 मार्च	13	14	6 जुला.	16	59	8 जुला.	18	10	2 नवं.	17	57	4 नवं.	23	20	1 मार्च	4	43	3 मार्च	1	41
19 मार्च	9	49	21 मार्च	13	46	16 जुला.	11	56	18 जुला.	15	03	12 नवं.	1	00	13 नवं.	19	36	9 मार्च	17	12	11 मार्च	17	07
29 मार्च	9	40	31 मार्च	13	23	25 जुला.	12	26	27 जुला.	9	40	20 नवं.	3	44	22 नवं.	5	08	19 मार्च	6	14	21 मार्च	11	51
7 अप्रै.	5	20	8 अप्रै.	23	22	3 अग.	1	52	5 अग.	2	58	29 नवं.	23	55	2 दिसं.	5	05	28 मार्च	13	40	30 मार्च	9	24
15 अप्रै.	15	36	17 अप्रै.	19	32	12 अग.	20	17	14 अग.	23	46	9 दिसं.	10	12	11 दिसं.	6	13	– – –	– – –		– – –	– – –	
25 अप्रै.	15	39	27 अप्रै.	19	43	21 अग.	18	45	23 अग.	15	12	17 दिसं.	13	08	19 दिसं.	13	02						

पंचकों का प्रारम्भ एवम् समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

(1 जनवरी, सन् 2016 से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त			प्रारम्भ			समाप्त		
2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016 ई.	घं.	मि.	2016–17 ई.	घं.	मि.	2016–17 ई.	घं.	मि.	2017 ई.	घं.	मि.	2017 ई.	घं.	मि.
12 जन.	19	18	17 जन.	1	13	28 मई	16	01	1 जून	22	38	12 अक्तू.	7	51	16 अक्तू.	11	14	25 फर.	19	17	2 मार्च	3	16
9 फर.	4	11	13 फर.	7	12	24 जून	21	25	29 जून	5	38	8 नवं.	16	32	12 नवं.	22	30	25 मार्च	4	57	29 मार्च	11	38
7 मार्च	14	51	11 मार्च	15	42	22 जुला.	3	42	26 जुला.	11	06	5 दिसं.	23	02	10 दिसं.	8	29	– – –	– –		– – –	– –	
4 अप्रैल	1	15	8 अप्रैल	2	21	18 अग.	11	52	22 अग.	16	58	2 जन.	4	29	6 जन.	15	45						
1 मई	9	43	5 नई	13	18	14 सितं.	21	43	19 सितं.	0	55	29 जन.	10	54	2 फर.	21	11						

रविवार कैलेण्डर (1 जनवरी, सन् 2016 से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

2016 ई.	रविवार की तारीखें					2016 ई.	रविवार की तारीखें					2016 ई.	रविवार की तारीखें					2017 ई.	रविवार की तारीखें				
जनवरी	3	10	17	24	31	मई	1	8	15	22	29	सितंबर	4	11	18	25	–	जनवरी	1	8	15	22	29
फरवरी	7	14	21	28	–	जून	5	12	19	26	–	अक्तूबर	2	9	16	23	30	फरवरी	5	12	19	26	–
मार्च	6	13	20	27	–	जुलाई	3	10	17	24	31	नवंबर	6	13	20	27	–	मार्च	5	12	19	26	–
अप्रैल	3	10	17	24	–	अगस्त	7	14	21	28	–	दिसंबर	4	11	18	25	–						

अर्धकुम्भ हरिद्वार एवम् कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन, (सं. 2073 वि.)

चैत्रशुक्ल–सप्तमी, बुधवार (13 अप्रैल, 2016 ई.) एवम् वैशाख पूर्णिमा, शनिवार (21 मई, 2016 ई.),

लेखक –प्रियव्रत शर्मा,

हिन्दुओं के सभी प्राचीन उत्सव धार्मिक आधार लिए हुए हैं। वे मनोरंजन के साथ–साथ मानव के चरित्र को आवश्यक विधियों की ओर प्रवृत्त और निषेधों से निवृत्त कर एक ऐसे अनुशासन में निबद्ध करते हैं, जिससे मानव ऐहलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय एवं निःश्रेयस प्राप्त करता है। वे शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मिक शुद्धि पर समान रूपेण बल देते हैं। इन उत्सवों में चार कुम्भपर्वों का स्थान विशालता और अलौकिक माहात्म्य की दृष्टि से वस्तुतः मूर्धन्य है। ये धार्मिक पर्व अपने अद्वितीय माहात्म्य के कारण प्रत्येक द्वादशाब्दी में एक–एक बार हरिद्वार, उज्जैन, प्रयाग, नासिक में अपार जनसमूह को आकृष्ट करने के लिए भारत में ही नहीं, समस्त विश्व में विख्यात हैं । यदि हम इन्हें विश्व के सबसे बडे 'जनसंगम' कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। अन्य सभी हिन्दु पर्वोत्सवों की भांति ये कुम्भपर्व भी ग्रहों की राशि–नक्षत्रों में विशेष स्थितियों से सम्बद्ध हैं। इन कुम्भपर्वों की तिथियों का निर्धारण सूर्य, गुरु और चन्द्र की विभिन्न स्थितियों पर निर्भर करता है।

कुम्भपर्व क्यों मनाए जाते हैं ?

समुद्रमन्थन से प्राप्त अमृतकलश को इन्द्र का पुत्र जयन्त राक्षसों से दूर देवताओं की अनुमति से लेकर भागा तो राक्षसों और देवताओं के मध्य अमृतप्राप्ति के लिए बारह दिव्य दिन (बारह सौर वर्ष) तक घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध के दौरान अमृतकलश को राक्षसों से बचाने के लिए कभी प्रयाग, कभी उज्जैन, कभी हरिद्वार और कभी गोदावरी तट पर नासिक (त्र्यम्बक)में छुपाया गया। इसलिए इन चारों स्थलों पर बारह सौर वर्षों में एक एक बार कुम्भपर्व मनाया जाता है। इस अमृतकलश को देवासुरसंग्राम के दिनों में सूर्य ने फूटने से बचाया और गुरु (बृहस्पति) ने इसकी देखभाल (सुरक्षा) की एवम् चन्द्रमा ने भी राक्षसों को इससे वंचित रखने के लिए पूरा प्रयास किया । यही कारण है, कि– इन तीनों की विशेष राशियों में स्थिति के समय इन चार स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं। कहीं ऐसा भी लिखा है कि–दैत्य–देवों की छीना–झपटी में अमृतकलश से अमृत की चार बूंदें हरिद्वार आदि इन चार तीर्थस्थलों में गिर गई थीं, इसलिए इन स्थलों पर कुम्भपर्व मनाये जाते हैं।

इस गाथा के अतिरिक्त एक और भी गाथा है। कश्यप ऋषि की दो पत्नियां कद्रु एवं विनता थीं। इन दोनों में आपसी द्वेष बहुत था। एक बार इन दोनों में शर्त लगी। कद्रु का कहना था, कि सूर्य के घोड़े काले हैं और वनिता का कहना था, सफेद हैं। कद्रु का पुत्र नागराज था और विनता का पुत्र गरुड़। नागराज ने अपनी माता को जिताने के लिए सूर्यलोक में जाकर घोड़ों को अपने काले शरीर से ढक लिया। इस प्रकार उसने अपनी माता को विजयी बना दिया। विनता को शर्त के अनुसार कद्रु की दासी बनना पड़ा। गरुड़ अपनी मां के दासीभाव से बहुत क्षुब्ध रहते थे। उन्होंने अपनी माता के दासीभाव से मुक्ति के लिए नागलोक में जाकर अमृतकुम्भ लाने का प्रयत्न किया । रास्ते मे हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन तथा त्र्यम्बकेश्वर (नासिक) में अमृतकुम्भ को रखकर, उन्हें वहां इन्द्र के साथ युद्ध करना पड़ा। 12 दिव्य दिनों (12 सौर वर्षों) तक युद्ध चलता रहा। इस युद्ध के दौरान इन स्थानों पर अमृत गिरने से इनका धार्मिक महत्त्व बना। इसी कारण इन चारों स्थानों पर कुम्भपर्व प्रारम्भ हुए। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं। परन्तु सभी में अमृत का पात्र इन्हीं चार स्थानों पर रखने अथवा अमृत के बूंद इन्हीं स्थानों पर गिरने आदि का आख्यान एक सा है, भले ही किसी ने किसी के साथ लड़ने के लिए पात्र वहां रखा अथवा अमृत का पात्र वहां छिपा दिया। धर्मशास्त्र भी एक से वाक्यों से कुम्भपर्व के स्थानों का महत्त्व बखानते हैं, कि वहां स्नान करने से अमृतत्व की प्राप्ति होती है, इत्यादि। पुराणों में अन्य कथाएं भी हैं, जिनका सम्बन्ध कुम्भपर्वों से है।

इन चार महाकुम्भ पर्वों के अलावा हरिद्वार एवं प्रयागराज में अर्धकुम्भ भी मनाए जाते हैं, जो स्थानीय कुम्भमहापर्व से लगभग 6 वर्ष बाद घटित हुआ करते हैं। इन अर्धकुम्भों का भी स्नान–दान–जपादि के लिए बहुत माहात्म्य माना गया है। **ध्यान रहे–** उज्जैन और नासिक में अर्धकुम्भ मनाने की परम्परा नहीं है।

इस वर्ष (सं. 2073 वि.) में चैत्रशुक्ल सप्तमी, बुधवार के दिन 13 अप्रैल, सन् 2016 ई. को सिंहस्थ गुरु के समय सूर्य के मेष संक्रमण काल मेंहरिद्वार में अर्धकुम्भ पर्व एवं इसी वर्ष वैशाख पूर्णिमा, शनिवार के दिन 21 मई,सन् 2016 ई. को वृषस्थ सूर्य एवं सिंहस्थ गुरु के काल में उज्जैन का कुम्भ (सिंहस्थ)

महापर्व घटित हो रहा है। ध्यान दें– उज्जैन का यह कुम्भमहापर्व अधिकतर मेषस्थ सूर्य के समय घटित होता है, लेकिन कभी–कभार वृषस्थ सूर्य में भी आ जाता है। इस बार भी यह वृषस्थ सूर्यकाल में घटित हो रहा है। इनकी (अर्धकुम्भ हरिद्वार एवं महाकुम्भ उज्जैन की) स्नानादि तिथियों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

–: अर्धकुम्भ हरिद्वार की स्नानतिथियां :–

प्रथम स्नान – चैत्र अमावस, गुरुवार, (सं. 2072 वि.) (7 अप्रैल, सन् 2016 ई.)।

द्वितीय स्नान– चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, शुक्रवार (सं. 2073 वि.) (8 अप्रैल, सन् 2016 ई.)। नवरात्र–प्रारम्भतिथि।

तृतीय (प्रमुख) स्नानः– चैत्रशुक्ल सप्तमी बुधवार (सं. 2073 वि.) (13 अप्रै., 2016 ई.)। मेष संक्रान्ति के कारण यह तिथि इस अर्द्धकुम्भ की प्रमुख स्नानतिथि है। क्योंकि अरुणोदयवेला से ही स्नानारम्भ की परम्परा धर्मनिष्ठ श्रद्धालु जनता अपनाए हुए है, जिससे ऐसे परमपुनीत पर्व पर पुण्यार्जन का अवसर उसे नहीं चूकना चाहिए। वैसे ध्यातव्य है कि–इसदिन संक्रान्ति का पुण्यकाल मध्याह्नबाद घटित हो रहा है, जिसमें स्नान–दानादि का अक्षुण्ण फल भी शास्त्रों में पदे–पदे चर्चित है।

चतुर्थ स्नान– चैत्र शुक्ल एकादशी, रविवार (सं. 2073 वि.) (17 अप्रै., सन् 2016 ई.)।

पंचम स्नान–चैत्री पूर्णिमा, शुक्रवार (सं. 2073 वि.) (22 अप्रै., 2016 ई.)।

षष्ठ स्नान– वैशाख कृष्ण एकादशी, मंगलवार (सं. 2073 वि.) (3 मई, 2016 ई.)।

सप्तम स्नान– वैशाखी अमा, शुक्रवार, (सं. 2073 वि.)(6 मई, 2016 ई.)।

अष्टम स्नान– वैशाख शुक्ल तृतीया, चन्द्रवार (सं. 2073 वि.) (9 मई, 2016 ई.)। इस दिन अक्षयतृतीया है। गंगातट पर पितृतर्पण व श्राद्ध करने का इसदिन विशेष फल है।

नवम स्नान– वैशाख शुक्ल षष्ठी, गुरुवार (सं. 2073 वि.) (12 मई, 2016 ई.)। यह श्रीगंगा–अवतरण तिथि है।

हरिद्वार–अर्धकुम्भपर्व पर गंगास्नान/पूजनविधि

नित्य स्नान, पूजा आदि के पश्चात् प्रमुखस्नान के दिन (13 अप्रैल, 2016 ई. को) अरुणोदयकाल में स्नान से पूर्व स्नानकर्ता यह संकल्प करे–

ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे सौम्य–नामसंवत्सरे मेषसंक्रान्तिपर्वणि, सिंहस्थे गुरौ बुधवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अद्यावधि बोधाबोधपूर्वं कृतानां पापानां मार्जनाय जन्म–मरणावर्त्तान्मुक्तये च भगवत्या गङ्गायाः श्रीशिवस्य च षोडशोपचारपूजनं विधाय गंगायाः पावनधारायां इह हरिद्वारेऽर्ध–कुम्भपर्वणि स्नानमाचरिष्यामि।

इस संकल्प के अनन्तर भगवत्स्मरणपूर्वक गंगास्नान करें। इस अर्द्धकुम्भ महापर्व के पर्वदेव 'शिव और गंगा' हैं, अतः इस दिन पापापहारिणी भगवती गंगा एवं जगद्रक्षक भगवान् शिव की षोडशोपचार पूजा करके गंगा में पुष्पाञ्जलि अर्पणपूर्वक स्नान करते हुए यह मन्त्र पढ़े–" ओम् पापानि हर मे गंगे मुक्तिं देहि परां गतिम्"।

(ध्यान रहे– कुम्भपर्व की अन्य तिथियों में भी उक्त विधि का ही अनुसरण धर्मनिष्ठ व्यक्ति को करना चाहिए। यदि स्नान अरुणोदय में न किया जा सके तो दिन के किसी भी भाग में स्नान किया जा सकता है किंवा स्नानकर्ता षोडशोपचार पूजा करने में यदि उस समय असमर्थ हो तो पंचोपचार अथवा मानसिक पूजा ही उसे उस समय कर लेनी चाहिए।)

स्नानानन्तर गंगा के तट पर बैठकर "ॐ नमः शिवाय" का जाप तथा "गंगालहरी" एवं 'शिव–स्तोत्र' आदि का पाठ करना चाहिए। यहां आगे दिए जा रहे भगवान् शिव के 'पंचाक्षरस्तोत्र' एवं 'श्रीगङ्गाष्टक' का पाठ भी इस दिन अभीष्ट फलप्रद माना जाता है।

–:"कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व" उज्जैन की स्नानतिथियां:–

प्रथम स्नान– चैत्री पूर्णिमा, शुक्रवार (सं. 2073 वि.) (22 अप्रै., 2016 ई.)। यह इस कुम्भमहापर्व की प्रारम्भतिथि (प्रथमस्नान–तिथि) है।

द्वितीय स्नान– वैशाख कृष्ण एकादशी, मंगलवार (सं. 2073 वि.) (3 मई, 2016 ई.)।

तृतीय स्नान– वैशाखी अमा, शुक्रवार (सं. 2073 वि.) (6 मई, 2016 ई.)।

चतुर्थ स्नान– वैशाख शुक्ल तृतीया, चन्द्रवार (सं. 2073 वि.) (9 मई, 2016 ई.)। अक्षयतृतीया होने से यह स्नानतिथि विशेष फलदा है।

पंचम स्नान– वैशाख शुक्ल पंचमी, बुधवार, (सं. 2073 वि.)(11 मई, 2016 ई.)। यह तिथि आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जी की अवतारतिथि है।

षष्ठ स्नान– वैशाख शुक्ल एकादशी, मंगलवार, (सं. 2073 वि.) (17 मई, 2016 ई.)।

सप्तम (प्रमुख = शाही) स्नान– वैशाखी पूर्णिमा, शनिवार (सं. 2073 वि.) (21 मई, 2016 ई.)। यह प्रमुख स्नानतिथि है। इस दिन महात्माओं की शाही यात्रा निकलेगी। इसी दिन भगवान् श्रीकूर्म एवं बुध की जयन्ती भी है; जिससे इस पर्व का माहात्म्य और भी बढ़ जाता है।

उज्जैन कुम्भमहापर्व पर शिप्रास्नान/पूजनविधि

प्रमुखस्नान के दिन 21 मई, 2016 ई. को अरुणोदयकाल में दैनिक स्नान–सन्ध्या आदि से निवृत्त होकर यह संकल्प करें–

शिप्रास्नानसंकल्प :– ओम् विष्णुः विष्णुः विष्णुः, अद्य ब्रह्मणो वयसो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे सौम्यनामसंवत्सरे वृषस्थे सूर्ये सिंहस्थे गुरौ वैशाखमासे पूर्णिमायां तिथौ शनिवासरे अमुकगोत्रः अमुकनामाऽहम् अद्यावधि बोधाबोधपूर्वं कृतानां पापानां मार्जनाय जन्म– मरणावर्त्तान्मुक्तये च श्रीमहाकालशिवस्य षोडशोपचारपूजां विधाय पुण्यसलिलायामस्यां शिप्रायाम् अस्मिन् उज्जयिनीतीर्थे महाकुम्भपर्वणि स्नानं विधास्ये।

क्योंकि इस महापर्व के **देव भगवान् महाकाल हैं**, अतःइस संकल्प के अनन्तर **श्रीमहाकाल शिव** की षोडशोपचार पूजा करके शिप्रा में पुष्पांजलि अर्पणपूर्वक स्नान करते हुए यह मन्त्र पढ़ें–

"ओम् पापानि हर मे क्षिप्रं क्षिप्रे देहि परां गतिम्।"

स्नानानन्तर शिप्रा के तट पर बैठकर **" ओम् नमः शिवाय"** मन्त्र का जाप तथा अगले पृष्ठ पर दिए **शिवस्तोत्र** का पाठ करें।

स्नान का काल

स्नान का मुख्यकाल 'अरुणोदय' है। सूर्योदयानन्तर किए गए स्नान का माहात्म्य सामान्य है। लेकिन यह नियम सामान्य–तिथिस्नान के लिए है। कुम्भ एवं अर्धकुम्भ आदि की स्नान–तिथियों में स्नान सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त कभी भी किया जा सकता है, जिसका माहात्म्य (पुण्य) पूर्ण माना गया है । अतः कुम्भपर्व की स्नान–तिथियों के दिन अरुणोदय–काल में ही गंगा या शिप्रा में ही स्नान करना है, ऐसा आग्रह नहीं होना चाहिए ।

जो लोग हरिद्वार आदि में न जा सकें

जो श्रद्धालु सज्जन अस्वास्थ्य या अन्य किसी अपरिहार्य कारण से हरिद्वार आदि में न जा सकें, उन्हें अर्धकुम्भ एवं कुम्भ महापर्व की केवल प्रमुख स्नान–तिथियों में (13 अप्रै. सन् 2016 ई. तथा 21 मई, 2016 ई. के दिन) समीपस्थ किसी समुद्र, महानदी, नदी, तालाब, बावड़ी अथवा अपने स्नानागार में ही हरिद्वार, उज्जैन तथा गंगा–शिप्रा का ध्यान करते हुए स्नान करना चाहिए– ऐसा शास्त्रकथन है। इससे भी पर्वस्नान का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

श्रीशिव-पञ्चाक्षर स्तोत्र

(श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचित)

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।।१।।
मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।।२।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।।३।।
वसिष्ठ- कुम्भोद्भव- गौतमार्य- मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।।४।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।।५।।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।६।।

श्रीगङ्गाष्टक

(महर्षि वाल्मीकिकृत)

मातः शैलसुतासपत्नि वसुधाशृङ्गारहारावलि
स्वर्गारोहणवैजयन्ति भवतीं भागीरथि प्रार्थये ।
त्वत्तीरे वसतस्त्वदम्बु पिबतस्त्वद्वीचिषु प्रेङ्खत-
स्त्वन्नाम स्मरतस्त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ।। १।।
त्वत्तीरे तरुकोटरान्तरगतो गङ्गे विहङ्गो वरं
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः ।
नैवान्यत्र मदान्धसिन्धुरघटासङ्घट्टघण्टारण-
त्कारत्रस्तसमस्तवैरिवनितालब्धस्तुतिर्भूपतिः ।। २।।

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जननमरणक्लेशदुःखासहिष्णुः ।
न त्वन्यत्र प्रविरलरणत्कङ्कणक्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमरमरुता वीजितो भूमिपालः ।। ३।।

काकैर्निष्कुषितं श्वभिः कवलितं गोमायुभिर्लुण्ठितं
स्रोतोभिश्चलितं तटाम्बुलुलितं वीचीभिरान्दोलितम् ।
दिव्यस्त्रीकरचारु-चामर-मरुत्संवीज्यमानः कदा
द्रक्ष्येऽहं परमेश्वरि त्रिपथगे भागीरथि स्वं वपुः।।४।।

अभिनवबिसवल्ली पादपद्मस्य विष्णो-
र्मदनमथनमौलेः मालतीपुष्पमाला ।
जयति जयपताका काप्यसौ मोक्षलक्ष्म्याः
क्षपितकलिकलङ्का जाह्नवी नः पुनातु ।। ५।।

एतत्ताल-तमाल-सालसरल-व्यालोलवल्लीलता-
च्छन्नं सूर्यकरप्रतापरहितं शङ्खेन्दु-कुन्दोज्ज्वलम्।
गन्धर्वामर-सिद्ध-किन्नरवधूतुङ्ग-स्तनास्फालितं
स्नानाय प्रतिवासरं भवतु मे गाङ्गं जलं निर्मलम् ।। ६।।

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम् ।
त्रिपुरारिशिरश्चारि पापहारि पुनातु माम् ।। ७।।

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोऽपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि ।। ८।।

गङ्गाष्टकं पठति यः प्रयतः प्रभाते
वाल्मीकिना विरचितं शुभदं मनुष्यः ।
प्रक्षाल्य गात्र- कलिकल्मष- पङ्कमाशु
मोक्षं लभेत्पतति नैव नरो भवाब्धौ।। ९।।

ग्रहण–विवरण (सं. 2073 वि.)

लेखक –प्रियव्रत शर्मा,

इस वर्ष सं. 2073 वि. में (8 अप्रैल, 2016 ई. से 28 मार्च, 2017 ई. पर्यन्त) **भूगोल पर निम्नांकित केवल दो सूर्यग्रहण ही दिखलाई पड़ेंगे, जो भारत में अदृश्य होंगे।** ये दोनों कंकणाकृति होंगे। इसवर्ष चन्द्रग्रहण तो भूगोल पर एक भी घटित नहीं होगा।

भारत में अदृश्य इन सूर्यग्रहणों का विवरण इस प्रकार है–

(i) कंकण सूर्यग्रहण (1 सितंबर, 2016 ई.)–भूगोल **पर इस ग्रहण के स्पर्शादि काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार हैं :–**

	घं.	मि.
स्पर्श	11	43
कंकणाकृति-प्रारम्भ	12	49
ग्रहणमध्य	14	36
कंकणाकृति समाप्त	16	24
ग्रहण समाप्त	17	30

अगले पृष्ठ पर दिया **चित्र (1)** देखिए:– यह ग्रहण सम्पूर्ण अफ्रीका महाद्वीप, द. ध्रुव, मेडागास्कर तथा यमन, साऊदी अरविया एवं मलेशिया के कुछ भाग में देखा जा सकेगा। इसकी कंकणाकृति कांगो, मोजाम्बिक, मेडागास्कर, गेबन में दीखेगी। इस **चित्र (1)** (और **चित्र (2)** में भी) भूगोल पर खींची नीचे से ऊपर जाने वाली रेखाओं पर अंकित काल U.T. (G.M.T.) है। यह ग्रहण का मध्यकाल वतलाता है। दाएं से बाएं खींची रेखाओं पर ग्रहणमध्यकालिक ग्रास (प्रतिशत) अंकित है। भूगोल के बीच से गुजरने वाली काली बारीक पट्टी कंकणाकृति ग्रहण का मार्ग दरसाती है।

(ii) कंकण सूर्यग्रहण (26 फरवरी, 2017 ई.)

भूगोल पर इस ग्रहण के स्पर्शादि काल (भा. स्टैं. टा.) इस प्रकार हैं :–

	घं.	मि.
स्पर्श	17	41
कंकणाकृति प्रारम्भ	18	46
ग्रहणमध्य	20	23
कंकणाकृति समाप्त	22	00
ग्रहण समाप्त	23	05

अगले पृष्ठ पर दिया गया **चित्र (2)** देखिए :– यह ग्रहण द.अमेरिका महाद्वीप के पेरु, ब्राजील, वोल्विया, पेरागाय, अर्जेण्टायना, उरुगाय, चिल्ली तथा अफ्रीका महाद्वीप के पर्याप्त भाग में दृश्य होगा। इसकी कंकणाकृति द. अमेरिका के अर्जेण्टायना, चिल्ली तथा द. अफ्रीका के कुछ देशों में दीखेगी।

ध्यान दें– एक वर्ष (12 मासों) की अवधि में कई बार एक भी चन्द्रग्रहण घटित नहीं होता। लेकिन यह बात सूर्यग्रहण के बारे में नहीं है। इसवर्ष (सं. 2073 वि. में) ठीक यही स्थिति घटित हुई है। भूगोल पर वर्ष में कम से कम दो सूर्यग्रहण अवश्य घटित होते हैं। एक वर्ष में भूगोल पर सात ग्रहण घटित हो सकते हैं, जिनमें 5 सूर्य के और 2 चन्द्र के होंगे।

पाठकों को यह भी जान लेना चाहिए– चन्द्रमा के उपच्छाया ग्रहण (Penumbral Eclipses) प्रतिवर्ष कई–कई घटित होते रहते हैं। क्योंकि इनका धार्मिक आदि दृष्टि से कोई माहात्म्य आदि नहीं माना जाता, अतः हम इन्हें अर्थहीन समझकर इनका पंचांग में निर्देश नहीं करते। हमारे फलित–सिद्धान्त एवं धार्मिक ग्रन्थों में भी इन तथोक्त ग्रहणों की कहीं चर्चा नहीं है। **ध्यान दें–** इसवर्ष 9 मई, 2016 ई. को बुध का सूर्यातिक्रमण (Transit of Mercury) होगा अर्थात् बुध का विम्ब सूर्य बिम्ब पर से गुजरेगा। भारत में यह घटना सूर्यास्त के समय घटित होगी। बिना Telescope की सहायता के इसे देखना सम्भव नहीं होगा। इसीलिए इसका विवरण हमने नहीं दिया है।

कंकणसूर्यग्रहण (1 सितम्बर, 2016 ई.)	कंकणसूर्यग्रहण (26 फरवरी, 2017 ई.)
चित्र(1)	चित्र(2)

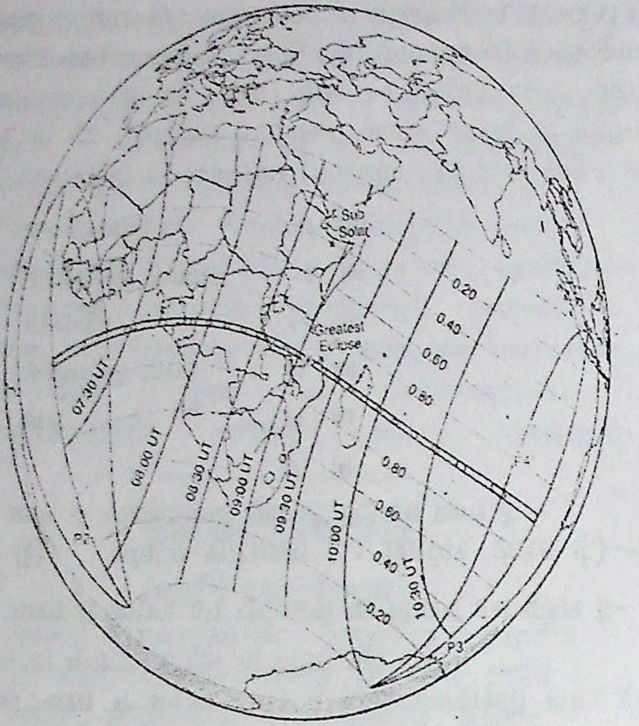

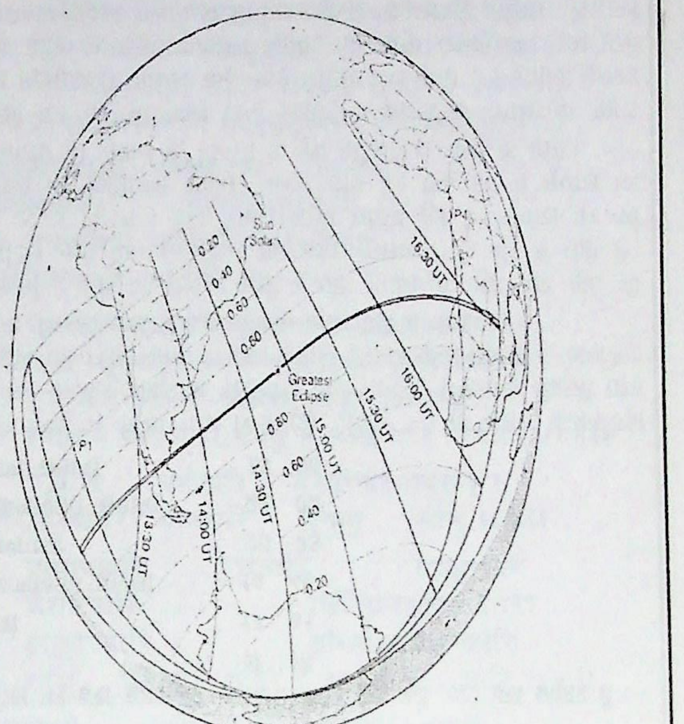

आगामी वर्ष (सं. 2074 वि. में) भारत में दृश्य ग्रहण

सं. 2074 वि. में केवल दो चन्द्रग्रहण ही भारत में दृश्य होंगे; जो 7/8 अगस्त, 2017 ई. और 31 जनवरी, 2018 ई. को घटित होंगे। भारत में इसवर्ष भी कोई सूर्यग्रहण दृश्य नहीं होगा।

संवत् 2073 वि. की कुल जन्म–वर्ष–प्रश्न–मुहूर्त्त–कुण्डलियां

इन कुण्डलियों के श्रमसाध्य निर्माण में भारी सहयोग के लिए **'श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय '**– कुराली (पं.) के अनुभवी कार्यकर्ता, **ग्राम सुन्हाड़–सौर, सोलन (हि.प्र.), [सम्प्रति वार्ड–2, कुराली (मोहाली)** पं.] निवासी प्रवुद्ध विद्वान् आचार्य **श्रीकृष्ण शर्मा, M.A.**, शास्त्री, वेदाचार्य, साहित्याचार्य को आशीर्वाद–पुरस्सर धन्यवाद दिए बिना मैं नहीं रह सकता–

– प्रियव्रत शर्मा

यद्यपि जातकपद्धति एवम् ताजिक ग्रन्थों में द्वादश–भाव– साधनपूर्वक बनाई गई भावकुण्डली द्वारा भावफलादेश कहने का निर्देश है, तथापि लगभग सभी दैवज्ञ जातक–जन्मकालिक, प्रश्नकालिक, वर्षप्रवेश–कालिक तथा विवाहादि मुहूर्त्तकालिक आदि राशि–कुण्डलियों को ही फलादेशार्थ प्रयुक्त करने की परम्परा बनाए हुए हैं। जन्म, प्रश्न वर्षप्रवेश या मुहूर्त्तकालीन लग्नराशि को प्रथम भावराशि तथा तदुत्तरवर्त्ती राशियों को क्रमशः द्वितीय आदि भावों की राशियां मानकर बनाई गई जन्मकुण्डली द्वारा ही समस्त फलादेश कहने का बहुत बडा सम्प्रदाय फलित ज्योतिष में व्यापक प्रभाव बनाए हुए है। सच बात तो यह है– फलित में भावचक्र तो केवल सिद्धान्तरूप में ही दिखाई पड़ता है, इसका प्रयोगात्मक–रूप तो लगभग लुप्त–सा ही हो गया है। इसे दृष्टि में रखते हुए यहां सं. 2073 वि. में बनने वाली सभी (कुल 204) कुण्डलियां दी जा रही हैं। **''किस तारीख के कितने बजे से किस तारीख के कितने बजे तक ''**– कौन–सी कुण्डली बनती है (यानी सूर्यादि ग्रह किन–किन राशियों में स्थित हैं), यह भारतीय स्टैंडर्ड टाईम अनुसार प्रत्येक कुण्डली के ऊपर यहां निर्दिष्ट है। इन कुण्डलियों के आधार पर दैवज्ञ लोग इस वर्ष में उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली (जन्मकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली), इस वर्ष घटित होने वाले वर्षप्रवेश–कालानुसारी वर्षप्रवेशकुण्डली (वर्षप्रवेशकालिक ग्रहस्थिति–कुण्डली) तथा अभीष्टकालिक प्रश्नकुण्डली (प्रश्नकालिक ग्रहस्थिति– कुण्डली) एवं अभीष्ट विवाहादि मुहूर्त्तकालिक ग्रहस्थिति कुण्डली तुरन्त जान सकेंगे और तात्कालिक स्थानीय लग्न ज्ञात कर इन ग्रहस्थिति–कुण्डलियों को लग्नकुण्डलियां अनायास बना सकेंगे।

क्योंकि, ये कुण्डलियां भारतीय स्टैण्डर्ड टाईमानुसार हैं, अतः भारत में इन्हें बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाया जाएगा। यदि इन्हें भारत से अन्य किसी देश के लिए प्रयोग में लाना हो तब उस देश के स्थानीय स्टैण्डर्ड टाईम को भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में बदलकर, इन्हें प्रयोग में लाइए। **स्पष्टता के लिए आगे उदाहरण दे रहे हैं। पहले भारतस्थलीय उदाहरण लेते हैं–**

उदाहरण (1)– चण्डीगढ़ (U.T.) में 16 अप्रैल, 2016 ई. को प्रातः 11 घं. 25 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर उत्पन्न होने वाले/हुए जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात करनी है ?

क्योंकि, इस जातक का जन्म **''14 अप्रैल, 8 घं. 28 मि. से 16 अप्रैल, 17 घं. 16 मि.''** के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च**– चण्डीगढ़ में 16 अप्रैल को प्रातः 11 घं. 25 मि.(भा. स्टैं. टा.) पर मिथुन लग्न है। अतः इस जातक की जन्मलग्न–कुण्डली यह वनी–

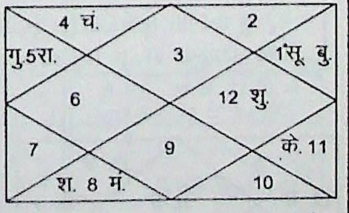

अब भारतेतर देश का उदाहरण लेते हैं–

उदाहरण (2)– **10 सितं.**, 2016 ई. को Rome (Italy) में 14 घं. 25 मि. पर पैदा हुए/होने वाले जातक की जन्मलग्नकुण्डली ज्ञात करनी है ?

Rome (Italy) में इस समय D.S.T- (ग्रीष्मकालीन समय) चल रहा होगा, जो क्षेत्रीय स्टैं. टा. से एक घंटा आगे रहता है। स्पष्ट है– इस जातक का जन्मसमय यहां स्टेण्डर्ड टाईम के अनुसार 13 घं. 25 मि. होगा। Italy के स्टैं.टा. से भा. स्टैं. टा. 4 घं. 30 मि. आगे रहता है, अतः इस जातक की जन्मकालिक भारतीय तारीख 10 सितं. 2016 ई. और जन्मकाल 17 घं. 55 मि. (भा. स्टैं. टा.) बना। क्योंकि, इस जातक का जन्म भा. स्टैं. टा. अनुसार **''10 सितं., 6 घं. 51 मि. से 12 सितं. 16 घं. 06 मि.''**

के मध्य हुआ है, अतः इसकी जन्मकालिक–कुण्डली (ग्रहस्थिति–कुण्डली) यहां दी गई इसी कालावधि वाली कुण्डली के अनुरूप होगी। किञ्च– Rome में इसके जन्म के समय लग्न वृश्चिक होगा। तदनुसार इसकी कुण्डली यह बनेगी–

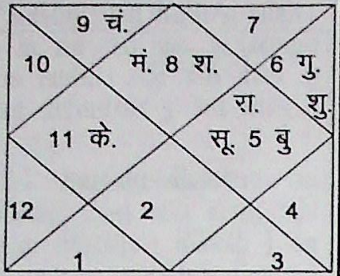

अब वर्षकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण (3)– भारत (हि.प्र.), सोलन में 15 अगस्त, 1974 ई. (गुरुवार) को 11घं. 14 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर जन्मे एवम् सम्प्रति मोहाली (पंजाब) में रहने वाले जातक की ई. सन् 2016–17 की वर्षकुण्डली जाननी है ?

इस जातक के गताब्द यहां 42 मिले और 43वां वर्षप्रवेश 14 / 15 अगस्त, 2016 ई. (रवि / चन्द्रवार) को 29 घं. 39 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

क्योंकि, इस जातक का वषप्रवेश **"13 अगस्त 22 घं. 19 मि. से 16 अगस्त 6घं. 38मि. "** के मध्य हुआ है, अतः इसकी वर्षकुण्डली (45वें वर्ष की) यहां दी गई इसी कुण्डली– अनुरूप होगी। **किञ्च**– इस जातक के निवासस्थान मोहाली (पं.) में इस समय (14 / 15 अगस्त, 2016 ई. को 29 घं. 39 मि. पर) कर्क लग्न है, अतः इस जातक की वर्षकुण्डली यह बनेगी–

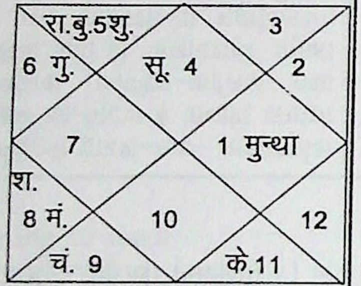

अब प्रश्नकुण्डली का उदाहरण भी ले लेते हैं–

उदाहरण (4)– मान लें, 14 जनवरी, 2017 ई. को 10 घं. 50 मि. (भा.स्टैं.टा.)पर आपके पास अमृतसर, पंजाव (भारत) में आकर कोई प्रश्नकर्त्ता कार्यसिद्धि / असिद्धि का प्रश्न करता है। इसकी प्रश्नकुण्डली जाननी है ?

यहां प्रश्नकालिक तारीख 14 जनवरी, 2017 ई. और प्रश्नकाल 10 घं. 50 मि. आगे इस स्तंभ में दिए गए **"14 जन. 07 घं. 38 मि. से 14 जन. 22 घं. 54 मि."** के मध्य पड़ता है, अतः यहां यह प्रश्नकुण्डली इसी अवधि के अंतर्गत आने वाली इस कुण्डली के अनुरूप होगी। **किञ्च**– यहां प्रश्नस्थल (अमृतसर) में इस समय लग्न मीन है, अतः यहां इस प्रश्नकर्ता की कुण्डली इसतरह बनेगी–

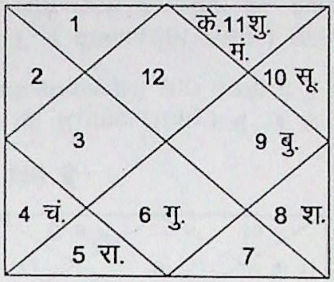

आगे मुहूर्त्तकुण्डली का उदाहरण ले रहे हैं–

उदाहरण–(5) हमारे इस पंचांग (श्री मार्त्तण्ड) में 15 फरवरी, 2017 ई. को पृष्ठ.260..पर दिए मीन लग्न वाले विवाहमुहूर्त्त की कुण्डली जाननी है ?

इस (मीन) लग्न का काल इस दिन (15 फरवरी, 2017 ई. को) चण्डीगढ़ में 8 घं 25 मि. से 9 घं. 47 मि. तक है और यह लग्नकाल इस स्तंभ के अन्तर्गत दिए गए **" 13 फर. 15 घं. 10 मि. से 16 फर. 00 घं. 31 मि. "** के मध्य पड़ता है, अतः यह मुहूर्तकुण्डली यहां दी इसी कुण्डली के अनुरूप इस तरह बनेगी–

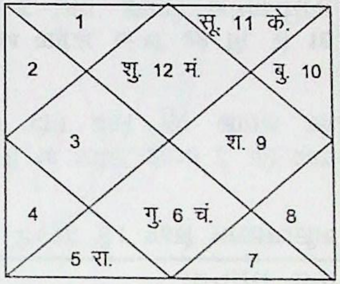

इस प्रकार पाठक समझ गए होंगे– जन्म, वर्षप्रवेश, प्रश्न, मुहूर्त्त आदि कालिक लग्नकुण्डलियां बनाना अत्यन्त सरल है।

ध्यान रहे– कुण्डली की ग्रहस्थिति (ग्रहों की राशि आदि) स्थानभेद से नहीं बदलती, केवल लग्न ही बदला करता है।

7 अप्रैल से 21 मई, सन् 2016 ई.

7 अप्रैल, 16 घं. 55 मि. से 08 अप्रैल, 2घं. 20 मि.

8 अप्रैल, 2घं. 21 मि. से 10 अप्रैल, 1 घं. 54 मि.

10 अप्रैल, 1 घं. 55 मि. से 12 अप्रैल, 3 घं. 26 मि.

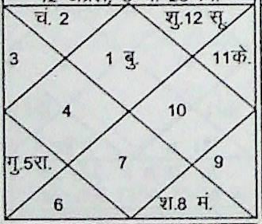

12 अप्रैल, 3 घं. 27 मि. से 13 अप्रैल, 19 घं. 46 मि.

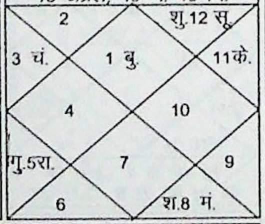

13 अप्रैल, 19 घं. 47 मि. से 14 अप्रैल, 8 घं. 27 मि.

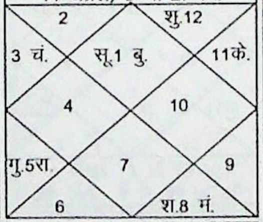

14 अप्रैल, 8 घं. 28 मि. से 16 अप्रैल, 17 घं. 16 मि.

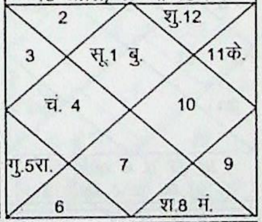

16 अप्रैल, 17 घं. 17 मि. से 19 अप्रैल, 4 घं. 55 मि.

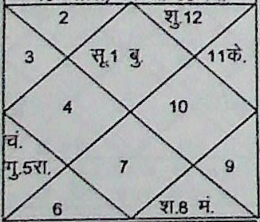

19 अप्रैल, 4 घं. 56 मि. से 21 अप्रैल, 17 घं. 45 मि.

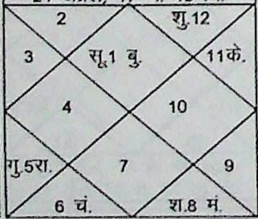

21 अप्रैल, 17 घं. 46 मि. से 24 अप्रैल, 6 घं. 24 मि.

24 अप्रैल, 6 घं. 25 मि. से 25 अप्रैल, 10 घं. 50 मि.

25 अप्रैल, 10 घं. 51 मि. से 26 अप्रैल, 17 घं. 52 मि.

26 अप्रैल, 17 घं. 53 मि. से 29 अप्रैल, 3 घं. 16 मि.

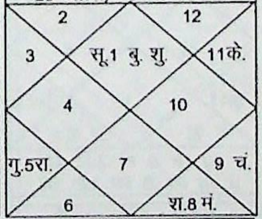

29 अप्रैल, 3 घं. 17 मि. से 1 मई, 9 घं. 42 मि.

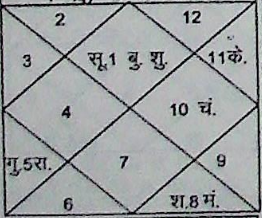

1 मई, 9 घं. 43 मि. से 3 मई, 12 घं. 49 मि.

3 मई, 12 घं. 50 मि. से 5 मई, 13 घं. 17 मि.

5 मई, 13 घं. 18 मि. से 7 मई, 12 घं. 40 मि.

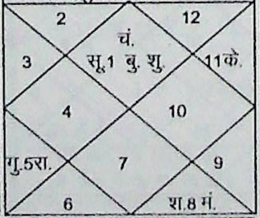

7 मई, 12 घं. 41 मि. से 9 मई, 13 घं. 02 मि.

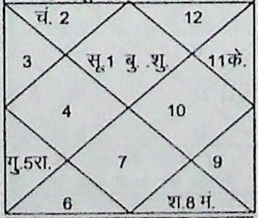

9 मई, 13 घं. 03 मि. से 11 मई, 16 घं. 24 मि.

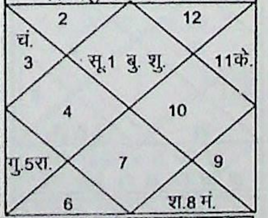

11 मई, 16 घं. 25 मि. से 13 मई, 23 घं. 55 मि.

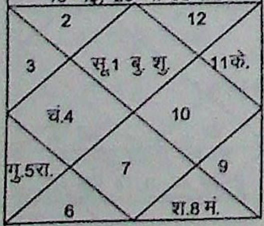

13 मई, 23 घं. 56 मि. से 14 मई, 16 घं. 40 मि.

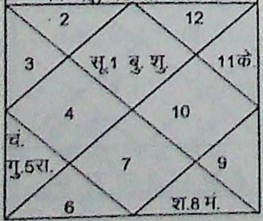

14 मई, 16 घं. 41 मि. से 16 मई, 11 घं. 05 मि.

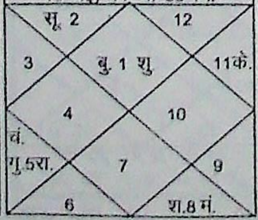

16 मई, 11 घं. 06 मि. से 18 मई, 23 घं. 57 मि.

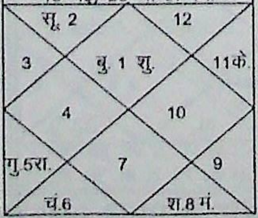

18 मई, 23 घं. 58 मि. से 19 मई, 19 घं. 44 मि.

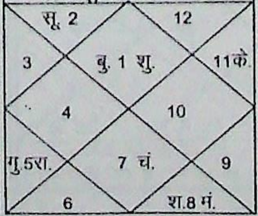

19 मई, 19 घं. 45 मि. से 21 मई, 12 घं. 30 मि.

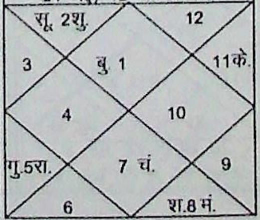

21 मई से 3 जुलाई, सन् 2016 ई. तक

21 मई, 12 घं. 31 मि. से 23 मई, 23 घं. 36 मि.

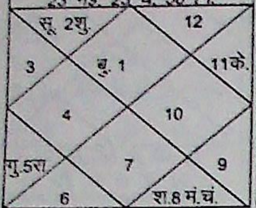

23 मई, 23 घं. 37 मि. से 26 मई, 8 घं. 52 मि.

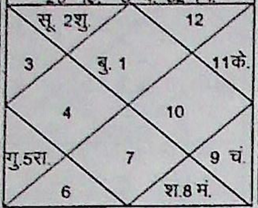

26 मई, 8 घं. 53 मि. से 28 मई, 16 घं. 00 मि.

28 मई, 16 घं. 01 मि. से 30 मई, 20 घं. 35 मि.

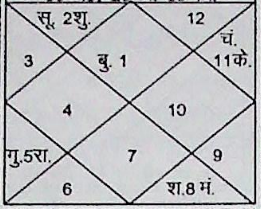

30 मई, 20 घं. 36 मि. से 1 जून, 22 घं. 37 मि.

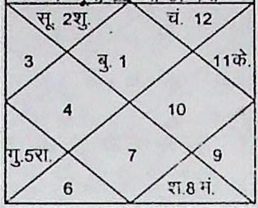

1 जून, 22 घं. 38 मि. से 3 जून, 23 घं. 01 मि.

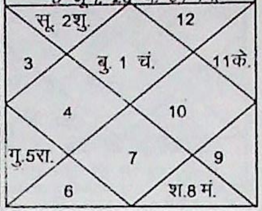

3 जून, 23 घं. 02 मि. से 5 जून, 23 घं. 27 मि.

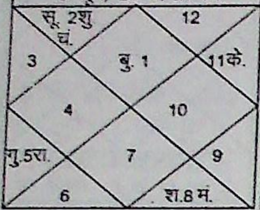

5 जून, 23 घं. 28 मि. से 8 जून, 1 घं. 55 मि.

8 जून, 01 घं. 56 मि. से 8 जून, 9 घं. 46 मि.

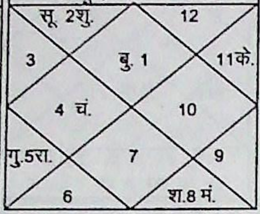

8 जून, 9 घं. 47 मि. से 10 जून, 8 घं. 04 मि.

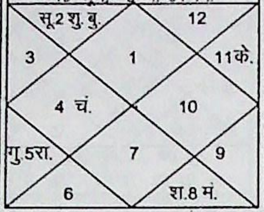

10 जून, 8 घं. 05 मि. से 12 जून, 18 घं. 12 मि.

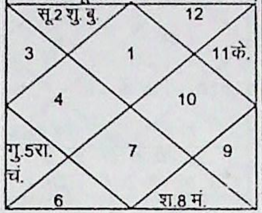

12 जून, 18 घं. 13 मि. से 13 जून, 5 घं. 35 मि.

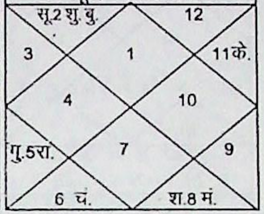

13 जून, 5 घं. 36 मि. से 14 जून, 23 घं. 19 मि.

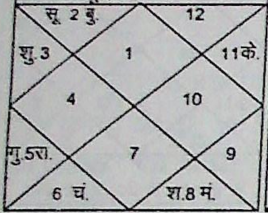

14 जून, 23 घं. 20 मि. से 15 जून, 6 घं. 46 मि.

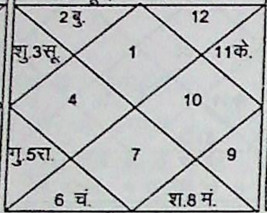

15 जून, 6 घं. 47 मि. से 17 जून, 19 घं. 17 मि.

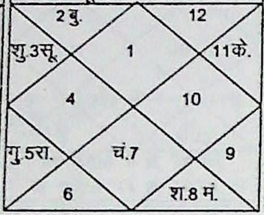

17 जून, 19 घं. 18 मि. से 18 जून, 00 घं. 05 मि.

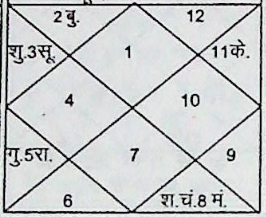

18 जून, 00 घं. 06 मि. से 20 जून, 06 घं. 04 मि.

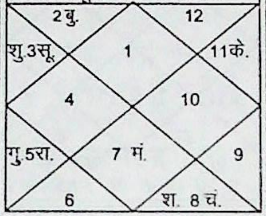

20 जून, 06 घं. 05 मि. से 22 जून, 14 घं. 41 मि.

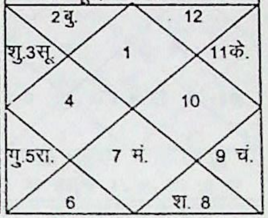

22 जून, 14 घं. 42 मि. से 24 जून, 21 घं. 24 मि.

24 जून, 21 घं. 25 मि. से 27 जून, 2 घं. 22 मि.

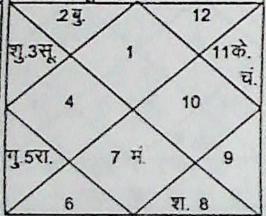

27 जून, 2 घं. 23 मि. से 27 जून, 8 घं. 05 मि.

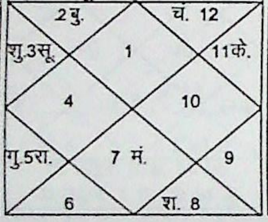

27 जून, 8 घं. 06 मि. से 29 जून, 5 घं. 37 मि.

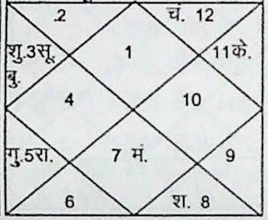

29 जून, 5 घं. 38 मि. से 1 जुला, 7 घं. 29 मि.

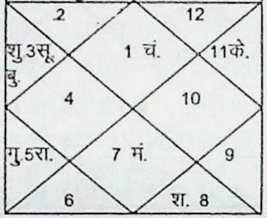

1 जुला. 7 घं. 30 मि. से 3 जुला, 8 घं. 58 मि.

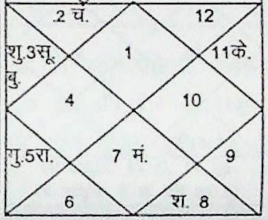

03 जुलाई से 11 अगस्त, 2016 ई. तक

3 जुलाई 8 घं. 59 मि. से 5 जुलाई 11 घं. 40 मि.

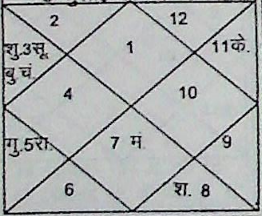

5 जुलाई 11 घं. 41 मि. से 7 जुलाई 15 घं. 35 मि.

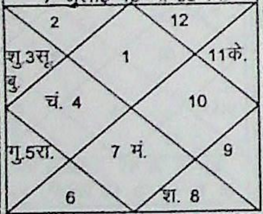

7 जुलाई 15 घं. 36 मि. से 7 जुलाई 17 घं. 11 मि.

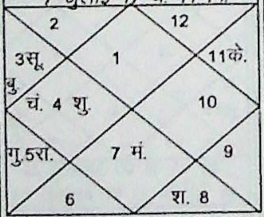

7 जुलाई 17 घं. 12 मि. से 10 जुलाई 2 घं. 21 मि.

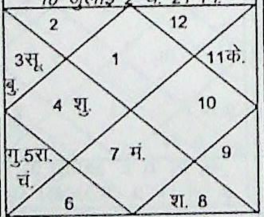

10 जुलाई 2 घं. 22 मि. से 11 जुलाई 9 घं. 46 मि.

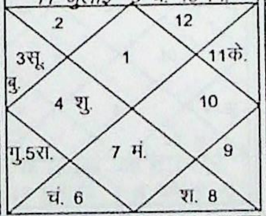

11 जुलाई 9 घं. 47 मि. से 12 जुलाई 13 घं. 54 मि.

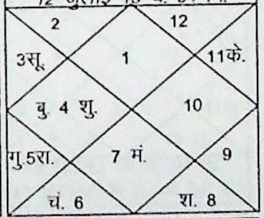

12 जुलाई 13 घं. 55 मि. से 12 जुलाई 14 घं. 22 मि.

12 जुलाई 14 घं. 23 मि. से 15 जुलाई 2 घं. 56 मि.

15 जुलाई 2 घं. 57 मि. से 16 जुलाई 10 घं. 14 मि.

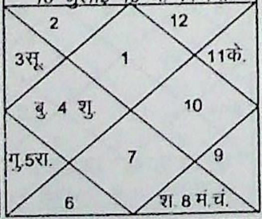

16 जुलाई 10 घं. 15 मि. से 17 जुलाई 13 घं. 45 मि.

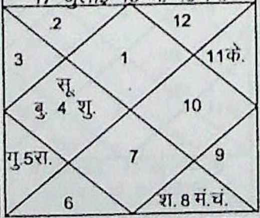

17 जुलाई 13 घं. 46 मि. से 19 जुलाई 21 घं. 53 मि.

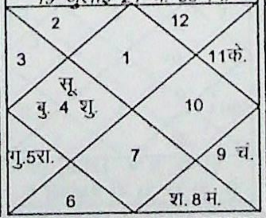

19 जुलाई 21 घं. 54 मि. से 22 जुलाई 3 घं. 41 मि.

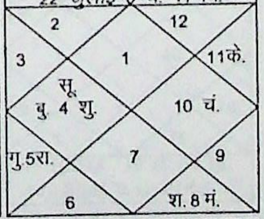

22 जुलाई 3 घं. 42 मि. से 24 जुलाई 7 घं. 52 मि.

24 जुलाई 7 घं. 53 मि. से 26 जुलाई 11 घं. 05 मि.

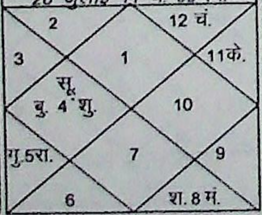

26 जुलाई 11 घं. 06 मि. से 27 जुलाई 7 घं. 10 मि.

27 जुलाई 7 घं. 11 मि. से 28 जुलाई 13 घं. 47 मि.

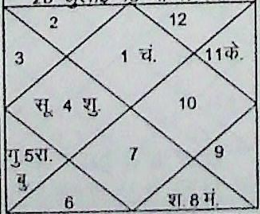

28 जुलाई 13 घं. 48 मि. से 30 जुलाई 16 घं. 32 मि.

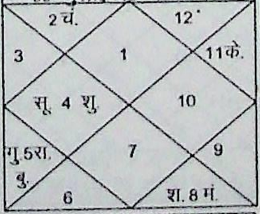

30 जुलाई 16 घं. 33 मि. से 01 अगस्त 1 घं. 28 मि.

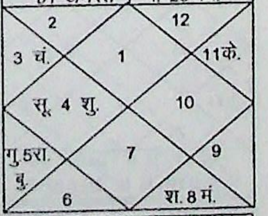

1 अगस्त 1 घं. 29 मि. से 1 अगस्त 20 घं. 16 मि.

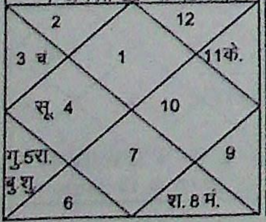

1 अगस्त 20 घं. 17 मि. से 4 अगस्त 2 घं. 06 मि.

4 अगस्त 2 घं. 07 मि. से 6 अगस्त 10 घं. 52 मि.

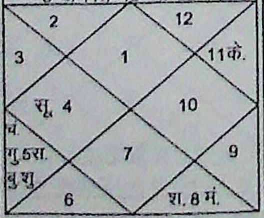

6 अगस्त 10 घं. 53 मि. से 8 अगस्त 22 घं. 24 मि.

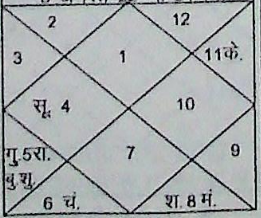

8 अगस्त 22 घं. 25 मि. से 11 अगस्त 11 घं. 01 मि.

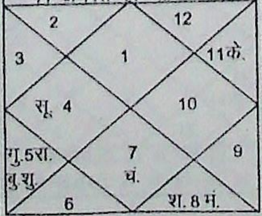

11 अगस्त 11 घं. 02 मि. से 11 अगस्त 21 घं. 28 मि.

11 अगस्त से 19 सितंबर, 2016 ई.

11 अगस्त 21 घं. 29 मि. से
13 अगस्त 22 घं. 18 मि.

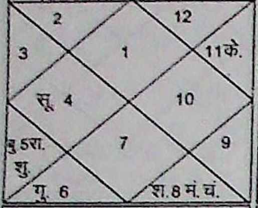

13 अगस्त 22 घं. 19 मि. से
16 अगस्त 6 घं. 38 मि.

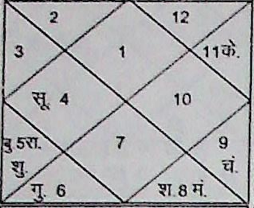

16 अगस्त 6 घं. 39 मि. से
16 अगस्त 18 घं. 39 मि.

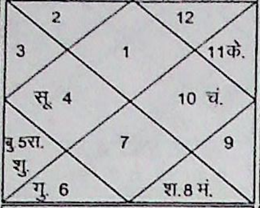

16 अगस्त 18 घं. 40 मि. से
18 अगस्त 11 घं. 51 मि.

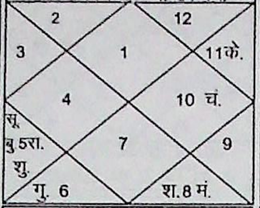

18 अगस्त 11 घं. 52 मि. से
19 अगस्त 17 घं. 24 मि.

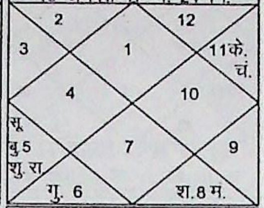

19 अगस्त 17 घं. 25 मि. से
20 अगस्त 14 घं. 53 मि.

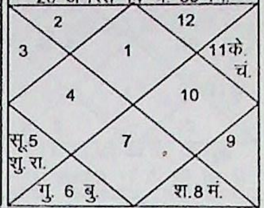

20 अगस्त 14 घं. 54 मि. से
22 अगस्त 16 घं. 57 मि.

22 अगस्त 16 घं. 58 मि. से
24 अगस्त 19 घं. 09 मि.

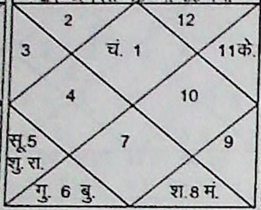

24 अगस्त 19 घं. 10 मि. से
25 अगस्त 11 घं. 52 मि.

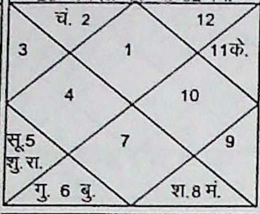

25 अगस्त 11 घं. 53 मि. से
26 अगस्त 22 घं. 20 मि.

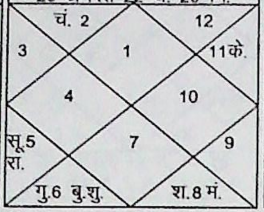

26 अगस्त 22 घं. 21 मि. से
29 अगस्त 3 घं. 03 मि.

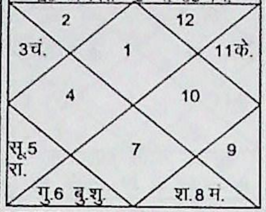

29 अगस्त 3 घं. 04 मि. से
31 अगस्त 9 घं. 47 मि.

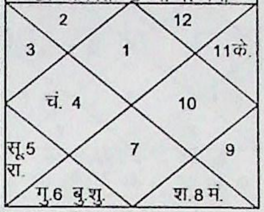

31 अगस्त 9 घं. 48 मि. से
2 सितंबर 18 घं. 52 मि.

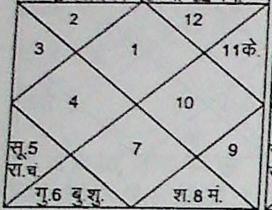

2 सितंबर 18 घं. 53 मि. से
5 सितंबर 6 घं. 13 मि.

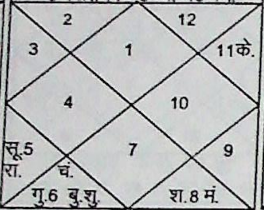

5 सितंबर 6 घं. 14 मि. से
7 सितंबर 18 घं. 52 मि.

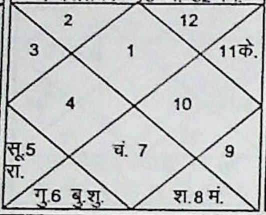

7 सितंबर 18 घं. 53 मि. से
9 सितंबर 17 घं. 46 मि.

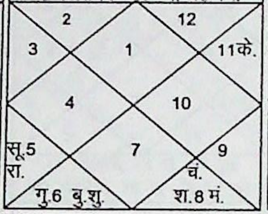

9 सितंबर 17 घं. 47 मि. से
10 सितंबर 6 घं. 50 मि.

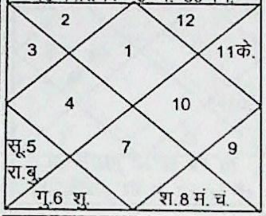

10 सितंबर 6 घं. 51 मि. से
12 सितंबर 16 घं. 06 मि.

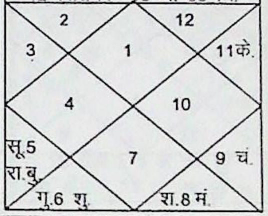

12 सितंबर 16 घं. 07 मि. से
14 सितंबर 21 घं. 42 मि.

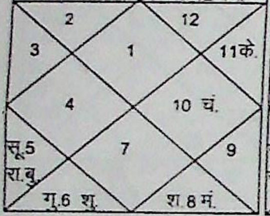

14 सितंबर 21 घं. 43 मि. से
16 सितंबर 18 घं. 34 मि.

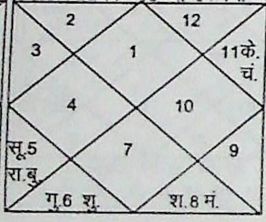

16 सितंबर 18 घं. 35 मि. से
17 सितंबर 00 घं. 10 मि.

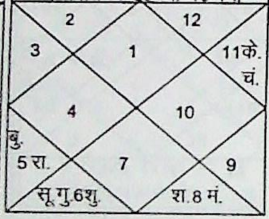

17 सितंबर 00 घं. 11 मि. से
18 सितंबर 7 घं. 38 मि.

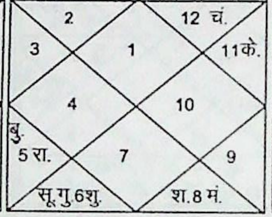

18 सितंबर 7 घं. 39 मि. से
19 सितंबर 00 घं. 04 मि.

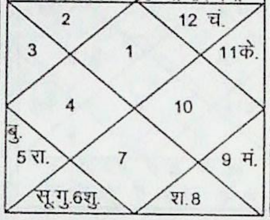

19 सितंबर 00 घं. 05 मि. से
19 सितंबर 00 घं. 54 मि.

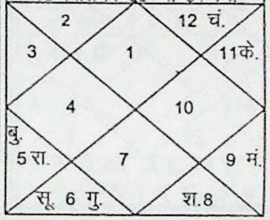

19 सितंबर से 01 नवंबर, सन् 2016 ई.

19 सितंबर 00 घं. 55 मि. से
21 सितंबर 1 घं. 37 मि.

21 सितंबर 1 घं. 38 मि. से
23 सितंबर 3 घं. 51 मि.

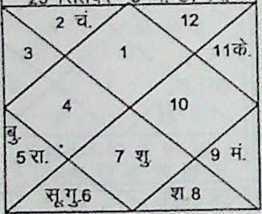

23 सितंबर 3 घं. 52 मि. से
25 सितंबर 8 घं. 34 मि.

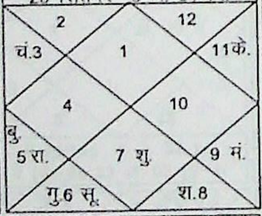

25 सितंबर 8 घं. 35 मि. से
27 सितंबर 15 घं. 59 मि.

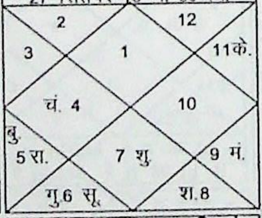

27 सितंबर 16 घं. 00 मि. से
30 सितंबर 1 घं. 44 मि.

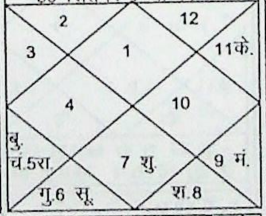

30 सितंबर 1 घं. 45 मि. से
2 अक्तूबर 13 घं. 18 मि.

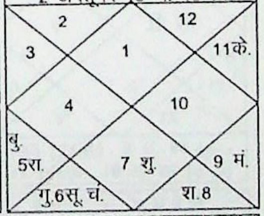

2 अक्तूबर 13 घं. 19 मि. से
3 अक्तूबर 17 घं. 47 मि.

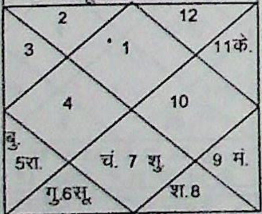

3 अक्तूबर 17 घं. 48 मि. से
5 अक्तूबर 1 घं. 56 मि.

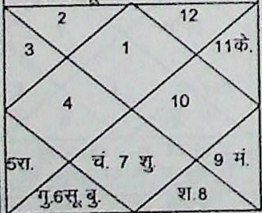

5 अक्तूबर 1 घं. 57 मि. से
7 अक्तूबर 14 घं. 24 मि.

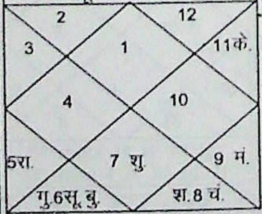

7 अक्तूबर 14 घं. 25 मि. से
10 अक्तूबर 00 घं. 53 मि.

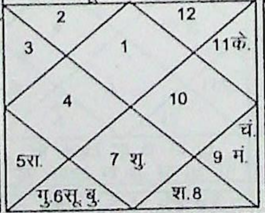

10 अक्तूबर 00 घं. 54 मि. से
12 अक्तूबर 7 घं. 50 मि.

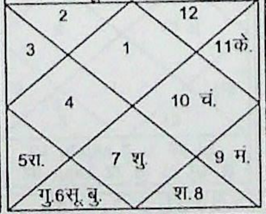

12 अक्तूबर 7 घं. 51 मि. से
13 अक्तूबर 15 घं. 27 मि.

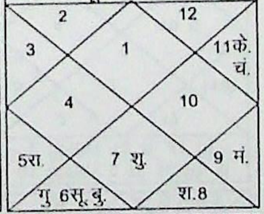

13 अक्तूबर 15 घं. 28 मि. से
14 अक्तूबर 10 घं. 56 मि.

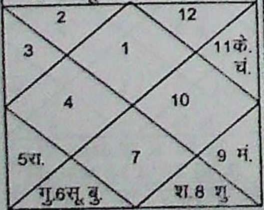

14 अक्तूबर 10 घं. 57 मि. से
16 अक्तूबर 11 घं. 13 मि.

16 अक्तूबर 11 घं. 14 मि. से
17 अक्तूबर 6 घं. 30 मि.

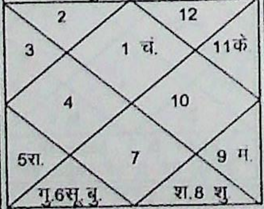

17 अक्तूबर 6 घं. 31 मि. से
18 अक्तूबर 10 घं. 34 मि.

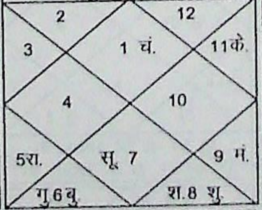

18 अक्तूबर 10 घं. 35 मि. से
20 अक्तूबर 11 घं. 05 मि.

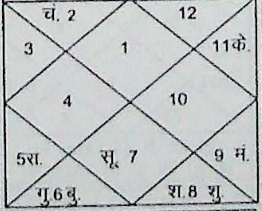

20 अक्तूबर 11 घं. 06 मि. से
21 अक्तूबर 14 घं. 19 मि.

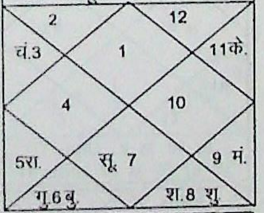

21 अक्तूबर 14 घं. 20 मि. से
22 अक्तूबर 14 घं. 30 मि.

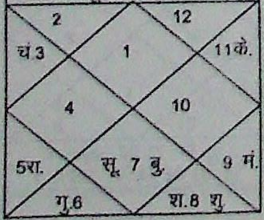

22 अक्तूबर 14 घं. 31 मि. से
24 अक्तूबर 21 घं. 30 मि.

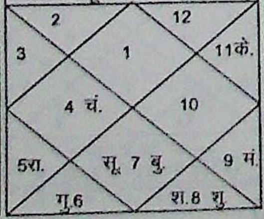

24 अक्तूबर 21 घं. 31 मि. से
27 अक्तूबर 7 घं. 37 मि.

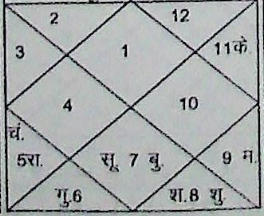

27 अक्तूबर 7 घं. 38 मि. से
29 अक्तूबर 19 घं. 34 मि.

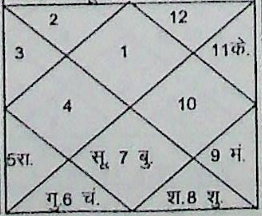

29 अक्तूबर 19 घं. 35 मि. से
1 नवंबर 8 घं. 14 मि.

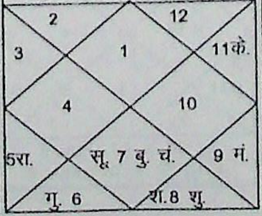

1 नवंबर 8 घं. 15 मि. से
1 नवंबर 8 घं. 35 मि.

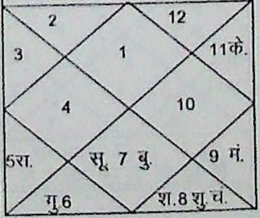

01 नवंबर से 12 दिसंबर, सन् 2016 ई.

1 नवंबर 8 घं. 36 मि. से
3 नवंबर 20 घं. 45 मि.

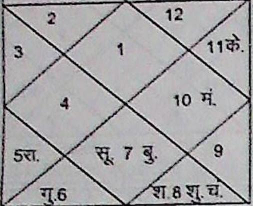

3 नवंबर 20 घं. 46 मि. से
6 नवंबर 8 घं. 00 मि.

6 नवंबर 8 घं. 01 मि. से
7 नवंबर 11 घं. 57 मि.

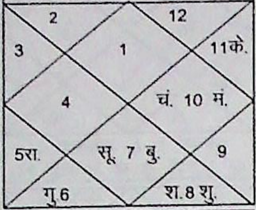

7 नवंबर 11 घं. 58 मि. से
8 नवंबर 16 घं. 31 मि.

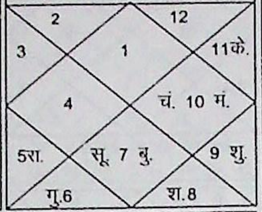

8 नवंबर 16 घं. 32 मि. से
9 नवंबर 00 घं. 38 मि.

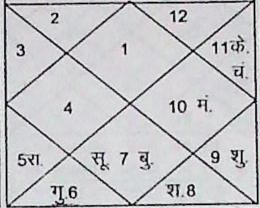

9 नवंबर 00 घं. 39 मि. से
10 नवंबर 21 घं. 17 मि.

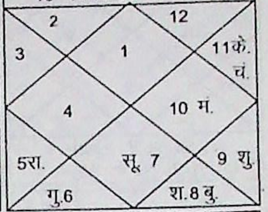

10 नवंबर 21 घं. 18 मि. से
12 नवंबर 22 घं. 29 मि.

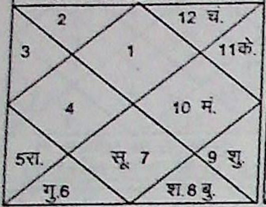

12 नवंबर 22 घं. 30 मि. से
14 नवंबर 21 घं. 38 मि.

14 नवंबर 21 घं. 39 मि. से
16 नवंबर 6 घं. 16 मि.

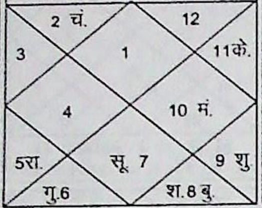

16 नवंबर 6 घं. 17 मि. से
16 नवंबर 20 घं. 55 मि.

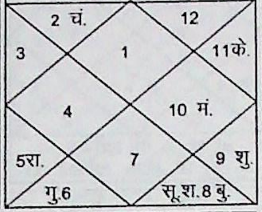

16 नवंबर 20 घं. 56 मि. से
18 नवंबर 22 घं. 31 मि.

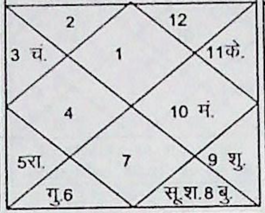

18 नवंबर 22 घं. 32 मि. से
21 नवंबर 4 घं. 01 मि.

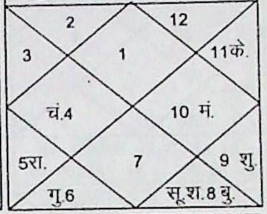

21 नवंबर 4 घं. 02 मि. से
23 नवंबर 13 घं. 29 मि.

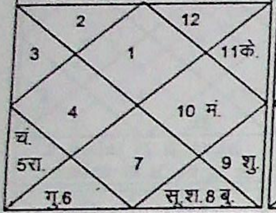

23 नवंबर 13 घं. 30 मि. से
26 नवंबर 1 घं. 32 मि.

26 नवंबर 1 घं. 33 मि. से
28 नवंबर 14 घं. 18 मि.

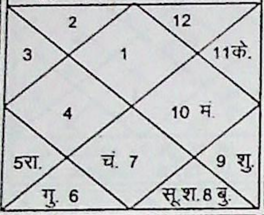

28 नवंबर 14 घं. 19 मि. से
28 नवंबर 22 घं. 12 मि.

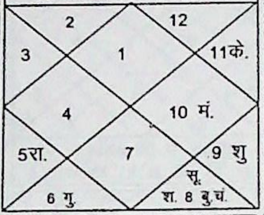

28 नवंबर 22 घं. 13 मि. से
01 दिसंबर 2 घं. 35 मि.

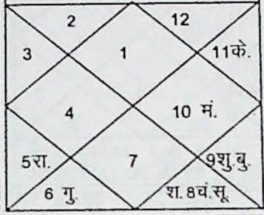

01 दिसंबर 2 घं. 36 मि. से
2 दिसंबर 18 घं. 41 मि.

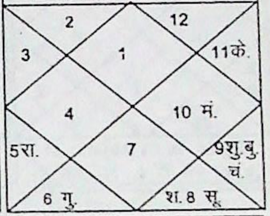

2 दिसंबर 18 घं. 42 मि. से
3 दिसंबर 13 घं. 45 मि.

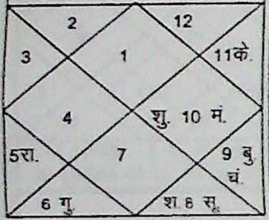

3 दिसंबर 13 घं. 46 मि. से
5 दिसंबर 23 घं. 01 मि.

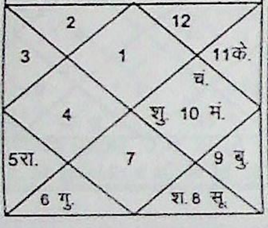

5 दिसंबर 23 घं. 02 मि. से
8 दिसंबर 5 घं. 25 मि.

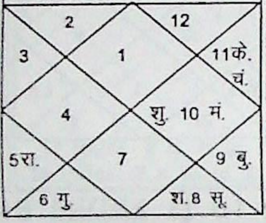

8 दिसंबर 5 घं. 26 मि. से
10 दिसंबर 8 घं. 28 मि.

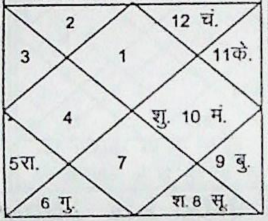

10 दिसंबर 8 घं. 29 मि. से
11 दिसंबर 18 घं. 55 मि.

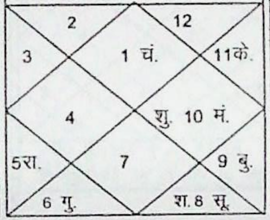

11 दिसंबर 18 घं. 56 मि. से
12 दिसंबर 8 घं. 49 मि.

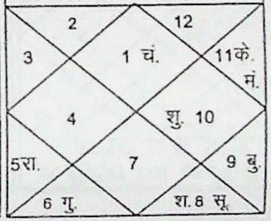

12 दिसंबर, 2016 से 26 जनवरी, सन् 2017 ई.

12 दिसंबर 8 घं. 50 मि. से
14 दिसंबर 8 घं. 13 मि.

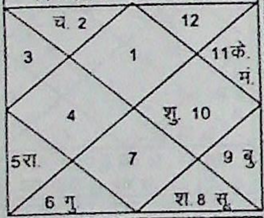

14 दिसंबर 8 घं. 14 मि. से
15 दिसंबर 20 घं. 54 मि.

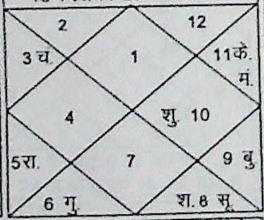

15 दिसंबर 20 घं. 55 मि. से
16 दिसंबर 8 घं. 49 मि.

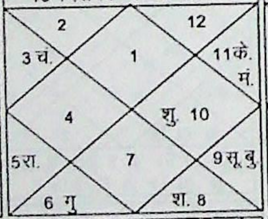

16 दिसंबर 8 घं. 50 मि. से
18 दिसंबर 12 घं. 39 मि.

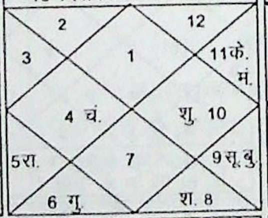

18 दिसंबर 12 घं. 40 मि. से
20 दिसंबर 20 घं. 39 मि.

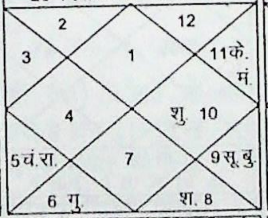

20 दिसंबर 20 घं. 40 मि. से
23 दिसंबर 8 घं. 05 मि.

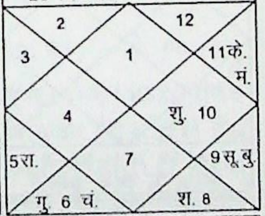

23 दिसंबर 8 घं. 06 मि. से
25 दिसंबर 20 घं. 51 मि.

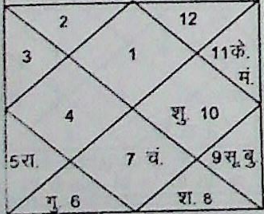

25 दिसंबर 20 घं. 52 मि. से
28 दिसंबर 9 घं. 00 मि.

28 दिसंबर 9 घं. 01 मि. से
29 दिसंबर 2 घं. 45 मि.

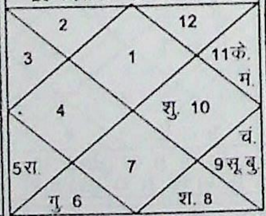

29 दिसंबर 2 घं. 46 मि. से
30 दिसंबर 19 घं. 37 मि.

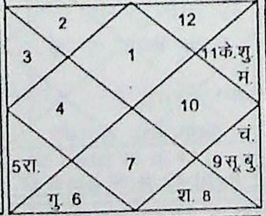

30 दिसंबर 19 घं. 38 मि. से
2 जनवरी 4 घं. 28 मि.

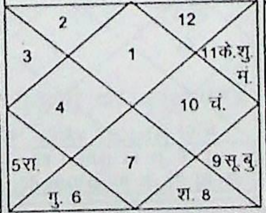

2 जनवरी 4 घं. 29 मि. से
4 जनवरी 11 घं. 17 मि.

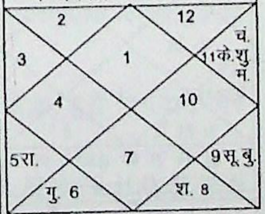

4 जनवरी 11 घं. 18 मि. से
6 जनवरी 15 घं. 44 मि.

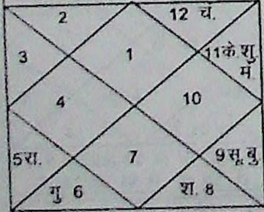

6 जनवरी 15 घं. 45 मि. से
8 जनवरी 17 घं. 54 मि.

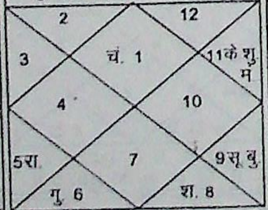

8 जनवरी 17 घं. 55 मि. से
10 जनवरी 18 घं. 43 मि.

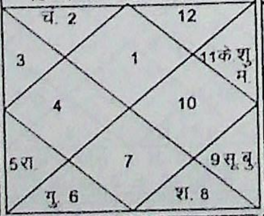

10 जनवरी 18 घं. 44 मि. से
12 जनवरी 19 घं. 46 मि.

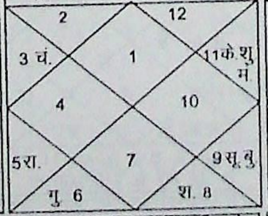

12 जनवरी 19 घं. 47 मि. से
14 जनवरी 7 घं. 37 मि.

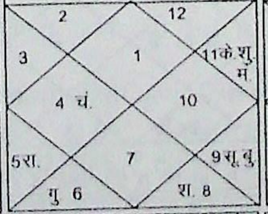

14 जनवरी 7 घं. 38 मि. से
14 जनवरी 22 घं. 54 मि.

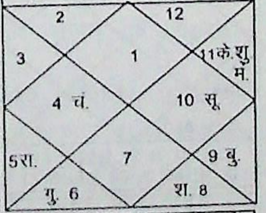

14 जनवरी 22 घं. 55 मि. से
17 जनवरी 5 घं. 32 मि.

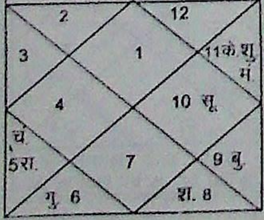

17 जनवरी 5 घं. 33 मि. से
19 जनवरी 15 घं. 50 मि.

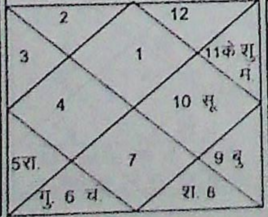

19 जनवरी 15 घं. 51 मि. से
20 जनवरी 13 घं. 48 मि.

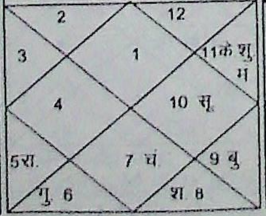

20 जनवरी 13 घं. 49 मि. से
22 जनवरी 4 घं. 17 मि.

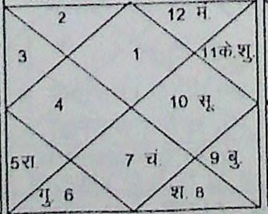

22 जनवरी 4 घं. 18 मि. से
24 जनवरी 16 घं. 32 मि.

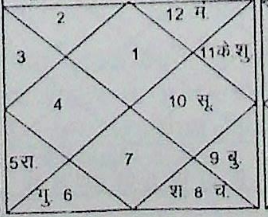

24 जनवरी 16 घं. 33 मि. से
26 जनवरी 19 घं. 29 मि.

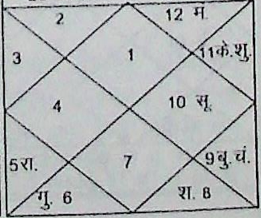

26 जनवरी, से 8 मार्च, सन् 2017 ई.

26 जनवरी 19 घं. 30 मि. से 27 जनवरी 2 घं. 53 मि.

2 | 12 मं.
3 | 1 | 11के.शु.
4 | 10 सू.
श.
5रा. | 7 | 9बु.चं.
गु. 6 | 8

27 जनवरी 2 घं. 54 मि. से 27 जनवरी 20 घं. 16 मि.

2 | 12 मं.
3 | 1 | 11के.शु
4 | चं. 10 सू.
श.
5रा. | 7 | 9बु.
गु. 6 | 8

27 जनवरी 20 घं. 17 मि. से 29 जनवरी 10 घं. 53 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के.
4 | चं. 10 सू.
श.
5रा. | 7 | 9बु.
गु. 6 | 8

29 जनवरी 10 घं. 54 मि. से 31 जनवरी 16 घं. 50 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के. चं.
4 | 10 सू.
श.
5रा. | 7 | 9बु.
गु. 6 | 8

31 जनवरी 16 घं. 51 मि. से 2 फरवरी 21 घं. 10 मि.

2 | शु12मं.चं.
3 | 1 | 11के.
4 | 10 सू.
श.
5रा. | 7 | 9बु.
गु. 6 | 8

2 फरवरी 21 घं. 11 मि. से 3 फरवरी 13 घं. 17 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | चं. 1 | 11के.
4 | 10 सू.
श.
5रा. | 7 | 9बु.
गु. 6 | 8

3 फरवरी 13 घं. 18 मि. से 5 फरवरी 00 घं. 16 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | चं. 1 | 11के.
4 | बु. 10 सू.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

5 फरवरी 00 घं. 17 मि. से 7 फरवरी 2 घं. 38 मि.

चं. 2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के.
4 | बु. 10 सू.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

7 फरवरी 2 घं. 39 मि. से 9 फरवरी 5 घं. 07 मि.

2 | शु 12 मं.
3 चं. | 1 | 11के.
4 | बु. 10 सू.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

9 फरवरी 5 घं. 08 मि. से 11 फरवरी 8 घं. 53 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के.
4 चं. | बु. 10 सू.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

11 फरवरी 8 घं. 54 मि. से 12 फरवरी 20 घं. 38 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के.
4 | बु. 10 सू.
चं.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

12 फरवरी 20 घं. 39 मि. से 13 फरवरी 15 घं. 09 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के. सू.
4 | बु. 10
चं.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

13 फरवरी 15 घं. 10 मि. से 16 फरवरी 00 घं. 31 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के. सू.
4 | बु. 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 चं. | 8

16 फरवरी 00 घं. 32 मि. से 18 फरवरी 12 घं. 25 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के. सू.
4 | बु. 10
5रा. | 7 चं. | 9श.
गु. 6 | 8

18 फरवरी 12 घं. 26 मि. से 21 फरवरी 00 घं. 51 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के. सू.
4 | बु. 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8 चं.

21 फरवरी 00 घं. 52 मि. से 22 फरवरी 18 घं. 43 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के. सू.
4 | बु. 10
चं.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

22 फरवरी 18 घं. 44 मि. से 23 फरवरी 11 घं. 33 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के.बु सू.
4 | 10
चं.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

23 फरवरी 11 घं. 34 मि. से 25 फरवरी 19 घं. 16 मि.

2 | शु 12 मं.
3 | 1 | 11के.बु सू.
4 | 10 चं.
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

25 फरवरी 19 घं. 17 मि. से 28 फरवरी 00 घं. 11 मि.

2 | शु 12 मं. चं.
3 | 1 | 11के.बु सू.
4 | 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

28 फरवरी 00 घं. 12 मि. से 2 मार्च 2 घं. 40 मि.

2 | शु 12 मं. चं.
3 | 1 | 11के.बु सू.
4 | 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

2 मार्च 2 घं. 41 मि. से 2 मार्च 3 घं. 15 मि.

2 | शु 12 चं.
3 | 1 मं. | 11के.बु सू.
4 | 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

2 मार्च 3 घं. 16 मि. से 4 मार्च 5 घं. 38 मि.

2 | शु 12
3 | चं. 1 मं. | 11के.बु सू.
4 | 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

4 मार्च 5 घं. 39 मि. से 6 मार्च 8 घं. 19 मि.

चं. 2 | शु 12
3 | 1 मं. | 11के.बु सू.
4 | 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

6 मार्च 8 घं. 20 मि. से 8 मार्च 11 घं. 55 मि.

2 | शु 12
3 चं. | 1 मं | 11के.बु सू.
4 | 10
5रा. | 7 | 9श.
गु. 6 | 8

8 से 29 मार्च, सन् 2017 ई.

8 मार्च 11 घं. 56 मि. से 10 मार्च 16 घं. 57 मि.

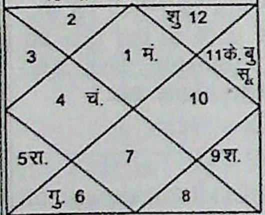

10 मार्च 16 घं. 58 मि. से 11 मार्च 2 घं. 36 मि.

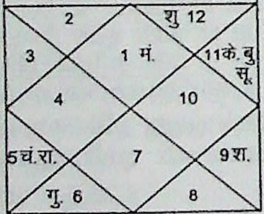

11 मार्च 2 घं. 37 मि. से 12 मार्च 23 घं. 52 मि.

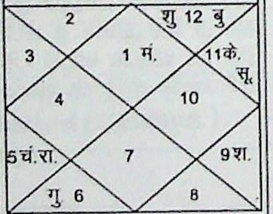

12 मार्च 23 घं. 53 मि. से 14 मार्च 17 घं. 32 मि.

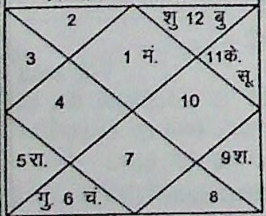

14 मार्च 17 घं. 33 मि. से 15 मार्च 9 घं. 06 मि.

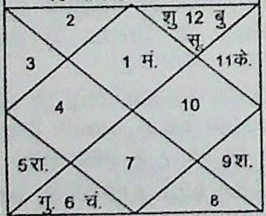

15 मार्च 9 घं. 07 मि. से 17 मार्च 20 घं. 35 मि.

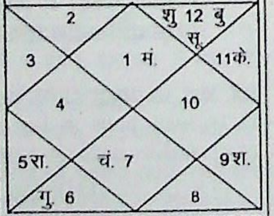

17 मार्च 20 घं. 36 मि. से 20 मार्च 9 घं. 08 मि.

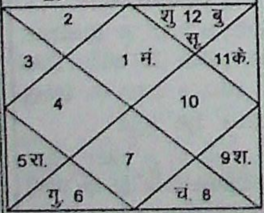

20 मार्च 9 घं. 09 मि. से 22 मार्च 20 घं. 34 मि.

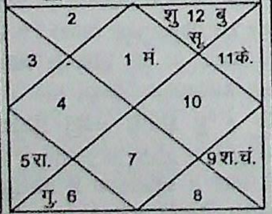

22 मार्च 20 घं. 35 मि. से 25 मार्च 4 घं. 56 मि.

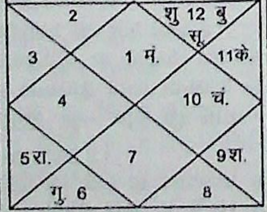

25 मार्च 4 घं. 57 मि. से 27 मार्च 7 घं. 37 मि.

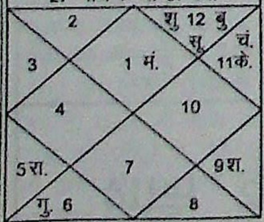

27 मार्च 7 घं. 38 मि. से 27 मार्च 9 घं. 39 मि.

27 मार्च 9 घं. 40 मि. से 29 मार्च 5 घं. 45 मि.

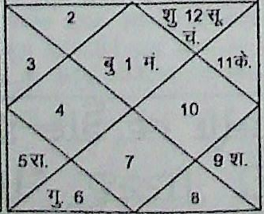

भारतीय लग्ननिर्णय

(मूल्य Rs. 75/– + डाकव्यय Rs. 35/–)

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही तुरन्त (30–40 सैकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं।

हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्यय नहीं लिया जाएगा।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा ''अभिजित् प्रकाशन'' के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला– हरियाणा के) O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE) के Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC-ORBC- 0100988) में भी जमा करवा सकते हैं। हमारे बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद फोन पर हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तक, जो आप मंगवाना चाहते हैं, सूचित करना न भूलें।

ध्यान दें– हमारी पुस्तकें बेचने का अधिकार केवल **''अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59, सेक्टर 6, P. O. पंचकूला –134 109, (हरियाणा)''** को ही है। अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं दिया गया है। इन्हें प्राप्त करने के लिए सीधा हम से ही सम्पर्क करें।

शनि की साढेसाती, ढैय्या एवम् सुवर्णादि पादविचार और गुरु–राहु का गोचरफल (सं. 2073 वि.)

जन्मकुण्डली में शनैश्चर का शुभ ग्रह से सम्बन्ध हो अथवा महादशा का अंतर शुभ चल रहा हो तो ढैय्या और साढेसाती का अशुभफल कम होता है। यदि चन्द्र, शनि जन्म में अशुभ ग्रहों से युक्त हों तो साढेसाती व ढैय्या महान् अशुभ, चिंता, अवनति, धनहानि, झगडा, कार्य में विघ्न, रोजगार में कमी, व्यर्थ कलह एवं रोग, पशु–पीड़ा आदि का कारण बनती है। यदि जन्मकुण्डली में शनि अष्टमेश या मारकेश हो तो भी ढैय्या, साढेसाती विशेष अनिष्ट फलप्रद होती है। **यदि जन्म में शनि लग्नेश, पंचमेश, नवमेश होकर 3, 6, 11 में स्थित हो तो सुख–सम्पत्ति मिलती है, व्यापारादि में लाभ होता है।** शनि के अष्टकवर्ग में अधिक रेखाएं हों तो शुभ, कम रेखाएं हों तो अशुभ फल निश्चित होता है।

शनि की साढ़ेसाती किसे कहते हैं ? समझ लें– शनि की गोचर–स्थिति को ध्यान में रखते हुए जब किसी व्यक्तिविशेष की जन्मराशि किंवा नामराशि से पहले, दूसरे या बारहवें स्थान में शनि हो तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार जातक **'साढेसाती'** के प्रभाव में रहता है। अर्थात् उस व्यक्ति पर साढेसाती चल रही होती है।

व्यक्तिविशेष के लिए साढेसाती का फल इसप्रकार लिखा है–

" राशौ द्वादशे मूर्ध्नि जन्महृदये पादौ द्वितीये शनिः।
नानाक्लेशकरो हि दुर्जनभयं पुत्रान् पशून् पीड़येत्।।"

"शनि की ढैय्या" किसे कहते हैं ? यह भी जान लें–गोचर अनुसार किसी व्यक्तिविशेष की जन्म राशि किंवा नामराशि से जब शनिदेव चौथे या आठवें स्थान पर हो तो उस व्यक्तिविशेष पर **'शनि की ढैय्या'** चल रही है –ऐसा जानें। ढैय्या का फल इस **प्रकार है;–**

" ढैय्या तु प्रददाति वै रविसुतश्चेद्राशेश्चतुर्थाष्टमे।
व्याधिं बन्धुविरोध–विदेशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।"

ध्यान दें– शुभ एवं क्रूरग्रहविचार में गुरु–शुक्र स्थितिविशेष–विचार से शुभ एवं शनि–मंगल अशुभ फलप्रद माने गए हैं ;–

" तेषामतीव शुभदौ गुरु–दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकरसुत–क्षितिभौ भवेताम्।।"–(*फलितमार्तण्ड*)

शनि लगभग अढाई वर्ष तक एक ही राशि में संचार करने के कारण इसे 'मन्द' किंवा ' शनैश्चरति ' इति 'शनि', की संज्ञा दी गई है। लेकिन शनिग्रह की वक्र एवं मार्गी गति के कारण अनेकदा अपनी अढाई वर्ष के काल में न्यूनाधिकता भी कर देता है। कभी–कभी शनि अपनी वक्र–मार्गगति एवं शनि के अतिचार के कारण एक वर्ष में दो राशियों को भी स्पर्श कर लेता है, जोकि मेदिनी ज्योतिष एवं ततद्राशि के व्यक्ति एवं देश के लिए कठिन परिस्थितियों को भी जन्म देता है।

अनेकदा शनि मंगल दोनों क्रूर ग्रह वर्ष में वक्रगति से चलें या दोनों में से कोई एक वक्रगति से चलकर एकराशि–सम्बन्ध बना ले तो अधिक नेष्ट फलप्रद हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में जातकविशेष को साढेसाती किंवा ढैय्या शारीरिक कष्ट, वायु–रक्त–पित्त–विकार, त्वचारोग, आर्थिक संकट, शत्रुपक्ष से मानसिक परेशानी, दुर्घटना से हानि आदि फल करते हैं। देश–विशेष के लिए राजनीतिज्ञों में विरोध, सत्तासंघर्ष, प्रतिष्ठित व्यक्ति की मृत्यु, आर्थिक/सामाजिक अव्यवस्था, असन्तोष, भूकम्प, तूफान, दुर्भिक्ष आदि प्राकृतिक प्रकोप, सीमाप्रान्तों पर अशान्ति आदि आपदाएं उपस्थित करता है–"क्रूराः वक्राः महाक्रूराः" ।

वृश्चिकराशि में शनि का प्रवेश– शनिदेव, जिसने संवत् 2071 वि. में 2 नवंबर, सन् 2014 ई. को 20 घं. 54 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर शतभिषा नक्षत्र एवं कुम्भ–राशिस्थ चन्द्र के समय वृश्चिक राशि में पदार्पण किया था, संवत् 2072 वि. के अन्त तक वृश्चिक राशि में ही विचरण करने के उपरान्त आगे सं. 2073 वि. में भी 26 जनवरी, सन् 2017 ई. तक वृश्चिक राशि में ही रहेंगे।

वृश्चिक राशि में स्थित शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का विचार

आगे दिया गया कोष्ठक देखें–तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि वाले व्यक्ति इसवर्ष साढेसाती के प्रभाव में व सिंह व मेष राशि वाले जातक ढैया के प्रभाव में रहेंगे।

वृश्चिक राशिस्थ शनि की साढेसाती एवं ढैय्या का फल

(2 नवंबर, सन् 2014 ई. से सं. 2073 वि. में 26 जनवरी, 2017 ई. तक के लिए)

राशि	ढैय्या या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
सिंह	ढैय्या	ताम्र	– –	– –	अचानक धनलाभ, स्त्री–पुत्र से सुख, सम्पत्ति–लाभ, प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहें, सेहत ठीक।
तुला	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, धनधान्यसमृद्धि, प्रभावक्षेत्र बढे, राजपक्ष से सम्मान, सुख–सम्पत्तिलाभ, घर में मंगलकार्य हों।
वृश्चि.	साढेसाती	लौह	हृदय	– –	शरीरपीड़ा, रक्त–पित्तविकार से परेशानी, स्त्री–कष्ट, पशु किंवा सन्तानपक्ष से कष्ट, व्यापार में हानि एवं राजपक्ष से भय।
धनु	साढेसाती	ताम्र	मस्तक	चढ़ती	व्यापार में प्रचुर लाभ हो। स्त्रीपक्ष एवं पुत्र से सुख, सेहत ठीक, प्रगति के मार्ग प्रशस्त रहें।
मेष	ढैय्या	सुवर्ण	– –	– –	निजीजन–विरोध, शत्रुवृद्धि, गृहक्लेश, रोगों से परेशानी, वृथा–खर्च, धनहानिभय।

सं. 2073 वि. में धनु–राशिस्थ शनि की साढेसाती एवम् ढैया का विचार

सं. 2073 वि. में 26 जनवरी, सन् 2017 ई. को 19 घं. 30 मि. पर पू.षा. नक्षत्र एवम् धनुराशिस्थ चन्द्र के समय शनिदेव धनुराशि में प्रविष्ट होकर संवत् 2073 वि. के अन्त तक धनु राशि में ही रहेंगे।

धनु–राशिस्थ शनि की साढेसाती एवम् ढैया का विचार
(26 जनवरी सन् 2017 ई. से सं. 2073 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि	ढैया या साढेसाती	पाद	साढेसाती		शुभाशुभ फल
			किस अंग पर	चढ़ती या उतरती	
वृष	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री–परिवार कष्ट, पशु–पुत्र–पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय रहे।
कन्या	ढैय्या	लौह	– –	– –	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री–परिवार कष्ट, पशु–पुत्र–पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय रहे।
वृश्चि.	साढेसाती	रजत	पाद	उतरती	व्यापार में प्रगति, प्रभावक्षेत्र बढ़े, धनधान्य समृद्धि, सुख–सम्पदा लाभ, घर में मांगलिक–कार्य, राजपक्ष से सम्मान मिले।
धनु	साढेसाती	सुवर्ण	हृदय	– –	निजीजन विरोध, शत्रुवृद्धि, रोगकष्ट, गृहक्लेश, वृथाव्यय, धनहानि हो।
मकर	साढेसाती	लौह	मस्तक	चढ़ती	शरीरपीड़ा, रक्तविकार, स्त्री–परिवार कष्ट, पशु–पुत्र–पीड़ा, व्यापार में हानि, राजपक्ष से भय रहे।

नोट :– पीछे दिए गए कोष्ठकों में जिन राशियों का निर्देश (जिक्र) नहीं किया गया है; उन राशि वाले जातकों के लिए इस साल वृश्चिक एवम् धनु–राशिस्थ शनि की समयावधि में साढेसाती या ढैय्या नहीं है– यह समझ लें।

साढेसाती में प्रत्येक राशि के लिए शनि का अशुभ फल इस प्रकार है–

मेष राशि वालों को बीच के अढाई वर्ष खराब हैं। वृष को पहिले अढाई वर्ष, मिथुन को अंत के अढाई वर्ष, कर्क को बीच के अढाई वर्ष, सिंह को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष खराब हैं। कन्या को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। तुला को आखिर के अढाई वर्ष, वृश्चिक को अंतिम 5 वर्ष नेष्ट हैं, उसमें भी मध्य के अढाई वर्ष विशेष अशुभ हैं। धनु को प्रारंभ के अढाई वर्ष, मकर को पहिले 5 वर्ष, उसमें भी पहिले अढाई वर्ष विशेष खराब हैं। कुंभ को आदि एवं अन्त के पांच वर्ष, विशेषतः अन्त के अढाई वर्ष अधिक अशुभ हैं। मीन को पूरे साढेसात वर्ष नेष्ट हैं, उनमें भी अन्त के अढाई वर्ष विशेष अशुभफल देने वाले होते हैं।

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शास्त्रीय उपाय

शनि की साढेसाती/ढैय्या के नेष्टफल की शान्ति के लिए शनि के बीज मन्त्र या वैदिक मन्त्र का 23,000 की संख्या में विधिपूर्वक जाप करें। तदुपरान्त दशांश हवनादि करें। शनिवार के दिन सतनाजा–दान, लौहपात्र में तैलदान, शनिस्तोत्र का पाठ करना/कराना भी श्रेयस्कर रहता है। इसके अतिरिक्त शुभ वेला में 'नीलम' रत्न एवं 'शनियन्त्र' धारण करना भी आश्चर्यजनकरूप से लाभप्रद रहता है। परन्तु रत्नधारण करने से पूर्व शनि के अंशादि का अध्ययन करवाकर किसी दैवज्ञ का परामर्श ले लेना श्रेयस्कर रहेगा।

शनि का बीज मन्त्र– "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"।

प्रतिदिन 3 माला मन्त्रजाप करें। मन्त्रजाप से पहले "अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, शनैश्चर–नेष्टफलशान्त्यर्थम् शनि–मन्त्रजापमहं करोमि"– इस प्रकार संकल्प करके शनि–मन्त्रजाप करें।

शनिवारी अमावस वाले दिन सूर्यास्तसमय (गोधूलि–वेला में) शनि–मन्त्रजाप, स्तोत्रपाठ करें एवं तेल में मुंह देखकर, उसमें एक लौंग डालकर दान करें और सायंकाल पीपल के नीचे दीपक जलाएं।

मन्त्रजाप की विधि– अनुष्ठान शनिवार को शुरु करें। सूर्यास्तसमय स्नान करके कम्बलासन पर बैठकर पश्चिमाभिमुख होकर (पश्चिम की तरफ मुंह करके) लोहे के खुले बर्तन में जौ, लौंग एवं काले तिल प्रत्येक 200 ग्राम लेकर एक अञ्जलिभर चावल और 7 सुपारी रखें। मौली, धूप, लालचन्दन, दो अपूप (पूड़े) भी सामने रख लें। मिट्टी के बर्तन में तेल का दीपक प्रज्वलित करें एवं एक स्टील का लोटा तेल से भरकर सामने रखकर " ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः"– इस मन्त्र का कुल 23 हजार जाप करें। मन्त्रजाप पूर्ण होने के बाद सारी सामग्री, जो सामने रखी थी, को जलप्रवाह कर दें। तेलभरी गड़वी (लोटे) में लौंग डालकर शनि वाले डकौत को दें। सामग्री को जलप्रवाह करते समय निम्नांकित मन्त्र का उच्चारण करें–

" ॐ नमः कृष्णाय नीलाय शिति–कण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्नि–रूपाय कृतान्ताय च ते नमः।।"

इस मन्त्रोच्चारण के बाद "दूर जाते हुए शनि को पृष्ठभाग" से नमस्कार करके घर को जाएं। किसी अच्छे विद्वान् दैवज्ञ के परामर्श से (कुण्डली दिखाकर) 'नीली' नग या 'नीलम' धारण करना भी ठीक रहेगा।

नीलम रत्न का काम देने वाली वनौषधि

शनिदोष निवारण के लिए अनेक व्यक्ति नीलम धारण करते हैं परन्तु सबको अनुकूल बैठने वाला शुद्ध नीलम रत्न बहुत कम मिलता है। उसकी भले–बुरे की परीक्षा भी कठिन है और यह रत्न बहूमूल्य (मंहगा) होता है। अतः सर्वसाधारण मनुष्य खरीद नहीं सकते। ऐसे व्यक्ति नीलम के अभाव में 'बिच्छू बूटी' की जड़ का प्रयोग करें। बिच्छूबूटी हिमाचल–प्रदेश में बहुत होती है। कोमल कांटेदार पत्तों को स्पर्श करने से वृश्चिकदंश जैसी पीड़ा होने लगती है। अतः इसका नाम बिच्छूबूटी है। शुक्लपक्ष शनिवार को प्रातः (यदि पुष्य नक्षत्र भी मिल जाए तो अत्युत्तम) बिच्छूबूटी की जड उखाड़कर ले आवें। पहले दिन शुक्रवार की सन्ध्या को निमंत्रण दे आवें। इस जड़ के टुकड़े को चान्दी के ताबीज में भरकर शनिमन्त्र से धारण करें। यह हर व्यकित का शनिदोष निवारण करती है।

शनिजन्य नेष्टफल शान्त्यर्थ वैदिक मन्त्र –

"ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः।
शं शनये नमः ॐ।।"

शनिजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ शनैश्चर–स्तोत्र

पिप्पलाद उवाच–

" ॐ नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाय नमोऽस्तु ते।
नमस्ते बभ्रुरुपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चांतकाय च ।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।"

इस स्तोत्र का पाठ शनिवार को पीपल के नीचे बैठकर एवं अन्य दिनों में भगवान् शंकर से प्रार्थनापूर्वक शिवमंदिर या घर में भी बैठकर प्रातः पढ़ने से साढेसाती व ढैय्या की दुःखद पीड़ा नहीं होती– अनुभूत है।

शनिजन्य नेष्टफल परिहारार्थ तुलादान कराएं–

विधि– शनि ग्रह से पीड़ित व्यक्ति अपने जन्मदिन पर व शनैश्चरी अमावस किंवा शनिवार को दिन में लगभग 11 / 12 बजे गेहूं, काले चने, चावल, बाजरा, कालीदाल (मांह), जौ, मूंग आदि (सात) अनाजों से अपने वजन के बराबर तोल कर दान (तुलादान) करें। साथ ही तेल में मुंह देखकर दक्षिणा–सहित शनि का दान लेने वाले (ढौंसी) को दे दें। बाद में तुलादान के समय पहने हुए कपड़े भी स्नान करके दान कर दें।

नोट– तुलादान से पहिले यदि कोई बहुमूल्य आभूषण आदि शरीर पर धारण किया हुआ हो, वह भी पहिले ही उतार दें, अन्यथा वह भी दान करना होगा।

सिंह राशिस्थ गुरु का फल

सिंहराशि में गुरु का प्रवेश– गुरु, जिसने कि संवत् 2072 वि. में 14 जुलाई, सन् 2015 ई. मंगलवार को मृगशिरा नक्षत्र, ध्रुव योग एवं मिथुनस्थ चन्द्र के समय प्रातः 6 बजकर 26 मि. पर सिंहराशि में प्रवेश किया था, सं. 2073 वि. में 11 अगस्त, सन् 2016 ई. तक सिंह राशि में ही रहेगा।

सिंहराशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(14 जुलाई, सन् 2015 ई. से 11 अगस्त, 2016 ई. तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	सुख	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधि-व्याधि	प्रगति	धनहानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान	रोग

सिंहस्थ गुरु वक्री – 8 जनवरी, सन् 2016 ई. को गुरु वक्री होकर संवत् 2072 वि. के अन्त तक वक्री ही रहेगा।

सिंहस्थ वक्री गुरु का फल–

"सिंह राशिगतो जीवो विकारं कुरुते यदा।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोके प्रसन्नता।।"

अर्थात्– सिंहस्थ गुरु के वक्री होने पर सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्य

रहे एवं सर्वत्र प्रसन्नता का वातावरण रहे। अशुभ ग्रहयुक्त या दृष्ट गुरु शुभफल में न्यूनता करता है। इसी प्रकार शुभयुक्त किंवा शुभदृष्ट गुरु शुभफल में वृद्धि करता है।

कन्या राशि में गुरु का प्रवेश

वि. सं. 2073 में 11 अगस्त, सन् 2016 ई. गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र, ब्रह्म योग एवम् वृश्चिकस्थ चन्द्र के समय 21 घं. 29 मि. (भा.स्टैं.टा.)पर गुरु कन्याराशि में प्रविष्ट होकर, संवत् 2073 के अन्त तक कन्या राशि में ही चलते रहेंगे।

कन्याराशिस्थ गुरु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(11 अगस्त, सन् 2016 ई. से सं. 2073 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	रोगभय	सुखलाभ	धनहानि	शरीरकष्ट	धनलाभ	भय	आधिव्याधि	प्रगति	धनलाभ होकर हानि	धनलाभ	धननाश	सम्मान

गुरुजन्य नेष्टफल–शान्त्यर्थ उपाय

गुरुग्रह नेष्टफलप्रद हो तो :—गुरुवार को (विशेषतः गुरुवारी अमावस वाले दिन) केले के वृक्ष को सींचना चाहिए। पीली वस्तु (चना, पीला फल, हल्दी) को पीले कपड़े में बांधकर दान करें। सोना, गुड़, शर्करा, लड्डू आदि द्वारा वृद्ध ब्राह्मण का यथाशक्ति सम्मान करें। गुरु ग्रह के बीजमन्त्र का 19 हजार जाप करें। गुरु का जपनीय बीजमन्त्र यह है:– " ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।" केसर किंवा हल्दी का तिलक धारण करें। पीला पुखराज 5/7 रत्ती पुरुष दाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में एवं स्त्रियां बाएं हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें।

संवत् 2073 वि. में राहु की स्थिति एवम् शुभाशुभ फल

गत संवत् 2072 वि. में माघ कृष्ण पंचमी, तात्कालिक षष्ठी, शुक्रवार, तदनुसार 29/30 जनवरी, सन् 2016 ई. को हस्त नक्षत्र, धृतियोग एवम् कन्याराशिस्थ चन्द्र के समय राहु सिंहराशि में 25 घं. 52 मि. (भा.स्टैं.टा.)पर दाखिल होकर सं. 2072 वि. के अन्त तक, किञ्च आगे संवत् 2073 वि. के अन्त तक भी सिंह राशि में ही विचरण करेगा।

सिंहराशिस्थ राहु का प्रत्येक राशि के लिए शुभाशुभ फल

(29/30 जनवरी, 2016 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक के लिए)

राशि →	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
फल	धनक्षय	अपमान	सौभाग्य	कलह	भय	विनाश	धनलाभ	कलह	दुःख	धनहानि	राजभय	महासुख

राहु जन्माङ्ग या गोचर में नेष्ट फलप्रद हो तो– कम्बल, तिल–तैल, नारियल, लौंग एवम् काले या भूरे रंग के वस्त्र में सतनाजा बांधकर दक्षिणासहित सायंकाल के समय दान करें। साथ ही कम्बलासन पर बैठकर राहु के बीजमन्त्र (ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।) का 18 हजार की संख्या में जाप करें। शान्ति रहेगी। दैवज्ञ के परामर्श से राहुशान्त्यर्थ 'गोमेद' नग 5/7 रत्ती भी धारण कर लेना हितकर रहेगा।

अथ नवग्रहस्तोत्रम्

जपाकुसुम–संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव-संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसंभूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियङ्गु–कलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषीणां च गुरुं कांचन–सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्त्तण्डसंभूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।
इति व्यासमुखोद्‌गीतं यःपठेत्सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशांतिर्भविष्यति।।
नर-नारी-नृपाणां च भवेद् दुःस्वप्ननाशनम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम् ।।

———

आकाशी कौंसिल का विचार (सं. 2073 वि.)

(ग्रहपरिषद् एवं ग्रहगोचर के आधार पर विश्व की सामाजिक, आर्थिक एवम् राजनैतिक स्थिति का सर्वेक्षण)

- सं. 2073 वि. का राजा 'शुक्र' एवं मन्त्री 'बुध' है। अतः दोनों परस्पर मित्र होने से देश में प्रगतिप्रद योजनाएं बनेंगी।
- यह 'सौम्य–संवत्सर' अन्ततः सौम्य परिस्थितियों को जन्म देगा। शान्ति/कानूनव्यवस्था में सुधार, महंगाई पर कंट्रोल, शिक्षा में प्रगति, सैन्यशक्ति में वृद्धि आदि सुधारात्मक प्रक्रियाओं में बाधाएं उपस्थित होने पर भी संवत् 2073 के अन्तिम चरण में सरकार की गतिविधियां सन्तोषजनक रहेंगी।
- संवत् के प्रारम्भ से लगभग जून, 2016 ई. तक राजनैतिक दलों द्वारा शनि–मंगल एवम् चन्द्र की स्थिति–गति के अनुसार भाजपाशासित व्यवस्था की आलोचना नकारात्मक रहेगी।
- 12 जुलाई से लगभग 18 सितम्बर तक शनि–मंगल की एकराशि में स्थिति भयंकर प्राकृतिक आपदा किंवा महानगर–विशेष में उग्रवादजन्य जनधनहानि भी केन्द्रशासित सरकार को विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में असफल साबित कर सकती है।
- 1 नवंबर से 11 दिसं., 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी किसी विशिष्ट प्रतिष्ठित व्यक्ति की पदरिक्तता का संकेत देती है।
- इस संवत् की समूची ग्रहस्थिति विशिष्ट राष्ट्रनेतृत्व के लिए भयावह है। साथ ही अघटित घटनाओं (आपदाओं) का संकेत भी देती है।
- सीमाप्रान्तों पर विशेषतः काश्मीर एवम् अन्यत्र भी सेना की गतिविधि चिन्ताजनक रहेगी।
- प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्रमोदी जी की प्रगतिप्रद योजनाओं में भारी बाधाएं तो उपस्थित होंगी, परन्तु आने वाले वर्षों में देश की सुख–समृद्धि से जनता को सन्तोष अनुभव होने लगेगा।
- केन्द्र में कुछ निजीव्यक्ति अनुकूल न सिद्ध होने पर संवत् 2073 वि. के पूर्वार्ध में ही केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में रद्दोबदल करना पड़ेगा।
- भारतीय गणतन्त्र की महिमा उजागर रहेगी, लेकिन यह संवत् कठिन परिस्थितियों वाला अवश्य है। विस्तार जानें– अगले पृष्ठों में–

संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से विलग नहीं हो सकता। एक सूक्ष्मतम परमाणु में यदि तनिक भी अव्यवस्था किंवा अनुशासनहीनता आ जाए, तो विराट्ब्रह्माण्ड एकक्षण के लिए भी न टिक सके। एक क्षणिक विस्फोट से अनन्त प्रकृति अग्निज्वालाओं से अतिरिक्त कुछ न रहे," - यह नियामक विधान किसी अदृश्य सत्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार यह सम्पूर्णब्रह्माण्ड प्रभु के एक निश्चित विधान के अनुसार ही चल रहा है। इस विधान का साक्षात्कृत-धर्मा ऋषियों ने जो अध्ययन व चिन्तन किया है, उसका परिणाम ही ' ज्योतिष ' है।

इस वेदांगरूप ज्योतिष को गुरु-शिष्य परम्परया आजतक जीवित रखा गया है-

" साक्षात्कृत धर्माण ऋषयो बभूवुः। तेऽवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्य उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः।
उपदेशाय ग्लायन्तोऽवरे बिल्मग्रहणायेमं ग्रन्थं समाम्निषुर्वेदं वेदांगानि च।। "

— (*यास्काचार्य*)

ज्योतिष के अनुसार ब्रह्माण्ड के सभी क्रिया-कलाप ग्रहों द्वारा नियन्त्रित हैं। आकाश में जो भी ग्रह-नक्षत्र हैं, उनसे यह पृथ्वी किंवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड अप्रभावित नहीं रहते - यह ज्योतिष का एक मूलभूत सिद्धांत है। अतः सिद्धांत की प्रामाणिकता में सन्देह करना तो दुराग्रह ही है।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार कालात्मा सूर्य को सब ग्रहों का प्रधान माना गया है। 'शुक्ल यजुर्वेद' की इस ऋचा पर ध्यान दें-

"आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।।
हिरण्येन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।।"

अर्थात्- सूर्यनारायण सम्पूर्ण भुवनों को देखते हुए परिभ्रमण करते हैं। सभी ग्रहों में एकमात्र सूर्यदेव ही तो हैं, जो प्रत्यक्षरूप से दृष्टिगोचर होते रहते हैं। सम्पूर्ण दिशाओं को प्रकाश देने वाला कालात्मा सूर्य स्थावर-जंगम जगत्, ग्रह, पृथ्वी, जल, वायु, आकाश किंवा समस्त भूचक्र का भेद जानता है। सूर्य की प्राकृतिक

व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तर होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवों से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः **स्पष्ट है, कि आकाशीय पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है। इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।**

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भौतिक ज्योतिष की अनेक शाखाओं का विकास हुआ है, जिनके आधार पर फलितशास्त्र की सत्यता के बारे में प्रमाण मिलते ही जा रहे हैं। सूर्य–कलंकचक्रों, चन्द्रमा एवं ज्वारभाटा–सम्बन्धी सिद्धान्तों के परिशीलन तथा ग्रहों के आकर्षण–सिद्धांत की प्रक्रिया के आधार पर विवेचन करने से प्राणीशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र एवं प्रकृति के प्रत्येक पहलु पर ग्रहों का प्रभाव सत्य सिद्ध हो चुका है। यही कारण है कि – आजकल के वैज्ञानिक युग में पाश्चात्त्य एवं पूर्वीय सभी देशों में इस शास्त्र के प्रति आस्था प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। इस **विषय में मिन्नेसोटा विश्वविद्यालय (अमेरिका) (University of Minnesota) में डॉ. मार्कग्रोबार्ड (Dr. Mark Graubard) के तत्त्वाधान में हुए फलितशास्त्र–सम्बन्धी शोध** के परिणाम महत्त्वपूर्ण हैं। भारत–सरकार ने वेदांग ज्यौतिषशास्त्र के विश्वविद्यालयों में अध्ययन–अध्यापन में रुचि प्रदर्शित की, लेकिन कुछ सांसदों ने इसे विवाद का विषय बना दिया और मामला सुप्रीम कोर्ट तक चला गया। यथार्थ बात तो यह है कि– ज्योतिष शायद सबसे पुराना विषय है और एक अर्थ में सबसे ज्यादा उपेक्षित विषय भी। उपेक्षित इसलिए कि फलितशास्त्र में शोध के लिए शासन उपेक्षाभाव लिए है। मनुष्यजाति के इतिहास की जितनी भी खोज हो सकी है, उसमें ऐसा कोई भी समय नहीं था, जबकि ज्योतिष मौजूद न रहा हो। इसलिए इसे पुरातनतम भी माना गया है।

विज्ञान कार्य–कारण के सिद्धांत पर ही आधारित है। परन्तु आज भी असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्य–सिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

'ऋग्वेद' में पचानवें हजार वर्ष पूर्व ग्रह–नक्षत्रों का वर्णन उपलब्ध है। महर्षियों द्वारा प्रस्फुरित इस शास्त्र पर गुरु–शिष्य परम्परया चिंतन व संशोधन–संवर्धन होते रहे हैं। प्रत्येक ग्रह जब अपनी गति–स्थिति में अंतर लाता है, तभी विश्व का घटनाचक्र प्रभावित होता देखा गया है। इस पृथ्वी पर जो कुछ भी घटित होता अनुभव करते हैं, वह सब ग्रहों के वक्र–मार्ग आदि के ही परिणाम हैं। इस ग्रहगतिजन्य संकेत के आधार पर ही अपनी मति के अनुसार विश्व में जो भी प्रतिवर्ष घटित होता है, " श्रीमार्त्तण्डपंचांग " के माध्यम से प्रिय पाठकों के समक्ष उपस्थित करते हैं और यह इस प्रकाशन का 89 वां गौरवपूर्ण वर्ष प्रारम्भ हो रहा है।

श्री वि. संवत् २०७३ की ग्रहस्थिति के अनुसार विश्वजनीन घटनाओं की भविष्यवाणी प्रस्तुत करने से पहिले हम अपने विद्वान्, प्रबुद्ध पाठकों का आभार व्यक्त कर देना उचित समझते हैं, जिन्होंने लगातार 88 वर्षों तक हमारी भविष्यवाणियों का सही मूल्यांकन करके हमें आज 89 वें वर्षप्रवेश पर भी इस बारे में कुछ लिखने को प्रोत्साहित किया है। पाठको! आपका यह पंचांग अपनी सर्वांगशुद्ध गणित एवं आश्चर्यजनक भविष्यवाणियों के लिए भारत में ही नहीं, विदेशों में भी विश्रुत हो चुका है।

आपके इस लोकप्रिय पंचांग में प्रतिवर्ष प्रकाशित होने वाली आश्चर्यजनक, अव्यभिचरित भविष्यवाणियों में साधारण वर्ग के व्यक्ति से लेकर **भारतरत्न श्रीजवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य गण्यमान्य प्रतिष्ठित ऐतिहासिक महापुरुषों की अभिरुचि रही है। आज भी यह पंचांग अपनी सफल, आश्चर्यचकित कर देने वाली भविष्यवाणियों के कारण तथा ग्रहण आदि पंचांगगणित की सूक्ष्मता एवं शुद्धि के कारण भारत में ही नहीं, विदेशों में भी लोकप्रिय है और भारत में अग्रणी स्थान प्राप्त कर चुका है।**

[भारत–पाकविभाजन; बंगलादेश का अस्तित्व में आना; श्रीजवाहरलाल नेहरु, श्रीलालबहादुर शास्त्री एवं श्रीमती इन्दिरागांधी के शासन का अंत एवं मृत्यु की सूचना; भारत–पाकयुद्ध; भारत–चीनयुद्ध; विदेशों में घटित होने वाले महत्त्वपूर्ण घटनाचक्र; समय–समय पर भारत की राजनीति में विशेष परिवर्तनों एवं अन्य घटनाचक्र की सूचना किंवा ऐतिहासिक भूकम्प; गुजराल–सरकार का अपदस्थ होना, भाजपा सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पारित होना; पाक में श्री नवाजशरीफ की सरकार का तख्तापलट; अमेरिका में वर्ल्डट्रेड सैंटर एवं पेंटागन पर उग्रवादियों का हमला, अमरीका की कोलम्बिया आन्तरिक शटलयान दुर्घटना; इराक पर अमरीकी हमला और सद्दाम हुस्सैनशासन का अन्त; नेपाल में माओवाद से अशान्ति एवं राजशाही का अन्त; अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री रीगन की मृत्यु, संवत् 2061 वि. में भाजपा एवम् N.D.A. शासन का तख्तापलट एवम् भारत के लोकसभा–निर्वाचनों में त्रिशंकु शासनसत्ता की भविष्यवाणी के अतिरिक्त 26 दिसंबर 2004 ई. को तामिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश एवं अण्डेमान–निकोबार में समुद्री सुनामी–लहरों से प्रलयंकारी तबाही की सटीक भविष्यवाणी, 30 अगस्त, 2004 ई. को अमरीका में भूकम्प एवम् अन्य अनेकों अवाक् कर देने वाली सफल भविष्यवाणियां कर देने का शीर्षस्थ स्थान केवल 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' को ही प्राप्त हुआ है ।]

अपि च– संवत् 2063 वि. में इराक के तानाशाह की फांसी की घोषणा; 20 दिसम्बर, 2006 ई. को समुद्रीतूफान, जहाज डूबा, 865 यात्री मारे गए– इस घटना की भविष्यवाणी; भारत–अमेरिका परमाणुकरार में बाधा एवम् प्रधानमन्त्री श्रीमनमोहन जी के निर्णय में बाधक स्थिति की सूचना; मई से जुलाई 2007 ई. के मध्य पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों में घटित घटनाओं का चित्रण; 30 जून, 2007 ई. को देहली के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्रीसाहिब सिंह के दुर्घटनाग्रस्त होने की भविष्यवाणी, 16 अगस्त, 2007 ई. को पीरु के भयंकर भूकम्प; 21 अगस्त, 2007 ई. में मैक्सिको के भयंकर तूफान; 12 सितम्बर, 2007 को सुमात्रा–इण्डोनेशिया में 7.9 स्केल के भूकम्प; *संवत् 2064 वि.* की भविष्यवाणी के अनुसार उत्तर प्रदेश में बसपा सरकार की स्थापना, नेपाल में माओवादियों के प्रभाव की घोषणा; 27 दिसम्बर, 2007 ई. को पाक में श्रीमती बेनज़ीर भुट्टो की हत्या की भविष्यवाणी; 12 मई, 2008 ई. को चीन में भयंकर भूकम्प; 3 मई, 2008 ई. को म्यांमार में भूकम्प; सं. 2065 वि. में मुंबई स्थित ताज होटल पर सब से बड़े उग्रवादी हमले की भविष्यवाणी; 14 नवम्बर, 2008 ई. को चन्द्रमा पर भारत का तिरंगा फहराना एवं भारत के विश्व की चौथी शक्ति के रूप में उदय की भविष्यवाणी; *सं. 2066 वि. में नेपाल में राजतन्त्र की समाप्ति एवम् गणतन्त्र की स्थापना, सं 2066 वि. में अमरीका में बराक ओबामा के राष्ट्रपति बनने की भविष्यवाणी, श्री मनमोहन सिंह जी का पुनः प्रधानमन्त्री बनना; 12/13 जनवरी, 2010 ई. को हैती के विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी;* 27 फरवरी, 2010 में चिल्ली में 8.8 रैक्टेयर भूकम्प, *17 जनवरी, 2010 को भारतीय राजनीति के युग पुरुष ज्योतिवसु जी के स्वर्गवास, 15 मई, 2010 ई. को पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत का महाप्रयाण, 5/6 अगस्त, 2010 ई. को लेह–लदाख में बादल फटने से हवाई अड्डे के ध्वस्त होने की भविष्यवाणी, 10/11 अगस्त, 2010 को जापान एवं चीन में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी, 14 अप्रैल, 2010 ई. को तिब्बत के पठार में भयंकर भूकम्प की भविष्यवाणी; 11 मार्च, 2011 ई. में सदी के सबसे विनाशकारी भूकम्प की भविष्यवाणी सं. 2067 वि. के पृ. 122 पर; 13 जुलाई, 2011 ई. मुम्बई में उग्रवादियों द्वारा कहर बरपाने की भविष्यवाणी पृ. 22 पर 2 मई, 2011 ई. को आतंकवादी लाडेन की भविष्यवाणी सं. 2068 वि. के पंचांग पृ. 29 पर लीबिया के शासक कर्नल गद्दाफी के मारे जाने की भविष्यवाणी एवम् 24 अक्तूबर, 2011 ई. को तुर्की में भीषण भूकम्प, लाखों लोगों के बेघर होने की भविष्यवाणी पृ. 29 पर; सं. 2069 वि. के पंचांग में 3 अगस्त, सन् 2012 ई. को चीन में भूकम्प पृ. 33–34 पर 27 अगस्त को उ.प्र., नेपाल, मुम्बई, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ एवम् केरल में लाखों लोग जलग्रस्त होने की भविष्यवाणी; पृ. 100 पर; भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री इन्द्रकुमार गुजराल के निधन की भविष्यवाणी एवम् शिवसेना–प्रमुख श्री बालठाकरे के निधन की भविष्यवाणी सं. 2068 वि. के पंचांग पृ. 38, कॉलम 2 पर। 2 जून, सन् 2013 ई. को उत्तराखण्ड में प्राकृतिक भीषण आपदा से महाविनाश की भविष्यवाणी श्रीमार्त्तण्ड पंचांग सं. 2070 वि. के पृ. 44 पर लिखी गई थी।*

इत्यादि अनेकों अवाक् कर देने वाली भविष्यवाणियों की चर्चा का विस्तृत विवेचन आप गतवर्षों के पंचांगों में पढ़ सकते हैं। स्थानाभाव के कारण गतवर्षों की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा करना यहां संभव नहीं है, लेकिन संवत् 2071 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में से भी कुछ भविष्यवाणियों का उल्लेख संक्षेप में कर देना प्रासंगिक रहेगा। यद्यपि भविष्यवाणियों की चर्चा 'आकाशी कौंसिल' में प्रसंगवश कर दी गई है, जो अछूती भविष्यवाणियां रह गई हैं, उन्हें यहां संक्षेप में दे रहे हैं।

(1) संवत् 2071 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग में 'प्लवंग' नामक संवत्सर के फलादेश में " भारत में सत्तापरिवर्तन" का संकेत स्पष्टरूप से पहले ही दे दिया गया था। पढ़ें– पृष्ठ 49, कॉलम 2 पर–

(2) कलेसर के 4 एकड़ जंगल में अग्निकांड; 350 अग्निकाण्ड, चण्डीगढ़ में हुए अग्निकाण्ड से 5 मंज़िला इमारत गिरी-- 4 फायरमैन घायल हुए-- इन सब बातों की भविष्यवाणी सं. 2071 वि. के पृ. 50, कॉलम 1 पर पढ़ें।

(3) पाक, इराक, युक्रेन, सीरिया आदि में सत्तापरिवर्तन, युद्ध, अशान्ति की भविष्यवाणी सं. 2071 वि. के पृ. 50, कॉलम 2 पर पढ़ें।

(4) भारत में केन्द्रीय सत्तापरिवर्तन, श्री मोदी जी का सत्ता में आना एवं गांधी–परिवारवाद के पतन की आश्चर्यजनक भविष्यवाणी सं. 2071 वि. के पृ. 60 कॉलम 1 पर पढ़ें।

(5) प्रधानमन्त्री श्री मनमोहन सिंह जी के सत्ता से च्युत होने की भविष्यवाणी सं. 2071 के पृ. 59, कॉलम 2 पर पढ़ें।

(6) उग्रवादियों द्वारा जम्मू–काश्मीर एवं छत्तीसगढ़ में किए गए विनाश की भविष्यवाणी सं. 2071 वि. के पृ. 56, कॉलम 1 पर पढ़ें।

अब सं. 2072 वि. के पंचांग में 17 अगस्त, ईस्वी सन् 2014 के बाद की गईं भविष्यवाणियों की संक्षिप्त चर्चा कर देना भी प्रासंगिक समझते हैं–

(1) " बिहार में भीषण तूफान, 42 मरे" 100 से अधिक घायल, हज़ारों मकान नष्ट–– (पंजाबकेसरी, 23 अप्रैल, 2015)।

इन भविष्यवाणियों को सं 2072 वि.के पंचांग, पृ.55, कॉलम 1 पर पढ़ें।

(2) " Nepal earthquake- death toll rises 2500-"

(Hindustan Times . 27 अप्रैल, 2015)

संवत् आरम्भ से ही (अप्रैल, 2015 ई. से लगभग जून के प्रथम सप्ताह तक) राहु–मंगल एवं शनि–मंगल का षडष्टक तथा इस वर्ष सप्तवायु विचार से 'अतिवह'

नामक वायु होने से कहीं झंझावात, समुद्री–तूफान, चिल्ली, जापान, अमेरिका, इटली, भारत के दक्षिणी भाग, काश्मीर एवं मुस्लिमराष्ट्र में कहीं भारी भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं। भारत में इस समयावधि में कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति से कृषकजन परेशान रहेंगे। लगभग जुलाई–अगस्त तक समुद्रतटवर्ती भूभाग एवं देश सुनामी आदि से जनधनहानि ग्रस्त रहें–ऐसी ग्रहस्थिति है।

जनवरी से अप्रैल, सन् 2016 ई. की ग्रहस्थिति विश्व में हवाई यानदुर्घटनाएं, समुद्री तूफान विशेषतः फिलीपीन्स, चीन, जापान, अमेरिका, पाक एवं भारत के समुद्रतटवर्ती भूभाग में भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि के योग हैं। इस समयावधि में जम्मू–काश्मीर, बिहार, छत्तीसगढ एवं महानगरों में उग्रवादी भीषण दुर्घटना भी करेंगे।

" इस भूकम्प से भारत के 19 राज्य कांपे, 63 की मौत–

(पंजाब केसरी, 26 अप्रैल, 2015 ई.)

(3) भारत के सम्माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यूरोपीय देशों की यात्रा करके भारत से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

"12 फरवरी, 2015 ई. तक मंगल अतिचारी रहेगा। उच्च मंगल भारत की प्रभावराशि में है। मकर राशि से कर्मेश शुक्र की भी मित्रक्षेत्र में स्थिति यूरोपीय देशों की भारत के लिए मैत्रीपूर्ण–सम्बन्धों एवं व्यापारिक सम्बन्धों को बढ़ावा देने वाली है।"

(4) मुस्लिम राष्ट्रों में अशान्ति, पाक में शिया–सुन्नी खतरा बनकर उभरने की भविष्यवाणी पढ़ें– सं. 2072 वि., पृ. 56, कॉलम 1 पर–

"2 अक्तूबर से 26 नवंबर, 2014 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा। साथ ही 1 नवंबर को शनि भी अस्त होकर 5 दिसंबर तक अस्त ही रहेगा। मुस्लिम–राष्ट्रविशेष कट्टरपन्थी व तालिबानी देश के रूप में जाने जाएंगे, विशेषतः पाकिस्तान। इस समयावधि में उत्तर कोरिया के साथ दक्षिण कोरिया की युद्धस्थिति बन सकती है। इसमें रूस एवं अमेरिका की दखलंदाजी संभव है। इस वर्ष ईराक, पाक एवं अफगानिस्तान में शिया–सुन्नी–टकराव खतरा बनकर उभरेगा।"

मंगल पर भारत के कदम–

संवत् 2071 वि. के पंचांग में पृष्ट 51, कॉलम 2 के अन्तिम स्टैंजा में **ISRO** द्वारा **Space** में भेजे गए मंगल पर यान की चर्चा एवं धूम्रकेतु के उदय की चर्चा भी कम आश्चर्यजनक नहीं है। यह भविष्यवाणी इस घटना से एक वर्ष पूर्व 28 अगस्त, 2013 ई. को लिखी गई थी–

"लगभग अक्तूबर से दिसम्बर, 2014 ई. तक की ग्रहस्थिति के अनुसार देखें तो 27 नवंबर से 3 जनवरी, सन् 2015 ई. तक मंगल मकर राशि में चलेगा। 26 नवंबर, 2014 ई. से मंगल अतिचारी होकर मकर राशि में रहेगा। नवम्बर, 2014 ई. में मंगल ग्रह पर भारत एक यान भेजने में सफल होगा, जिससे मंगलग्रह पर जीवन की सत्ता के बारे में रहस्यपूर्ण परिणाम अगस्त, 2016 ई. से आगे उपलब्ध होंगे। ग्रहस्थिति के अनुसार नवम्बर में एक धूम्रकेतु के उदय होने का योग है।"

इसी समयावधि में मंगल पर यान स्थापित हुआ एवं धुम्रकेतु का उदय भी हुआ। इस धुम्रकेतु के उदय से वैज्ञानिक मंगल पर भेजे गए यान से टकराने की आशंका व्यक्त कर रहे थे। मंगल पर भारत की ओर से यान स्थापित करने का प्रयास विश्व में सर्वप्रथम है।

(5) जापान में ज्वालामुखी विस्फोट से 31 मरे–

(पंजाब केसरी–28/9/2014)

इस भविष्यवाणी को श्रीमार्त्तण्ड पंचांग, 2071 वि. के पृ. 51, कॉलम 1 पर पढ़ें–

" 11 जुलाई से 3 नवंबर (सन् 2014 ई.) तक की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध एवं राहु के राशि–परिवर्तन से इन्डोनेशिया, जापान, चीन, अमेरिका, भारत के समुद्रतटवर्ती भूभाग तथा कुछ अन्य क्षेत्रों/देशों में विनाशकारी भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।"

(6) जम्मू–काश्मीर में 40 चौकियों पर गोलाबारी– रक्षामन्त्री के साथ तीनों सेना प्रमुखों की अहम बैठक– दैनिक ट्रिब्यून (8 अक्तूबर, 2014 ई.)।

इस भविष्यवाणी को सं 2071 वि के पंचांग में पृ. 61 कॉलम 1 में पढ़ें–

"14 जुलाई से सितम्बर, 2014 ई. तक शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध होने पर यहां उग्रवादियों द्वारा भयंकर खून–खराबा होने के योग बनते हैं एवं साम्प्रदायिक झगड़े भी होंगे। एक वर्गविशेष स्थानान्तरण करने पर विवश होगा। सरकार इस स्थिति का हल......"

(7) मोदी सरकार के मोहभंग की आश्चर्यजनक भविष्यवाणी, सं 2072 वि. के पंचाग, पृ. 60/61 पर–

" इस वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार विदेशों से काले धन की वापसी की रणनीति पूर्णतः सफल नहीं होगी, जिससे देश की आर्थिक नीति को सुधारने में सरकार की विवशता एवम् श्री मोदी महाभाग की स्थिति मन्त्र से वशीकृत् (कीलित) सांप की भांति रहेगी, जो समर्थ होने पर भी कुछ न करने को बाधित रहेगा–" भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः।" क्योंकि राजग किंवा महामहिम श्री मोदी सरकार पर हिन्दुत्व किंवा साम्प्रदायिकता का तगमा लगाकर विरोधी सिद्धान्तों वाले विपक्षीदल भी एकजुट होकर मोदी सरकार से जनता का मोहभंग करने के लिए सक्रिय रहेंगे, जिससे लगभग 31 अगस्त एवम् सितम्बर में होने वाले विधानसभाई उपचुनावों में भाजपा को अधिकतर

क्षेत्रों में विशेषतः बिहार में असफलता का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार नई मोदी–सरकार को आन्तरिक और काश्मीर–पाक–चीन आदिजन्य बाह्य खतरों से भी सावधान रहना जरुरी है। 25 जुलाई, 2014 ई. को यह लाईने लिखते हुए हम सौहार्दपूर्ण शब्दों में सावधान कर देना उचित समझते हैं।"

(8) सं. 2072 वि. में भी चीन / पाक अरुणाचल प्रदेश, लेह-लदाख, मिज़ोरम, काश्मीर एवं सीमावर्ती क्षेत्रों पर सीमातिक्रमण की नीति से सुरक्षा को खतरा रहा है। इस बारे पंचाग पृ. 57, कॉलम 2, अन्तिम स्टैंजा में सचेत करते रहे हैं। पढ़ें –

"हम इस लेख में भारत सरकार को चीन एवम् पाकिस्तान की सैनिक / राजनैतिक कूटनीति से अवगत करा देना भी यहां उचित समझते हैं। इस संवत् 2072 वि. में हमारे देश के मिजोरम, अरुणाचल, सिक्किम, लेह–लद्दाख, काश्मीर प्रदेशों एवम् सीमावर्ती क्षेत्रों पर हमारे सैन्यबल को सुदृढ़ एवम् सुसन्नद्ध रखना नितान्त आवश्यक है। क्योंकि चीन–पाक का सीमातिक्रमण भारत की अस्मिता एवम् सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकता है। इन देशों की तथाकथित कूटनीति की अनदेखी किंवा उपेक्षा कहीं हमारा सिर न झुका दे – सरकार सावधान रहे।"

इन पक्तियों की सार्थकता के बारे कुछ लिखने की आवश्यकता नहीं। सीमा का अतिक्रमण चीन, पाक अनेकों बार कर चुके हैं-- यह सर्वविदित है।

पाठको ! स्थानाभाव के कारण इस वर्ष की सभी सफल भविष्यवाणियों की चर्चा नहीं कर पा रहे हैं, विद्वान् पाठक स्वयं ही मूल्यांकन करें।

श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के माध्यम से की गई या की जा रहीं भविष्यवाणियों की सफलता का श्रेय जो आप हमें दे रहे हैं, वह सब पूर्वाचार्यों एवं ज्योतिषशास्त्र के मर्मज्ञ गुरुचरणो की कृपा ही है या जनताजनार्दन के सौहार्द का परिणाम। हम उन पाठकों के भी आभारी हैं, जो विभिन्न प्रान्तों किंवा विदेशों से पत्राचार द्वारा भविष्यवाणियों की सफलता पर बधाई भेजकर हमें भावी वर्षों में ग्रहगतिजन्य संकेतों के आधार पर कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करते रहते हैं।

संवत् 2073 वि. की ग्रहपरिषद् के अधिकारियों का विश्व पर प्रभाव

विज्ञान 'कार्य–कारण के सिद्धान्त' को ही प्राथमिकता प्रदान करता है। परन्तु असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिनका कारण समझने एवं समझाने में चोटी के वैज्ञानिक भी अपने आपको सर्वथा असमर्थ पा रहे हैं। अतः सिद्धांतों के व्यभिचारमात्र से ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। ज्योतिष चिरन्तन सत्यसिद्धांतों पर आधारित एक विज्ञान है, जिसमें अभी अत्यधिक अनुसंधान की आवश्यकता है।

जिस तरह पृथ्वी पर 'लोकतांत्रिक राज्य' की स्थापना के लिए प्रधानमंत्री आदि के चुनाव होते हैं और उन निर्वाचित व्यक्तियों के गुण–कर्म–स्वभाव–योग्यता का प्रभाव उनके अधिकृत क्षेत्रों एवम् शासनतंत्र पर पड़ता है. उसी प्रकार अखिलेश्वर प्रभु की इच्छा से निर्मित आकाशीय शिशुमार चक्रस्थ ग्रहों की परिषद् में संसारचक्र को चलाने के लिए प्रतिवर्ष दिव्य एवं अद्भुत शक्तिमती 'आकाशी कौंसिल' का निर्माण होता है। इस आकाशीय कौंसिल में ग्रहों की शुभाशुभ प्रकृति के अनुकूल संसार में जो उलट–फेर एवं अघटित घटनाएं घटित होती हैं, इस घटनाचक्र को त्रिकालज्ञ दैवज्ञों द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर वि. सं. 2073 की ग्रहस्थिति के अनुसार कुछ लिखने की चेष्टा कर रहे हैं।

इस संवत् (2073 वि) को शास्त्रों ने ' सौम्य' नामक संज्ञा दी है। 'श्रीवराहमिहिर' द्वारा निर्दिष्ट नवमयुग किंवा 'रुद्रविंशति' का यह तृतीय संवत्सर है। इसका फल संहिताग्रन्थों में इस प्रकार लिखा है–

"धान्याकुला धरा लोकाः स्वस्थाश्च निरुपद्रवाः।
सौम्य–वृष्टिर्वरारोहे सौम्ये सैन्धव-विप्लवः।।"

अर्थात्– सं. 2073 वि. में खाद्यान्नों की उपज अच्छी हो। रोगों पर नियन्त्रण हो, शान्ति व कानून–व्यवस्था में सुधार हो, पर्याप्त वर्षा हो एवम् सिन्ध प्रदेश में अशान्ति का वातावरण रहे।

किञ्च– सौम्य संवत्सर में चैत्र में महर्घता, वैशाख में प्राकृतिक उत्पात, ज्येष्ठ में यावन राष्ट्रों में अराजकता–उपद्रव किंवा युद्धमय–स्थिति बने। आषाढ में वर्षा की कमी, अन्नमहर्घता रहे। सभी धातुएं महंगी एवं सिन्ध में राजविद्रोह रहे।

गतवर्ष संवत् 2072 वि. के श्रीमार्त्तण्ड पंचांग के पृ. 54, कॉलम 1 पर हमने स्पष्ट घोषणा की थी कि–

"आचार्य वराहमिहिर द्वारा निर्दिष्ट नवमयुग एवं रुद्रविंशति के द्वितीय संवत्सर 'कीलक' नामक संवत्सर में भारत में व्यवस्थागत–जटिलताएं सकारात्मक प्रगतिपद पग उठाने में बाधक मालूम देती हैं। "भोगीव मन्त्रौषधिरुद्धवीर्यः "अर्थात् –मन्त्ररूपी औषध से कीलित सांप जैसी गतिविधि कीलक संवत्सर में नए शासनतन्त्र की रहेगी।"

ठीक इसी तरह व्यवस्थागत जटिलताएं सकारात्मक पग उठाने में प्रधान नेता बाधक परिस्थितियों का ही सामना कर रहे हैं।

इस संवत 2073 वि. का राजा शुक्र है; खाद्यान्नों की उपलब्धता पर्याप्त रहे। आतंकवाद एवं अनैतिक कार्यों पर शासन का नियन्त्रण–प्रयास प्रशस्य रहेगा। शासक

(नेतालोग) निजी प्रतिष्ठा किंवा निजी सुविधाओं पर ध्यान देंगे। भूगर्भगत–संपदा किंवा देश की प्रगति के लिए नए साधन (स्रोत) उपलब्ध होंगे। बुद्धिजीविवर्ग का प्रधान नेतृत्व को समर्थन मिलेगा।

इस संवत् का मन्त्री बुध होने से नई–नई योजनाओं से जनता की आर्थिक स्थिति में सुधार हो संवत्सर का सस्येश शनि होने से चावलादि फसलों को हानि पहुंचे। दण्डव्यवस्था कठोर होने से जनता परेशान भी रहे।

संवत् 2073 वि. की गोचर ग्रहस्थिति एवं जगत्–लग्नकुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार सांसारिक घटनाओं पर एक नज़र

वर्षेश(जगत्)लग्नकुण्डली
(संवत् 2073 वि.)

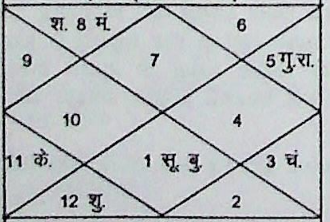

13 अप्रैल सन् 2016 ई. 19 घं. 47 मि.(I.S.T.)

लग्नेश–शुक्र उच्चस्थ है एवम उच्च सूर्य की लग्न पर नीच दृष्टि भी है। लेकिन सप्तम भाव में बुधादित्य योग भारत में नई योजनाएं प्रगतिपद कार्यों को लागु करने मे विपक्ष की भूमिका भविष्य के लिए निन्दनीय ही सिद्ध होगी। क्योंकि भारत की प्रभावराशि–मकर के स्वामी –शनि का मंगल के साथ धनस्थान में सम्बन्ध है. अतः प्रधान नेतृत्व को आग्रेसर होने में विपक्ष की भूमिका स्वार्थपरक एवं प्रशंसनीय नहीं रहेगी।

जगत् लग्न कुण्डली में चन्द्र से छठे एवम् लग्न से द्वितीय भावस्थ शनि–मंगल ईराक, सीरिया, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि मुस्लिम देशों में उग्रवादजन्य किंवा भयंकर –प्राकृतिक आपदा से भारी हानि के योग हैं। सूर्य–बुध का शनि–मंगल के साथ षडष्टक योग अमेरिका, टर्की (Asia Pacific Region) एवमं चीन, जापान, पाक, काश्मीर, देहली, उड़ीसा, गुजरात एवं हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड में तूफान, भूकम्प तथा समुद्रतटवर्ती भूभाग में भारी जनधनहानि, किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु किंवा अपदस्थ होने का योग भी इस वर्ष के मध्य बनता है। यह संवत् अप्रत्याशित अघटित घटनाओं वाला रहेगा। क्योंकि शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध लगभग सितम्बर, 2016 ई. तक चलेगा। पाक–चीन द्वारा सीमाप्रान्तों पर अशान्ति बनी रहेगी एवं मुस्लिम राष्ट्र ईराक, सीरिया आदि भी भयावह आन्तरिक अशान्ति के शिकार रहेंगे। भारत देश की विदेशनीति से विदेशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनेंगे।

संवत् 2073 वि. में शनि वृश्चिक एवं धनु राशि में ही रहेगा, अतः इसवर्ष शनि की दृष्टि पश्चिमी देशों पर ही रहेगी। पश्चिमी देशों किंवा प्रान्तों में भयंकर भूकम्प, सुनामी आदि प्रकोपों से जनधनहानि होगी। किसी मुस्लिम देश–विशेष में किसी पूर्व शासक (सेनाधिकारी) किंवा विशिष्ट व्यक्ति की हत्या का फरमान जारी हो। इसवर्ष शनि–मंगल यावन राष्ट्रों मे विशेष अशान्ति के योग बना रहे हैं।

संवत् के आरम्भ से लगभग 21 मई से जून तक शनि, मंगल, चन्द्र की स्थिति; 12 जुलाई सन् 2016 ई से लगभग 18 सितम्बर, 2016 ई तक शनि–मंगल की वृश्चिक राशि में स्थिति एवम 1 नवंबर से लगभग 11 दिसंबर, 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि भी विश्व में भयंकर प्राकृतिक–प्रकोप, उग्रवाद–हिंसा आदि से जनधनहानि एवं दुःखद अघटित घटनाओं को जन्म देगी।

लगभग 11 दिसंबर से 29 दिसंबर, सन् 2016 ई तक शुक्र(जगत् लग्नेश) पर गुरु एवम् शनि की दृष्टि भी प्रमुख राजनीतिज्ञों के लिए उलझनपूर्ण हालात वाली रहेगी। सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ करना होगा। अमेरिका आदि में शासन–सत्ता में परिवर्तन होगा।

14 से 26 जनवरी, सन् 2017 ई. तक शनि की सूर्य पर दृष्टि भी भारत के प्रधान नेताओं के लिए उलझनपूर्ण रहेगी। लेकिन 27 जनवरी, सन् 2017 ई. से आगे संवत् के अन्त तक (विशेषतः 14 मार्च, 2017 ई. तक) विश्व में यानदुर्घटनाएं, समुद्री तूफान, सुनामी एवम् भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से किंवा काश्मीर, बिहार, छत्तीसगढ़ एवं महानगरों में उग्रवादजन्य दुर्घटनाएं संभव हैं।

यूरोप के देश

यूरोपीय देशों की कुण्डली (1)
1 जनवरी, 2016 ई.
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.

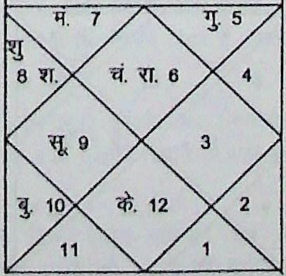

यूरोपीय देशों की कुण्डली (नं. 1)– (1 जनवरी सन 2016 ई. से संवत् 2072 के अन्त तक) की ग्रहस्थिति के अनुसार राहु–चन्द्र लग्नस्थ हैं एवम् लग्नेश बुध, शनि के क्षेत्र में शनि एवम् मंगल की दृष्टि में है। अतः यूरोप के कुछ देशों में किसी देश–विशेष की समस्या को लेकर परस्पर मैत्री–सम्बन्ध शिथिल होंगे। जिसका प्रभाव विश्व के व्यापारिक–क्षेत्र एवम् आर्थिक स्थिति को प्रभावित करेगा। बुध–गुरु का वक्रत्व एवम् शनि का ज्येष्ठा नक्षत्र में चलन, पश्चिमी भूभाग के यूरापीय देशों में युद्धात्मक–नीति से जनसंहार की सम्भावना को इस वर्ष (सन् 2016 ई.) में नकारा नहीं जा सकता–

"अनुराधास्थितः सौरिर्ज्येष्ठायां परिवर्तते।
पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते।।"

जनवरी, सन् 2016 ई. से अप्रैल, सन् 2016 ई. तक देश–विशेष में कहीं समुद्री तूफान, भूकम्प किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग बन रहे हैं। ये योग फरवरी, 2016 ई. से लगभग अप्रैल 2016 ई. के मध्य तक विशेषरूप से कुप्रभावकारी सिद्ध होंगे– ऐसा ज्योतिष–दृष्ट्या ज्ञात होता है। कहीं राष्ट्रों में परस्पर विरोधात्मक आन्दोलन, हत्याकाण्ड, शासक के विरुद्ध विद्रोह एवम् सत्ता–परिवर्तन, देश के मानचित्र बदलने एवम् देश के विघटन आदि का भी इसवर्ष ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। इंग्लैण्ड, यूक्रेन, U.S.A. में सत्ता–परिवर्तन आदि से यह वर्ष विशेष घटनाओं वाला जाना जाएगा। गोचर–ग्रहस्थिति एवम् यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (1) के अनुसार संवत् 2073 के लगभग प्रारम्भ से 17 जून, 2016 ई. तक वृश्चिक राशि में शनि–मंगल दोनों शत्रुग्रह वक्रगति से एकसाथ चल रहे हैं। इस समयावधि में अमेरिका सहित रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, चीन ईरान के परमाणु कार्यक्रम के विरुद्ध आवाज़ उठाएंगे। लेकिन आगे जून, सन् 2016 ई. के लगभग अमेरिका का रुख ईरान के पक्ष में हो जाने का योग है। इस विषय पर अमेरिका के ईरान के साथ सन्धिवार्ता पर सहमत होने के आसार बनेंगे।

इसवर्ष के बीच अमेरिका के शासनतन्त्र में राष्ट्रपति पद पर किसी प्रतिष्ठित महिला के स्थापित होने का योग है। 21 मई को वक्री शनि ज्येष्ठा में आकर पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर युद्धका सूत्रपात कर सकता है।

18 जून के लगभग वक्री मंगल पुनः तुला राशि में आ जाता है। इसी समय कुछ यूरोपीय देश आपसी वैमत्य के शिकार होंगे।

12 जुलाई, 2016 ई. को शनि–मंगल पुनः वृश्चिक राशि में एकसाथ चलने लगेंगे। इस समयावधि में कहीं आन्तरिक अव्यवस्था अशांति का कारण बनेगी। **12 जुलाई से लगभग 17 सितम्बर तक का समय विश्व के यूरोपीय देशों के लिए भयावह रहेगा। कहीं उग्रवाद से प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या, उग्रवादियों द्वारा भयंकर काण्ड एवं प्राकृतिक भूकम्प, समुद्री तूफान, ज्वालामुखी विस्फोट आदि से भारी जनधनहानि के योग बनते हैं।**

18 सितम्बर से 31 अक्तूबर तक मंगल धनुराशि में रहेगा। स्पेन, अमेरिका एवं मुस्लिम देश सन्धिवार्ता–शान्तिवार्ता के लिए सहमत होंगे। 1 नव. से 10 दिसंबर, सन् 2016 ई. तक शनि की मंगल पर दृष्टि रहेगी। इस अवधि में पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान आदि को किसी भयकर प्राकृतिक आपदा का सामना करना पड सकता है।

11 दिसम्बर से मगल–केतु से राहु का समसप्तक योग एवं कुम्भ राशिस्थ मंगल–शुक्र–केतु भी यूरोपीय देशों में अशान्ति बनाएंगे।

यूरोपीय देशों की कुण्डली नं. (2) जनवरी 2017 से दिसंबर 2017 तक की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल, शुक्र एवं केतु–कुम्भराशि में हैं एवं राहु सिंह राशि में बैठ कर एक तरह से कालग्रसित जैसा योग बनाते हैं। यह योग प्रभावराशि के हिसाब से यूक्रेन, रूस, बंगला देश, अफगानिस्तान, एवं अफ्रीकन देशों के लिए एवं England, Scotland आदि के लिए भयावह है।

यूरोपीय देशों की कुण्डली (2)
1 जनवरी, 2017 ई.
मध्यरात्रि 0 घं. 00 मि.

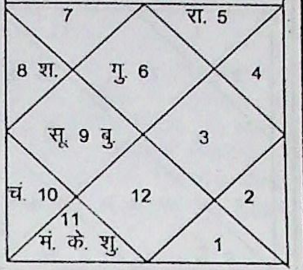

26 जनवरी, सन् 2017 ई. को शनि मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर मकरस्थ सूर्य को देखेगा। गोचर में शुक्र मीन राशि में आकर गुरु से दृष्ट है। इसी मध्य मंगल मीन राशि में आकर किसी प्रतिष्ठित–व्यक्ति को अपदस्थ करे या उग्रवादजन्य घटना से हानि का कारण बने।

यूरोप की कुण्डली नं. 2 में शत्रुक्षेत्रीय मंगल–राहु का समसप्तक फरवरी में किसी यानदुर्घटना एवं प्राकृतिक आपदा का भी संकेत देता है। फरवरी–मार्च की गोचर ग्रहस्थिति एवं यूरोपीय (कुण्डली नं. 2) के अनुसार ब्रिटेन अमेरिका आदि के किसी विशिष्ट नेता को भारी कष्ट का सामना करना पड़े एवं देश विशेष में प्राकृतिक आपदा से भारी जनधन हानि के भी योग बनते हैं।

संवत् 2073 वि. में मुस्लिम–राष्ट्रों के हालात

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 1) की ग्रहस्थिति के पहले की ग्रहस्थिति के परिशीलन से (15 सितम्बर से 3 नवम्बर सन् 2015 ई. तक) शनि–राहु की गोचर स्थिति अनुसार किसी मुस्लिमराष्ट्र में प्रतिष्ठित व्यक्ति–विशेष के अपदस्थ/निधन किंवा देश में अराजकता–जैसा वातावरण बनने का योग है।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (1)
हिजरी सन् 1437 (1 मुहर्रम)

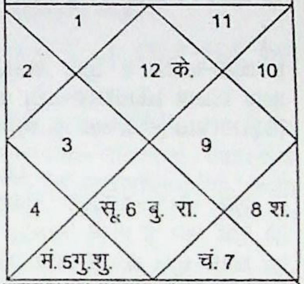

15 अक्तू.,सन् 2015 ई.,
17 घं. 48 मि (सूर्यास्त समय)(I.S.T.)

15 अक्तूबर, सन् 2015 ई. से संवत् 2072 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल का दशम–चतुर्थ–सम्बन्ध (परस्पर दृष्टि–सम्बन्ध) एवम् 3 नवम्बर से मंगल–राहु एवम् शुक्र की कन्याराशि में स्थिति पाक, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक, इरान आदि देशों के लिए भयंकर उग्रवाद किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी हानिप्रद है। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के निधन का समाचार मिले।

17 नवम्बर से लगभग 6 दिसंबर, सन् 2015 ई. तक सूर्य, शनि, बुध– ये तीनों ग्रह वृश्चिक राशि में आकर कहीं राष्ट्र–विशेष में जनता के अन्तर्कलह, सैन्य संघर्ष एवम् शासकों के विरुद्ध भारी संकटापन्न स्थिति बना देंगे।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में नवमी, पौष शुक्लपक्ष में पूर्णिमा एवम् माघ शुक्लपक्ष में पंचमी तिथि का क्षय होने से दिसम्बर, सन्

2015 ई. से 22 फरवरी, सन् 2016 ई. के मध्य मुस्लिमराष्ट्र में भूकम्प, तूफान, भूखमरी किंवा अराजकता से भयंकर जनधन– हानि, किसी शासक के अपदस्थ होने किंवा मृत्युकष्ट का सामना करना पड़ेगा–

" मार्गशीर्षादि मासेषु शुक्लपक्षे तिथिक्षयः।
छत्रभंगं प्रजापीडां दुर्भिक्षं वा समादिशेत्।।"

इस संवत् 2072 वि. में माघ–कृष्ण पंचमी, छठ एवम् सप्तमी क्रमशः शुक्र–शनि एवम् रविवारी होने से यावन(मुस्लिम) राष्ट्र की आन्तरिक–स्थिति गम्भीर कष्टमय, अशान्त एवम् शासकों के लिए भयावह है–

" षष्ठी च पंचमी चैव कृष्ण–माघस्य सप्तमी।
शुक्रार्कि–रवि–संयुक्ता तदा युद्धाकुला धरा।।"

20 फरवरी, सन् 2016 ई. से लगभग 17 जून, 2016 ई. (सं. 2073 वि.) तक की ग्रहस्थिति के अनुसार मंगल वृश्चिक राशि में आकर अपने शत्रुग्रह शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना लेगा। यह ग्रहस्थिति जून, 2016 ई. तक मुस्लिम देशों में विशेषतः दक्षिणी देश, इराक, पाकिस्तान, टर्की, पुर्तगाल, अफगानिस्तान आदि में भयंकर मारकाट, सत्तापरिवर्तन, सैनिक–शासन, हत्याकाण्ड एवम् प्राकृतिक–प्रकोपजन्य जनधनहानि के योग हैं। मुस्लिम देशों में आर्थिक संकट बढ़ेंगे–

" यदा वृश्चिकराशिस्थो जायते च महीसुतः।
महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्।।"

ध्यान दें–17 अप्रैल, 2016 ई. से 29 जून तक शनि–मंगल वक्री रहेंगे। मंगल युद्धप्रिय एवं शनि मुस्लिम–राष्ट्रों का प्रतिनिधित्व–कारक है, अतः इनका एकत्र होना एवं वक्र होना युद्ध के लिए शंस्त्रभण्डारण की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है, जिससे यूरोप के देश विचलित होंगे।

इस वर्ष की गोचर ग्रहस्थिति एवं मुस्लिम देशों की कुण्डली नं. (1) के अनुसार दक्षिण–एशिया में परमाणु हथियारों की होड़ विश्व के लिए भारी चिन्ता का विषय बनेगी। ईरान का परमाणु कार्यक्रम, विश्व में तेजी से बढ़ रहा परमाणु–शस्त्र–भण्डार, चीन से शस्त्र खरीदना एवं बैलिस्टिक मिज़ाईल का परीक्षण आदि पाक के ये कारनामें शुभ संकेत नहीं हैं। यह ग्रहस्थिति पुनः 13 जुलाई से 17 सितम्बर तक वृश्चिक राशि में शनि–मंगल का योग एवं मुस्लिम राष्ट्रों की कुण्डली नं. (1) में मंगल पर शनि की और शनि पर मंगल की दृष्टि होने से मालूम देता है कि– इस समयावधि में मुस्लिम राष्ट्र–विशेष में भयंकर प्राकृतिक आपदा एवं उग्रवादियों द्वारा सीरिया, इराक एवं शिया–सुन्नी की खाई पाक को कठिन परिस्थिति में खड़ा करेगी तथा आर्थिक दृष्टि एवम् जनधनहानि की दृष्टि से भी अवश्य भयावह है।

मुस्लिम देशों की कुण्डली (नं. 2)

(3 अक्तूबर, 2016 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक)

मुस्लिम देशों की कुण्डली (2)
हिजरी सन् 1438 (1 मुहर्रम)

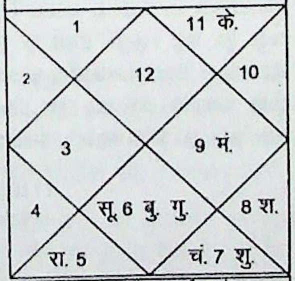

3 अक्तू .सन् 2016 ई., सोमवार
18 घं. 01 मि (I.S.T.)

हिजरी सन् 1438 का बादशाह चन्द्रमा है। ईरान आदि किसी देश के अणु–शस्त्रों की समस्या पर कुछ एक देश समाधान की स्थिति में आगे बढ़ेंगे। लेकिन कुछ प्रतिष्ठित देश विरोध में रहेंगे, समस्या का समाधान सरल नहीं होगा। कुछ मुस्लिम देश विग्रह से जनधनहानि में उलझेंगे। विशेषतः पश्चिमी देश उग्रवादियों के कारण (विशेषतः इराक, अफगानिस्तान, सीरिया आदि) भयंकर आपदाग्रस्त रहेंगे।

13 अक्तूबर को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर 7 नवंबर, 2016 ई. तक शनि के साथ मेल करेगा। इस समय मुस्लिम–राष्ट्रों में किसी प्रतिष्ठित देश की मध्यस्थता शान्ति स्थापना के लिए हितकारी सिद्ध होगी।

1 नवंबर को मंगल मकर में आकर शनि की दृष्टि में आ जाएगा। 7 नवंबर से लगभग 15 दिसंबर तक की ग्रहस्थिति " लोके भयं छत्रपतिक्षयं तत्र विनिर्दिशेत् "– इस प्रमाणानुसार किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का विछोह सहन करना पड़ेगा।

15 दिसंबर से लगभग 26 जनवरी, 2017 ई. तक किसी देश–विशेष में भयंकर भूकम्प, विस्फोट व उग्रवादजन्य आक्रमण से भारी जलनधनहानि संभव है, रक्षक तो प्रभु ही है।

26 जनवरी सन् 2017 ई. से 13 मार्च सन् 2017 ई. तक का समय तो मुस्लिम राष्ट्रों में भारी अराजकता, आर्थिक परेशानी एवं कहीं युद्धकी स्थिति से यहां के शासकों के लिए संकटापन्न ही रहेगा।

आगामी ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– दक्षिण–एशियाई क्षेत्र में अस्थिरता पैदा करने वाला एकमात्र पाकिस्तान ही नहीं, भारत को संभावी शत्रु समझने वाला चीन परमाणु शस्त्रागार पाक को देगा। इस प्रकार हिन्दमहासागर की ओर से भी सचेत रहना होगा।

संवत् 2073 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार भारत एवं भारत–सरकार में घटित होने वाले घटनाचक्र का आकलन

सभी शुभाशुभ घटनाएं मनुष्य की पहुंच से बाहिर समझी जाती हैं, लेकिन जो रहस्य साधारणतः इन्द्रियों की पहुंच से बाहर हैं अथवा भूत–भविष्य के गर्भ में निहित हैं, वे ज्योतिषशास्त्र द्वारा प्रत्यक्ष जान लिए जाते हैं। हमारे ऋषियों ने उसी ज्योतिषशास्त्र की रचना की है, जोकि भारत के लिए गौरव की बात है,–

" ज्योतिषामयनं साक्षाद् यत्तद्ज्ञानमतीन्द्रियम्।
प्रणीतं भवता येन पुमान् वेद परावरम्।।"

– (श्रीमद्भागवतपुराण)

इस प्रकार जगत्पिता की अदृश्य, अलौकिक शक्ति ग्रहों के आकर्षण–विकर्षण के आधार पर ब्रह्माण्ड को प्रभावित करती है, संचालित करती है। ग्रहगतिजन्य इस परिणाम को हम "भवितव्यता" किंवा "ईश्वरेच्छा" कहकर स्वीकार करते हैं।

स्वतन्त्र भारत का 69वां वर्ष

(15 अगस्त, 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक का विवेचन)

आगे 15 अगस्त, सन् 2015 ई. से 7 अप्रैल, सन् 2016 ई. तक की ग्रहस्थिति का विवेचन ग्रहस्थिति के आधार पर संक्षेप से करना भी प्रासंगिक है।

स्वतन्त्र भारत का 69 वां वर्ष
15अग., 2015ई. (10घं. 23मि.) (I.S.T.)

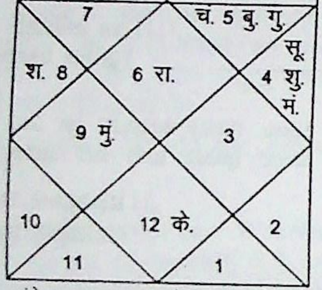

सं. 2072 वि. में पृ. 58 पर लिखित इन पंक्तियों का मूल्यांकन पाठक स्वयं करें;–

स्वतन्त्र भारत की 69वीं वर्ष–कुण्डली की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश बुध व्ययस्थान (सूर्य क्षेत्र) में गुरु–चन्द्र के साथ स्थित है। गुरु 12 अगस्त को ही अस्त हो चुका है। अतः भारत के समक्ष आर्थिक–राजनैतिक समस्याओं के बावजूद जनता की पूर्वसंकल्पित समस्याओं को सुलझाना कठिन होगा। जिससे सरकार को विधानसभाई निर्वाचन क्षेत्रों में उस हद तक गरिमापूर्ण सफलता को प्राप्त करना कठिन अवश्य होगा, जिसे वे पहले लोकसभा में पा चुके हैं। क्योंकि मुंथेश गुरु अस्त है। महंगाई को कंट्रोल करना सरकार को अभी सहज संभव नहीं। वर्षाङ्ग मे आयेश एवम् कर्मेश चन्द्र–बुध बहुत प्रबल नही है। आयस्थान मे शुक्र अस्त है एवम् मंगल नीच सूर्य के साथ ही है, जोकि योजनाबद्ध–प्रगतिप्रद कार्यों में आर्थिक संकट से बाधाकारक मालूम देते है–

"दैत्यगुरुर्यदा सिंहे हेम–रक्त–चतुष्पदः।
धान्यानि महर्घाणि नाशं यान्ति च वारिदाः।।"

भारत के कुछ भाग अकालग्रस्त रहने से सरकार की विवशता बढ़ेगी।

धनेश (द्वितीयेश) एवम् नवमेश–शुक्र अस्त होने से भारत सरकार को ब्रिकस अर्थव्यवस्था (विकास बैंक) का सहारा भी पश्चिमी विश्वबैंक एवम् अन्तर्राष्ट्रीय–मुद्राकोष वाली व्यवस्था के समक्ष सफल होता नहीं लगता क्योंकि – वर्षकुण्डली में गुरु–शुक्र ये दोनों अस्त हैं–

" तेषामतीव शुभदौ गुरु–दानवेज्यौ।
क्रूरौ दिवाकर–सुत–क्षितिजौ भवेताम्।।"

सं. 2072 वि. में पृ. 58 पर अंकित इस भविष्यवाणी पर भी ध्यान दें;–

" 69वीं वर्षकुण्डली में शनि की स्थिति मंगल के क्षेत्र में ही है एवम् मंगल नीच है अतः विपक्षीदल (कांग्रेस आदि पार्टियां) मिलकर श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार के एजेन्डों की आलोचना करके सरकार की क्रियाशीलता में बाधक बनेंगे। धनेश–शुक्र अस्त होने से भारतीय–धनिकों की स्विट्जरलैण्ड आदि देशों से धन को भारत लाने की योजना असफल रहेगी। अच्छे दिन आने में अभी बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। "

महंगाई पर नियन्त्रण पाना भी सं. 2072 वि. के अन्त तक संभव नही मालूम देता। क्योंकि सारा वर्ष शनि मंगल के क्षेत्र में ही रहेगा, जोकि खाद्यान्न एवम् जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में महंगाई का ही सूचक है–

" यदि तिष्ठति भौमस्य क्षेत्रे क्रूरग्रहस्तदा।
षण्मासात्तुष–धान्यानां जायते च महर्घता।।"

स्वतन्त्र भारत की वर्षकुण्डली (1) में 15 अगस्त, सन् 2015 ई. से मार्च, सन् 2016 ई. तक चतुर्थेश गुरु (मुंथेश होकर) चतुर्थभाव को देख रहा है, अतः मोदी सरकार विश्व के प्रतिष्ठित–शक्तिसम्पन्न देशों के साथ मैत्रीपूर्णसम्बन्ध बना लेगी। देश की गरिमा एवम् देश के सम्मान की अभिवृद्धि करने में सक्षम रहेगी। देश की सैन्य समृद्धि से देश की अस्मिता के रक्षण में सफल रहेगी। लद्दाख में चीन की घुसपैट एवं पाक का सीमातिक्रमण आगे देश को सह्य नहीं होगा। आतंकवाद का सामना करने के लिए पांचों ब्रिक्स देश वैचारिक, राजनैतिक अथवा धार्मिक मुद्दो पर आधारित आतंकवाद को सहन नही करेंगे। 15 सितंबर से 23 दिसंबर, सन् 2015 ई. तक एवम् 20 फरवरी, 2016 ई. से 17 जून, संवत् 2073 वि. की ग्रहस्थिति सीमाप्रान्तों पर सैन्यगतिविधि एवम् उग्रवाद के पोषक सीमावर्ती देशों से भारत को सुचेत रहना होगा। इस समयावधि में

प्राकृतिक प्रकोप तूफान, भूकम्प एवम् उग्रवादजन्य जन–धनहानि से भी सावधान रहना आवश्यक है। क्योंकि इस समयावधि में शनि–मंगल वृश्चिक राशि में वक्रगति से चलते हैं एवं 29 जून, 2016 ई. तक इनकी गति वक्र ही रहेगी। चीन–पाक की सीमाप्रान्तों पर एवं ज़म्मू–कश्मीर में उग्रवाद एवं सैन्य–सीमातिक्रमण भारी परेशानी करने वाला रहेगा। अतः शासकों एवं सेना को इस दृष्टि से सतर्क रहना नितान्त आवश्यक है। शनि–मंगल की एकराशि में स्थिति कहीं अवर्षण (सूखा) कहीं बाढ़ एवं कहीं भारी भूकम्प आदि प्राकृतिक–प्रकोप से भारी जनधनहानि भी करेगी। 17 जून से 11 जुलाई तक मंगल तुला राशि में रहेगा, जोकि "महर्घं सर्वद्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्" –प्रमाणानुसार महंगाई से जनाक्रोश का भाजन सरकार रहेगी।

तदनन्तर अगस्त, 2016 ई. तक शनि–मंगल का पुनः एक राशि में आना भी नेष्ट–फलप्रद ही रहेगा।

14 अगस्त, 2016 ई. से मार्च, सन् 2017 ई. तक स्वतन्त्र भारत की ग्रहस्थिति का विवेचन

स्वतन्त्र भारत का 70 वां वर्ष
14 अग., 2016 ई. (16 घं. 32 मि.)(I.S.T.)

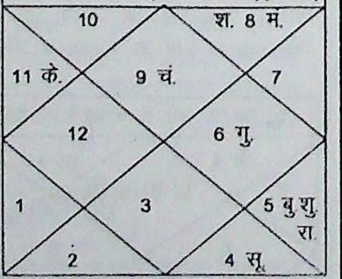

स्वतन्त्र भारत के 70वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार लग्नेश–गुरु के क्षेत्र में चन्द्र शुभ है। लेकिन लग्नेश–गुरु शत्रुक्षेत्र (बुध की राशि कन्या) में है। अतः प्रधान नेता देश की प्रगति के लिए नई–नई प्रगतिपद योजनाओं को लागु करने में तत्पर रहेंगे, लेकिन विपक्षीदल की कार्यशैली आर्थिक एवं राजनैतिक–परिस्थियों को बिगाड़ने पर तत्पर रहेगी। क्योंकि नवमेश–सूर्य तो चन्द्रक्षेत्र में एवं नवम भावस्थ राहु–शुक्र–बुध पर शनि की दृष्टि प्रगतिपद योजनाओं में बाधक रहेगी। कुछ प्राकृतिक–परिस्थितियां भी प्रगति में बाधक मालूम देती हैं, क्योंकि शनि–मंगल खर्च खाने में एकसाथ हैं, जोकि– विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध समृद्ध होने पर भी शासनतन्त्र को विपक्ष की आलोचना का विषय बनना ही पड़ेगा, क्योंकि लग्नेश–चतुर्थेश–गुरु की द्वितीयभाव पर नीचदृष्टि है।

धनेश एवं सहयोगी देशों का प्रतिनिधि–शनिग्रह खर्च खाने में योजना एवं व्ययेश–मंगल के साथ एकत्र होने से देश की समृद्धिपद योजनाओं में बाधाएं उपस्थित होंगी।

13 अगस्त से 16 सितंबर, 2016 ई. तक अनुराधा नक्षत्र में शनि के मार्गी रहने पर पश्चिमी भूभाग के देशों में प्राकृतिक आपदा किंवा उग्रवादजन्य दारुण कृत्यों से भारी हानि संभव है;–

" अनुराधां गतः सौरिर्ज्येष्ठायां वा विवर्तते।
पश्चिमे दारुणो घोरः संहारस्तत्र जायते।।"

लेकिन कन्या राशि का गुरु भारत में सुख–समृद्धि एवं विदेश–नीति में सफलताकारक बनेगा।

ध्यान दें;– कि शनि–मंगल –ये दोनों शत्रुग्रह 17 सितम्बर, 2016 ई. तक वृश्चिक राशि में ही रहेंगे, जो कि चीन–पाक आदि देशों से सीमाप्रान्तो पर सैन्य–बल एवं उग्रवादियों द्वारा काश्मीर में भी भारी जनधनहानि का कारण बनेंगे। इस समयावधि में पाक, अफगानिस्तान, इराक, सीरिया आदि में भी भारी अशान्ति एवं अराजकता रहेगी।

13 अक्तूबर से आगे, शुक्र–शनि एवं सूर्य–शनि की पोजीशन 15 दिसम्बर तक भारत में किसी प्रतिष्ठित–व्यक्ति के पदरिक्त होने का संकेत देती है। 28 दिसंबर, 2016 ई. से लगभग 19 फरवरी सन् 2017 ई. तक शनि, शुक्र एवं केतु– ये एकसाथ रहेंगे एव 26 जनवरी, 2017 ई. को शनि धनु राशि में आकर प्रतिष्ठित देशों एवं मुस्लिम देशों में कहीं प्राकृतिक–प्रकोप से हानि करे। जिसका भारतीय क्षेत्रों पर भी प्रभाव पड़ेगा। 6 फरवरी से 13 मार्च, 2017 ई. तक भूकम्प आदि प्राकृतिक–प्रकोप एवं उग्रवाद से सीमाप्रान्त अशान्त रहेंगे तथा प्रमुख देश भी क्षुब्ध रहेंगे।

संवत् 2073 वि. में भारत पर गोचर ग्रहस्थिति का प्रभाव

पाठको ! ग्रहगतिजन्य प्रभाव से प्रताड़ित समस्त ब्रह्माण्ड देश–समाज एवम् व्यक्ति की स्थिति ठीक उस तिनके की भान्ति ही अनुभव की गई है, जो वायुवेग से प्रताड़ित होकर अपने अस्तित्व को खोकर इधर–उधर भागता फिरता है। नैषधचरित में स्पष्ट लिखा है–

"अवश्य भव्येषनवग्रह ग्रहा यया दिशा धावति वेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तयानुगम्यते लोकस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना।।"–(नैषधचरित)

यह बात भी नितात सत्य है कि– ग्रहों की प्राकृतिक व्यवस्था में तनिक भी रूपान्तरण होने से दिग्दाह, उल्कापात, भूकम्प, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, युद्ध, महामारी, अराजकता आदि उपद्रवो से संसार त्रस्त हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि– आकाशीय

पिण्डों (ग्रहों) का विश्वजनीन घटनाचक्र से कुछ सम्बन्ध अवश्य है – इस तथ्य को वैज्ञानिक, विचारक एवं बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग स्पष्ट स्वीकार करता है।

ग्रहगतिजन्य संकेतों का अध्ययन करके हम मनीषी–महर्षियों के द्वारा निर्दिष्ट–सिद्धान्तों के अनुसार भारत की राजनीति एवम् अन्य पड़ौसी देशों के साथ सम्बन्धों पर अपने विचार लिखने की चेष्टा कर रहे हैं। विद्वज्जनों के आशीर्वाद की याचना है,क्योंकि ग्रहगतिजन्य संकेतों को ठीक–ठीक पकड़ने में अनेकधा चूक भी हो सकती है, तो विद्वज्जन स्वयं संकेत को सुधारकर हमें आशीर्वाद दें;– प्रार्थना है।

शुभ संवत् 2073 वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

7 अप्रै. सन् 2016 ई. (16 घं. 55 मि.)

संवत् 2073 वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में हो रहा है। संवत् की प्रारम्भकालीन कुण्डली में लग्नेश–बुध अष्टम भाव में मंगल के क्षेत्र में है। बुध दशम भाव का स्वामी भी है। बुध पर गुरु की दृष्टि भी है। अतः विशेष सन्धिवार्ताओं के बाद भी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं उलझती ही जाएंगी। संवत्–प्रवेश–कालीन कुण्डली में धनेश शुक्र उच्च होकर सूर्य–चन्द्र के साथ है, जोकि भारत के प्रधान नेता महाभाग की आर्थिक–कूटनीति का परिचायक है। मंगोलिया एवं दक्षिण कोरिया की यात्रा आर्थिक–निवेश की दृष्टि से सफल सिद्ध होगी। श्री मोदी जी दक्षिण कोरिया से 10 अरब डालर की मदद पाने में सफल रहे हैं। श्री मोदी की दूरदर्शिता से भारत की अर्थव्यवस्था को विशेष गति मिलेगी। राजनीति की गतिमत्ता के भी दूरगामी परिणाम होंगे।

यह बात विपक्षीदलों को स्वीकार्य नहीं कि– एकवर्ष का समय सरकार के काम–काज का आंकलन का अन्तिम मापदण्ड नहीं है। फिर भी भारत सरकार की रीति–नीति से सरकार के वायदों का बोध तो आगे होने की ग्रहस्थिति संकेत देती है।

अब हम संवत् के प्रारम्भ से आगे की ग्रहस्थिति पर दृष्टिपात करें तो संवत् प्रवेश–कालीन कुण्डली के तृतीय भाव में शनि–मंगल की स्थिति भारत की प्रभावराशि– मकर को प्रभावित करेगी एवं प्रधान नेता की नामराशि से इनकी स्थिति शत्रुपक्ष से भयावह स्थिति का संकेत देती है, अतः सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ रखना नितान्त आवश्यक है। वक्री शनि–मंगल की यह स्थिति संवत् 2073 वि. के आरम्भ से 17 जून तक तथा आगे 21 जून से 4 जुलाई तक वर्ष लग्नेश–बुध अतिचारी होकर सूर्य–शुक्र के साथ चलेगा। आगे 12 जुलाई से 17 सितम्बर तक शनि–मंगल फिर से वृश्चिक राशि में आकर भारत की सीमाओं पर पाक–चीन आदि गुप्तशत्रु द्वारा सीमा का अतिक्रमण कराके शान्ति भंग करेंगे एवं प्रधान नेतृत्व को संकटमय स्थिति में डालेंगे। क्योंकि वृश्चिक राशि का शनि भारत सरकार के लिए भारी है;–

" यदा वृश्चिकगः सौरमेंदिनी दुःख–संयुता।
वर्षामात्रमथो चोर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति।।"

शनि–मंगल का एक राशि–सम्बन्ध महंगाई अथवा प्राकृतिक–प्रकोप, भूकम्प, बाढ़, व कहीं अकालग्रस्त स्थिति से जनता में असन्तोष की स्थिति बनाएगा;–युद्धदौ शनि–माहेयौ "

किञ्च–" शनैश्चर–धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।
तदा च तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी।। "

" एकराशिं गतावेतौ शनैश्चर–धरासुतौ।
द्विमासं च भवेद् पश्चात् वृष्टिःनिवर्तते।।"

श्रावण कृष्णपक्ष में 31 जुलाई / 1 अगस्त के लगभग त्रयोदशी तिथि का क्षय होने से जुलाई, अगस्त किंवा अक्तूबर / नवम्बर में किसी वरिष्ट–व्यक्ति के निधन से शोक व्याप्त होने का योग है–

" श्रावणे कृष्णपक्षे च क्षीणा काऽपि तिथिर्भवेत्।
तदा वै कार्तिके मासे छत्रभंगः प्रजायते।।"

आगे 11 अगस्त को गुरु के कन्या राशि में आने एवं 13 अगस्त को शनि के मार्गी होने से यह समय बाढ़–वर्षा से हानि का संकेत देता है। 1 से 11 दिसंबर, 2016 ई. तक मकरस्थ मंगल पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। 15 नवंबर से सूर्य–शनि (परस्पर शत्रुग्रह) दिसम्बर तक एकराशि में चलेंगे। यह ग्रहस्थिति शासनतन्त्र के सामने सिद्धान्तवादिता, आदर्शवाद वाली व्यावहारिक मजबूरियां हाजिर करेगी। इस दौरान भाजपा एवं विपक्ष के बीच राजनीतिक संघर्ष शुरू होगा एवं R.S.S. पर भी विपक्ष के आक्षेप आएंगे।

इसवर्ष की ग्रहस्थिति आरक्षण के मुद्दे पर भी सरकार को उलझाने वाली है। यह बात स्वीकार करनी पड़ेगी कि– नई सामाजित–आर्थिक इकाई बनाकर ही आरक्षण एवं आर्थिक सहायता दी जानी चाहिए, जो वस्तुतः असमर्थ है, इसमें जातिभेद नहीं होना चाहिए– यह मुद्दा सरकार के लिए सिरदर्द बनेगा।

शनि–मंगल, सूर्य–शनि की स्थिति के अनुसार इसवर्ष दक्षिण एशिया में

परमाणु हथियारों की दौड़ चिन्ता का विषय रहेगी।

26 जनवरी, सन् 2017 ई. को शनि कन्या राशि में आएगा एवं 6 फरवरी को गुरु वक्री होगा तथा 12 फरवरी से 13 मार्च तक सूर्य कुम्भ में शनि से दृष्ट होगा। इस समय मुस्लिम राष्ट्रों में अराजकता एवं भारत के प्रमुख नेता भी विदेशी अशान्ति से चिन्तित रहेंगे।

क्योंकि इस संवत् 2073 वि. में 9 संक्रान्तियां क्रूरवारों को ही प्रारम्भ होंगी एवं इस संवत् में 5 पाद क्रूरग्रहों के अधिकार क्षेत्र में हैं अतः इस संवत् में भारी प्राकृतिक आपदाएं एवं उग्रवादियों द्वारा अभूतपूर्व अशान्ति किंवा हत्याकाण्ड भारी चिन्ता का विषय एवं जनधन–हानिकारक रहेंगे।

इस संवत् 2073 वि. में शनि की दृष्टि पश्चिमी भूभाग पर रहेगी एवं शनि–मंगल और शनि–सूर्य की एक राशि में गति मुस्लिम राष्ट्रों पाकिस्तान, लीबिया, सीरिया, लेबनान, मिश्र, इराक, ईरान आदि में यह वर्ष अनेकत्र आन्तिरिक अशान्ति, कहीं गृहयुद्ध, कहीं सेना के द्वारा दमन (सत्ता हस्तान्तरण), **कहीं साम्प्रदायिक (शिया–सुन्नी आदि) कलह से भयंकर युद्धाग्नि प्रज्वलित होगी। भारत के सीमाप्रान्तों काश्मीर, राजस्थान एवम् अन्य सीमाप्रन्तों पर भी कुछ सीमावर्ती देश सैन्यबल प्रयोग के लिए विवश कर देंगे। उत्तरी एवम् पश्चिमी सीमाओं पर सेना को सतर्क रहना होगा।**

संवत् 2073 वि. के आरम्भ से 28 जून, 2016 ई. एवं 12 जुलाई से 17 सितम्बर, 2016, ई. तक तथा 1 नवम्बर, 2016 ई. से 14 दिसम्बर 2016 ई. तक एवं 12 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2017 ई. तक की समयावधि इसवर्ष भयंकर प्राकृतिक आपदा एवं दुःखद घटनापूरण रहेगी। इस समयावधि में प्रतिष्ठित–प्रधान नेताओं को भी अपनी सुरक्षा को सुदृढ़ रखना अनिवार्य है।

भारतीय गणतन्त्र का 67वां वर्ष

भारतीय गणतन्त्र के 67वें वर्ष की ग्रहस्थिति के अनुसार मुंथेश–बुध अपने मित्रग्रह–शुक्र के साथ है, इन पर बृहस्पति की दृष्टि भी है। बुध अष्टमेश एवं पंचमेश तथा शुक्र नवमेश एवं चतुर्थेश भी है। अतः यह संवत् भारतीय प्रगतिपद योजनाओं को अग्रेसर ले जाएगा। लेकिन सूर्य व्ययस्थान में शत्रुक्षेत्र में होने से प्रधान नेता को विपक्ष द्वारा भारी आक्षेप एवं आलोचना का भाजन बनाएगा। लग्नेश–शनि की सूर्य पर दृष्टि है एवं गुरु–चन्द्र पर भी शनि की विशेष दृष्टि होने से वृश्चिक नाम–राशि वाले प्रधान नेता के लिए कठिन परिस्थितियों वाला तो है ही, लेकिन " **उत्पत्स्यते हि मम कोऽपि समानधर्मा, कालोह्यय निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।**"– अर्थात् मेरे जैसा दृढ़निश्चयी (Dedicated) व्यक्ति फिर भी कभी जन्म लेगा, जोकि आलोचना का सामना करने के बावजूद अपने देश को प्रगतिपथ पर अग्रेसर रखेगा, क्योंकि पृथ्वी बहुत व्यापक है। इस दृढ़ निश्चय को लेकर देश की गरिमा को बनाए रखेगा एवं गणतन्त्र की महिमा एवं राष्ट्रपति जी का दिग्दर्शन देश को प्रगतिपथ पर रखेगा।

भारतीय गणतन्त्र का 67 वां वर्ष
27 जन. 2016 ई.(8 घं. 25 मि.)(I.S.T.)

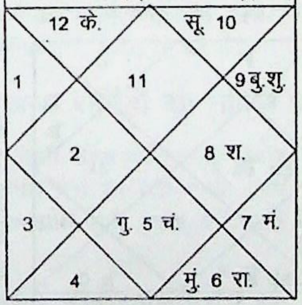

ध्यान दें– सं. 2073 वि. का उत्तरार्ध एवम् संवत् 2074 वि. के पूर्वार्ध में शनि–मंगल की स्थिति विषम(चीन–पाक से युद्ध की स्थिति) समस्याओं को लेकर आ रही है। इससे पहिले सरकार की उदासीनता एवम् आक्रामकता का अभाव लगातार शत्रुदेशों की गतिविधि को बढ़ावा देता रहा है, जोकि N.D.A. सरकार को असह्य रहेगा। समस्या का समाधान करने के लिए अब सरकार दृढ़–संकल्प मालूम देगी। " **भय बिन प्रीत नाहीं** " वाली नीति से ही हम शत्रुदेश की गतिविधि का सकारात्मक उत्तर देने में समर्थ होंगे।

महामहिम श्री प्रणवमुखर्जी महाभाग (राष्ट्रपति भारत गणतन्त्र)

महामहिम श्री प्रणव मुखर्जी का जन्म मिराती (वीरभूम) West Bengal में 11 दिसंबर, 1935 ई. को मिथुन लग्न में हुआ था। इनकी यथालब्ध जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

जन्मकुण्डली श्री प्रणव मुखर्जी

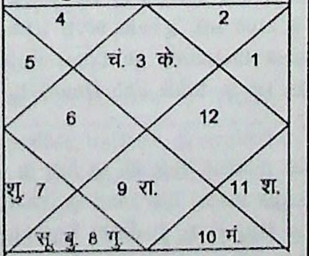

भाग्येश–शनि भाग्यस्थान में एवं कर्मेश गुरु की कर्मस्थान पर विशेष दृष्टि है। यह राजयोगकारक ग्रहस्थिति है। शुक्र की महादशा मे राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में इन्हें राष्ट्रपतिपद प्राप्त हुआ।

जन्मांग के अनुसार परामर्शदाता शुक्र, भागेश शनि– दोनों स्वस्थ हैं। कर्मेश–गुरु (बुधादित्य योग के साथ) कर्मस्थान को देखता है, राहु केन्द्र में है। शुक्र की महादशा मे राहु के अन्तर में गुरु के प्रत्यन्तर में राष्ट्रपति पद पर विराजमान हुए थे। अब आगे 26 अप्रैल, 2017 ई. तक गुरु प्रभावित करेगा। जो कि राजयोग की समाप्ति के बाद, जुलाई, 2017 के लगभग सेहत के लिए समय खराब होने का संकेत देता है। क्योंकि शनि एवं गुरु– दोनों सप्तमेश एवम्

अष्टमेश हैं। लेकिन महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणाव मुखर्जी का नाम आगामी अप्रत्याशित कठिन परिस्थिति की एवं शासन प्रक्रिया मे सुधारात्मक प्रक्रिया के लिए हमेशा उजागर रहेगा। क्योंकि आजकल शासन–पद्धति की कमियों में न्यायपालिका को दखल देना पड़ रहा है।

देश की राजनीतिक एवं अनुशासनात्मक प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए न्यायपालिका द्वारा इन्हें सुधारात्मक पग उठाने पड़ेंगे। प्रान्त विशेष की अव्यवस्था पर महामहिम को शासनसत्ता को कहीं अपने हाथ में भी लेना पड सकता है। शासन, न्यायप्रणाली एवम् अन्य राज्यों के विभाजन की उठ रही चुनौतियां, जोकि आगे कहीं देश में कटुतापूर्ण मोड़ न ले सकें, उसे हल करने के श्रेय के साथ इन्हें फरवरी, 2017 तक कठोर पग उठाने होंगे। ऐसे सुयोग्य, प्रबुद्ध महामहिम राजनीतिज्ञ महाभाग के संरक्षण में भारत–गणतन्त्र प्रगतिपथ पर ही रहे – यही प्रार्थना है।

भारत के प्रमुख राजनैतिक दल

भारतीय जनता पार्टी– गोचर ग्रहस्थिति एवं भाजपा की स्थापना–कालीन कुण्डली मे ग्रहस्थिति के अनुसार हमने श्रीमार्तण्ड पंचाग, सं. 2071 वि. में पृ. 58, कॉलम 2 पर भाजपा के केन्द्र में सत्तासीन होने की जो भविष्यवाणी की थी वह अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई थी, यह हम स. 2072 के पंचांग में भी लिख चुके हैं।

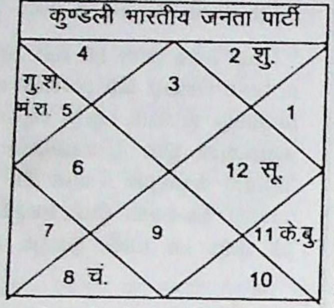

इसवर्ष की गोचर ग्रहस्थिति एवं भाजपा स्थापना–कालीन ग्रहस्थिति पर चिन्तन करने से स्पष्ट भान होता है कि– वृश्चिक राशि मे गोचरस्थ शनि–मंगल का भाजपा कुण्डली में चन्द्रमा के साथ सम्बन्ध है, जोकि– भाजपा की आन्तरिक स्थिति को बिगाड सकती है। जिससे आगे राजनैतिक घटनाक्रम एवं प्रगतिप्रद योजनाएं प्रभावित होंगी।

गतवर्ष सं. 2072 वि. के पंचांग में पृ. 61, कॉलम 2 पर 'भाजपा' शीर्षक के अन्तर्गत हमने स्पष्ट लिखा था कि– " सं. 2072 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार भाजपा की स्थापना–कुण्डली में गोचरस्थ (धनस्थानस्थ) कर्क राशि में स्थिति गुरु की धनेश नीचस्थ चन्द्र पर 14 जुलाई, सन् 2015 ई. तक विशेष दृष्टि रहेगी, जोकि *देश की आर्थिक स्थिति को सुव्यवस्थित करने के लिए प्रधान शासकों को नए कानून एवम् अन्य मित्र देशों के साथ औद्योगिक नीति–निर्धारित करके देशहित में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगी।* "

ठीक, इसी तरह से श्री प्रधानमन्त्री जी ने मित्र देशों से सम्बन्ध सुधारने एवं देशहितार्थ 'बंगलादेश–सीमा समाधान' आदि एवं औद्योगिक नीति को सुव्यवस्थित करने के कार्य सुचारू रूप से किए हैं।

ध्यान दें– कि 16 जून, 2016 ई. तक शनि–मंगल वृश्चिकराशि में एकसाथ रहेंगे एवं 29 जून तक ये दोनों क्रूर ग्रह वक्रगति से चलेंगे। आगे 12 जुलाई से 17 सितं. के लगभग का समय भी देश में आने वाली प्राकृतिक आपदा से प्रधान नेता चिन्तित रहेंगे। सीमाप्रान्तों पर सतर्कता एवं प्रधान नेताओं की सुरक्षा के लिए भी यह समय सावधानी का है।

नोट करें कि– भारत का शासनतन्त्र अपनी सैन्यबल एवम् समृद्धि के पथ पर नई शासनसत्ता एवं आर्थिक, सामाजिक एवं सामरिक–स्थिति को सुव्यवस्थित करने और देश को विशेष गरिमा एवं ख्याति को प्राप्त करने में 26 जनवरी, सन् 2017 ई. तक भाजपा सरकार पूर्णतया सफल सिद्ध होगी। इसवर्ष जून से सितम्बर, सन् 2016 ई. तक शासन के सचेत रहने पर भी भारत को उत्तरी–पश्चिमी प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप (भूकम्प, भूस्खलन, समुद्री तूफान) किंवा उग्रवादजन्य दुर्घटनाओं से जनधनहानि एवम् अशान्ति के योग शासनतन्त्र को क्षुब्ध करेंगे। इस संवत् की ग्रहस्थिति कुछ क्षेत्रों के सूखाग्रस्त रहने एवम् जुलाई–अगस्त में कुछ क्षेत्रों में भयंकर बाढ़ से विनाशकारक दृश्य उपस्थित करेगी।

कांग्रेस पार्टी–कांग्रेस पार्टी की स्थापना–कालीन कुण्डली में शनि योजनास्थान में नीच है एवं चन्द्र के साथ है। अब गोचर में शनि–मंगल व्ययस्थान में होने से इस पार्टी के आन्तरिक कलह एवं नेतृत्व में निष्ठा की कमी होने से यह पार्टी अभी असमर्थ एवं कमजोर ही रहेगी। सत्ता की लालसा से अन्दरूनी फूट उभरती नजर आएगी।

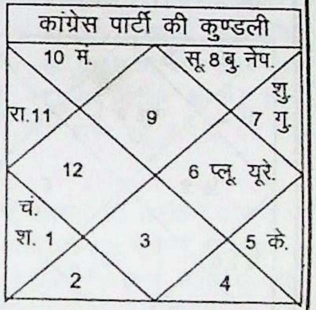

गतवर्ष सं. 2072 वि. के पंचांग मे लिखी इन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ें,–

"अब सं. 2072 वि. की गोचर ग्रहस्थिति को दृष्टि में रखते हुए लिखना पड़ेगा कि– इस संवत् का वर्षेश शनि कांग्रेस की कुण्डली में व्ययस्थान में है। अधिक समय यह शनि, शुक्र–मंगल एवम् राहु

के साथ रहता है। अतः कांग्रेस की यू.पी.ए. गठबन्धन ऐसी विपरीत सिद्धांतों वाली पार्टियों के साथ होंगे, जिनके साथ आगे डूबती नाव में बट्टे डालने वाली बात नजर आएगी। बहुत से सहयोगी दल तो पहले ही वृश्चिक के शनि में कांग्रेस को छोड़ चुके होंगे, आगे इस पार्टी में विवेकहीनता एवम् अवसरवादिता के कारण यह पार्टी 'किंकर्त्तव्य–विमूढ़, मालूम देगी। लेकिन जन्मकुण्डली में मौजूदा ग्रहस्थिति के अनुसार अक्तूबर में किसी प्रान्त विशेष में शनि की दृष्टि के कारण अपनी चिरसंचालित सत्ता से इस पार्टी को विलग कर सकता है।''

कहने का तात्पर्य यह है कि– लगातार (केन्द्र–दिल्ली आदि में) पराजयों से कांग्रेस हताशा एवं नेतृत्व के बारे जिस आन्तरिक मतभेद का शिकार है, तो गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार यह लिखने में संकोच नहीं कि– अभी कांग्रेस के बुरे दिन समाप्त नहीं हुए। जनता परिवार पार्टी में भी कांग्रेस अपने अस्तित्व एवं पुरातन गरिमा को प्रखररूप से स्थिर नहीं रख पाएगी।

आम आदमी पार्टी (आप)– आम आदमी पार्टी के संचालक श्रीअरविन्द केजरीवाल का जन्म 16 अगस्त, सन् 1968 ई. को रात्रि में 11 बजकर 46 मिनट पर शिवानी (हरियाणा) में हुआ था। इनकी जन्माङ्गगत ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

जन्मकुण्डली श्री अरविन्द केजरीवाल

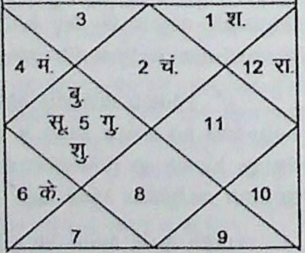

लग्नस्थ उच्च चन्द्रमा एवम् मित्र–सहायक बन्धुस्थान (चतुर्थ स्थान) में बुधादित्ययोग के साथ गुरु–शुक्र का होना शुभ है। इनके लिए गोचरानुसार कर्कस्थ गुरु राजयोग दिलाने वाला रहा है, लेकिन तुला राशि के गोचरस्थ शनि–राहु की मंगल पर दृष्टि एवम् कुण्डली में केमद्रुमयोग ने इन्हें शनि–राहु एवम् मंगल के वक्रत्व कालारम्भ की छाया में ही 14 फरवरी, 2014 ई. तक राजयोग से वञ्चित कर दिया था।

अब पुनः गुरु में गुरु के प्रत्यन्तर में इन्हे देहली में प्रधानपद प्राप्त हुआ है। इस समय इनकी कुण्डली में भाग्येश एवं कर्मेश शनि, शत्रुक्षेत्र–वृश्चिक राशि में गोचर में मंगल के साथ वक्री होकर चल रहा है। जिससे कि इनकी पार्टी में बिखराव एवं आपसी वैमत्य उजागर होगा। आगे राजनैतिक एवं आर्थिक–समस्याओं से जूझना होगा। जो जनता से वायदे किए हैं, उनको निभाना इन्हें राजनैतिक दृष्टि से परेशान करेगा। इनके निजी लोग ही इन्हें अपदस्थ करना चाहेंगे। सितंबर, 2016 ई. तक का समय इनकी शासन सत्ता के लिए काफी संघर्षमय रहेगा। क्योंकि 'आप' भी 'एक व्यक्ति–केन्द्रित'' पार्टियों की कतार में खड़ी हो रही है। 'आप' के श्री केजरीवाल जी निजी महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति में मन लगा रहे हैं। इस स्थिति में सभी निजी लोगों के साथ सन्तुलन बनाना श्री केजरीवाल जी के लिए कठिन सिद्ध होगा। परिणामस्वरूप पार्टी में विरोध की आग भड़क सकती है, जोकि इस पार्टी की गति एवं अस्तित्व के लिए खतरा बन सकती है– ऐसा गोचर ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है, सर्वज्ञ तो प्रभु हैं।

भारतीय राजनीति के क्षितिज पर कुछ अन्य पार्टियों का भविष्य

इसवर्ष संवत् 2073 वि. में उग्रवादियों द्वारा किसी विशेष दुर्घटना को अंजाम दिया जा सकता है। अतः तीसरे मोर्चे आदि को केवल देश की गति–प्रगति एवम् सुख–समृद्धि के लिए ही प्रयास करने चाहिएं, अन्यथा इनके सभी प्रयास अहितकारी एवम् देश की प्रगति में बाधक ही रहेंगे।

बहिन मायावती जी की **'बसपा'** पार्टी का केन्द्र से तो क्षरण हो चुका है– अब आगे की गोचर ग्रहस्थिति शनि की वृष राशि एवं सिंह राशि पर दृष्टि इस पार्टी की स्थिति को काफी कमज़ोर करेगी। अब कम्युनिस्टिक पार्टियों ने इसवर्ष 'एकता परिवार' नाम से जो राजनैतिक चाल चली है; यह पार्टी मुस्लिम–तुष्टीकरण, मजदूर वर्ग की हामी, एकाकी साम्प्रदायिता–विरोध, पुरानी राजनीतिक दशा–दिशा, राष्ट्रीय अस्मिता पर हमला करने एवं अपमानित करने की प्रवृत्ति को छोड़ नहीं पाएंगे एवं सत्तालोलुपता ही एकमात्र उद्देश्य रहेगा, एकता परिवार में जल्दी ही पद प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा इस पार्टी को डुबो देगी– ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है।

कुछ प्रतिष्ठित राजनीतिज्ञ

श्री नरेन्द्रमोदी महाभाग– श्री नरेन्द्रमोदी जी का जन्म 17 सितम्बर, सन् 1950 ई. में गुजरात स्थित महेसाना में 11घं. 00मि. A.M. पर हुआ। इनकी जन्मकालिक ग्रहस्थिति इस प्रकार है–

जन्माङ्गकालिक ग्रहस्थिति श्रीनरेन्द्रमोदी

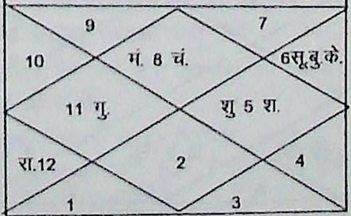

इस समय चन्द्रमा की महादशा में बृहस्पति का अन्तर आपके यथालब्ध जन्माङ्ग के अनुसार चल रहा है, जो कि मार्च 2016 ई. तक चलेगा।

सं. 2073 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार चन्द्र की महादशा में शनि का

अन्तर 30 मई, 2016 ई. तक चलेगा। जन्माङ्ग मे शनि–शुक्र पर गुरु की दृष्टि है। लेकिन गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार सं 2073 वि. के प्रारम्भ से पूर्व ही 29 जून, सन् 2016 ई. तक शनि–मंगल दोनों श्री मोदी जी के जन्मलग्न (वृश्चिक राशि) में हैं। 17 जून से जुलाई, 2016 ई. तक, 12 जुलाई से 17 सितंबर, सन् 2016 ई. तक एवं आगे 1 नवम्बर से 14 दिसम्बर, सन् 2016 ई. तक तथा 12 फरवरी, 2017 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति भी श्री नरेंद्र मोदी महाभाग की सुरक्षा एवम् स्वास्थ्य की दृष्टि से विशेष सावधान रहने का संकेत देती है।

ध्यान दें– सं. 2073 वि. की उल्लिखित समयावधियों में विरोधीपक्ष विशेष सक्रिय रहेगा। साथ ही असम, मिज़ोरम, म्यांमार, उड़ीसा, झारखण्ड, कश्मीर एवम् महानगरों में उग्रवादियों द्वारा एवम् सीमाप्रान्तों पर भारी अशान्ति के योग बनते हैं। कहीं भयानक प्राकृतिक आपदा से भी प्रधान नेता को परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

लेकिन जन्माङ्ग में भाग्येश–चन्द्र लग्न में नीच होकर स्वराशिस्थ मंगल के साथ 'रुचक योग' तो बना ही रहा है– अतः अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी यह योग श्री मोदी को सात्विक–धर्मात्मा, शासन–व्यवस्था में कुशल शासक एवं राजा–तुल्य यशस्वी तो बनाता ही है–"**शास्त्री मन्त्रजपाधिकारकुशलो राजऽथवा तत्समः।**"

अतः श्री नरेन्द्रमोदी जी यशस्वी प्रधानमन्त्रियों की कोटि में कठिनाइयों से जूझकर भी देश को प्रगतिपथ पर अग्रेसर रखेंगे एवम् देश को आर्थिक–प्रशासनिक दृष्टि से समृद्ध देशों की कोटि में स्थापित करेंगे;– यह आगे समय बतलाएगा।

शपथ ग्रहणकालीन कुण्डली से भी भाग्येश चन्द्र लग्नेश शुक्र के साथ केन्द्र में त्रिकोणेश एवम् केन्द्रेश शनि के साथ केन्द्र में राहु–केतु के साथ है। अतः यह योग भी इन्हें राजयोग प्रदान करता है एवम् प्रशासनिक सफलता प्रदान करता है–

" यदि केन्द्रे त्रिकोणे वा निवेसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद योगकारकौ।।"

यहां शनि केन्द्रेश–त्रिकोणेश एवम् शुक्र भी केन्द्रेश है, अतः यह योग श्रीनरेन्द्रमोदी जी को लगभग फरवरी, 2017 ई. से आगे देश को समृद्धि एवम् विश्व में सशक्त देशों में स्थापित कराने का श्रेय प्रदान करेगा। लग्नेश शुक्र केन्द्रेश एवम् अष्टमेश भी है, अतः इन्हें अपनी सुरक्षापंक्ति को दृढ़तम रखना होगा, अचानक उग्रवादजन्य कुकृत्य कहीं देश को हानि न पहुंचा दे, क्योंकि " **केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरु–शुक्रयोः** "–प्रमाणानुसार श्री मोदी को देश को प्रगतिपथ पर ले जाने के लिए पहले देश की खामियों एवम् आर्थिक/प्रशासनिक व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए काफी दिक्कतों/परेशानियों का सामना करना होगा।

श्रीमति सोनिया गांधी–

जन्माङ्ग श्रीमती सोनिया गांधी,
जन्म 9 दिसं.,1946, 21 घं. 15 मि. (स्टैं.टा.)
TURIN (ITALY)

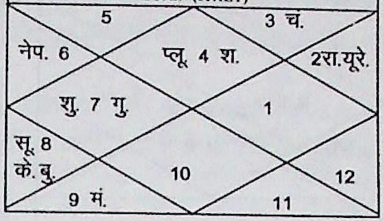

श्रीमती सोनिया गांधी के जन्माङ्ग में लग्नेश– चन्द्र व्ययस्थान में है, सप्तमेश एवम् अष्टमेश शनि लग्न में, सप्तमभाव एवं कर्मस्थान को देख रहा है। अतः स्वास्थ्य की दृष्टि से यह संवत् चिन्ताजनक अवश्य है।

राजनैतिक–परिपेक्ष्य से देखें तो गोचर में वृश्चिक–राशि में शनि–मंगल के वक्रगति से एकसाथ हैं। किंवा इसवर्ष सूर्य–शनि की स्थिति इन्हें एवम् इनकी पार्टी को तथा इनके परिवार को आगे सन् 2017 ई. तक तो सत्ताप्राप्ति तक नहीं पहुंचने देगी;– ऐसा ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है। आगे की ग्रहस्थिति का चिन्तन फिर किया जाएगा।

श्रीराहुल गांधी–श्रीराहुल गांधी की जन्मकालिक–ग्रहस्थिति के अनुसार नीच शनि की मंगल पर विशेष दृष्टि है। गोचर में शनि–मंगल दोनों सप्तमभाव में जन्मकालिक– चन्द्र के साथ हैं;– यह सारी ग्रहस्थिति इन्हें अपनी ही पार्टी के व्यक्तियों द्वारा आलोचना का विषय बनाती है एवम् पार्टी–प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाती है।

जन्मकुण्डली श्री राहुल गांधी
19 जून, 1970 ई., नई दिल्ली (5-05 A.M.)

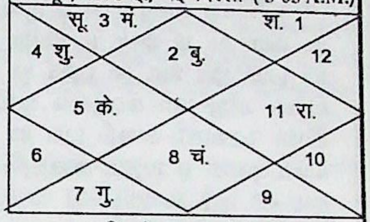

हां, 27 अप्रैल, 2017 ई. के बाद 27 अक्तूबर, 2017 ई. के मध्य इनका प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा; लेकिन श्रीराहुल गांधी जी को अपनी सुरक्षा की दृष्टि से (मंगल में राहु एवम् गुरु–शनि के अन्तर में) 24 मार्च, 2020 तक विशेष सावधान रहना होगा। राजनैतिक दृष्टि से अभी कोई विशेष उपलब्धि प्राप्ति का योग नहीं।

भारत के कुछ प्रान्त

पंजाब– इस प्रान्त की प्रभावराशि मीन एवम् नामराशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् के प्रारम्भ से (अप्रैल, सन् 2016 ई. से) 25 अप्रैल, 2016 ई. तक शुक्र मीन राशि में उच्चस्थ रहेगा। इस समयावधि में प्रधान नेता प्रान्त–हितार्थ नई–नई योजनाएं बनाऐंगे। लेकिन 27 अप्रैल से 10 जुलाई तक शुक्र अस्त रहेगा एवम् कन्या राशि से तृतीयभाव में शनि–मंगल 17 जून, 2016 ई. तक एकसाथ (वृश्चिक राशि में) वक्रगति से चलेंगे। यह समय तथा 12 जुलाई से 17 सितम्बर तक भी शनि–मंगल की पोजीशन इस प्रान्त में कुछ अलगाववादी तत्त्व प्रान्त में एवं धार्मिक स्थानों में अशान्ति का कारण बन सकते

हैं। शान्ति के लिए बादल सरकार प्रयास करेगी, लेकिन फिर भी कुछ तत्त्व अशान्ति का कारण बनते रहेंगे। धार्मिक (पवित्र) स्थानों की महिमा को हानि पहुंचेगी। लेकिन श्री प्रकाश सिंह बादल साहिब की ग्रहस्थिति अगामी दो वर्षों में इन्हें राजनीतिक दृष्टि से प्रगतिपथ पर रखेगी– ऐसा योग गुरु ग्रह के कन्या राशि में आने पर एवम् उदित होने पर यह सितम्बर, 2016 ई. से बाद सवा साल तक चलेगा।

इस प्रान्त में प्रगतिप्रद योजनाएं लागू होने में भारी आर्थिक–संकट बाधा बनेगा एवम् कुछ अशान्तिकारक तत्त्व भी सक्रिय रहेंगे, जिससे इस प्रान्त को भारी हानि एवम् अशान्ति का सामना करना पड़ेगा। शनि–मंगल के वृश्चिक राशि में रहने पर पंजाब एवम् अन्य उत्तरी प्रान्तों में वर्षा–बाढ़ या सूखे का भी अनेकत्र सामना करना पड़ेगा;–

" शनैश्चर–धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।
तदा च तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी।।"

" मासद्वये तु वृष्टिःस्यात् पश्चात् वृष्टिर्निवर्तते।।"

हरियाणा– नाम राशि मिथुन एवम् प्रभावराशि मीन है। गतवर्ष सं. 2072 वि. के पंचाग में पृ. 65, कॉलम 2 पर 'हरियाणा' शीर्षक के अन्तर्गत की गई भविष्यवाणी देखें –

" हरियाणा की नामराशि मिथुन एवम् प्रभावराशि मीन है। 3 मई से 15 जून, सन् 2015 ई. तक शनि–मंगल का षडष्टक एवम् 15 मई से 14 जून, सन् 2015 ई. तक सूर्य, मंगल, बुध का शनि के साथ समसप्तक यहां राजनीतिक दलों में काफी उलटफेर लाने वाला है। विशेषतः इस समय सत्तासीन कांग्रेस के प्रधान–नेता श्री भूपेन्द्रसिंह हुड्डा के सहयोगी व्यक्ति ही कांग्रेस के विरोध में स्वर उठाने लगेंगे एवम् आगे विधानसभाई निर्वाचनों में विपक्षीदल भाजपा को सहयोग देने के कारण कांग्रेस–संचालित सरकार के लिए चुनौती सिद्ध होंगे। क्योंकि 14 जुलाई से वक्र शनि की दृष्टि सिंहस्थ गुरु (जोकि श्री भूपिन्द्रसिंह हुड्डा जी का राशीश है) पर रहेगी। अतः भरपूर कोशिश के बावजूद भी प्रधाननेता पार्टी को एकजुट व पूर्णरूप से शक्ति प्रदान करने में समर्थ न रहेंगे।"

यह भविष्यवाणी कहां तक ठीक सिद्ध हुई, इसका निणर्य पाठक स्वयं कर सकते हैं।

संवत् 2073 वि. की गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार 12 जुलाई 2016 ई. से 17 सितम्बर, 2016 तक यहां प्राकृतिक–प्रकोप (अतिवर्षा या अवर्षण) से हानि के योग हैं।

26 जनवरी, सन् 2017 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक धनुस्थ–शनि की दृष्टि मिथुन राशि पर रहेगी। यह समय यहां के प्रधान शासक के समक्ष कठिन परिस्थितियों को लेकर आएगा। केन्द्र से सहायता प्राप्त होगी।

पशुधन–पालन, कृषिकार्य में विशेष विकासकार्य, वनविभाग, ऊर्जाश्रोत–विकास एवम् क्रीड़ाक्षेत्र में विशेष प्रगति से यह प्रान्त अन्य प्रान्तों से अग्रसर रहेगा। वर्षा की दृष्टि से कुछ क्षेत्र सूखग्रस्त रहेंगे।

हिमाचल प्रदेश– इस प्रान्त की नाम राशि कर्क एवम् प्रभाव राशि मीन है। गतवर्ष सं. 2072 वि. के श्रीमार्तण्ड पंचांग में पृष्ठ 65, कॉलम 2 पर 'हिमाचल प्रदेश' शीर्षक के अन्तर्गत की गई भविष्यवाणी पर ध्यान दें–

" मीनराशि का स्वामी गुरु संवत् (सं. 2072 वि.) के आरम्भ में उच्चस्थ, वक्री है। इस समय शनि–मंगल एवम् राहु–मंगल का षडष्टक योग भी बन रहा है। यह ग्रहस्थिति प्रान्त के प्रमुख नेता जी के लिए विपक्षीदल से परेशानी का कारण बन सकती है, लेकिन चीफ मिनिस्टर श्री वीरभद्रसिंह जी को विचलित नहीं कर सकेगी।"

विपक्षी दल के आक्षेप इन्हें विचलित नहीं कर सके–यह सर्वविदित है।

इस संवत् 2073 वि. के आरम्भ से जून, 2016 ई. तक, 12 जुलाई से 17 सितम्बर तक, 1 नवम्बर से 11 दिसम्बर, सन् 2016 ई. तक तथा 26 जनवरी, 2017 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक यहां यान–दुर्घटना, जलाप्लाव, प्राकृतिक–प्रकोप किंवा शत्रुदेशकृत घुसपैठ से हानि के योग हैं। लेकिन श्री वीरभद्र जी सशक्त नेतृत्व के कारण सर्वतोभावेन स्थिति को नियन्त्रण में रखने में यशस्वी रहेंगे। काश्मीर, मनाली की दिशा से उग्रवादी उल्लिखित– समयावधियों में अशान्ति का कारण बन सकते हैं। सम्पूर्ण ग्रहगोचर को ध्यान में रखते हुए यह लिखना उचित रहेगा कि– यह प्रान्त शिक्षा, प्राकृतिक–औषध, रमणीयता एवं सैलानियों के लिए आकर्षण–स्थल रहेगा। आर्थिक, राजनीतिक एवं सर्वतोभावेन प्रगतिपथ पर रहेगा।

जम्मू–काश्मीर– इस प्रान्त की नामराशि मकर और प्रभावराशि तुला है। गोचर ग्रहस्थिति अनुसार नामराशि का स्वामी शनि वृश्चिक–राशि में मंगल के साथ जून, 2016 ई. तक चलेगा। 27 अप्रैल से 10 जुलाई, 2016 ई. तक तुला राशि का स्वामी शुक्र अस्त रहेगा। अतः यहां की जनता में संकीर्ण मानसिकता से अलगाववादी गुट यहां अशान्ति का कारण बनते रहेंगे। यहां मुस्लिम–आतंकवाद का इलाज भारत के शासकों के लिए सिरदर्द बना रहेगा।

गत संवत् 2072 वि. के पंचांग में पृ. 66, कॉलम 2 पर लिखे ये शब्द पढ़ें–

" संवत् 2072 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार शनि–मंगल की स्थिति भी अराजकता एवम् जनवरी, 2016 ई. के लगभग राहु की स्थिति भी पाक–समर्थित उग्रवाद एवम् सीमाप्रान्तों पर पाक–चीन द्वारा सीमातिक्रमण से भयावह स्थिति बनेगी। भारत को सैन्य संरक्षण/प्रतिरक्षण के लिए तैय्यार रहना होगा।"

ठीक पाक समर्थित उग्रवादी विध्वंसक कारवाई द्वारा अशान्ति का कारण बन रहे हैं।

इस वर्ष संवत् 2073 वि. में भी 12 जुलाई से 17 सितम्बर, 2016 ई. तक तथा 1 नवम्बर, 2016 ई. से 26 जनवरी, 2017 ई. तक यहां सीमाप्रान्त असुरक्षित रहेंगे एवम् पाकसमर्थक ग्रुप भारी अशान्ति का कारण बनेंगे।

उत्तर प्रदेश– नामराशि वृष एवम् प्रभावराशि धनु होने से संवत् 2073 वि. के प्रारम्भ से ही वृषराशि पर शनि–मंगल की दृष्टि लगभग जून तक प्रभावी रहेगी। तत्पश्चात् लगभग जुलाई से 17 सितम्बर, 2016 ई. तक इस प्रान्त की शासन सत्ता को स्थिरता एवम् सुशासन देने वाली नहीं। कानून व्यवस्था से असन्तोष, अनैतिक घटनाएं अधिक हों, सत्तालोलुपता से राजनीति दूषित रहे। विभिन्न दलों के गठजोड़ का परिपाक विशेष सफल नहीं रहे, केवल प्रान्तीय–सत्ता प्राप्ति के बाद यह गठजोड़ भी बिखरता नज़र आएगा, क्योंकि शनि की धनुराशि में 26 जनवरी, 2017 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति यहां राजनैतिक अस्थिरता वाली है– ऐसा संकेत मिलता है।

दिल्ली– प्रभावराशि मकर एवं नामराशि मीन होने से प्रभावराशि के मालिक शनि ने मंगल के साथ जो गठजोड़ एवम् इस संवत् के प्रारम्भ से लगभग जून, 2016 ई. तक तथा 17 जुलाई से लगभग सितम्बर, 2016 ई. तक एवम् 1 नवम्बर, 2016 ई. से संवत् 2073 वि. के अन्त तक की ग्रहस्थिति से यहां के शासकों के प्रति जनाक्रोश बढ़ाएगी और श्री अरविन्द केजरीवाल को भारी राजनैतिक संकटों का सामना करना पड़ेगा–

"यदा वृश्चिकगः सौरिः मेदिनी दुःखसंयुता।
वर्षामात्रमथो चोर्ध्वमिन्द्रप्रस्थो विनश्यति।।"

क्योंकि श्री केजरीवाल को आर्थिक संकट होने से जन्ता को दिए गए आश्वासनों को पूरा करने में अशक्त रहेंगे। विपक्षी राजनीतिज्ञ इसे राजनैतिक अपरिपक्वता कह कर हावी रहेंगे।

पाठको ! प्रभुकृपा से भूत–भविष्य में जो कुछ (ग्रहगोचरवश) अनुभव किया, आपके सामने रख दिया है। जो घटित हो चुका, वह आपने देख लिया। जो भविष्य है, उस पर आप भूतानुसन्धान के आधार पर विश्वास करें–

"समस्तमेतद् गतमागतं तथा भविष्यमप्यक्षरशो यथोत्तरम्।
निबोधितं शास्त्र–परम्परावशाद् भवादृशां भारतवासिनां पुरः।।"

लेख पूर्ण होने की तिथि–
14 जून, सन् 2015 ई.
(प्र. आषाढ़ कृ. त्रयोदशी)
(वीरवार)

शुभचिन्तक–
इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,
श्रीमार्त्तण्ड भवन, मु. पो. कुराली,
(अजीतगढ़– मोहाली), (पंजाब)।

आज का दिन कैसे बीतेगा

प्रातः उठकर पंचांग से ज्ञात करो कि उस समय कौन-सा नक्षत्र है। फिर नीचे दिए गये चक्र के समान एक चक्र बनाओ । इस चक्र में जहाँ १ लिखा है, वहां उस दिन के प्रातःकालीन नक्षत्र को लिखकर उससे आगे के नक्षत्रों को २-३-४ आदि अंकों के स्थान पर लिखते हुए अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को चक्र में लिख डालो । अब देखो कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ा है । यदि वह चक्र के भीतर है तो वह दिन सुख-शान्ति से व्यतीत होगा, उस दिन कोई शुभ समाचार मिलेगा। यदि नाम-नक्षत्र चक्र के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग प्रसन्नता से बीते ओर शेष भाग में चिन्ता, दुःख-शोक से चित्त खिन्न हो। यदि नाम नक्षत्र पर पड़े तो वह पूरा दिन विवाद, हानि, दुर्घटना आदि से चित्त की अशान्ति का कारण बने ।

-:चक्र:-

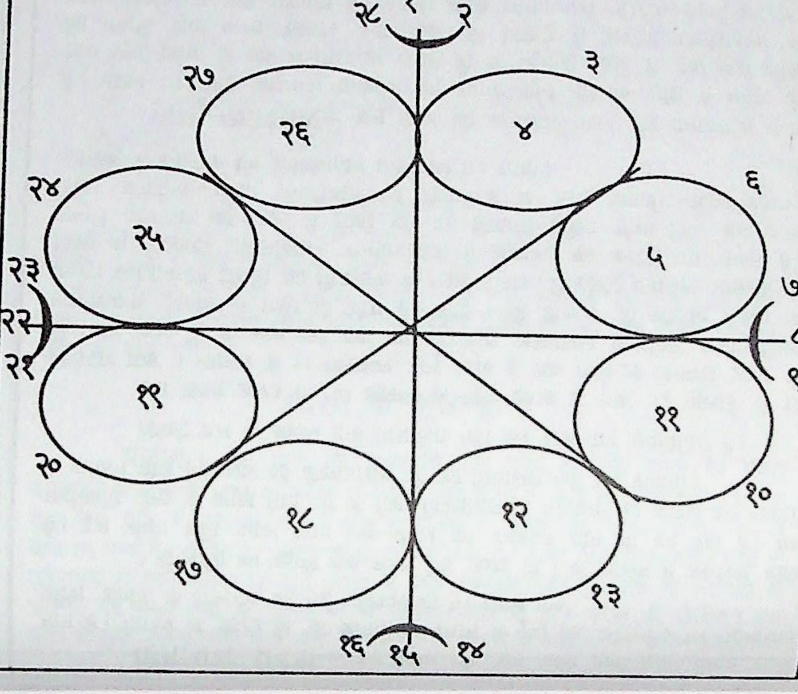

संवत् 2073 वि. में भारत की जलवायु एवं वर्षा–विचार

– संयमी शर्मा,

जल, वायु, अनाज किंवा अन्य कृषि–उत्पादन– ये प्राकृतिक चतुष्टयी ही संवत्सर के फल की दिशा व दशा को निर्धारित करती है। यदि वर्ष के ये चार स्तम्भ सुदृढ़ हों तो वर्ष सुदृढ़, जनजीवन स्वस्थ एवं समृद्ध रहेगा;– ऐसी मान्यता है। लेकिन " **जल एवं वायु** "– ये संवत् के प्रमुख स्तम्भों में से हैं। इन्हीं के आधार पर **"अन्न स्तम्भ"** की कल्पना की जा सकती है। जलवायु के बिना प्राणियों के जीवनाधायक अन्न की भी उपज संभव नहीं। अतः सं. 2073 वि. के जलवायु का ग्रहयोग के आधार पर यहां संक्षिप्त निर्देश नीचे दे रहे हैं। **आशा करते हैं कि– यह संक्षिप्त लेख किसानों/बागवानों के लिए एक दिशा–निर्देशक सिद्ध होगा।**

जब सूर्य **आर्द्रा नक्षत्र** में प्रवेश करता है, लगभग उसी समय से ही भारत के प्रान्तों में वर्षा का आगमन माना जाता है।

इसवर्ष (सं. 2073 वि.) में आषाढ़–कृष्णपक्ष मंगलवार प्रतिपदा तात्कालिक द्वितीया, तदनुसार 21 जून, सन् 2016 ई. को पू.षा. नक्षत्र, ब्रह्मयोग एवम् धनुःस्थ चन्द्र के समय, 23 घं. 01 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

सूर्य की आर्द्राप्रवेशकालीन ग्रहस्थिति(सं. 2073 वि.)
(21 जून, 2016 ई., 23घं. 01मि.)(भा.स्टैं.टा.)

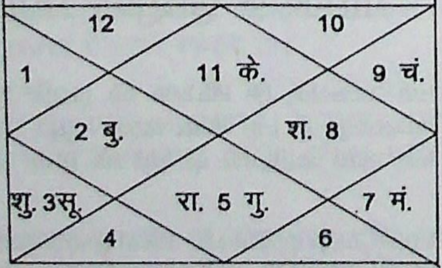

आर्द्रा–प्रवेशकालीन कुण्डली के अनुसार देश गण्य–मान्य व्यक्तियों के लिए तो आर्थिक परिस्थितियों से चिन्तित रहेगा। जम्मू–काश्मीर गुजरात, बिहार, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा आदि में प्राकृतिक प्रकोप से हानि संभव है। प्रशान्त महासागर में मौसमी परिघटना अलनीनो (झंझावात) की सक्रियता को इसवर्ष नकारा नहीं जा सकता, जिससे मुम्बई, सूरत, उत्तराखण्ड में कॉरपोरेट सैक्टर की प्रगति में बाधा आए। अतः हमारे देश को मॉनसून की मात्रा को लेकर अन्तर्राष्ट्रिय संस्थानों द्वारा की गई भविष्यवाणियों को भी नकारना हानिकारक रहेगा। क्योंकि वृश्चिक राशि में शनि–मंगल का 17 जून तक एकसाथ रहना विश्व के लिए अच्छा संकेत नहीं देता। भारत के लिए अर्धरात्रि के लगभग सूर्य का आर्द्रा में **प्रवेश** शुभ है, लेकिन महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार, बंगाल, आसाम एवम् कुछ समुद्रतटवर्ती अन्य देशों/प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप से हानि का योग है। सं. 2073 में चतुर्मेघ विचार से **'आवर्तक' नामक मेघ** होने से कुछ प्रान्तों में सूखा, कहीं वायुवेग व तूफान से हानि भी हो सकती है–**"आवर्ते विनिवृष्टिः स्यात्।"**

इसवर्ष **'नवमेघ विचार'** से **'नील'** नामक मेघ है। अतः उत्तरी भारत में वर्षा अच्छी हो।" **मेघः क्षिप्रं तु वर्षति"** –प्रमाणानुसार कुछ प्रान्तों में सामयिक वर्षा न होकर समय से पूर्व तीव्र वर्षा से हानि भी हो। परन्तु चतुर्मेघ का विशेष महत्त्व होने से ." **आवर्ते मन्दतोयम्**"–प्रमाणानुसार कुछ प्रान्त सूखे की चपेट में आने के योग हैं।

इसवर्ष **रोहिणी का वास 'पर्वत'** पर होने से **"पर्वते बिन्दुमात्रं हि"**–प्रमाणानुसार वर्षा की कुछ प्रान्तों में बहुत कमी होने से यह वर्ष शासन के लिए परेशानी कारक रहेगा। कहीं वायुवेग, आंधी एवं तूफान व विस्फोट, भूचाल आदि से भी हानि संभव है।

'आवह' आदि सप्तवायु–विचार से इसवर्ष कुछ शास्त्रों अनुसार **'परावह'** किंवा कुछ अनुसार **वायु'** नामक वायु है। कहीं वर्षा की कमी व कहीं अत्यधिक वर्षा से फसलों को हानि पहुंचे। दक्षिण–पश्चिमी किंवा समुद्रतटवर्ती भूभाग में कहीं सुनामी से हानि भी संभावित है।

संवत् 2073 वि. में जलवायु–विचारार्थ 'जलस्तम्भ' एवं 'वायुस्तंभ' का विचार–

इसवर्ष **'जलस्तम्भ'** 46.78 प्रतिशत होने से महानगरों में पेयजल के संकट को दूर करने के लिए सरकार को सकारात्मक पग उठाने पड़ेंगे।

कुछ प्रान्त अकालग्रस्त भी रहेंगे। बहुजलप्रधान चावलादि की फसल को हानि पहुंचेगी। अनेक प्रान्तों में वर्षा पर्याप्त हो।

इसवर्ष (संवत् 2073 वि. में) **'वायुस्तम्भ'** का मान 80.29 प्रतिशत होने से भी वायुवेग वर्षा के क्रम को बिगाड़ सकता है। वायुवेग एवम् अलनीनो (झंझावात) आदि से कुछ प्रान्तों में जनधनहानि हो। बंगाल की खाड़ी एवम् अरबसागर से मॉनसून समयानुसार (वायुवेग से) न आ सकेंगे। बादल वर्षा, वायु से ही संचालित होते हैं। अतः सरकार के लिए कठिन परिस्थितियां बनेंगी।

इस वर्ष का **राजा शुक्र** एवं **मन्त्री बुध** होने से राजनैतिक संकट कम होंगे एवं अशुभ घटनाएं भी घटित होंगी। **मेघेश मंगल** होने से जीवनरक्षक औषधियां महंगी होंगी तथा जड़ी–बूटियों एंवं कन्दमूल की उपलब्धता कम होगी।

संवत् 2073 वि. में गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार वर्षा एवं वायु

ध्यान दें–यहां (आगे) जिन तारीखों में हमने वर्षा का निर्देश किया है, उन तारीखों में वर्षा यत्र–तत्र अवश्य होगी। स्थानविशेष के लिए वर्षा का विचार करने हेतु सूक्ष्मविचार की आवश्यकता होती है, जोकि समय एवं स्थानाभाव के कारण कर पाना संभव नहीं है।

नोट करें– आजकल **इन्टरनैट** पर जो वर्षाविचार आता है, वह अधिकतर सप्ताह तक सीमित है, **हम जो वर्षा–वायुविचार लिखते हैं, वह केवल ग्रहचाल के अनुसार एकवर्ष पूर्व ही लिखा जाता है, जोकि लगभग पूर्ण रूप से सही साबित हो रहा है– यह पुरातन ऋषियों की ग्रहगणित के चिन्तन का परिणाम है।**

संवत् 2073 वि. के प्रारम्भ में ही वृश्चिक राशि में शनि एवं मंगल हैं। राहु सिंहस्थ एवम् गुरु वक्री हैं। यह ग्रहस्थिति लगभग जून तक महाराष्ट्र, केरल, पूर्वोत्तरीय राज्यों, पश्चिमी बंगाल के पर्वतीय भूभाग, कर्णाटक, कोंकण, गोवा, उड़ीसा, झारखण्ड, रायलसीमा, तामिलनाडु, छत्तीसगढ़, बिहार के इलाकों में कहीं भारी वर्षा व कहीं सूखे की संकेतक है।

अब संवत् 2073 वि. की ग्रहस्थिति के अनुसार मासिक वर्षाचिचार संक्षेप में लिख रहे हैं–

अप्रैल(सन् 2016 ई.)– सं. 2072 वि. में अप्रैल 1 से 3, 5 और 6 तथा सं. 2073 में 8 से 14, 16, 17, 18, 19, 20, 25, 27 एवम् 28 अप्रैल को महाराष्ट भूटान, प. राजस्थान, उ.प्र., पूर्वी आसाम, पूर्वी सिक्किम, बिहार, बंगाल के कुछ भागों में वर्षा एवम् बादलचाल रहे। कहीं वायुवेग के साथ वर्षा भी हो।

मई– मई 4, 5, 6, 7, 9 से 11, 14, 16, 19, 21, 22, 24, 25 एवम् 27 मई के लगभग मध्य–मुंबई, आसाम, उड़ीसा, बिहार, हि प्र., जम्मू–काश्मीर एवम् उत्तरप्रदेश के कुछ भागों में बादल–वर्षा के अच्छे योग हैं।

जून– 2, 3, 4, 7, 8, 13 14, 17, 18, 20, 21, 22, 23, 26, 27, 28, 29 एवम् 30 जून को उत्तराखण्ड, हि.प्र., जम्मू–काश्मीर, उत्तरप्रदेश, उ. भारत के अन्य अनेक क्षेत्रों व महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड एवम् दिल्ली आदि में अनेकत्र वायुवेग के साथ वर्षा हो।

नोट– **'शनि–मंगल'**– ये दोनों क्रूरग्रह वृश्चिकं राशि में ही चल रहे हैं, अतः अनेकत्र कहीं बाढ़ किंवा प्राकृतिक प्रकोप से भारी जनधनहानि का भय लगभग 17 जून तक सम्भव है–

" शनैश्चर–धरापुत्रावेकस्थौ वृष्टिकारकौ।
तदा तु तावती वृष्टिर्यावती गृहपातिनी।।"

जुलाई– 3, 5 से 13, 16, 19, 20 21, 24, 26, 27 एवम् 31 जुलाई को उत्तर भारत, राजस्थान, उड़ीसा, बिहार, आसाम, हि.प्र., उत्तरप्रदेश, जम्मू–काश्मीर एवम् केन्द्रशासित राज्यों में व्यापक वर्षा के योग हैं। कहीं–कहीं बिजली की गर्जना एवम् बादलचाल रहे।

नोट–शुक्र–बुध–सूर्य की स्थिति के अनुसार कहीं वर्षा के अवरोध से किसान परेशान रहें। कहीं बाढ़ से हानि भी सम्भव है।

अगस्त– अग. 2, 3, 4, 11 से 16, 19, 22 25, 28, 30 एवं 31 अगस्त को कुछ प्रान्तों में बादल वायुवेग से बिखरते रहेंगे। पंजाब, हरियाणा,

चण्डीगढ़, हि.प्र., दिल्ली, जम्मू–काश्मीर, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, केरल, नेपाल, दार्जीलिंग, बिहार, उत्तराखण्ड आदि में कहीं अतिवर्षा से हानि हो। **25 अगस्त के बाद विशेष वर्षा/बाढ़ के योग हैं।**

नोट– शुक्र सिंह राशि में आकर वर्षा की संभावना को कुछ प्रान्तों में बहुत कम कर देता है–**"सिंह शुक्र जब होय भवानी बादल बरसैं बुंद समान।"**

सितम्बर– 2, 3, 6, 9, 10, 12, 13, 16, 17, 18, 19, 21, 22, 24, 26, 28 सितंबर को उ.भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो। हिमाचल प्रदेश एवम् काश्मीर में कहीं हिमपात के समाचार मिलें।

अक्तूबर– 1, 3, 4, 5, 6, 13, 16, 17, 20, 21, 27 एवं 29 अक्तूबर को उत्तर–दक्षिणी भारत में कहीं बादलचाल व वायुवेग के साथ खण्डवृष्टि हो। हिमाचल प्रदेश एवम् काश्मीर के उन्नत श्रृंगों पर हिमपात हो।

नवम्बर– 1, 2, 6, 7, 8, 14 से 24, 28 एवं 29 नवंबर को कहीं बादल–वर्षा हो, शीत का प्रकोप बढ़ने लगेगा। वायुवेग के साथ कुछ प्रान्तों में वर्षा; उत्तराखण्ड, हिमाचल एवम् काश्मीर में अच्छी बर्फबारी हो।

दिसम्बर – 2, 4, 8, 9, 11, 12, 15, 19, 20, 22, 26, 28, 29 दिसंबर को उ.भारत, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान एवम् अन्यत्र भी शीतलहर चलेगी। धुन्ध से यातायात बाधित होगा। पर्वतीय उन्नतश्रृंग हिमाच्छादित रहें।

नोट– 11 दिसम्बर के बाद शनि की मंगल पर दृष्टि एवं सूर्य–शनि का एकसाथ चलना 15 दिसंबर तक जल–वायुविचार से कुछ परेशानीकारक है।

जनवरी (सन् 2017 ई.)– 3 से 6, 8, 10, 14, 15, 16 एवम् 20 से 27 और 31 जनवरी को उ.भारत भयंकर शीतलहर की चपेट में आएगा। कुछ प्रान्तों में कहीं बादलचाल, बूंदाबांदी व खण्डवृष्टि भी हो। भयंकर शीत एव धुन्ध से अनेकत्र यातायात बाधित होगा।

नोट– 14 से 20 एवम् 26, 27 जनवरी को शनि आदि ग्रहों की स्थिति कहीं जलवायु–विचार से जनता को रोगाक्रान्त करेगी।

फरवरी– 3 से 6, 10, 11, 12, 18, 21, 22, 26 एवं 28 फरवरी को लंका के पूवी–छोर, शिलांग व अन्य प्रान्तों में बादलचाल व बून्दाबांदी के योग हैं। उत्तरी भारत में हवा का जोर रहेगा। ऋतु–परिवर्तन अनुभव होने लगेगा।

मार्च– 4, 5, 10, 12, 14, 15, 16, 18, 21 से 25 एवम् 27 मार्च के लगभग मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम में कहीं बादलचाल व बूंदाबांदी के योग हैं। उ.भारत में आसमान साफ रहे। हवा का जोर एवम् गर्मी अनुभव होने लगेगी।

नोट– भारतीय मौसम–विभाग को अन्य देशों द्वारा की गई मॉनसून की मात्रा की भविष्यवाणी पर भी विचार करना अनिवार्य है। मौसम–विभाग के बारे में व्यक्त किए गए श्री अभिषेक कुमार सिंह जी के विचारों से हमें सहमत होना ही होगा। उन्होंने लिखा है कि– देश में मॉनसून की मात्रा को लेंकर दुनिया के कई देशों व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों ने भविष्यवाणी की थी। भारतीय मौसम–विभाग इसे सिरे से खारिज करता रहा, लेकिन मॉनसून की समाप्ति पर वास्तविकता ने मौसम–विभाग को कई सबक दिए हैं।

राहु–मंगल एवम् शनि–मंगल का जलवायु पर विशेष प्रभाव होता है, जोकि इसवर्ष अधिक प्रभावी है–

" भौमे वक्रे त्वनावृष्टिः शनौ वक्रे महाभयम्।
द्विवक्रे तु महाकष्टं राहुः स्यादग्निकारकः ।।"

व्यापार-विमर्श (संवत् 2073 वि.)

(संवत् 2073 वि. की ग्रहस्थिति के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं एवं शेयर बाज़ारों में आने वाली तेज़ी एवम् मन्दी का मासिक विवरण)

लेखक :- इन्दुशेखर शर्मा, संयमी शर्मा,

संसार के सभी पदार्थों पर ग्रहों का नियंत्रण है, सभी पदार्थों का समावेश बारह राशियों में है। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशिभोग करता है तो उस राशि में समाहित सभी व्यापारिक वस्तुएं ग्रह की प्रकृति के अनुसार प्रभावित होती रहती हैं। प्रभावित वस्तुओं में परिवर्तन आते हैं और इन्हीं परिवर्तनों से बाज़ारों में घटाबढ़ी होती है, जिसे हम ' तेज़ी–मंदी ' कहते हैं। 'तेज़ी–मन्दी'– इन दो शब्दों से व्यापारी अपने भाग्य को आजमाता है। परन्तु मनुष्य का भाग्य कर्मफल किंवा ग्रहचाल के मुताबिक आर्थिक स्थिति को कभी बिगाड़ता है तो कभी सुधारता है। रथ के पहिए में लगे आरों की भांति मनुष्य को समाज में कभी ऊपर उठाता है तो कभी नीचे गिराता है – "चक्रारपंक्तिरिव गच्छति भाग्यपंक्तिः"। कहने का तात्पर्य यह है कि, जो व्यक्ति आज व्यापार में घाटा खा चुका है, वह सदा के लिए डूबा ही रहेगा–यह धारणा भ्रामक है। व्यापार में बहुत ही आश्चर्यजनक उतार–चढ़ाव आते हैं, न जाने आपको कब शीघ्र उत्तम धनलाभ हो जाए। जो व्यक्ति धनाढ्य होकर सट्टे का काम विचारपूर्वक नहीं करते, वे शीघ्र ही डूब सकते हैं । इस विज्ञान के युग में समस्त संसार का गठबन्धन हो चुका है। किसी भी राष्ट्र की क्रान्ति या राजनैतिक गतिविधि का प्रभाव तत्काल दूसरे राष्ट्र किंवा विश्वजनीन व्यापारक्षेत्र पर अमूमन देखा गया है। आजकल व्यापार के दो भाग महत्त्वपूर्ण हैं; पहला वायदा (सट्टा) एवम् दूसरा हाज़र। अमेरिकी या विश्व के किसी भी बाज़ार या घटनाओं से विशेषतः सोना, चान्दी, पैट्रोलियम आदि सभी प्रकार के बाज़ारों में जब उठापटक होती है तो लाखों रुपयों का नफा–नुक्सान मिनटों में होता है। इसप्रकार प्रत्येक प्रमुख देश के राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक ग्रहगोचर को अच्छी तरह आंक कर ही हम इस व्यापार–विमर्श में कुछ व्यापारिक तेज़ी–मन्दी लिखने का प्रयास कर रहे हैं।

खुलकर व्यापार करने से पहिले अप्रत्याशित हानि से बचने के लिए अपनी व्यक्तिगत ग्रहचाल को ध्यान में रखना सतर्कता है । हानिप्रद ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। वर्ष में जो ग्रह लाभप्रद हैं, उन ग्रहों के अधिकारक्षेत्र में आने वाली वस्तुओं का ही व्यापार करें, तभी आप लाभ ले सकेंगे। हाज़र एवम् वायदा व्यापारी जो अपने व्यापारिक जीवन से निराश हो चुके हैं, उनके लिए हम यहां 'व्यापार–विमर्श' में ग्रहों का पूर्ण अध्ययन करके तेज़ी–मन्दी का मशवरा देते हैं। व्यापारियो ! निराश न हों। हमसे प्रत्यक्ष मिलें, आपकी उलझी हुई व्यापारिक समस्या का समाधान हम करेंगे ।

संवत् 2073 वि. में गुरु, शनि, राहु, मंगल, यूरेनस, नेप्च्यून और प्लूटो आदि के चार एवम् युति/प्रतियुति के आधार पर यह स्पष्ट घोषणा की जाती है कि, इस साल जगत् में विशेष लम्बे तेज़ी एवम् मन्दे के रिएक्शन्ज़ आएंगे। इस वर्ष गुड़, खाण्ड, घी, तेल, तिलहन एवम् सोना, चान्दी, तांबा में विशेष लाभ के चांस हैं, टेलीफोन से सम्पर्क करें, फीस भेजें व अभीष्ट रिपोर्ट प्राप्त करें। विदेशी व्यापारी पत्र–द्वारा या टेलीफोन–द्वारा सम्पर्क स्थापित करें, उत्तर मिलेगा।

संवत् 2073 वि. में व्यापारिक बन्धु दालवाना, गुड़, ग्वार व सोना, चान्दी आदि धातु; चावल, गेहूं, जौ, चना आदि अनाज; तेल, तिलहन, घी के व्यापार से धनाढ्य बन सकेंगे– यह हम इसवर्ष के योगायोगों के आधार पर घोषणा कर देना चाहते हैं। अतः *प्रत्यक्ष मिलकर या वर्षभर की फीस भेजकर टेलीफोन के जरिये समय–समय पर ताजा परामर्श प्राप्त करके उत्तम लाभ प्राप्त करें।* 'व्यापार–विमर्श' लेख में जिस जगह हम ताजा मशवरा हासिल करने की बात लिखते हैं, वहां व्यापारी अगर प्रत्यक्ष मिलकर मशवरा लें तो अच्छा रहेगा । 'व्यापार–विमर्श 'लेख में हम ग्रहचाल के मुताबिक सभी व्यापारियों को प्रतिवर्ष बाज़ारों के उतार–चढ़ाव से सावधान करते रहे हैं।

संवत् 2072 वि. में वायदा व्यापारी एवम् हाजर का काम करने वाले व्यापारी रुई, दालवाना, सरसों, ग्वार, सोना, चान्दी एवम् तांबा में भयंकर तेज़ी से और आश्चर्यजनक तेज़ी एवं मन्दे के Reactions से भरपूर लाभ हमारे ताजा मशवरे से उठा चुके हैं। *व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2016 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी की रिपोर्ट या वायदा/हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़; चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों*

किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस Rs.5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर Advance Report प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस Rs. 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

Note- व्यापारियों से निवेदन है कि, वे अपनी ग्रहचाल के अनुकूल होने पर ही व्यापार करें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि के लिए सम्पादक/लेखक जिम्मेदार न होंगे।

इसवर्ष रुई के व्यापार में भारी तेजी बनेगी संपर्क में रहें।

संवत् 2073 वि. में ग्रहस्थिति के अनुसार तेज़ी–मन्दी का आकलन

संवत् 2073 वि. में तेज़ी–मन्दी का विस्तृत विवरण देने से पहिले हम इस संवत् के नाम, वर्ष के राजा, मन्त्री, सस्येश, धान्येश, मेघेश आदि ग्रहपरिषद् का व्यापार पर क्या प्रभाव पड़ेगा ? – इसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर देना प्रासंगिक समझते हैं, जोकि निम्नांकित है;–

संवत् 2073 वि. ' सौम्य ' नामक संवत्सर है। इसका फल शास्त्रों में इसप्रकार लिखा है–

" धान्याकुला धरा लोकाः स्वस्था स्युर्निरूपद्रवा।
सौम्या–वृष्टिर्वरारोहे सौम्ये सैन्धवविल्पवः।।"

किञ्च– 'भविष्यफल भास्कर' के अनुसार 'सौम्य संवत्सर' का फल इस प्रकार है –

"सौम्याब्दे सुखिनो लोका बहुसस्यार्घ–वृष्टिभिः।
विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वर–तत्पराः ।।"

अर्थात्– धनधान्य–समृद्धि रहे, वर्षा पर्याप्त, किंवा अनेकत्र जल ही जल हो, शासन-तन्त्र का उपद्रवों पर कन्ट्रोल रहे, पाक (सिन्ध) में अशान्ति रहे। शासक देशहितार्थ बिना विरोध के कार्य करें। विप्र एवं अन्य सभी वर्ग शुभकार्यों में व्यस्त रहें।

इस संवत् (2073 वि.) का राजा 'शुक्र' एवं मन्त्री 'बुध' है। ये दोनों परस्पर मित्र-भाव रखते हैं। अतः इसवर्ष राजनैतिक गतिविधि देश के व्यापार को संवत् मध्य में नई दिशा देगी। राजनैतिक परिस्थिति को ध्यान में रखकर व्यापार करें। शुक्र–बुध दोनों ग्रह सफेद रंग के व्यापार से लाभ देंगे। अतःइसवर्ष कपास, रुई, चावल, जीरी, चीनी आदि के व्यापारी सम्पर्क में रहें तो करोड़ों का लाभ ले सकेंगे। तेल, तिलहन, सोना, चान्दी एवं दालवाना में इसवर्ष भयंकर तेजी–मन्दी के उछाले आएंगे। लाभप्रद वर्ष है, सम्पर्क में रहें।

वर्तमान संवत् में धान्येश गुरु होने से अनाजों की उपज पर्याप्त हो, लेकिन गुड़, खाण्ड, शक्कर, दालवाना, चना आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे। लेकिन कुछ भूभाग अकालग्रस्त रहे।

इसवर्ष मेघेश मंगल होने से देश की सामाजिक अव्यवस्था पर अंकुश लगेगा। कहीं बाढ़ या सूखाग्रस्त क्षेत्र रहने किंवा प्राकृतिक प्रकोप से शासन चिन्तित रहें, फिर भी सुशासन से धन–धान्यसमृद्धि के साथ देश प्रगतिपथ पर अग्रेसर रहेगा।

इसवर्ष चतुर्मेघों में 'आवर्तक' एवं नवमेघों में 'नील' नामक मेघ है।

परिणामस्वरूप, अनेकत्र असामयिक किंवा कहीं तीव्र वर्षा, कहीं अवर्षण से खड़ी फसलों को हानि हो। रुई, कपास, ऊन पर्याप्त उपलब्ध हों। बाजरा, ज्वार, अरहर, तिलहन, कपास की उपज औसत से कम होगी।

शरत्सस्यजातक–ग्रहस्थिति के अनुसार इसवर्ष तेल, तिलहन, चना, मोटे अनाज कुछ समय तेज रहेंगे, जिससे स्टॉकिस्ट लाभ लेंगे।

ग्रीष्मसस्यजातक–ग्रहस्थिति से संकेत मिलता है कि– इसवर्ष गेहूं, जौ, चना आदि की फसल अच्छी होगी। कुछ फसलें रोगाक्रान्त रहेंगी।

व्यापारी ध्यान दें– संवत् 2073 वि. में *ग्रहों के वक्र/मार्ग, युति/प्रतियुति के अनुसार इस वर्ष चावल, गेहूं, चना, ग्वार आदि अनाज, गुड़, दालवाना, रुई, कपास, नरमा, मैथा, तेल एवम् सरसों आदि तिलहन, लाल–कालीमिर्च, जीरा, लौंग, सोना–चान्दी में तेज़ी– मन्दी के भयंकर रिएक्शन्ज़ आएंगे*। **दूर–दराज से आने वाले व्यापारी टेलीफोन से समय निश्चित करके आएं या** सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़ में से किसी भी

जिन्स/धातु की लिखित रिपोर्ट प्राप्त करने के लिए एक मास की फीस Rs. 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रति जिन्स/प्रतिधातु के हिसाब से भेजकर आगामी मास की दैनिक तेज़ी–मन्दी की रिपोर्ट प्राप्त करें।

सज्जनो ! संवत् 2073 वि. के प्रारम्भ से पहले, संवत् 2072 वि. के अन्तिम चरण की ग्रहस्थिति अनुसार तेल, तिलहन, तांबा, घी, दालवाना एवं शेयरों में तेज़ी के व्यापारी लाभ ले सकेंगे।

[**नोट**– संवत् के प्रारम्भ से पहले ही 14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आकर बृहस्पति की दृष्टि से दूर हो जाता है। गुरु वक्री है। इस समय शनि–मंगल का एक राशि में होना अर्थात् संवत् 2073 वि. के प्रारम्भ में ही शनि, गुरु एवं राहु– ये वक्री हैं। अतः संवत् के प्रारम्भ में राजनैतिक गतिविधि के कारण कुछ बाजार जोरदार मन्दे की तरफ बढ़ेंगे। इस समय हमारे साथ मशवरा कर लें तो लाभ में रहेंगे।]

ध्यान दें– संवत् 2073 वि. के प्रारम्भ से पहले ही 20 फरवरी (सन् 2016 ई.) से शनि, मंगल वृश्चिकराशि में चलेंगे, जोकि दालवाना, चना आदि अनाजों एवम् सोने, चान्दी में अच्छी तेजी करेंगे। सावधान रहें, ताजा मशवरा प्राप्त करें।

अप्रैल (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ में ही 1 अप्रैल को राहु पू.फा. नक्षत्र में आकर बृहस्पति के साथ एकराशि एवम् एकनक्षत्र सम्बन्ध भी बना लेता है। अनाज, अलसी, तिल, तेल, सरसों, मूंग एवम् उड़द में तेजी का रुख बनेगा।

2 अप्रैल को बुध अश्विनी नक्षत्र एवम् मेष राशि में आकर बृहस्पति की दृष्टि में आ जाएगा। इस समय बृहस्पति वक्री है एवम् स्वभावतः वक्री राहु के साथ है। अतः गेहूं, ज्वार, बाजरा, जौ, चना, अलसी, मूंग, मोठ, तेज रहें। लेकिन मूंगा, मोती, सोना, चान्दी आदि धातु मन्दी रहें।

3 अप्रैल को उ.भा. नक्षत्र के शुक्र एवम् 5 अप्रैल को बुध के पश्चिम में उदित होने पर चावल, रुई, कपास, शेयर, घी, मोती, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड आदि सफेद वस्तुएं मन्दी हों।

इस प्रकार 9 अप्रैल तक तेल, तिलहन, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊन में सामान्यतः साधारण मन्दी एवं तेजी के झटके आएंगे, लेकिन मन्दी प्रधान रहेगी।

10 अप्रैल को बुध भरणी नक्षत्र में आकर टैम्परेरी तौर पर चावल, गेहूं, चना आदि अनाजों में 5/7 दिन में तेजी का झटका दे सकता है। 13 अप्रैल को सूर्य अश्विनी नक्षत्र एवम् मेष राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। नोट करें– बुध एवम् आदित्य (सूर्य) एकराशि में होने से अलसी, एरण्ड, तिल, तेल, सोने, चान्दी लोहे, तांबे, लालचन्दन, नारियल, सुपारी, हींग, मेथी, लौंग, इलायची, बादाम, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चान्दी–सोने में तेजी करे।

14 अप्रैल को रेवती नक्षत्र का शुक्र रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात में मन्दा करेगा।

16 अप्रैल को वक्री गुरु पू.फा. में राहु के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध बनाएगा। अतः गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा गेहूं आदि अनाजों में जोरदार तेजी या मन्दी का झटका आएगा। हमारे विचार से तेजी की जगह मन्दी संभव है, फिर भी सावधानी से काम करें।

17 अप्रैल को मंगल वक्रगति से चलने लगेगा। **ध्यान दें– यहां मंगल के साथ शनि भी एक ही राशि वृश्चिक में वक्री चल रहा है। यह योग भी उत्तम–मध्यमरूप से 29 जून तक प्रभावी रहेगा।** यह योग रुई, सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, सभी प्रकार के अनाज, दलहन एवम् तेल–तिलहन में भयंकर तेजी किंवा मन्दी की लम्बी लाइन बना सकता है, सावधानी से काम करें। **इस समय हमसे ताजा मशवरा प्राप्त करें तो उत्तम रहेगा। इस प्रकार 17 से 24 अप्रैल तक वायदा व्यापारी तेजी खेलकर बाजार के रुख को देखकर या स्टॉकिस्ट मन्दी में स्टॉक करके तेजी में निकाल कर लाभ लेते रहें।**

25 अप्रैल को शुक्र अश्विनी नक्षत्र एवम् मेष राशि में आकर सूर्य–बुध के साथ मेल करेगा। अतः यह योग भी बाजार को जोरदार तेजी की तरफ ले जाएगा–

" एकराशिं गताह्यते सौम्य–शुक्र–दिनाधिपाः।
सर्वधान्य–महर्घत्वं मेघाः स्वल्पजलप्रदाः।।"

मौसम– जलवायुविचार से बाजार उठेगा, अतः जौ, चना, गेहूं आदि अनाज, दालें, गुड़, शक्कर, बारदाना आदि में अच्छी तेजी बनने का योग है।

नोट करें– शनि–मंगल का सम्बन्ध भी दालवाना, तेल, तिलहन में जोरदार तेजी से लाभ का योग बनाता है। यदि दालवाना में 25 अप्रैल के लगभग मन्दी आए तो स्टॉक करें, आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

27 अप्रैल को सूर्य भरणी में आएगा एवम् शुक्र इसी दिन अस्त हो रहा है। सोने, चान्दी, तांबे, पीतल, जस्ते, हींग, पारे, केसर, सोनामक्खी में जोरदार उछाला आए। रुई, अलसी में मन्दी; गेहूं, जौ, चना, चावल, मोठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी तेज रहें। लेकिन 28 अप्रैल को बुध वक्री होकर अनाजों का रुख बदल सकता है। परन्तु बाजारों की यह गिरावट टिकेगी नहीं।

30 अप्रैल को बुध अस्त होकर सोने, चान्दी एवम् रुई में घटाबढ़ी करेगा, अनाज मन्दे रहें।

मई (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ में 1 से 5 मई तक बाजार अस्थिर रहेंगे।

6 मई को शुक्र भरणी नक्षत्र में आएगा, लेकिन सूर्य–बुध के साथ शुक्र का मेल तेजी ही करता है। सोना, चान्दी, अफीम, तांबा, लाल रंग की चीजों, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल में कुछ मन्दे का माहौल रहे। चना, मूंग, मोठ, ज्वार, अरहर में घटाबढ़ी; रुई तेज रहे। लेकिन हमारे अनुभव के अनुसार जब सूर्य–बुध का मेल शुक्र के साथ हो तो इन सभी चीजों में मन्दी न आकर तेजी ही बनती है। इसलिए सावधानी से काम करें।

एक बात और नोट करें कि– 8 मई तक मंगल, बुध, गुरु, शनि– ये सभी वक्री हैं, अतः राजनैतिक उलझनें रहें एवं प्राकृतिक आपदा आदि का प्रभाव बाजारों को प्रभावित करेगा।

7 मई को वक्री बुध भरणी नक्षत्र में आएगा। चावल, गेहूं, चना, जौ, ज्वार एवम् दालवाना में तेजी बनेगी। 8 मई को चन्द्रदर्शन होने से सोना, चान्दी, मूंग, मोठ, तिल तेज हो।

नोट– पू.फा. नक्षत्र का शुक्र एवम् राहु 9 मई तक बाजारों में उत्तरोत्तर तेजी ही करेंगे– ऐसा विचार है, अतः सोने, चान्दी, अनाज के व्यापारी इस समय लाभ लें।

9 मई को शनि से दृष्ट सिंहस्थ गुरु के मार्गी होने पर रुई, चान्दी, चावल, घी, सरसों, गुड़ के बाज़ारों में लगभग 3 से 9 दिन तक मन्दा रहे।

11 मई को सूर्य कृत्तिका में आकर घी, रुई, सोने, चान्दी, अलसी, एरण्ड, गेहूं, जौ, चने, मूंग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी करेगा।

13 मई तक बाजार ऊपर–नीचे चलेंगे। 14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर शनि, मंगल के साथ समसप्तक–योग बनाएगा। चान्दी,, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपार, नारियल, तिल, तेल, सोया, सरसों एवं अन्य तिलहन, घी, आदि तेज होंगे। इन दिनों जौ, चना, गेहूं, मटर, अरहर, मूंग, चावल एवम् उड़द आदि में मन्दे की उम्मीद होने पर भी तेजी संभव है। बाजार का रुख देखकर काम करें।

16 मई को कृत्तिका नक्षत्र में शुक्र दाखिल होगा। यह योग जौ, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रुई, सूत, चान्दी, सोना, हीरे, मणि, मोती आदि जवाहरात मन्दे कर सकता है।

19 मई को बुध उदित होगा एवम् शुक्र वृष राशि में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र एवम् एकराशि–सम्बन्ध बना लेगा, साथ ही वक्री शनि–मंगल के साथ समसप्तक–योग बनाएगा। यह योग यद्यपि रुई, कपास में अच्छी मन्दी का संकेत देता है; यदि कुछ मन्दे का झटका आए तो तुरन्त माल पकड़ें, बड़ी तेजी से जल्दी लाभ मिलेगा। लेकिन हमारे अनुभव के अनुसार इस योग में सोना, चान्दी, रुई, कपास, दालें, चना, बाजरा, जौ आदि तथा तेल, तिलहन में अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा। फिर भी ताजा मशवरा प्राप्त कर लें।

(यह तेजी 20 मई तक चल सकती है।)

21 मई शनिवार को वक्री शनि ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में दाखिल होगा। शनि–बुध–राहु ये वक्रगति में ही हैं। इस समय तिलहन–बाजारों में जोरदार तेजी बनेगी, शनि का सीधा प्रभाव कच्ची फसलों पर होता है। रुई, मूंगफली, अलसी, सरसों, सोया, कपास आदि की फसलों पर जलवायु की मार पड़ने से बाजार में तेजी की अफवाहें बाज़ार को तेज कर सकती हैं। क्योंकि शनि–मंगल–सूर्य शुक्र से भी प्रभावित है, अतः सोच–समझकर काम करें।

22 मई को बुध मार्गी होगा। रुई, चान्दी में घटाबढ़ी के झटके आकर तेजी बने। अनाज तेज एवम् तेल, तिलहन, गुड़, कपूर, चन्दन आदि में मन्दी बने। 24 मई मंगलवार को रोहिणी नक्षत्र का सूर्य तिल, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, सण, सुपारी, मिर्च में तेजी करेगा। चान्दी कुछ मन्दी रहे।

27 मई को रोहिणी नक्षत्र में शुक्र भी सूर्य के साथ आ जाएगा एवम् शनि, मंगल की दृष्टि में आकर सोने, चान्दी, आदि धातुओं; अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, दाख, छुहारा, नारियल एवम् ऊन में जोरदार मन्दी या तेजी का झटका देगा। लेकिन बहुत सावधानी से काम करें, क्योंकि क्रूरग्रहों की दृष्टि इन पर है। शेयर बाजार जोरदार ऊपर–नीचे होंगे। हमें शेयरों में मन्दा ही मालूम देता है। 31 मई तक बाजार अस्थिर रहेंगे।

जून (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ में ही 2/3 जून को गुरु एवम् राहु– ये दोनों सिंह राशि में पू.फा. नक्षत्र के तीसरे चरण में आ जाते हैं। **यहां बाजार के रुख को देखकर काम करें, क्योंकि ये दोनों बाजारों में अचानक मन्दा कर सकते हैं।** गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं आदि अनाजों में मन्दी एवम् रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

4 जून को वक्री मंगल विशाखा एवम् बुध कृत्तिका नक्षत्र में दाखिल होगा। रुई, कपास, गेहूं, चना में तेजी का झटका आते ही लाभ लें। चान्दी, अफीम में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बने। कहीं वर्षा–बाढ़ एवम् कहीं सूखाग्रस्त रहने से बाजार प्रभावित होंगे।

7 जून को सूर्य–शुक्र दोनों मृगशिरा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। ये दोनों ग्रह अब भी शनि–मंगल के साथ पूर्ण दृष्टिसम्बन्ध बना रहे हैं। अतः रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, चन्दन, कस्तूरी, सोना, चान्दी, उड़द, मूंग, मोठ, चना, बाजरा, अलसी, गुड़, खाण्ड एवम् शक्कर में तेजी रहे।

8 जून को बुध वृष–राशि में आकर सूर्य–शुक्र के साथ मेल करेगा एवम् शनि–मंगल की दृष्टि में आ जाएगा। अतः गेहूं, जौ, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, अफीम, तिल, तेल आदि में अच्छी तेजी के झटके आएंगे। सोने, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

13 जून को शुक्र एवम् 14 जून को सूर्य भी मिथुनराशि में आकर शनि–मंगल की दृष्टि से अलग हो जाते हैं। शुक्र अस्त चल रहा है। शुक्र सूर्य के साथ आकर तेजीकारक हो जाता है। चान्दी, सोना, तांबा के बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। वृष राशि का मालिक भी तो शुक्र ही है। अतः धातुओं में अच्छी उठापटक रहेगी। हमारे विचार से रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में काफी मन्दी आकर तेजी बनेगी। अलसी, घी में जोरदार घटाबढ़ी और गेहूं, जौ, चना, चावल तेज रहें।

विशेष नोट– ध्यान दें अकेला शुक्र वृषराशि में जोरदार मन्दा करता है, लेकिन यहां 14 जून को सूर्य के साथ मिलकर यह जोरदार तेजी बनाएगा। सावधान रहें।

14 जून को बारदाना, रेशम, सूत, कपास, रुई, लोहा, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चीनी, घी, मूंग, उड़द, गेहूं, चना एवम् चावल आदि में तेजी बनेगी। सोने, चान्दी में भी तेजी का रुख रहे। यह तेजी 17 जून तक चल सकती है। 15 जून को बुध रोहिणी में आकर तेल, तिलहन, चावल, गुड, खाण्ड में तेजी करेगा।

17 जून को मंगल वक्रगति से चलता हुआ फिर से तुला राशि में आ जाता है और शनि से अलग हो जाता है। नोट करें कि– शनि–मंगल संवत् आरम्भ से 17 जून तक एकसाथ चल रहे हैं। मंगल जलवायु (मौसम) को प्रभावित करता है। तेल, तिलहन, जूट, चान्दी, सोना एवम् शेयर बाजारों पर प्रभाव दिखाई देगा।

(इस समय शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक चलेगी। सावधानी से काम करें।)

17 जून को वक्री मंगल के तुला में आने पर रुई, कपास, सूत, सण, पाट, बारदाना, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूं एवम् उड़द, मूंग आदि दालवाना में जोरदार तेजी सम्भव है।

18 जून को शुक्र के आर्दा नक्षत्र में आने पर अनाजों में अचानक मन्दे का माहौल बनता है।

21 जून को सूर्य के आर्द्रा–नक्षत्र में आने पर मौसम में अन्तर आएगा। मंगल भी वर्षा की कमी को पूरा करने में सहायक होगा। फिर भी आर्द्रा नक्षत्र का सूर्य रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, गेहूं, चावल, चना, जौ, चान्दी में तेजी रहे। सोने में घटाबढ़ी चले।

23 जून को मृगशिरा नक्षत्र का बुध चान्दी, गेहूं, तिल, सरसों, उड़द में मन्दी करे। रुई में कुछ तेजी संभव है।

26 जून को बुध के अस्त होने पर अनाज, घी मन्दे एवम् रुई और सोने में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

27 जून को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य–शुक्र के साथ मेल करेगा। यह बाजारों में झटके की तेजी करेगा– सावधानी से काम करें। दालवाना, घी, गुड, खाण्ड एवम् अनाजों में तेजी बने। रुई, सोने, चान्दी में घटाबढ़ी चले।

(23 जून से लगभग 28 जून तक शेयर बाजार व वायदा बाजार मन्दे रह सकते हैं।)

29 जून के लगभग मंगल के मार्गी होने एवं शुक्र के पुनर्वसु नक्षत्र में आने पर रुई, चान्दी, कपास, सूत में झटके के साथ मन्दी आएगी। चान्दी में उछाला संभव है–सावधान रहें।

30 जून को बुध आर्द्रा नक्षत्र में आ जाता है। सूर्य–बुध का आर्द्रा नक्षत्र में चलना कहीं जोरदार वर्षा का इशारा करता है। गेहूं, उड़द, चना, जौ, तिल, मूंग, मोठ मन्दे रहेंगे– ऐसी ग्रहस्थिति है।

जुलाई (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ से लगभग 4 जुलाई तक हाजर, वायदा एवम् शेयर बाजार मन्दे रहें।4 जुलाई को सिंहस्थ गुरु पू.फा. नक्षत्र में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र–सम्बन्ध बना लेता है। इन पर शनि की विशेष नजर भी है। गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं एवम् रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी का झटका आए।

5/6 जुलाई को सूर्य–बुध पुनर्वसु नक्षत्र में आ जाते हैं। गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों,लाख, देवदारु, तिल, ज्वार, बाजरा, मोठ, उड़द, चावल, नमक, हरड़, सुपारी, नारियल, माजू, केसर, मंजीठ, नील, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थ एवम् करयाणा में तेजी बने। नोट– 6 जुलाई के लगभग चान्दी, रुई, कपास में झटके की मन्दी आ सकती है– सावधान रहें।

7 जुलाई को शुक्र कर्क राशि में आएगा। चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर में मन्दी बने। रुई में पहले अच्छी मन्दी, बाद में तेजी हो।

8 जुलाई को वक्री शनि अनुराधा के चतुर्थ चरण में आएगा। इस समय कालीमिर्च, मसाले, केसर, चन्दन, कपूर आदि में तेजी बनेगी। विशेषतः कपास में तेजी आने के योग हैं।

10 जुलाई को शुक्र पुष्य में आएगा एवम् यहां शुक्र का पश्चिम में उदय होना कुछ चीजों में तेजी, कुछ में मन्दा बनाता है। रुई, सूत, सण, रेशम, ऊन, सोना, चान्दी, तिल, चावल में तेजी रहे। लाख, कपूर, चमड़ा, पारा, शिंगरफ, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दा रहे। क्योंकि 11 जुलाई को बुध कर्क राशि में आकर शुक्र के साथ मेल कर रहा है, अतः वायदा एवं शेयर बाजार में मन्दी/तेजी के उछाले आने के योग हैं।

इस समय रुई में झटके की मन्दी, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी; गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, तेल, मूंगफली, सरसों, सोना में पहले कुछ मन्दी, बाद में तेजी बनेगी, बाद में फिर मन्दी बने।

12 जुलाई को मंगल मार्गी गति से फिर से वक्री शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। गुड़, रुई एवम् सोना, चान्दी, तांबा, लोहा आदि धातुओं में जोरदार तेजी बनने का योग है। तेल, सभी तिलहन, दालवाना, चना आदि में भी तेजी बनेगी। इस समय जलवायु की अधिकता या अत्यल्पता के कारण बाजार तेज रह सकते हैं।

12 जुलाई को ही बुध पुष्य नक्षत्र में आकर सोने, चान्दी एवम् रुई में मन्दी करेगा। ध्यान रहे– शनि–मंगल का एकराशि–सम्बन्ध इस दिन प्रबल है, अतः मन्दा ठहरेगा नहीं, तुरन्त तेजी खेल लाभ लें ।

16 जुलाई शनिवार को सूर्य कर्कराशि में आकर शुक्र एवं बुध के साथ एकराशि में मेल करेगा। यह योग बाजारों में दो–तरफी चाल बनाएगा। क्योंकि बुध–शुक्र पुष्य नक्षत्र में मन्दीकारक हैं, लेकिन सूर्य के साथ मिलकर ये तेजीकारक हो जाते हैं। अतः रुई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, चान्दी, सोना आदि तेज रहेंगे। गेहूं, चना, जौ, मटर, अरहर, उड़द, मूंग, चावल में मन्दी संभव है, फिर भी बाजार का रुख देखकर काम करें।

(19 जुलाई तक शेयर बाजार तेज रहें।)

19 जुलाई को सूर्य पुष्य में व बुध आश्लेषा में आएगा एवं इसी दिन बुध पश्चिम में उदित भी हो रहा है। 14 दिन में तिल, तेल, सरसों, मघ, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, लौंग, हींग, हल्दी, मोम, लाख, सण, ऊनी वस्त्र, सिक्का, सोना, चान्दी तेज रहेंगे। रुई, शेयरों में 15 दिन में मन्दी संभव है।

21 जुलाई को आश्लेषा नक्षत्र का शुक्र रुई, अरहर एवं चावल में मन्दी कर सकता है।

24 जुलाई को उ.फा. के प्रथम चरण में गुरु के आने पर गुड़, खाण्ड एवम् सोना, चान्दी आदि धातु और अनाज मन्दे रहें। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने। इस समय चान्दी, मोती में खास मन्दी संभव है।

(20 से 25 जुलाई तक शेयर एवम् वायदा बाजार तेज रहें।)

26 जुलाई को मंगल अनुराधा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध भी बनाएगा। रुई, लालमिर्च, तेल, लाल–चन्दन, सोना, चान्दी, तांबा आदि में तेजी से लाभ मिलेगा। दालें एवं चना आदि भी तेज रहें।

27 जुलाई को बुध मघा नक्षत्र एवम् सिंह राशि में प्रवेश करेगा। चान्दी, सोना, रुई, सूत, ऊनी वस्त्र तेज हों। गुड़, खाण्ड, रसपदार्थ आदि मन्दे रहें।

31 जुलाई को शुक्र मघा नक्षत्र एवम् सिंह राशि में आकर बृहस्पति एवं राहु के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं, लालमिर्च, घी, गुड़, चीनी आदि मे तेजी से लाभ रहे। चान्दी में पहले मन्दी, फिर तेजी बनेगी।

अगस्त (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ में ही 2 अगस्त को सूर्य आश्लेषा नक्षत्र में आ जाता है। 2 अगस्त को ही मंगलवारी अमावस है। इस समय सिंह राशि में गुरु, शुक्र, राहु एवं बुध– ये ग्रह एकसाथ हैं। शनि–मंगल भी वृश्चिक में हैं। अतः कहीं भयंकर सूखे या भयंकर बाढ़ से फसलों को हानि पहुंचेगी। व्यापारी लोग तेजी में रहेंगे। बिनौला, गेहूं, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, सोया, मिर्च, मजीठ, रुई में तेजी चलेगी। सटोरिए तेजी में रहेंगे। सोना, चान्दी, तांबा में भी तेजी से लाभ मिलेगा। 3 अगस्त तक शेयर/वायदा बाजार तेज रहेंगे।

4 अगस्त को गुरुवारी चन्द्रदर्शन एवं बुध पू.फा. में आकर गुड़, खाण्ड, गेहूं आदि अनाजों, घी, सरसों, तेल, रुई, ऊनी–सूती कपड़ों में उठापटक के साथ तेजी करे।

5 अगस्त को राहु पू.फा. 2 और केतु शतभिषा 4 में आएंगे। राहु के साथ इस समय गुरु–शुक्र–बुध भी हैं। अतः दालवाना, तेल, तिलहन, सूत, कपास, गुड़, खाण्ड, चीनी, घी, रेशम तेज रहें।

(5 से 10 अगस्त तक शेयर बाजार जोरदार ऊपर–नीचे रहें, सावधानी से काम करें। वायदा बाजारों में आगे का समय बहुत ही विचारपूर्वक काम करने का है।)

11 अगस्त को गुरु कन्या राशि में एवं शुक्र पू.फा. में आ रहा है। क्योंकि कन्याराशि भारत की कारक राशि है, परन्तु पाश्चात्त्य विद्वान् भारत की प्रभाव राशि मकर मानते हैं। यहां अकेला गुरु ही कन्या राशि में आ रहा है, अतः देश की राजनैतिक–आर्थिक–सामाजिक घटनाएं परिवर्तित होने लगेंगी। कन्याराशि मजदूरवर्ग की राशि है, अतः सर्वजन–हितार्थ राजनैतिक भावना से व्यापार में सुधार होगा। अतः वायदा व्यापारी सावधानी से काम करें। चान्दी एवं रुई में जोरदार मन्दी बनेगी। ज्वार, चावल, गेहूं, मूंग, उड़द, चना, तिल, तेल, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें। ऊनी वस्त्र एवं धातुएं भी तेज हों।

कदाचित वर्षा–पानी अनुकूल रहने से अनाजों में मन्दे की लाईन भी बन सकती है, सावधान रहें। लिखा भी है –

" कन्याराशि-गते जीवे मेघवृष्टिस्तथोत्तमा।
सुभिक्षं सर्वधान्यानामारोग्यं लभते जनः।।"

कुछ विद्वानों के अनुसार कन्या में गुरु मार्गी हो तो अनाजों में तेजी करता है, इसलिए बाजार के रुख को देखकर काम करें। लेकिन हमारा विचार दालों एवं अनाजों में तेजी का है।

13 अगस्त को शनि मार्गी होगा। ध्यान दें– 25 मार्च से 13 अगस्त सन् 2016 ई तक शनि वक्री चल रहा है। शनि–मंगल का एकनक्षत्र एवं एकराशि–सम्बन्ध तो अब भी चल रहा है। अतः बाजारों में जोरदार तेजी–मन्दी की प्रक्रिया चलेगी। तेजी–मन्दी की चल रही लाईन बदल सकती है– सावधान रहें। 13 अगस्त से तेल, तिलहन, गुड़, घी, रुई, बिनौला, खल आदि में मन्दी का झटका आकर तेजी की तरफ बाजार बढ़ने लगेंगे।

(शेयर बाजारों में लगभग 11 से 13 अगस्त तक सरकार की नीति से जोरदार मन्दा आ सकता है।)

15 अगस्त को बुध उ.फा. में एवं 16 अगस्त को सूर्य मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आ जाता है। इस समय बुध–राहु–शुक्र भी सूर्य के साथ है। अतः उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर, ज्वार,बाजरा, सरसों, एरण्ड, तिल, तेल, रुई, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहें।

19 अगस्त को बुध कन्या राशि में आकर गुरु के साथ मेल करेगा। गुरु–बुध का योग बाजारों में मन्दी करेगा– ऐसा विचार है। रुई, चान्दी, सोने में अच्छी मन्दी का झटका आएगा। गुड़, शक्कर, खाण्ड, चीनी, घी एवं हल्दी में तेजी–मन्दी के झटके आएंगे।

22 अगस्त को शुक्र उ.फा. एवं 24 अगस्त को मंगल ज्येष्ठा में आकर बाजारों में अच्छी उठापटक करेगा। इस समय सोने–चान्दी में घटाबढ़ी चले। अनाजो में साधारण तेजी बने।

(नोट– 15 अगस्त से 24 अगस्त तक बाजारों में तेजी–मन्दी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दे में माल पकडें एवं तेजी में निकाल कर लाभ लेते रहें।)

25 अगस्त को शुक्र कन्या राशि में आकर गुरु एवं बुध के साथ मेल करेगा। अतः घी, तेल, सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, ऊनी/रेशमी वस्त्र तेज हों। चावलों में विशेष तेजी का झटका आए।

27 अगस्त को गुरु उ.फा. के तीसरे चरण में आकर बाजार में मन्दा करेगा। गुड, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि धातु व अनाज मन्दे हों। रुई में तेजी आकर मन्दी बने।

30 अगस्त को बुध वक्री होगा एवं सूर्य पू.फा. में आकर गेहूं, जौ, चना आदि में मन्दा; घी, गुड, खाण्ड, शक्कर, जीरा, सोने, तेल, तिलहन, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़े, रुई और सूत में तेजी करे। चान्दी में घटाबढ़ी रहे।।

सितम्बर (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ में 2 सितंबर को चन्द्रदर्शन होने एवं शुक्र के हस्त में आने पर रुई, चान्दी, चावल मन्दे हों। नोट– यदि यहां अनाज मन्दे हों तो संग्रह करें, आगे लाभ होगा।गुड़, खाण्ड, शक्कर में घटाबढ़ी रहे।

3 सितंबर को अगस्त्य के उदय होने पर कुछ बादल–वर्षा संभव है। 6 सितम्बर के लगभग बुध पश्चिम में अस्त होगा। इस समय रुई में 15/20 रुपये की शीघ्र ही मन्दी आएगी। चान्दी तेज रहे। पाट, हैसियन एवम् शेयर मन्दे रहेंगे।

9 सितंबर को वक्री एवं अस्त बुध सिंह राशि में सूर्य–राहु के साथ मेल करेगा। इसी दिन कन्यास्थ गुरु अस्त होगा। रुई, कपास, सूत, तिलहन, चान्दी, सोना, शेयर बाजार एवं ऊनीवस्त्रों में अच्छी मन्दी का झटका आकर जोरदार तेजी बनेगी। व्यापारी सावधानी से काम करें तो उत्तम लाभ होगा। हमारे विचार से तेजी अच्छी आनी चाहिए। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें।

12 सितम्बर को वक्री बुध पू.फा. में एवं गुरु उ.फा. के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेगा। यह योग अचानक मन्दा कर सकता है। गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी आदि धातु, गेहूं, चना आदि अनाज मन्दे हों। रुई में पहले मन्दी, पीछे तेजी रहे। नोट करें– यदि रुई में पहले तेजी आए तो तुरन्त मन्दी आएगी।

(6 से 12 सितंबर तक शेयर एवं वायदा बाजार ऊपर–नीचे चलेंगे, मन्दी प्रधान रहेगी।)

13 सितम्बर को सूर्य उ.फा. में एवं शुक्र चित्रा में दाखिल होगा। सूर्य बुध–राहु के साथ है एवं शुक्र गुरु के साथ है। लेकिन सूर्य–बुध–राहु पर शनि की विशेष दृष्टि भी है। अतः यह योग तेजी का झटका देगा। रुई, कपास, रेशम, सूत, सोने,. चान्दी, लोहे, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील में तेजी रहे।

16 सितम्बर को सूर्य कन्या राशि में प्रवेश करके गुरु–शुक्र के साथ मेल करेगा। वायदा बाजार कमजोर पड़ेगा, क्योंकि गुरु–सूर्य का एकत्र होना बाजार को मन्दे की तरफ ले जाता है। फिर भी गुरु अस्त होने से इस समय जोरदार मन्दा न करके बाजार को कुछ ही कमजोर करे। रुई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, घी तेज रहेंगे। सोने–चान्दी में मन्दे का रुख रहे।

17 सितम्बर को ज्येष्ठा के प्रथम चरण में शनि आता है। इस समय अनाज और चान्दी में तेजी रहे।

18 सितम्बर को मुंगल मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में और इसी दिन शुक्र भी तुला राशि में प्रवेश करेगा। यह योग बाजारों में अच्छी तेजी करेगा। चावल, चना, जौ, मूंग, चान्दी, सोना, रुई, ग्वार, सूत, सण, बिनौला, सरसों, घी तथा सभी अनाज तेजी की ओर रहेंगे। गुड़, खाण्ड में तेजी का माहौल रहे–

" धनुराशिगते भौमे मूल–द्रव्य–तृणानि च।
काष्ठं च घृत–कार्पासं महर्घं च चतुष्पदाम्।।"

घी, कपास, पशुचारा, इमारती लकड़ी आदि महंगी होंगी।

21 सितम्बर को बुध पूर्व में उदित होगा और 22 सितम्बर को यह मार्गी होगा। इस समय बुध–राहु पर शनि की दृष्टि भी है। अतः रुई में पहले मन्दी

आते माल पकड़ें; जल्दी तेजी से लाभ मिलेगा। 10/15 दिन में रुई में अच्छी तेजी बनेगी। गेहूं, चना, तिल, लालमिर्च, भी तेज रहे। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज हों, लेकिन अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली, गुड़, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजों में मन्दे का वातावरण रहे।

24 सितम्बर को शुक्र स्वाती नक्षत्र में आकर बाजारों में गुड़, खाण्ड, चावल, चीनी, घी में तेजी करे। **नोट–सितम्बर मास में सरकार की Export पोलिसी को ध्यान में रखें।** किसी अनाज– विशेष ग्वार एवं तिलहन आदि के निर्यात से अचानक तेजी बनने का योग है।

26 सितम्बर को सूर्य हस्त नक्षत्र में प्रवेश करेगा। गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, सूत, जूट, नमक, हरड़, हींग, धनिया, हल्दी, सण आदि तेज रहें।

28 सितम्बर को गुरु भी हस्त नक्षत्र में आ जाता है एवं सूर्य के साथ एकराशि, एकनक्षत्रसम्बन्ध बना लेता है। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, सोने, चान्दी, गेहूं, चना, हल्दी में कुछ मन्दा बने।

(इस प्रकार 26 से 30 सितम्बर तक वायदा एवं शेयर बाजारों में मन्दे एवं तेजी के उछाले बने रहेंगे। जिसमें मन्दी प्रधान रहेगी।)

अक्तूबर (सन् 2016 ई.)

1 अक्तूबर को सिंहस्थ बुध उ.फा. में आएगा। राहु के साथ बुध चल ही रहा है। इन पर शनि की दृष्टि भी है। सूर्य की राशि में बुध तेजीकारक हो जाता है। बुध वायदा बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी करता है। क्रूरग्रह–योग एवं दृष्टियोग से इसकी तेजी की पावर बढ़ जाती है। झूठी–सच्ची अफवाहों से बाजारों में उठापटक चलती है। 2 अक्तूबर, इतवार को चन्ददर्शन भी होगा। अतः उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर एवं तिल–तिलहन में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा। रुई और चान्दी, सोना में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने।

3 अक्तूबर को बुध अपनी राशि कन्या में आकर सूर्य एवं गुरु के साथ मेल करेगा। कन्या राशि रुई, कपास, तेलवाना आदि जिन्सों की पैदावार व फसलों को प्रभावित करती है। गुरु–सूर्य के साथ होने से यहां वायदा व्यापारी **बड़ी सावधानी से काम करें।** गेहूं, जौ, चना, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी। तेल व सारे तिलहनों में जोरदार मन्दी और तेजी के झटके आएंगे। रुई, चान्दी में मन्दी के बाद तेजी बनेगी।

5 अक्तूबर को शुक्र विशाखा नक्षत्र में आएगा। तुला राशि में अकेला शुक्र कभी–कभी जोरदार मन्दी करता है। अतः बाजार का रुख देखकर वायदा व्यापार करें। यदि बाजार मन्दे हों तो स्टॉकिस्ट स्टॉक करें। शुक्र बाजारों को नीचे ले जाता है। गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, पाट, बारदाना, तिलहन एवं चान्दी के बाजारों को विशेषतः प्रभावित करता है– ये मन्दे होंगे। कपड़ा, सूत आदि के Export का ऐलान सरकार कर सकती है। अनाज मन्दे हों तो स्टॉक करें।

7 अक्तूबर को राहु पू.फा.प्रथम एवं केतु शतभिषा के तीसरे चरण में आ रहा है। राहु पर शनि की दृष्टि चल ही रही है। **ध्यान रहे– 7 अक्तूबर को ही गुरु उदित हो रहा है।** गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, सरसों, तिल, गुड़, खाण्ड एवं रुई तेज हों।

8 अक्तूबर को मंगल पू.षा. नक्षत्र में आकर सोने, चान्दी, चावल, उड़द, घी, तिल, तेल, सरसों, मूंगफली एवं सोया में तेजी करेगा। गेहूं आदि अनाज कुछ मन्दे हों।

9 अक्तूबर को बुध हस्त में आएगा एवं यह इसी दिन पूर्व में अस्त होगा। क्योंकि बुध सूर्य–गुरु के साथ कन्या राशि में ही है, अतः मन्दे की उम्मीद होने पर भी बाजार तेज रहें। अनाज, घी, रुई आदि में मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी।

(1 से 9 अक्तूबर तक वायदा बाजार तेज रहें।)

10 अक्तूबर को सूर्य चित्रा नक्षत्र में आकर रुई, सूत, सोने, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चने, ग्वार, तिल, नारियल, सण, केसर, कपूर, लालमिर्च में तेजी करे।

(9 से 12 अक्तूबर तक हाजर, वायदा एवं शेयर बाजारों में जोरदार उठापटक चलेगी, विचार से काम करें।)

13 अक्तूबर को गुरु हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में आएगा एवं इसी दिन शुक्र वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। यह योग जोरदार

तेजी का है। सटोरिए उत्तम लाभ ले सकेंगे। रुई, शेयर बाजार, चान्दी, अफीम, गुड़, खाण्ड, गेहूं, जौ, चने, उड़द, मूंग, मोठ, बाजरे, अलसी, एवं सभी खाद्य तेल, तिलहनों में अच्छी तेजी से लाभ मिल सकेगा– " वृश्चिके तु गते शुक्रे सर्वधान्य–महर्घता।।"

16 अक्तूबर को शुक्र अनुराधा में आकर गुड़, खाण्ड, चावल, नमक आदि में कुछ मन्दा करे।

17 अक्तूबर को तुलाराशि का सूर्य नीचस्थ है। इसी दिन बुध चित्रा नक्षत्र में आ जाता है। सूर्य प्रत्येक वायदा एवं हाज़र के बाजारों को प्रभावित करता है। विशेषतः रुई, एरण्ड, अलसी, मूंगफली, तेल, घी, अनाज, सोना, चान्दी, तांबा, शेयर बाजार, हल्दी, तथा कालीमिर्च में तेजी का संचार रहेगा।

21 अक्तूबर को बुध भी तुलाराशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। यह तेजी की लाईन को और बल देगा।

23 अक्तूबर को सूर्य स्वाती नक्षत्र में आकर रुई, सूत, सण, रेशम, कपास, सोना, चान्दी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, एवम् गुग्गुल तेज करेगा।

(नोट– 13 से 24 अक्तूबर तक शेयर/हाजर बाजार एवम् सोने–चान्दी में तेजी रहे।)

25 अक्तूबर को स्वाती नक्षत्र का सूर्य बुध के साथ मेल करेगा। इस समय रुई, दालवाना एवं अनाजों में अचानक मन्दा बन सकता है। बाजार के रुख को देखकर काम करें।

27 अक्तूबर को मंगल उ.षा. एवम् शुक्र ज्येष्ठा में आ रहा है। धान्य, घी, तेल, सरसों, उड़द एवम् रुई में तेजी बने। अनाज, सोना, चान्दी, चावल, सरसों, तेल, हींग में कुछ मन्दी सम्भव है।

28 अक्तूबर को शनि ज्येष्ठा–2 एवं गुरु हस्त–3 में आता है। चान्दी तेज हो। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, तेल, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, हल्दी में मन्दी का वातावरण रहेगा।

29 से 31 अक्तूबर तक बाजारों में तेजी–मन्दी के जोरदार रिएक्शन्ज़ आएंगे। मन्दी में माल पकड़ें, तेजी में बेचकर लाभ लेते रहें।

नवम्बर (सन् 2016 ई.)

1 नवंबर मंगलवार को चन्द्रदर्शन एवम् इसी दिन मंगल मकर राशि में आकर शनि एवम् गुरु की दृष्टि में आएगा। रुई, सोने, चान्दी, तांबे, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी एवम् ऊन में तेजी बनेगी। मकर राशि का मंगल वायदा बाजार में अच्छी तेजी करेगा। तिलहन एवम् सोया आदि खाद्य तेलों में भी तेजी बनेगी। अनाज एवम् दालवाना भी तेज रहें।

2 नवंबर को बुध विशाखा नक्षत्र में दाखिल होगा। गेहूं, बाजरा, मूंग, ज्वार, उड़द, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों तेज हों। रुई में झटके की मन्दी आ सकती है।

6 नवंबर को सूर्य भी विशाखा नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्रसम्बन्ध बना लेगा। वायदा एवं हाजर बाजारों में उछाला आए तो तुरन्त लाभ ले लें। जौ, चावल, गेहूं, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, अलसी एवम् चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी प्रधान रहे।

7 नवंबर को शुक्र मूल नक्षत्र एवम् धनुराशि में आएगा। गेहूं, जौ, चना आदि अन्न; चान्दी, सोना, तांबा आदि धातु एवम् शेयर बाजार तेज रहें। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी होकर पीछे तेजी बने–

" यदा तु धनुराशिस्थो दैत्याचार्यः प्रवर्तते।
महर्घं च विजानीयात् सर्वं सस्यं विनयति।।"

नोट–अकेला शुक्र कभी–कभी बाजार में जोरदार मन्दी भी करता है। यदि मन्दी चले तो गुड़, खाण्ड, रुई, कपास, पाट, बारदाना, तिलहन, चान्दी आदि में अच्छी मन्दी भी बन सकती है, सावधान रहें। हमें मन्दे की आशंका अधिक है।

8 नवंबर को बुध भी वृश्चिक राशि में आ जाता है। अब एक बात ध्यान में रखें कि– बुध शनि के साथ मेल कर रहा है। अतः यह घी, तेल, सरसों, सोया, रुई, चान्दी में तेजी करेगा–

" बुधो वृश्चिकराशिस्थो घृत–तैल–महर्घता।"

विशेषतः तेल, घी, तिलहन में ही तेजी बनेगी।

10 नवबर को बुध के अनुराधा नक्षत्र में आने पर सूत, सण, रुई, सोने, चान्दी में मन्दा आकर तेजी हो।

(नवंबर 1 से 13 तक शेयर बाजारों में काफी उठापटक रहेगी– सावधानी से काम करें।)

14 नवंबर को मंगल के श्रवण नक्षत्र में आने पर गेहूं एवम् अन्य अनाजों में भी भारी तेजी की उम्मीद है। जौ, चना, अफीम व सोना, चान्दी आदि धातु भी तेज ही रहें। रुई में घटाबढ़ी चले।

15 नवंबर को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ एकराशि–सम्बन्ध बनाएगा। रुई, तांबा, चान्दी, सोना, ऊनी वस्त्र तेज रहेंगे। दालवाना एवं वायदा व्यापार में अच्छी तेजी का झटका आएगा। 15 नवंबर को गुरु के हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आने पर मूंग, मोठ, उड़द, तिल तेज रहेंगे। सोने–चान्दी में मामूली मन्दा संभव है।

18 नवंबर को शुक्र पू.षा. में तथा 19 नवंबर को सूर्य अनुराधा में और बुध ज्येष्ठा में आ जाता है। इस समय दालवाना, जौ, चावल, चना आदि अनाज, ऊन, अलसी, काली–लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड एवं सोने–चादी में तेजी बनेगी।

19/20 नवम्बर के लगभग नेप्च्यून के मार्गी एवं बुध के पश्चिम में उदित होने पर रुई, सूत, कपास एवं शेयर बाजारों में अचानक मन्दी आने का योग है।

23 नवम्बर को शनि के अस्त होने पर वस्त्र, रुई, शेयर, सोना, चान्दी मन्दे हों। क्योंकि सूर्य शनि के साथ है, अतः अनाज तेज ही रहेंगे।

28 नवंबर को बुध मूल नक्षत्र एवम् धनुराशि में आकर शुक्र के साथ राशि–सम्बन्ध बनाएगा। यहां यह बात नोट करने वाली है कि– बुध, शुक्र– ये दोनों ग्रह वायदा व्यापार में जोरदार मन्दी या तेजी करते हैं। यदि शुक्र पहले तेजी बना रहा हो तो बाजारों में बुध शुक्र के साथ मिलकर तेजी को और बढ़ावा देगा। यदि पहले मन्दी चल रही हो तो बुध शुक्र के साथ मिलकर मन्दी को और बढ़ावा देगा– यह ध्यान में रखकर काम करें। हमारे विचार से अनाज, सोना, चान्दी, रुई, कपास, सूत, चान्दी में जोरदार मन्दी या तेजी बनेगी। बाजार का रुख देखकर काम करें।

28 नवंबर को शनि ज्येष्ठा के तीसरे चरण में एवं 29 नवंबर को शुक्र उ.षा. में दाखिल होगा। इस समय गुड़, खाण्ड, सोना, चान्दी, अलसी, एरण्ड मन्दे रहें। रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो।

दिसम्बर (सन् 2016 ई.)

मासारम्भ में 2 दिसम्बर को सूर्य ज्येष्ठा में, मंगल धनिष्ठा में एवं शुक्र इसीदिन मकर में आ रहा है। इस समय सूर्य शनि के साथ है। मंगल मकर राशि में शुक्र के साथ मेल कर रहा है। मंगल–शुक्र दोनों पर शनि की विशेष नजर है।

मंगल का प्रभाव मौसम–हवा–बरसात पर विशेषरूप से होता है। शनि की दृष्टि से बाजारों में जोरदार घटाबढ़ी बनती है। तेल, तिलहन, कपास, जूट, चान्दी, सोने, तांबे, पीतल, जस्ते, लोहे में जबरदस्त उठाव सम्भव है। चावल, गेहूं, जौ, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, गुड़, खाण्ड, घी में भी तेजी बने। रुई में घटावढ़ी के बाद तेजी बने।

(इस समय शेयर एवं हाजर के व्यापारी लाभ में रहेंगे।)

4 दिसम्बर को चित्रा नक्षत्र में गुरु दाखिल होगा। चान्दी व अनाजों के भाव गिरेंगे। रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

8 दिसम्बर को बुध पू.षा. तथा 9 दिसम्बर को राहु मघा–4 एवं केतु शतभिषा–2 में दाखिल होगा। इस समय सिंहस्थ राहु पर मंगल एवं शनि की दृष्टि भी है। 8 दिसंबर के लगभग सोने–चांदी में जोरदार मन्दे का झटका आएगा। तुरन्त लाभ लें। इस समय बिनौला तेज एवं अनाज मन्दे हों।

नोट करें– 9 दिसम्बर को अनाज, घी, गुड़, खाण्ड, नमक आदि एवं लौंग, सण, दाख, हींग, तेल, कपास तेज होंगे।

11 दिसम्बर को शुक्र श्रवण नक्षत्र में आएगा एवं इसी दिन मंगल कुम्भ राशि में आकर राहु के साथ समसप्तक–योग बनाएगा। इस समय रुई, चान्दी में विशेष घटाबढ़ी चलेगी। गेहूं आदि सभी अनाज, गुड़, खाण्ड, सोना तेज हों।

(2, 8, 11 दिसम्बर को हाजर एवं शेयर बाजारों में झटके की तेजी आएगी।)

15 दिसम्बर को सूर्य मूल नक्षत्र एवं धनुराशि में बुध के साथ आएगा। रुई, सूत, कपास, सोना, चान्दी, अलसी, तिल, तेल में तेजी बने।

19 दिसम्बर के लगभग बुध के वक्री होने पर सूर्य बुध का मेल तेजी का जोश बढ़ाएगा। तेल, तिलहन (विशेषतः खाद्य तेल), घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे। चना, जौ आदि अनाजों में कुछ मन्दे का झटका सम्भव है।

20 दिसम्बर को शतभिषा में मंगल के आने पर रुई, सोने–चान्दी में मन्दे का झटका आकर तेजी बने। 22 दिसम्बर को शुक्र के धनिष्ठा में आने एवं बुध के पश्चिम में अस्त होने पर बाजार मन्दे हो सकते हैं। चावल, मूंग, मोठ,

ज्वार, बाजरा, चान्दी, सोने, कपास में तेजी; रुई में 15/20 टका की जल्दी मन्दी आ सकती है। इस समय शेयर बाजार मन्दे बनेंगे।

26 दिसम्बर को शनि ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में आकर अनाजों एवम् चान्दी में तेजी करे।

28 दिसम्बर को सूर्य पू.षा. व वक्री बुध मूल नक्षत्र एवं गुरु चित्रा नक्षत्र के दूसरे चरण और इसी दिन शुक्र कुम्भ में प्रवेश करेगा एवम् 28 दिसम्बर को ही शनि उदित हो रहा है। इन सभी ग्रहों का सामूहिक फल अन्त में तेजीकारक न रहेगा। क्योंकि कुम्भ में शुक्र का मेल मंगल –केतु के साथ, सूर्य वक्री बुध के साथ एवं शनि शत्रुक्षेत्री है। अतः रुई, शेयर, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली में मन्दी का झटका आकर तेजी बनेगी। सज्जी, लोहा, जस्ता, चान्दी, सोना, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा तथा श्वेत वस्तु मन्दे रहें। रुई में भी घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे।

30/31 दिसम्बर को भी बाजार कमजोर रहें।

(28 से 31 दिसम्बर तक वायदा एवम् शेयर बाजारों में जोरदार मन्दी के झटके आएं।)

जनवरी (सन् 2017 ई.)

4 जनवरी को शुक्र शतभिषा में आएगा एवम् इसी दिन बुध पूर्व में उदित होगा। गेहूं, गुड़, खाण्ड, चना, चावल, घी, सरसों, रुई, सोने, चान्दी में तेजी बनेगी। तिल, पाट, हैसियन एवम् लालमिर्च में भी तेजी बने।

6 जनवरी को मंगल पू.भा. में आएगा। मंगल, शुक्र, केतु– ये सभी एक साथ हैं। अतः तिल, तेल, मूंगफली, एरण्ड, अलसी, नारियल, सुपारी, रुई, सूत, कपास, सोना, चान्दी तेज हों।

(1 से 7 जनवरी तक शेयर एवं वायदा बाजारों में तेजी रहेगी।)

8 जनवरी को बुध मार्गी हो जाता है। बुध–सूर्य एकसाथ चल रहे हैं। बाजार का रुख अचानक बदल भी सकता है। चान्दी एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। 8 दिन में गेहूं, जौ, चना आदि अनाज तेज रहेंगे। लेकिन रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूंगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित चीजें मन्दी हों।

10 जनवरी को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आएगा। गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, सरसों, दालवाना में तेजी बनेगी।

14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में आकर लगभग 19/20 जनवरी तक मंगल, शुक्र, केतु के साथ चलेगा। घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई में तेजी बने। अनाज, बारदाना मन्दे की ओर रहेंगे।

(10 से 15 जनवरी तक घी, तेल, तिलहन, गुड़, रुई तेज रहें।)

20 जनवरी को मंगल मीन राशि में आएगा। इस समय मंगल पर गुरु की दृष्टि भी है। सोना, चान्दी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी रहे। मंगल में लगभग 22 जनवरी तक गुड़, चीनी, घी, तेल, तिलहन में जोरदार मन्दा बन सकता है।

21 जनवरी को बुध पू.षा. में आ जाता है। इस समय सोने–चान्दी में जोरदार मन्दी का झटका आएगा। बिनौला तेज एवं अनाज मन्दे रहें।

23 जनवरी को सूर्य श्रवण में पदार्पण करेगा। गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई, सूत, सण, सोने, चान्दी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग में तेजी बने।

25 जनवरी को मंगल के उ.भा. में आने पर देवदारु, चन्दन, कपूर आदि सुगन्धित पदार्थों, सोने, चान्दी, रुई, गेहूं, जौ, चने आदि में तेजी आती है।

(24 से 25 जनवरी तक बाजार सामान्यतः तेज रहें।)

26 जनवरी को शनि मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में पदार्पण करेगा। यहां शनि–बुध एकराशि में हैं। यदि पहले मन्दे में अनाज, दालवाना, तिलहन का स्टॉक किया हुआ हो तो 26 जनवरी के बाद अच्छी तेजी से लाभ मिलेगा।

रुई, कपास, बिनौला, चान्दी, घी, गुड़, खाण्ड, दालवाना, चना आदि प्रत्येक जाति के अनाज तेज होंगे। शनि के मूल नक्षत्र में आने से पहले ही अन्न–संग्रह करें। ग्वार, तेल, तिलहन से भी अच्छा लाभ मिलेगा। विशेषतः अनाज के व्यापारी लाभ में रहेंगे। **नोट–** धनुराशि के शनि में कुछ क्षेत्रों में अकाल की खबरों से तेजी बने–

"धनुराशिस्थितः सौरिर्गर्जितोऽपि न जीवति।
तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्षं च विनिर्दिशेत्।।"

27 जनवरी को शुक्र मीन राशि में आकर गुरु के साथ समसप्तकयोग बनाएगा। अकेला शुक्र बाजारों में जोरदार मन्दा करता है, यहां गुरु की दृष्टि और भी मन्दी की तरफ प्रेरित करेगी– ऐसा विचार है। शुक्र का विशेष प्रभाव

घी, चीनी, चान्दी, गुड़, खाण्ड, कपास, पाट, बारदाना एवं तिलहन के व्यापार पर अनुभव किया गया है। इन चीजों में जोरदार मन्दा सम्भव है।

29 जनवरी, रविवार को चन्द्रदर्शन सोने–चान्दी एवं गुड़–खाण्ड में मन्दी करे। दालवाना, अनाज तेज रहें।

(26 जनवरी 2017 ई. के बाद बाजार टूट सकते हैं। सावधानी से काम करें।)

31 जनवरी को बुध उ.षा. एवं शुक्र उ.भा. में आकर चावल, आदि अनाजों, मोती, चान्दी, कपूर, नमक, खाण्ड, रुई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी करे।

फरवरी (सन् 2017 ई.)

मासारम्भ में 1 फरवरी को वसन्तपंचमी पर्व पर माता लक्ष्मी एवं सरस्वती का पूजन–अर्चन करके व्यापार करें–लाभ रहेगा।

3 फरवरी को बुध मकर राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि भी है। रुई, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी का झटका आएगा। अनाजों के भाव मध्यम रहेंगे।

5 फरवरी को सूर्य धनिष्ठा नक्षत्र में आकर बाजारों में तेजी करेगा। सोने, चान्दी, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूंग, मसूर, गेहूं आदि अनाजों एवं अलसी, रुई में सूर्य तेजीकारक रहेगा।

6 फरवरी को गुरु वक्रगति से मंगल–शुक्र एवं शनि की नजर में चलने लगेगा। **नोट करें–** गुरु के वक्री होने पर अनाजों में मन्दी आती है, लेकिन यहां हमें तेजी मालूम देती है, समझ से काम करें। गेहूं, जौ, चना, चावल आदि धान्य, अलसी एवं घी में मन्दी रहे, लेकिन हमें मन्दी की जगह मामूली लाभ की स्थिति मालूम देती है। इस समय सोना, चान्दी आदि धातुएं व ऊनी वस्त्रों में अच्छा लाभ मिलेगा।

(6 से 9 फरवरी तक वायदा एवं शेयरों बाजारों में जोरदार मन्दा बन सकता है।)

10 फरवरी को बुध श्रवण एवं राहु मघा–3 व केतु शत.–1 में आएगा। गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, घी, दाख, हींग, तेल, कपास में तेजी के झटके आएंगे, लाभ लें।

11 फरवरी को मंगल रेवती में आएगा। इस समय मंगल–शुक्र पर गुरु की दृष्टि भी है। अतः अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, लाख, रुई, गेहूं,

जौ, चना, चावल में तेजी बने। लेकिन यदि पहले तेजी बंने तो जल्दी ही मन्दी बन सकती है। यदि पहले मन्दी बनी तो जल्दी ही तेजी बनेगी– यह नोट कर लें।

12 फरवरी को सूर्य कुम्भराशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा एवं इन पर शनि की विशेष दृष्टि भी रहेगी। यहां तेजी से घी एवं तिलहन के व्यापारी लाभ में रहेंगे। घी, तेल, नमक, सरसों, मूंगफली एवं राई में तेजी रहे। रुई, पाट, गेहूं आदि अनाज, गुड़, शक्कर में उठापटक के साथ बाजार अस्थिर रहेंगे।

17 फरवरी को बुध के पूर्व में अस्त होने पर अनाज, रुई, घी एवं सोने में जोरदार घटाबढ़ी चलेगी। मन्दे के बाद तेजी और तेजी के बाद मन्दा आता रहेगा।

18 फरवरी को धनिष्ठा नक्षत्र में बुध आएगा। रुई में घटाबढ़ी, चावल, स्वांक में तेजी एवम् सोना–चान्दी मन्दे रहेंगे।

(11 से 18 फरवरी तक बाजार डांवांडोल रहेंगे, सावधानी से काम करें।)

19 फरवरी को सूर्य शतभिषा में आकर सोने, चान्दी, सूत, सण, कपड़े, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारे, सोंठ, हल्दी, गेहूं एवं गुड़ में तेजी करे।

21 फरवरी को शुक्र रेवती में आकर रुई, कपास, चान्दी, चावल, चन्दन, कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा जवाहरात में मन्दे का रुख करेगा।

22 फरवरी के लगभग बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य–केतु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की दृष्टि भी है। अलसी, रुई मन्दे, चान्दी मन्दी होकर तेज हो। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

(19 से 25 फरवरी तक बाजार प्रायः तेज रहेंगे।)

26 फरवरी को शतभिषा नक्षत्र का बुध चान्दी, सोने में कुछ मन्दी व अन्न के भाव में कुछ तेजी करेगा। अगर यहां जोरदार मन्दे का झटका आ जाए तो कोई आश्चर्य नहीं।

नोट :– 27 फरवरी को सूर्य के बुध–केतु के साथ होने से अनाजों में यदि जोरदार तेजी का झटका आता है तो तुरन्त लाभ लेना चाहिए।

28 फरवरी को मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से अनाज एवं अन्य व्यापारिक वस्तुओं में प्रायः तेजी रहेगी। रुई में पहले मन्दी, बाद में तेजी, सोने–

चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी हो। घी, तेल, तिलहन में घटाबढ़ी रहे।

मार्च (सन् 2017 ई.)

1 मार्च को मंगल अश्विनी, मेष में आकर लगभग 26 मार्च तक अकेला मेष राशि में ही रहेगा। ज्वार, बाजरा, चना, मूंग, गेहूं, गुड़, खाण्ड, रुई, सोना, चान्दी आदि धातु; मूंगा, मोती आदि रत्न; रुई, कपास, पाट, बारदाना एवं घी में तेजी बनेगी।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आएगा। इसीदिन मीन–राशि का शुक्र वक्री हो रहा है। वक्री शुक्र से वक्री गुरु का समसप्तकयोग भी है। इसलिए रेशम, सोना, चान्दी, गेहूं, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तेल, तिल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पिप्पलामूल एवं रुई में तेजी बनेगी।

5 मार्च को पू.फा. नक्षत्र में बुध दाखिल होगा। गुड़, खाण्ड व गेहूं आदि अनाज मन्दे हो सकते हैं।

10 मार्च को बुध मीन राशि में आकर शुक्र के साथ वक्री गुरु की दृष्टि में आ जाता है। रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे हों; सोने–चान्दी में घटाबढ़ी, पहले तेजी, फिर उतनी ही मन्दी आए। बिनौला तेज रहे। 12 मार्च को बुध उ.फा. में आकर चान्दी में घटाबढ़ी करे; रुई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूं आदि अनाजों का भाव सम रहे।

(4 से 13 मार्च तक शेयर बाजार एवं अन्य सभी बाजारों में मन्दी के अच्छे रिएक्शन्ज़ संभव हैं। बीच–बीच में तेजी से भी लाभ मिलेगा।)

14 मार्च को सूर्य मीन में आकर बुध एवं वक्री शुक्र के साथ मेल करेगा। वक्री गुरु की इन पर दृष्टि भी है। तिल, तेल, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई एवम् सोने–चान्दी में तेजी का उछाला आएगा। प्रत्येक जाति के अनाजों में पहले कुछ तेजी, बाद में कुछ मन्दी रहे।

15 मार्च को वक्री शुक्र उ.भा. में 16 मार्च को शनि मूल–2 एवं 17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आएगा। रुई, कपास, चान्दी, रसकस, नमक, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूं, कपूर आदि में तेजी बनेगी। ध्यान रहे– इसी दौरान सफेद वस्तुओं में कदाचित् कुछ मन्दी भी बने तो रुकेगी नहीं।

18 मार्च को वक्री गुरु चित्रा में आकर चान्दी, अनाजों एवं रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी करेगा।

19 मार्च को बुध रेवती में आएगा और 21 मार्च को बुध पश्चिम में उदित होगा। केसर, मजीठ, कुसुम्भ, लालचन्दन एवं लालमिर्च, घी, गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों एवं लाल चीजों में तेजी बने।

20 मार्च को मंगल भरणी नक्षत्र में आकर गेहूं, चना, जौ, ज्वार आदि अनाजों एवम् सोने, चान्दी, रुई में तेजी करेगा। 21 मार्च को बुध पश्चिम में उदित होकर रुई एवम् शेयर बाजारों में जोरदार मन्दी करेगा।

(18/21 मार्च तक बाजार नीचे आ सकते हैं।)

22 मार्च को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। सूर्य एवं वक्री शुक्र का वक्री गुरु के साथ समसप्तकयोग चल रहा है। अतः सोने, चान्दी, सूत, रुई, कपड़े, घी, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि में अच्छी मन्दी का झटका आकर बाजार संभलेंगे। रुई में तेजी रहे।

25 मार्च को शुक्र पूर्व में उदित हो रहा है, जोकि रुई, सूत, चान्दी एवं सोने में तेजी बनाएगा – ऐसा विचार है। अनाज मन्दे होंगे।

27 मार्च को बुध अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में आकर मंगल के साथ एकराशि–सम्बन्ध बना रहा है। गेहूं, चना, जौ, ज्पार, बाजरा, चावल, अलसी, मूंग, मोठ में तेजी रहे। साथ ही दूध, घी, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिलहन, कपास भी तेज रहें। चान्दी में खासी मन्दी का झटका आ सकता है।

नोट– यद्यपि अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि का बुध ऊपर लिखी सभी चीजों में मन्दा करता है, परन्तु यहां बुध का मंगल के साथ मेल होने से हमें उल्लिखित चीजों में तेजी मालूम दे रही है। सावधानी से काम करें।

29 मार्च को चन्द्रदर्शन होगा एवं 31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आएगा। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसुन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, गेहूं, जौ, चना, चावल तेज होंगे।

–:व्यापारियों के लिए विशेष सुविधा:–
तेज़ी–मन्दी की प्रतिमास लिखित Advance Report

(अर्थात् आगामी माह की दैनिक तेज़ी–मन्दी की लिखित रिपोर्ट)

व्यापारी सज्जनो ! 1 जनवरी, सन् 2016 ई. से यदि आप प्रतिमास किसी भी जिन्स की दैनिक तेजी–मन्दी या वायदा–हाजर बाजार का चांस अर्थात् सोना, चान्दी, कॉपर आदि मैटल्ज़, चना, ग्वार आदि अनाज, तिल, तेल, सरसों किंवा बिनौला आदि तिलहन; जीरा, धनिया, हल्दी, लाल–कालीमिर्च, रुई एवम् कपास में से किसी भी जिन्स की मासिक लिखित रिपोर्ट चाहते हैं तो फीस **Rs.** 5000/– (पांच हज़ार रु.) प्रतिमास, प्रतिजिन्स के हिसाब से भेजकर **Advance Report** प्राप्त करें। एकवर्ष की प्रतिजिन्स फीस **Rs.** 50,000/– (पचास हज़ार रु.) है।

ध्यान दें–यदि आप लिखित Report के अतिरिक्त प्रतिदिन Telephone से तेज़ी–मन्दी का विचार करना चाहते हैं तो उसकी फीस अलग से होगी।

नोट– पहली बार यदि प्रत्यक्ष मिलें तो अधिक सन्तोषजनक जानकारी मिल सकेगी। दूर से आने वाले व्यक्ति आने से पहले टेलिफोन करके आने का समय निश्चित कर लें।

पत्र या **M.O.** फार्म पर अपना नाम, पता एवम् फोन नं. साफ–साफ लिखें एवम् धनादेश किस जिन्स की तेज़ी–मन्दी जानने के लिए भेज रहे हैं– यह अवश्य लिखें। **M.O.** या **D.D.** भेजने के बाद आप अपना रजिस्ट्रेशन नंबर टेलिफोन से अवश्य प्राप्त करें।

Payment Advance आने पर ही अगले माह की रिपोर्ट भेजी जाएगी। **D.D.** या **M.O.** नीचे लिखे पते पर भेजें–

PHONE: 0160-2641 277
0160-2641 577

संयमी शर्मा , **M.A.**, ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,
सुपुत्र पं. इन्दुशेखर शर्मा, शास्त्री, **M.A.**, ज्योतिषाचार्य,
श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय ,कुराली – **PIN** 140 103
(मोहाली) पंजाब।

नोट:– गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र–साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

(1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक)

जप एवं यन्त्र–मन्त्र आदि की साधना के लिए शास्त्रों द्वारा बारह सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा सूर्य–चन्द्र के क्रान्तिसाम्य (महापात) के काल को ठीक सूर्य–चन्द्रग्रहण के समान ही महत्त्वपूर्ण माना गया है। संहिता और ज्योतिषग्रन्थों में इस विषय के अनेक वचन उपलब्ध हैं। क्रान्तिसाम्य को तन्त्रादि की सिद्धि के लिए ऋषियों ने स्पष्टरूप से फलप्रद माना है। आचार्य भास्कर ने भी 'सिद्धान्तशिरोमणि' में कहा है कि–क्रांतिसाम्य के काल में विवाहादि मंगलकृत्य करना तो निषिद्ध है, लेकिन यदि इस समय जप, अनुष्ठानादि किया जाए तो उसकी वृद्धि होती है– *"पातस्थितिकालान्तर्गतमंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः। स्नान–जप–होमदानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्।।"* यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों की साधना में विशेष रुचि रखने वाले पाठकों के लिए हम नीचे 1 जनवरी, 2016 ई. से 28 मार्च, सन् 2017 ई. तक की सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल तथा क्रान्तिसाम्य के प्रारंभ और समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) दे रहे हैं। इन कालों में यंत्र–तंत्रों के निर्माण एवम् मंत्रजाप से वे अभीष्ट सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।

सूर्य और चन्द्रमा के ग्रहण के पर्वकाल को भी मन्त्रादि–साधना के लिए साधकों को उपयोग में लाना चाहिए। सायन संक्रान्तिपुण्यकाल, क्रान्तिसाम्य और सूर्य–चन्द्रग्रहण के पर्वकाल के अलावा मन्त्रादि–साधना के लिए अर्धोदय, महोदय, महामहावारुणीपर्व, महावारुणीपर्व और वारुणीपर्व भी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं। ये अर्धोदय आदि योग कभी–कभी ही आते हैं।

सावधान–यंत्र–मंत्र–तंत्रों के प्रयोग को प्रभावशाली रूप मे सद्यः फलप्रद बनाने के लिए शास्त्रविहित काल में साधना कीजिए, अन्यथा आगमशास्त्र पर साधक की निराधार अनास्था होने की पूर्ण आशंका है।

सायनसंक्रान्ति–पुण्यकाल
(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2016 ई.					
20 जन.	14	33	21 जन.	03	21
19 फर.	04	40	19 फर.	17	28
20 मार्च	03	36	20 मार्च	16	24
19 अप्रै.	14	35	20 अप्रै.	03	23
20 मई	13	42	21 मई	02	30
20 जून	21	40	21 जून	10	28
22 जुला.	08	36	22 जुला.	21	24
22 अग.	15	45	23 अग.	04	33
22 सितं.	13	27	23 सितं.	02	15
23 अक्तू.	22	51	24 अक्तू.	11	39
21 नवं.	20	29	22 नवं.	09	17
21 दिसं.	09	51	21 दिसं.	22	39
सन् 2017 ई.					
19 जन.	20	29	20 जन.	09	17
18 फर.	10	38	18 फर.	23	26
20 मार्च	09	34	20 मार्च	22	22

क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ और समाप्तिकाल
(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2016 ई.					
03 फर.	6	33	03 फर.	19	20
14 फर.	20	05	15 फर.	03	13
27 फर.	13	57	27 फर.	20	42
10 मार्च	21	20	11 मार्च	02	17
23 मार्च	04	48	23 मार्च	10	55
05 अप्रै.	04	49	05 अप्रै.	10	04
16 अप्रै.	19	37	17 अप्रै.	2	37
30 अप्रै.	1	01	30 अप्रै.	9	50
10 मई	15	33	11 मई	11	11
30 जुला.	9	19	31 जुला.	2	38
11 अग.	16	37	12 अग.	2	19
23 अग.	19	52	24 अग.	2	04
05 सितं.	6	57	05 सितं.	13	18
18 सितं.	0	11	18 सितं.	5	05
30 सितं.	1	33	30 सितं.	7	24
13 अक्तू.	6	56	13 अक्तू.	12	29
24 अक्तू.	17	43	25 अक्तू.	0	50

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
सन् 2016–17 ई.					
06 नवं.	21	47	07 नवं.	8	25
05 फर.	12	52	05 फर.	21	28
17 फर.	16	26	17 फर.	23	45
02 मार्च	9	12	02 मार्च	14	43
14 मार्च	11	02	14 मार्च	16	39
27 मार्च	14	01	27 मार्च	19	01

सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य

सूर्य–चन्द्र की राशियों के अनुसार निर्धारित किए जाने वाले क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल नितान्त स्थूल होता है। यहां दिया गया क्रान्तिसाम्य का प्रारम्भ–समाप्तिकाल महापातगणित द्वारा स्पष्ट किया गया है। यह सर्वथा सूक्ष्म है। विवाहादि मुहूर्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य के काल को ही वर्जित किया गया है।

महावारुणी पर्व (सन् 2017 ई.)
(भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ			समाप्त		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
25 अप्रै.	16	58	25 अप्रै.	सूर्यास्त	
वारुणी पर्व (सन् 2016 ई.)					
05 अप्रै.	सूर्योदय		05 अप्रै.	10	34
(सन् 2017 ई.)					
26 मार्च	सूर्योदय		26 मार्च	12	29
महोदय योग (सन् 2016 ई.)					
08 फर.	सूर्योदय		08 फर.	14	22

ध्यान रहे– मन्त्रसाधना में उच्चारणादि की शुद्धि परमावश्यक है। उच्चारणादि की अशुद्धि साधक के लिए सुफलप्रद कदापि नहीं होती। इस बारे शास्त्रवचन इस प्रकार है–

"मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा
मिथ्या प्रयुक्तो न तमर्थमाह।
स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति
यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्।।"

निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल

सायन संक्रान्तियों के पुण्यकाल की भान्ति निरयण संक्रान्तियों के पुण्यकाल में भी यंत्र–मंत्रादि की साधना की जा सकती है, लेकिन सायन संक्रान्तियों का पुण्यकाल इसके लिए विशेष महत्त्व रखता है।

सूर्य–चन्द्रग्रहण

ऊपर लिखे अनुसार यन्त्र–मन्त्र– तन्त्र–साधना के लिए सूर्य एवम् चन्द्रग्रहणों का पर्वकाल विशेष महत्त्व रखता है। लेकिन ध्यान रहे कि– इस वर्ष भारत में कोई भी (सूर्य या चन्द्र) ग्रहण घटित नहीं हो रहा है।

अनेक विद्वानों द्वारा अनुभूत– यन्त्र–मन्त्र एवम् तन्त्रों का चमत्कार

इस स्तम्भ के अन्तर्गत अनुभूत यन्त्र–मन्त्र–तन्त्र गतवर्षों से देते आ रहे हैं। इस स्तम्भ के अन्तर्गत दिए गए मन्त्रों को शुभ मुहूर्त में गुरुमुख से प्राप्त करके ग्रहणवेला, क्रान्तिसाम्य या सायन–संक्रान्तियों के पुण्यकाल में दृढ–निश्चयपूर्वक अनुष्ठान करके सिद्ध कर लेना चाहिए। **ध्यान रहे–** दीपमाला के समय एवं महाशिवरात्रि की महत्त्वपूर्ण रात्रियों में किंवा 'यन्त्र–मन्त्र–तन्त्रों के लिए साधनाकाल' की उल्लिखित समयावधियों में इन मन्त्र–तन्त्रों को सिद्ध करके इनका चमत्कार आप अविलम्ब देख सकेंगे। यन्त्र–मन्त्रों के बल पर ही दैवज्ञ अपने वैदुष्य से अक्षुण्ण यश प्राप्त कर सकता है,– **"सिद्धिर्भूषयते विद्याम्।"**

मन्त्र ऐसे दिव्यशब्दों का समूह है, जिसे दृढ इच्छाशक्तिपूर्वक उच्चारण एवं मनन से ही हम अलौकिक काम कर सकते हैं। चुने हुए गुप्त शब्द ही मन्त्र हैं। इनमें शब्दों को ऐसा क्रम दिया जाता है, कि उनके मौन या अमौन अवस्था में उच्चारणमात्र से शून्य महाकाश में एक विचित्र कम्पन उत्पन्न होती है, जिसमें अभीप्सित कार्यसिद्धि एवं रचनात्मक प्रबल–प्रछन्न शक्ति होती है–

" मननात् त्रायते यस्मात्तस्मात् मन्त्रः प्रकीर्तितः। जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्जपात् सिद्धिर्न संशयः।।"

मन्त्रशास्त्र के अनुसार वेदमन्त्रों को ब्रह्मा ने शक्ति प्रदान की थी। तान्त्रिक प्रयोगों को भगवान् शिव ने शक्तिसम्पन्न किया। इसी प्रकार कलियुग में शिवावतार श्री शाबरनाथ जी ने शाबरमन्त्रों को अद्भुत शक्ति प्रदान की। शाबरमन्त्र अनमिल बेजोड़ शब्दों का एक समूह होता है, जो कि अर्थहीन मालूम देते हैं, परन्तु भगवान् शंकर जी के प्रताप से ये मन्त्र अवन्ध्य प्रभाव रखते हैं– **" अनमिल आखर अर्थ न जापू। प्रकट प्रभाव महेश प्रतापू।।"** अतः शाबरमन्त्रों को यथावत् उच्चारण करें, किसी प्रकार से इनमें न्यूनाधिकता न करें। **नोटः–** मन्त्र का पुरुश्चरण गुरु की देखरेख में गुप्तरूप से करें। प्रकट होने पर पुरुश्चरण अर्थहीन हो जाता है– **" गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।"**

(1) हजीरा (कण्ठरोग) से मुक्ति के लिए अनुभूत प्रयोग

हजीरा (कण्ठरोग) में गले में एक या दोनों तरफ गांठें पड़ जाती है। कभी–कभी पेट में भी इस प्रकार का कष्ट देखा गया है। शान्त्यर्थ कण्ठरोग के स्थान को गोमुत्र से धोकर निम्नांकित–यजुर्वेद–मन्त्र से सात वार पढ़कर शुद्धभस्म को अभिमन्त्रित करके रोगग्रस्त स्थल के चारों ओर गोलाकार में लगाते रहें। प्रतिदिन ऐसा करने से सात दिन में हजीरा रोग नष्ट हो जाएगा। मन्त्र इस प्रकार है–

"असौ यस्ताम्रो अरुण उत् बभ्रुः सुमङ्गलः।
ये चैन७ रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिता सहस्रोऽवैषा७ हेड ईमहे।।"

लोहे की गोली कपडे में बांधकर पीड़ित स्थान पर प्रतिदिन 3 बार यह मन्त्र पढकर लगाने से भी रोग नष्ट होता है–

" याते रुद्र शिवा तनूरघोरा पापकाशिनी तया नस्तन्वा शान्त मया गिरिशन्तामि चाकशी हि।।"

बिज्जु (वनपशु) की इन्द्री का टुकड़ा तावीज़ में बन्द कर गले में बांधने से भी हजीरारोग नष्ट होता है।

(2) सर्वेष्ट सिद्धयर्थ नृसिंहमन्त्र

निम्नांकित श्लोकरूप मन्त्र के जाप से व्यक्ति सर्वविध कष्टों से मुक्ति पा सकता है। **'शारदातिलक'** मन्त्रशास्त्र में इसमन्त्र को मनोरथ–सिद्धयर्थ एवं महामारी से मुक्ति पाने के लिए प्रत्यक्ष फलप्रद कहा है।

मन्त्र–"ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्यु–मृत्युं नमाम्यहम्।।"

विधि– इस श्लोकात्मक मन्त्र की सूर्याभिमुख होकर प्रातः तीनमाला, प्रतिदिन करने से मनोवांछित फल मिलता है, घर में रोगकष्ट नहीं होता।

(3) स्वप्न चक्रेश्वरी मन्त्र प्रयोग

मन्त्र – " ॐ नमः स्वप्नचक्रेश्वरि स्वप्ने अवतर अवतर गतं–वर्तमानं कथय–कथय स्वाहा। "

विधान – मन्त्रजाप से पहले गोमय (गाय के गोबर) से पृथ्वी का लेपन करके ज्योति का प्रकाश करें, बताशों का भोग ज्योति के समीप रखें और उल्लिखित मन्त्र का इक्कीस हजार मन्त्रजाप करें। बाद में भोग कुमारी कन्या को दे दें, तत्पश्चात् शयन करें, रात्रि में स्वप्न में आपके प्रश्न का उत्तर मिल जाएगा। यदि इसमन्त्र का जाप एकलाख करें तो स्वप्न चक्रेश्वरी देवी (मन्त्र अधिष्ठात्री देवी) स्त्रीरूप में प्रत्यक्ष आकर वर देगी, इसमें सन्देह नहीं। यह मन्त्र बड़ा ही चमत्कारी है एवं एक महात्मा ने स्वयं अनुभव किया है।

(4) दुःख–दारिद्र्यनाशार्थ मंगलस्तोत्र

ॐ धरणीगर्भ–संभूतं विद्युत्–कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलम् प्रणमाम्यहम्।।
अंगार महाभाग भगवन् भक्तवत्सल।
त्वाम् नमामि ममाशेषं ऋणमाशु विनाशय।।

ऋण–रोगादि दारिद्र्यम् ये चान्येह्यपमृत्यवः।
भय–शोक–मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।
अति वक्र दुरारास्य भोगमुक्त–नितात्मनः।
तुष्टो ददासि साम्राज्यं रुष्टो हरसि तत्क्षणात्।।

ब्रह्मा–विष्णु–महेशानां देवतानां तु का कथा।
तेन त्वं सर्वसत्वेन ग्रहराजो महाबलः।।
पत्नि–पुत्रान् धनं देहि त्वामहं शरणं गतः।
ऋण–दारिद्र्य–दुःखेन शत्रूणां च भयात्त तः।।

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्मावरोधकः।।
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धरात्मजः कुजो भौमो भूमिदो भूमि-नन्दनः।।

अंगारको यमश्चैव सर्व–रोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकर्म–फलप्रदः।।
ऋण–रोगादि–दारिद्र्यं पापं क्षुदपमृत्यवः।
विनाशय महाबुद्धे संकटान् मे निवारय।।

एतानि कुज नामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमाप्नुयात्।।
प्रसादं कुरु मे नाथ मंगलप्रद मंगल।
मेषवाहन रुद्रात्मन् पुत्रान् देहि धनं यशः।।

दुःख–दारिद्र्य–नाशाय पुत्रसन्तान–हेतवे।
कृते रेखा त्रये वामपादे नैतत् प्रमार्ज्याहम्।।
ऋण–दुःख–विनाशाय मनोऽभिष्टार्थ–सिद्धये।
मार्जयाम्यसितां रेखां तिस्रो जन्म त्रयोद्भवाम्।।

।। ॐ मंगलाय नमः।।

[जो बन्धुगण इस उपरोक्त स्तोत्र का नित्य स्वच्छ होकर दीपक और अगरबत्ती लगाकर आसन पर बैठ पाठ करेगा, उसका इस जमाने में सर्वकाम लाभप्रद सिद्ध होगा।]

(5) सम्पूर्ण वैभवप्रदा महालक्ष्मी प्राप्त्यर्थ धनदायक अनुभूत मन्त्र

" धन प्रदायक मन्त्र" सिद्धि का रहस्य प्रकाशित कर रहे हैं। यह प्रयोग तान्त्रिक डा. श्री यादवेन्द्र जी का अनुभूत है। "विश्वास फलदायक" सफल होने पर गरीबों को वस्त्र, भोजन, औषध–दान अवश्य दें। मन्त्र-सिद्धि से पूर्व शुभ मुहूर्त्त देख लेना चाहिए। मन्त्र-सिद्धि हेतु मुहूर्त्त इस प्रकार हैं–

तिथि– 4, 6, 8, 9, 11, 14 (दोनों पक्ष की)।

वार– सू., चं., बु., गु., शु. ।

नक्षत्र–भ., आ., म., मू. ।

लग्न– 5,11 हो।

टिप्पणी–संक्रान्ति, दिवाली, होली, ग्रहण, नवरात्रि भी शुभ है।

लक्ष्मी मन्त्र सिद्धि– (गुरुजन की आज्ञा से) मन्त्र प्रारम्भ करने के दिन एक ताम्र–पत्र पर लक्ष्मी जी का प्रतीक **" अष्टकमल "** रोली से बनाएं। तत्पश्चात् विधिपूर्वक शोडषोपचार पूजा करके एक निश्चित स्थान पर उसे स्थापित कर दें। फिर प्रत्येक दिन नीचे लिखे मन्त्र का जप करें। प्रातः स्नान–ध्यान कर **"अष्ट कमल"** को फल–फूल, धूप–दीप दें। मन्त्र का जप जितना भी हो सके सुविधानुसार स्पष्ट शुद्ध–रूप से करें। सवालक्ष जप करने पर सिद्धि हो जाएगी। ग्यारह लाख मन्त्र पूर्ण करने पर साक्षात् राजयोग का अधिकारी होता है।

मन्त्र– " ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ऐं कमलवासिन्यै स्वाहा "

शास्त्रों के अनुसार इन्द्र ने सम्पूर्ण वैभव तथा स्वर्ग का राज्य प्राप्ति हेतु इसी मन्त्र का ग्यारह लाख जप नदी के किनारे बैठ कर किया था। तब महालक्ष्मी ने स्वयं प्रकट होकर इन्द्र को वरदान दिया था। इस घोर कलयुग में भी यह मन्त्र बहुत सफल है। प्रमाण के लिए आप भी करके देखें, आश्चर्यजनक परिणाम सामने आएंगे। सर्वज्ञ तो ईश्वर हैं।

(6) कर्णपिशाचिनी सिद्ध करने का प्रयोग

यह प्रयोग 40 दिन का है। साधक को अलग एकान्त में एक स्वतन्त्र कमरे की व्यवस्था करनी होगी। जिसमें 40 दिन तक कोई दूसरा व्यक्ति पशु–पक्षी न आ सके। इस कमरे में अखण्ड तैल का दीपक रखना होगा। परन्तु इस दीपक पर साधक के सिवाय अन्य किसी व्यक्ति की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए। साधक अपना चन्द्रबल और सुमुहूर्त्त देखकर उक्त कमरे का दरवाजा बन्द करके दीपक के सम्मुख रात्रि में आसन बिछाकर बैठ जावे। **" ॐ ह्रीं कर्णपिशाचिनी मे कर्णे कथय हुँ फट् स्वाहा।"** इस मंत्र का पांच हजार (पचास माला) जप नित्य करें। जप समाप्त होने पर प्रति–दिन दीपक में थोड़ा–सा तैल अपने हाथ पैरों के बीसों नाखूनों में लगाकर उस कमरे में जप–स्थान पर सो जावें। रात–दिन में दीपक कभी बुझना नहीं चाहिए।

(7) 'योजनगंधा–योगिनी' मन्त्र प्रयोग

मन्त्र – " जोजन गन्धा जोगिनी ऋद्धि सिद्धि मे भरपूर।
मैं आयो तोय जांचणे करजो कारज जरूर ।। "

इसमन्त्र से प्रश्न का उत्तर जानने का विधान इस प्रकार है :–
सवा–सेर गेहूं का आटा, अढ़ाई पाव घी और अढ़ाई पाव खाण्ड, ये सब मिलाकर ,भूनकर कसार बनालें। शनिवार के दिन निराहार सूर्योदय से पहले जंगल में चींटियों के बिल में थोड़ा–थोड़ा कसार गिराता जाए, साथ ही उल्लिखित मन्त्र बोलता जाए। जंगल में खूब भ्रमण करे, मन्त्र जाप करता रहे। मध्याह्न ढलने पर जब थक जाए तो किसी वृक्ष के नीचे विश्राम करे। उसी समय निद्रावस्था प्राप्त होने से एकाकी पुरुष या स्त्री सम्मुख उपस्थित हो जाएगा और साधक के प्रश्न का स्पष्ट शब्दों में उत्तर देगा। उसकी बात साधक को अच्छी तरह सुनाई देगी। यह चार प्रहर का प्रयोग निराहार व्रत रखकर ही करें – इसमन्त्र के प्रयोग के पहले दिन ही प्रश्न का उत्तर मिलने लगता है;– इसमें सन्देह नहीं। यह विधान कई दिनों तक लगातार करने पर तो मनोवांछित फल प्राप्त होता है। भोजन घर आकर रात्रि में करें ।

(8) मनोकामना शीघ्र पूर्ण करने के लिए अनुभूत मन्त्र

आपके कार्य में देरी हो रही हो या बनते–बनते कार्य बिगड़ने की शंका हो तो , निम्नांकित मन्त्र को एकादशी का व्रत रखकर 1008 बार जाप करें, मनोकामना अविलम्ब पूर्ण होगी।

मन्त्र – " ॐ नमः कामाक्षायै देव्यै नमः। ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं अं कं चं टं तं पं यं शं ऐं सां ऐं मनोकामनां पूर्णा कुरु कुरु स्वाहा।"

(9) बालक को दृष्टिदोश (नजर) से मुक्त करने के लिए साबरी मन्त्र

मन्त्र – "ऊँ डायन मोर जादू बाण । चौंक उठे बालक के प्राण । रोए बालक फक्का फाड़। चीखें मार करे चीत्कार। दोहाई कामाक्षा देवी की, तुझे शंकर की आन। ऊँ नमः रुद्राय। ऊँ नमः कामाक्षादेव्यै ह्रीं क्रीं श्रीं फट् स्वाहा। "

अगर सोया हुआ बच्चा चौंक कर उठता हो, अकारण रोता रहता हो, तो झाड़ू की एक तिल्ली लेकर बच्चे को उल्लिखित मन्त्र पढ़ते हुए झाड़ दें, तिल्ली को आग में जला दें, बच्चा पूर्णतया प्रसन्न रहेगा।

(10) बालरक्षार्थ मन्त्र

यदि अबोधबालक अकारण रोता रहे, सांस चढ़ा ले, नीला होता जाए, तो समझें कि किसी बुरी छाया का प्रभाव है। ऐसी स्थिति में निम्नांकित मन्त्र को भोजपत्र पर अष्टगन्ध या केवल लालचन्दन की मसी (स्याही) लेकर अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल की धूप देकर, इसमन्त्र को बच्चे के गले में डाल दें, आश्चर्यजनक रूप से बच्चे को शान्ति मिलेगी।

मन्त्र– "रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर।
ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।"

इसमन्त्र का कुलपुरोहित या विद्वान् पण्डित से जाप करा सकते हैं, मन्त्रजाप से ही यहमन्त्र पूर्णरूपेण फलद है।

(11) श्रीघण्टाकर्ण का चमत्कारी मन्त्र

मन्त्र – " ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीम् घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि–विनाशक। आधिं व्याधिं विपत्तिं च महाभीतिं विनाशय।। नाम मन्त्रोऽस्ति ते सिद्धिः सर्वमंगलकारकः। इष्टसिद्धिं महासिद्धिं जयं लक्ष्मीं विवर्धय ।। त्वच्छ्रद्धा–भक्तियोगेन भवन्तु सर्वशक्तयः। पराभवन्तु दुष्टाश्च शत्रवो वैरिदुर्जनाः।। आपत्कालेषु मां रक्ष मम बुद्धिं प्रकाशय । सर्वोपद्रवतो रक्ष घोर– रोगान्विनाशय।। ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं घण्टाकर्ण महावीर धनसमृद्धिं प्रवर्धय। राज्यं च राज्यमानं च बलबुद्धिं प्रवर्धय।। ऊँ क्लीं ह्रीं श्रीं घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधिविनाशक। महारोगान्भयान्घोरान्नाशय-नाशय मे द्रुतम्।। दर्शनं देहि प्रत्यक्षं संरक्ष सर्वकंटकात् । रणे वने समुद्रे च रक्ष सरंक्ष मे द्रुतम्।। अग्निचौरादितो रक्ष त्वन्नाम मन्त्रजापतः। ह्रीं घण्टाकर्ण नमोऽस्तु ते ठःठःठः स्वाहा।। "

-: श्रीघण्टाकर्ण महावीर का ध्यान एवं प्रयोग :-

" रक्तमाल्याम्बरधरो रक्तगन्धानुलेपनः
सेवितो यक्ष–कन्याभिर्वेष्टितश्चन्द्रशेखरः।
एवं ध्यात्वा महावीरं जपेद् रुद्रसहस्रकम्
पायसान्नेन जुहुयाद् गुग्गुलेन घृतेन वा।।"

अर्थात् – भगवान् घण्टाकर्ण महावीर रक्तवर्ण के वस्त्र एवं लालवर्ण की माला धारण किए हुए हैं, लाल सुगन्धित सिन्दूर से शरीर लिप्त है। यक्षकन्याओं से सेवित शिवरूप भगवान् श्रीघण्टाकर्ण महावीर का ध्यान करके, एकहजार रुद्रमन्त्र (उल्लिखित मन्त्र) का जाप करें। तत्पश्चात् गोदुग्ध से बनी खीर, गुग्गुल या गोघृत से हवन करें तो उल्लिखित मन्त्र आश्चर्यजनक रूप से प्रभावकारी सिद्ध होगा।

इसमन्त्र के विभिन्न प्रयोग :– श्रीघण्टाकर्ण मन्त्र को पहले सूर्य या चन्द्रग्रहण में अथवा किसी शुभमुहूर्त्त में 11 हजार बार जप करके सिद्ध कर लें, तभी इसे प्रयोग में लाएं।

ध्यान दें–इसमन्त्र को परोपकार की भावना से ही प्रयोग में लाएं, व्यापारिक दृष्टि से नहीं।

कुत्ते के काटने पर **"ठःठःठः स्वाहा"** इसमन्त्र को पढ़कर मिट्टी के गोले से सात बार झाड़ें, तो कुत्ते के बाल मिट्टी के गोले के अन्दर आ जाते हैं। पशु बीमार हो तो उक्त घण्टाकर्णमन्त्र को सात बार जपकर पशु पर हाथ फेरने से पशु के सब प्रकार के रोग दूर हो जाते हैं। इस सिद्धमन्त्र से बड़े–बड़े साधक कार्य लेते हैं। नारियल की गिरि, छुहारा, दाख, घी, शक्कर एवं शहद से 12 हजार होम करके और इसमन्त्र का यन्त्र बनाकर अपने पास रखने से **सर्वविध उपद्रवों से मुक्ति** मिलती है। प्रातः उक्त मन्त्र को 21 बार पढ़कर, तीन अंजलि जलपान करने से विद्या–बुद्धि में वृद्धि होती है।

21 बार मन्त्रोच्चारण के बाद अपने थूक का तिलक करके राजदरबार, कोर्ट आदि में जाने से अभीप्सित कार्य सिद्ध होता है, मन्त्र पढ़कर पगड़ी के कोने में गांठ बांधकर, उस गांठ को लटकाने पर **सामने खड़ा शत्रु भी वशीभूत** हो जाए। ग्रहदोष, शाकिनीदोष आदि से सबन्धित रोग की अवस्था में झाडू बगैरह से झाड़ देने पर **सर्वग्रहदोष–रोगों से मुक्ति** मिले।

कुमारी कन्या के हाथ से काता हुआ नौ तन्तुओं वाला सूत का धागा सिर से पैर तक की माप कर सात गाठें दे दें। 121 बार इसमन्त्र से अभिमन्त्रित करके गुग्गुल का धूप देकर, स्त्री की कमर में बांधने से **गर्भस्तम्भन** होता है। इसमन्त्र से 21 बार फूंक देकर शिशु सहित स्त्री को वस्त्र से ओढ़ दें तो उसका बालक रोने से हट जाता है। श्वेतचन्दन को घिसकर जल में मिला लें, उसजल को इसमन्त्र से अभिमन्त्रित करके भूत–प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को पिला देने से बाधा तुरन्त शान्त होती है–अनुभूत है। दुकान में बिक्री न होती हो तो उन चीजों पर हाथ रखकर, इसमन्त्र को 7 बार पढ़ें, तो **बिक्री चौगुनी** हो जाए। इसमन्त्र को घर के भीतर की दीवार पर हल्दी से लिखने पर **आधि–व्याधि–महामारी** आदि नहीं रहती।

(12) गृहक्लेश दूर करने के लिए मन्त्र

निम्नमन्त्र को उत्तराभिमुख होकर रात के 9 बजे के बाद साढ़े 11 बजे से पहले प्रारम्भ करें। धूप–ज्योति जगाकर पांच–पांच माला मन्त्रजाप 33 दिन तक प्रतिदिन करें। तर्पण करें तथा ब्राह्मण भोजन कराएं। दीपावली की रात्रि या ग्रहण के समय निम्नमन्त्र को सिद्ध करके, लिखकर देने से एवं घर में हवन करने से घर में क्लेश दूर होकर, गृह में शान्ति हो जाती है।

मन्त्र – "ॐ दमयन्ती–नलाभ्यां तु नमस्कारं करोम्यहम्।
अभिवादो भवेदत्र कलिदोष–प्रशान्तिदः।।
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां प्रथगधियाम् ।
निर्वैरता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे।।"

(13) कुपथगामी पति किंवा पत्नी के वशीकरण के लिए मन्त्र

मन्त्र – "ॐ कामातुरे काममेखले विद्योषिणि नीललोचने !
"अमुकं" मे वश्यं कुरु–कुरु ह्रीं स्वाहा।। "

विधिः—इस उल्लिखित मन्त्र से मिठाई या किसी मीठी भक्ष्यवस्तु को सात बार अभिमंत्रित करें, फिर दोबारा उस व्यक्ति का नाम लेकर उस व्यक्ति का ध्यान करें कि वह व्यक्ति आपके चरणों में गिर रहा है, क्षमा याचना कर रहा है, ऐसा ध्यान करके, इसमंत्र से अभिमन्त्रित करें और उस चीज को कुपथगामी व्यक्ति को खिला दें। ऐसा ही चालीस दिन करें, व्यक्ति अवश्यमेव वश में हो जाएगा। ध्यान दें – इसमन्त्र में जहां 'अमुकं' लिखा है, वहां कुमार्गगामी व्यक्ति का नाम बोलना चाहिए।

(14) ऋणमुक्ति के लिए अनुभूत गणपति स्तोत्र

आजकल भौतिकगुण-प्रधानविश्व में व्यापारी लोग शेयरबाजार, सट्टा या व्यापारिक वस्तुओं के स्टॉक से उत्तरोत्तर लाभ लेने की दौड़ में लगे हैं। इस दौड़ में अधिकांश व्यापारी भारी हानि में फंसकर कर्जदार हो जाते हैं, परिणामस्वरूप आत्महत्या तक सोचने लगते हैं। ऐसी स्थिति में हम उन लोगों को परामर्श देंगे कि वे निम्नांकित श्रीगणेश जी के स्तोत्र का प्रातः प्रतिदिन पाठ करना प्रारम्भ करें, कुछ ही दिनों में ऋण से मुक्ति मिलने लगेगी, यह विश्वस्त व्यक्तियों द्वारा अनुभूत है। स्तोत्र का विनियोग एवं स्तोत्र निम्नांकित है –

विनियोगः—"ऊँ अस्य श्री ऋणविमोचन-महागणपति-स्तोत्र-मन्त्रस्य शुक्राचार्य ऋषिः, ऋण-विमोचन-महागणपतिः देवता, अनुष्टुप्-छन्दः, ऋणविमोचक—महागणपति-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।"

(यहां दाएं हाथ से जल का त्याग करें।)

स्तोत्र –

"ऊँ स्मरामि देव-देवेशं वक्रतुण्डं महाबलम्।
षडक्षरं कृपासिन्धुं नमामि ऋणमुक्तये ।।
महागणपतिं वन्दे महासेतुं महाबलम्।
एकमेवाद्वितीयं तु नमामि ऋणमुक्तये।।
एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रह्म सनातनम् ।
महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋणमुक्तये।।
शुक्लाम्बरं शुक्लवर्णं शुक्ल—गन्धानुलेपनम्।
सर्वशुक्लमयं देवं नमामि ऋणमुक्तये ।।
रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्त—गन्धानुलेपनम्।
रक्तपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।।
कृष्णाम्बरं कृष्णवर्णं कृष्णगन्धानुलेपनम् ।
कृष्ण—यज्ञोपवीतं च नमामि ऋण—मुक्तये।।
पीताम्बरं पीतवर्णं पीतगन्धानुलेपनम् ।
पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।।
धूम्राक्षं धूम्रवर्णं च धूम्रगन्धानुलेपनम् ।
सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।।
सर्वात्मकं सर्ववर्णं सर्वगन्धानुलेपनम् ।
सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।।
एतद् ऋणहरं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः।
षण्मासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशयः।।
सहस्रदशकं कृत्वा ऋणमुक्तो धनी भवेत् ।।"

।। ऋणनिवारक गणेशस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

(15) रोग—शान्ति एवं आरोग्य—लाभार्थ

" ऊँ मां भयात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्धय सर्वदा।
शरीरारोग्यं मे देहि देव देव नमोऽस्तु ते ऊँ ।।"

उल्लिखित मन्त्र को ग्रहण के समय या दीपावली की रात्रि में सिद्ध कर लें । तत्पश्चात् बर्तन में शुद्ध जल लेकर बर्तन को हाथ से ढककर सात बार इसमन्त्र का जप विश्वास पूर्वक करके रोगी को पिलावें। प्रतिदिन ऐसा करने से रोगी रोग से शीघ्र ही मुक्त हो जायेगा।

(16) सुलक्षणा—पत्नी प्राप्ति के लिए अनुभूत मन्त्र

मन्त्र– "ॐ क्लीं पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसार—सागरस्य कुलोद्भवाम् क्लीं ॐ।।"

इस मन्त्र का जाप शुभवेला में नियमपूर्वक प्रारम्भ करें। प्रतिदिन 3 माला प्रातः, सायं या रात्रि (एक सुनिश्चित समय) में लगातार इकतालीस–इकतालीस (41–41) दिन के तीन अनुष्ठान करें। इकतालीस दिन का अनुष्ठाम पूरा होने पर छोटे–छोटे लड़कों एवं कन्याओं को मीठा भोजन करावें। फल एवं दक्षिणा दें। इस प्रकार तीन अनुष्ठानों के अन्दर ही किंवा तीसरा अनुष्ठान पूरा होते ही पत्नी सुख प्राप्ति का योग बनेगा।

(17) अचानक आया संकट तुरन्त दूर हो

आजकल विश्व में अशान्त वातावरण से आत्मरक्षा के लिए किंवा समयानुसार सर्वविध संकटों से मुक्ति पाने के लिए आप निम्नांकित मन्त्र जाप करें–

"ॐ ह्रीं सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रय–भूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ह्रीं ॐ।।"

ऐसी स्थिति में, जबकि घर का कोई सदस्य भारी संकट में हो, राजभय किंवा आतंक का साया सिर पर हो तो अपने विश्वस्त विद्वान् –पण्डित से उक्त जाप कराएं अथवा स्वयं जप करें। समय कम होने की अवस्था में उल्लिखित मन्त्र का यथाशक्ति जाप करें एवं एक पान पर शाकल्य, 1 कमलगट्टा, 1 सुपारी, दो लौंग, एक इलायची, गुग्गुल की आहुति दें, मन्त्रजाप करते रहें, तुरन्त आपत्ति का निवारण होगा।

(18) शिशुरक्षार्थ एक अद्भुत प्रयोग

खिचड़ी, जल से परिपूर्ण कलश, उसी कलश में यथाशक्ति सुवर्ण, तिल, कूट ध्वजा, सुगन्ध द्रव्य, फूल, धूप और दीप–इन सभी वस्तुओं को एक मिट्टी के सकोरे में रखकर निम्नलिखित मन्त्र से 21 बार अभिमन्त्रित करें। पात्र (सकोरे) को बच्चे के सिर से स्पर्श कर बच्चों के क्रीड़ास्थल (खेलने के स्थान) पर रख आवें।

मन्त्रः– " नीलाम्बरधरे देवि पूतने विकृताननने।
शिशोर्विकारान्मुञ्चस्व प्रगृह्णीष्व बलिं त्विमाम्।।"

यह बलिप्रयोग पूतनाग्रह से ग्रसित बच्चे की अरिष्टशान्ति के लिए है– अनुभव करें।

(19) सर्वग्रह शान्त्यर्थ एक अद्भुत मन्त्र

मन्त्रः– " ॐ मुक मुक एक एक हुष हुष जय जय आगच्छ आगच्छ ठः ठः स्वाहा।"

लौंग, लौहवान (लोवान), गुग्गुल– तीनों को इकटठा कूट–पीसकर मिला लें। उपरोक्त मन्त्र से पीड़ित व्यक्ति की अरिष्टशान्ति की इच्छा से अष्टोत्तर संख्या में आहुतियां डालें। ऐसा करने से ग्रहजन्य पीड़ा से शान्ति मिलती है। उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित किए हुए लौंग आदि को धूप के रूप में भी प्रयुक्त किया जा सकता है।

(20) नेत्रज्योति–वर्धक मन्त्र

मन्त्र– " ॐ आपः पृणीत भेषजं वरूथं तन्वे मम। ज्योक् च सूर्यं दृशे।"

इस मंत्र से नेत्रों को जल के छींटे देने से नेत्र ज्योति बढ़ती है।

(21) सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र

विधि– इस यन्त्र को हल्दी से कागज पर लिखें, साथ ही अपना मनोरथ भी लिखें, फिर दीपक पर जलावें। इसी प्रकार 7 रविवार तक करें, तथा हल्दी की माला से " ॐह्रीं " इस मन्त्र की 21 माला नित्य जपें तो सब दुःख दूर होते हैं और कार्य सिद्धि भी होती है।

सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र			
५	१५	२	७
६	३	११	१२
१४	६	८	१
४	५	१०	१३

(22) वशीकरण करने का यंत्र

विधि– भोजपत्र पर गोरोचन केसर से लिखकर इस यन्त्र को धारण करने से सर्वजन वश में हो जाता है।

।।।	६५	१३	३०
३	६६	३१	४
३०।	।५।	६६	।५
६६	।६	०३।।	।।६

(23) वरप्राप्ति यन्त्र

विधि–विवाह योग्य कन्याओं को चाहिए कि वे इस यन्त्र को सफेद कागज पर लाल स्याही से 72 बार लिखकर गन्धाक्षत से पूजन करें । 72 दिन तक इस प्रयोग के करने पर योग्य वर प्राप्त हो सकता है । कार्य का प्रारम्भ शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिए ।

वरप्राप्ति यन्त्र			
७	३१	३४	क्लीं
३३	१	६	३२
२	३६	२९	५
३०	४	३	३५

(24) विजय प्राप्त करने का यन्त्र

विधि– इस यन्त्र को शुभ दिन, डाब की जड़ से भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखे, फिर पूजा करवा के अपने पास रखे तो विजय प्राप्त होती है ।

विजय प्राप्ति यन्त्र		
४०	५	३०
२०	२५	३०
१५	४५	१५

इन यन्त्रों को रविपुष्यामृत या गुरु–पुष्यामृत योग, दीपावली / ग्रहण आदि में सिद्ध करके धारण करने से पहिले निम्नांकित मन्त्र उच्चारण करें, सब कार्य सिद्ध होने लगेंगे।

मन्त्र–" ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात् ।"

आभार प्रदर्शन

हमारे परम सहयोगी मित्रवर ज्ञानी श्री करतार सिंह जी 'गढ'

(मालिक, कंवल फोटोस्टेट, चौक माता रानी, कुराली, PH. 0160-2641274)

श्री करतार सिंह जी ज्ञानी, सन् 1992 ई. से हमारी 'शिरोमणि तिथपत्रिका' (पंजाबी) और 'श्री मार्त्तण्ड आलम जन्त्री' (उर्दू) के अनुवाद, पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का श्रमसाध्य पूरा कार्य अत्यन्त आत्मीयभाव, तन्मयता, परिश्रम तथा निःस्वार्थभाव से करते चले आ रहे हैं, जिससे ये दोनों प्रकाशन प्रतिवर्ष उत्तरोत्तर समृद्ध कलेवर में हमारे पाठकों को उपलब्ध होने लगे हैं। अब तक श्रीमार्त्तण्डपंचांग (हिन्दी) की ही संस्कार–समृद्धि की ओर हमारा अधिक झुकाव रहा । अतः ज्योतिष से सम्बद्ध विशेष लेखमाला तथा अन्य ज्ञानवर्धक स्तम्भ हम इसी (हिन्दी) पंचांग में प्रकाशित करते रहे हैं। उर्दू एवम् पंजाबी की इन जन्त्रियों में ऐसे लेख एवम् स्तम्भों को समाविष्ट करने से हम अनुवाद आदि के लिए समय की कमी के कारण, आज तक कतराते रहे हैं। लेकिन अब **प्रियमित्र ज्ञानी करतार सिंह जी** की हमसे निःस्वार्थ घनिष्ठता एवम् उर्दू–पंजाबी भाषाओं में इनकी प्रशस्य दक्षता के कारण इन दोनों प्रकाशनों को भी हम ऐसे लेख–स्तम्भों से श्री मार्त्तण्डपंचांग की ही भान्ति अलकृत करने में अपने आप को समर्थ पा रहे हैं। विगत कुछ वर्षों से दिए जा रहे नए–नए आकर्षक, ज्ञानवर्धक विषयों से वर्धमान कलेवर वाली **'शिरोमणि तिथपत्रिका'** का श्रेय आपको ही है। इन उर्दू–पंजाबी जन्त्रियों के अनुवाद आदि के भारी उत्तरदायित्त्व को पूरी तरह निभाते हुए आप जैसे–तैसे समय निकालकर हिन्दी के श्रीमार्त्तण्डपंचांग की प्रूफरीडिंग आदि में भी हाथ बंटाने में हर्ष अनुभव करते हैं। अपने प्रति इस निःस्वार्थ सौहार्दातिशय के लिए हम सभी हृदय से ज्ञानी जी के ऋणी है । आप अपने व्यस्त जीवन के क्षणों में भी हमारे लिए प्रचुर पर्याप्त समय सहर्ष निकाल लेते हैं। आपके इस सौहार्दभरे स्पृहणीय सहयोग से हमारा प्रकाशन–कार्यभार काफी कुछ हल्का हुआ है। एतदर्थ हम आपके प्रति विनम्रतापूर्वक आभार प्रकट किए बिना सचमुच नहीं रह सकते।

आपका सहयोग भी हमारे लिए कम महत्त्वपूर्ण नहीं है

श्रीमार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय कुराली के प्रबन्धक, हमारे पूज्य पिताजी के प्रियशिष्य, हमारे अनुजकल्प *चि. प्रेमचन्द्र शर्मा;* सोलन (हि.प्र.) निवासी चि. *श्रीकृष्णशर्मा, शास्त्री,* **M.A.,** वेदाचार्य, साहित्याचार्य; नालाबलोग (पंचकूला) के निवासी *चि. सुरेशानन्द शर्मा,* बी.ए., सुपुत्र श्री सुन्दरराम शर्मा भी 'श्रीमार्त्तण्डपंचांग' (हिन्दी) की पाण्डुलिपि–लेखन, प्रूफरीडिंग आदि का काम बड़ी तत्परता, सावधानी, अपनापन और आदरभाव से करते हैं। विगत वर्ष (सन् 2014 ई.) से चि. रवि सन्धु सुपुत्र राणा रणजीत सिंह, वार्ड नं. 2, कुराली (पं.) एवम् इस वर्ष (सन् 2015 ई.) से *चि. सचिन शर्मा सुपुत्र श्री प्रेमचन्द्र शर्मा ने* भी इस कार्य में अपना सहयोग देना प्रारम्भ किया है। इस पंचांग के प्रकाशनकार्य का हमारा भार इन युवाओं के स्वत्व भरे उत्साहपूर्ण सहयोग से काफी हल्का हुआ है। एतदर्थ इनके निरन्तर प्रगतिमय, परमोज्ज्वल भविष्य के लिए हमारा इन्हें सस्नेह आशीर्वाद है।

सम्पादक–मण्डल

सौर परिवार का स्थावर एवम् जंगम जगत् पर प्रभाव

(एक संक्षिप्त विवरण)

लेखक–संयमी शर्मा

ज्योतिष क्या है ? क्या एकमात्र सूर्यादि ग्रहों का बोध कराने वाले शास्त्र को ही ज्योतिषशास्त्र कहते हैं ! सृष्टि प्रत्येकरूप से कालचक्र से बाहिर नहीं तथा इस कालचक्र का सही निरूपण एवम् शुभाशुभ सौरपरिवार पर ही निर्भर है। सहीरूप से ज्योतिषशास्त्र जनहितार्थ ऋषि–मुनियों के अनुभव (अनुसन्धान) का ही परिणाम है। भारतरत्न डॉ. पी. वी. काणे ने अपनी **' History of Dharam shastra'** (**हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र**) में स्पष्ट लिखा है– As a science astrology has discovered "Correct methods and reached correct knowledge about the influence of planets on the human mind and on the day to day activities of human beings."

प्रो. एम. रामकृष्ण भट्ट के अनुसार– "Asrtology is, therefore, a valuable guide to look up to, in order to have an insight into one's own life, here as well as here after"

अतः Astrology and Astronomy एक विलक्षण विज्ञान हमें प्राप्त है, जोकि एक–दूसरे से पृथक नहीं किए जा सकते, जिससे हम सौरपरिवार पर कुछ चिन्तन करने के लिए प्रेरित हैं। विषय–वस्तु बहुत गम्भीर है लेकिन मोटे तौर पर केवल सौरपरिवार पर ही कुछ लिखने का दुःसाहस कर रहे हैं। इस गंभीर विषय पर बहुत ही पल्लवग्राहित्व प्रयास के लिए विद्वान् क्षमा करेंगे। आयुर्वेद के विद्वान् **पैरासेल्सस** का मत है कि– ज्योतिषविज्ञान एकमात्र आकाशीय–पिण्डों की गति–स्थिति की जानकारी मात्र ही नहीं है, अपितु ग्रहों के पृथ्वी के वातावरण, प्राणियों एवम् अचेतन जगत् पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन–विश्लेषण एवम् परस्पर आदान–प्रदान से लाभ उठाना भी इसका उद्देश्य है।

सूर्य– यह ग्रहपिण्ड, जिन्हें शास्त्रों में एक विलक्षण रूप से वर्णित किया है, इन्हें ही इस ब्रह्माण्ड के संचालक एवम् निर्माता के रूप में वर्णित किया गया है। आजकल के KENTS आदि वैज्ञानक पृथ्वी को सूर्य की ऊर्जा किंवा सूर्य के पिण्ड से छिटके हुए एवम् शीतलता को प्राप्त खण्ड के रूप में ही जानते हैं।

विश्व में दृश्य किंवा अदृश्य (भविष्य के गर्भ में निहित) संसार को संचालित करने में सक्षम यह अद्भुत सौर–परिवार ही है जिसे हम विभिन्न ग्रहों के रूप में अध्ययन करते हैं व दान–पूजार्चना द्वारा इन्हें प्रसन्न करते हैं। कल्पित मूर्तियों के रूप में पूजने एवम् मन्दिरों में आराधना का चलन तो सदियों बाद शुरू हुआ है, लेकिन प्रत्यक्ष में दिखाई देने वाले जीवनाधायक सूर्यदेव की उपासना तो वैदिक–काल से ही प्रचलित है। प्रतिदिन आकाश में तपते–चमकते–विराट–अग्निपिण्ड के रूप में अपनी उपस्थिति से सम्पूर्ण भूगोल को प्रकाशित करते हुए सूर्य को देखकर प्राणियों (विशेषतः मनुष्यों) का ध्यान अपने भीतर बैठी सूक्ष्म–शक्तियों के अन्वेषण में प्रवृत्त हुआ। उन शक्तियों को जानने किंवा गवेषणा ने ही साक्षात्–कृद्धर्मा ऋषियों ने ही सूर्य को **'जगत् की आत्मा'** के रूप में स्थापित किया है;–

जीवात्मा **'ज्ञान'** के अधिकरण के रूप में स्पष्ट दिखाई देता है। परन्तु परमात्मा तो एक ही है जिससे पशु–पक्षी एवम् वृक्षों में आक्सीजन–नाइट्रोजनप्राप्ति किंवा परित्याग के रूप में सूर्य से प्राप्त करते हैं। सूर्य न होता तो जीवनाधायक गैसों के आदान–प्रदान न होने से वृक्ष, पौधे एवम् सम्पूर्ण संसार ही निष्क्रिय किंवा समाप्त हो जाता।

इस आध्यात्मिक सच्चाई (सूर्य की जीवात्मा रूप में स्थिति) से पहिले प्रसिद्ध नक्षत्र विज्ञानी **'जे. एस. पुण्डीर'** के अनुसार सूर्य व्यक्ति एवम् स्थावर जगत् को जीवन भर प्रभावित करता रहता है। इस प्रभाव

की रूपरेखा जन्म के समय ही निर्धारित कर देता है। अनुसन्धान के अनुसार प्रत्येक 11 वर्ष में वृक्षों के मूलभूत–स्तम्भ पर एक गहरा छल्ला बनता है। इसका कारण सूर्य में क्रमशः ग्यारहवें वर्ष में चुम्बकीय एवम् नाभिकीय–तूफान ही है।

अन्तरिक्ष–विज्ञानी **'डॉ. लिंडन वोहर'** का चिन्तन है, कि ये नाभिकीय तूफान वृक्षों के साथ जीव–जन्तुओं और अन्तर्ग्रही आदान–प्रदानों को भी प्रभावित करते हैं। कीट–पतंग से लेकर ग्रह–नक्षत्रों तक, सौर–मंडल के हर घटक पर सूर्य में घटित होने वाले आग्नेय–तूफानों का अलग–अलग असर पड़ता है। विस्तार से किए गए मन्थन के बाद डॉ. वोहर ने अपनी पुस्तक **" द वाइब्रेट लाइफ साईकिल आन सन "** में लिखा है, कि सूर्य में घटित होने वाली उथल–पुथल के प्रभाव को एक पंक्ति में व्यक्त करें, तो इन तूफानों के कारण जीवन जिन रूपों में भी मौजूद है, वह हर ग्यारहवें साल विक्षुब्ध होता है। इन अध्ययनों का एकमात्र तत्त्व यह है, कि– सम्पूर्ण स्थावर एवं जंगम–जगत् (जीव–जन्तु, वृक्ष, वनस्पति आदि) अन्ततः सूर्यरूपी ग्रह से ही संचालित है। अतः उपनिषदों का यह सन्देश शतप्रतिशत सही है, कि **'सूर्य जगत् की आत्मा है–" "सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।"**

नवग्रहों में सूर्य को राजपद से अलंकृत किया जाता है। क्योंकि समस्त ब्रह्माण्ड इसी से आलोकित होता है। सारे भौतिक–विज्ञानी **"सृष्टि के अस्तित्व को सुरक्षित रखने, सृष्टि के विकास एवम् पोषण में सूर्य ही सक्षम है।"**– इस सत्य को स्वीकार करते हैं।

यदि सूर्य जन्म समय नीच, क्रूरग्रह–संन्निकर्ष एवम् नीच नवांशक में हो तो जातक को नेष्टफलप्रद होता है। सूर्य नेष्टफलप्रद हो तो कुष्ट रोग, व्यर्थ परिश्रम, पदच्युति, धनहानि, नेत्रपीड़ा, हृद्रोग आदि से जातक को निराश करता है; यह फल गोचर में नेष्ट होने से भी करता है;–

**जन्मन्यायासदोर्कः क्षुपयति विभवान् कुष्ठरोगाध्वदाता।
वित्तभ्रंशं द्वितीये दिशति च सुखं वञ्चनां हृद्रुजं च।।"**

सूर्यदेव के नेष्टफलप्रद होने पर सूर्य का रत्न **'माणिक्य'** (Ruby) धारण करने का विधान है। रत्न के प्रभाव में वृद्धि करने के लिए सूर्य से सम्बन्धित ' ॐ घृणिः सूर्याय नमः" इस मन्त्र का सोने या चान्दी का यन्त्र बनाकर उसके साथ या मध्य में माणिक रत्न को जड़वा कर गले में इतवार वाले दिन धारण करें। यह रत्न(एकमात्र) अंगूठी में भी धारण कर सकते हैं। माणिक रत्न धारण करते समय सूर्य मेष या सिंह राशि में हो या सूर्य की होरा में माणिक्य रत्न धारण करें। रत्न मघा नक्षत्र में खरीदें तो अधिक उपयुक्त रहे।

माणिक्य में ऐल्युमीनियम, लौह क्रोमियम एवं आक्सीजन आदि तत्वों का मिश्रण होता है। यह मानव जीवन को सक्रिय एवम् उत्साहित करके सफलता प्रदान करने की क्षमता रखता है। सूर्य की किरणों के सम्पर्क से यह रत्न जीवनाधायक माना गया है।

चन्द्र– चन्द्रमा पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है। आचार्य **वराहमिहिर** के समय कुछ लोग चन्द्र की स्थिति सूर्य से ऊपर मानते थे, लेकिन आचार्य ने चन्द्र को सूर्य के नीचे ही स्वीकार किया है। सूर्य के नीचे चन्द्र की स्थिति होने से चन्द्र के जिस भाग पर सूर्य की किरणें पड़ती हैं, वह भाग चमकता है। कहने का तात्पर्य यह है, कि **'चन्द्र स्वयं–प्रकाश' नहीं, सूर्य के प्रकाश से ही चन्द्र चन्द्रिकायुक्त (प्रकाशित) है। 'बृहत्संहिता'** में लिखा है कि– सूर्य के प्रकाश (आतप) में रखे घड़े का जो भाग सूर्य की ओर होगा, वह भाग ही प्रकाशित होगा। उसी प्रकार चन्द्र का सूर्य के समक्ष–स्थित भाग ही प्रकाशित होता है–

**"नित्यमधःस्थस्येंदोर्भाभिर्भानोः सितं भवत्यर्द्धम्।
स्वच्छाययाऽन्यदसितं कुम्भस्येवाऽऽतपस्य।।"**

जलीय–उपग्रह चन्द्र पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो रात्रि में चन्द्रिका का आभास होता है और अन्धकार में भी प्रकाश की प्रतीति होती है। जिस प्रकार घर में सूर्य की किरणों के समक्ष स्थापित दर्पण (शीशा) से परिवर्तित होकर सूर्य की किरणें घर के अन्तरस्थ–भाग को भी प्रकाशित करती है, उसी प्रकार जलमय–चन्द्र पर सूर्य की किरणें उस चन्द्र को प्रकाशित करती हैं। **'आर्यभट्ट'** ने इसी बात को इस प्रकार स्पष्ट किया है–

**" भूग्रह–भानां गोलार्धानि स्वच्छायया विवर्णानि।
अर्धानि यथा सार्धं सूर्याभिमुखानि दीप्यन्ते।।"**

चन्द्र स्वयं प्रकाश नहीं अपितु सूर्य–मण्डल से ही यह प्रकाशित होता है;–इस तथ्य को **श्री हर्ष** ने **" नैषधचरित सर्ग–6 "** में इस प्रकार

लिखा है कि– 'दिक्पालों की ओर से दमयन्ती के कुण्डिनपुर पहुंचने पर नल सारथि–सहित रथ से उतर कर उस नगरी में इस प्रकार प्रविष्ट हुए जिस प्रकार सूर्य मण्डल से निकल कर सूर्य की किरणें चन्द्रबिम्ब में प्रविष्ट होती हैं।

" रथादसौ सारथिना सनाथाद् राजावतीर्याय पुरं विवेश।
निर्गत्य बिम्बादिव माननीयात् सौधाकरं मण्डलमंशु–संघः।।"

बहुत स्पष्ट है कि सूर्य एवम् चन्द्र की विशेष स्थिति एवम् समुद्री तूफान, भूकम्प, पूर्णिमा की निकटवर्ती द्वादशी किंवा अमावस के अन्तिम घण्टों में ही प्रत्यक्षतः अनुभव किय गए हैं। क्योंकि इनका गुरुत्वाकर्षण पर प्रभाव **सीस्मोग्राफिक वेवस** एवम् चट्टानों को प्रभावित करता है।

इतिहास गवाह है, कि–जब कभी विनाशकारी भूकम्प, सुनामी आदि से भयंकर जनधनहानि होती है, तो भारतीय–महाद्वीप में उस समय पूर्णिमा किंवा अमावस्या के लगभग ही घटित होते हैं– **जैसे–** 26 दिसम्बर, सन् 2004 ई. को भारत में अण्डेमान–निकोबार द्वीप समूह, थाईलैण्ड, लंका एवम् दक्षिण–पूर्वीय समुद्रतटवर्ती देशों में सुनामी लहरों द्वारा व्यापक जनधन हानि हुई थी। यह भविष्यवाणी **'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग'** में भी की जा चुकी थी।

इसी प्रकार सूर्य–चन्द्र की स्थिति के आधार पर **भुज** भूकम्प 26 जनवरी, 2001 ई. का ऐतिहासिक भूकम्प एवम् अनेकों प्राकृतिक–आपदाओं की भविष्यवाणी दैवज्ञ करते रहे हैं। जन्मपत्रिका द्वारा फलादेशकथन में चन्द्रमा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। कई दैवज्ञ तो चन्द्र को लग्न मानकर किंवा केन्द्र मानकर फलादेश करते हैं,–**"लग्नात् चन्द्रवशाच्चापि वाच्यं बल–विवेकतः।"** चन्द्रमा–मन (चिन्तनशक्ति) को प्रभावित करता है। जन्माङ्ग में चन्द्रमा अशुभ किंवा नीच हो तो जलतत्त्व प्रधान होने से शारीरिक रक्त–संचार को भी प्रभावित करता है, जिसका संचालक हृदय (Heart) है। माता का विचार भी चन्द्र से किया जाता है। स्त्रीवर्ग का ग्रह होने से चन्द्रमा सभी ग्रहों को प्रभावित भी करता है। नीच चन्द्र जन्माङ्ग में **'विचारशक्ति'** को तो प्रभावित करता ही है, साथ ही विषयवासना से भी जातक को हीनमति करता है। **चन्द्र की स्थिति के ज्ञान से फलितशास्त्री काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश कह सकते हैं। इसका वैज्ञानिक–रहस्य भी है।** निकटतम होने से चन्द्र का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक अनुभव किया गया है। समुद्र में **'ज्वारभाटा'** लाने में भी चन्द्रमा सूर्य से द्विगुणित प्रभाव रखता है, क्योंकि चन्द्रमा का ज्वारभाटांक सूर्य के ज्वारभाटांक से दोगुणा है। चन्द्रमा के भगणकाल का **'स्त्री के मासिक धर्म'** से भी साक्षात् सम्बन्ध आयुर्वेदज्ञ मानते हैं। चन्द्रमा पृथ्वी से 3, 82, 400 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इसका व्यास 3456 किलोमीटर कहा गया है। सूर्य के प्रकाश से ही यह प्रकाशित होता है और पृथ्वी का चक्कर लगभग 28 दिन में पूरा कर लेता है। चन्द्र पश्चिमोत्तर दिशा का स्वामी है। श्वेतवर्ण, जल एवम् स्त्रीतत्त्व का परिचायक है।

माता, स्त्री, वनस्पति, सौन्दर्य, मानसिक–स्वास्थ्य, शिष्टता, दूरदर्शिता, स्मृति, जलयात्रा, पारिवारिक जीवन, मानसन्मान एवम् व्यवहारकुशलता, भावनात्मक सम्बन्ध का कारक चन्द्र ही है।

चन्द्र से जातक के हृदय, मस्तिष्क, रक्तचाप, नेत्र, गुर्दे, शरीर में जलस्तर, पागलपन, लकवा, हिस्टीरिया, चर्मरोग–सम्बन्धी रोग शुभाशुभ चन्द्र के विचार से कहे जा सकते हैं। वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचरजगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्टरूप से ज्ञात होता है। इसीलिए चन्द्रमा को **'औषधीनां पतिः' भी कहा गया है।** अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रांग के आधार पर ही फलादेश करने की परिपाटी को ही फलित–शास्त्री महत्ता देते हैं।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीख के हिसाब से भी फलादेश करने लगे हैं। इस पद्धति के अनुसार सायन–सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश करते हैं, जबकि चन्द्रराशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन–फलितज्ञों ने जन्मकालीन चन्द्र की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारी प्राचीन फलित–प्रक्रिया में इसका विशेष महत्त्व है।

यदि जन्माङ्ग में आपका चन्द्र नीच किंवा खलयुत है तो आप 5 से 7 रत्ती तक शुद्ध गोल मोती सोना विशेषतः चान्दी की अंगूठी में सोमवार को, सम्भव हो तो पुष्यनक्षत्र में धारण करें। मानसिक शान्ति मिलेगी। अच्छे सहयोगियों का मार्गदर्शन मिलेगा।

मंगल ग्रह– सौर जगत् में पृथ्वी पर ही आज हम जीवन को देखते आ रहे हैं। जीवनाधायक प्राकृतिक परिस्थितियां यहां जीवन प्रदान कर रही हैं। सूर्य को तो जगत् की आत्मा के रूप में अनन्तकाल से ही स्वीकार करते आ रहे हैं, लेकिन सूर्य के अधूरे कार्य का पूरक–मंगल भी है, जोकि जलवायु को प्रभावित करके फसलों की परिपक्वता देता है। संस्कृतज्ञ एवम् वैज्ञानिक लोग मंगल को पृथ्वी का पुत्र (भौम) मानते हैं। क्योंकि मंगल जलवायु की अनुकूलता से पृथ्वी पर " **अन्नं वै प्राणः**" अन्न एवं वनस्पतियों की परिपक्वता प्रदान करता है।

मंगल की सूर्य से दूरी 14 करोड़ 17 लाख मील के लगभग मानते हैं। मंगल का व्यास 4, 216 मील कहा जाता है। अपनी कक्षा में 24 घण्टा 37 मिनट के लगभग एक परिक्रमा करता है।

अब मंगल पर भारत ने एक ही प्रयास में यान भेजकर एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया है। यह भी जानकारी मिली है कि पृथ्वी की भान्ति वहां जल एवम् विशाल पर्वत भी हैं। आगे भी भारत स्पेस–साईस में भव्य कीर्तिमान स्थापित करके विश्व में सर्वमान्य होने का गौरव प्राप्त करेगा– ऐसा विश्वास है। मंगल ग्रह के दो चन्द्रमा हैं जिन्हें **फोबोष** और **डिमोज** नाम से जाना जाता है। मंगल और पृथ्वी पर ऋतुएं ज्यादातर एक जैसी हैं।। लेकिन ऋतुओं की लम्बाइयां पृथ्वी से लगभग दो गुनी हैं।

वैज्ञानिकों के प्रमाण सुझाव देते हैं कि मंगल ग्रह–जैसा कि आज है, उसकी तुलना में एक समय काफी अधिक रहने योग्य था। परन्तु चाहे जो हो वहां कभी रहे जीवों की मौजूदगी अनजान बनी हुई है। मध्य 1970 के **वाइकिंग यान** ने अपने सम्बन्धित अवतरण–स्थलों पर मंगल की मिट्टी में सूक्ष्मजीवों का पता लगाने के लिए जान–बूझ कर परीक्षण किये और परिणाम सकारात्मक रहा, जिसमें पानी और पोषक तत्त्वों पर से अनावृत CO_2 के उत्पादन की एक अस्थाई वृद्धि भी शामिल है। जीवन का यह चिन्ह बाद में कुछ वैज्ञानिकों के द्वारा विवादित रहा था, जिसका परिणाम निरन्तर बहस के रूप में हुआ। नासा के वैज्ञानिक **गिल्बर्ट लेविन** ने जोर देते हुए कहा कि **वाईकिंग ने जीवन पाया हो सकता है।** आधुनिक ज्ञान के प्रकाश में जीवन के **चरमपसंदीरूपों** के वाइकिंग आंकड़ों के एक पुनः विश्लेषण ने सुझाव दिया है कि जीवन के इन रूपों का पता लगाने के लिए वाईकिंग के परीक्षण पर्याप्त परिष्कृत नहीं थे। इस परीक्षण ने एक जीवनरूप (कल्पित) को भी मार डाला है। **फीनिक्स मार्स लैंडर** द्वारा किए गए परीक्षणों से पता चला है कि मिट्टी की एक बहुत **क्षारीय** pH है और यह मैग्नीशियम, सोडियम, पोटेशियम और क्लोराइड शामिल करता है। मिट्टी के पोषक तत्व जीवन को आधार देने के लिए समर्थ हो सकते हैं लेकिन जीवन को अभी भी गहन पराबैंगनी प्रकाश से परिरक्षित करना होगा। मंगल अधिकार एवम् पराक्रम का प्रतीक ग्रह है। जब यह शनि के साथ मेल करता है तो और उग्र होकर युद्ध की स्थिति बनाता है एवम् पृथ्वी के विशेष भूभाग को अकालग्रस्त भी करता है–" **युद्धदौ शनि–माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ।**" इसीलिए मंगल को **'अंगारक', क्रूरनेत्र, क्षितिज, आग्नेय** नाम से भी जाना जाता है। इसका क्षेत्र वृश्चिक एवम् मेष राशि ही जाना गया है।

मंगल जब मेष, वृश्चिक में प्रसार करता है तो जातक को जमीन जायदाद का स्वामी, वाहन का सुख एवम् कृषिकर्म व जड़ी–बूटियों से लाभ देता है। मंगल जब उच्च (मकर) राशि में हो तो जातक को राजकीय–विशेषाधिकार, सेना में पद–प्राप्ति एवम् प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बनाता है। विदेश यात्रा भी अनेक बार होती है।

जब मंगल अपनी नीच राशि (कर्क) में स्थित होता है तो नीचवृत्ति से अर्थोपार्जन, यात्रा (सवारी) से दुर्घटना, पशुधनहानि, जमीन–जायदाद (बुजुर्गों द्वारा दी गई) की हानि, राजा, अग्नि, भाई–बन्धु से वैमत्य रहता है– " **अग्नि–चौरादिजं भयम्।**" भारत विश्व का पहला देश है जिसने प्रथम प्रयास में ही मंगल पर यान पहुंचाया है। इस यान से मंगल ग्रह पर जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं;–

(1) मंगल पर भरपूर आयरन–आक्साईड होने से यह लाल रंग का नज़र आता है।

(2) इसे ग्रीक शब्द 'मार्स' नाम से जाना जाता है, क्योंकि यह 'युद्ध का देवता' है।

(3) यह सूर्य से 227,000,000 किलोमीटर दूर है। सूर्य तथा मंगल

के बीच बुध–शुक्र और पृथ्वी हैं।

(4) मंगल ग्रह के दो चन्द्रमा हैं।

(5) मंगल पर एकदिन 24 घण्टे से कुछ बड़ा है और पृथ्वी की तुलना में यहां गुरुत्वाकर्षण भी कम है।

(6) मंगल सूर्य की परिक्रमा 687 दिनों में करता है।

(7) सौरमण्डल में सबसे बड़ा ज्वालामुखी मंगल पर ही है। इसका नाम ' ओर्लम्पस मोंस' है। यह तथ्य मंगल यान से प्राप्त हुए हैं लेकिन और भी जानकारी हमारे पुरातन–ग्रन्थों में उपलब्ध है; जो कि अभी शोध का विषय है।

मंगल वक्री हो तो अग्नि एवम् चौरादि से धनहानिकारक भी होता है। स्थावर वस्तुओं (जंगल, औषध एवम् जड़ी–बूटियों) की नीचस्थ मंगल सूखाग्रस्त करके भारी हानि करता है।

मंगल की दृष्टि जन्माङ्ग में चतुर्थ, सप्तम एवम् अष्टम भाव पर ही रहती है। अतः जगत् लग्न कुण्डली एवम् संवत्सर कुण्डली द्वारा इन भावों पर विचार करके जलवायु एवम् कृषि आदि के बारे में विचार किया जा सकता है।

बुध ग्रह–बुध बालग्रह है, जोकि हमेशा सूर्य के आसपास ही रहता है। **गाम्भीर्य एवम् विवेकशक्ति का प्रतीक यह ग्रह स्वतन्त्ररूप से विशिष्ट फलदाता नहीं। बुध ग्रह को हम जलवत् समझें, जैसा रंग जल में मिलता है वैसा ही हो जाता है। इसी प्रकार सूर्य के साथ मिलकर 'बुधादित्य योग, शुभंकर हो जाता है, लेकिन अन्य ग्रहों की संगति में यह न्यूनाधिक फलप्रभावी ग्रह के अनुरूप हो जाता है।**

बुध ग्रह का मेदिनी पर प्रभाव– **'पराशर'** ने बुध की सात गतियां कही हैं। लेकिन **'देवलाचार्य' ने केवल चार गतियों को ही स्वीकारा है।**

संक्षेप में– बुध के उदयास्त–फलानुसार वैशाख, आषाढ़, श्रावण, पौष, माघ में बुध का उदय भयकारक लिखा है। **'वृद्धगर्ग'** के अनुसार

रोग, दुर्भिक्ष, वायुप्रकोप, वैशाख में महामारी, आषाढ़ व श्रावण में दुर्भिक्ष की स्थिति बनती है–

**" पौषे करोति मरकं माघे वातं तथा च सोमसुतः।
वैशाखे जनमरकमाषाढ़े श्रावणे च दुर्भिक्षम्।।"**

नोट करें–जिन ग्रहों की कक्षाएं सूर्य से पृथ्वी की कक्षा के भीतर हैं–वे आभ्यन्तर ग्रह हैं। बुध–शुक्र दोनों आभ्यन्तर ग्रह हैं। हमारा चन्द्र भी आभ्यन्तर पिण्ड है; जो कि सूर्य की परिक्रमा कर रही पृथ्वी के गिर्द चक्कर लगाता है। शेष सभी ग्रह बाह्य हैं क्योंकि वे सूर्य एवम् पृथ्वी की कक्षा के मध्य न हो कर बाहिर ही हैं। बुध बहुत ही छोटा ग्रह है अतः इसे देखना भी सहज संभव नहीं है।

बुध की विशेषता यह है कि जब यह सूर्य–शनि–मंगल–राहु–केतु आदि ग्रहों के साथ मेल (राशि–सम्बन्ध) करता है, तो यह अशुभ एवम् क्रूर हो जाता है। अकेला बुध जब उदित होता है तो उत्पात (जल–अग्नि किंवा वायुवेग) से हानिकारक हो जाता है–

**" नोत्पात परित्यक्तः चन्द्रजो ब्रजत्युदयम्।
जल–दहन–पवनभयकृद्–धान्यार्धक्षय–विवृद्धयैव।।"**

इस समय कृषि–वृक्ष एवम् जड़ी–बूटियों को भी हानि पहुंचती है।

रोमन मिथकों के अनुसार बुध ग्रह व्यापार, यात्रा किंवा अफवाहों का देवता है। यह देवताओं का सन्देश–वाहक भी माना गया है। यह आकाश में तेजी से गमन करता है। बुध पर पृथ्वी जैसे अन्य ग्रहों के समान मौसम में कोई परिवर्तन नहीं होता। बुध की धरती क्रेटरों से अटी पड़ी है और इसकी धरती बिल्कुल हमारे चन्द्रमा जैसी है। इससे संकेत मिलता है कि–भूवैज्ञानिक–रूप से यह अरबों वर्षों तक मृतप्रायः रहा है। बुध सौरमण्डल के चार स्थलीय ग्रहों में से पृथ्वी के समान एक पिण्ड मात्र है।

प्रथम भाव में बुध– शुक्र या गुरु के साथ होकर जातक को विद्वान, उदार, उत्तमवक्ता, नेता, तार्किक, साहित्य–काव्यप्रेमी एवम् शासन व्यवस्था की तरफ प्रवृत्त करता है।

द्वितीय भाव में– वैज्ञानिक, कवि, साहित्यकार, विपुल धन–सम्पत्ति का स्वामी बनाता है।

तृतीय भाव में– बुध चंचलस्वभाव, व्यापारी एवम् जातक को परिस्थितियों के अनुकूल बनाता है।

चतुर्थ भाव में– धनी, पण्डित, दुर्बल शरीर, स्थावर सम्पति का स्वामी, राज्याधिकारी एवम् एकाधि स्त्री संग देता है।

पंचम भावस्थ बुध– सन्तति, विद्या एवम् वैभव का सुख नियन्त्रित करता है। यदि सूर्य या गुरु के साथ पंचम भाव में हो तो सन्तति–कष्टकारक होता है। पंचमभावस्थ– बुध पूर्वजों की सम्पदा एवम् वन्य सम्पति का ह्रास करता है।

षष्ठ भावस्थ बुध– जातक को उग्र–प्रकृति, कामातुर, गुप्त–क्रूर शत्रुओं से भयप्रद होता है। मानसिक रोगी भी बना सकता है।

सप्तम भावस्थ बुध– हो तो जातक यशस्वी, चंचल, परगामी, ज्योतिषी, वाचाल, वकील होता है।

अष्टम भावस्थ बुध– हो तो जातक कुरूप, कामी, बड़ी आयु की स्त्री से सम्बन्ध बनाकर धनाढ्य होता है।

नवम भावस्थ बुध– हो तो जातक सदाचारी, साहित्यकार, दार्शनिक, प्रतापी, यशस्वी, तीव्रबुद्धि, व्यवहार–कुशल होता है।

दशम भावस्थ बुध– होने पर गणितज्ञ, अध्यापक, कलर्क, पिता के व्यवसाय से लाभ लेने वाला होता है।

एकादश भाव में बुध– होने पर जातक नीति–निपुण, समृद्ध, मित्रों से लाभान्वित होता है।

द्वादश भावस्थ बुध– जातक को अतिव्ययी, दुर्जन, एकाधिक भार्यावाला, एकान्त–प्रिय, भोगी होने पर भी अन्त में मोक्ष की तरफ प्रवृत्त करता है।

नोट– 'लघुपाराशरी' के अनुसार तो **" न दिशंति शुभं नृणां सौम्याः केन्द्राधिपाः यदि "**– प्रमाणानुसार बुध 1, 4, 7, 10 भावों में अशुभ ही माना गया है। लेकिन केन्द्रेश एवम् त्रिकोणेश बुध के साथ राहु–केतु का मेल राजयोगकारक भी माना गया है।

उल्लिखित भावफल बुध का विभिन्न भावों में स्वतन्त्ररूप से कहा गया है।

गुरु ग्रह– इसे बृहस्पति नाम से भी जाना जाता है। ये देवताओं के गुरु एवम् अंगिरा ऋषि के पुत्र थे। ज्योतिष शास्त्र में गुरु को विशेष शुभ एवम् योजना, विद्या–बुद्धि का दाता भी माना जाता है। बृहस्पति अर्थशास्त्र, तन्त्रज्ञ एवम् आयुर्वेद के ज्ञाता भी थे–

" विश्वेदेवाः मरुतो भगवांश्च बृहस्पतिः।
इन्द्रश्च देवराजश्च सर्वलोक–चिकित्सकाः।।"

गुरु एवम् शुक्र को अतीव शुभग्रह–रूप में जाना जाता है–

"तेषामतीव–शुभदौ गुरु–दानवेज्यौ।"

यद्यपि गुरु–शुक्र परस्पर शत्रु हैं, लेकिन शुक्र–गुरु परस्पर सम हैं। बृहस्पति सूर्य से पांचवा और हमारे सौर मण्उल का सबसे बड़ा ग्रह है। बृहस्पति को एक गैसीय ग्रह के रूप में वर्गीकृत किया है। यह सौरमण्डल का सबसे बड़ा ग्रहीय वायुमण्डल है। इस पर कोई धरातल नहीं। यह एक विलक्षण सौरमण्डल का ग्रह है।

बृहस्पति का विस्मयकारी 'महान लाल धब्बा' (Great Red Spot), जो कि एक विशाल तूफान है, के अस्तित्व को 17वीं सदी के बाद तब से ही जान लिया गया था जब इसे पहली बार दूरबीन से देखा गया था। यह ग्रह एक शक्तिशाली चुम्कीय क्षेत्र और एक धुंधले ग्रहीय वलय प्रणाली से घिरा हुआ है। बृहस्पति के कम से कम 64 चन्द्रमा हैं। इनमें वो चार सबसे बड़े चन्द्रमा भी शामिल हैं जिसे गैलीलियन चन्द्रमा कहा जाता है, जिसे सन् 1910 ई. में पहली बार गैलीलियो गैलिली द्वारा खोजा गया था। **गैनीमीड** सबसे बड़ा चन्द्रमा है, जिसका व्यास बुध ग्रह से भी ज्यादा है। यहां चन्द्रमा का तात्पर्य उपग्रह से है।

गुरु की वलय प्रणाली– (गुरु के छल्ले)–

बृहस्पति में एक धुंधली वलय–प्रणाली है जो मुख्यतः तीन भागों में बनी है। अंदरूनी छल्ला, अपेक्षाकृत चमकीला मुख्य **छल्ला** और बाहरी पतला छल्ला। ऐसा लगता है कि यह छल्ले **शनि के छल्ले** जैसे बर्फीले

न होकर धूल से बने हैं। संभवतः इसका मुख्य छल्ला **ऐड्रास्टीया (Adrastea)** और **मीटस (Metis)** चन्द्रमा की सामग्री के छिटकने से बना है। यह आमतौर पर चांद पर वापस गिरने वाली वह सामग्री है जिसे बृहस्पति के शक्तिशाली **गुरुत्वाकर्षण** ने अपनी ओर खींच लिया है। इस घूमती सामग्री की **कक्षा** की दिशा बृहस्पति की ओर है। इसी तरह, **थीबी** (Thebe) और **ऐमलथीया** (Amalthea) चन्द्रमा, संभवतः दो अलग–अलग घटकों की धूलयुक्त बाहरी छल्ले बनाते हैं। ऐमलथीया की कक्षा के साथ वहां चट्टानी छल्ले के भी प्रमाण मिले हैं जो इसी चन्द्रमा के मलबे से बने हो सकते हैं।

फलित ज्योतिष में गुरु की दृष्टि परमशुभफलप्रद लिखी है, लेकिन जन्माङ्ग में इस ग्रह का केन्द्रेश होना बहुत बड़ा दोष है–

" केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुं–शुक्रयोः। "

हां, केन्द्र में बृहस्पति की स्थिति तो कुछ आचार्यों ने शुभ कही है –

" किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।"

अतः गुरु ग्रह का केन्द्रेश होना ठीक नहीं, केन्द्र में स्थिति शुभ कही है। एक बात जातक ग्रन्थों के अनुसार ठीक घटित होती देखी गई है कि– **अगर गुरु पंचमेश होकर पंचम भाव में न हो तो प्रथम–सन्तति (विशेषतः पुत्र सन्तान) को नष्ट करता है–" सुतगते गुरुभे प्रथमक्षयः। "** जब गोचर में गुरु मीन राशि में प्रविष्ट होकर वक्री होता है तो **मेदिनी विचार से विशेष हानिकारक माना गया है।** फसलों, फल, फूल एवम् कपास आदि की भारी क्षति होने से कपास आदि के भाव द्विगुणित हो जाते है;–

" मीनराशिं गतो जीवो वक्रतामुपयाति चेत्।
लवण–घृत–तैलादि–सर्वधान्य– महर्घता।
कार्पासस्यार्ध–सम्प्राप्तिर्लभस्तेषां चतुगुणः।"

यह महत्त्वपूर्ण ग्रह देवगुरु नाम से जाना जाता है। इस गुरु के चार से ही प्रभव आदि संवत्सर होते हैं। गुरु के कार्तिकादि महीने में कृत्तिका आदि दो 2 और पांचवां तथा अन्त के दो– ये तीन महीनों में

तीन (3) नक्षत्र होते हैं। जिस नक्षत्र पर गुरु का उदय हो, उसे **'नाक्षत्र–संवत्सर'** कहते हैं। कहीं **सूर्य सिद्धान्त** के मत से गुरु जिस नक्षत्र पर अस्त हो उसे **'नाक्षत्र संवत्सर'** कहते हैं। प्रवास के अन्त में जिस राशि के साथ गुरु का उदय हो उस काल से गुरुग्रह का **वर्ष** होता है–ऐसी परम्परा थी, जो कि आजकल यह प्रथा प्रचलन में नहीं है।

बृहस्पति का Equator Diametre 142984 किलोमीटर है। यहां तापमान 108° है। यह सौर परिवार का चौथा चमकीला object है। यहां का दिन सब से छोटा लगभग 9 घं. 55 मि. का ही होता है। यह इतना बड़ा ग्रह है कि– 3 पृथ्वियें इसमें समा जाएं। इसका सर्फेस (धरातल) गैसिअस एवम् मैटैलिक हाइड्रोजन आदि से युक्त है।

सौरमण्डल के ग्रह गुरु का व्यापार, पृथ्वी के घटनाक्रम चेतन व अन्य अचेतन जगत पर भारी प्रभाव देखा गया है।

शुक्र ग्रह– शुक्र ग्रह का वर्ण दही, कुमुदपुष्प व चन्द्र जैसा श्वेत तथा निर्मल होता है–

" दधि–कुसुम–शशांक–कान्तिभृत् स्फुटविकसत्किरणो बृहत्तनुः।"

नक्षत्र–विचार से इसके चार द्वार माने गए है–भरणी से आश्लेषा तक शुक्र **'मेघद्वार'** में, मघा से चित्रा तक यह ग्रह **'धूलिद्वार'** में, स्वाती से उ.षा. नक्षत्र तक यह ग्रह **'राजद्वार'** तथा श्रवण से अश्विनी नक्षत्र तक शुक्र **'सुवर्णद्वार'** में माना जाता है।

मेदिनी ज्योतिष के अनुसार शुक्र का गमन जब धूलिद्वार में होता है, तब "प्रजादुःखं जलनाशात्तदोप्रदवमादिशेत्।" दुर्भिक्ष, वायुवेग किंवा प्रजा में अशान्ति का कारण बनता है। शेष द्वारों में संचरण से शुक्र प्रजा में सुख–समृद्धिप्रद माना गया है। **शुक्र के चार गण हैं**– एक महत्त्वपूर्ण बात ये है कि–शुक्र जब अश्विनी, मृगशिर, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण एवम् स्वाती नक्षत्र में संचार करता है तो **'शुक्र देवगण'** में रहता है। जब शुक्र तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी एवम् भरणी नक्षत्र में संचार करे तो **'मनुष्यगण'** में शुक्र की स्थिति मानी जाती है।

जब शुक्र की गति कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा एवम् मूल नक्षत्र में रहती है, तो शुक्र की गति **'राक्षसगण'** में मानी जाती है– ये उपरोक्त गतियां–स्थितियां केवल शुक्रग्रह की ही विशेषताएं हैं। इनमें शुक्रोदयास्त के विभिन्न फल हैं। एक सम्भावना यह है कि– शुक्र का कोई ठोस भीतरी कोर नहीं है और कोर का तरल हिस्सा लगभग एक ही तापमान पर है। यह ग्रह 224.7 पृथ्वी दिनों में सूर्य–परिक्रमा करता है। सूर्योदय से पहले या सूर्योदय के बाद केवल कुछ देर के लिए ही अपनी चमक दिखाता है। **शुक्र** (Venus), सूर्य से दूसरा **ग्रह** है और प्रत्येक 22.7 पृथ्वी–दिनों में सूर्य–परिक्रमा करता है। ग्रह का नामकरण प्रेम और सौंदर्य की **रोमन देवी** पर हुआ है। **चन्द्रमा** के बाद यह रात्रि को आकाश में सबसे चमकीली प्राकृतिक वस्तु है। इसका **आभासी परिमाण** -4.6 के स्तर तक पहुंच जाता है और यह छाया डालने के लिए पर्याप्त उज्ज्वलता है। चूँकि शुक्र एक **अवर ग्रह** है इसलिए पृथ्वी से देखने पर यह कभी सूर्य से दूर नज़र नहीं आता है। इसका **प्रसरकोण** 47.8 डिग्री के अधिकतम तक पहुंचता है। शुक्र सूर्योदय से पहले या सूर्यास्त के बाद थोड़ी देर के लिए ही अपनी अधिकतम चमक पर पहुंचता है। यही कारण है जिसके लिए यह प्राचीन संस्कृतियों के द्वारा सुबह का तारा या शाम का तारा के रूप में संदर्भित किया गया है।

शुक्र एक **स्थलीय ग्रह** के रूप में वर्गीकृत है और समान आकार, गुरुत्वाकर्षण और संरचना के कारण कभी–कभी उसे पृथ्वी का **"बहन ग्रह"** कहा गया है। शुक्र आकार और दूरी दोनों में पृथ्वी के निकटतम है। हालांकि अन्य मामलों में यह पृथ्वी से एकदम अलग नज़र आता है। शुक्र **सल्फ्यूरिक एसिड** युक्त अत्याधिक परावर्तक बादलों की एक अपारदर्शी परत से ढका हुआ है। जिसने इसकी सतह को **दृश्य प्रकाश** में अंतरिक्ष से निहारने से बचा रखा है। **इसका वायुमण्डल चार स्थलीय ग्रहों में सघनतम है** और अधिकांशतः कार्बन डाईक्साइड से बना है। ग्रह की सतह पर **वायुमण्डलीय दबाव** पृथ्वी की तुलना में 92 गुना है। 735° K (462° C, 863°F) के औसत सतही तापमान के साथ शुक्र **सौर मण्डल** में अब तक सबसे तप्त ग्रह है। कार्बन को चट्टानों और सतही भूआकृतियों में वापस जकड़ने के लिए यहां कोई **कार्बन–चक्र** मौजूद नहीं है और न ही जीव–द्रव्य को इसमें अवशोषित करने के लिए कोई कार्बनिक जीवन यहां नज़र आता है। शुक्र पर अतीत में महासागर हो सकते हैं। शुक्र की अधिकतर सतह ज्वालामुखी गतिविधि द्वारा निर्मित नज़र आती है। **शुक्र पर पृथ्वी की तरह अनेकानेक ज्वालामुखी हैं और इसके प्रत्येक 100 कि.मी. के दायरे में कुछ 167 के आसपास बड़े ज्वालामुखी हैं।** पृथ्वी पर इस आकार की ज्वालामुखी जटिलता केवल **हवाई के बड़े द्वीप** पर है। यह इसलिए नहीं कि शुक्र ज्वालामुखी नज़रीए से पृथ्वी की तुलना में अधिक सक्रिय है, बल्कि इसकी पर्पटी पुरानी है। पृथ्वी की **समुद्री पर्पटी विवर्तनिक प्लेटों** की सीमाओं पर **भूगर्भिय प्रक्रिया** द्वारा निरन्तर पुनर्नवीकृत कर दी जाती है और **करीब 10 करोड़ वर्ष औसत उम्र की है,** जबकि शुक्र की सतह 30–60 करोड़ वर्ष पुरानी होने का अनुमान है। वस्तुतः जीवन का अस्तित्व यहां सम्भावित नहीं है।

शुक्र का वायुमण्डल अत्यन्त घना है, जो मुख्यरूप से कार्बन **डाइऑक्साइड** और **नाइट्रोजन** की एक छोटी मात्रा से मिलकर बना है। वायुमण्डलीय द्रव्यमान ·पृथ्वी के वायुमण्डल की तुलना में 93 गुना है, जबकि ग्रह के सतह पर दबाव पृथ्वी की सतह के दबाव की तुलना में 92 गुना है– यह दबाव पृथ्वी के महासागरों की एक किलोमीटर करीब की गहराई पर पाए जाने वाले दबाव के बराबर है। सतह पर घनत्व 65 किलो/घनमीटर है (पानी की तुलना में 6.5 %)। यहां का CO_2- बहुल वायुमण्डल, **सल्फर डाइऑक्साइड** के घने बादलों के साथ–साथ, सौर मंडल का सबसे शक्तिशाली **ग्रीन हाउस प्रभाव** उत्पन्न करता है और कम से कम 462°C (864° F) का सतही तापमान पैदा करता है। यह शुक्र की सतह को बुध की तुलना में ज्यादा तप्त बनाता है। बुध का न्यूनतम सतही तापमान–220 °C और अधिकतम सतही तापमान 420 °C है। शुक्र ग्रह सूर्य से दोगुनी के करीब दूरी पर होने के बावजूद बुध सौर **विकिरण** (irradiance) का केवल 25% प्राप्त करता है। प्रायः शुक्र की सतह नारकीय रूप में वर्णित है।

शनि–शनि सूर्य से छठे क्रम का और गुरु के बाद सौरमण्डल का सबसे भारी गैसीय ग्रह है। **सूर्य की मन्दगति से परिक्रमा करने के कारण इसे शनैश्च नाम भी दिया गया है।** प्राचीन रोम में इसे **सैटर्न**

अर्थात् कृषि या फसलों का देवता मानते थे। 1675 में इटली के खगोलविद् **'जीन डोमनिक कैसिनी'** ने शनि के गिर्द दो वलयों को देखा। इन दोनों वलयों के रिक्त हिस्से को **कैसिनी डिवीजन** नाम दिया गया। यह रिक्त भाग 4800 किलोमीटर का है।

शनि बेहद ठण्डा एवम् जीवन के प्रतिकूल है। सूर्य से 143 करोड़ किलोमीटर की औसत दूरी पर स्थित शनि को सूर्य का एक चक्कर लगाने में लगभग 29 वर्ष एवम् 168 दिन लगते हैं। इसका तापमान शून्य से 180 डिग्री सैल्सियस नीचे दर्ज किया गया है।

शनिग्रह इतना विशाल है कि– इसमें 758 पृथ्वियां समा सकती हैं।

शनि के 62 चन्द्रमा ढूंढे जा चुके हैं, जिनमें 'टाइटन' सौरमण्डल का सबसे बड़ा चन्द्रमा है। सौरमण्डल का यह एक ऐसा चन्द्रमा है जिसका अपना वायुमण्डल है और इसमें जीवन की संभावना के बारे वैज्ञानिक अनुमान लगा रहे हैं। पुनरपि अनेकों रहस्यों पर से पर्दा उठना शेष है।

स्थावर जगत् पर शनि अनेक प्रकार के प्रभाव डालता है। मूल नक्षत्र में शनि जब गति करता है तो अवर्षणकारक (दुर्भिक्ष की) स्थिति बनाता है– **"क्षुच्छस्त्रावृष्टिकरो मूले प्रत्येकमपि वक्ष्ये।"** विशाखा नक्षत्रगत शनि केसर, लाख, रांगा एवम् अनाज आदि का क्षयकारक कहा गया है– **"सस्यान्ययमाञ्जिष्ठं कौसुम्भं च क्षयं याति।"**

इस प्रकार से शनि–मंगल योग युद्धकारक एवम् दुर्भिक्ष कारक भी है।

शनि के कुप्रभाव से होनेवाले रोग– पक्षाघात, हाथ, पैर या शरीर का कम्पन, मिरगी तथा स्नायु सम्बन्धी रोग, गठिया, कैंसर, राजयक्ष्मा, विषबाधा, उदरशूल, प्लीहा एवम् कृमि आदि रोग शनि के कुप्रभाव से होते हैं।

शनि यदि जन्मांग में अनुकूल–उच्च का या बृहस्पति के क्षेत्र का हो तो–" **स्थानवृद्धिकरः शनिः**" –प्रमाणानुसार राजयोग बना कर प्रभावशाली पदाप्ति योग भी बनाता है। शनि के कुप्रभाव की शान्ति के लिए नीलम रत्न 4/5 से 7 रत्ती के लगभग शनिवार को विधिवत् शुद्ध करके मध्यमा अंगुली में धारण करें।

राहु–केतु :– सर्वप्रथम यह जान लेना नितान्त आवश्यक है कि **राहु–केतु ग्रह नहीं हैं।** लेकिन भारतीय ज्योतिष में राहु–केतु सहित 9 ग्रह एवम् 10 उपग्रह माने गए **हैं।** वस्तुतः सूर्य का काल्पनिक भ्रमण मार्ग दीर्घवृत्ताकार **'क्रान्तिवृत्त'** कहलाता **है** तथा चन्द्र का भ्रमणमार्ग **'चन्द्रकक्ष्या'** कहलाता है। सूर्य और चन्द्र के ये भ्रमणमार्ग (क्रान्तिवृत्त एवम् चन्द्रकक्ष्या) न तो समानान्तर हैं और न समतलवर्ती हैं। फिर भी परस्पर अत्यन्त दूर होने से दोनों वृत्त दो बिन्दुओं पर एक–दूसरे को क्रास करते (काटते) हुए प्रतीत होते हैं। **इन दोनों के क्रास–स्थल ही चन्द्रमा के पात या राहु–केतु कहे जाते हैं।** राहु–केतु की वक्रगति हमेशा ही 3′–11″ रहती है। राहु–केतु को आकाश में अन्य ग्रहों की भान्ति वक्री–मार्गी, उदयास्त होते हुए किंवा वैसे भी देखा नहीं जा सकता। अतः ये ग्रह चन्द्र के पातमात्र ही हैं।

लेकिन पुरातन–ग्रन्थों में इनका उल्लेख पौराणिक–कथा (कल्पनाओं) तक ही सीमित है।

पुनरपि, **लघुपाराशरी** आदि ग्रन्थों में इन्हें **'तमोग्रह'** **(छायाग्रह) के रूप में फलादेश में विशेष–महत्त्व दिया गया है। फलितशास्त्र में इनके फल को नकारा तो नहीं गया लेकिन स्वतन्त्ररूप से फलादेश की चर्चा भी नहीं की गई–**

" यद्यद्भावगतौ वापि यद्यद्भावेश–संयुतौ।
तत्तदफलानि प्रबलौ प्रदिशेतां तमोग्रहौ।।"– *(लघुपाराशरी)*

किञ्च– केन्द्रेश एवम् त्रिकोणेश के साथ केन्द्र किंवा त्रिकोण में इन छायाग्रहों (राहु–केतु) का फल राजयोग कारक भी लिखा गया है, जो कि अनुभव में सही सिद्ध होता है;–

" यदि केन्द्रे त्रिकोणे व निवसेतां तमोग्रहौ।
नाथेनान्यतरेणापि सम्बन्धाद्योगकारकौ।।"

सूर्य–चन्द्रग्रहण राहु–केतु के ग्रसने से होता है– यह मिथ

पुरातन कथाओं से सम्बन्धित है। हजारों वर्ष पूर्व 'सूर्यसिद्धान्त' में स्पष्ट लिखा है–

"छादको भास्करस्येन्दुरधःस्थो घनवद्भवेत्।
भूच्छायां प्राङ्मुखश्चन्द्रो विशत्यस्य भवेदसौ।।"

संक्षेप में– वैज्ञानिक धारणाओं के अनुसार सम्पूर्ण ऊर्जा के भण्डार (पैट्रोलियम, कोयला आदि) पुरातन समय से सूर्य की प्रक्रिया (ऊर्जा) के कारण ही उपलब्ध है। विश्व में वृक्षों में श्वसन क्रिया एवम् जड़ी–बूटियों की उत्पत्ति सूर्य से ही सम्भव है। सूर्योदय के बाद अश्वत्थ आदि वृक्षों द्वारा आक्सीजन (जीवनदायक गैस) प्राप्त होती है। भारतीयसांख्य आदि दर्शनों के अनुसार सम्पूर्ण चेतन एवम् अचेतन (स्थावर–जंगम) जगत् की उत्पत्ति अव्यक्त प्रकृति एवम् ब्रह्म के कारण ही है। अतः विश्व में चेतन–अचेतन परस्पर एक दूसरे पर निर्भर हैं। ग्रहगति के प्रभाव से अकाल, तूफान प्राकृतिक आपदा (भूकम्प, ज्वालामुखी विस्फोट) आदि घटनाएं स्थावर–जंगम जगत् को प्रभावित करती आ रही हैं। जिसके गहन अध्ययन में विश्व के वैज्ञानिक निरन्तर क्रियाशील हैं। यह धारणा कि– " पृथ्वी एवम् उस पर बस रहे प्राणिजगत् पर ग्रहों का कोई प्रभाव नहीं"–नितान्त अज्ञानता का प्रदर्शन है। इस विषय में फ्रांस, इंग्लैण्ड अमेरिका, जर्मनी आदि देशों के प्रबुद्ध ऐस्ट्रोनौमर एवम् अन्य प्राणिशास्त्रियों ने शोध किए हैं। इनके शोध–परिणाम ग्रहों के परस्पर गुरुत्वाकर्षण एवम् चुम्बकीय बलों पर आधारित हैं। यह पृथ्वी एक वैद्युत अंगीठी (Electric Heater) एवम् चुम्बकीय क्षेत्र के पिंजरे में है। सूर्य आदि ग्रहों की व्यक्त एवम् अव्यक्त किरणें भी इस पृथ्वी पर स्थावर जंगम जगत् को प्रभावित करती रहती हैं। ब्रह्माण्ड में बृहस्पति आदि ग्रह अपने चुम्बकीय बलों से इस पृथ्वी को प्रभावित करते रहते हैं। अतः स्पष्ट है कि इस सौर जगत् में सभी स्थावर–जंगम हमेशा प्रभावित होते रहते हैं। इस विषय में सरकार को ज्योतिर्विज्ञान के विद्वानों को प्रोत्साहित करना होगा एवम् *नासा* आदि के वैज्ञानिकों को भी शोध–शाखा पर ध्यान देना होगा।

पृथ्वीवासी स्थावर–जंगम पर चन्द्र का प्रभाव, समुद्री ज्वारभाटा पर चिन्तन, क्योंकि सूर्य के कारण जल व ठोस पदार्थ आकर्षित होते हैं। यह सत्य है कि– चन्द्र का पृथ्वी पर आकर्षण सूर्य के आकर्षण से 2 गुणा है, क्योंकि चन्द्र पृथ्वी के बहुत नजदीक है। सूर्य एवम् चन्द्र का समुद्री ज्वारभाटा में योगदान बहुत है। अतः समुद्र में उठने वाली जलतरंगें, उतार–चढ़ाव, भूकम्प में चन्द्र–प्रभाव यह सभी शोध के विषय हैं जोकि पृथ्वी पर आजतक भयंकर विनाश के कारण बने हुए हैं। सरकार एवम् वैज्ञानिक ध्यान दें।

प्रसूति-लग्न विचार

मेष—जन्मसमय मेष लग्न हो, तो माता का पूर्व या पश्चिम में सिर, उपसूतिका दो या तीन, प्रसव में माता को कष्ट अधिक, पाद से प्रसव, भूमि में घर के पूर्व भाग में जन्म हुआ, बालक जन्मोपरान्त दीर्घ शब्द से रोया। माता ने लाल एवम् मीठा भोजन किया था। वस्त्र लाल, मलिन थे। ४। ११। १६। ४४। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे; इन वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जय जप कराना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो १०० वर्ष जीवे।

वृष— माता का दक्षिण में सिर, उपसूतिका ३ या ४, जन्मोपरान्त दो और आई, जन्मते ही बालक दीर्घ शब्द से रोया, गौरवर्ण, अधोमुख, पाद से प्रसव, घर से पूर्व में सूतिका-स्थान, श्वेत स्वच्छ वस्त्र, जन्म से पहले माता ने शुष्क शाकादि भोजन किया। १। २८। ३३। ४४। ६१ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के प्रारम्भ में महामृत्युञ्जय का जाप और ब्राह्मणभोजन करवाना श्रेष्ठ है। इन वर्षों से बचे, तो ९० वर्ष जीवे।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, उपसूतिका ३ या ५, माता का हरा या जीर्ण वस्त्र, सिर से प्रसव, मुख ऊपर को, जन्मते ही दीर्घ शब्द किया, नाल छूटा था, घर के आग्नेय भाग में जन्म, माता ने पहले लवणयुक्त विचित्राल्प भोजन किया, दूध कम उतरे। ४। १०। १४। ३८। ५८ वर्षों में बालक कष्ट पावे। इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन और मृत्युञ्जय का जप करवाएं। यदि इन वर्षों से बचे, तो ८६ वर्ष जीवे।

कर्क—माता का उत्तर में सिर, उपसूतिका ५ या ४, बालक जन्मते ही छीका, नाल छूटा, भूमि पर जन्म, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान, माता के वस्त्र श्वेत व लाल, माता ने प्रसव से पहले मधुर व शीतल भोजन किया था, दीपक उठाया गया, बालक के वामांग मे लहसुन आदि का चिह्न, देर से रोया। ५। २५। ४०। ५८। ६२— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो १०० वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश के समय तुलादान, छायादान और मृतसञ्जीवनी मन्त्र का जाप करवाना कल्याणप्रद है।

सिंह— माता का पश्चिम या पूर्व में सिर, मलिन या लाल वस्त्र, शुष्क कसैला या खट्टा भोजन किया था, जन्मसमय स्त्री ३, पीछे से १ आई, दीपक स्थिर रहा, बालक जन्मते ही तुरन्त रोया, घर के दक्षिण भाग में प्रसवस्थान। ५। १३। २८। ३६। ४८— इन वर्षों में बालक कष्ट पावे। इनसे बचे तो ६७ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के प्रवेश होते ही श्रीसूर्यनारायण के मन्त्र का जाप या आदित्यहृदय का पाठ और ब्राह्मणों को मीठा भोजन करावे तो कल्याण रहेगा।

कन्या—माता का दक्षिण में सिर, रक्त जीर्ण वस्त्र, मिष्ठान्न बासी चीज या बड़े आदि का भोजन, जन्मसमय स्त्री ३ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक ने जन्मते ही अर्द्ध शब्द किया, घर के नैर्ऋत्यकोण में सूतिका-स्थान। ४। १६। २३। ३६। ५५— वर्ष कष्टकारक हैं। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

तुला— माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, श्वेत जीर्ण वस्त्र, भुना हुआ अन्न, ठंडा जल या कोई मामूली चीज क्रोधपूर्वक खाई थी। जन्मसमय स्त्री ३ या ६, वहां एक कन्या भी हो, दीपक उठाया गया, बालक जन्मसमय कुछ ठहरकर अर्धशब्द करके रोया, घर के पश्चिमभाग में सूतिकास्थान। ८। १५। ३१। ३५। ६२। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में नवग्रहों का दान, हवन, जप करवाना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ७५ वर्ष जीवे;

वृश्चिक—माता का दक्षिण या उत्तर में सिर, रक्त या दग्ध वस्त्र, कष्ट अधिक, अमधुर मामूली क्रोधपूर्वक भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ३, पीछे से भी २ आई, दीपक स्वस्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया। छींक भी किया, दीर्घ केश, घर के पश्चिमभाग में प्रसवस्थान। ११। २८। ३८। ५२। ६२— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में मृत्युञ्जय जप और तुलादान कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो १०० वर्ष जीवे।

धनु—माता का सिर पश्चिम या पूर्व को, पीत या रक्त वस्त्र, पक्वान्नादि भोजन, जन्मसमय स्त्री १ या ५, दीपक हाथ में उठाया गया, बालक जन्मोत्तर तत्काल दीर्घ शब्द से रोया और छींक भी किया, घर के वायव्यकोण में सूतिकास्थान। २। १०। १८। ३१। ३८। ४२। ६७— इन वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युञ्जय जप, ब्राह्मणभोजन श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८१ वर्ष जीवे।

मकर— माता का सिर दक्षिण में, ऊपर काला व जीर्ण कमजोर वस्त्र; गुड़, दुग्ध, कसैला भोजन, ठण्डा जलपान किया था। जन्मसमय स्त्रियां २, पीछे से एक आई। दीपक हाथ में उठाया गया। बालक जन्मोत्तर अर्धशब्द से रोया और छींक भी किया, घर के उत्तरभाग मे पुराना सूतिकास्थान। ५। १३। २७। ३६। ५७। ६३। ८७— इन कष्टकारक वर्षो से बचे, तो ९५ वर्ष जीवे। कष्टकारक वर्षों के शुरु में शिवार्चन, मृतसंजीवनी आदि का जाप रखे।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम को, जीर्ण, धुम्रवर्ण वा कुरूप वस्त्र, मधुर-शीत शाकादि का भोजन, कष्ट अधिक, जन्मसमय पास स्त्रियां ४, दो स्त्री पीछे से आईं, उन में एक स्त्री गर्भिणी भी हो, दीपक स्वास्थान में टिका रहा, बालक जन्मोत्तर अर्द्धशब्द से रोया, वामांग में कोई चिह्न भी हो, घर के उत्तरभाग में सूतिका-गृह। २। २८। ३३। ४८। ६४— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में तुलादान, गोदान, मृत्युञ्जयजप हितकारक है। इन वर्षों से बचे तो ९० वर्ष जीवे।

मीन— माता का सिर उत्तर में, पीत या मलिन वस्त्र, विचित्र अल्प भोजन, जन्मसमय स्त्री २ या ५, दीपक हाथ में उठाया व जलाया गया था, बालक जन्मोत्तर देरी से रोया, घर के ईशान में सूतिका-स्थान। ११ ८। १३। ३६। ४८— इन कष्टकारक वर्षों के प्रारम्भ में ग्रह-शान्ति-हवन, मृतसञ्जीवनीमन्त्र का जप कराना श्रेष्ठ है। यदि इन वर्षों से बचे तो ८३ वर्ष जीवे। **स्मरण रहे**—अधिकांश जिस लग्न के लक्षण मिलें — वही बालक का जन्मलग्न जानना चाहिए, क्योंकि यह साधारण लग्न के फल बलाबल के कारण सभी नहीं मिल सकते।

पितृपरोक्ष जन्मज्ञान— (१) जन्मलग्न को चन्द्रमा न देखे, (२) बुध-शुक्र के मध्य में चन्द्रमा हो, (३) लग्न में शनि चन्द्रमा से अदृष्ट हो, (४) भौम सप्तम, चन्द्रमा लग्न को न देखता हो— इन चारों योगों में से एक भी योग में उत्पन्न हुए बालक का पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए।

जन्मकुण्डली में दिशाज्ञान— प्रथम भाव पूर्व, द्वितीय-तृतीय ईशान, चतुर्थ उत्तर, पञ्चम-षष्ठ वायव्य, सप्तम पश्चिम, अष्टम-नवम नैर्ऋत्य, दशम दक्षिण, एकादश तथा द्वादश भाव को आग्नेय समझना चाहिए।

प्रसूतिस्थान से पाकशालादि का विचार

जन्मकुण्डली में सूर्य, मंगल जिस दिशा में हों, वहां अग्निस्थान (पाकगृह) जानना चाहिए। इसी तरह चन्द्रमा से जलस्थान, बुध से भण्डार, गुरु से धनस्थान, शुक्र से देवस्थान और शनि से अशुभ मैला स्थान जानना चाहिए। दोहा— लग्ननाथ जो केन्द्र में तीन दिशा को द्वार। वा लग्न दिशि जानिए कहत बुद्धि आगार।। केन्द्र (१। ४। ७। १०) स्थान में एक से अधिक ग्रह हों तो उनमें, जो बली (स्वराशि, मित्रोच्च, व मूलत्रिकोण राशि का) केन्द्रस्थान में स्वमित्र, शुभ के नवांश में स्थित ग्रह हो, उसकी दिशा में अथवा लग्नपति की दिशा में सूतिकागृह का द्वार होता है।

ग्रहों की दिशा—सूर्य की पूर्व, चन्द्र की वायव्य, भौम की दक्षिण, बुध की उत्तर, गुरु की ईशान, शुक्र की आग्नेय, शनि की पश्चिम और राहु, केतु की नैर्ऋत्य।

चन्द्रात्तैलज्ञानम्— चन्द्रमा से दीप के तैल का ज्ञान होता है, जैसे रात्रि का जन्म है और जन्मकाल पर चन्द्रमा के कम अंश व्यतीत हुए हैं, तो दीपक में तैल ज़्यादा कहना। यदि चन्द्रमा आधी राशि भोग कर चुका हो, तो दीपक में आधा तैल कहें। यदि चन्द्रमा शीघ्र ही दूसरी राशि पर बदलने वाला हो तो बहुत ही कम तैल कहना।

सो०— तनुस्थान शशि जाई, वा शशि षष्ठे भवन में, शिशुजन्म तब आई, तब कही दीपकतैल नहीं। सित–शनि दशमें धाम, पंचम तनुपै चन्द्रमा, शिशुजन्म में तब वाम, दीपकतैल सौं युक्त कहि।

लग्नाद्दीपवर्तिज्ञानम्— जन्मलग्न के कम अंश हों तो बड़ी बत्ती कहें, अधिक अंश हों तो छोटी कहें।

चन्द्रलग्नांतर्गतैर्ग्रहैःस्युरुपसूतिकाः— यदि लग्न की निर्बलता के कारण लग्न फलानुसार उपसूतिका का पूरा पता न लगे तो जन्मकाल में लग्न से चन्द्रपर्यन्त जितने ग्रह हों, उतनी ही उपसूतिका कहना। परन्तु जब कोई ग्रह चन्द्रमा के साथ हो तो उसके अंश देखें। यदि उसके अंश चन्द्रमा से कम हों तो उसकी गणना करें, अन्यथा उसे नहीं जोड़ें। इस प्रकार जो ग्रह लग्न में हो और उसके अंश लग्न से अधिक हों तब ही उसकी संख्या जोड़ें, अन्यथा नहीं जोड़ें। लग्न–चन्द्रांतर्गत कोई ग्रह वक्र या उच्च का हो तो तीन गुणा करें और स्वराशि, स्वनवमांश, स्वद्रेष्काण में हो तो द्विगुण करें, इसी प्रकार जितने ग्रह नीच राशि के, अस्त होवें, उनका आधा करके उपसूतिकाओं में जोड़ने से ठीक उपसूतिका स्त्रियों की संख्या का ज्ञान होगा। इसमें भी विशेष यह ध्यान रखने योग्य है, कि— वह लग्न, चन्द्रांतर्गत ग्रह लग्न के भोगांश से सप्तमभावपर्यन्त होवे तो सूतिकागृह से बाहर समीप में, और सप्तमभाव से लग्न के भुक्तांशपर्यन्त हों तो सूतिका के समीप में अन्दर जानना चाहिए। उन ग्रहों में जो शुभ ग्रह वहां हों तो, धर्मशील, सौभाग्यवती स्त्रियां कहें, अशुभ ग्रहों से विधवा, दुश्चरित्रा कहें।

शय्या–शिर व पादविचार

"लग्नदिशि शय्या शिरस्त्रिषट्क्रान्त्येषु पादाः।" लग्न की दिशा की तरफ पलंग का सिरहाना कहें। अर्थात् १। २ लग्न में पूर्व, ३ में अग्निकोण, ४। ५ में दक्षिण, ६ में नैर्ऋत्य, ७। ८ में पश्चिम, ९ में वायव्यकोण, १०। ११ में उत्तर और १२ लग्न में ईशान कोण की तरफ जानें। तीसरा, छठा, नौवां, बारहवां स्थान पाये जानना चाहिए। इन स्थानों में से जिन स्थानों में पाप ग्रह हों, वहां सूतिका के पलंग का पावा फटा, टूटा समझना चाहिए।

दो०— मीन–मिथुन–सिंह–तुला–मेष होय तत्काल।
अन्तरिक्ष भयो बालक, शेषे भूमि विशाल।।

अथचिह्नज्ञानम्— दोहा–षट्त्रिकोण वा लग्न रवि बुध भाषे धरि ध्यान। वामे कुछ लहसन अहै गर्गवचन परमाण।। भानु तथा सौरी तनधन कुंज कण्टक चन्द। बालक के षट् अंगुली भाषत कविकुलवृन्द। तनु स्थान में शुक्र हो अष्टम जावे राहु। वामकर्ण वा मस्तके अवश चिह्न दरशाहु।। सुहृद् भाव में कवि तव भौम वा सौरी लग्न। वामपाद के चिह्न को भाषत ज्योतिषमग्न।। नौमे पांचे भृगु बसे तनु व चौथे मन्द। मृत्यु जावे बुध गुरु उदरे चिह्न भणंद।"

प्रसवकष्ट दूर हो— प्रसवकाल से पहले शुक्लपक्ष की चतुर्दशी को प्रातः सूर्योदय से पहले सहदेवी या अपामार्ग (पुठकण्डा) की जड़ें लाकर, घृतयुक्त गुग्गुल की धूनी देकर कटि में बांधे और साथ ही "ॐ मुक्ताः आशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्वभयाद् गर्भमेहि माचिर–माचिर स्वाहा।।"— इस मन्त्र से सात बार शुद्ध जल अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलावे तो सुख से शीघ्र ही प्रसव होगा। अगर तीस का यंत्र भी अनार की कलम से कांसे की थाली में लिख, धोकर पिला देवें तो गर्भिणी को कोई भय न होवे, बच्चा बिना कष्ट पैदा होवे। स्मरण रहे कि— पहले उपरोक्त मंत्र तथा यन्त्र ग्रहण के समय या दीपमाला की रात्रि को मन्त्र का जाप करके तथा यन्त्र को लिखकर सिद्ध कर लें, तब कष्ट को मिटाता है।

बालक के लिए अरिष्ट

दोः— "द्यूनाष्टमतनु पाप खग, बरहै शशि जो खीन। कण्टक शुभ खग ना बसै, वेगि ताहियमलीन।। बसैचन्द्रा द्वादसे अष्टभवन दो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाप। एक मास में शिशु मरे मातु–पिता संताप।। लग्नाष्टम शशि राहुयुत जन्मसमय जो पाव। बालक दशवासर जिये कहत बुद्धि गुण भाव।।"

अथकाणयोगः— "तनु धन व्ययपतियुक्त भृगु आई बसै त्रिकधाम। वा शशि धन कवि पाप युत, ताहि नेत्र बेकाम। सार्कशुक्र तनुनाथयुक्त भवन बसै त्रिक जाय। जन्म अन्ध यह योग है भाषत बुध समुदाय।। तात मात भ्राता तनय मातुल त्रिकघर नाथ।। चन्द्र भौम जो द्वादशे वाम नैन की हान।। भानु राहु दहनों नयन, बुधजन कहत बखान।।"

मूक योगः— "पञ्चमेश गुरुयुक्त त्रिक मूक बाल तब होय। जौ न भौमपतियुक्त गुरु त्रिकहि मूक कहि सोय।। शुक्र त्रिके गुरु सिंह अज दशम भानु कुज वास। मूक होय संशय नहीं बुधजन करत प्रकाश।।"

दुःखदयोग—रिपु मृत्यु द्वादश गेह में पापयुक्त लग्नेश। जन्मसमय जाके परे ताको अंग कलेश।। पापयुक्त तनुभवन में रिपु मृत्युप के ईश। यथा जोग जाके परे तनु मुख विश्वाबीस।। पापग्रहयुत लग्नपति परै लग्न में आय। वीर्यहीन नर होय तो अधिक व्याधि रुजताय।।

बन्धनयोग— क्रूर रहै धन नवम व्यय और पञ्चम आगार। सो नर सूर कसूर करि निवसै कारागार।।

सर्पवेष्टितयोग— यदि अष्टमेश लग्न में राहुसहित हो तो बालक सर्पवेष्टित अर्थात् सर्प जैसे नाल से वेष्टित पैदा होता है।

यमल जन्मयोग—चतुष्पद राशि (मेष, वृष, सिंह, मकर का पूर्वार्द्ध और धनु के

उत्तरार्द्ध) का सूर्य होवे, शेष ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि के लग्न में स्थित हों तो यमल अर्थात् दो बच्चों का इकट्ठा जन्म कहें। अथवा आधानलग्न (गर्भ वाले दिन का लग्न) का स्वामी लग्न में हो तो यमल का जन्म होता है।

माता बच्चे को त्याग दे– शनि, मंगल से ५/७/९ स्थान में चन्द्रमा हो तो माता बालक को त्याग दे, यदि गुरु देखता हो तो त्याग देने पर भी दीर्घायु हो।

मृत्यु–समय–विचार – जिन अरिष्ट योगों में मरणकाल नहीं कहा गया, उन अरिष्ट योगकारक ग्रहों में जो ग्रह बली हो, वह जन्मकाल में जिस राशि में स्थित हो उस राशि में जब चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु कहें। अथवा– जन्मकाल में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित हो, जब फिर उसी राशि में चन्द्रमा आता है, तब मृत्यु होनी बताएं। अथवा चन्द्रमा जब लग्नराशि में आता है, तब मृत्यु का होना कहें। अथवा वर्ष के भीतर जब जिस योगयुक्त स्थान में जाकर चन्द्रमा बली हो और पापग्रहों द्वारा देखा जाता हो, तब मृत्यु कहनी चाहिए। किन्तु जब तक आयु का विचार न हो सके, तब तक अन्य विचार करना निरर्थक है, इसलिए आयु का प्रथम विचार करें, फिर मृत्यु कहें।

सुखदयोग – अंगधीश निज लग्न में बुध गुरु कवि के संग। या केन्द्र गृह दो परे तो जानो सुख संग।। जन्मलग्न में उच्च ग्रह जो काहु के होय। मित्रदृष्टि ता पर परे सर्वसुखी नर होय।।

क्लीब (नपुंसक) योगः – दशम भवन भृगु मन्द दोउ क्लीब योग तब जान। शुक्रभवन से रिष्फ षट् मन्द बसे क्लिब भान।।

कुष्ठयोग :– लग्नप बुध कुज शशियुते राहुयुक्त या केतु। श्वेतकुष्ठ को योग यह वरणत गुणी सचेतु।। भौम भास्कर मन्दयुक्त रक्तकृष्ण कह कुष्ठ। लग्नाधिप रविसाथ त्रिक तापगण्ड अतिरुष्ट।। जलजगंडयुत, चन्द जो ग्रन्थिगंड कुजसाथ। पित्त रोग तब जानियो बुध त्रिकयुत तनुनाथ। आमरोग गुरुयुक्त त्रिक क्षयोरोग भगसून। यमतम शिखि वा युक्त त्रिक, दिन प्रति रुजि कहि दून।।

केमद्रुम योग :– आगे–पीछे चन्द्र के जो ना परै ग्रह कोय। केमद्रुम यह योग है सब धन डारे खोय।। उच्च चन्द्र शुभयुक्त दृग् केन्द्रधाम में होय। तब केमद्रुम शुभ कहे दोष न मानो कोय।।

स्त्रीजातक

क्रूरलग्नयुक्त क्रूर जो, स्वामी दृष्टि नहीं होय। सो कन्या कुल गरल है भूलि न व्याहेउ कोय।। जाके कुज दशम बसै ऋणी होय पति तासु। लग्न राहु शनि सातवें पति जीवे नहीं जासु। क्रूरयुक्त लग्नेश जो पापग्रहों के बीच। सो कन्या व्यभिचारिणी बुधवर कहै कुज नीच। राहु शुक्र जो लग्न में कन्या को पति और। पापदृष्टि शनि सातवें कन्या वास कुठौर। लग्न बीच शनि कुज तमसि निर्धन स्वेच्छाचारि। सप्तम कुज राण्ड कहै पति को तजि तमारि। छटे आठवें चन्द्र जो क्रूर पर निज अङ्ग। भौम आठवें भवन में सो पति करै है मंग।। राहु सातवें लग्न कुज कंटक शुभ सो हीन। ताको पति जीवित रहे वर्ष दो या तीन।। द्वादशाष्ट कुज क्रूरयुत राहु बसै त्रिकधाम। राण्ड होय कुछ दिवस में कहत गणक गुणग्राम।। पापग्रहों के बीच में लग्न होय वा चन्द। सो त्रिय नासे कुलो दुवो भाषत कविकुलवृन्द।। सप्तम भृगु जाके बसै सो कुल दोषी नारि। रूपवती तनु भृग बसै बुधजन कहत विचारि।

वैधव्य–विषकन्यायोग :– चौ.–रविवार द्वितीया जो होय। आश्लेषा ताहि दिन में जोय।। १ ।। कृत्तिका होय शनिश्चर वार–साते तिथि को करो विचार ।। २ ।। होय शतमिषा मंगलवार। कहो द्वादशी तिथि निर्धार।। ३।। इन योगन में कन्या होय। निश्चय विधवा जानो सोय।।४।। जन्मलग्न द्वै शुभग्रह होय। एक पाप ग्रह नभ (१०) में जोय ।।५।। शत्रु क्षेत्र में द्वै ग्रह मानो। ता कन्या को विधवा जानो।। ६।। अश्लेषा द्वितीया को होय। मंदवारयुत लीजो जोय।।७।। परे शतमिषा मंगलवार। साते तिथि लीजो निर्धार ।। ८।। रविवार द्वादशी जो होय। नक्षत्र विशाखा जानो होय ।। ९।। ऐसो योग लखी जो परै। तो कन्या को विधवा करै ।। १०।। दो०– धर्मसदन में भूमिसुत जन्मसदन शनि जान। सूर्य होत सुतसदन में कन्या विधवा मान।। ११।।

वैधव्य–विषकन्याभंगयोग :– जन्मलग्न या चन्द्र ते शुभग्रह सप्तम होय। अथवा सप्तम लग्नपति सुभगा कन्या होय।।

काकवन्ध्यादि योग :– ज्ञे अष्टमे काकबन्ध्यामन्दार्कावष्टमे बन्ध्या। अष्टमे जीवे वा शुक्रे नष्टगर्मा वा मृतापत्या।।

स्त्रीणां राजयोगाः – चौपाई– केन्द्रधाम नभगा शुभ होई नरतनु पाय कलत्र समोई। रानी होय बहुत धन ताके मन प्रसन्न होई है सुत वाके–चन्द्रज तुग बसे तनु जाई लाभ धन गुरु आवे धाई। सो तिय होय नृपति की नारी जन विख्यात होय सुकुमारी। जो षड्वर्ग शुद्ध गुरु होई शशि दृग् केन्द्र में भवन में होई।। ऐसे योग जन्म सुकुमारी रानी होय सदन धनभारी।। **दोहा–** कर्क चन्द्रमा सातवें जीवदृष्टि परिपूर। पुत्र पौत्र धन भूरयुत ताकौ पति नृप शूर।। लाभभवन सित चन्द्र जो सोमज सप्तम भौम। सुरगुर परिपूर्ण लखे रानी होई है तौन।।

स्त्रीणां पुत्रभावविचार :– पञ्चमे शुभदृष्टे च पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्।।

अशुभ प्रसवमास :– कार्तिक में स्त्री, भाद्रपद में गौ, मार्गशीर्ष में हथनी, श्रावण में गधी व घोड़ी, माघ में भैंस, ज्येष्ठ में बिल्ली, वैशाख में ऊँटनी, पौष में बकरी, चैत्र में कुतिया के बच्चे जन्में तो 6 मास में पिता व घरवाले की मृत्यु अथवा महाभय होता है। माघ में बुधवार को भैंस, श्रावण में दिन के समय घोड़ी प्रसूति हो तो महाभय शीघ्र हो। स्मरण रहे कि– यहां सर्वत्र सौरमासग्रहण है। प्रसूता गौ आदि का तत्क्षण दानकर, व्याहृतिमन्त्रों से घृतयुक्त श्वेत सरसों का हवन करें, बच्चा जन्मे तो कार्तिकशान्ति करने से शुभ होता है।

त्रिखलजन्मफल :– यदि तीन कन्याओं के पश्चात् पुत्रोत्पत्ति हो अथवा तीन पुत्रों के पश्चात कन्या का जन्म हो तो त्रिखल नामक दोष के कारण कन्या माता को, लड़का पिता को भय, धनहानि आदि कष्टप्रद होते हैं। कृपणता छोड़कर, त्रिखलशान्ति करें तो शुभ होता है। तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चान्दी, तांबा) दान करें।

बालक की दन्तोत्पत्ति का फल

बालक के जन्मते ही दान्त निकले हों तो माता–पिता को अरिष्ट, ऊपर की पंक्ति में दांत से युक्त जन्म ले तो अधिक अरिष्ट, प्रथम–बार ऊपर की पंक्ति में दांत निकले तो मातृपक्ष को भय हो, मामा शान्ति करे। पहले मास में दांत निकले तो शरीर नष्ट, द्वितीय में छोटा भ्राता नष्ट, तृतीय में भगिनी नष्ट, चतुर्थ में भाई नष्ट, पाचवें में ज्येष्ठबन्धु नष्ट, छठे में बहुभोग, सातवें में पितृसुख, आठवें में पुष्टि, ९वें में धनी, १०वें में सुख, ११वें में सुख, १२वें में निकले तो धनी हो।

अथैकनक्षत्रजनन–फलम् :– वृद्धगर्ग कहते हैं, कि यदि भ्राताओं व पिता–पुत्र, माता वा कन्या का एक नक्षत्र हो तो दोनों की अथवा एक की अवश्य मृत्यु होती है। यहां स्वर्णदान से कल्याण होता है।

97

जन्मकुण्डली से विशेष विचार

लघुभ्राता का जन्मसमय जानना :– (१) जन्मलग्न स्पष्ट में दशम भाव का स्पष्ट जोड़ें, जो राशि हो उस पर जब गोचर में गुरु आए तो भाई या बहन का जन्म होता है। (२) यदि भ्रातृ–प्रतिबन्धक योग न हो तो तृतीयेश, तृतयस्थ ग्रह की दशा में छोटे भ्राता का जन्म होता है।

भ्राता के कष्ट (खतरे) का समय जानना

(1) जन्मलग्न के स्पष्ट में से तृतीयेश के स्पष्ट को घटाएं, शेष राश्यादि का जो नक्षत्र हो उस नक्षत्र पर जब गोचर में शनि आता है, तब भाई या बहन को कष्ट होता है।

(२) लग्नेशस्पष्ट में से तृतीयेशस्पष्ट घटाएं, शेष में से दशमेशस्पष्ट और मंगल स्पष्ट घटाएं– शेष राशि में जब गोचर का शनि आता है तब, भ्रातृकष्ट होता है।

(३) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश, भौम– इन चारों स्पष्टों को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके नवांश राशि में जब गोचर का शनि होता है, उस काल में भ्रातृकष्ट होता है।

(४) लग्नेश, तृतीयेश, दशमेश और भौम को जोड़कर, जो राश्यादि हो उसके द्रेष्काणराशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब भ्रातृकष्ट जानिए।

माता की मृत्यु का समय जानना :– जन्म के सूर्य में से चन्द्रस्पष्ट को घटाएं, शेष की राशि में या त्रिकोणराशि में या उस शेष राशि के नवांशराशि में जब गोचर का शनि व गुरु होगा, तब माता की मृत्यु का समय जानें।

अथ कन्याजन्मनि मूलचक्रम्

स्थानम्	शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्योः	जंघाः	जान्वोः	पादे
घटी	४	६	५	५	५	४	९	४	४	१०
फलम्	पशुना.	धनना.	धनला.	कुटिला	धनला.	दयावती	कामिनी	मातृना.	भ्रातृना.	वैधव्य

अथ कन्याजन्मनि नक्षत्रफलम्

जन्म नक्षत्र	मूल (१/२/३ च.)	आश्लेषा (२/३/४ च.)	ज्येष्ठा	विशाखा (४ च.)
फलम्	ससुरहानिः	सासनाशः	ज्येष्ठनाशः	देवरनाशः

सुतः सुता वा नियतं श्वशुरं हन्ति मूलजः। तदन्त्यपादजो नैव तथाश्लेषाद्यपादजः।।

तिथिगण्डान्त– पूर्णा तिथियों के अन्त की ७ घड़ी, नन्दा तिथियों की शुरु की दो–दो घड़ी तिथिगण्डान्त होता है। यह गण्डान्त जन्म, यात्रा, विवाह में भयप्रद होता है।

अथ गण्डमूलनक्षत्राणि

अश्विनी	आश्लेषा	मघा	ज्येष्ठा	मूल	रेवती

कोष्ठकोक्त ये छः नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में उत्पन्न होने वाला बालक अथवा बालिका माता, पिता, कुल और अपने शरीर का नाश करने वाला होता है। यदि अपना शरीर नष्ट होने से बच जाए, तो धन तथा घोड़ों का स्वामी होता है।

गण्डमूल में उत्पन्न पुत्र का छः मास अथवा २७ दिन तक पिता को दर्शन नहीं करना चाहिए; तत्पश्चात् शान्ति करके विधि से मुख देखना कल्याणप्रद है।

मूल और आश्लेषा नक्षत्र के चरणों में जन्मफल

मूल पाद	फल	आश्लेषा पाद	फल
१	पितृनाश	४	पितृनाश
२	मातृनाश	३	मातृनाश
३	धननाश	२	धननाश
४	शान्ति से सुख	१	शान्ति से सुख

अथ मूल पुरुषचक्रम्

स्थानं	मूर्ध्नि	मुखे	स्कन्धे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्योः	जान्वोः	पादयोः
घटी	५	७	४	८	४	९	२	१०	६	६
फलम्	राजा	पि. मृ.	बली	बली	दानी	मन्त्री	ज्ञानी	कामी	मतिमा.	मतिमा.

मूलजनने वृक्षविभागफलम्

विभाग	मूल	स्तम्भ	त्वचा	शाखा	पत्र	पुष्प	फल	शिखा
घटी	७	८	१०	११	१२	५	४	३
फल	मूलनाश	वंशनाश	मातृ–क्लेश	मातुल–नाश	मन्त्री–पद	मन्त्री–पद	विपुल–लाभ	अल्प–जीवन

अथ मूलनिवासचक्रम्

जन्ममासानुसारेण	वै. ज्ये. मार्ग. फा.	चैत्र, श्रा. का. पौ.	आषा. आश्वि. मा. भा.
जन्मलग्नानुसारेण	२/५/८/११	३/६/९/१२	१/४/७/१०
मूलनिवासस्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

मूल का निवास मास व लग्नानुसार– दोनों प्रकार से भूमि पर आए तो महाभयप्रद होता है। यहां अन्य एक प्रकार से स्वल्पभय होता है। तृतीया, दशमी, षष्ठी–शनि–भौम–समन्विता। शुक्ला चतुर्दशी मूले जातःसंहरते कुलम्।। यत्र गण्डे क्रूरयुते महादोषकरो भवेत्। शुभग्रहसमायोगे ईषच्छुभकरं भवेत्।। दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ। शूले गण्डातिगंडे च परिघे यमघण्टके।। ब्रह्मदण्डे मृत्युयोगे प्राप्ते गंडदिने शिशुः। जातो हन्ति कुलं सर्वं तस्मात् कुर्वीत शान्तिकम्।। यथा सर्पविषं चैव मन्त्रश्रवणाद्विलीयते। तथैव गंडदोषोऽपि विधानेन विलीयते।। रत्नैः शतौषधीमूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूर्यते। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निसृतेन जलेन हि।। बालकस्यापि तत्स्नाने विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोमप्रदानेन कृते स्यान्मंगलं ध्रुवम्।। विरुद्धावयवे मूले विधिरेव स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः।।

अथाभुक्तमूलविचारः– ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम चार घटी (किसी के मत से एक घटी) एवं मूल नक्षत्र की आदि की चार घटी विशेष आधी, अभुक्तमूल कहलाता है।

इस समय जो बच्चा जन्म ले, उसका परित्याग कर दें या आठ वर्ष; असमर्थ हों तो ६ मास अथवा २७ दिन तक पिता मुख न देखे।

धनगंडे दरिद्रोऽपि शांतिं कुर्यात्त्वशक्तितः। अन्यथा नाशमाप्नोति चामुक्तर्क्षे विशेषतः।।

गण्डमूलोत्पन्न बालक का जन्मकाल फल

समय	प्रातः	दिन में	रात्रि में	सन्ध्या में
नक्षत्र	सभी गण्डमूल नक्षत्र	मूल, ज्ये.	मघा, आश्ले.	रे. अश्वि.
फल	पशु हानि	पिता को भय	माता को भय	शरीर को भय

अथ पुरुष जन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रह फलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	अंगपीड़ा	कान्तिसुख	रक्तकोप	सुखी	विद्वान्	सुखी	दुःखी	रोगी	सकाम
धन	2	धननाश	सम्पत्तिवान्	ऋणी	धनी,गुणी	धनागम	धनी	धनहानि	निर्धन	खल
सहज	3	नीरोगी	कीर्तिमान्	विक्रमी	अरिमर्दन	पापी	पापी	पराक्रमी	विक्रमी	शूर
सुहृत्	4	दुःखी	सुखभोगी	दुःखी	सुखी	सुखी	सुखी	दुःखी	मातृहानि	दुःखी
सुत	5	सुतहानि	धनी,पुत्रवान्	पुत्रहीन	अल्पपुत्र	प्रतापी	धीमान्	पुत्रहीन	कुमति	मूर्ख
शत्रु	6	शत्रुनाश	अल्पायु	शत्रुनाश	रोगी	कामी	रोगी	शत्रुजित्	सबल	सबल
स्त्री	7	स्त्रीदुष्टा	सुभार्यावान्	स्त्रीनाश	धर्मज्ञ	सुभार्या	कामी	स्त्रीकुलटा	स्त्रीरोगी	स्त्रीहानि
मृत्यु	8	अल्पायु	योगी	शरीरपीड़ा	गुणी	नीचस्व	नीच	नेत्ररोगी	रोगी	क्लेशयुक्त
धर्म	9	दुष्टमति	धर्मात्मा	पापरत	सुखी	धार्मिक	तपस्वी	दुष्टबुद्धि	दैन्ययुक्त	पापी
कर्म	10	शूर	तेजयुक्त	तेजस्वी	कीर्तिमान्	सम्पत्तिवान्	संपत्ति	पराक्रमी	मानी	पितृहीन
लाभ	11	धनी	धनी	धनी	धनी	सुलाभ	सुमति	धनवान्	सुख्यात	धनी
व्यय	12	दुष्टस्वभाव	कामी	पतितदार	दरिद्र	खल	रोगी	दुःखी	पतित	दुर्जन

अथ स्त्रीजन्मकुण्डल्यां भावस्थ–ग्रहफलानि

भाव		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तनु	1	क्रोधिनी	गतायु	विधवा	सौभाग्या	सती	ससुखा	बन्ध्या	पुत्रहीना	दुःखिनी
धन	2	दरिद्रा	बहुधना	बन्ध्या	धनाढ्या	धनाढ्या	सुभगा	दुःखिनी	दरिद्रा	दुःखार्ता
सहज	3	सुसुता	सुखिनी	विसहजा	पुत्रवती	सुसहजा	धनाढ्या	सुदक्षा	सवित्ता	रोगिणी
सुहृत्	4	सपीड़ा	दुर्भगा	दुःखार्ता	सुगृहा	सुखिनी	सुखिनी	हृद्रोगा	रोगार्त्ता	मातृहानि
सुत	5	विपुत्रा	ससुखा	विपुत्रा	धीकांतियुता	सुगुणा	पुत्रवती	विपुत्रा	विपुत्रा	अपुत्रा
शत्रु	6	सुखिनी	सरोगा	अरोगा	सकोपा	सापदा	दरिद्रा	गुणज्ञा	सधना	धनयुता
पति	7	दुःखार्ता	पतिप्रिया	विधवा	पतिव्रता	कीर्तियुता	पतिप्रिया	विधवा	दुःखिता	विधवा
मृत्यु	8	विधवा	रोगिणी	विधर्मा	कृतघ्ना	सरोगा	विसुखा	दुःखिनी	विधवा	दुःखिनी
धर्म	9	धर्मज्ञा	सुखिनी	दुःखिनी	सुभोगा	पुत्राढ्या	धर्मरता	बन्ध्या	बन्ध्या	शोकयुक्ता
कर्म	10	सुकर्मा	धर्मज्ञा	कुपुत्रा	सत्कर्मा	साधवी	सधना	पापिनी	दुष्कर्मा	पापिनी
लाभ	11	सधना	गुणज्ञा	सुलाभा	पतिव्रता	सुपुत्रा	सुपुत्रा	सुलाभा	नीरोगा	सुभगा
व्यय	12	क्रोधिनी	हीनांगी	खला	कृशांगी	सुव्यया	सुव्यया	मूढा	दुष्टा	रोगिणी

अश्विनीजातस्य फलम्–अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म हो तो पिता को भय, द्वितीय में सुखैश्वर्य, तृतीय में मन्त्रीतुल्य, चतुर्थ में नृपतिसमान होता है।

मघाफलम्– मघा के प्रथमचरण में जन्म हो तो माता या मातृपक्ष को हानि, दूसरे में पिता को भय, तीसरे में सुख, चतुर्थ चरण में धन, विद्यालाभ होंगे।

ज्येष्ठापादफलम्– प्रथम चरण में बड़े भाई को नेष्ट, द्वितीय में छोटे का नाश, तृतीय में माता का नाश, चतुर्थ में अपने बाप का नाश होता है। " ज्येष्ठाद्यपादःजो ज्येष्ठं हन्ति बालो न बालिका। न बालिका तु मूलक्षै मातरं पितरं तथा।"

रेवतीपादफलम् –रेवती के प्रथम चरण में जन्म हो तो नृपसमान, दूसरे में मंत्री या मुख्तार, तीसरे में सुख–सम्पत्तियुक्त, चतुर्थ चरण में अनेक कष्ट हों।

अथ मातृसुखनाश–योग– (१) पाप ग्रहयुक्त चन्द्रमा सातवें भाव में हो, (२) चन्द्रमा से सातवें पापयुक्त शुक्र हो, (३) पापग्रहों के बीच चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा से चौथे–सातवें पापग्रह हो, (४) तीसरे अथवा सातवें स्थान में सूर्य और लग्न में मंगल हो, (५) चौथे भाव में शनि पापग्रहों से ही दृष्ट हो– इन पांचों में से एक भी योग मिले तो माता को भय हो, जप–दान करना चाहिए।

पितृनाशयोग– (१) सूर्य, मंगल दसवें वा नवम में गए हों, (२) दशमेश रवि, मंगल से युक्त हो, (३) शत्रुराशि का मंगल १०वें हो, (४) पापग्रह से युक्त सूर्य सातवें हो– इन चार योगों में से एक भी योग हो तो पिता को भय हो।

भ्रातृनाशयोग– भ्रातृ गृह को ईश जो भौम संग त्रिक होय। जाके ऐसे योग है भ्रातृहीन नर होय।।

सन्तानसुखनाशयोग– गुरु ते पंचम गेहपति, जाय परे त्रिकभाव। ऐसा योग जो लखि परे ताकि पुत्र अभाव। पुत्र धर्म अरु लग्नपति जाय परे त्रिकधाम। जन्म समय या योग ते सदा पुत्र की हान।

रोगिणी स्त्रीयोग– शुक्र और सूर्य सप्तम, पंचम और नवम में हों तो स्त्री प्रायः रोगयुक्त रहती है।

नीचयोग – सहज सप्तम धनसदन में क्रूर बसे खग आई। भवन पांचवें गुरु बसै नीच जाति मनसाई।। सिंहलग्न जन्मे शिशु सप्तम शनि विकराल। म्लेच्छ होय कुछ दिवस में यदपि ब्रह्म को बाल। जिनके बुध भग राहुसंग सप्तमभाव विराज। लहे सर्वदा राजसुख होवे वेश्यावाज।।

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु

गोचरग्रहाणां द्वादशभाव–फलबोध–चक्रम्

भाव→ ग्रह↓	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	स्थाननाश	भय	श्रीप्राप्ति	मानभंग	दैन्य	विजय	यात्रा	पीड़ा	सुकृतिनाश	सिद्धि	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र	अन्नलाभ	धननाश	सुख	रोग	कार्यनाश	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग	धर्मलाभ	सुख	धनलाभ	धननाश
मंगल	शत्रुभीति	धननाश	धनलाभ	शत्रुभय	धननाश	धनलाभ	द्रव्यनाश	शत्रुभय	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	धननाश
बुध	बन्धन	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुख	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सुख	धनलाभ	धननाश
गुरु	भय	धनलाभ	क्लेश	धननाश	सुख	शोक	राजमान	पीड़ा	सुख	दैन्य	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र	शत्रुनाश	धनलाभ	सुख	धनलाभ	पुत्रलाभ	शत्रुभय	शोक	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुःख	धनलाभ	धनलाभ
शनि	भय	धननाश	ऐश्वर्य	शत्रुभय	पुत्रनाश	धनलाभ	दोष	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मनस्य	धनलाभ	धननाश
राहु	हानि	धननाश	धनलाभ	वैर	शोक	श्रीप्राप्ति	कलह	मृत्यु	दुःख	वैर	सुख	शोक
केतु	रोग	वैर	सुख	भय	सुख	धनलाभ	कलह	रोग	पाप	शोक	कीर्ति	शत्रुभय

अथग्रहाणामेक भोगफल–समयादि ज्ञानम्

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा. के.
एकार्थभोग	मास 1	दिन 2¼	मास 1½	मास 1	मास 12	मास 1	मास 30	मास 18
फलसमयः	आदौ	अन्ते	आदौ	सदा	मध्ये	मध्ये	अन्ते	अन्ते
गंतव्यराशेः प्राक्फलम्	मास 5	घटी 3	दिन 8	दिन 7	मास 2	दिन 7	मास 6	मास 3

अथ ग्रहतुष्ट्यर्थ धारणाय मणयः

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
माणिक्यम्	मुक्ताफलम्	प्रवालम्	पन्ना	पुष्पराग:	हीरा	नीलम:	गोमेदम्	रौप्यम्
विद्रुमम्	रौप्यम्	विद्रुमम्	सुवर्णम्	मुक्ताफलम्	लोहम्	वैडूर्यम्	लाजवर्त:	लाजवर्त:

जारजयोग – भानुचन्द्रतनु ना लखै लग्नप लखै न लग्न। सो शिशु है पर पुरुष को भाषत ज्योतिषमग्न।। रवि कुज गुरु तिथि अष्टमी चौथ चतुर्दशी सार। तीन उत्तर जन्म में तब शिशु कहो परार।।

पूतनाग्रस्तलक्षण एवं शान्ति–

बहुत मैले बिछौने पर अकेली जगह में छोटे बच्चे को सुला देने से पूतना नाम राक्षसी का उसमें प्रवेश होने से बच्चा बीमार हो जाता है। तब पूतना की बलि निकालने से अच्छा होता है। जब कभी बच्चा बैठे–बैठे गिर पड़े, या यूं मालूम हो कि–किसी के पीटने से गिरा है और मूर्छा आ गई है अथवा एकाएक कोई रोग हो गया है तब जानो, कि– उसे महा पूतना ने ग्रसा है। यदि कोई लाभादि के वश में आकर वनदेवता या नागदेवता का तिरस्कार कर दे तो उसके बालक में ऊर्ध्वपूतना प्रवेश कर लेती है। यदि कोई मनुष्य अपनी ऋतुस्नाता स्त्री का गमन करने के पश्चात् स्नान न करे या बिना ऋतु के संगम करके हाथ मुंह न धोवे और माता अपवित्र अवस्था में ही बालक के साथ सो जावे तो बालक्रांता नाम की राक्षसी का दोष होगा। बच्चे को इतर फुलेल और फूलमाला पहिनाकर बाहिर जाने से रेवती ग्रही का दोष होता है। सिर खुले, जूठे बाल को संध्या के समय सोने से भी रेवती का आवेश हो जाता है। संध्या के समय जमीन पर सोने से अथवा खेलने से बालक को पुष्य रेवती का दोष होता है। कदाचित बालक खेलता–खेलता गिर जाए अथवा उसे उल्टी हो या हाथ–पांव नहीं धुले हों तब उसे शुष्क रेवती का आवेश होता है। जूठा खाने और देवता के स्थान पर मल–मूत्र करने से शकुनी ग्रही बालक को पकड़ लेती है। जो नित्यकर्म संध्या–वंदनादि नहीं करते या जो लोग पक्षियों को पालते हैं, जन्मान्तर में उनके बालकों पर शिशुमुण्डिका राक्षसी का दोष हो जाता है। फिर उसका पूजन और बलि, धूपादि दान करने से शान्ति होती है।

उद्वर्तनम्– दूर्वा, कुटकी, नीम के पत्ते, तज–इनका उबटना बालक के शरीर में मलकर पीछे पीपल के पत्ते, मुलट्ठी, लसूड़े के पत्ते– इनका काढ़ा बनाकर स्नान कराए, तो यह रोग दूर होगा।

चेष्टाः– जिस बालक के नखों और दांतों में विकार हो, नींद नहीं आए, डर लगे, मन में उद्वेग रहे, शरीर में दुर्गन्ध उठे, अनेक प्रकार की चेष्टा करे, बल अधिक हो जाए–उसे ग्रहाविष्ट जानना चाहिए

सर्वबालग्रह–शान्त्यर्थं देवालये ज्योतिदर्शनं निवासस्थ तत्ररात्री – ''ॐ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्। सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्यो नः सुतानिव।।''– इत्यस्य जापः, ततोऽनेनैव मन्त्रेण सदीप दधिमाषान्नबलिदाने घण्टाबन्धने च सर्वबालग्रहशान्तिः।।

अथ बालरक्षाविधि (प्रयोगसारे)– यदि दुष्टदृष्टि (नज़रादि दोषों) के कारण बालक के शरीर में कोई रोग, कष्ट हो जाए तो– ''ॐ वासुदेवो जगन्नाथः पूतनातर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।। १।। कृष्ण रक्ष शिशुं शंख–मधुकैटभ–मर्दन। प्रातः–सङ्गव–मध्याह्न–सायाह्नेषु च सन्ध्ययोः।। २।। महानिशि सदा रक्ष कंसाराति निषूदन। यद्गोरजः पिशाचांश्च ग्रहान् मातृग्रहानपि।। ३।। बालग्रहान्विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि त्राहि हरे नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम्।। ४।। – इन चारों मंत्रों से अभिमंत्रित की गई गौ के गोबर की शुद्ध भस्म को बालक के मस्तक, कण्ठ, हृदयादि अंगों में लगाने से बालक का कष्ट दूर होगा।

बाल कष्टावली चक्रम्

किस समय कौन पूतना ग्रस्त करती है	मूर्ति–निर्माणार्थ द्रव्य	पूजनद्रव्य	बलि–विधान व समय	स्नान, पूजा, मार्जनमंत्र	धूप
प्रथम दिन–मास–वर्ष में योगिनी	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेतचन्दन, तिलक, श्वेतपुष्प, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5, आटे के सतिए 5, कपूर, लोहवान,	श्वेतभात, 5 पूर्ण पोली (सुहाली) 1 प्रहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै श्रवणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।	राई, खस, आक के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल, निम्बपत्र, गोघृत
द्वितीय दिन–मास–वर्ष में सुनन्दना	एक सेर चावलों का आटा	10 दीपक, 10 झण्डी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिए 10,	भात एक सेर, आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस, संध्यासमय, पश्चिम दिशा में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चे ह्रां ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्थानाद्दाज्ञया स्वाहा।	
तृतीय दिन–मास–वर्ष में पूतना	एक सेर चावलों का आटा	रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, श्वेत–ध्वजा, दीपक 10, गेहूं के आटे के सतिए 10,	एक सेर लालभात, आधा सेर पूर्ण पौली, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	लहसुन, गोश्रृंग, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, गोघृत।
चतुर्थ दिन–मास–वर्ष में मुख मंडिका	तिल–चूर्ण एक सेर	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा 5, दीपक, मिल सके तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प,	भात, सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्ण पौली, सायं, पश्चिम दिशा में किसी वृक्ष के नीचे रखें,	सुनन्दना विधानोक्त	
पंचम दिन–मास–वर्ष में विडालिका	एक सेर चावलों का आटा	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेत ध्वजा 5, गेहूं के आटे के सतिए,	श्वेत भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखें,	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं मुञ्च रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहाण अस्त्र ठः ठः चामुंडे सर्वारि चण्डिके ठः ठः स्वाहा।	
षष्ठ दिन–मास–वर्ष में षट्कारिका	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 5 मिठाई, 5 सुहाली, 7 पूड़ियां, 1 प्रहर दिन चढे पूर्व में चौरास्ते पर रखें,	योगिनी विधानोक्त	कूठ, गुग्गुल, राई, हाथीदांत, घृत।
सप्तम दिन–मास–वर्ष में कालिका	चावल का आटा एक सेर	श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, दीपक 5, श्वेतध्वजा 5,	भात, 7 पूड़ियां, सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
अष्टम दिन–मास–वर्ष में कामिनी	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	रक्तचन्दन, 5 रंग की झंडी 5, दीपक 5,	गेहूँ की रोटी, मसूर की दाल, हरासाग, छागमांस, संध्या में चौरास्ते पर रखें,	विडालिका विधानोक्त	
नवम दिन–मास–वर्ष में मदना	एक सेर गेहूं का आटा	चन्दन, पुष्प, 5 दीपक, 5 रंग की झंडी 5,	भात, मत्स्यमांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखें	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हन् हन् हुं फट् स्वाहा।	गोश्रृंग, लहसुन, सांप की कांचली, नीम के पत्ते, पुरुष और बिल्ली के बाल, राई, गोघृत।
दशम दिन–मास–वर्ष में रेवती	एक सेर गेहूं का आटा	रक्तपुष्प, 25 झण्डी, 25 दीपक, 25 सतिए,	गुड़ के घी भुने चावल, गौघृत, सायं, दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते वैश्वदेवाय हन् हुं फट् स्वाहा।	
एकादश दिन–मास–वर्ष में सुदर्शना	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेतपुष्प, 25 दीपक, 25 सफेद झण्डी, 25 आटे के सतिए,	श्वेतभात, 7 पूड़े, सुहाली 7, सायं व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो भगवते रावणाय चन्द्रहास, वज्रहस्ताय ज्वल ज्वल दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।	
द्वादश दिन–मास–वर्ष में अद्मुता	चावलों का आटा एक सेर	13 दीपक, 13 झण्डी, 13 सतिए आटे के,	सुहाली, पूड़े 7, पूड़ियां 7, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखें,	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन् हन् शोषय शोषय मर्दय मर्दय तापय तापय हुँ हुँ हुँ हन् हन् दुष्टानां ह्रां ह्रां स्वाहा।	

अथ बालपूतना–विधान

यहां लिखे बाल–कष्टावली चक्रोक्त हर एक बलिदान के पीछे मार्जन शिखास्थान– स्पर्श निम्न–लिखित मन्त्रों द्वारा एक ही प्रकार से होता है, बलिदान–विधि तीन दिन निरंतर करें। चौथे दिन पलाश, अश्वत्थ, बिल्व, गूलर, मिल सके तो कपित्थ– इनके पत्रों को उबालकर बालक को मंत्र–पाठपूर्वक स्नान करावें। तदनन्तर कल्याणार्थ यथाशक्ति भिक्षुकों को तथा कुत्ते आदि जीवों को मिष्ठान भोजन कराएं। तदनन्तर "ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्ष............" इत्यादि शांतिमंत्रों व मार्जनमंत्रों से कुशा से छींटे देने के अनन्तर बालक की शिखा या शिखास्थान स्पर्शपूर्वक यह मंत्र पढ़ें– " ओं रक्ष रक्ष महादेव नीलग्रीव जटाधर। ग्रहैस्तु सहितो रक्ष मुञ्च मुञ्च कुमारकम्।।

"ओं सर्वमातर इमं ग्रहं संहरंतु हुं रोदय–रोदय, स्फोटय –स्फोटय स्वाहा। गर्ज–गर्ज सः गृहाण–गृहाण आमर्दय– आमर्दय ह्रीम्–ह्रीम् हन् हन् एवं सिद्धिरुद्रो ज्ञापय स्वाहा।।"

अथ नक्षत्र–कष्टावली

रोग–नक्षत्र	रोगशान्त्यर्थ दान	नक्षत्रपादवशाद् रोगदिन–संख्या				रोगशान्त्यर्थ जपनीय मन्त्र	रोगनिवृत्त्यर्थ बलि
		1	2	3	3		
अश्विनी	भोजनदान	9	11	1	20	मृत्युञ्जयमंत्र	घोड़ी के मुख में सात व्रीही धान्य दें।
भरणी	गो–अन्नादि दान	0	80	40	11	यमायतवेति मंत्रः	हाथी के मुख में तिल चावल दें।
कृत्तिका	स्वर्णदान	9	11	16	28	अग्निर्मूर्धेति	कछुए के मुख में घी दें।
रोहिणी	घृतदान	3	9	18	30	ब्रह्मायऐति	सर्प को दूध–दही खिलाएं।
मृगशिरा	तिलदान	9	5	7	10	इमं देवेति मंत्र	खरगोश को दूध पिलाएं।
आर्द्रा	गोदान	0	18	0	0	नमस्ते रुद्र इति मंत्र	बकरे के मुख में रक्त डालें।
पुनर्वसु	पीतलदान	7	14	2	21	अदितिर्द्यौरिति मन्त्रः	सूअर को धान्य खिलाएं।
पुष्य	तैलान्नदान	6	7	10	21	बृहस्पतेति मन्त्रः	बकरे के मुख में दही डालें।
आश्लेषा	गो–अजादि दान	0	0	41	0	नमोस्तुसर्पेति मन्त्रः	बिलाब [illegible] दूध पिलाएं।
मघा	वस्त्राज्यदान	15	7	17	20	पितृभ्य इति मन्त्रः	बन्दर को तिल उड़द खिलाएं।
पू.फा.	भोजनदान	0	15	0	30	भगम्प्रणेति मन्त्रः	ऊंट के मुख में शहद दें।
उ.फा.	अन्नदान	7	14	7	60	दध्यावद्धेति मन्त्रः	गाय को शाक खिलाएं।
हस्त	तैलदान	15	17	15	0	उदत्यं जातवेदेति मन्त्रः	भैंसे को कमल के फूल खिलाएं।
चित्रा	दुग्धदान	11	9	9	16	त्वष्टा तुरगेति मन्त्रः	बाघ के लिए तगर–धतूरे के फूल वन में रखें।
स्वाती	गौघृतदान	60	17	30	0	वायोरग्नेति मन्त्रः	भैंसे को गुड़, चावल खिलाएं।
विशाखा	गौ–स्वर्णदान	15	0	4	13	इंद्राग्नी इति मन्त्रः	बाघ के मुख में गुड़, भात की बलि दें।
अनुराधा	गौघृतदान	60	12	36	30	नमो मित्रेति मन्त्रः	बकरे को कुल्थीसहित भात, गुड़ दें।
ज्येष्ठा	तिलदान	69	9	6	4	त्रातारमिन्द्रमिति मन्त्रः	बंदरों को गुड़, तिल डालें।
मूल	रौप्यपात्रदान	0	9	15	6	माता पुत्रेति मन्त्रः	बिलाब को दूध पिलाएं।
पू.षा.	गोमुक्तादान	0	15	24	10	आपोघर्मेति मन्त्रः	कछुए के मुख में नागरमोथे की बलि दें।
उ.षा.	भोजनदान	30	24	26	16	विश्वेदेवेति मन्त्रः	गौ को धान्य डालें।
श्रवण	श्रीफलदान	60	24	6	9	विष्णोररराटेति मन्त्रः	भैंसे के मुख में रक्त, मीठा की बलि दें।
धनिष्ठा	अश्वान्नदान	15	4	20	21	वसोः पवित्रेति मन्त्रः	मनुष्य के मुख में दही, अन्न की बलि दें।
शतभिषा	भोजनान्नदान	4	45	3	22	वरुणस्तम्भेति मन्त्रः	गौ को चावल खिलाएं।
पू.भा.	भोजनदान	0	12	21	19	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	कौए के मुख में फल की बलि छोड़ें।
उ.भा.	अन्नदान	10	3	9	15	अहिर्बुध्न्येति मन्त्रः	गाय को चावल खिलाएं।
रेवती	फलदान, कन्यापूजन	18	10	9	20	पूषन्नयेति मन्त्रः	हाथी के मुख में पूरी–पूओं की बलि छोड़ें।

नोट- इस कष्टावली में प्रत्येक नक्षत्र का जपनीय मंत्र पृथक्–पृथक् लिखा है, उसे न जप सकें तो महामृत्युंजय मन्त्र ही जपें। जिस नक्षत्र के जिस चरण में पहले रोग उत्पन्न हुआ है, उसे चरणानुसार कष्ट व दिन जानें, शून्य से विशेष भय जानें। दान, जप करे। जिस नक्षत्र में रोग पैदा हुआ है, उसे यहां कष्टावली में रोगनक्षत्र का नाम दिया गया है। रोगनक्षत्र को जानकर, इन कोष्ठकों में लिखा उपाय एवं यथाशक्ति दान करने से रोग शान्त होगा। 'रोग निवृत्त्यर्थ बलिदान' वाले कॉलम में घोड़ी, हाथी आदि के मुख में बलि देने के लिए लिखा है, वह गेहूं के आटे की वैसी ही आकृति बनाकर (मन में हाथी आदि की धारणा करके) उसके मुख में बलिद्रव्य देकर धूप–दीपादि करके आटे की आकृति को जल में प्रवाहित कर दें– ऐसा तीन दिन करें। साथ ही दान और जप भी करें।

ज्वालामुखी योग

तिथि	१	५	६	९	१०
नक्षत्र	मूल	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	आश्लेषा

जन्मे सो जीवे नहीं बसै जो उजड़ जाय। चूड़ा पहिरे कामिनी चटपट विधवा होय। गऐ गए ना बुहरे कूए नीर सुकाय।

पुत्रोत्पत्ति का समय

(1) जन्मलग्नेश व पुत्रेश के स्पष्ट को जोड़ें। योगफल के राश्यादि और नवांश की राशि में या इन दोनों की त्रिकोण राशि में जब गोचर का गुरु होता है, तब पुत्र–संतान उत्पन्न होती है।

(2) चंद्र, लग्न, गुरु– इन तीनों से पंचमस्थानेश या नवमस्थानेश की दशान्तर्दशा में पुत्रसंतानोत्पत्ति होती है।

विवाह (स्त्रीसुख) होने का समय

(1) जन्मलग्नेश, सप्तमेश को जोड़कर जो राशि हो, उस राशि में जब गोचर का गुरु हो, तब विवाह होता है।

(2) चन्द्रराशीश और अष्टमेश को जोड़ने पर प्राप्त राशि में जब गोचर का गुरु आए, तब विवाह होता है।

(3) लग्नेश का नवांशेश जिस राशि में हो, उस राशि से द्वितीयभाव में जब गोचर में गुरु–चन्द्र होते हैं, तब विवाह होता है।

(4) शुक्र–चन्द्र व सप्तमेश की दशान्तर्दशा में विवाह होता है।

पिता के खतरे का समय

(1) गुलिक स्पष्ट से सूर्य स्पष्ट घटाएं, शेष राशि के त्रिकोण में जब गोचर का शनि हो, तब पिता की मृत्यु होती है।

(2) सूर्य से 1/2/7/12 भाव में जो पापग्रह हो, उस की दशान्तर्दशा में पिता की मृत्यु होती है।

रोगोत्प[illegible]ी कुयोगाः

(1) रोग के [illegible] शुरुआती दिन में जन्मराशि, नक्षत्र, लग्न में या रा[illegible]श व लग्न से आठवें चन्द्र या यमघंट कुयोग हो।

(2[illegible] सूर्यवार को मघा, द्वादशी या भरणी, अनुरा[illegible]ा नक्षत्र हो।

(3) सोमवार को आर्द्रा या उ. षा. नक्षत्र हो।

(4) मंगलवार को कृत्तिका, मघा व शतभिषा या नन्दा (1/6/11) तिथि हो।

(5) बुधवार को अश्विनी, विशाखा या भद्रा (2/7/12) तिथि, आश्लेषा हो।

(6) गुरुवार छठ व शतभिषा या ज्येष्ठा व मृग. या जया (3/8/13) तिथि व मघा, हस्त हो।

(7) शुक्रवार–अष्टमी व अश्विनी या आश्ले., श्रवण या रिक्ता (4/9/14) तिथि, आर्द्रा या धनिष्ठा हो।

(8) शनिवार को नवमी व पू. षा. या हस्त व पू. भा. या पूर्णा (5/10/15) तिथि व भरणी हो।

(9) सूर्य, मंगल, शनि वारों को 4। 6। 9। 12/14/30 तिथि, भरणी, कृत्ति. आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वा. 3, विशा., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र हों तो मृत्युतुल्य कष्ट होता है।

परञ्च– जन्मपत्र में मारकेश का और भी विचार कर लेना चाहिए। क्योंकि– बिना मारकेश आए मृत्यु तो होती ही नहीं। हां– ऐसे योग में कष्ट ज़रूर मृत्युतुल्य होता है। उपरोक्त योगों में से किसी भी एक योग में रोगारम्भ होते ही तुलादान, गोदान तथा मृत्युञ्जयजप करना कल्याणप्रद है।

बाल–रक्षार्थ धूप

राई, लाख, नीम के पत्ते, बांस का छिल्का, लहसुन, शिवजी पर चढ़े हुए फूल, अगर, गाय का घी–इन सब को मिलाकर धूप देने से सब पूतना तथा अन्य बालग्रह दूर हो जाते हैं। धूप देते समय "खुं खुर्दनं हुं फट् स्वाहा–" इस मन्त्र का उच्चारण करें।

अथ रोगत्रिनाड़ी चक्रम्

प्रथमा	आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु.	ज्ये.	धनि.	शत.	भर.	कृ.
मध्या	पुन.	मघा	हस्त	विशा.	मूल	श्रवण	पू.भा.	अश्वि.	रो.
अन्त्या	पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वा.	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेव.	मृ.

सूर्यनक्षत्र, दिन, जन्म और नाम नक्षत्र रोगत्रिनाड़ीचक्र में एक ही नाड़ी पर हों तो असाध्य रोगी का मरण होता है। मरने को हो तो प्रतिदिन देखने से जिस दिन यह योग मिले, उसी दिन निःसन्देह रोगी की मृत्यु कहनी चाहिए। यह रोगत्रिनाड़ी चक्र यात्रा तथा रण के समय वर्जित करना चाहिए।

कालस्य मुखदंष्ट्रा ज्ञानम्

दिननक्षत्र से नामनक्षत्र 5/13/23 संख्या का हो तो काल का मुख होता है और उसी प्रकार 10/18वां नक्षत्र दंष्ट्रा (दाढ़) होती है। काल के मुख में दाढ़ में जिस दिन गोचर में नक्षत्र प्राप्त हो, उस दिन अत्यन्त रोगग्रस्त पुरुष की हालत मृत्युपर्यन्त होती है। रोग पर, सर्पादि दर्शन पर, विग्रह–युद्ध में जाने पर काल के मुख–दंष्ट्रा में नक्षत्र हो तो अशुम होता है।

कालांगचक्र से शुभाशुभ फलज्ञान

यदि किसी व्यक्ति के अंगविशेष में पीड़ा, कष्ट, घाव, फोड़ा आदि चर्मविकार किंवा वायु–विकारादिजन्य कोई कष्ट हो तो तात्कालिक प्रश्नकुण्डली लगाकर, निम्नलिखित कालांगचक्र में दिए भावों के अनुसार उस पीड़ित भाव को देखें। यदि उस भाव में कोई अशुम ग्रह हो, किंवा वह भाव खलदृष्ट, अस्त, नीच तथा शुभग्रह की दृष्टि से रहित हो तो समझें, कि उस अवयव में और विशेष कष्ट की संभावना है। शान्ति के लिए उस ग्रह की शान्ति कराएं। यदि प्रश्नकुण्डली में पीड़ित भाव शुभग्रह से युक्त किंवा शुभग्रहदृष्ट हो तो रोग (कष्ट) शीघ्र निवृत्त हो जाएगा।

कालांगचक्र

भाव	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंग	सिर	मुख	भुजाएं	हृदय	उदर	कटिभाग	बस्ति/मूत्राशय	लिंग/गुदा	जंघाएं	घुटने	पिण्डलियां	पाद–युगल

तिथिकष्टावली यन्त्रम्

तिथि	तिथीश	कष्ट–दिन	बलि	दान
1	अग्नि	12	शर्कराज्यबलि	घृतदान
2	ब्रह्मा	5	पायसबलि	भोजनदान
3	काम	7	घृतान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
4	गणेश	16	मोदकान्नबलि	मूंगादान
5	सर्प	21	पायसबलि	दुग्धदान
6	स्कन्द	12	मोदकान्नबलि	चित्रवस्त्रदान
7	सूर्य	8	पायसबलि	ताम्रपात्रदान
8	ईश्वर	13	नानाभक्ष्यबलि	पीतवस्त्रदान
9	दुर्गा	18	मिष्ठान्नबलि	रक्तवस्त्रदान
10	यम	25	कृशरान्नबलि	नीलवस्त्रदान
11	विश्वेदेव	7	मोदकान्नबलि	पीतवस्त्रदान
12	विष्णु	7	मोदकान्नबलि	श्वेतवस्त्रदान
13	काम	10	दधिशर्कराबलि	सुवर्णदान
14	शिव	60	मिष्ठान्नबलि	क्षौद्रशाकभोजन
15	चन्द्र	3	दध्योदनबलि	रौप्यदान
30	पितर	18	अपूपकान्नबलि	उत्तमान्नभोजन

वारकष्टावली–यंत्रम्

वार	वारेश	क.दि.	बलि व दान
सू.	रुद्र	5	पायसबलि, सूर्यदान
चं.	गौरी	8	नानाभक्ष्यबलि, चन्द्रदान
मं.	स्कन्द	5	दुग्धबलि, भौमदान
बु.	विष्णु	7	मुद्गान्नबलि, बुधदान
बृ.	ब्रह्मा	5	घृतपक्वबलि, गुरुदान
शु.	इन्द्र	7	तिलयवाज्यमधुबलि, शुक्रदान
श.	यम	15	माषान्नबलि, शनिदान

[illegible] दान-पदार्थाः	जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः

ग्रहगोचराद्यैर्दशा-क्रमाद्यैर्ग्रह-कृतानिष्ट-फल-शमनार्थं प्रत्येक-ग्रहाणां दान-पदार्थाः												जपसंख्या	जपनीयमन्त्राः	दानसमय	हवनसमिधः
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तपुष्प	मूंग, रक्तगाय	रक्तचन्दन	7000	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	उदय	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	शंख	श्वेतपुष्प	कर्पूर, श्वेतबैल	श्वेतचन्दन	11000	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	सन्ध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	केसर	रक्तकनेर	कस्तूरी, रक्तबैल	रक्तचन्दन	10000	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	घटी 2 शेषदिन	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	हाथीदांत	सर्वपुष्प	कर्पूर, शस्त्र	फल	19000	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	घटी 5 शेषदिन	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचने	खांड	घी	पीतवस्त्र	हल्दी	पीतपुष्प	पुस्तक, घोड़ा	पीतफल	19000	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	सन्ध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	सुगंध	श्वेतपुष्प	दधि, श्वेतघोड़ा	श्वेतचन्दन	16000	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	सूर्योदय	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुल्थी	तेल	कृष्णवस्त्र	कस्तूरी	कृष्णपुष्प	कृष्णांग भैंस	उपानह	23000	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	मध्याह्न	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तिल	नीलवस्त्र	खड्ग	कृष्णपुष्प	कंबल, घोड़ा	शूर्प	18000	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	रात्रि	दूर्वा
केतु	लहसुनिया	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	नारियल	धूम्रपुष्प	कंबल, बकरा	शस्त्र	17000	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः	रात्रि	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	कपूर	श्वेतपुष्प	मसरी, श्वेतचन्दन	हाथीदांत	मुन्थेशवत्	मुन्थेशमन्त्रः	मुन्थेशकाल	मुन्थेशवत्

नवग्रहों के व्रत की विधि

यदि किसी व्यक्ति का कोई ग्रह गोचर से या दशा–अन्तर्दशा से खराब चल रहा हो तो निम्नलिखित प्रकार से उस ग्रह का शास्त्रोक्त व्रत–विधान ब्रह्मचर्यपूर्वक करने से अशुभ फल की निवृत्ति होती है।

रविवार के व्रत की विधि–सूर्य का व्रत रविवार को करें। यह व्रत शुक्लपक्ष के पहले (जेठे) रविवार से आरम्भ करके वर्षपर्यन्त तीस या कम से कम 12 व्रत करें। उस रोज़ केवल गेहूं की रोटी, घी और लालखाण्ड के साथ या गेहूं का गुड़ से बना दलिया या हलवा इलायची डालकर दान करके शेष का दिन में ही सूर्यास्त से पहले भोजन करें। नमक बिल्कुल न खाएं। भोजन से पूर्व हो सके तो लालवस्त्र पहनकर ऊपर चक्रोक्त बीज–मन्त्र की माला का जप करें। तदनन्तर सूर्य को गन्धाक्षत, रक्तपुष्प दूर्वायुक्त अर्घ्य प्रदान करें। अपने मस्तक में लालचन्दन का तिलक करें। जब व्रत का अन्तिम रविवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण को भोजन कराएं। ऐसा करने से सूर्य का अशुभ फल शुभ फल में परिणत हो जाएगा। तेजस्विता बढ़ेगी। नेत्ररोग, चर्मरोग एवम् अन्य शारीरक रोग भी शान्त होंगे।

सूर्यशान्ति का सरल उपचार :–लाल वस्तुओं का विशेष उपयोग करें– जैसे– लालचादर, परना तथा तांबे की अंगूठी का पहनना।

सोमवार के व्रत की विधि– चन्द्रमा का व्रत शुक्ल–पक्ष के प्रथम (जेठे) सोमवार को प्रारम्भ करके 54 या 10 व्रत करें। व्रत के दिन श्वेत वस्त्र धारण करके ऊपर चक्रलिखित बीज–मन्त्र की 11 या 3 माला जप करें। सफेद फूलों से पूजन करके सफेद चन्दन का तिलक करें। मध्याह्न के समय नमक के बिना दही–चावल, घी, खाण्ड का यथाशक्ति दान करके स्वयं भोजन करें। जब व्रत का अन्तिम सोमवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके खीर–खाण्ड से ब्राह्मण व बटुकों को भोजन कराएं। इस व्रत के करने से व्यापार में लाभ, मानसिक कष्टों से शान्ति होती है। विशेष कार्यसिद्धयर्थ भी यह पूर्ण फलदायक होता है।

चन्द्रशान्ति का सरल उपचार :– सफेद जुराब, रुमाल, सफेद वस्त्र, दूध, दहीं का उपयोग, चान्दी की अंगूठी पहनना।

मंगलवार के व्रत की विधि :– यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) मंगलवार से प्रारम्भ करके 21 या 45 व्रत करने चाहिएं। हो सके तो यह व्रत आजीवन रखें। बिना सिला हुआ लालवस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 1, 5, या 7 माला जप करें। नमक सेवन न करें, यह ज़रूरी है। उस दिन गुड़ से बने हलवे का या लड्डुओं का दान करें और स्वयं भी खाएं। गुड़ से बना कुछ हलवा आदि बैल को भी खिलाएं। मंगलवार का व्रत ऋण–हर्ता तथा सन्तति–सुखप्रद है। जब व्रत का अन्तिम मंगलवार हो, उस दिन हवन–पूर्णाहुति करके लालवस्त्र, तांबा, मसूर, गुड़, गेहूं तथा नारियल का दान करें। ब्राह्मणों तथा बच्चों को मीठा भोजन कराएं।

मंगलशान्ति का सरल उपचार :– लालरंग की वस्तुओं का उपयोग, रात को लालवस्त्र पहनें, तांबे के बर्तनों का प्रयोग, तांबे की अंगूठी पहनना।

बुधवार का व्रत :– इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) बुधवार से प्रारम्भ कर 21 या 45 व्रत करें। हरा वस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 17 या 3 माला जप करना चाहिए। उस दिन भोजन में नमकरहित, खाण्ड–घी से बने पदार्थ, जैसे– मूंगी का बना हुआ हलवा, मूंगी की बनी मीठी पंजीरी या मूंगी के लड्डुओं का दान करें। फिर तीन तुलसीपत्र, गंगाजल या चरणामृत के साथ लेकर स्वयं भी उपरोक्त पदार्थ खाएं। व्रत के अन्तिम बुधवार को हवन–पूर्णाहुति करके छोटे बच्चों या अन्नहीन भिक्षुक को मूंगीयुक्त भोजन कराकर हरा वस्त्र, मूंगी आदि का दान भी करें। इस व्रत से विद्या, धन–लाभ, व्यापार में तरक्की तथा स्वास्थ्यलाभ होता है। अमावस का व्रत करने से भी बुध ग्रहजन्य नेष्टफल से मुक्ति मिलती है।

बुधशान्ति का सरल उपचार :— हरा रंग, हरे वस्त्र तथा शृंगार की अन्य वस्तुएं, हरा रुमाल आदि रखना, कांसी के बर्तन में भोजन, बुधाष्टमी का व्रत।

बृहस्पति के व्रत की विधि :— यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) गुरुवार से आरम्भ करें। तीन वर्षपर्यन्त या 16 व्रत करें। उस दिन पीतवस्त्र धारण करके बीज–मन्त्र की 11 या तीन माला जप करें। पीतपुष्पों से पूजन–अर्घ्य दानादि के बाद भोजन में चने के बेसन की घी–खाण्ड से बनी मिठाई, लड्डू या हल्दी से पीले या केसरी चावल आदि ही खाएं और इन्हीं का दान करें। जब व्रत का अन्तिम गुरुवार हो तो हवन–पूर्णाहुति के बाद ब्राह्मण व बटुकों को लड्डूभोजन कराएं। स्वर्ण, पीत–वस्त्र, चने की दाल आदि का दान करें। यह व्रत विद्यार्थियों के लिए बुद्धि तथा विद्याप्रद है। धन की स्थिरता तथा यशवृद्धि करता है। अविवाहितों के लिए स्त्री प्राप्तिप्रद सिद्ध होता है।

बृहस्पतिशान्ति का सरल उपचार :— पीले वस्त्र, रुमाल आदि, पीले फूल धारण करना, सोने की अंगूठी पहनना।

शुक्र के व्रत की विधि :— इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शुक्रवार से प्रारम्भ कर, 31 या 21 व्रत करें। श्वेत वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 3 या 21 माला जपें। भोजन में चावल, खाण्ड या दूध से बने पदार्थ ही सेवन करें। यही पदार्थ यथाशक्ति सम्भव हो तो एकाक्षी (एक आंख वाले) भिक्षुक को या श्वेत गाय को दें। जब व्रत का अन्तिम शुक्रवार हो, तब हवन–पूर्णाहुति के बाद खीर–खाण्ड से बने पदार्थ ब्राह्मणबटुकों को खिलाएं। चांदी, श्वेतवस्त्र, खाण्ड, चावल का दान करें। इस व्रत से स्त्रीसुख एवं ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

शुक्रशान्ति का सरल उपचार :—सफेद वस्त्र, सफेद रुमाल, सफेद फूल धारण करना आदि, गाय को हरा घास या पेड़ा देना, शिवपूजन।

शनि के व्रत की विधि :— इस व्रत को शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से आरम्भ करे। व्रत 51 या 31 करने चाहिएं। व्रत के दिन काला वस्त्र धारण करके बीजमन्त्र की 19 या तीन माला का जप करें। फिर एक बर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, काले फूल या लवंग (लौंग), गङ्गाजल तथा शक्कर, थोड़ा दूध डालकर पश्चिम की ओर मुंह करके पीपल–वृक्ष की जड़ में डाल दें। भोजन में उड़द के आटे का बना पदार्थ, पंजीरी, कुछ तेल से पका हुआ पदार्थ कुत्ते व गरीब को दें तथा तेलपक्व वस्तु के साथ केला व अन्य फल स्वयं प्रयोग में लाना चाहिए। यही पदार्थ दान भी करें। व्रत के अन्तिम शनिवार को हवन–पूर्णाहुति के बाद तेल में पकी हुई वस्तुओं को देने के बाद काला वस्त्र, केवल उडद तथा देसी (चमड़े का) जूता तेल लगाकर दान करें। इस व्रत से सब प्रकार की सांसारिक परेशानी दूर हो जाती है। झगड़े में विजय होती है। लोह–मशीनरी, कारखाने वालों के व्यापार में उन्नति होती है।

शनिशान्ति का सरल उपचार :— घर के परदे, जूते, जुराब, घड़ी का पट्टा, रुमाल आदि काले रंग के धारण करें।

राहु–केतु के व्रत की विधि :— शुक्ल पक्ष के प्रथम (जेठे) शनिवार से ही यह व्रत भी शुरु करना चाहिए। व्रत 18 करें। काला वस्त्र धारण करके 18 या 3 बीजमन्त्र की माला जपें। तदनन्तर एक बर्तन में जल, दूर्वा और कुशा लेकर, पीपल की जड़ में डालें। भोजन में मीठा चूरमा, मीठी रोटी, समयानुसार रेवड़ी, भुग्गा, तिल के बने मीठे पदार्थ सेवन करें और यही दान में भी दें। रात को घी का दीपक जलाकर पीपल की जड़ में रख दें। इस व्रत से शत्रुभय दूर होता है तथा राजपक्ष से विजय मिलती है।

राहु–केतुशान्ति का सरल उपचार :— नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी पहनें।

ग्रहों के अरिष्ट-निवृत्त्यर्थ स्नानविधि

यथा सिद्धौषधैः रोगाः नश्येयुर्मन्त्रतो भयम्।।
तथा स्नान–विधानेन ग्रह–दोषः प्रणश्यति।।

रवि ग्रह के दोष की शान्ति के लिए कभी–कभी व्रत के दिन बिल्ववृक्ष की जड़, देवदारू, मुलट्ठी, लाल फूल, केसर पानी में उबालकर स्नान करें। **चन्द्र** शान्त्यर्थ सोमवार के व्रत के दिन खिरनी की जड़, श्वेत चन्दन, सिप्पी, पञ्चगव्य उबालकर स्नान करें। ऐसे ही **मंगलव्रत के दिन** अनन्तमूल, रक्त चन्दन, मौलश्री, लाल फूल–ये सब उबालकर; **बुधव्रत के दिन** गोबर, मधु, चावल, विधारा; **गुरुव्रत के दिन** भारंगी, मुलट्ठी, श्वेत सरसों, मालती पुष्प; **शुक्रव्रत के दिन** इलायची, मजीठ तथा **शनिव्रत के दिन** काले तिल, सौंफ, सुरमा, अमरवेल, सफेद बिनौला– उबालकर स्नान करें। ऐसे ही राहु–केतु की शान्ति के लिए शनिवार के दिन देवदारु, सरसों तथा लोहबान उबालकर स्नान करें, तो ग्रहशान्ति मिलती है।

नोटः— स्नानोक्त कोई वस्तु उपलब्ध न हो, तो जो वस्तु मिले उससे ही स्नान करें।

सर्वग्रह किंवा सर्वविधशान्ति के लिए सामान्य औषधस्नान

लाजवन्ती (छुई–मुई), कूट, खिलां, कांगनी, जौ, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि, लोध– इन औषधियों के जल एवं सतीर्थोदक स्नान करने से सब ग्रहों की पीड़ा नष्ट होती है तथा पूर्व जो दान कह चुके हैं, उनके करने से शान्ति मिलती है। गुरुवचन, देवता, ब्राह्मणों की वंदना, वेदादि श्रवण, साधुओं से बातें, मन की शुद्धता, जप, दान, होम तथा यज्ञ के करने से दुष्ट स्थानों में स्थित ग्रह पीडा नहीं करते।– (श्रीपतिः)।

शनिविचार-अथ लघुकल्याणी (ढैया) फलम्:-

कल्याणी प्रददाति वा रविसुते राशेश्चतुर्थाष्टमे व्याधिः
बन्धुविरोधं देशगमनं क्लेशं च चिन्ताधिकम्।
मृत्युं चैव करोति चापि मनुजं दुःखादि–वह्नेर्भयं
लोहशस्त्रमयं सदैव–असुखं कुर्यादसौ सर्वदा।। १।।

वृहत्कल्याणी साढेसाती फलम् :-........राशौ द्वादश (12) मूर्ध्नि जन्म (1) हृदये पादौ द्वितीये (2) शनिः। नानाक्लेशकरोऽति दुर्जनमयं पुत्रान्पशून्पीडयेत्।। हानिः स्यान्मरणं विदेशगमनं सौख्यं च साधारणम् , रामात्रृद्धिविनाशनं प्रकुरुते तुर्याष्टमे वाऽथवा।। २।।

सप्तधान्य– उड़द, मूंगी, गेहूं, चने, जौ, धान्य (तंडुल), कंगनी।

अष्टगंध-स्याही :-अगर, कस्तूरी, कुंकुम, कर्पूर, चन्दन, टोपीदार लौंग, गोरोचन, देवदारु।

अष्टगंध-धूप- अगर, छरीला, जटामासी, कर्पूर–कचरी, गुग्गुल, देवदारु, गोघृत, सफेद चन्दन।

नक्षत्र–राशिज्ञान–चक्र

राशि→	मेष			वृष			मिथुन			कर्क		
नक्षत्र→ चरण ↓	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा
प्रथम चरण	चू	ली	अ	०	ओ	वे	०	कु	के	०	हु	डी
द्वितीय चरण	चे	लू	०	ई	वा	वो	०	घ	को	०	हे	डू
तृतीय चरण	चो	ले	०	उ	वी	०	क	ङ	ह	०	हो	डे
चतुर्थ चरण	ला	लो	०	ए	वू	०	की	छ	०	हि	डा	डो

राशि→	सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धनु		
नक्षत्र→ चरण ↓	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	चित्रा	स्वाती	विशाखा	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.
प्रथम चरण	मा	मो	टे	०	पू	पे	०	रू	ती	०	ना	नो	ये	भू	भे
द्वितीय चरण	मी	टा	०	टो	ष	पो	०	रे	तू	०	नी	या	यो	धा	०
तृतीय चरण	मू	टी	०	पा	ण	०	रा	रो	ते	०	नू	यी	भा	फ	०
चतुर्थ चरण	मे	टू	०	पी	ठ	०	री	ता	०	तो	ने	यू	भी	ढ	०

राशि→	मकर				कुम्भ			मीन		
नक्षत्र→ चरण ↓	उ.षा.	अभिजित्	श्रवण	धनिष्ठा	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
प्रथम चरण	०	जू	खी	गा	०	गो	से	०	दू	दे
द्वितीय चरण	भो	जे	खू	गी	०	सा	सो	०	थ	दो
तृतीय चरण	जा	जो	खे	०	गू	सी	दा	०	झ	चा
चतुर्थ चरण	जी	खा	खो	०	गे	सू	०	दी	ञ	चि

राशिज्ञाने विशेषः– नक्षत्र व राशि में 'श' और 'स' तथा 'व' और 'ब' में कोई भेद नहीं होता। जिसके नाम का पहला अक्षर संयुक्त हो, वहां प्रथमाक्षर ग्रहण करें– **संयोगजाक्षरे नाम्नि ग्राह्यं तत्रादिमाक्षरम्।**

ध्यान दें – नामों का प्रारम्भ ङ, ञ, ण अक्षरों से नहीं होता। यदि नक्षत्र के आधार पर इन अक्षरों से नाम प्रारम्भ हो रहा हो तो 'ङ' की जगह 'घ', 'ञ' की जगह 'दु', तथा 'ण' की जगह 'पू' से प्रारम्भ करें। ऐसा करने से भेद नहीं होता।

"बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथञ्चन। ततः पश्चादभवं नाम ग्राह्यं स्वर–विशारदैः।। प्रसुप्तो भाषते येन येनागच्छति शाब्दितः। तस्य नामाद्यवर्णे या मात्रा स स्वर एव हि।।

अथ जन्मराशि-नामराश्योः प्रधानता निर्णीयते–

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे। जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।। नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे च नामराशेः प्रधानता।। कुर्यात्षोडशकर्माणि जन्मराशौ बलान्विते। सर्वाण्यन्यानि कर्माणि नामराशौ बलान्विते।। विवाह घटनं चैवं लग्नजं ग्रहजं बलम्। काममाकचिन्तयेत् सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा।।

अभिजित्‌निर्णय :– वैश्यप्रान्त्यांघ्रिः श्रुति–तिथि–भागतोऽभिजित्स्यात्।।

"उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण और श्रवण का पहला १५वां भाग जोड़कर उसके चार भाग करे। उसको अभिजित् का एक चरण मानकर नाम रखने आदि के विचार में उपयोग करें। उत्तराषाढ़ा के तीन चरणों के ही चार भाग करके उत्तराषाढ़ा का एक–एक चरण मानो। श्रवण का १५वां भाग छोड़कर जो शेष रहे, उसके चार भाग करें; उसको श्रवण के १–१ चरण मानें। सामान्य गणक के ज्ञानार्थ ही यह यहां लिखा गया है।

राशिज्ञानम्– चू ल अ मेषः, इ वो वृषः, क घ ङ छ ह मिथुनम्।।
हीडो कर्कः, माटे सिंहः, टो ष ण ठ पो कन्या।।
राते तुला, तो ना यू वृश्चिकः, ये घफढभे धनुः।।
भोजा खागी मकरः, गुशद : कुम्भः दीथझञची मीनः।।

इस राशिज्ञान में प्रत्येक राशि के आदि और अन्त का अक्षर है और जहां जो अक्षर बदलता है, वहां वह अक्षर भी ले लिया गया है। जैसे–मेष में पहला अक्षर 'चू' लेने से अश्विनी के तीन चरण (चू चे चो) का ग्रहण होता है और 'ल' से (ला ली लू ले लो) पांचों का ग्रहण हुआ अर्थात् एक चरण (चौथा) अश्विनी का और चतुर्थ चरण पर्यन्त भरणी का ग्रहण हुआ और 'अ' से कृत्तिका का प्रथम चरण– इन नौ चरणों की एक राशि मेष हुई। इसी तरह अन्य राशियों का ज्ञान करें।

विशेष– जहां 'ज्ञ' का उच्चारण 'ज्ञ' होता है वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र उ.षा. और जहां इसका उच्चारण 'ग्य' होता है, वहां ज्ञान चन्द्र का नक्षत्र धनिष्ठा माना जाएगा। क्योंकि 'ज' और 'ग' वर्ण क्रमशः उ.षा. और धनिष्ठा नक्षत्र में पड़ते हैं।

नोटः–चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र के अनुसार जातक का नाम रखने में फलितज्ञ को काफी आसानी रहती है। नाम जानने से ही ज्योतिषी जातक के जन्मसमय चन्द्रमा की राशि एवम् नक्षत्र जान लेता है तथा फलितशास्त्र में काफी महत्त्वपूर्ण फलादेश चन्द्रमा की स्थिति पर ही निर्भर है। इसका एक वैज्ञानिक रहस्य भी है। निकटतम होने से चन्द्रमा का प्रभाव भूस्थित वनस्पति एवम् प्राणियों पर अन्य सभी ग्रहों की अपेक्षा अधिक होता है। ज्वारभाटा लाने में भी चन्द्रमा की देन सूर्य की देन से दुगुनी है। चन्द्रमा का ज्वार–भाटांक सूर्य के ज्वार–भाटांक से दुगुना है। चन्द्रमा के भगणकाल का स्त्री के मासिक धर्म से साक्षात् सम्बन्ध है। आजकल वैज्ञानिकों ने कुछ प्रयोग भी किए हैं, जिससे अचर जगत् (वनस्पति आदि) पर चन्द्रमा का प्रभाव स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है। अतः जन्मपत्र आदि के अभाव में चन्द्रमा की स्थिति से ही फलादेश करने की परिपाटी फलितज्ञों में है।

नवीन फलितवेत्ता जन्मपत्र की अंग्रेज़ी तारीखों के हिसाब से भी फलादेश करने लग गए हैं। इस पद्धति में सायन सूर्य की राशि के आधार पर ही फलादेश होता है, जबकि चन्द्रमा की राशि के आधार पर फलादेश करना अधिक उपयुक्त है। अतः प्राचीन फलित–शास्त्रियों ने जन्मकालीन चन्द्रमा की स्थिति को जन्मराशि का नाम दिया है। हमारे ज्योतिष के अनुसार इसका विशेष महत्त्व भी है।

बारह राशियों का मासिक फलादेश एवं संक्रान्ति फलादेश (सम्वत् 2073 वि.)

वैशाख मास

मेषसंक्रान्ति (13 अप्रैल से 13 मई, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में 'बुधादित्य योग', ईरान, अफगानिस्तान, अरबराष्ट्र किंवा अमेरिका आदि में कहीं प्राकृतिक आपदा का कारण बने। भारत की प्रभावराशि मकर का अधिपति शनि अष्टम में अष्टमेश के साथ होने से भारत के लिए अनेकों समस्याओं को जन्म देने वाला है। कहीं उग्रवादजन्य कारणों एवम् प्राकृतिक घटनाओं आदि से भारी हानि हो। वैशाख में घी, गुड़, तेल, तिलहन में भारी तेजी संभव है।

वैशाखसंक्रान्ति-ग्रहस्थिति

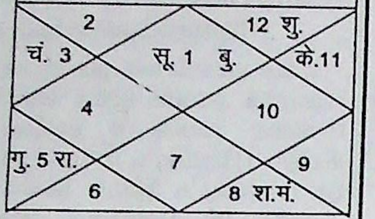

मेषसंक्रान्ति प्रवेशकाल =13 अप्रैल, 2016 ई.; 19 घं. 47 मि. (I.S.T.)
मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

वैशाख मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– लग्नेश मंगल 8वें अपनी राशि का होने पर भी शनि के साथ होने से चोटभयकारक है। राजकीय कार्यों में परेशानी रहे। 5वें गुरु–राहु का योग संतानपक्ष से कुछ चिन्ता एवम् बन्धु–बांधवों से अनबन करे। **अप्रैल** 14, 15, 16, 24, 25, 26; **मई** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृष– शुक्र उच्चस्थ है। सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ होकर हाथ से निकले, निजीजन सहयोग, मित्र–बन्धु से सुख, पति/स्त्रीकष्ट, कारोबार में गड़बड़। **अप्रैल** 17, 18, 27, 28; **मई** 6, 7 अशुभ।

मिथुन– राशीश बुध उच्चस्थ सूर्य के साथ है। सेहत ठीक रहे, आर्थिक लाभ भरपूर हो, निजीजनों से अनबन, बन्धुसुख, शत्रुप्रबल, राजपक्ष से लाभ, आय से व्यय अधिक। **अप्रैल** 19, 20, 21, 29, 30; **मई** 8, 9 अशुभ।

कर्क– कफ–पित्तविकार, आर्थिक लाभ होकर हानि, निजीजन–सहयोग, बन्धुकष्ट, सन्तानहेतु विशेष खर्च किंवा कष्ट–चिन्ता, शनि–मंगल का दान करें। नई योजना से लाभ। **अप्रैल** 13, 22, 23; **मई** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

सिंह– सिर व नेत्रकष्ट, अर्थहानि, मित्र–बन्धु से मदद, यात्रा में कष्ट, गुप्त शत्रुभय, मासान्त में लाभ। **अप्रैल** 14, 15, 16, 24, 25, 26; **मई** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कन्या– वायुरोग, वृथाव्यय, भाई–बन्धुओं का कष्ट, शत्रु–प्रबल, मासमध्य के बाद समय अनुकूल रहे। **अप्रैल** 17, 18, 27, 28; **मई** 6, 7 अशुभ।

तुला– नेत्रकष्ट, वृथाव्यय, मित्र–बन्धु से मदद, सन्तानपक्ष हेतु खर्च, स्त्रीपक्ष से लाभ, कारोबार ठीक। **अप्रैल** 19, 20, 21, 29, 30; **मई** 8, 9 अशुभ।

वृश्चिक– वृथा कलह से बचें, अर्थलाभ, भ्रातृकष्ट, राजपक्ष से भय, कार्यान्तर/स्थानान्तर का योग, शनि–मंगल का दान करते रहें। **अप्रैल** 13, 22, 23; **मई** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, आर्थिक संकट, निज–बन्धु से मदद, स्त्रीपक्ष से लाभ, मासान्त अशुभ। **अप्रैल** 14, 15, 16, 24, 25, 26; **मई** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मकर– रक्त–पित्तविकार, अर्थहानि, मित्र–बन्धु से सुख/लाभ, पति/स्त्रीपक्ष से परेशानी, नई योजना से लाभ, संतानपक्ष से सुख। **अप्रैल** 17, 18, 27, 28; **मई** 6, 7 अशुभ।

कुम्भ– उदरविकार, अर्थलाभ होकर वृथाव्यय, निजीजनों से लाभ, संतानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल। **अप्रैल** 19, 20, 21, 29, 30; **मई** 8, 9 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, धनलाभ, बन्धुकष्ट, संतानपक्ष से खुशी, चोरभय, यात्रा में कष्ट हो। **अप्रैल** 13, 22, 23; **मई** 2, 3, 10, 11 अशुभ।

ज्येष्ठ मास

वृषसंक्रान्ति (14 मई से 13 जून, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य पर शनि–मंगल की दृष्टि देश के कुछ प्रान्तों में उग्रवादजन्य अथवा प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि का योग बनाती है। भीषण गर्मी व सूखा आदि से भी हानि हो। मुस्लिम-राष्ट्रों में विस्फोट व आगजनी आदि घटनाओं से भी हानि सम्भव है। कपास, चीनी, तेल, तिलहन आदि एवम् खाद्यपदार्थों में तेजी आए।

ज्येष्ठसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

वृषसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मई, 2016 ई.; 16 घं. 41 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 10 घं. 17 मि. बाद,

ज्येष्ठ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– शनि–मंगल की स्थिति स्वास्थ्य खराब करेगी। चन्द्र–राहु योग मानसिक कष्टकारक है। आर्थिक-स्थिति कमजोर रहे। स्त्री कष्ट, सम्पत्ति–विवाद, माता–पिता को कष्ट। कारोबार कुछ ठीक रहे। **मई 22, 23, 31; जून 1, 8, 9 अशुभ।**

वृष– मित्र–बन्धुकष्ट, रोगभय, शत्रुप्रबल, धनलाभ होकर हाथ से निकले, संतानपक्ष से सुख, कार्यक्षेत्र में संघर्ष से सफलता प्राप्त हों। **मई 14, 15, 24, 25; जून 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।**

मिथुन– मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य कुछ खराब रहे। आय–व्यय बराबर। सन्तानकष्ट व चिन्ता, पारिवारिक उलझनें बढ़ें, कारोबार में प्रगति। **मई 17, 18, 26, 27, 28; जून 4, 5,13 अशुभ।**

कर्क– शरीर–कष्ट, धनलाभ, परिवार–कष्ट, सन्तानपक्ष से शुभ समाचार, स्त्रीकष्ट, व्यापार में लाभ, राजपक्ष से लाभ, कार्यक्षेत्र उज्जवल रहे। **मई 19, 20, 21, 29, 30; जून 6, 7 अशुभ।**

सिंह– शरीर–कष्ट, रोगभय, आर्थिक-स्थिति कमजोर, मित्र–बन्धु को तकलीफ, संतानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से हानि, कारोबार में रद्दोबदल। **मई 22, 23, 31; जून 1, 8, 9 अशुभ।**

कन्या– स्वास्थ्य ठीक रहे। स्त्रीपक्ष से सुख–लाभ रहे। पारिवारिक जीवन में असन्तोष रहे। बन्धुकष्ट, संततिचिन्ता, कारोबार में उन्नति। **मई 14, 15, 24, 25; जून 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।**

तुला– सिरो–व्यथा, शरीर–कष्ट, स्त्रीकष्ट, रोगभय, नई योजनाओं से कारोबार में प्रगति, परिवार–सुख, खर्चविशेष, आय–व्यय बराबर। **मई 17, 18, 26, 27, 28; जून 4, 5, 13 अशुभ।**

वृश्चिक– स्वास्थ्य ठीक, स्त्रीपक्ष शुभ, संतानपक्ष से चिन्ता एवं सन्तान हेतु खर्च। आय से व्यय अधिक, बन्धुकष्ट, कारोबार ठीक। **मई 19, 20, 21, 29, 30; जून 6, 7 अशुभ।**

धनु– शरीर–कष्ट, वायुविकार, मानसिक परेशानी, पारिवारिक उलझनें बढ़ें, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, संतानकष्ट, आर्थिक स्थिति कमजोर। **मई 22, 23, 31; जून 1, 8, 9 अशुभ।**

मकर– स्वास्थ्य निर्बल रहे, आर्थिक स्थिति कमजोर। स्त्रीपक्ष से चिन्ता, बन्धुकष्ट, पारिवारिक–सुखहानि, कार्यक्षेत्र में संघर्ष से प्रगति। **मई 14, 15, 24, 25; जून 2, 3, 10, 11, 12 अशुभ।**

कुम्भ– रोगभय, शत्रुपक्ष से हानि, बन्धुकष्ट, धनलाभ, स्त्रीसुख, संतति-चिन्ता, कारोबार में हानि, आय–व्यय बराबर। **मई 17, 18, 26, 27, 28; जून 4, 5, 13 अशुभ।**

मीन– स्वास्थ्य–हानि, शत्रु से भय, रोगभय, स्त्रीपक्ष से लाभ, बन्धुसुख, शुभसमाचार, सन्तान पर खर्च, कारोबार कमजोर, दुर्घटना भय। **मई 19; 20, 21, 29, 30; जून 6, 7 अशुभ।**

आषाढ़ मास

मिथुनसंक्रान्ति (14 जून से 15 जुलाई, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नेश बुध का द्वादशेश शुक्र के साथ राशि–वैपर्यय है तथा बुध छठे स्थान में स्थित शनि–मंगल के साथ सम–सप्तक योग भी बना रहा है, जोकि राजनैतिक दृष्टि से सामाजिक प्रगतिपद–योजनाओं में बाधा उपस्थित करने वाला है। लेकिन नवम–स्थान पर गुरु की दृष्टि तथा पञ्चमेश शुक्र के लग्न में होने से नई योजनाएं कार्यान्वित होंगी। ईराकादि मुस्लिम राष्ट्रों में उग्रवादजन्य कष्टप्रद घटनाएं हो सकती हैं। उत्तरी भारत, नेपाल आदि में भी प्राकृतिक प्रकोप से हानि सम्भव है। शनि–मंगल अनाज व दालवाना आदि में महंगाई से तेजी बनाएंगे।

आषाढ़संक्रान्ति–ग्रहस्थिति

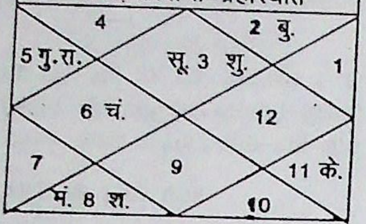

> मिथुनसंक्रान्ति प्रवेशकाल =14 जून, 2016 ई., 23 घं. 20 मि. (I.S.T.)
> मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,

आषाढ़ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– स्वास्थ्य ठीक रहे। आर्थिक लाभ, किन्तु खर्च विशेष हो। मित्र–बन्धु सुख, शत्रु प्रबल, स्त्रीपक्ष से लाभ, संतानपक्ष शुभ, रोग व चोटभय। शनि–मंगल का दान करें। **जून** 18, 19, 27, 28; **जुलाई** 6, 7, 14, 15 अशुभ।

वृष– स्वास्थ्य ठीक रहे। धनहानि, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख, संतति–कष्ट, योजनाओं में बाधा उपस्थित हो, स्त्री कष्ट, कारोबार में प्रगति। **जून 20,** 21, 22, 29, 30; **जुलाई** 8, 9 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक रहे। कारोबार ठीक। धन व परिवार–सुख। बन्धुसुख, सम्पति–विवाद, कष्टभय, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट। **जून** 14, 23, 24; जुलाई 1, 2, 10, 11, 12, अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, मन प्रसन्न रहे। कारोबार में प्रगति। धनसुख लेकिन सम्पत्ति–विवाद में हानिभय। बन्धुकष्ट रहे। संतति-चिन्ता, स्त्रीपक्ष से हानि। **जून** 15, 16, 17, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 5 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक। घरेलू झंझट, नेत्रकष्टभय, मित्र–बन्धु सुख, संतानपक्ष से सुख, कारोबार में रुकावट, स्त्रीपक्ष शुभ। **जून** 18, 19, 27, 28; **जुलाई** 6, 7, 14, 15 अशुभ।

कन्या– देहकष्ट, रोगभय, कारोबार मध्यम, स्वजनों से सम्पत्ति विवाद, योजनाओं में सफलता, संतति सुख, स्त्रीकष्ट, शनि–मंगल का दान करें। **जून 20,** 21, 22, 29, 30; **जुलाई** 8, 9 अशुभ।

तुला– स्वास्थ्य ठीक रहे। मानसिक–शान्ति, धनहानि, नेत्रकष्ट सम्भव है। बन्धुकष्ट, स्थिर–सम्पत्ति विवाद सुलझे, संतानपक्ष से हानि, स्त्रीकष्ट। **जून** 14, 23, 24; **जुलाई** 1, 2, 10, 11, 12 **अशुभ।**

वृश्चिक– सेहत ठीक। धर्म–कर्म में मन लगे, धनक्षय, घरेलू झगड़े हल हों। सम्पत्ति–लाभ, सन्तान–सुख रहे। स्त्रीपक्ष शुभ। कारोबार में रुकावट। **जून** 15, 16, 17, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 5 अशुभ।

धनु– स्वास्थ्य निर्बल। स्त्रीपक्ष से लाभ। भ्रातृसुख, सम्पत्तिलाभ, संतति सुख रहे। मानसिक कष्ट, योजनाओं में सफलता मिले। कार्यक्षेत्र में संघर्ष बढ़े। **जून** 18, 19, 27, 28; **जुलाई** 6, 7, 14, 15 अशुभ।

मकर– स्वास्थ्य ठीक रहे। स्त्रीसुख व मन प्रसन्न रहे। सम्पत्ति सुख व धन लाभ। मित्र–बन्धु का सहयोग मिले। संतानपक्ष शुभ, शत्रु दबे रहें। कारोबार ठीक। **जून 20,** 21, 22, 29, 30; **जुलाई** 8, 9 अशुभ।

कुम्भ– देहकष्ट, मन अशान्त, धन व परिवार–सुख, भ्रातृसुख–लाभ, संतति–चिन्ता, स्त्रीसुख, चोटभय, कारोबार में रुकावट। **जून** 14, 23, 24; **जुलाई** 1, 2, 10, 11, 12 **अशुभ।**

मीन– स्वास्थ्य ठीक, स्त्रीकष्ट, शनि–मंगल का दान करें। बन्धु–सुख, सम्पत्ति–सम्बन्धी विवाद सुलझें। संतानपक्ष से प्रसन्ता रहे। कारोबार में रुकावट। **जून** 15, 16, 17, 25, 26; **जुलाई** 3, 4, 5 अशुभ।

श्रावण मास

कर्कसंक्रान्ति (16 जुलाई से 15 अगस्त, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति— लग्नेश चन्द्रमा पञ्चम अर्थात् योजना स्थान में नीचराशिस्थ एवम् शनि–मंगल से आक्रान्त है। नवमेश धनस्थान में तथा लाभेश व सुखेश शुक्र लग्न में है। मंगल की स्थिति दृढ़ है। धनस्थ गुरु व मंगल की स्थिति सरकार की प्रगतिपद योजनाओं में धन–सम्बन्धी समस्याओं का हल निकाल लेगी। फिर भी चन्द्रमा की निर्वल-स्थिति महंगाई से आम जनता के लिए परेशानीकारक ही रहेगी। तिलहन, गुड़, अनाज तेज रहेंगे।

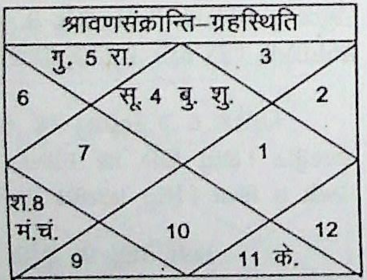

कर्कसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 16 जुलाई, 2016 ई.; 10 घं. 15 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 16 घं. 39 मि. तक,

श्रावण मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष— मनोबल कमजोर रहे। धनस्थान में गुरु आर्थिक स्थिति मजबूत करें। मित्र–बन्धु सुख ठीक, सम्पदा लाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, मन अशान्त, कारोबार ठीक। **जुलाई** 16, 17, 24, 25; **अगस्त** 2, 3, 12, 13 अशुभ।

वृष— सेहत गड़बड़, आर्थिक स्थिति निर्बल, निजीजनों को कष्ट, शनि–मंगल कष्टकारक हैं। रक्तविकार, वायु रोग, संतानपक्ष शुभ। गुप्तशत्रु से सावधान, स्त्रीकष्ट। **जुलाई** 18, 19, 27, 28; **अगस्त** 4, 5, 14, 15 अशुभ।

मिथुन— स्वास्थ्य कमजोर, आय–व्यय बराबर, मित्र–बन्धु को कष्ट, धनहानि, पराक्रम बढ़े, संतानपक्ष शुभ, शत्रु व रोगभय, स्त्रीपक्ष से हानि। **जुलाई** 20; 21, 29, 30; **अगस्त** 7, 8 अशुभ।

कर्क— सेहत ठीक, घरेलू झगड़े, मानसिक कष्ट, स्त्रीपक्ष से लाभ, मित्र–बधु का सहयोग मिले। नेत्रकष्ट, संतति-चिन्ता, सम्पदालाभ, अचानक खर्च। **जुलाई** 22, 23, 31 ; **अगस्त** 1, 9, 10, 11 **अशुभ।**

सिंह— क्रोध बढ़े, मानसिक कष्ट, धनलाभ, पारिवारिक झगड़े सुलझें, संतानपक्ष शुभ, सम्पदा–सुख, स्त्रीकष्ट। शनि–मंगल का दान करें। **जुलाई** 16, 17, 24, 25; **अगस्त** 2, 3, 12, 13 अशुभ।

कन्या— सेहत ठीक लेकिन मानसिक कष्ट रहे। आय से व्यय अधिक, नेत्रकष्ट, भ्रातृकष्ट, सम्पदा–सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीकष्ट। **जुलाई** 18, 19, 27, 28; **अगस्त** 4, 5, 14, 15 अशुभ।

तुला— सेहत ठीक, मन परेशान, आर्थिक संकट, घरेलू झगड़े, मित्र–बन्धु से अनबन, सम्पत्तिलाभ, संतति–चिन्ता, स्त्रीकष्ट, रोगभय। **जुलाई** 20, 21, 29, 30; **अगस्त** 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक— उदर–विकार, धनलाभ, परिवार–सुख, कारोबार ठीक, भ्रातृसुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु व रोगभय, स्त्रीपक्ष से सुख रहे। **जुलाई** 22, 23, 31 ; **अगस्त** 1, 9, 10, 11 **अशुभ।**

धनु— सेहत गड़बड़, धनलाभ होकर हानि, बन्धुकष्ट, सम्पदाहानि, संतति–चिन्ता, शत्रु दबे रहें, कारोबार में हानि। **जुलाई** 16, 17, 24, 25; **अगस्त** 2, 3, 12, 13 अशुभ।

मकर— मानसिक व शारीरिक कष्ट, शनि–मंगल का दान करें। राजभय, मित्र–बन्धु सुख, संतानपक्ष शुभ, स्त्री व परिवार का सुख, कारोबार गड़बड़। **जुलाई** 18, 19, 27, 28; **अगस्त** 4, 5, 14, 15 अशुभ।

कुम्भ— सेहत ठीक, स्त्रीकष्ट, मानसिक परेशानी, बन्धुसुख, धन व सम्पत्ति सुख, संतानपक्ष ठीक, कारोबार में लाभ। **जुलाई** 20, 21, 29, 30; **अगस्त** 7, 8 अशुभ।

मीन— सेहत ठीक रहे, रोग व शत्रुभय, धनहानि, भ्रातृसुख, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख ठीक रहे, पराक्रम बना रहेगा। **जुलाई** 22, 23, 31 ; **अगस्त** 1, 9, 10, 11 **अशुभ।**

भाद्रपद मास

सिंहसंक्रान्ति (16 अगस्त से 15 सितंबर, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ ग्रहचतुष्टयी पर शनि की विशेष दृष्टि तथा चतुर्थ भाव में शनि–मंगल का एकराशि-सम्बन्ध कहीं उग्रवाद व अग्निकाण्ड आदि से अशान्ति का कारण बने। किसी मुस्लिमराष्ट्र में स्थिति अधिक खराब हो। महंगाई बढ़े, जनता में असन्तोष रहे। भारत की प्रभावराशि मकर व चन्द्रमा पर पञ्चमेश गुरु की दृष्टि होने से केन्द्रीय शासन की कुशलता से प्रगतिपद योजनाओं में सफलता प्राप्त होगी। घी, चीनी, पैट्रोल, डीज़ल एवम् खाद्य पदार्थ तेज रहेंगे।

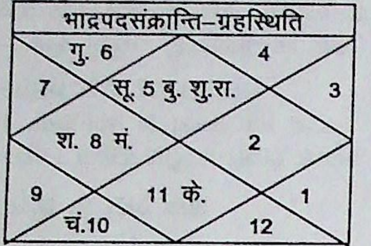

सिंहसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 16 अगस्त, 2016 ई.; 18 घं. 40 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल 12 घं. 16 मि. बाद.

भाद्रपद मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक रहे, मित्रबन्धु का सहयोग मिले। यात्रा में कष्ट। जायदाद सम्बन्धी स्थिर संपत्ति-विवाद, सन्तान का सुख मिले। स्त्रीकष्ट, कारोबार में संघर्ष रहे। **अगस्त** 21, 22, 29, 30; **सितंबर** 8, 9 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे, मित्र–बन्धुकष्ट, सम्पत्ति सुख रहे। सन्तानपक्ष शुभ, रोग व शत्रुभय, पराक्रम बढ़े, स्त्रीपक्ष से सुख–लाभ, कारोबार में हानि। **अगस्त** 23, 24; **सितंबर** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– स्वास्थ्य निर्बल रहे। नेत्रकष्ट, वृथा–विवाद से बचें। निजीजनों से लाभ, सम्पत्ति–विवाद, संतानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष शुभ, वृथाव्यय। **अगस्त** 17, 18, 25, 26; **सितंबर** 3, 4, 13, 14 अशुभ।

कर्क– रोगभय, क्रोध बढ़े, रक्तचाप से परेशानी सम्भव, नई योजना से कार्यक्षेत्र में उन्नति, धनलाभ, संतानपक्ष शुभ, शुभसमाचार, स्त्रीकष्ट, शनि–मंगल का दान करें। **अगस्त** 19, 20, 27, 28; **सितंबर** 6, 7, 15 अशुभ।

सिंह– स्वास्थ्य ठीक रहे, किन्तु नेत्रकष्ट सम्भव। आय से व्यय अधिक। बन्धुकष्ट, सम्पदा–लाभ। सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार में तरक्की। **अगस्त** 21, 22, 29, 30; **सितंबर** 8, 9 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक रहे, घरेलू झगड़े, मित्र–बन्धु सहयोग, सम्पदा मिले। संतानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीपक्ष से सुख रहे। कारोबार में गड़बड़। **अगस्त** 23, 24; **सितंबर** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

तुला– सेहत खराब रहे, उदरविकार, अपव्यय, पराक्रम व कार्यकुशलता से कारोबार में प्रगति हो। बन्धुसुख, संतान व स्त्रीपक्ष से चिन्ता। **अगस्त** 17, 18, 25, 26; **सितंबर** 3, 4, 13, 14 अशुभ।

वृश्चिक– स्वास्थ्य ठीक रहे, आय–व्यय बराबर। बन्धुकष्ट, सम्पत्ति–विवाद। संतानपक्ष शुभ, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **अगस्त** 19, 20, 27, 28; **सितंबर** 6, 7, 15 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे, धन व सम्पत्ति–सुंखलाभ, भ्रातृसुख मिले, संतानपक्ष शुभ। वृथा व्यय हो। स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। **अगस्त** 21, 22, 29, 30; **सितंबर** 8, 9 अशुभ।

मकर– रक्त–पित्तविकार, स्त्रीकष्ट, धन–सम्पत्ति सुख, मित्र–बन्धु का सहयोग रहे। संतानपक्ष से शुभ समाचार, कारोबार में रद्‌दोबदल। **अगस्त** 23, 24; **सितंबर** 1, 2, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– स्वास्थ्य ठीक रहे, धनहानिभय, मित्र–बन्धुसुख मिले। सम्पत्ति-सम्बन्धी विवाद सुलझें। संतानपक्ष शुभ, रोगभय, शत्रु प्रबल, स्त्रीसुख। **अगस्त** 17, 18, 25, 26; **सितंबर** 3, 4, 13, 14 अशुभ।

मीन– स्वास्थ्य ठीक रहे, घरेलू झगड़े, वृथा–व्यय हो। मित्र–बन्धु से सहयोग। संतानकष्ट, शनि–मंगल का दान करें। स्त्रीसुख ठीक, कारोबार ठीक। **अगस्त** 19, 20, 27, 28; **सितंबर** 6, 7, 15 अशुभ।

आश्विन मास

कन्या–संक्रान्ति (16 सितम्बर से 16 अक्तूबर, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– द्वादशेश सूर्य लग्न में और लग्नेश बुध द्वादशस्थ है। धनेश शुक्र भी लग्नस्थ नीच है। अतः आर्थिक स्थिति कमज़ोर होने के बावजूद भी केन्द्रीय शासन–सत्ता को दूसरी पार्टियों का सहयोग मिलने से देश में विकासकार्यों में प्रगति होगी। शनि–मंगल का तृतीयस्थ होना उच्चपदासीन नेताओं की कार्यक्षमता को बढ़ाएगा। लग्नस्थ गुरु, सूर्य–शुक्र से युक्त होने पर देश में स्वच्छशासन व पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा। पाक, अफगानिस्तान व इराकादि मुस्लिम राष्ट्रों में अशान्ति रहे। गुड़, अनाज, दालवाना व तिलहनों में तेजी सम्भव है।

आश्विनसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

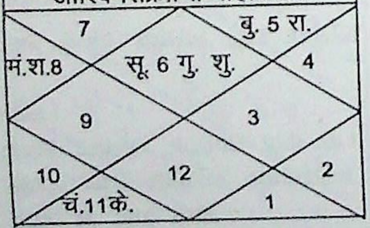

> कन्या–संक्रान्ति प्रवेशकाल =16 सितंबर, 2016 ई.; 18 घं. 35 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 12 घं. 11 मि. बाद.

आश्विन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– पित्त–विकार, शत्रु एवम् रोगभय, धनहानि, नेत्रकष्ट, पराक्रम बढ़े, सम्पदालाभ, स्त्रीसुख, सन्तान पक्ष भी ठीक रहे, कारोबार कमजोर। **सितंबर** 17, 18, 25, 26, 27; **अक्तूबर** 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।

वृष– नेत्रकष्ट, पारिवारिक कलह, धनलाभ, भ्रातृपक्ष से हानि सम्पदा–सुख, संतानकष्ट, शत्रुओं से सावधान, स्त्रीसुख, कारोबार में हानि। **सितंबर** 19, 20, 28, 29; **अक्तूबर** 8, 9 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक, क्रोध बढ़े, धनलाभ, भ्रातृसुख, स्थिर सम्पत्ति–विवाद, सन्तानपक्ष से सुख मिले, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **सितंबर** 21, 22; **अक्तूबर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

कर्क– नेत्रकष्ट, आय से व्यय अधिक, बन्धुकष्ट, सम्पत्ति–सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, गुप्त शत्रु से सावधान, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **सितंबर** 23, 24; **अक्तूबर** 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, घरेलू झगड़े, बन्धुसुख, सम्पत्ति–लाभ, संतानकष्ट, स्त्रीपक्ष से अनबन, कारोबार में हानिभय। **सितंबर** 17, 18, 25, 26, 27; **अक्तूबर** 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।

कन्या– पेट में गड़बड़, मन अशान्त, धनहानि, मित्र–बन्धु सहयोग, संतानपक्ष से चिन्ता, शत्रु–रोगभय, कारोबार ठीक। **सितंबर** 19, 20, 28, 29; **अक्तूबर** 8, 9 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक, मानसिक परेशानी, धन व परिवार–सुख, भ्रातृपक्ष से सहयोग मिले, संतानपक्ष से चिन्ता, मित्रों से अनबन, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **सितंबर** 21, 22; **अक्तूबर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, भ्रातृसुख, सम्पत्ति–विवाद, संतान पर खर्च, स्त्रीपक्ष से हानि, राजपक्ष से भय। **सितंबर** 23, 24; **अक्तूबर** 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, स्त्रीकष्ट, शनि–मंगल का दान करें। धन–सम्पत्ति–लाभ, संतानपक्ष शुभ, कारोबार की चिन्ता, भ्रातृकष्ट। **सितंबर** 17, 18, 25, 26, 27; **अक्तूबर** 5, 6, 7, 15, 16 अशुभ।

मकर– स्वास्थ्य ठीक, धनलाभ, मित्र–बन्धु सहयोग मिले, सम्पदाहानि–भय, संतानपक्ष से चिन्ता, शत्रुप्रबल, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में प्रगति। **सितंबर** 19, 20, 28, 29; **अक्तूबर** 8, 9 अशुभ।

कुम्भ– स्वास्थ्य कमज़ोर, मानसिक कष्ट, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। **सितंबर** 21, 22; **अक्तूबर** 1, 2, 10, 11 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, धन–सम्पत्ति सुख, परिवार–सुख ठीक, सम्पत्ति–लाभ, सन्तानपक्ष शुभ। मातृ–पितृकष्ट, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार गड़बड़। **सितंबर** 23, 24; **अक्तूबर** 3, 4, 12, 13, 14 अशुभ।

कार्तिक मास

तुलासंक्रान्ति (17 अक्तूबर से 14 नवम्बर, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ नीच राशि का सूर्य पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान व चीन आदि में भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से हानि करेगा। अथवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति का पद रिक्त भी हो सकता है। द्वितीयस्थ शनि–शुक्र एवम् तृतीस्थ धनेश मंगल कदाचित् आर्थिक–स्थिति में सुधार लाएगा, लेकिन व्यय स्थान में बुध बलवान् होने से कुछ देशों में व्यापारिक सम्बन्ध खराब होने से आर्थिक संकट भी पैदा हो सकता है। तेल, गुड़, चीनी और जनजीवनोपयोगी वस्तुओं में तेज़ी रहे।

कार्तिकसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

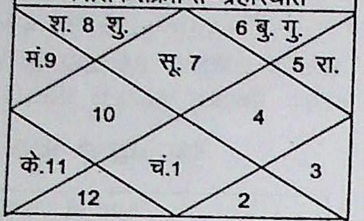

तुला–संक्रान्ति प्रवेशकाल =17 अक्तूबर, 2016 ई.; 6 घं. 31 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक,

कार्तिक मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– रक्त–पित्तविकार, आर्थिक स्थिति सुधरे, भ्रातृसुख, सम्पत्तिलाभ, संतानपक्ष से चिन्ता रहे, शत्रुओं से हानि सम्भव, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 23, 24; **नवम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

वृष– स्वास्थ्य ठीक, किन्तु नेत्रकष्ट सम्भव, धनलाभ, मित्र–बन्धुसुख, स्थिर सम्पदा-विवाद, सन्तानपक्ष से शुभ समाचार, शत्रुभय, स्त्रीसुख, कारोबार में हानि। **अक्तूबर** 17, 18, 25, 26; **नवम्बर** 4, 5, 13, 14 अशुभ।

मिथुन– स्वास्थ्य ठीक, क्रोध बढ़े, धन–हानिभय, भ्रातृकष्ट, सम्पदा–सुख, कारोबार में प्रगति, स्त्रीसुख, सन्तानपक्ष भी ठीक रहे। **अक्तूबर** 19, 20, 27, 28, 29; **नवम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

कर्क– नेत्रकष्ट, घरेलू झगड़े, मित्र–बन्धुसुख, सन्तानपक्ष शुभ रहे। स्त्रीपक्ष से सुख मिले, शत्रु दबे रहें, कारोबार में रुकावट। **अक्तूबर** 21, 22, 30, 31; **नवम्बर** 9, 10 अशुभ।

सिंह– शरीर–कष्ट, उदर–विकार, धनलाभ, परिवार–सुख, भ्रातृसुख, सम्पत्ति–लाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **अक्तूबर** 23, 24; **नवम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, धनलाभ, परिवार सुख ठीक, मित्र–बन्धु–सुख, स्त्रीपक्ष से लाभ मिले, सन्तानपक्ष शुभ, रोग व शत्रुभय, कारोबार ठीक। **अक्तूबर** 17, 18, 25, 26; **नवम्बर** 4, 5, 13, 14 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे, आर्थिकस्थिति सुधरे, भ्रातृसुख ठीक, सम्पदालाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रुपक्ष से हानिभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार कुछ ठीक। **अक्तूबर** 19, 20, 27, 28, 29; **नवम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक रहे, धन व परिवार का सुख मिले, स्थिरसम्पत्ति–विवाद, संतानपक्ष ठीक, शुभ–समाचार, रोगभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रुकावट। **अक्तूबर** 21, 22, 30, 31; **नवम्बर** 9, 10 अशुभ।

धनु– स्वास्थ्य–सुख शुभ रहे, धन–सम्पत्ति से सुखलाभ, बन्धुकष्ट, सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष से सहयोग, कारोबार में प्रगति। **अक्तूबर** 23, 24; **नवम्बर** 1, 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मकर– स्वास्थ्य ठीक रहे, घरेलू झंझट, धनहानि, मित्र–बन्धुसुख, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रु दबे रहें, स्त्रीसुख मिले, कारोबार ठीक रहे। **अक्तूबर** 17, 18, 25, 26; **नवम्बर** 4, 5, 13, 14 अशुभ।

कुम्भ– उदरविकार, धन व परिवार सुखलाभ, भ्रातृकष्ट, पराक्रम में कमी, सम्पदा-सुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। **अक्तूबर** 19, 20, 27, 28, 29; **नवम्बर** 6, 7, 8 अशुभ।

मीन– स्वास्थ्य ठीक रहे, पारिवारिक कलह, आय से व्यय अधिक, बन्धुसुख, सम्पदालाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से सुख मिले, कारोबार ठीक। **अक्तूबर** 21, 22, 30, 31; **नवम्बर** 9, 10 अशुभ।

मार्गशीर्ष मास

वृश्चिकसंक्रान्ति (15 नवम्बर से 14 दिसम्बर, सन् 2016 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ वृश्चिक राशि में सूर्य, शनि व बुध का योग राजनैतिक दृष्टि से कष्टप्रद स्थिति बनाने वाला है। विशेषकर सिंह व मकर राशि वाले राजनीतिज्ञों को अपनी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए। लेकिन पञ्चम (योजना) स्थान पर गुरु की दृष्टि तथा सप्तम स्थान में चन्द्रमा के उच्च राशिस्थ होने से सरकार की जन–कल्याण योजनाओं में प्रगति एवम् सफलता का संकेत मिलता है। साथ ही राहु–केतु व शनि की स्थिति पूर्वोत्तरवर्ती राज्यों एवम् देशों में उग्रवादजन्य उपद्रवों अथवा प्राकृतिक आपदा से जन–धन–हानि का योग भी बनाती है। तिलहन, दालवाना एवम् कॉस्मैटिक्स में तेजी सम्भव है।

मार्गशीर्षसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

> वृश्चिक–संक्रान्ति प्रवेशकाल =15 नवंबर, 2016 ई.; 30 घं. 17 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक,

मार्गशीर्ष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– पित्त–वायुविकार, धनलाभ, लेकिन खर्चविशेष, बन्धुसुख, पराक्रम बढ़े, माता–पिता को कष्ट, संतानपक्ष से सुख, शत्रुप्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड़। **नवम्बर** 19, 20, 29, 30; **दिसम्बर** 8, 9 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक, आय से व्यय अधिक, बन्धुकष्ट, सम्पदा सुख, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से हानि, कारोबार में रुकावट। **नवम्बर** 21, 22, 23; **दिसम्बर** 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

मिथुन– शरीर-कष्ट, ब्लड–प्रैशर, घरेलू झंझट, मित्र–बन्धु का सहयोग मिले, सम्पदा–सुख, संतान एवम् शुभकार्य पर खर्च, स्त्रीसुखलाभ। **नवम्बर** 15, 16, 24, 25; **दिसम्बर** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

कर्क– उदर–विकार, धन व परिवार का सुख, बन्धुसुख, संतानपक्ष ठीक, सम्पदा लाभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। **नवंबर** 17, 18, 26, 27, 28; **दिसम्बर** 6, 7, 14 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, धनलाभ, भ्रातृसुख, पराक्रम बढ़े, सम्पदा मिले, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से सुखलाभ, कारोबार में प्रगति। **नवम्बर** 19, 20, 29, 30; **दिसम्बर** 8, 9 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, धन–सम्पत्ति सुखलाभ, बन्धुकष्ट, संतानपक्ष से चिन्ता, वृथाव्यय, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार ठीक। **नवम्बर** 21, 22, 23; **दिसम्बर** 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे, धन–हानिभय, मित्रबन्धु सुख, स्थिरसम्पदा–विवाद, योजनाओं में सफलता, संतानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार की चिन्ता। **नवम्बर** 15, 16, 24, 25; **दिसम्बर** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

वृश्चिक– स्वास्थ्य गड़बड़, रोग एवम् शत्रुभय, सद्व्यय, बन्धुकष्ट, स्त्री एवम् संतानपक्ष शुभ, कारोबार में उन्नति। **नवंबर** 17, 18, 26, 27, 28; **दिसम्बर** 6, 7, 14 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक रहे, घरेलू झंझट, मित्र–बन्धु का सहयोग मिले, संतानकष्ट, स्त्रीसुख ठीक, शुभकार्य सम्पन्न हों, कारोबार ठीक। **नवम्बर** 19, 20, 29, 30; **दिसम्बर** 8, 9 अशुभ।

मकर– उदर–विकार, परिवार–सुख, बन्धुसुख, स्थिर सम्पदा–विवाद, संतानपक्ष शुभ, शत्रु–हानिभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **नवम्बर** 21, 22, 23; **दिसम्बर** 1, 2, 3, 10, 11 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक रहे, धन–सम्पत्ति–सुख–लाभ, बन्धुसुख, पराक्रम बढ़े, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीसुख मिले, धर्म–कर्म में मन लगे। **नवम्बर** 15, 16, 24, 25; **दिसम्बर** 4, 5, 12, 13 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक रहे, परिवारिक कलह, भ्रातृपक्ष से हानि, मातृकष्ट, योजना असफल, संतानपक्ष से चिंता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **नवंबर** 17, 18, 26, 27, 28; **दिसम्बर** 6, 7, 14 अशुभ।

पौष मास

धनुसंक्रान्ति (15 दिसम्बर, 2016 ई. से 13 जनवरी, सन् 2017 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में बुधादित्य–योग है। नवम–दशमपति का लग्न में एकत्र होना तथा गुरु की चतुर्थ भाव पर दृष्टि देश में नई–नई प्रगतिपद योजनाओं की सफलता में सहायक बनेगी। लेकिन धनेश शनि व्यय स्थान में होने से आर्थिक-स्थिति में गिरावट आ सकती है। व्ययस्थान का शनि और भाग्यस्थान का राहु घी, गुड़, चना, चावल एवम् खाद्य–पदार्थों में तेजीकारक बनते हैं।

पौषसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

धनु–संक्रान्ति प्रवेशकाल =15 दिसंबर, 2016 ई.; 20 घं. 55 मि. (I.S.T.) मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद.

पौष मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– स्थान–परिवर्तन की योजना बने, कारोबार में प्रगति, धनलाभ होकर हानि, बन्धुकष्ट, सम्पदा–सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख। **दिसम्बर** 16, 17, 18, 26, 27; **जनवरी (2017 ई.)** 5, 6 ,13 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक रहे, घरेलू झंझट, मित्र–बन्धु का सहयोग मिले, सन्तानपक्ष से सुख, स्त्रीपक्ष शुभ, शुभकार्यो पर खर्च, कारोबार में प्रगति। **दिसम्बर** 19, 20, 28, 29, 30; **जनवरी (2017 ई.)** 7, 8 अशुभ।

मिथुन– सिर व नेत्रकष्ट, क्रोध बढ़े, धन व परिवार–सुख, बन्धुसुख, संतानसुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **दिसम्बर** 21, 22, 31; **जनवरी (2017 ई.)** 1, 9, 10 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, वृथाव्यय, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ, माता–पिता का सुख ठीक, स्त्रीपक्ष से लाभ, योजना सफल, कारोबार में उत्साहवर्धक प्रगति। **दिसम्बर** 15, 23, 24, 25; **जनवरी (2017 ई.)** 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, धनलाभ होकर हानिभय, मित्रबन्धु - सहयोग, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु दबे रहें, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार ठीक। **दिसम्बर** 16, 17, 18, 26, 27; **जनवरी (2017 ई.)** 5, 6 ,13 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन – सहयोग, स्थिर सम्पत्ति–विवाद, सन्तानपक्ष से सुख, योजना सफल, स्त्रीकष्ट, कारोबार में परेशानी सम्भव। **दिसम्बर** 19, 20, 28, 29, 30; **जनवरी (2017 ई.)** 7, 8 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक रहे, धन–सम्पत्तिसुख–लाभ, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रुभय, स्त्रीसुख, कारोबार में प्रगति। **दिसम्बर** 21, 22, 31; **जनवरी (2017 ई.)** 1, 9, 10 अशुभ।

वृश्चिक– स्वास्थ्य ठीक रहे, घरेलू झगड़े, मित्र–बन्धु सहयोग, स्त्रीपक्ष से लाभ, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार में रद्दोबदल। **दिसम्बर** 15, 23, 24, 25; **जनवरी (2017 ई.)** 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

धनु– सेहत गड़बड़, उदर-विकार, धनलाभ, भ्रातृपक्ष से हानि, स्थिरसम्पत्ति–विवाद, योजना में सफलता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में हानि। **दिसम्बर** 16, 17, 18, 26, 27; **जनवरी (2017 ई.)** 5, 6 ,13 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक, नई योजना की सफलता से धन–सम्पत्तिलाभ, बन्धुकष्ट, शत्रुपक्ष से हानिभय, स्त्री सुख–लाभ, कारोबार में विशेष प्रगति व सम्मान। **दिसम्बर** 19, 20, 28, 29, 30; **जनवरी (2017 ई.)** 7, 8 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक, पारिवारिक कलह, बन्धुसुख, सम्पत्तिलाभ, सन्तानपक्ष से चिन्ता, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक रहे। **दिसम्बर** 21, 22, 31; **जनवरी (2017 ई.)** 1, 9, 10 अशुभ।

मीन– सेहत गड़बड़, वायुविकार, धनलाभ, बन्धुसुख, स्थिर सम्पत्ति–विवाद, सन्तापपक्ष से सुखलाभ, स्त्रीसुख, कारोबार की चिन्ता। **दिसम्बर** 15, 23, 24, 25; **जनवरी (2017 ई.)** 2, 3, 4, 11, 12 अशुभ।

माघ मास

मकरसंक्रान्ति (14 जनवरी, से 11 फरवरी, सन् 2017 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में मकरराशिस्थ सूर्य पर शनि की दृष्टि विशिष्ट नेताओं के लिए अशुभ है। लेकिन लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से सुरक्षा–प्रणाली सुव्यवस्थित रहेगी और प्रमुख नेताओं के यश–मान में वृद्धि होगी। धनस्थ मंगल–केतु तथा अष्टमस्थ राहु सरकार के सन्मुख नई समस्याओं को उजागर करेंगे। चन्द्रमा प्रजा में अमन–चैन बनाएगा। तिलहन, गुड़, अनाज व दालवाना तेज रहेंगे।

माघसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

मकर–संक्रान्ति प्रवेशकाल =14 जनवरी, 2017 ई.; 7 घं. 38 मि. (I.S.T.) मु. 15, पुण्यकाल सारा दिन,

माघ मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– पित्त–विकार, घरेलू झंझट, मित्र–बन्धु सहयोग, शुभकार्य पर खर्च, सन्तानपक्ष ठीक, रोगभय, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। जनवरी (2017 ई.) 14, 22, 23, 24; **फरवरी** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

वृष– रक्तचाप, क्रोध बढ़े, धन–सम्पत्ति सुखलाभ, बन्धुसुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में रद्दोबदल। **जनवरी** (2017 ई.) **15**, 16, 25, 26; **फरवरी** 3, 4, 11 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक, योजना सफल, सन्तानपक्ष से सुख, कारोबार में प्रगति, सम्मान मिले, खर्च–विशेष, बन्धुकष्ट, सम्पत्तिलाभ। **जनवरी** (2017 ई.) 17, 18, 19, 27, 28, 29; **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, धनलाभ, मित्र–बन्धु सहयोग, सम्पत्ति–सुख, सन्तानकष्ट, शुभकार्य पर खर्च, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार ठीक। **जनवरी** (2017 ई.) 20, 21, 30, 31; **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन सहयोग, स्थिर सम्पत्ति–विवाद, शुभसमाचार, सन्तान–सुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार गड़बड़। **जनवरी** (2017 ई.) 14, 22, 23, 24; **फरवरी** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, घर में मंगलकार्य हों, बन्धुकष्ट, स्त्रीपक्ष से सुख, सन्तानपक्ष शुभ, गुप्त शत्रु से सावधान, कारोबार ठीक। **जनवरी** (2017 ई.) **15**, 16, 25, 26; **फरवरी** 3, 4, 11 अशुभ।

तुला– स्वास्थ्य–सुख ठीक, घरेलू झगड़े, निजीजनों से अनबन, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रु से हानिभय, स्त्रीकष्ट। **जनवरी** (2017 ई.) 17, 18, 19, 27, 28, 29; **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

वृश्चिक– उदर–विकार, धनलाभ, बन्धुसुख, सम्पत्ति–चिन्ता, सन्तान–सुख, योजना सफल, शत्रुभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **जनवरी** (2017 ई.) 20, 21, 30, 31; **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, वृथा–व्यय, शत्रु व रोगभय, भ्रातृकष्ट, सम्पदा–सुख, सन्तान–चिन्ता, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार में प्रगति। जनवरी (2017 ई.) 14, 22, 23, 24; **फरवरी** 1, 2, 9, 10 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक, घरेलू झंझट, भाई–बन्धु से सुख, सम्पत्ति–चिन्ता, सन्तानकष्ट, स्त्रीसुख, कारोबार उज्ज्वल। **जनवरी** (2017 ई.) **15**, 16, 25, 26; **फरवरी** 3, 4, 11 अशुभ।

कुम्भ– स्वास्थ्य–हानि, वायु–विकार, धनलाभ, बन्धुकष्ट, स्थिर सम्पदाविवाद, सन्तानपक्ष से सुख रहे, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार की चिन्ता। जनवरी (2017 ई.) 17, 18, 19, 27, 28, 29; **फरवरी** 5, 6 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, वृथाव्यय, निजीजन–विरोध, सम्पत्ति–सुख, सन्तानपक्ष ठीक, स्त्रीसुख रहे, कारोबार में उन्नति व सम्मान। **जनवरी** (2017 ई.) 20, 21, 30, 31; **फरवरी** 7, 8 अशुभ।

फाल्गुन मास

कुम्भसंक्रान्ति (12 फरवरी से 13 मार्च, सन् 2017 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्नस्थ सूर्य–केतु के साथ चन्द्र–राहु का सम–सप्तक उग्रवाद–जन्य कार्यवाही अथवा प्राकृतिक प्रकोप आदि से अशान्ति एवम् जन–धनहानिकारक बनता है। मंगल, शुक्र एवम् बुध पर गुरु की दृष्टि देश की आन्तरिक सुरक्षा–स्थिति को सुदृढ़ बनाए रखेगी। मुस्लिम राष्ट्रों में अशान्ति बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति में मज़बूती आएगी। तिलहन, अनाजों व चीनी के भाव स्थिर रहेंगे।

फाल्गुनसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

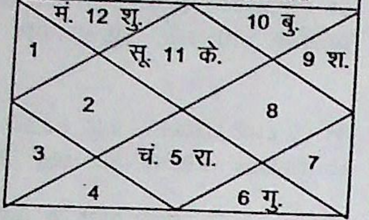

कुम्भसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 12 फरवरी, 2017 ई.; 20 घं. 39 मि. (I.S.T.)
मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्नबाद,

फाल्गुन मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– पित्त–विकार, मन अशान्त, घरेलू–विवाद सुलझें, धन–लाभ, निजीजन-सहयोग, सम्पदा–सुख, सन्तान पर खर्च, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **फरवरी** 19, 20, 28; **मार्च** 1, 9, 10 अशुभ।

वृष– सिर व नेत्रकष्ट, धनलाभ, निजीजन सहयोग, सम्पदा–लाभ, संतान–कष्ट, रोगभय, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **फरवरी** 12, 13, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 11, 12 अशुभ।

मिथुन– सेहत ठीक, धनहानि, बन्धुसुख, सम्पत्ति–विवाद, सन्तानकष्ट, स्त्रीपक्ष पर खर्च, कारोबार ठीक। **फरवरी** 14, 15, 24, 25; मार्च 4, 5, 13 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन–चिन्ता, सम्पत्ति–विवाद, सन्तानपक्ष शुभ रहे, स्त्रीसुख, कारोबार गड़बड। **फरवरी** 16, 17, 18, 26, 27; **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन–कष्ट, सम्पत्ति–सुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। **फरवरी** 19, 20, 28; **मार्च** 1, 9, 10 अशुभ।

कन्या– सेहत ठीक, मानसिक कष्ट, घरेलू झगड़े, मित्र–बन्धु से मदद मिले, सम्पदा–लाभ, धर्म–कर्म में उन्नति, कारोबार ठीक। **फरवरी** 12, 13, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 11, 12 अशुभ।

तुला– उदर–विकार, मन अशान्त, अपव्यय, बन्धुसुख, सम्पदालाभ, संततिचिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। **फरवरी** 14, 15, 24, 25; मार्च 4, 5, 13 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक,, स्त्रीपक्ष से धनलाभ, बन्धुसुख, सम्पदा–सुख, सन्तानसुख, शत्रु व रोगभय, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। **फरवरी** 16, 17, 18, 26, 27; **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, विशेष खर्च, भ्रातृचिन्ता, सम्पत्ति–सुख, सन्तानकष्ट, शत्रु दबे रहें, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में रद्दोबदल। **फरवरी** 19, 20, 28; **मार्च** 1, 9, 10 अशुभ।

मकर– सेहत ठीक, धन–लाभ, निजीजन–सहयोग, सम्पदा–विवाद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार में रुकावट। **फरवरी** 12, 13, 21, 22, 23; मार्च 2, 3, 11, 12 अशुभ।

कुम्भ– वायु–विकार, धनलाभ, निजीजनों से अनबन, सम्पदा–सुख, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार में तरक्की। **फरवरी** 14, 15, 24, 25; मार्च 4, 5, 13 अशुभ।

मीन– सेहत ठीक, घरेलू झंझट, निजीजनों से मेल, सम्दालाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से चिन्ता, कारोबार ठीक। **फरवरी** 16, 17, 18, 26, 27; **मार्च** 6, 7, 8 अशुभ।

चैत्र मास

मीनसंक्रान्ति (14 मार्च से 12 अप्रैल, सन् 2017 ई.)

संक्रान्तिकालीन गोचर ग्रहस्थिति– लग्न में मौजूद सूर्य–बुध–शुक्र पर गुरु की दृष्टि देश में सुख व शान्ति बनाएगी। राजनैतिक दृष्टिकोण से विशिष्ट नेताओं की सूझ–बूझ व कार्य–कुशलता से तरक्की के नऐ आयाम स्थापित होंगे। अमन व शान्ति बनी रहेगी। लेकिन राहु–केतु की स्थिति कुछ राज्यों में उपद्रवों से जनधन–हानि भी करेगी। दालवाना व अनाजों में कुछ मन्दे का रुख रहे।

चैत्रसंक्रान्ति–ग्रहस्थिति

मीनसंक्रान्ति प्रवेशकाल = 14 मार्च, 2017 ई.; 17 घं. 33 मि. (I.S.T.) मु. 30, पुण्यकाल 11 घं. 09 मि. बाद,

चैत्र मास में प्रत्येक राशि के लिए फल

मेष– सेहत ठीक रहे, धन व परिवार का सुख, निजीजनों से मेल हो, सम्पदा–सुख, सन्तानपक्ष से उत्साहवर्धक परिणाम, शत्रुभय, स्त्रीसुख, कारोबार ठीक। मार्च 18, 19, 27, 28 अशुभ।

वृष– सेहत ठीक, धनलाभ होकर खर्च विशेष हो, निजीजन-हानि, सन्ततिचिन्ता, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार ठीक। मार्च 20, 21, 22 अशुभ।

मिथुन– स्वास्थ्य ठीक, धनलाभ लेकिन खर्च विशेष, मित्रबन्धु-सुख, सम्पदा–विवाद, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, कारोबार में रद्दोबदल। मार्च 14, 23, 24 अशुभ।

कर्क– सेहत ठीक, धन व सम्पदा–सुख, बन्धुकष्ट, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति व सम्मान मिले। मार्च 15, 16, 17, 25, 26 अशुभ।

सिंह– सेहत ठीक, घरेलू झंझट, निजीजन-सहयोग, सम्पदा–सुख, सन्तानसुख ठीक, स्त्रीपक्ष शुभ, कारोबार में तरक्की। मार्च 18, 19, 27, 28 अशुभ।

कन्या– उदरविकार, धन व परिवार–सुख, बन्धुसुख, सम्पदा मिले, सन्तान–सुख, स्त्रीकष्ट, कारोबार ठीक। मार्च 20, 21, 22 अशुभ।

तुला– सेहत ठीक, मन प्रसन्न रहे, धन एवम् सम्पदा सुखलाभ, निजीजन - सहयोग, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख ठीक, कारोबार सामान्य। मार्च 14, 23, 24 अशुभ।

वृश्चिक– सेहत ठीक, धनलाभ, पराक्रम बना रहे, सम्पत्ति–सुख, सन्तानपक्ष से चिन्ता, शत्रुपक्ष से हानिभय, स्त्रीकष्ट, कारोबार में हानि। मार्च 15, 16, 17, 25, 26 अशुभ।

धनु– सेहत ठीक, धनलाभ, निजीजन-सहयोग, स्थिर सम्पत्ति–विवाद, सन्तानपक्ष शुभ, शत्रुप्रबल, स्त्रीसुख, कारोबार की चिन्ता। मार्च 18, 19, 27, 28 अशुभ।

मकर– वायुविकार, धनलाभ, भ्रातृकष्ट, सम्पत्ति–विवाद सुलझे, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीपक्ष से सुख, कारोबार में तरक्की। मार्च 20, 21, 22 अशुभ।

कुम्भ– सेहत ठीक, घरेलू झगड़े, निजीलोगों से मेल, सम्पदा-लाभ, सन्तानपक्ष शुभ, स्त्रीसुख, नई योजना से कारोबार में प्रगति। मार्च 14, 23, 24 अशुभ।

मीन– सेहत गड़बड़, उदर–विकार, धनलाभ, भ्रातृसुख, सम्पदा–लाभ, सन्तति–चिन्ता, स्त्रीकष्ट, कारोबार में प्रगति। मार्च 15, 16, 17, 25, 26 अशुभ।

अथ वर्षराजादि-फलविचार (संवत् २०७३ वि.)

(सन् २०१६-१७ ई. की ग्रहपरिषद् का विवरण)

कल्पादि से गतवर्ष १९७२९४९११७, सृष्टि संवत् १९५५८८५११७, श्रीविक्रम संवत् २०७३, शक संवत् १९३८, श्रीकृष्ण- जन्म संवत् ५२५२, कलि-संवत् ५११७, सप्तर्षि-संवत् ५०९२, श्रीजैन महावीर-निर्वाण-संवत् २५४१-४२, श्रीबुद्ध संवत् २६३९-४०, हिजरी सन् १४३७-३८, फसली सन् १४२३-२४, ईस्वी सन् २०१६-१७ ।

वर्षारम्भ में गुरुमान से शिव(रुद्र)विंशति का 'सौम्य ' नामक संवत्सर है । यह 'वराहमिहिर' द्वारा निर्दिष्ट 'नवम युग' किंवा शिव(रुद्र)विंशति का तृतीय संवत्सर है । इसका फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-

" धान्याकुला-धरा लोकाः स्वस्था स्युर्निरुपद्रवाः।
सौम्या-वृष्टिर्वरारोहे सौम्ये सैन्धव-विप्लवः।।"

अर्थात्- 'सौम्य'-संवत्सर (सं. 2073 वि.) में पर्याप्त वर्षा होने से खाद्यान्नों की उपज अच्छी हो, जनता निरोग एवं जनजीवन सुखशान्तिमय रहे। शान्ति व कानून-व्यवस्था की स्थिति में सुधार हो। सिन्ध-प्रदेश (पाकिस्तान के प्रान्त विशेष) में अशान्ति का वातावरण रहे।

किञ्च- ' मेघ महोदय ' के अनुसार 'सौम्य ' संवत्सर का फल निम्नांकित है;-

" सौम्य-संवत्सरे रुद्रः स्वामी, अल्पमेघः गावोऽल्पक्षीराः, स्वल्पफला वृक्षाः, चैत्रे महर्घता, वैशाखे उद्दण्ड-वायुः, ज्येष्ठे विग्रहः प्रजापीड़ा, आषाढ़ेऽल्प-मेघोऽन्नं च महर्घम्, श्रावणे महामेघः, धान्ये द्विगुणो लाभः, सर्वरस-धातु-समर्घता, कार्त्तिकादि मासे सिन्धुदेशे राजविरोधः।।"

इस संवत् का राजा (ग्रहपरिषद् के प्रधान) शुक्र, मन्त्री बुध; सस्येश (चौमासी फसलों के स्वामी) शनि, धान्येश (शीतकालीन फसलों के स्वामी) गुरु; मेघेश (मौसम, वर्षा-पानी के स्वामी) मंगल; रसेश (गुड़-खाण्ड, रसकस आदि के स्वामी) सूर्य; नीरसेश (सर्वविध धातु आदि व्यापार के स्वामी) शुक्र; फलेश (फल-फूल आदि के स्वामी) मंगल; धनेश (धन-दौलत एवं खजाना के स्वामी) शुक्र एवं दुर्गेश (सुरक्षा एवं प्रतिरक्षा के स्वामी) मंगल हैं।

संवत् २०७३ वि. के उल्लिखित पदाधिकारियों का फल इसप्रकार है –

(१) संवत्सर २०७३ वि. के राजा शुक्र का फल–

"सस्याढ्यो धर्मबहुलो गतातंको बहूदकः।
कामिनां कामदः कामं सिताब्दो नृपशर्मदः।।"

अर्थात्– संवत्सर का राजा शुक्र होने से चावल (जीरी), गेहूं आदि अन्न, किंवा चीनी आदि सितवर्ण की वस्तुओं की उपलब्धता अच्छी हो, धर्म–कर्म में भी जनता मन लगाए। वर्षा बहुत हो। उपद्रवों (प्राकृतिक किंवा आतंकवाद–जन्य) पर शासकों की लगाम लगे। स्त्री–पुरुषों (कामियों) के सम्बन्धों में अधिक स्वच्छन्दता, सामाजिक–बन्धनों की अवहेलना के कारण एकमात्र निजी सुख को विशेष महत्त्व दिया जाए। शासक लोग अपनी प्रतिष्ठा किंवा निजी सुविधाओं पर ध्यान दें एवं अपने निजीजनों के कल्याणार्थ प्रयत्नशील रहें।

किञ्च– जब भी संवत्सरेश शुक्र होता है, तो नए बांध, नई नहरों (सिंचाई आदि) किंवा बिजली के संकट को समाप्त करने की योजनाएं बनती हैं। भूगर्भगत संपदा किंवा उपयोगी श्रोत की खोज भी होती है। मादक द्रव्यों का चलन किंवा आपूर्ति हो एवं बुद्धिजीवि–वर्ग का प्रधाननेतृत्व को समर्थन भी मिलता है।

(२) मन्त्री बुध का फल–

" शशिसुते खलु मन्त्रिपदं गते बहुधनं बहुवारि–समन्वितम्।
भवति चानुचितं रमणं बहु यव–चणान्न–मसूर–महर्घता।।"

अर्थात्– मन्त्री बुध हो तो जनता में धन–धान्य-समृद्धि रहे एवम् नई योजनाओं द्वारा देश एवम् जनता की आर्थिक स्थिति में सुधार हो। वर्षा अधिक हो, यौन–शोषणादि अपराधों की अनुचित घटनाएं अधिक होने से स्त्री–पुरुषों में कुलीनता की कमी चिन्ताजनक रहे। चना, मसूर एवम् सभी अनाजों के भाव महंगे हों।

(३) सस्येश शनि का फल–

"रविसुतो यदि सस्यपतिः जना नृपतिभिः परिपीड़ित–विग्रहाः।
गदमयं तुषधान्यहरं सदा दुरित वाद–विवादरता नराः।।"

अर्थात्– संवत्सर का सस्येश शनि हो तो राजनीतिज्ञों किंवा शासकों द्वारा जनता परेशान रहे, दण्डव्यवस्था किंवा कर आदि से लोग दुःखी रहें। नानाविध रोगों से भी जनता दुःखी रहे। चावल, चना आदि अनाजों की फसलों को हानि पहुंचे। जनता झूठे किंवा दुःखद वाद–विवाद में उलझे एवम् मुकद्दमें आदि दायर करने में परेशानी रहे।

(४) धान्येश गुरु का फल–

" गुरौ धान्याधिपे जाते सुभिक्षं च समर्घता।
गोधूम–शालि–माषानां कोद्रवादेश्च हायने।।"

अर्थात्– संवत्सर का धान्येश गुरु हो तो सर्वत्र सुभिक्ष रहता है। बाजारों में कुछ मन्दा किंवा स्थिरता रहे। विशेषतः गेहूं, चावल, उड़द तथा कोदों आदि में यह संवत्सर स्थिरता किंवा सुलभता वाला रहेगा।

(५) मेघेश मंगल का फल–

" अवनिजे जलदाधिपतौ भुवि श्रुतिविचार–विहीन–पराभवाः।
क्वचिदवर्षण–वर्षणजं भयं क्वचिदथो बहुताप–भयापदः।।"

अर्थात्– मेघेश मंगल हो तो जनता में सदाचार, नीति किंवा शास्त्र सम्मत–विचार की भी कमी होने से समाज में अव्यवस्था रहे। कहीं क्षेत्र सूखाग्रस्त रहने से परेशानी, कहीं अतिवर्षण, बाढ़ आदि से कृषि किंवा जनता क्षुब्ध रहे। कहीं भारी प्राकृतिक किंवा उग्रवादजन्य आपदा से जनता त्रस्त रहे।

नोट–क्योंकि इसवर्ष स्थानीय सूर्योदय–भेद से तुलार्कप्रवेश दो भिन्न–भिन्न वारों में घटित हो रहा है, अतः रसेश पद द्विग्रह शासित होने से चण्डीगढ़ से पूर्ववर्ती क्षेत्र में रसेश चन्द्र होगा एवं पंजाब में रसेशपद का मालिक सूर्य होगा। दोनों का फल हम यहां लिख रहे हैं। रसेश कहां 'सूर्य' होगा और कहां 'चन्द्र'–इसका स्पष्टीकरण पृष्ठ 277 पर संबद्ध लेख में देखें।

(६) [क] रसेश चन्द्र का फल–

" अथ विधौ रसपे भुवि मानवा नव–नवैर्विधिभिः प्रियभाषिणः।
जलधरा बहुवारि –विधायका रसवती धनधान्यवती मही।।"

अर्थात्– राजनीतिज्ञ अपने मनोभावों को व्यक्त करते हुए बनावटी व विनम्र भाषण करें। वर्षा बहुत हो। पृथ्वी धनधान्य–सम्पन्न रहे।

(६) [ख] रसेश सूर्य का फल–

" रसपतौ तरणौ धरणी तदा विरस–भोगरताल्प–पयोधरा।
वसन–तैल–घृत–प्रियता भवेत् सुखरसेन भुनक्ति महीपतिः।।"

अर्थात्– सूर्य रसेश होने से भौतक सुखों मे कमी एवम् वर्षा की अनेकत्र कमी अनुभव हो। लोगों में प्रदर्शन की भावना बलवती हो, फैशन पर खर्च करने की प्रवृत्ति बढ़े।

(७) नीरसेश शुक्र का फल–

" कर्पूरागरु–गन्धानां हेम–मौक्तिक–वाससाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशो भृगुर्यदा।।"

अर्थात्– शुक्र के नीरसेश होने पर कपूर, अगर आदि सुगन्धित वस्तुएं, सोना, चान्दी, मोती, वस्त्र आदि के बाजारों में तेजी रहती है।

(८) फलेश मंगल का फल–

" फलपतिर्यदि भूतनयो भवेत् सुबहु पुष्प–फलोद्गमशालिनी।
गतभयाश्च जनाजनपालका विविध–वाद–विवाद–कारकाः।।"

अर्थात्– मंगल फलेश होने से इसवर्ष फल–फूलों की उपज अच्छी हो। जनता को भयमुक्त वातावरण मिले। राजनीतिज्ञ किंवा शासकवर्ग अनेकविध वाद–विवाद एवम् एक दूसरे पर लाञ्छन लगाते रहें।

(९) धनेश शुक्र का फल–

" द्रविणपे भृगुजे द्रविणैर्युता बहुधना सविशेष्य जनास्तदा।
समसुखाः क्रय–विक्रय–जीविनो नृपतयो नरपालन–तत्पराः।।"

अर्थात्– इस संवत् में शुक्र के कोषाधीश (धनाधिकारी) होने से धनी लोग अधिक धनाढ्य होते हैं। व्यापारी वर्ग (खरीदो–फिरोखत करने वाले) समान सुख के भागी हों। शासक–जन मर्यादानुसार (कल्याणकारी भाव से) शासन करते रहें।

(१०) दुर्गेश मंगल का फल–

" अवनिजो यदि कोट्टपतिर्भवेत् विविध कष्टयुता जनता तदा।
समधिकेन भयं क्रय–विक्रये भवति दण्डभयं न सुखं बहु।। "

अर्थात्– इसवर्ष मंगल के दुर्गेश होने पर जनता में अनेक प्रकार के कष्ट व्याप्त हों। सट्टा–बाजार, शेयर–बाजार, खरीदो–फिरोखत किंवा स्टॉक करने पर प्रायः शासकीय दण्ड का भय बना रहेगा।

नोट– यद्यपि संवत् के इन दशाधिकारियों का फल सर्वत्र अनुभव किया गया है, किन्तु विशेषतः **राजा का फल** काश्मीर, अफगानिस्तान एवं बराड़ देश में; **मन्त्री का फल** आन्ध्र, वाल्हीक, उज्जैन एवम् मालवा में; **सस्येश** का पौण्ड्र, विदर्भ में; **धान्येश** का गुजरात, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश एवं मध्यप्रदेश में; **मेघेश** का मगध एवं बंगाल में; **रसेश** का कोंकण एवं गोवा में; **नीरसेश** का मालवा व बिहार में; **धनेश** का राजस्थान एवं बाड़मेर में; **फलेश, दुर्गेश** एवं **राजा** का फल सब जगह विशेष होता है।

वर्षादि के विश्वामान

वर्षाविश्वा १३, धान्य १५, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ६, तृषा ११, निद्रा ५, आलस्य ७, उद्यम १३, शांति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ६, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप १३, पुण्य १, व्याधि १७ व्याधिनाश १५, आचार १५, अनाचार ३, मृत्यु १७, जन्म ६ देशोपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चौर ९, चौरनाश १, अग्नि १५, अग्निशांति १, उद्भिज्ज ७, जरायुज ३, अण्डज १३, स्वेदज ६, टिड्डी ६, तोता ५, मूषक १३, सोना १३, तांबा १५, स्वचक्र १७, परचक्र ५, वृष्टि ७, वृष्टिनाश १५ एवं संवत्विश्वा १८ हैं।

चतुर्मेघविचार :– आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'आवर्तक'** नामक मेघ है।

फल :– "आवर्ते विनिवृष्टिः स्यात् " अर्थात् कुछ प्रान्तों में वृष्टि का अवरोध रहे या अकाल की स्थिति बनेगी। वर्षा की असामयिकता किंवा वर्षा की कमी से फसलों को हानि पहुंचे;– " आवर्ते मन्दतोयम्।"

नोट– नवमेघ एवम् चतुर्मेघों में मेघचतुष्टय का विशेष महात्व है।

नवमेघविचार– इसवर्ष सं. २०७३ वि. में ' **नील** ' नामक मेघ है।

फल :– " सत्पयो दिशति गोकुलपूर्णा वस्त्राखिल मही परिपूर्णा।
नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टिर्जायते सकलमानवतुष्टिः।।"

अर्थात्– इस संवत्सर में **'नील नामक मेघ'** होने से फल–फूल, घास, रस–निष्पत्ति (गाय का दूध) आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे। रुई, कपास, ऊन, आदि वस्त्र सहज में उपलब्ध हों। वर्षा अच्छी हो और जल संसाधन पर्याप्त हों। **"नीलः क्षिप्रं तु वर्षति**– "प्रमाणानुसार अनेकत्र आकालिक किंवा समय से पूर्व तीव्र वर्षा से ' नील नामक' मेघ फसल को हानि भी पहुंचाता है।

अनन्तादि अष्टनाग विचार– अनन्तादि अष्टनागों में **'कुलीर'** नामक नाग है।

फल :- कुलीर नामक नाग में सर्पादि एवम् सरीसृपों से भय रहता है। वर्षा कहीं अधिक, कहीं वर्षा का अभाव रहे।

सुबुध्नादि "द्वादशनागों में "अश्वतर" नामक नाग का फल–

" नागेऽश्वतरे स्वल्पं जलं सस्यं विनश्यति।"

अर्थात्– जल (वर्षा) की कमी किंवा जलप्रदूषण के कारण धान्य, पशुचारा आदि का नाश किंवा अकाल की स्थिति बनती है।

आवह आदि सप्तवायु–विचार– इस वर्ष में **'वायुसप्तक'** विचार से **'परावह'** किंवा ' वायु ' नामक वायु है।

नोट– सप्तवायु विचार में कुछ मतान्तर है। अतः हमने यहां दोनों के फल लिख दिए हैं।

फल— परावह किंवा वायु के वायुसप्तक होने से नदियों के मार्ग बदलें, भारी वर्षा व धान की फसल को भारी क्षति पहुंचे।

दक्षिण–पश्चिम में किंवा समुद्र तटवर्ती भूभागों में तूफान (सुनामी) किञ्च काश्मीर, उड़ीसा, गुजरात आदि में प्राकृतिक–प्रकोप एवम् भूस्खलन आदि से भारी हानि संभव है।

संवत् २०७३ वि. का वाहन— समय का वाहन— इस संवत् का राजा ' शुक्र ' होने से संवत् का वाहन **'हाथी'** होगा।

फल—" गजारूढ़े सुभिक्षं स्यात् योगक्षेमं प्रजासुखम्।
वर्षासु शोभना वृष्टिः सुखिनः सर्वजन्तवः।।"

अर्थात्— प्रजा में सुभिक्ष, सुख–शान्ति, वर्षाकाल में अच्छी वर्षा सभी प्राणी सुखपूर्वक रहें।

संवत् २०७३ वि. के चार स्तम्भ

(१) जलस्तम्भ—(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र) ४६.७८ प्रतिशत है।

(२) तृणस्तम्भ—(वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र) ३१.६२ प्रतिशत है।

(३) वायुस्तम्भ—(ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र) ८०.२६ प्रतिशत है।

(४) अन्नस्तम्भ—(आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र) ६०.८ प्रतिशत है।

ये उल्लिखित चार स्तम्भ देश के कुशल–क्षेम–ज्ञानार्थ विशेष महत्त्व रखते हैं। क्योंकि, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की सत्ता जल, वायु, अन्न एवं तृण (जड़ी–बूटियों) आदि पर ही निर्भर है। संवत् के शुभारम्भ पर देश की प्राकृतिक व्यवस्था के नियामक इन चार स्तम्भों का आकलन आवश्यक समझा गया है।

(१) जलस्तम्भ— इसवर्ष 'जलस्तम्भ' ४६.७८ प्रतिशत होने से कुछ प्रान्तों में भयंकर वर्षा एवं भारी बाढ़ से विनाशकारी दृश्य उपस्थित न होंगे। कहीं समुद्री तूफान, सुनामी से प्रलयंकारी दुःखद घटनाएं समुद्रतटवर्ती क्षेत्रों में संभव हैं। इसवर्ष प्रतिपदा का कुलमान २० घं. १२ मि. है। बहुजल– प्रधान अन्न जीरी, चावल, बाजरा आदि की फसलें काफी अच्छी होंगी। भूजल के स्तर में काफी उठाव बने।

(२) तृणस्तम्भ— इसवर्ष (सं. २०७३ वि. में) 'तृणस्तम्भ' ३१.६२ प्रतिशत होने से कमजोर है। भूसे से निकलने वाले प्रमुख अनाज, कृषि उपज, वनस्पतियां, जड़ी–बूटियां व अन्य पदार्थों की पैदावार व उपलब्धता सहज संभव न रहेगी। पशुचारा अच्छा होगा। सब्जी, फल आदि पर्याप्त मात्रा में सुलभ रहें। वैशाख शुक्ल प्रतिपदा का कुलमान २० घं. १८ मि. है। अतः महंगाई तो रहेगी ही।

(३) वायुस्तम्भ— सं. २०७३ वि. में 'वायुस्तम्भ' ८०.२६ प्रतिशत होने से बहुत प्रबल है। इसवर्ष तूफान, बवंडर आदि से जन–धनहानि के योग बनते हैं। लू, गर्महवाओं एवं नानाविध रोगों से जनता परेशान रहे। क्योंकि बादलों का सञ्चालन वायुवेग से ही होता है, अतः कहीं महावृष्टि तो कहीं सूखे से दुर्भिक्ष की स्थिति बनेगी। कहीं खड़ी फसलें सूखेंगी। मानसून के अव्यवस्थित होने से गर्मी से जनजीवन क्षुब्ध रहने का योग भी बनता है।

(४) अन्नस्तम्भ— इसवर्ष 'अन्नस्तम्भ' ६०.८ प्रतिशत होने से काफी प्रबल है। आषाढ़शुक्ल प्रतिपदा का कुलमान २२ घं ५ मि. है। घरेलू उत्पाद, खाद्यान्न एवम् चहुंमुखी प्रगति की ओर देश बढ़ेगा। मानसून समयोचित एवम् प्रशासन पर जनता का विश्वास दृढ़ होगा।

इस वर्ष स्तम्भों के विचार से कहीं बाढ़, कहीं सूखे से कृषक परेशान रहें। वायु एवम्अन्नस्तम्भ प्रबल होने से शासनतन्त्र के समक्ष महंगाई का मुद्दा सुलझेगा। परिणाम दूरगामी होंगे।

आर्षमान–विचार (सं २०७३ वि. की रक्षा के लिए चार दुर्ग)

(१) **प्रथम आर्ष** (अक्षय तृतीया को रोहिणी नक्षत्र) ३६.२५ प्रतिशत है।

(२) **द्वितीय आर्ष** (गत संवत् २०७२ वि. में पौष अमा को मूल नक्षत्र) ६.०६ प्रतिशत है।

(३) **तृतीय आर्ष** (श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र) ३४.८३ प्रतिशत है।

(४) **चतुर्थ आर्ष** (कार्तिक पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र) १४.५५ प्रतिशत है।

नोट— **उल्लिखित चारों आर्षमान इस संवत्सर में जनजीवन एवं देश की सुरक्षा, कानून व्यवस्था, आर्थिक–समृद्धि, सामाजिक शान्ति, सर्वविध समृद्धि किंवा नैतिक मूल्यों को सुनिश्चित करते हैं। ये भी संवत्सर के मर्मस्थल माने जाते हैं।**

(१) प्रथम आर्ष– वैशाख शुक्ल तृतीया का कुल मान २१ घं. ०१ मि. एवं इसदिन रोहिणी नक्षत्र ३६.८५ प्रतिशत है।

फल–प्रथम आर्ष ३६.८५ प्रतिशत होने से देश के उत्तरी भूभाग एवं पश्चिमी भूभाग से भारत की सुरक्षा को सुदृढ़ बनाएगा। कहीं सीमाप्रान्तों पर शत्रुदेश की गतिविधि शान्ति को भंग कर सकती है। भारत के शासनतन्त्र को विशेष सावधान रहना होगा।

(२) द्वितीय आर्ष – गत संवत् २०७२ वि. में पौष अमा का कुल मान २३ घं. ०६ मि. एवं इसदिन मूल नक्षत्र ६.०६ प्रतिशत है।

फल–द्वितीय आर्ष लगभग ६.०६ प्रतिशत होने से देशरक्षा के लिए यह स्तम्भ क्षीण कहा जा सकता है। सीमाप्रान्तों पर भारत का प्रभावक्षेत्र सुदृढ़ रखना होगा। नए कार्यक्रम एवं नई योजनाओं से लाभ होगा। देश को प्रगतिपथ पर अग्रेसर करने के लिए सरकार के प्रयास प्रशस्य होंगे।

(३) तृतीय आर्ष – इसवर्ष श्रावण–पूर्णिमा का कुल मान २२ घं. २६ मि. है एवं इस दिन श्रवण नक्षत्र ३४.८३ प्रतिशत है।

फल– तृतीय आर्ष क्षीण है। अतः संवत् २०७३ वि. में सैन्यशक्ति–संवर्धन के लिए नई योजनाएं कार्यान्वित करने के लिए आर्थिक संकट रहेंगे। भारत को सीमाओं पर बंगलादेश, नेपाल एवं विशेषतः पाकिस्तान और चीन की कुनीति से सावधान रहना आवश्यक है। काश्मीर, लाहौलस्पीति, तिब्बत, त्रिपुरा आदि में भी स्थिति चिन्तनीय बने। भारत के महानगरों में आतंकवादी जनधनहानि का कारण बनेंगे।

गोचर ग्रहस्थिति के अनुसार संवत् २०७३ वि. के उत्तरार्ध में कहीं प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, समुद्री–तूफान एवं विस्फोट आदि से भयंकर जनधनहानि के योग काश्मीर, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं देश के महानगरों में दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

(४) चतुर्थ–आर्ष – इसवर्ष कार्त्तिक पूर्णिमा का कुल मान २० घं. ०४ मि. है एवं पूर्णिमा को कृत्तिका नक्षत्र १४.५५ प्रतिशत है।

फल– चतुर्थ आर्ष १४.५५ प्रतिशत होने से भारत के लिए समृद्धिप्रद एवं शासनतन्त्र की चेतना को जागृत करने में कठिनता वाला है। चतुर्थ-आर्ष का क्षीण होना गणतन्त्र भारत की गरिमा के लिए अशुभ संकेत देता है। नई – नई योजनाएं, नए औद्योगिक क्षेत्र एवं शासकगण देश को नई उपलब्धियों से सुसज्जित करने के लिए भारत सरकार अशक्त अनुभव करेगी।

वर्ष के चार स्तम्भों एवं आर्षमान–विचार से यद्यपि देश की स्थिति तो भूतकालिक राजनैतिक कारणों से चिन्तनीय ही रहेगी, लेकिन नई शासन–प्रणाली इसे सुधारने के लिए सशक्त सिद्ध होगी।

दोहा : "अखैतीज रोहिणी न होई, पौष अमावस मूल न जोई।
राखी श्रवणो हीन विचारो, कार्त्तिक पुण्यो कृत्तिका टारो।
महीमाह खलबली प्रकाशै, कहै भड्डली साख–विनाशै।।"

संवत् २०७३ वि. में रोहिणी का वास पर्वत पर है– इस संवत् में मेषसंक्रान्ति बुधवार, पुनर्वसु नक्षत्र एवम् मिथुनस्थ चन्द्र के समय लगती है। अतः रोहिणी का वास पर्वत पर रहेगा।

फल– " पर्वते बिन्दुमात्रं हि वर्षणं शास्त्रसम्मतम् "– प्रमाणानुसार रोहिणी का वास पर्वत पर होने से साधारण वर्षा के योग हैं।

समय का वास– इस वर्ष रोहिणी का वास पर्वत पर होने से संवत्सर (समय) का वास 'कुम्भकार (कुम्हार)' के घर रहेगा।

फल– बाजार स्थिर रहेंगें। नई–नई योजनाएं, महानगरों में पेयजल समस्या का समाधान एवम् देश में सुधारात्मक प्रक्रिया बलवती होगी।

संवत् २०७३ वि. में शनि की नज़र का फल–

संवत् २०७३ वि. में शनि वृश्चिक एवम् धनु राशि में रहेगा। अतः शनि की दृष्टि पश्चिम की तरफ ही रहेगी। अतः पश्चिमी प्रान्तों एवं पश्चिमी देशों में कहीं भयंकर भूकम्प, समुद्री तूफान (सुनामी) एवं कहीं शासनतन्त्र के विरुद्ध सत्तापरिवर्तनार्थ आन्दोलन, ज्वालामुखी– विस्फोट, हवाई हादसे किंवा उग्रवाद से भारी जनधनहानि के योग नज़र आते हैं। भारत भी इस वर्ष शनि की दृष्टि से अप्रभावित नहीं रह सकेगा। सिंह, कुम्भ, तुला, वृश्चिक धनु राशि के नेताओं के लिए यह वर्ष विशेष उलझनें लेकर उपस्थित हो रहा है। २० फरवरी, २०१६ ई. से संवत् २०७३ वि. में २६ जनवरी, २०१७ ई. को शनि के धनु राशि में प्रविष्ट हो जाने से यह समय वृश्चिक, धनु, तुला एवं कुम्भ राशि वाले राजनीतिज्ञों के लिए भयावह है। सुरक्षा–व्यवस्था को सुदृढ़ रखना आवश्यक है, दुर्घटना संभव है।

कहीं दुर्भिक्ष, कहीं बाढ़ से हानि व कहीं राजनैतिक उलटफेर (सत्तापरिवर्तन) भी हों—

"शनैश्चरः क्रमात्पश्यन् तत्तद्देशान् प्रपीडयेत्।
दुर्भिक्ष –देशभङ्गाद्यैर्विग्रहो राजविड्वरैः।।"

संवत् २०७३ वि. में विशेष अमायोगः–

(१) सोमवती अमावस्या एक है –

(i) आषाढ़ कृष्णपक्ष (४ जुलाई, सन् २०१६ ई.)।

(२) भौमवती अमावस्या तीन हैं –

(i) श्रावण कृष्णपक्ष (२ अगस्त, सन् २०१६ ई.)।

(ii) मार्ग.कृष्णपक्ष (२८ नवंबर, सन् २०१६ ई.)।

(iii) चैत्र कृष्णपक्ष (२८ मार्च, सन् २०१७ ई.)।

(३) शनैश्चरी अमा एक भी नहीं है।

नोट– इसवर्ष उल्लिखित सोमवती अमावस्या के दिन चावल आदि अन्न, घी, दूध का दान दक्षिणासहित करें। इस दिन गंगा आदि पवित्र नदियों में स्नान–दान का विशेष महत्त्व है।

मंगलवारी अमा को गुड़ गायों को खिलाएं एवं इस दिन लालवस्त्र, स्वर्णादि के दान का भी विशेष महत्त्व है।

शनैश्चरी अमा इसवर्ष नहीं है। लेकिन किसी भी शनिवार को तुलादान, तेलदान, काले तिल, काला कपड़ा एवं काली दाल दान करें।

ध्यान दें :–उल्लिखित अमावस्याओं में दान एवं तीर्थस्नान/पूजन आदि का विशेष महत्त्व है। साथ ही अधिकाधिक पंचांगो का योग्य ब्राह्मणों को तीर्थ पर या अन्यत्र भी दान करना पुण्यप्रद लिखा है।

सं. २०७३ वि. में शरत्सस्य जातक–विचार

संवत् २०७३ वि. में वैशाख शुक्ल अष्टमी, शनिवार तदनुसार १४ मई, सन् २०१६ ई. को मघा नक्षत्र, ध्रुव योग एवं सिंहस्थ चन्द्र के समय १६ बजकर ४१ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर सूर्यदेव वृष राशि में प्रविष्ट होंगे।

शरत्सस्यजातक कुण्डली
(१४ मई, सन् २०१६ ई., १६घं. ४१ मि.)(I.S.T.)

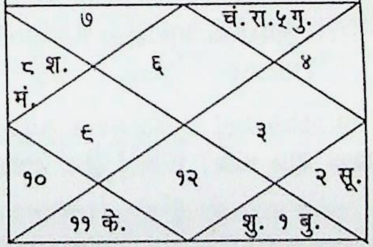

ध्यान रहे– गर्मी में बोई जाने वाली तथा सर्दी में तैयार होने पर काटी जाने वाली फसलें चावल, मूंग, ज्वार, बाजरा, कपास, अरहर, तिल, तोड़िया, सूरजमुखी, गुवार, गन्ना, मक्का आदि "खरीफ–फसलों" को 'शरत्सस्य' कहा जाता है।

फल– शरत्सस्यजातक कुण्डली में वृषस्थ सूर्य से शनि–मंगल का समसप्तक योग महर्घता में विक्रय से लाभ की स्थिति बनाएगा। इससे पहले मार्च/अप्रैल, 2016 ई. में ही वायदा या स्टॉक करना ठीक रहेगा–

"कार्मुक–मृग–घट–संस्थः शारद–सस्यस्य तद्वदेव रविः।
संग्रहकाले ज्ञेयो विपर्ययः क्रूर–दृग्योगात्।।"

अर्थात्– समर्घ योग (न मन्दी न तेजी की स्थिति) में जब शरत्सस्य सूर्य शुभग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो शरत्सस्य का स्टॉक करें। जब सूर्य क्रूरग्रहों से युक्त व दृष्ट हो तो महर्घयोग (तेजी) में विक्रय करना लाभप्रद रहता है।

किञ्च– "क्रूरान्तस्थः सूर्यो वृषस्थोऽपि नाशयति सस्यम्।
पापः सप्तमराशौ जातं जातं विनाश्यति।।"

अर्थात्–शरत्सस्य जातक कुण्डली में जब मंगल एवम् बुध के साथ सूर्य का मेल व दृष्टि हो एवम् सूर्य से सप्तम शनि–मंगल किंवा राहु आदि क्रूरग्रह भी हों तो बाजरा, ज्वार, अरहर, तेल, तिलहन, कपास की उपज औसत से कम होती है। अनेकत्र अवर्षण/अतिवर्षण से खड़ी फसलें भी नष्ट हो जाती हैं। स्टॉकिस्ट लाभ लेते हैं। यह योग इसवर्ष भी घटित होने को है।

ध्यान दें– ग्रीष्म किंवा शरत्–सस्यजातक कुण्डलियों का फलादेश सूर्य को लग्न मानकर ही किया जाता है।

सं. २०७३ वि. में ग्रीष्म सस्यजातक विचार

सं. २०७३ वि. में मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष–प्रतिपदा मंगलवार, (तात्कालिक द्वितीया, बुधवार) तदनुसार १६ नवम्बर, सन् २०१६ ई. को रोहिणी नक्षत्र, शिव योग एवं वृषस्थ चन्द्र के समय ६घं. १७मि. (भा. स्टैं. टा.) पर सूर्यदेव वृश्चिक राशि में प्रविष्ट होंगे।

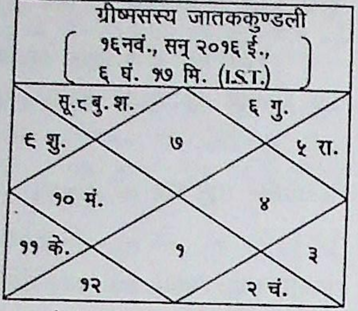

फल– इस ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली में वृश्चिकस्थ सूर्य के समय वृषस्थ चन्द्र तथा मकर राशि का मंगल गुरु व शनि से दृष्ट हैं। यह योग ग्रीष्मसस्य गेहूं, जौ, चना आदि की अच्छी फसल का संकेत देता है। लेकिन फसल के रोगाक्रान्त होनें से किंवा विरोधीपक्ष नीति से भी महगाई बढ़ती रहे–

" कुम्भे गुरुर्गवि शशी–सूर्यो ऽलिमुखे कुजार्कजौ मकरे।
निष्पत्तिरस्ति महती पश्चात् परचक्र–भयरोगम्।।"

किञ्च– गतवर्ष संवत् 2072 वि. के पंचांग में पृ. 125 एवम् 126 पर लिखी गई सस्यजातक कुण्डलियों के आधार पर लिखी गई भविष्यवाणियों को पढ़ें। फलित ज्योतिष पर विश्वास दृढ़तर हो जाता है। व्यापारी बन्धुओं के पत्र प्राप्त हुए हैं।

" ग्रीष्मसस्य (वृश्चिक–संक्रान्ति– कालीन)कुण्डली में सूर्य शनि के साथ होने एवं इनसे एकादशस्थ राहु, मंगल, शुक्र एवं तुलास्थ बुध होने से खड़ी फसलों को अनेकत्र अवर्षणादि से हानि होगी। सूर्य से दशम भाव में सिंहस्थ गुरु होने से गेहूं, जौ, चना, दालवाना, बाजरा, तिल एवं कपास आदि की उपज सामान्यतः उपलब्ध नहीं होगी। कई जगह बोई हुई फसल भी नष्ट होगी। सरकार जनजीवनोपयोगी वस्तुओं को उपलब्ध कराने में योगदान तो देगी, लेकिन महंगाई से जनता परेशान रहेगी।"

ग्रीष्म सस्यजातक कुण्डली के आधार पर संवत् 2072 वि. में की गई उल्लिखित भविष्यवाणी शतप्रतिशत सही सिद्ध हुई; – यह जगजाहिर है।

सूर्य का आर्द्रानक्षत्र में प्रवेश

संवत् २०७३ वि. में आषाढ़ कृष्णपक्ष, मंगलवार; प्रतिपदा (तात्कालिकी द्वितीया) तिथि, तदनुसार २१ जून, सन् २०१६ ई. को पू.षा. नक्षत्र, ब्रह्मयोग एवं धनुस्थ चन्द्र के समय सूर्यदेव २३ घं. ०१ मि. (भा.स्टैं.टा.) पर आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे।

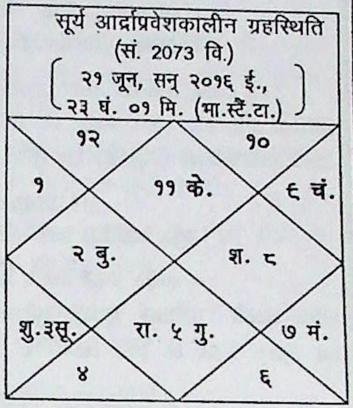

फल– सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा किंवा तात्कालिकी द्वितीया तिथि में प्रवेश करता है, अतः यह आर्द्राप्रवेश धनधान्य–समृद्धिप्रद एवम् शुभकारक है–

"प्रतिपद्यदि चार्द्रायां प्रवेशः शुभदो रविः।
द्वितीयायां सस्यवृद्धिः स्यात्................।।"

लेकिन मंगलवार के दिन आर्द्राप्रवेश कहीं विशिष्ट (कुम्भ राशि किंवा वृश्चिक राशि वाले) व्यक्ति–विशेष किंवा विशिष्ट राजनीतिज्ञ के लिए भयप्रद है–

"भानोर्वेशः पृथ्वीसूनोर्वारे रौद्रे धिष्ण्ये चेत्स्यात्।
शस्त्रघातात् (दुर्घटनया वा) पृथ्वीशानां निस्सन्देहं मृत्युस्तर्हि।।"

अतः विशिष्ट व्यक्तियों को सुरक्षा की दृष्टि से सावधान रहना चाहिए। पू.षा. नक्षत्र में आर्द्रा–प्रवेश यावन–राष्ट्रों में अशान्ति, प्रतिष्ठित व्यक्ति की हत्या किंवा युद्ध–परक स्थिति बनाता है। अर्धरात्रि के लगभग सूर्य

का आर्द्रा–प्रवेश भारत के लिए कुशल–क्षेम व सुभिक्षप्रद है। अन्न सस्ते, वर्षा अच्छी हो।

संवत् २०७३ वि. का शुभारम्भ

संवत् २०७२ वि. में चैत्र कृष्ण अमावस, गुरुवार, तदनुसार ७ अप्रैल, सन् २०१६ ई. को १६ घं. ५५ मि., रेवती नक्षत्र, वैधृति योग एवं मीनस्थ चन्द्र के समय नवसंवत् २०७३ वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में होगा।

शुभ संवत् २०७३ वि. की प्रवेशकालीन कुण्डली

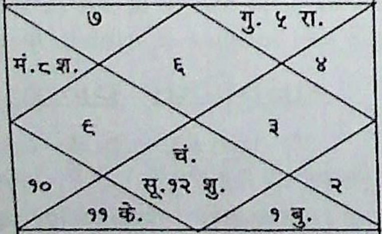

७ अप्रैल, सन् २०१६ ई., १६ घं. ५५ मि.)(I.S.T.)

फल– संवत् २०७३ वि. का शुभारम्भ कन्या लग्न में हो रहा है। लग्नेश बुध अष्टमस्थ है। मीन राशि में स्थित सूर्य, शुक्र, चन्द्र लग्न को विशेष दृष्टि से देख रहे हैं। शनि व मंगल वृश्चिक में बैठकर भारत की प्रभाव राशि को प्रभावित करते हैं।

ध्यान दें– भारत की प्रभावराशि मकर है और मकर राशि पर राशीश–शनि की दृष्टि है। अतः **इस विक्रमी संवत् में भारत विश्व के प्रतिष्ठित राष्ट्रों की गणना में उज्जवल भविष्य की तरफ अग्रेसर होगा–**

नोट– संवत्सर–मुख (संवत्सर के शुभारम्भ) में स्थानीय क्षितिज पर उदित लग्न व तात्कालिक ग्रहस्थिति के आधार पर सम्बन्धित देश–प्रदेश के वार्षिक–भविष्य समझने में भारी सहायता मिलती है। अतः विचारणीय देश की राजधानी एवम् निकटवर्ती क्षेत्रों के स्थानीय–लग्न के आधार पर शुभाशुभ चिन्तन करना तात्कालिक लग्नगत ग्रहस्थिति के अनुसार अधिक व्यावहारिक एवम् प्रामाणिक समझते हैं। नवसंवत्सर का शुभारम्भ कन्या लग्न में होने से पूर्व में स्थिरता, घी एवम् तैलादि में महर्घता रहे।

किञ्च– " मारिर्दक्षिणदेशे स्यात् तथा बंगेऽप्युपद्रवः।
लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोऽन्न–महर्घता।।"

अर्थात्– दक्षिण में महामारी, बंगाल में उपद्रव, पश्चिमी (यावन) देशों में युद्धमय वातावरण रहे, अनाज मंहगे रहें।

किञ्च– कन्या लग्न में नववर्ष का शुभारम्भ एवम् शनि–मंगल का वृश्चिक राशि में होना पश्चिम एवम् उत्तर–पूर्व में सीमाप्रान्तों पर उग्रवादजन्य उपद्रव एवम् रोगभय, प्राकृतिक (भूकम्प, सुनामी आदि) उत्पात से हानिभय भी रहेगा।

वर्षेश (जगत्) लग्न-कुण्डली

सूर्य जब निरयण मेष राशि में प्रवेश करता है, तो उस समय का लग्न "जगत्लग्न" कहलाता है।

वर्षेश(जगत)लग्नकुण्डली
(संवत् २०७३ वि.)
१३ अप्रैल, २०१६ ई.

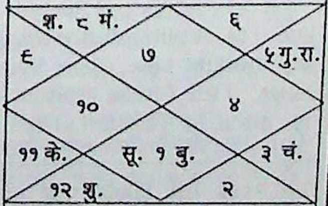

सूर्य मेष में १६ घं. ४७ मि.(I.S.T.)

संवत् २०७३ वि. में चैत्र शुक्लपक्ष सप्तमी, बुधवार; तदनुसार १३ अप्रैल, सन् २०१६ ई. को १६ घं. ४७ मि. (भा. स्टैं. टा.) पर पुनर्वसु नक्षत्र, सुकर्मा योग, मिथुनस्थ चन्द्र एवं तुला लग्न के समय सूर्यदेव मेष राशि में प्रविष्ट होंगे।

फल–तुला लग्न में जगत् लग्न का उदय होगा। लग्नेश उच्च राशि में है। मेषस्थ बुधादित्य–योग पर बृहस्पति की विशेष दृष्टि है। अतः भारत में नई योजनाएं बनें एवम् धनधान्य–समृद्धि रहेगी।

जगत्–लग्न में वृश्चिकस्थ मंगल– शनि का सम्बन्ध होने से मुस्लिम–राष्ट्रों में प्राकृतिक आपदा (समुद्री तूफान, विस्फोट, भूकम्प) किंवा उग्रवादजन्य भारी जनधन–हानि के योग हैं।

सूर्य–बुध का मंगल–शनि के साथ षडष्टक–योग किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के जीवन के लिए भयावह किंवा देश के लिए सीमाप्रान्तों पर चीन आदि से अशान्त वातावरण बना सकता है। दोपहर के बाद जगत्लग्न–प्रवेश होने से विदेशों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण बनता है–

" निजोच्चे निजवर्गे वा शुभः पापोऽपि वा भवेत्।
बलवान् दोषविच्छेत्ता हरिरेको यथा गजान्।।"

जगत् लग्नानुसार आषाढ़–भाद्रपद–आश्विन–कार्त्तिक–माघ एवम् चैत्र मास विशेष घटनापूर्ण रहेंगे।

अपने जन्मलग्न से द्वादश भावों में जगत्लग्न का फल इस प्रकार जानिए–

(१) प्रथम भाव से शरीरसुख, (२) धनागम, (३) कुटुम्बवृद्धि (पारिवारिक सुख), (४) मित्र व बन्धुसुख, (५) सन्ततिसुख, (६) शत्रु की पराजय, (७) स्त्रीसुख, (८) रोगभय, मृत्युभय, (९) धर्म–कर्म में प्रवृत्ति किंवा धनलाभ, (१०) धन व सम्मानप्राप्ति, (११) लाभ किंवा अन्य सुख–साधनप्राप्ति तथा (१२) बारहवें भाव से कष्ट व आर्थिक संकट का ज्ञान प्राप्त करें–

"जन्मोदये देहसुखं धनेऽर्थलाभस्तृतीये च कुटुम्बवृद्धिः।
तुर्ये सुहृत्सौख्यमथात्मजाप्तिं पुत्रे रिपौ शत्रु–पराजयःस्यात्।।
स्त्री–सौख्याप्तिर्भवति मदने मृत्युरुग्भीश्च रन्ध्रे।
धर्मार्थाप्तिस्तपसि दशमे वित्तसौख्यं पदाप्तिः।।
लाभे लाभः सुख–धनचयो दुःख–दारिद्र्यमन्त्ये।
पुंसोर्मेषे प्रविशति रवौ जन्मलग्नाद् विलग्ने।।"

यदि "जगत्लग्न" अपने 'जन्मलग्न' से ६, ८ या १२वें भावों में यत्किञ्चित् भी पापी ग्रह के प्रभाव में हो तो वह वर्ष कष्टप्रद किंवा अशुभ रहेगा– ऐसा जानें।

जगत्लग्न से व्यक्तिगत फलविचार

जन्मकुण्डली में लग्न बलवान् हो तो जन्मराशि से जगत्लग्न जिस राशि पर आए, वह भाव शुभग्रह या भावेश से दृष्ट या युक्त हो तो उस वर्ष में उस भाव की वृद्धि कहनी चाहिए। यदि पापग्रह की दृष्टि या योग हो तो उस भाव की हानि कहें। जन्मलग्न, जन्मराशि एवं अपने वर्षलग्न से वर्षेश (जगत्) लग्न आठवें या बारहवें हो तो वह वर्ष उस व्यक्ति के लिए शुभ नहीं होगा।

इसी प्रकार देश एवं ग्राम के शुभाशुभ विचार के लिए भी समझना चाहिए।

गुर्रा–फल (सन् २०१५-१६ ई.)

इस्लामी मतानुसार एक (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् प्रारम्भ होता है। उस दिन जो वार होता है, वही इस्लामी मतानुसार साल का राजा होता है, जो "गुर्रा" नाम से जाना जाता है।

सं २०७२ वि. में आश्विन शुक्ल द्वितीया गुरुवार, तदनुसार १५ अक्तूबर, सन् २०१५ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन, मुस्लिम (हिजरी) सन् १४३७ प्रारम्भ होगा।

सं. २०७२ वि. में यकम मुहर्रम वाले दिन गुरुवार (वीरवार) होने से हिजरी सन् १४३७ का बादशाह गुरु होगा।

फल– वर्षा अच्छी हो, उपद्रव न हों, शासक एवं प्रजा सुखी रहे। परहित कार्य के लिए शासक ध्यान दें। पशु–पक्षी सब ठीक रहें। खेती एवं व्यापार ठीक रहे। स्त्री एवं बालरोग से जनता परेशान हो। अग्निकाण्ड से अनेकत्र हानि हो। सर्दी देर तक चले। कुछ भाग दुर्भिक्षग्रस्त रहें।

सं. २०७३ वि. में आश्विन शुक्ल द्वितीया, चन्द्रवार; तदनुसार ३ अक्तूबर, सन २०१६ ई. को यकम मुहर्रम वाले दिन मुस्लिम (हिजरी) सन् १४३८ का प्रारम्भ होगा।

यकम मुहर्रम वाले दिन सोमवार है। अतः हिजरी सन् १४३८ का बादशाह 'चन्द्र' हुआ।

फल– अनाज एवम् खाद्य वस्तुएं सस्ती हों। शासकों को जनता की सुख–समृद्धि के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़े। संसार विशेषतः यावनराष्ट्रों में अशान्ति कहीं विग्रह की स्थिति बने। पश्चिमी देश उग्रवाद की चपेट में रहें। चोरी किंवा अनैतिक घटनाएं अधिक हों। फल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों। घी, तेल, कपास मंहगे रहें।

आय–व्यय–चक्र (विंशोत्तरी–मतानुसार)

राषि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
व्यय	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

लाभ–व्यय देखने की रीति– अपनी राशि के लाभ–व्यय–अंको को जोड़कर, उसमें से १ घटाकर, शेष को ८ से भाग देने पर यदि १, २, ६, ७ बचें तो वर्ष में उत्तम लाभ होगा। ३, ४, ५, ० बचें तो लाभ बहुत कम हो, चिन्ता भी रहे।

"इतीदं वत्सरफलं वत्सरादि-तिथौ शुभम्।
यः शृणोति नरो भक्त्या स सुखी वत्सरं भवेत्।।"

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, चैत्र शुक्ल पक्ष १

(८ से २२ अप्रैल तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, वसन्त–ग्रीष्म ऋतु।

प्रातः सूर्योदय से पूर्व शु. पूर्वक्षितिजासन्न और मं.श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होंगे । सायं बु. पश्चिमक्षितिज में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा । १८ अप्रै. को चं. गु. परस्पर आसन्न दीखेंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. चैत्र	अं. अप्रैल	श. चैत्र	मु. ज.उ.सा.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३१	२८	१	शु.	१७	२७	अश्वि.	४३	९	वै.	११	२३	ब.	१७	२७	२६	८	१९	२९	मेष			६	७	१८	४२	११	२४	३०	२६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, चान्द्र संवत्सर २०७३ वि. प्रारम्भ, (A)
३१	३३	२	श.	८	१३	भर.	३६	११	वि. प्री.	० ५०	५० ५०	कौ.	८	१३	२७	९	२०	र.१	वृष	४९	३२	६	६	१८	४३	११	२५	२९	२५	गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती(B) **सौम्य संवत्सर**
अवम		३	श.	५९	३५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथिक्षय,
३१	३७	४	र.	५२	४	कृत्ति.	३०	७	आ.	४१	४०	व.	२५	४९	२८	१०	२१	२	वृष	·		६	४	१८	४३	११	२६	२८	२२	भद्रा २५/४९ से ५२/०४ तक, बुध भरणी में ५/४७,
३१	४२	५	चं.	४५	५८	रोहि.	२५	१९	सौ.	३३	३७	ब.	१९	१	२९	११	२२	३	मिथुन	५३	३०	६	३	१८	४४	११	२७	२७	१६	श्री(लक्ष्मी)पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत, **अर्धकुम्भ हरिद्वार-१३ अप्रै.**
३१	४६	६	मं.	४१	३६	मृग.	२२	९	शो.	२६	५६	कौ.	१३	४६	३०	१२	२३	४	मिथुन			६	२	१८	४५	११	२८	२६	८	स्कन्दषष्ठी,
३१	५१	७	बु.	३९	१०	आर्द्रा	२०	५१	अ.	२१	४६	ग.	१०	२३	वै.१	१३	२४	५	मिथुन			६	१	१८	४५	११	२९	२४	५८	भ. ३९/१० बाद, सूर्य अश्विनी मेष में ३४/२५, मु. ४५, (C)
३१	५५	८	गु.	३८	४३	पुन.	२१	२९	सु.	१८	११	वि.	८	५६	२	१४	२५	६	कर्क	६	९	६	०	१८	४६	०	०	२३	४६	भ. ८/५६ तक, शुक्र रेवती में २३/१७, अशोकाष्टमी (D)
३१	५९	९	शु.	४०	११	पुष्य	२४	२	धृ.	१६	९	बा.	९	२६	३	१५	२६	७	कर्क			५	५९	१८	४६	०	१	२२	३१	यूरेनस रेवती ४ में ६/१७, श्रीरामनवमी व्रत, नवरात्र समाप्त,
३२	४	१०	श.	४३	२१	आश्ले.	२८	१९	शू.	१५	३२	तै.	११	४६	४	१६	२७	८	सिंह	२८	१९	५	५८	१८	४७	०	२	२१	१४	वक्री गुरु पू.फा. २ में ६/५०, नवरात्रपारणा,
३२	८	११	र.	४७	५५	मघा	३४	०	गं.	१६	५	व.	१५	३८	५	१७	२८	९	सिंह			५	५६	१८	४८	०	३	१९	५५	भ. १५/३८ से ४७/५५ तक, मंगल वक्री २६/२७, (E)
३२	१२	१२	चं.	५३	२९	पू.फा.	४०	४४	वृ.	१७	३४	ब.	२०	४२	६	१८	२९	१०	कन्या	५७	३२	५	५५	१८	४८	०	४	१८	३४	प्लूटो वक्री १७/२५, श्रीविष्णु-दमनोत्सव,
३२	१७	१३	मं.	५९	४०	उ.फा.	४८	९	ध्रु.	१९	४१	कौ.	२६	३४	७	१९	३०	११	कन्या			५	५४	१८	४९	०	५	१७	११	सूर्य सायन वृष में २० घं. ५६ मि., ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (F)
३२	२१	१४	बु.	६०	०	हस्त	५५	५२	व्या.	२२	९	ग.	३२	५५	८	२०	३१	१२	कन्या			५	५३	१८	५०	०	६	१५	४५	बुध कृत्तिका में ५७/३५, श्रीशिव दमनोत्सव,
३२	२५	१४	गु.	६	१०	चित्रा	६०	०	ह.	२४	४४	व.	६	१०	९	२१	वै.१	१३	तुला	२९	४६	५	५२	१८	५०	०	७	१४	१८	भ. ६/१० से ३९/२२ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (G)
३२	३०	१५	शु.	१२	३५	चित्रा	३	३५	व.	२७	१६	ब.	१२	३५	१०	२२	२	१४	तुला			५	५१	१८	५१	०	८	१२	४८	चैत्री पूर्णिमा, वैशाखस्नान प्रारम्भ, उज्जैन(सिंहस्थ)कुम्भ (H)

(A) वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफल-श्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र-प्राशन, चन्द्रव्रत, (B) रजब मु. प्रारम्भ, (C) पुण्यकाल मध्याह्न बाद, अर्धकुम्भ हरिद्वार(दिखें पृ. 19), वैशाखी (पं.), (D) (पुनर्वसु नक्षत्र १४ घं. ३६ मि. तक), श्री दुर्गाष्टमी, (E) कामदा एकादशी व्रत(स.), दोलोत्सव, (F) अनङ्ग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), भौम प्रदोष व्रत, (G) शक वैशाख प्रारम्भ, (H) महापर्व प्रारम्भ, श्री हनुमान् जयन्ती(द.भा.), अगस्त्य अस्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	७	०	४	११	७	४	१०
०	२८	१४	१९	२०	१६	२२	२६	२६
२३	२२	४४	१४	९	९	०	१	१
४७	५३	३९	२८	१७	४४	३०	७	७
५८	७७६	२	७९	४	७४	१	३	३
४५	५८	६	४७	२७	२	५६	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. १	पुन. ३	अनु. ४	भर. २	पू.फा. ३	उ.भा. ४	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.षा. २

कुण्डली सूर्योदय (१४ अप्रै.)

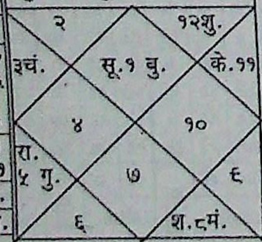

लोक भविष्यः- चैत्र चान्द्रमास में पांच शुक्रवार एवम् पांच गुरुवार हैं, अतः पश्चिमी देशों में अराजकता एवम् युद्धमय वातावरण रहे । भारत में सुभिक्ष एवम् सुधारात्मक प्रक्रिया जारी रहे - " विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।"

मंगल का शनि के साथ मेल आगे विशेष संकटापन्न स्थिति बना सकता है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- ८ से १० अप्रैल तक गेहूं, चावल, सरसों, तिल, तेल में कुछ तेजी का रुख रहे, लेकिन आगे अचानक मन्दी भी संभव है । ११ से १३ अप्रैल तक सोना, चान्दी, गेहूं, अलसी एवम् सभी तेल-तिलहन में जोरदार तेजी के झटके आएंगे, क्योंकि शनि-मंगल एक राशि में हैं । १३ से १९ अप्रैल तक रुई, कपास, चावल, चान्दी में मन्दा एवम् २० अप्रैल के लगभग अनाज, रुई तेज रहें।

आकाशलक्षण :- १० से १३ एवम् २० अप्रैल को मुम्बई, पश्चिमी राजस्थान, उ.प्र. एवम् हिमाचल प्रदेश के कुछ भागों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो ।१९ अप्रैल के लगभग उत्तरी भारत में ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ होगी ।

कुण्डली सूर्योदय (२२ अप्रै.)

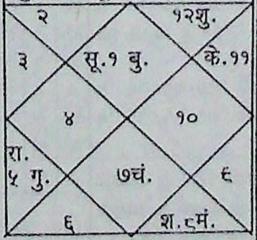

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २२ अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	७	०	४	११	७	४	१०
८	५	१४	२७	१९	२६	२१	२५	२५
१२	४६	४१	२२	३८	१	४२	३५	३५
४९	३१	३९	३९	२४	४१	३६	४१	४१
५८	७११	३	३५	३	७३	२	३	३
२९	६	४२	४२	५	५८	३७	११	११
		व.	मा.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अश्वि. ३	चित्रा ४	अनु. ४	कृत्ति. १	पू.फा. २	रेवती ३	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.भा. २

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, वैशाख कृष्ण पक्ष २

(२३ अप्रैल से ६ मई तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

२७ अप्रै. को शु. पूर्व में और ३० अप्रै. को बुध पश्चिम में अस्त हो जाएगा। प्रातः मं.श. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में और सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. वैशाख	अं. अप्रैल	श. वैशाख	मु. रजब	चन्द्रराशि – प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३२	३४	१	श.	१८	४४	स्वाती	११	८	सि.	२९	३२	कौ.	१८	४४	११	२३	३	१५	तुला			५	५०	१८	५२	०	९	११	१७	
३२	३८	२	र.	२४	२३	विशा.	१८	१२	व्य.	३१	२६	ग.	२४	२३	१२	२४	४	१६	वृश्चिक	१	२७	५	४९	१८	५२	०	१०	९	४४	भ. ५६/५२ बाद, शुक्र-वार्धक्य प्रारम्भ ५ घं. ४६ मि.,
३२	४२	३	चं.	२९	२२	अनु.	२४	३८	व.	३२	४९	वि.	२९	२२	१३	२५	५	१७	वृश्चिक			५	४८	१८	५३	०	११	८	९	भ. २६/२२ तक, शुक्र अश्विनी मेष में १२/३७, (A)
३२	४६	४	मं.	३३	३०	ज्येष्ठा	३०	१६	प.	३३	३१	ब.	१	२६	१४	२६	६	१८	धनु	३०	१६	५	४७	१८	५४	०	१२	६	३२	
३२	५०	५	बु	३६	३२	मूल	३४	५१	शि.	३३	२४	कौ.	५	१	१५	२७	७	१९	धनु			५	४६	१८	५४	०	१३	४	५३	सूर्य भरणी में १४/५२, शुक्र पूर्व में अस्त ५ घं. ४६ मि.,
३२	५४	६	गु.	३८	१७	पू.षा.	३८	१२	सि.	३२	१९	ग.	७	२४	१६	२८	८	२०	मकर	५३	५०	५	४५	१८	५५	०	१४	३	१३	भ. ३८/१७ बाद, बुध वक्री ४२/४२,
३२	५८	७	शु.	३८	३४	उ.षा.	४०	८	सा.	३०	४	वि.	८	२५	१७	२९	९	२१	मकर			५	४४	१८	५६	०	१५	१	३२	भ. ८/२५ तक,
३३	२	८	श.	३७	१३	श्रव.	४०	२७	शु.	२६	३४	बा.	७	५३	१८	३०	१०	२२	मकर			५	४३	१८	५६	०	१५	५९	४९	बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. ५६ मि.,
३३	६	९	र.	३४	११	धनि.	३९	७	शु.	२१	४४	तै.	५	४२	१९	म.१	११	२३	कुम्भ	१०	१	५	४२	१८	५७	०	१६	५८	४	पंचक प्रारम्भ १०/०१, मई प्रारम्भ,
३३	१०	१०	चं.	२९	२९	शत.	३६	८	ब्र.	१५	३२	व.	१	५०	२०	२	१२	२४	कुम्भ			५	४२	१८	५८	०	१७	५६	१८	भ. १/५० से २६/२६ तक,
३३	१४	११	मं.	२३	१४	पू.भा.	३१	३८	ऐं. वै.	८ ५९	३ २२	बा.	२३	१४	२१	३	१३	२५	मीन	१७	५३	५	४१	१८	५८	०	१८	५४	३१	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.), श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती,
३३	१८	१२	बु.	१५	४०	उ.भा.	२५	५१	वि.	४९	४९	तै.	१५	४०	२२	४	१४	२६	मीन			५	४०	१८	५९	०	१९	५२	४२	वक्री प्लूटो पू.षा. ३ में ५८/१८, प्रदोषव्रत,
३३	२१	१३	गु.	७	५	रेव.	१९	७	प्री.	३९	३६	व.	७	५	२३	५	१५	२७	मेष	१९	७	५	३९	१९	०	०	२०	५०	५१	भद्रा ७/०५ से ३२/२७ तक, पंचक समाप्त १६/०७,
अवम		१४	गु.	५७	५०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथिक्षय,
३३	२५	३०	शु.	४८	२३	अश्वि.	११	५०	आ.	२९	५	च.	२३	६	२४	६	१६	२८	मेष			५	३८	१९	०	०	२१	४८	५९	शुक्र भरणी में २/३०,

शुक्र अस्त
२७ अप्रैल

(A) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ३० अप्रैल,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	७	०	४	०	७	४	१०
१५	१४	१३	२६	१९	५	२१	२५	२५
५९	१३	५०	२६	१८	५३	१६	१०	१०
५०	२५	३६	४५	३८	६	३३	१५	१५
५८	८०३	६	६	१	७३	३	३	३
१५	१०	४६	१६	४०	५४	१३	११	११
		व.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
भर. १	श्रव. २	अनु. ४	कृत्ति. १	पू.फा. २	अश्वि. २	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.भा. २

कुण्डली सूर्योदय (३० अप्रै.)

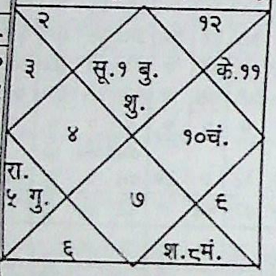

लोक भविष्यः- वैशाख चान्द्रमास में पांच मंगलवार होने से किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो। मुस्लिम देशों में उग्रवाद से भयंकर अशान्ति किंवा रक्तपात हो-" यत्र मासे महीसूनोर्जायन्ते पञ्च-वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- २५ से २७ अप्रैल तक जौ, चना, गेहूं आदि अन्न एवं घी में तेजी से लाभ मिले। तेल, तिलहन, गुड़, शक्कर, बारदाना आदि में घटाबढ़ी के बाद तेजी रहे। सोने, तांबे, चान्दी में खास तेजी का झटका संभव है। २८ अप्रैल को बाजार का रुख अचानक बदल सकता है, लेकिन सोना, तांबा आदि धातु एवम् अनाज तेज ही रहें।६ मई को शुक्र के भरणी में आने पर सोने, चान्दी एवम् दालवाना में तेजी का झटका आएगा।

आकाशलक्षणः- २४, २६, २७, ३० अप्रैल एवम् ६ मई के लगभग मुम्बई, आसाम, राजस्थान, उड़ीसा, उ.प्र. एवम् हि.प्र. के कुछ भागों में कहीं खण्डवृष्टि व बादलचाल रहे।

कुण्डली सूर्योदय (६ मई)

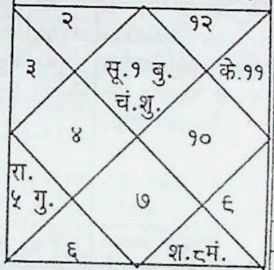

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ६ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	७	०	४	०	७	४	१०
२१	१०	१२	२७	१६	१३	२०	२४	२४
४६	१४	४०	२५	११	१६	५६	५१	५१
०	३४	४५	२५	२५	३१	१६	१०	१०
५८	६१३	१४	३२	०	७३	३	३	३
६	२	७	१६	३४	५२	३६	११	११
		व.	व.	व.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
भर. ३	अश्वि. ४	अनु. ३	कृत्ति. १	पू.फा. २	अश्वि. ४	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.भा. २

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, वैशाख शुक्ल पक्ष ३

(७ से २१ मई तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, उत्तरगोल, ग्रीष्म ऋतु।

शु. अस्त है । १६ मई से बु. पूर्व में उदय होगा । प्रातः मं. श. पश्चिम कपाल में और सायं गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा । १५ मई को चं. गु. परस्पर आसन्न होंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि — प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	वैशाख	मई	वैशाख	रजब		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	२९	१	श.	३९	९	भर. कृत्ति.	४ ५७	२५ २४	सौ.	१८	३६	किं.	१३	४६	२५	७	१७	२९	वृष	१७	३६	५	३७	१९	१	०	२२	४७	६	वक्री बुध भरणी में २२/३५,
३३	३२	२	र.	३०	३६	रोहि.	५१	१४	शो. अ.	८ ५९	३२ १४	बा.	४	५२	२६	८	१८	३०	वृष			५	३७	१९	१	०	२३	४५	१०	चन्द्रदर्शन, मु.४५, श्रीशिवाजी जयन्ती, श्रीपरशुराम जयन्ती,
३३	३६	३	चं.	२३	११	मृग.	४६	२२	सु.	५१	४	ग.	२३	११	२७	९	१९	शा.१	मिथुन	१८	३७	५	३६	१९	२	०	२४	४३	१३	भ. ५०/१४ बाद, गुरु मार्गी ३०/२५, अक्षयतृतीया, (A)
३३	३९	४	मं.	१७	१७	आर्द्रा	४३	१२	धृ.	४४	२०	वि.	१७	१७	२८	१०	२०	२	मिथुन			५	३५	१९	३	०	२५	४१	१४	भ. १७/१७ तक,
३३	४३	५	बु.	१३	१५	पुन.	४२	०	शू.	३९	१३	बा.	१३	१५	२९	११	२१	३	कर्क	२७	८	५	३४	१९	३	०	२६	३९	१४	सूर्य कृत्तिका में ०/३७, श्रीशंकराचार्य जयन्ती,
३३	४६	६	गु.	११	२०	पुष्य	४२	५६	गं.	३५	५०	तै.	११	२०	३०	१२	२२	४	कर्क			५	३४	१९	४	०	२७	३७	११	श्री रामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगंगाजन्म,
३३	५०	७	शु.	११	३४	आश्ले.	४५	५८	वृ.	३४	८	व.	११	३४	३१	१३	२३	५	सिंह	४५	५८	५	३३	१९	५	०	२८	३५	७	भ. ११/३४ से ४२/४२ तक,
३३	५३	८	श.	१३	५१	मघा	५०	४९	ध्रु.	३३	५८	ब.	१३	५१	ज्ये.१	१४	२४	६	सिंह			५	३२	१९	५	०	२९	३३	१	सं. सूर्य वृष में २७/५२, मु. ३०, (B)
३३	५६	९	र.	१७	५४	पू.फा.	५७	१०	व्या.	३५	५	कौ.	१७	५४	२	१५	२५	७	सिंह			५	३२	१९	६	१	०	३०	५३	
३३	५९	१०	चं.	२३	१७	उ.फा.	६०	०	ह.	३७	६	ग.	२३	१७	३	१६	२६	८	कन्या	१३	५७	५	३१	१९	७	१	१	२८	४३	भ. ५६/२२ बाद, शुक्र कृतिका में ५२/५५,
३४	२	११	मं.	२९	२७	उ.फा.	४	२९	व.	३९	३९	वि.	२९	२७	४	१७	२७	९	कन्या			५	३०	१९	७	१	२	२६	३२	भ. २६/२७ तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.),
३४	५	१२	बु.	३५	५५	हस्त	१२	१७	सि.	४२	२१	ब.	२	४१	५	१८	२८	१०	तुला	४६	११	५	३०	१९	८	१	३	२४	१९	
३४	८	१३	गु.	४२	१३	चित्रा	२०	३	व्य.	४४	५५	कौ.	९	४	६	१९	२९	११	तुला			५	२९	१९	९	१	४	२२	४	शुक्र वृष में ३५/४०, बुध पूर्व में उदित ५ घं. २६ मि., (C)
३४	११	१४	शु.	४८	३	स्वाती	२७	२६	व.	४७	७	ग.	१५	७	७	२०	३०	१२	तुला			५	२९	१९	९	१	५	१९	४८	भ. ४८/०३ बाद, सूर्य सायन मिथुन में २० घं. ०६ मि.,(D)
३४	१४	१५	श.	५३	९	विशा.	३४	१३	प.	४८	४७	वि.	२०	३६	८	२१	३१	१३	वृश्चिक	१७	३६	५	२८	१९	१०	१	६	१७	३१	भ. २०/३६ तक, वक्री शनि ज्ये. १ में ०/५२, (E)

कुम्भ(सिंहस्थ) महापर्व उज्जैन २१ मई देखें पृ. 19

(A) शाबान मु. प्रारम्भ, (B) पुण्यकाल १० घं. १७ मि. बाद, श्रीजानकी जयन्ती (देखें पृ. 13), (C) प्रदोष व्रत, (D) श्रीनृसिंह जयन्ती, (E) कुम्भ(सिंहस्थ)महापर्व उज्जैन (प्रमुख स्नान)(देखें पृ. 19), श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्धपूर्णिमा, वैशाखीपूर्णिमा, वैशाखस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १४ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	४	७	०	४	०	७	४	१०
२६	२	१०	२२	१६	२३	२०	२४	२४
३३	५३	३०	४५	१२	७	२८	२५	२५
२	३४	४८	५४	५	१५	५६	४४	४४
५७	७३६	१८	३०	०	७३	४	३	३
५२	५१	३८	५२	५५	४८	०	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. १	मघा १	अनु. ३	भर. ३	पू.फा. २	भर. ३	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.भा. २

कुण्डली सूर्योदय (१४ मई)

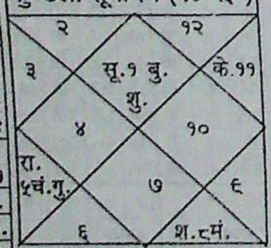

लोकभविष्यः- वैशाख शुक्लाष्टमी को शनिवार है एवं शनि-मंगल का एकराशि-सम्बन्ध भी है । अतः कहीं आगे अकाल की स्थिति बने । कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि किंवा कहीं सत्तापरिवर्तन हो-

" वैशाख-धवलाष्टम्यां शनिवारो भवेद्यदि ।
जलशोषं प्रजाहानिं छत्रभंगं तदादिशेत् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में चावल, गेहूं आदि अनाजों एवं दालदाना में तेजी बनेगी । ९ मई के लगभग रुई, चान्दी, चावल, अलसी, सरसों, गुड़, घी तेज होकर नीचे आएं। १० से १५ मई तक गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तेल, तिलहन तेज रहें । मासान्त में १९ मई को तेजी के बाद मन्दा रहे ।

आकाशलक्षणः- ७ से १० एवम् १४ से २१ मई के मध्य पूर्वी उड़ीसा, विन्ध्यप्रदेश, हि.प्र., मुम्बई, भूटान, सिक्किम, आसाम एवम् केरल के कुछ भागों में मानसून का आगमन संभव है । पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में मौसम गर्म रहे।

कुण्डली सूर्योदय (२१ मई)

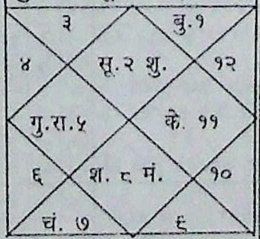

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २१ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	७	०	४	१	७	४	१०
६	२६	८	२०	१६	१	२०	२४	२४
१७	२६	१२	२०	२२	४३	०	३	३
३१	३६	५८	३८	१२	४३	३	२६	२६
५७	७२२	२०	४	२	७३	४	३	३
४१	३२	४५	४४	६	४५	१५	११	११
		व.	व.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
कृत्ति. ३	विशा. २	अनु. २	भर. ३	पू.फा. २	कृत्ति. २	ज्ये. २	पू.फा. ४	पू.भा. २

श्री वि.सं. २०७३, शाक १९३८, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष ४

(२२ मई से ५ जून तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु।

शु. अस्त है। प्रातः बु.पूर्व में और श. मं. पश्चिम-क्षितिज में होंगे। सायं गु. याम्योत्तरवृत्तासन्न होगा।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	ज्येष्ठ	मई	ज्येष्ठ	शाबान		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१७	१	र.	५७	२६	अनु	४०	१४	शि.	४९	४८	बा.	२५	१७	९	२२	ज्ये.१	१४	वृश्चिक			५	२८	१९	११	१	७	१५	१२	बुध मार्गी ३३/२२, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,
३४	१९	२	चं.	६०	०	ज्येष्ठा	४५	२३	सि.	५०	९	तै.	२९	७	१०	२३	२	१५	धनु	४५	२३	५	२७	१९	११	१	८	१२	५२	
३४	२२	२	मं.	०	४९	मूल	४९	३९	सा.	४९	४७	ग.	०	४९	११	२४	३	१६	धनु			५	२७	१९	१२	१	९	१०	३०	भ. ३२/०२ बाद, सूर्य रोहि. में ५१/४०,
३४	२४	३	बु.	३	१६	पू.षा.	५२	५७	शु.	४८	३९	वि.	३	१६	१२	२५	४	१७	धनु			५	२७	१९	१२	१	१०	८	७	भ. ३/१६ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	२७	४	गु.	४	४३	उ.षा.	५५	१३	शु.	४६	४१	बा.	४	४३	१३	२६	५	१८	मकर	८	३८	५	२६	१९	१३	१	११	५	४४	
३४	२९	५	शु.	५	५	श्रव.	५६	२१	ब्र.	४३	५०	तै.	५	५	१४	२७	६	१९	मकर			५	२६	१९	१४	१	१२	३	१९	शुक्र रोहि. में ४३/५५,
३४	३२	६	श.	४	१६	धनि.	५६	१६	ऐं.	३९	५९	व.	४	१६	१५	२८	७	२०	कुम्भ	२६	२९	५	२५	१९	१४	१	१३	०	५३	भ. ४/१६ से ३३/१४ तक, पंचक प्रारम्भ २६/२६,
३४	३४	७	र	२	१२	शत.	५४	५२	वै.	३५	६	ब.	२	१२	१६	२९	८	२१	कुम्भ			५	२५	१९	१५	१	१३	५८	२७	
अवम		८	र.	५८	४९	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथिक्षय,
३४	३६	९	चं.	५४	६	पू.भा.	९२	९	वि.	२९	७	तै.	२६	२७	१७	३०	९	२२	मीन	३७	५७	५	२५	१९	१५	१	१४	५६	०	
३४	३८	१०	मं.	४८	८	उ.भा.	४८	१०	प्री.	२२	६	व.	२१	७	१८	३१	१०	२३	मीन			५	२५	१९	१६	१	१५	५३	३२	भ. २१/०७ से ४८/०८ तक,
३४	४०	११	बु.	४१	४	रेव.	४३	६	आ.	१४	५	ब.	१४	३६	१९	जू.१	११	२४	मेष	४३	६	५	२४	१९	१६	१	१६	५१	३	पंचक समाप्त ४३/०६, अपरा एकादशी व्रत (स.), (A)
३४	४२	१२	गु.	३३	८	अश्वि.	३७	१०	सौ.	५	१५	कौ.	७	६	२०	२	१२	२५	मेष			५	२४	१९	१७	१	१७	४८	३३	गुरु पू.फा. ३ में ११/३७, प्रदोषव्रत,
									शो.	५५	५०																			
३४	४३	१३	शु.	२४	४१	भर.	३०	४४	अ.	४६	६	व.	२४	४१	२१	३	१३	२६	वृष	४४	३	५	२४	१९	१७	१	१८	४६	३	भ. २४/४१ से ५०/२३ तक, राहु पू.फा. ३, केतु पू.भा. (B)
३४	४५	१४	श.	१६	५	कृत्ति.	२४	१२	सु.	३६	२३	श.	१६	५	२२	४	१४	२७	वृष			५	२४	१९	१८	१	१९	४३	३१	वक्री मंगल विशा. में १६/५७, बुध कृत्ति. में ५३/५२,(C)
३४	४७	३०	र.	७	४४	रोहि.	१८	०	धृ.	२७	२	ना.	७	४४	२३	५	१५	२८	मिथुन	४५	८	५	२४	१९	१८	१	२०	४०	५९	भावुका अमा,

(A) भद्रकाली एकादशी (पं.), जून प्रारम्भ, (B) १ में ४०/४५, (C) वटसावित्री व्रत (अमापक्ष),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २६ मई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	७	०	४	१	७	४	१०
१३	७	५	२१	१९	११	१९	२३	२३
५८	३३	२५	४८	४४	३३	२५	३८	३८
२७	२	१९	२१	१२	४१	१९	३	३
५७	८२०	२०	३०	३	७३	४	३	३
३३	४४	४२	३९	३१	१५	२५	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. २	शत. १	अनु. १	भर. ३	पू.फा. २	रोहि. १	ज्ये. १	पू.फा. ४	पू.भा. २

कुण्डली सूर्योदय (२६ मई)

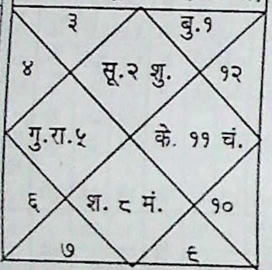

कपास, अनाजों में तेजी संभव है।

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास की प्रतिपदा को रविवार है, अतः कहीं दुर्भिक्ष, कहीं छत्रभंग, कहीं घातक महामारी से जनता परेशान रहे-

"कृष्णे ज्येष्ठप्रतिपदि यदि भौमार्क-बुधवासराः ।
दुर्भिक्षं छत्रभंगं स्यात् लोकानां व्याधि-पीड़नम् ॥"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २२ से २६ मई तक अलसी, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, घी, चना, गेहूं, ज्वार, बाजरा, सूत, ऊन, सुपारी, लालमिर्च में उठापटक के साथ तेजी रहे। २४ मई को तेजी अधिक रहे ।२७ मई से २ जून तक अनाज, रुई में बाजार अस्थिर रहें । ४/५ जून के लगभग रुई, कपास, अनाजों में तेजी संभव है।

आकाशलक्षणः- मई २२, २४, २५, २७ एवम् जून १ से ५ तक महाराष्ट्र, भूटान, उड़ीसा, शिलांग, काठमाण्डु, जम्मू-काश्मीर, उ. प्र. एवम् हि.प्र. में कहीं वायुवेग, मेघगर्जना एवं खण्डवृष्टि हो । उत्तरी भारत में वायुवेग के साथ कहीं वर्षा भी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (५ जून)

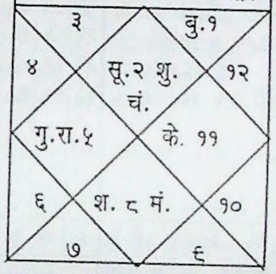

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ५ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	७	०	४	१	७	४	१०
२०	१८	३	२६	२०	२०	१८	२३	२३
४०	५७	६	४५	१२	९	५४	१५	१५
५९	१३	३१	४३	११	५२	१३	४७	४७
५७	८८३	१८	५७	४	७३	४	३	३
२७	३१	१६	२०	३९	४४	२६	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
रोहि. ४	रोहि. ३	विशा. ४	कृत्ति. १	पू.फा. ३	रोहि. ४	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १

श्री वि.सं. २०७३, शाक १९३८, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष ५

(६ से २० जून तक, सन् २०१६ ई.)
उत्तर–दक्षिणायन, उत्तरगोल, ग्रीष्म–वर्षा ऋतु।

शु. अदृश्य है । प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में होगा । सायं गु. याम्योत्तर-वृतासन्न, मं. पूर्वकपाल में और श. पूर्व में होगा । ११ जून को चं.गु. परस्पर आसन्न होंगे।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें प्र. ज्येष्ठ	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. शाबान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४८	१	चं.	०	५	मृग.	१२	३५	शू.	१८	२४	ब.	०	५	२४	६	१६	२९	मिथुन			५	२४	१९	१९	१	२१	३८	२६	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
अवम		२	चं.	५३	३५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वितीया तिथिक्षय,
३४	५०	३	मं.	४८	३६	आर्द्रा	८	२५	गं.	१०	५०	तै.	२१	५	२५	७	१७	र. १	कर्क	५१	२१	५	२३	१९	१९	१	२२	३५	५२	सूर्य मृग. में ४६/२५, शुक्र मृग. में ३५/००, (A)
३४	५१	४	बु.	४५	२९	पुन.	५	५३	वृ. ध्रु	४ ५९	३७ ५८	व.	१७	२	२६	८	१८	२	कर्क			५	२३	१९	२०	१	२३	३३	१७	भ. १७/०२ से ४५/२६ तक, बुध वृष में ११/००, (B)
३४	५२	५	गु.	४४	२६	पुष्य	५	१७	व्या.	५७	०	ब.	१४	५७	२७	९	१९	३	कर्क			५	२३	१९	२०	१	२४	३०	४१	
३४	५३	६	शु.	४५	३०	आश्ले.	६	४४	ह.	५५	४२	कौ.	१४	५८	२८	१०	२०	४	सिंह	६	४४	५	२३	१९	२१	१	२५	२८	३	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्यषष्ठी,
३४	५४	७	श.	४८	३१	मघा	१०	१४	व.	५५	५३	ग.	१७	०	२९	११	२१	५	सिंह			५	२३	१९	२१	१	२६	२५	२५	भ. ४८/३१ बाद,
३४	५५	८	र.	५३	१०	पू.फा.	१५	३१	सि.	५७	१७	वि.	२०	५०	३०	१२	२२	६	कन्या	३२	७	५	२३	१९	२१	१	२७	२२	४६	भ. २०/५० तक,
३४	५६	९	चं.	५८	५४	उ.फा.	२२	११	व्य.	५९	३०	बा.	२६	२	३१	१३	२३	७	कन्या			५	२३	१९	२२	१	२८	२०	६	शुक्र मिथुन में ०/३२, नेप्च्यून वक्री, ५२/१२,
३४	५७	१०	मं.	६०	०	हस्त	२९	३८	व.	६०	०	तै.	३२	१	आ. १	१४	२४	८	कन्या			५	२३	१९	२२	१	२९	१७	२५	सं. सूर्य मिथुन में ४४/५२, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न (C)
३४	५७	१०	बु.	५	८	चित्रा	३७	१९	व.	२	६	ग.	५	८	२	१५	२५	९	तुला	३	३०	५	२३	१९	२२	२	०	१४	४३	भ. ३८/१२ बाद, बुध रोहि. में ४६/४५,
३४	५८	११	गु.	११	१७	स्वाती	४४	४२	प.	४	३९	वि.	११	१७	३	१६	२६	१०	तुला			५	२४	१९	२३	२	१	१२	०	भ. ११/१७ तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.),
३४	५८	१२	शु.	१६	५४	विशा.	५१	२२	शि.	६	४९	बा.	१६	५४	४	१७	२७	११	वृश्चिक	३४	४७	५	२४	१९	२३	२	२	९	१६	वक्री मंगल तुला में ४६/४५, प्रदोषव्रत,
३४	५९	१३	श.	२१	३७	अनु.	५७	४	सि.	८	२१	तै.	२१	३७	५	१८	२८	१२	वृश्चिक			५	२४	१९	२३	२	३	६	३२	शुक्र आर्द्रा में २६/०७,
३४	५९	१४	र.	२५	१७	ज्येष्ठा	६०	०	सा.	९	५	व.	२५	१७	६	१९	२९	१३	वृश्चिक			५	२४	१९	२४	२	४	३	४७	भ. २५/१७ से ५६/३३ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (D)
३४	५९	१५	चं.	२७	४९	ज्येष्ठा	१	४२	शु.	८	५७	ब.	२७	४९	७	२०	३०	१४	धनु	१	४२	५	२४	१९	२४	२	५	१	१	सूर्य सायन कर्क में २८ घं. ०४ मि., दक्षिणायन-(E)

(A) रम्भातृतीया, श्री महाराणा प्रताप जयन्ती (राज.), रमज़ान मु. प्रारम्भ, (B) बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (C) बाद, श्रीगंगा दशहरा (हस्त नक्षत्र १७ घं. १५ मि. तक,), (D) वटसावित्री व्रत (पूर्णिमापक्ष) (देखें पृ. 13), (E) वर्षाऋतु प्रारम्भ,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	७	१	४	१	७	४	१०
२७	२३	१	४	२०	२८	१८	२२	२२
२२	३४	१०	३६	४७	४५	२३	५३	५३
४७	५२	३५	५५	५३	५८	१६	३२	३२
५७	७२३	१३	८०	५	७३	४	३	३
२०	३८	५६	६	४२	४२	२१	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मृग. २	पू.फा. ४	विशा. ४	कृत्ति. ३	पू.फा. ३	मृग. २	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १

कुण्डली सूर्योदय (१२ जून)

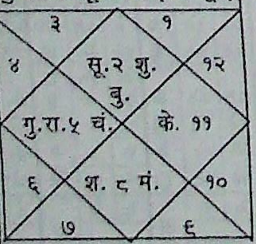

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि-मंगल १७ जून तक वृश्चिक राशि में रहेंगे। वर्षाकाल में कहीं घोर दुर्भिक्ष व कहीं प्राकृतिक आपदा से जनधनहानि हो-

" एकराशिंगता ह्येते धरापुत्र-शनैश्चरौ ।
तदा मेघा न वर्षन्ति वर्षाकाले न संशयः ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, सूत, सोना, गुड़, खाण्ड व चना, जौ आदि अनाज कुछ तेज रहें । ७ जून को रुई, सूत, रेशम, सण, कपूर, सोना, चान्दी, दालवाना एवं मोटे अनाज तेज रहें । ८ जून को सारे बाजारों में घटाबढ़ी रहे । लेकिन गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई, कपास, सूत आदि में तेजी रहे। १३ से १५ जून तक तेल, तिलहन, चावल, गुड़, खाण्ड तेज रहें । सोने, चान्दी में भी झटके की तेजी बने। १७ जून को सावधानी से वायदा खेलें ।

आकाशलक्षणः- ७ से १८ जून तक उत्तराखण्ड, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. एवम् उत्तरी भारत के कुछ और अन्य क्षेत्रों में वायुवेग, बादलचाल एवं खण्डवृष्टि के योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२० जून)

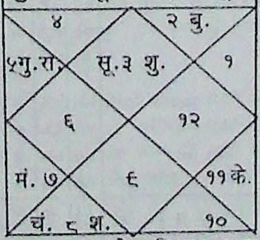

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २० जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	६	१	४	२	७	४	१०
५	२६	२६	१६	२१	८	१७	२२	२२
१	४१	३६	४२	३७	३५	४६	२८	२८
१	५३	४२	२०	२४	३७	१३	५	५
५७	७५४	७	१०३	६	७३	४	३	३
१४	३६	५०	५८	४८	४२	७	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
मृग. ४	ज्ये. ४	विशा. ३	रोहि. ३	पू.फा. ३	आर्द्रा. १	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, आषाढ़ कृष्ण पक्ष ६

(२१ जून से ४ जुलाई तक, सन् २०१६ ई.)

दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षाऋतु।

शु. अदृश्य है । बु. भी २६ जून को पूर्व में लुप्त हो जाएगा । सायं गु. पश्चिमकपाल में, मं. पूर्वकपाल में और श. पूर्व में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ़	अं. जून	श. ज्येष्ठ	मु. रमजान	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	५९	१	मं.	२९	१६	मूल	५	१४	शु.	७	५७	कौ.	२९	१६	८	२१	३१	१५	धनु			५	२४	१९	२४	२	५	५८	१५	सूर्य आर्द्रा में ४४/०२,
३४	५९	२	बु.	२९	४१	पू.षा.	७	४५	ब्र.	६	७	ग.	२९	४१	९	२२	आ.१	१६	मकर	२३	१४	५	२५	१९	२४	२	६	५५	२९	भ. ५६/२५ बाद, शक आषाढ़ प्रारम्भ,
३४	५९	३	गु.	२९	१०	उ.षा.	९	१९	ऐं.	३	३२	वि.	२९	१०	१०	२३	२	१७	मकर			५	२५	१९	२४	२	७	५२	४२	भ. २६/१० तक, बुध मृग. में ४१/३२, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
३४	५८	४	शु.	२७	४४	श्रव.	९	५९	वै.	०	१२	बा.	२७	४४	११	२४	३	१८	कुम्भ	४०	०	५	२५	१९	२४	२	८	४९	५५	पंचक प्रारम्भ ४०/००,
									वि.	५६	११																			
३४	५८	५	श.	२५	२७	धनि.	९	४८	प्री.	५१	२७	तै.	२५	२७	१२	२५	४	१९	कुम्भ			५	२५	१९	२५	२	९	४७	७	
३४	५८	६	र.	२२	१७	शत.	८	४५	आ.	४६	१	व.	२२	१७	१३	२६	५	२०	मीन	५२	२४	५	२६	१९	२५	२	१०	४४	२०	भ. २२/१७ से ५०/१६ तक, बुध पूर्व में अस्त ५घं २६मि.,
३४	५७	७	चं.	१८	१६	पू.भा.	६	५०	सौ.	३९	५३	ब.	१८	१६	१४	२७	६	२१	मीन			५	२६	१९	२५	२	११	४१	३३	बुध मिथुन में ६/४०, यूरेनस अश्विनी १ मेष में २८/२२,
३४	५६	८	मं.	१३	२२	उ.भा.	४	४	शो.	३३	३	कौ.	१३	२२	१५	२८	७	२२	मीन			५	२६	१९	२५	२	१२	३८	४६	
३४	५५	९	बु.	७	४१	रेव.	०	२९	अ.	२५	३६	ग.	७	४१	१६	२९	८	२३	मेष	०	२९	५	२७	१९	२५	२	१३	३५	५८	भ. ३४/३० बाद, पंचक समाप्त ०/२६, मंगल मार्गी (A)
						अश्वि.	५६	११																						
३४	५५	१०	गु.	१	२०	भर.	५१	२२	सु.	१७	३७	वि.	१	२०	१७	३०	९	२४	मेष			५	२७	१९	२५	२	१४	३३	११	भ. १/२० तक, बुध आर्द्रा में १६/५७, योगिनी एकादशी(B)
अवम		११	गु.	५४	२७	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
३४	५४	१२	शु.	४७	१९	कृत्ति.	४६	१६	धृ.	९	१६	कौ.	२०	५३	१८	जु१	१०	२५	वृष	५	६	५	२७	१९	२५	२	१५	३०	२४	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), जुलाई प्रारम्भ,
३४	५३	१३	श.	४०	१४	रोहि.	४१	१२	शू.	०	४७	ग.	१३	४६	१९	२	११	२६	वृष			५	२८	१९	२५	२	१६	२७	३८	भ. ४०/१४ बाद, शनि प्रदोषव्रत,
									गं.	५२	२४																			
३४	५१	१४	र.	३३	३२	मृग.	३६	३२	वृ.	४४	२४	वि.	६	५३	२०	३	१२	२७	मिथुन	८	४६	५	२८	१९	२५	२	१७	२४	५१	भ. ६/५३ तक, गुरु पू.फा. ४ में ३१/०२,
३४	५०	३०	चं.	२७	३५	आर्द्रा	३२	३९	ध्रु.	३७	५	च.	०	३३	२१	४	१३	२८	मिथुन			५	२९	१९	२५	२	१८	२२	४	सोमवती अमा,

(A) ५६/१५, शुक्र पुन. में १७/१२, (B) व्रत (स्मार्ती),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २८ जून,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	६	२	४	२	७	४	१०
१२	१५	२६	१	२२	१८	१७	२२	२२
३८	४५	०	४८	३५	२५	१७	२	२
४६	१	५	३८	२६	१८	२७	३६	३६
५७	८५०	१	१२३	७	७३	३	३	३
१२	१३	१४	४६	४८	४४	४५	११	११
		व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा २	उ.भा. ४	विशा. ३	मृग. ३	पू.फा. ३	आर्द्रा ४	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १

कुण्डली सूर्योदय (२८ जून)

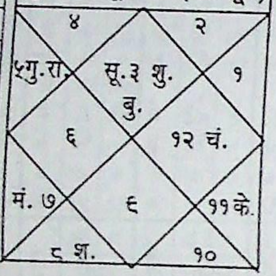

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं। सुर्य-शुक्र-बुव मिथुनस्थ हैं; अतः महंगाई से जनमानस त्रस्त रहे । अफगानिस्तान आदि में उग्रवादजन्य अशान्ति भी रहे-

" एकनक्षत्रगा ह्येते सौम्य-शुक्रदिनाधिपाः ।
सर्वधान्यमहर्घत्वं तथा भयविवर्धकाः ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २१/२२ जून को रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, चावल, चना, जौ, चान्दी तेज रहे । २३ से २७ जून तक बाजार मन्दे रहें, लेकिन २६ जून के लगभग रुई में जोरदार मन्दी; तेल, चान्दी तेज रहें। २९ जून को धान्य, बिनौला तेज; चान्दी, रुई, सूत, कपास मन्दे रहें । ३० जून से ३/४ जुलाई तक बाजार मन्दे रहेंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (४ जुला.)

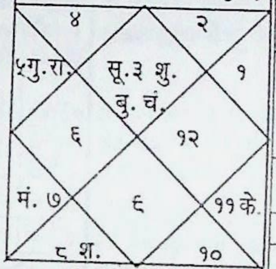

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ४ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	६	२	४	२	७	४	१०
१८	१२	२६	१४	२३	२५	१६	२१	२१
२२	१७	५	३२	१४	४७	५५	४३	४३
४	२	५	३५	५	४३	४५	३४	३४
५७	८४७	३	१३०	८	७३	३	३	३
१३	४५	४१	१६	३०	४४	२५	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	अ.	उ.	अ.	अ.
आर्द्रा ४	आर्द्रा २	विशा. ३	आर्द्रा ३	पू.फा. ३	पुन. २	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १

आकाशलक्षणः- २१, २३, २६, २७, २९, ३० जून एवम् ३ जुलाई तक हि.प्र., उत्तराखण्ड, जम्मू-काश्मीर, उ.प्र. उड़ीसा, शिलांग, नेपाल में वायुवेग के साथ वर्षा के योग हैं ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, आषाढ़ शुक्ल पक्ष ७

(५ से १९ जुलाई तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु।

१० जुला. से शु. और पक्षान्त में बु. पश्चिम में दृश्य हो जाएगा । सायं गु. पश्चिमकपाल में, मं. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में और श. पूर्वकपाल में होगा । ६ जुला. को सायं चं. गु. पश्चिम में परस्पर परमासन्न होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आषाढ	अं. जुलाई	श. आषाढ	मु. रमज़ान	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३४	४९	१	मं.	२२	४६	पुन.	२९	५६	व्या.	३०	४६	ब.	२२	४६	२२	५	१४	२९	कर्क	१५	२९	५	२९	१९	२५	२	१९	१९	१७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, सूर्य पुन. में ४२/४२, गुप्त नवरात्र (A)
३४	४७	२	बु.	१९	२५	पुष्य	२८	४३	ह.	२५	४०	कौ.	१९	२५	२३	६	१५	श.१	कर्क			५	३०	१९	२५	२	२०	१६	३१	बुध पुन. में ३०/४५, रथयात्रा(श्रीजगदीश रथोत्सव)पुरी (B)
३४	४६	३	गु.	१७	४८	आश्ले.	२९	१५	व.	२१	५९	ग.	१७	४८	२४	७	१६	२	सिंह	२९	१५	५	३०	१९	२४	२	२१	१३	४४	भ. ४७/५६ बाद, शुक्र कर्क में २५/१५,
३४	४४	४	शु.	१८	४	मघा	३१	३७	सि.	१९	४८	वि.	१८	४	२५	८	१७	३	सिंह			५	३१	१९	२४	२	२२	१०	५७	भ. १८/०४ तक, वक्री शनि अनु. ४ में ४७/२८, (शुक्र उदित १० जुलाई)
३४	४२	५	श.	२०	१२	पू.फा.	३५	४९	व्य.	१९	५	बा.	२०	१२	२६	९	१८	४	कन्या	५२	८	५	३१	१९	२४	२	२३	८	१०	कुमारषष्ठी,
३४	४१	६	र.	२४	२	उ.फा.	४१	३३	व.	१९	४१	तै.	२४	२	२७	१०	१९	५	कन्या			५	३२	१९	२४	२	२४	५	२३	शुक्र पुष्य में ७/५५, शुक्र पश्चिम में उदित १६घं. २४मि.(C)
३४	३९	७	चं.	२९	९	हस्त	४८	२६	प.	२१	१९	व.	२९	९	२८	११	२०	६	कन्या			५	३२	१९	२४	२	२५	२	३६	भ. २६/०६ बाद, बुध कर्क में १०/३७,
३४	३७	८	मं.	३५	३	चित्रा	५५	५२	शि.	२३	३५	वि.	२	६	२९	१२	२१	७	तुला	२२	८	५	३३	१९	२३	२	२५	५९	४९	भ. २/०६ तक, मंगल वृश्चिक में २०/५५, बुध पुष्य में (D)
३४	३५	९	बु.	४१	५	स्वाती	६०	०	सि.	२६	३	बा.	८	४	३०	१३	२२	८	तुला			५	३३	१९	२३	२	२६	५७	२	शुक्रबाल्य समाप्त १६ घं. २४ मि., गुप्त नवरात्र समाप्त,
३४	३२	१०	गु.	४६	४२	स्वाती	३	१६	सा.	२८	१८	तै.	१३	५३	३१	१४	२३	९	वृश्चिक	५३	२८	५	३४	१९	२३	२	२७	५४	१५	
३४	३०	११	शु.	५१	२४	विशा.	१०	४	शु.	२९	५५	व.	१९	३	३२	१५	२४	१०	वृश्चिक			५	३४	१९	२२	२	२८	५१	२८	भ. १६/०३ से ५१/२४ तक, हरिशयनी एकादशी (E)
३४	२८	१२	श.	५४	५३	अनु.	१५	५३	शु.	३०	४१	ब.	२३	८	श्रा.१	१६	२५	११	वृश्चिक			५	३५	१९	२२	२	२९	४८	४१	सं. सूर्य कर्क में ११/४०, मु. ३०, पुण्यकाल १६ घं. ३६ मि. तक,
३४	२५	१३	र.	५६	५९	ज्येष्ठा	२०	२६	ब्र.	३०	२३	कौ.	२५	५७	२	१७	२६	१२	धनु	२०	२६	५	३५	१९	२१	३	०	४५	५४	प्रदोषव्रत,
३४	२३	१४	चं.	५७	४१	मूल	२३	३७	ऐं.	२९	०	ग.	२७	२०	३	१८	२७	१३	धनु			५	३६	१९	२१	३	१	४३	७	भ. ५७/४१ बाद,
३४	२०	१५	मं.	५७	५	पू.षा.	२५	२८	वै.	२६	३२	वि.	२७	२४	४	१९	२८	१४	मकर	४०	४४	५	३६	१९	२१	३	२	४०	२१	भ. २७/२४ तक, सूर्य पुष्य में ४१/२०, बुध आश्ले. में (F)

(A) प्रारम्भ, (B)(पुष्य नक्षत्र १६ घं. ५९ मि. तक), शव्वाल मु. प्रारम्भ, (C) विवस्वत् सप्तमी, (D) ४६/२५,(E) व्रत (स.),श्रीविष्णु शयनोत्सव, (F) ३१/१२, बुध पश्चिम में उदित १६ घं. २१ मि., श्रीसत्यनारायण व्रत, गुरुपूर्णिमा (व्यास पूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रतनियमादि प्रारम्भ, श्रीशिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १२ जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	६	३	४	३	७	४	१०
२५	२५	२६	१	२४	५	१६	२१	२१
५९	३६	५६	४३	३५	३७	३०	१८	१८
४९	२३	३७	२५	१०	४१	२१	८	८
५७	७११	६	१२४	६	७३	२	३	३
१३	१२	५२	२८	२१	४४	५१	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. २	चित्रा १	विशा. ३	पुन. ४	पू.फा. ४	पुष्य १	अनु. ४	पू.फा. ३	पू.भा. १

कुण्डली सूर्योदय (१२ जुला.)

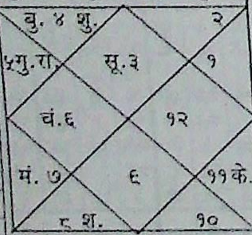

लोकभविष्य:- इस पक्ष (आषाढ़ शुक्ल) में कर्कसंक्रान्ति शनिवारी होने से देश के कुछ प्रांतों में दुर्भिक्ष की स्थिति तथा महंगाई से जनता परेशान रहे-

" आषाढ़े कर्कसंक्रान्तौ शनिवारो यदा भवेत् ।
तदा दुर्भिक्षामादेश्यं धान्यस्यापि महर्घता ।।"

इसी पक्ष में (१२ जुलाई को) शनि-मंगल फिर से वृश्चिक राशि में एकत्र हो जाते हैं। देश-विदेश में भयंकर अशान्ति/उपद्रव, दुर्घटनाएं व प्राकृतिक प्रकोप सम्भव है-"कुजदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, चान्दी, अनाजों में अच्छी मन्दी; एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर तेज रहे । १० जुलाई को जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे । ध्यान दें- लगभग ११/१२ जुलाई से १६ जुलाई तक सोना, चान्दी आदि धातु, दालवाना, चावल एवं तिलहन में जोरदार तेजी संभव है, लाभ लें। १६ जुलाई को झटके की तेजी या मन्दी बने ।

आकाशलक्षण:- ७ से १२ एवं १६ से १९ जुलाई तक उड़ीसा, आसाम, राजस्थान, उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, उत्तरप्रदेश एवम् उत्तरी भारत के कुछ अन्य क्षेत्रों तथा केन्द्रशासित राज्यों में अच्छी (व्यापक) वर्षा के योग हैं । शनि-मंगल के वृश्चिक राशि में होने से कहीं भयंकर सूखे एवम् बाढ़ से हानि के भी योग हैं ।

कुण्डली सूर्योदय(१९ जुला.)

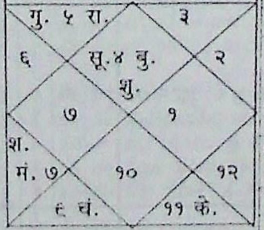

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १९ जुला.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	७	३	४	३	७	४	१०
२	२१	१	१५	२५	१४	१६	२०	२०
४०	५	२०	४०	४२	१३	१२	५५	५५
२१	१३	१५	५३	३६	५०	२	५२	५२
५७	७८४	१४	११२	१०	७३	२	३	३
१४	४९	३७	४७	०	४४	१८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुन. ४	पू.षा. ३	विशा. ४	पुष्य ४	पू.फा. ४	पुष्य ४	अनु. ४	पू.फा. २	पू.भा. १

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, श्रावण कृष्ण पक्ष ८																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२० जुलाई से २ अगस्त तक, सन् २०१६ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु । सायंकाल में बु.शु. पश्चिम-क्षितिजासन्न, गु. पश्चिम में और मं.श. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में दिखाई देंगे ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	श्रावण	जुलाई	आषाढ़	श्रावाल		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३४	१८	१	बु.	५५	२०	उ.षा.	२६	६	वि.	२३	६	बा.	२६	१२	५	२०	२९	१५	मकर			५	३७	१९	२०	३	३	३७	३५	शुक्र आश्ले. में ५८/४०,
३४	१५	२	गु.	५२	३७	श्रव.	२५	४२	प्री.	१८	४८	तै.	२३	५८	६	२१	३०	१६	कुम्भ	५५	१०	५	३८	१९	२०	३	४	३४	५०	पंचक प्रारम्भ ५५/१०, अशून्यशयन व्रत,
३४	१२	३	शु.	४९	७	धनि.	२४	२५	आ.	१३	४७	व.	२०	५२	७	२२	३१	१७	कुम्भ			५	३८	१९	१९	३	५	३२	५	भ. २०/५२ से ४६/०७ तक, सूर्य सायन सिंह में (A)
३४	९	४	श.	४४	५८	शत.	२२	२६	सौ.	८	१०	ब.	१७	२	८	२३	श्रा.१	१८	कुम्भ			५	३९	१९	१९	३	६	२९	२१	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, शक श्रावण प्रारम्भ,
३४	७	५	र.	४०	१८	पू.भा.	१९	५४	शो.	२	५	कौ.	१२	३८	९	२४	२	१९	मीन	५	३४	५	३९	१९	१८	३	७	२६	३७	गुरु उ.फा. १ में ३७/२७,
									अ.	५५	३५																			
३४	४	६	चं.	३५	१३	उ.भा.	१६	५४	सु.	४८	४६	ग.	७	४५	१०	२५	३	२०	मीन			५	४०	१९	१७	३	८	२३	५५	भ. ३५/१३ बाद,
३४	१	७	मं.	२९	४९	रेव.	१३	३३	धृ.	४१	४१	वि.	२	३१	११	२६	४	२१	मेष	१३	३३	५	४१	१९	१७	३	९	२१	१३	भ. २/३१ तक, पंचक समाप्त, १३/३३, मंगल अनु. में (B)
३३	५७	८	बु.	२४	११	अश्वि.	९	५७	शू.	३४	२७	कौ.	२४	११	१२	२७	५	२२	मेष			५	४१	१९	१६	३	१०	१८	३३	बुध मघा सिंह में ३/४५,
३३	५४	९	गु.	१८	२५	भर.	६	१२	गं.	२७	७	ग.	१८	२५	१३	२८	६	२३	वृष	२०	१४	५	४२	१९	१६	३	११	१५	५३	भ. ४५/३३ बाद,
३३	५१	१०	शु.	१२	४१	कृत्ति.	२	२६	वृ.	१९	४९	वि.	१२	४१	१४	२९	७	२४	वृष			५	४२	१९	१५	३	१२	१३	१५	भ. १२/४१ तक, यूरेनस वक्री ५२/१७,
						रोहि.	५८	४८																						
३३	४८	११	श.	७	७	मृग.	५५	३२	ध्रु.	१२	४२	बा.	७	७	१५	३०	८	२५	मिथुन	२७	५	५	४३	१९	१४	३	१३	१०	३७	कामिका एकादशी व्रत (स.),
३३	४४	१२	र.	१	५९	आर्द्रा	५२	५१	व्या.	५	५४	तै.	१	५९	१६	३१	९	२६	मिथुन			५	४४	१९	१३	३	१४	८	१	भ. ५७/२६ बाद, शुक्र मघा सिंह में ४६/२२, प्रदोषव्रत,
									ह.	५९	३९																			
अवम		१३	र.	५७	२६	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३३	४१	१४	चं.	५३	४६	पुन.	५१	१	व.	५४	६	वि.	२५	३६	१७	अ.१	१०	२७	कर्क	३६	२१	५	४४	१९	१३	३	१५	५	२६	भ. २५/३६ तक, श्रावण शिवरात्रि, अगस्त प्रारम्भ,
३३	३८	३०	मं.	५१	१३	पुष्य	५०	१७	सि.	४९	२८	च.	२२	२९	१८	२	११	२८	कर्क			५	४५	१९	१२	३	१६	२	५१	सूर्य आश्ले. में ३८/१०, भौमवती अमा, हरियाली अमा,

(A)१५ घं. ०० मि., (B) १४/३०,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २७ जुलाई,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	७	३	४	३	७	४	१०
१०	१०	३	२६	२७	२४	१५	२०	२०
१८	५२	३४	५३	४	३	५६	३०	३०
३३	०	६	४	५६	४०	२	२६	२६
५७	८५२	१६	६८	१०	७३	१	३	३
२०	५०	२१	३२	४०	४४	३६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ३	अश्वि. ४	अनु. १	आश्ले. ४	उ.फा. १	आश्ले. ३	अनु. ४	पू.फा. ३	पू.फा. १

कुण्डली सूर्योदय (२७ जुला.)

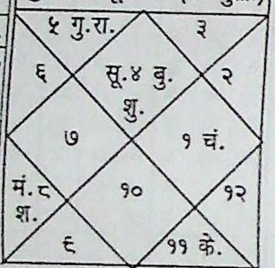

लोकभविष्यः- शनि वक्र है और शनि-मंगल वृश्चिक राशि में एकसाथ हैं । पक्षान्त में शुक्र सिंह राशि में गुरु, राहु और बुध के साथ है । कहीं युद्धमय वातावरण बने- " गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् । " शनि-मंगल का योग देश-विदेश में भयंकर अशान्ति, दुर्घटना किंवा प्राकृतिक प्रकोप से हानि करे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- २० से २६ जुलाई तक रुई, अरहर, चावल आदि में मन्दे का रुख रहे । २७ जुलाई के लगभग चान्दी, सोना, सूत, रुई, ऊनी वस्त्र तेज हों । कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रसपदार्थ मन्दे रहें । ३१ जुलाई से रुई एवम् चान्दी में कुछ मन्दी के झटके आ सकते हैं । सोना, तांबा, जौ, चना, गेहूं आदि अनाज, लालमिर्च, घी, रसादि पदार्थ एवम् तेल, तिलहन भी २ अगस्त तक तेज रहेंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (२ अग.)

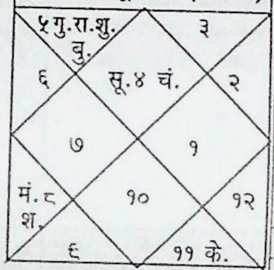

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	७	४	४	४	७	४	१०
१६	५	५	६	२८	१	१५	२०	२०
२	१४	३८	१७	१०	२६	४७	११	११
५१	११	१५	५८	०	५	४७	२१	२१
५७	८०६	२२	८७	११	७३	१	३	३
२६	५६	२६	५८	६	४५	३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पुष्य ४	पुष्य १	अनु. १	मघा ३	उ.फा. १	मघा १	अनु. ४	पू.फा. ३	पू.फा. १

आकाश लक्षणः- २०, २४, २६, २७, ३१ जुलाई एवम् २ अगस्त के लगभग राजस्थान, उड़ीसा, बंगाल, दिल्ली, चण्डीगढ़, उ.प्र., हि.प्र. एवम् उत्तरी भारत के कुछ अन्य भागों में भी अनेकत्र व्यापक वर्षा हो । कुछ प्रान्तों में भयंकर बाढ़ से हानि संभव है । कुछ प्रान्तों में सिंहस्थ शुक्र के कारण बादलचाल एवम् सूखा रहे ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, श्रावण शुक्ल पक्ष ६																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(३ से १८ अगस्त तक, सन् २०१६ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा ऋतु । सायं सूर्यास्त बाद पश्चिमक्षितिज में शु.बु.गु. क्रमशः उत्तरोत्तर ऊपर उठे होंगे । इस समय मं.श. याम्योत्तरवृत्त के पास दिखाई देंगे । ६ अग. को चं.गु. परस्पर आसन्न होंगे ।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल			प्र. श्रावण	अं. अगस्त	श. श्रावण	मु. शव्वाल				सूर्योदय		सूर्यास्त						
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.							घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३३	३४	१	बु.	५०	२	आश्ले.	५०	५४	व्य.	४५	५५	किं.	२०	३७		१९	३	१२	२९	सिंह	५०	५४	५	४५	१९	११	३	१७	०	१८	
३३	३१	२	गु.	५०	२२	मघा	५२	५९	व.	४३	३४	बा.	२०	१२		२०	४	१३	३०	सिंह			५	४६	१९	१०	३	१७	५७	४५	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पू.फा. में ४७/३७,
३३	२७	३	शु.	५२	१७	पू.फा.	५६	३८	प.	४२	२७	तै.	२१	१९		२१	५	१४	जि.१	सिंह			५	४७	१९	१०	३	१८	५५	१३	राहु पू.फा. २, केतु शत. ४ में ३३/३५, मधुस्रवा (A)
३३	२३	४	श.	५५	४३	उ.फा.	६०	०	शि.	४२	३१	व.	२४	०		२२	६	१५	२	कन्या	१२	४६	५	४७	१९	९	३	१९	५२	४२	भ. २४/०० से ५५/४३ तक,
३३	२०	५	र.	६०	०	उ.फा.	१	४४	सि.	४३	३८	ब.	२८	४		२३	७	१६	३	कन्या			५	४८	१९	८	३	२०	५०	१२	नागपंचमी,
३३	१६	५	चं.	०	२६	हस्त	८	१	सा.	४५	३२	बा.	०	२६		२४	८	१७	४	तुला	४१	३२	५	४९	१९	७	३	२१	४७	४३	श्रीकल्कि जयन्ती,
३३	१२	६	मं.	६	२	चित्रा	१५	८	शु.	४७	५१	तै.	६	२		२५	९	१८	५	तुला			५	४९	१९	६	३	२२	४५	१५	
३३	८	७	बु.	१२	२	स्वाती	२२	३४	शु.	५०	१२	व.	१२	२		२६	१०	१९	६	तुला			५	५०	१९	५	३	२३	४२	४७	भ. १२/०२ से ४४/५७ तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती,
३३	५	८	गु.	१७	५२	विशा.	२९	४३	ब्र.	५२	८	ब.	१७	५२		२७	११	२०	७	वृश्चिक	१३	०	५	५०	१९	४	३	२४	४०	२१	गुरु उ.फा. २ कन्या में ३६/०७, शुक्र पू.फा. में (B)
३३	१	९	शु.	२२	५६	अनु.	३६	४	ऐं.	५३	१८	कौ.	२२	५६		२८	१२	२१	८	वृश्चिक			५	५१	१९	३	३	२५	३७	५५	
३२	५७	१०	श.	२६	४८	ज्येष्ठा	४१	१०	वै.	५३	२४	ग.	२६	४८		२९	१३	२२	९	धनु	४१	१०	५	५२	१९	२	३	२६	३५	३०	भ. ५७/५८ बाद, शनि मार्गी २३/४३,
३२	५३	११	र.	२९	९	मूल	४४	४५	वि.	५२	१५	वि.	२९	९		३०	१४	२३	१०	धनु			५	५२	१९	१	३	२७	३३	६	भ. २९/०९ तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
३२	४९	१२	चं.	२९	५०	पू.षा.	४६	४२	प्री.	४९	४७	बा.	२९	५०		३१	१५	२४	११	धनु			५	५३	१९	०	३	२८	३०	४४	बुध उ.फा. में ४९/०७, सोम प्रदोषव्रत, भारत (C)
३२	४५	१३	मं.	२८	५२	उ.षा.	४७	३	आ.	४६	२	तै.	२८	५२		भा.१	१६	२५	१२	मकर	१	५६	५	५३	१८	५९	३	२९	२८	२२	सं. सूर्य मघा सिंह में ३१/५६, मु. ४५, पुण्यकाल (D)
३२	४१	१४	बु.	२६	२३	श्रव.	४५	५७	सौ.	४१	६	व.	२६	२३		२	१७	२६	१३	मकर			५	५४	१८	५८	४	०	२६	१	भ. २६/२३ से ५४/२८ तक, श्रीसत्यनाराण व्रत, (E)
३२	३७	१५	गु.	२२	३४	धनि.	४३	३८	शो.	३५	९	ब.	२२	३४		३	१८	२७	१४	कुम्भ	१४	५४	५	५५	१८	५७	४	१	२३	४१	पंचक प्रारम्भ १४/५४, शुक्ल-कृष्ण-यजु उपाकर्म, (F)

(A) तृतीया (सन्धारा तीज), ज़िल्काद मु. प्रारम्भ, (B) ४०/१५, श्रीदुर्गाष्टमी, (C) स्वतन्त्रता दिवस, (D) १२ घं. १६ मि. बाद, (E) ऋक् उपाकर्म, (F) रक्षाबन्धन (राखी) (अपराह्णकाल १३ घं. ४४ मि. से १४ घं. ५६ मि. तक),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), ११ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	७	४	४	४	७	४	१०
२४	२७	६	२१	२६	१२	१५	१६	१६
४०	१५	१७	२१	५२	२६	४१	४२	४२
२१	६	४१	५५	१४	३४	४५	४५	४५
५७	७१८	२६	७०	११	७३	०	३	३
३४	४	३५	२०	४०	४१	११	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
आश्ले. ३	विशा. ३	अनु. २	पू.फा. ३	उ.फा. १	मघा ४	अनु. ४	पू.फा. २	शत. ४

कुण्डली सूर्योदय (११ अग.)

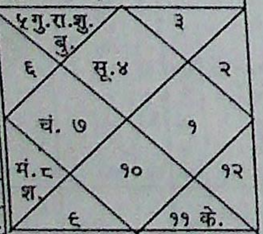

लोकभविष्य:- अगस्त-मध्य में सूर्य-शुक्र-राहु एवम् बुध एकत्र हैं। इन पर शनि की दृष्टि भी है, अतः कहीं आकालिक वर्षा, कहीं अनेक प्राकृतिक उपद्रवों से हानि हो ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में अनाजों, गुड़, खाण्ड आदि में बाज़ार ऊपर-नीचे रहे। रुई, सूत, तेल, तिलहन, दालवाना एवम् घी में तेजी रहे । ११ अगस्त के लगभग रुई, चान्दी, दालों में कुछ मन्दी होकर चावल, ज्वार, बाजरा, गेहूं, चना, मूंग, उड़द, तेल, तिलहन, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी रहे । १३ अगस्त के लगभग तेल, तिलहन, अनाजों में जोरदार तेजी या मन्दी संभव है । १५/१६ अगस्त से पक्षान्त तक उड़द, मूंग, मोठ, रुई, चान्दी, तेल, तिलहन में तेजी से लाभ मिले ।

कुण्डली सूर्योदय (१८ अग.)

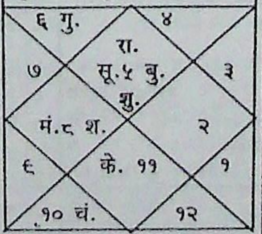

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १८ अग.,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	७	४	५	४	७	४	१०
१	२६	१२	२८	१	२१	१५	१६	१६
२३	१६	३२	४३	१५	५	४२	२०	२०
४२	३५	३	१६	०	११	२८	२६	२६
५७	८३५	२६	५२	१२	७३	०	३	३
४१	३६	१५	१६	१	३८	२६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा १	धनि. १	अनु. ३	उ.फा. १	उ.फा. २	पू.फा. ३	अनु. ४	पू.फा. २	शत. ४

आकाश लक्षण:- ३, ४, ५ एवम् ११ से १६ अगस्त तक कहीं बाढ़ से हानि हो;-" गुरु-शुक्रौ यदैकस्थौ कुरुत एकार्णवां महीम् ।" कहीं बादलचाल एवम् खण्डवृष्टि हो । उत्तरी भारत, नेपाल, दार्जीलिंग, उ.प्र., हिमाचल प्रदेश में कहीं भारी वर्षा हो । कहीं आकाशीय बिजली से हानि भी संभव है ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, भाद्रपद कृष्ण पक्ष १०															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(१६ अगस्त से १ सितम्बर तक, सन् २०१६ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, वर्षा–शरद ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र.	अं.	श.	मु.				सूर्योदय		सूर्यास्त						सायं शु.गु.बु. पश्चिम-क्षितिजासन्न होंगे । इस समय मं.श. को याम्योत्तरवृत्त में देखिए । २८ अग. को गु. शु. परस्पर परमासन्न और इनके नज़दीक ही बु. भी देखा जा सकता है ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	भाद्रपद	अगस्त	श्रावण	जिलहिज		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३२	३२	१	शु.	१७	४२	शत.	४०	२१	अ.	२८	२३	कौ.	१७	४२	४	१९	२८	१५	कुम्भ			५	५५	१८	५६	४	२	२१	२३	बुध कन्या में २८/४५,
३२	२८	२	श.	१२	३	पू.भा.	३६	२४	सु.	२१	०	ग.	१२	३	५	२०	२९	१६	मीन	२२	२४	५	५६	१८	५५	४	३	१९	६	भ. ३८/५८ बाद, कज्जली तृतीया (देखें पृ. 13),
३२	२४	३	र.	५	५३	उ.भा.	३२	२	धृ.	१३	१४	वि.	५	५३	६	२१	३०	१७	मीन			५	५६	१८	५४	४	४	१६	५१	भ. ५/५३ तक, बहुला चतुर्थी, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत(A)
अवम		४	र.	५९	२८	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
३२	२०	५	चं.	५३	०	रेव.	२७	३१	शू. ग.	५ ५७	१६ २०	कौ.	२६	१४	७	२२	३१	१८	मेष	२७	३१	५	५७	१८	५३	४	५	१४	३७	पंचक समाप्त २७/३१, शुक्र उ.फा. में ३१/४५, सूर्य (B)
३२	१६	६	मं.	४६	४३	अश्वि.	२३	७	वृ.	४९	३१	ग.	१९	५१	८	२३	भा.१	१९	मेष			५	५८	१८	५२	४	६	१२	२५	भ. ४६/४३ बाद, शक भाद्रपद प्रारम्भ,
३२	११	७	बु.	४०	४७	भर.	१८	५८	ध्रु.	४२	०	वि.	१३	४६	९	२४	२	२०	वृष	३३	०	५	५८	१८	५१	४	७	१०	१५	भ.१३/४६ तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमीव्रत(स्मार्त)(देखें पृ. 14 (C)
३२	७	८	गु.	३५	२२	कृत्ति.	१५	१६	व्या.	३४	५५	बा.	८	४	१०	२५	३	२१	वृष			५	५९	१८	५०	४	८	८	६	शुक्र कन्या में १४/४४, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव) (D)
३२	३	९	शु.	३०	३५	रोहि.	१२	१०	ह.	२८	२०	तै.	२	५९	११	२६	४	२२	मिथुन	४०	५३	५	५९	१८	४८	४	९	६	०	भ. ५८/३४ बाद, मंगल ज्ये. में ७/१६, गोकुलाष्टमी (E)
३१	५९	१०	श.	२६	३३	मृग.	९	४७	व.	२२	२२	वि.	२६	३३	१२	२७	५	२३	मिथुन			६	०	१८	४७	४	१०	३	५५	भ. २६/३३ तक,
३१	५४	११	र.	२३	२४	आर्द्रा	८	१३	सि.	१७	५	बा.	२३	२४	१३	२८	६	२४	कर्क	५२	४०	६	०	१८	४६	४	११	१	५२	गुरु उ.फा. ३ में १२/०७, अजा एकादशी व्रत (स.),
३१	५०	१२	चं.	२१	११	पुन.	७	३४	व्य.	१२	३४	तै.	२१	११	१४	२९	७	२५	कर्क			६	१	१८	४५	४	११	५९	५०	वक्री नेप्च्यून शत. ३ में १/१३, सोमप्रदोष व्रत,
३१	४५	१३	मं.	२०	३	पुष्य	७	५७	व.	८	५३	व.	२०	३	१५	३०	८	२६	कर्क			६	२	१८	४४	४	१२	५७	५१	भ. २०/०३ से ५०/०३ तक, सूर्य पू.फा. में २१/३४, (F)
३१	४१	१४	बु.	२०	२	आश्ले.	९	२६	प.	६	५	श.	२०	२	१६	३१	९	२७	सिंह	९	२६	६	२	१८	४३	४	१३	५५	५३	वक्री यूरेनस रेव. ४ में ५८/४०,
३१	३७	३०	गु.	२१	१५	मघा	१२	४	शि.	४	१३	ना.	२१	१५	१७	सि.१	१०	२८	सिंह			६	३	१८	४१	४	१४	५३	५७	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठौरी अमा, सितम्बर प्रारम्भ,

(A)(चन्द्रोदय देखें पृ. 11), (B) सायन कन्या में २२ घं. ०६ मि., शरद् ऋतु प्रारम्भ, (C) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11),(D) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (E) (नन्दोत्सव), श्रीगुग्गानवमी,(F) बुध वक्री ३१/१७, पर्युषणपर्व प्रारम्भ (जैन),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), २५ अगस्त,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	७	५	५	४	७	४	१०
८	६	१६	३	२	२९	१५	१८	१८
८	६	३	३६	४०	४०	४७	५८	५८
७	४८	५५	५५	७	२५	५५	१४	१४
५७	८४५	३१	२६	१२	७३	१	३	३
५३	४५	३४	१०	२०	३५	१०	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
मघा ३	कृत्ति. ३	अनु. ४	उ.फा. ३	उ.फा. २	उ.फा. १	अनु. ४	पू.फा. २	शत. ४

कुण्डली सूर्योदय (२५ अग.)

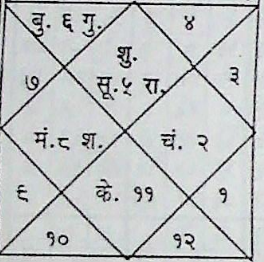

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार हैं । शुक्र-गुरु का एक राशि में होना कहीं बाढ़ आदि से हानि करे, कहीं उत्तराखण्ड आदि एवम् अन्यत्र भी प्राकृतिक आपदा से हानि हो ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- १६ से २८ अगस्त तक गेहूं, जौ, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, सोना, चान्दी, तेल, तिलहन में अच्छी तेजी बनेगी । बीच में कुछ मन्दी भी संभव है । तुरन्त लाभ लेते रहें । ३० अगस्त को घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, जीरा, सोना, तेल, तिलहन में तेजी बने। अनाज एवं चान्दी में घटाबढ़ी रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (१ सितं.)

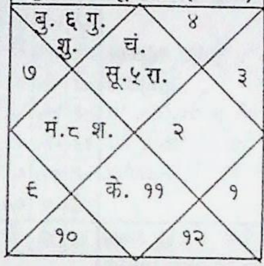

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	७	५	५	५	७	४	१०
१४	१०	१९	४	४	८	१५	१८	१८
५३	२९	५१	५३	७	१५	५८	३५	३५
५७	४१	१२	३	१३	१८	५	५६	५६
५८	७५४	३३	११	१२	७३	१	३	३
६	५४	३७	४८	३५	३१	५०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.फा. १	मघा ४	ज्ये. १	उ.फा. ३	उ.फा. ३	उ.फा. ४	अनु. ४	पू.फा. २	शत. ४

आकाशलक्षणः- १६, २२, २४ से २८ एवं लगभग ३० अगस्त को पंजाब, हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, दिल्ली, उ.प्र., महाराष्ट्र में वायुवेग के साथ जोरदार वर्षा हो । कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि के भी योग हैं ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, भाद्रपद शुक्ल पक्ष ११																तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(२ से १६ सितम्बर तक, सन् २०१६ ई.) दक्षिणायन, उत्तरगोल, शरद ऋतु।
दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		प्र. भाद्रपद	अं. सितंबर	श. भाद्रपद	मु. जिल्काद				सूर्योदय		सूर्यास्त						६ सितं. को बु. और ९ सितं. को गु. पश्चिम में अस्त हो जाएगा । सायं शु. पश्चिमक्षितिज में और श.मं. याम्योत्तरवृत्त के पास होंगे ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
३१	३२	१	शु.	२३	४२	पू.फा.	१५	५५	सि.	३	२१	ब.	२३	४२	१८	२	११	२९	कन्या	३२	५	६	३	१८	४०	४	१५	५२	२	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, शुक्र हस्त में २४/०५,
३१	२८	२	श.	२७	२१	उ.फा.	२०	५७	सा.	३	२४	कौ.	२७	२१	१९	३	१२	जि.१	कन्या			६	४	१८	३९	४	१६	५०	९	अगस्त्य उदित, मेला डेरा बाबा गोसाईं आणा(कुराली)पं., (A)
३१	२३	३	र.	३२	५	हस्त	२७	२	शु.	४	१७	ग.	३२	५	२०	४	१३	२	कन्या			६	४	१८	३८	४	१७	४८	१८	साम उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, हरितालिका(B)
३१	१९	४	चं.	३७	४०	चित्रा	३३	५६	शु.	५	५६	व.	४	५२	२१	५	१४	३	तुला	०	२४	६	५	१८	३६	४	१८	४६	२९	भ.४/५२ से ३७/४० तक, सिद्धिविनायक व्रत, कलंक (C)
३१	१४	५	मं.	४३	४५	स्वाती	४१	२०	ब्र.	८	६	ब.	१०	४२	२२	६	१५	४	तुला			६	६	१८	३५	४	१९	४४	४१	बुध पश्चिम में अस्त १८ घं. ३५ मि., गुरु वार्धक्य (D)
३१	१०	६	बु.	४९	५२	विशा.	४८	४७	ऐं.	१०	२८	कौ.	१६	४८	२३	७	१६	५	वृश्चिक	३१	५८	६	६	१८	३४	४	२०	४२	५४	सूर्यषष्ठी व्रत,
३१	५	७	गु.	५५	३०	अनु.	५५	४७	वै.	१२	४३	ग.	२२	४१	२४	८	१७	६	वृश्चिक			६	७	१८	३३	४	२१	४१	९	भ. ५५/३० बाद, मुक्ताभरण सप्तमी व्रत (संतान सप्तमी व्रत),
३१	१	८	शु.	६०	०	ज्येष्ठा	६०	०	वि.	१४	२८	वि.	२७	४९	२५	९	१८	७	वृश्चिक			६	७	१८	३१	४	२२	३९	२६	भ. २७/४९ तक, वक्री बुध सिंह में २९/१०,(E)
३०	५६	८	श.	०	९	ज्येष्ठा	१	५०	प्री.	१५	२१	ब.	०	९	२६	१०	१९	८	धनु	१	५०	६	८	१८	३०	४	२३	३७	४४	गुरु अस्त ९ सितंबर
३०	५२	९	र.	३	२३	मूल	६	२९	आ.	१५	४	कौ.	३	२३	२७	११	२०	९	धनु			६	८	१८	२९	४	२४	३६	३	बाबा श्रीचन्दनवमी (उदासीन सम्प्रदाय महोत्सव),
३०	४७	१०	चं.	४	५१	पू.षा.	९	२७	सौ.	१३	२४	ग.	४	५१	२८	१२	२१	१०	मकर	२४	५६	६	९	१८	२८	४	२५	३४	२४	भ. ३४/३९ बाद, वक्री बुध पू.फा. में ४९/३७, गुरु (F)
३०	४२	११	मं.	४	२८	उ.षा.	१०	३५	शो.	१०	१५	वि.	४	२८	२९	१३	२२	११	मकर			६	९	१८	२६	४	२६	३२	४७	भ. ४/२८ तक, सूर्य उ.फा. में ५/४७, शुक्र चित्रा में (G)
३०	३८	१२	बु.	२	१३	श्रव.	९	५३	अ. सु.	५ ५९	३७ ३६	बा.	२	१३	३०	१४	२३	१२	कुम्भ	३८	५३	६	१०	१८	२५	४	२७	३१	११	पंचक प्रारम्भ ३८/५३, प्रदोषव्रत,
अवम		१३	बु.	५८	१२	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथिक्षय,
३०	३३	१४	गु.	५२	४२	धनि.	७	२८	धृ.	५२	२१	ग.	२५	२७	३१	१५	२४	१३	कुम्भ			६	११	१८	२४	४	२८	२९	३७	भ. ५२/४२ बाद, श्रीअनन्त चतुर्दशी व्रत,
३०	२९	१५	शु.	४५	५९	शत. पू.भा.	३ ५८	३७ ४०	शू.	४४	७	वि.	१९	२१	आ.१	१६	२५	१४	मीन	४४	५८	६	११	१८	२३	४	२९	२८	५	भ. १९/२१ तक, सं. सूर्य कन्या में ३१/००, मु. ३०, (H)

(A) जिल्हिज मु. प्रारम्भ, (B) तृतीया, (C) चतुर्थी(चन्द्रदर्शन निषिद्ध)(चन्द्रास्त २१ घं. ०४ मि.), हरितालिका चतुर्थी, (D)प्रारम्भ १८ घं. ३१ मि., ऋषिपंचमी, संवत्सरी महापर्व (जैन), (E) गुरु अस्त १८ घं. ३१ मि., राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (F) उ.फा. ४ में ५८/४६, (G) १७/२७, पद्मा एकादशी व्रत(स.), श्रीवामन जयन्ती, श्रवणद्वादशी, (H) पुण्यकाल १२ घं. ११ मि. बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, महालय प्रारम्भ (देखें पृ. 275), पूर्णिमा श्राद्ध,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १० सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २३ २७ ४४	७ २९ १८ ३३	७ २५ ३ १९	४ २९ ३२ ३०	५ ६ १ २६	५ १९ १६ ३३	७ १६ १७ ५६	४ १८ ७ २३	१० १८ ७ २३
५८ २०	७४० २३	३५ ४५	५९ १४	१२ ४९	७३ २४	२ ४०	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली सूर्योदय (१० सितं.)

लोकभविष्यः- इस पक्ष में छट को अनुराधा नक्षत्र है। वर्षा का अभाव रहेगा । शनि-मंगल का योग कहीं यानदुर्घटना एवं सरहदी इलाकों में अशान्ति करे;-

"युद्धदौ शनि-माहेयौ तथा दुर्भिक्षकारकौ ।"

ग्रहचाल और बाजार का रुखः- पक्षारम्भ में सोना, चान्दी, रुई, सूत, वस्त्र तेज हों । गुड़, खाण्ड में भी कुछ तेजी बने । ९ सितंबर के लगभग रुई में झटके की मन्दी का योग है। चान्दी तेज; पाट-हैसियन एवं शेयर मन्दे हों। ९ सितं. के लगभग सोना, चान्दी , रुई, ऊनी वस्त्र तेज रहें । कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर के बाजार नर्म रहें ।१२ से १६ सितं. तक रुई, शेयर तेज एवम् सोने-चान्दी में मन्दे का झटका आकर तेल, तिलहन, घी, धातुएं, दालवाना, तिलहन एवं अन्य सभी वायदा बाजार तेज रहें ।

आकाशलक्षण :- २, ६, ९, १२, १३, १४ एवं १६ सितंबर को नेपाल, दार्जीलिंग, विन्ध्यप्रदेश, हि.प्र. एवम् उ.प्र. के कुछ भागों में बादलचाल व खण्डवृष्टि हो । उत्तरी भारत में मौसम साफ रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (१६ सितं.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.), १६ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४ २९ २८ ६	१० १८ ४३ १०	७ २८ ४२ ४	४ २३ ३९ ९	५ ७ १८ ३२	५ २६ ३६ ४१	७ १६ ३५ १४	४ १७ ४८ १८	१० १७ ४८ १८
५८ ३०	८७१ १६	३७ ११	४८ ३४	१२ ५४	७३ १७	३ ११	३ ११	३ ११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, आश्विन कृष्ण पक्ष १२

(१७ से ३० सितं. तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिणायन, उत्तर–दक्षिणगोल, शरद ऋतु।

गु. अस्त है । बु. २१ सितं. से प्रातः पूर्व में दृश्य हो जाएगा । सायं शु. पश्चिमक्षितिज में, श. पश्चिमकपाल में और मं. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. आश्विन	तारीखें अं. सितंबर	तारीखें श. भाद्रपद	तारीखें मु. जिल्हिज्ज	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
३०	२४	१	श.	३८	२६	उ.भा.	५२	५५	गं.	३५	१०	बा.	१२	१३	२	१७	२६	१५	मीन			६	१२	१८	२१	५	०	२६	३५	शनि ज्ये. १ में २७/३२, पितृपक्ष प्रारम्भ, (A)
३०	१९	२	र.	३०	२३	रेव.	४६	४७	वृ.	२५	४७	तै.	४	२४	३	१८	२७	१६	मेष	४६	४७	६	१२	१८	२०	५	१	२५	६	भ. ५६/१८ बाद, पंचक समाप्त ४६/४७, मंगल मूल (B)
३०	१५	३	चं.	२२	१४	अश्वि.	४०	३९	ध्रु.	१६	१७	वि.	२२	१४	४	१९	२८	१७	मेष			६	१३	१८	१९	५	२	२३	४०	भ. २२/१४ तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, तृतीया श्राद्ध, (C)
३०	१०	४	मं.	१४	२०	भर.	३४	५२	व्या. ह.	६ ५८	५७ ४	बा.	१४	२०	५	२०	२९	१८	वृष	४८	३१	६	१३	१८	१७	५	३	२२	१५	पंचमी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध,
३०	६	५	बु.	७	०	कृत्ति.	२९	४८	व.	४९	५१	तै.	७	०	६	२१	३०	१९	वृष			६	१४	१८	१६	५	४	२०	५३	बुध पूर्व में उदित ६ घं. १४ मि., षष्ठी श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत,
३०	१	६	गु.	०	३३	रोहि.	२५	४१	सि.	४२	२९	व.	०	३३	७	२२	३१	२०	मिथुन	५४	५	६	१५	१८	१५	५	५	१९	३३	भ. ०/३३ से २७/५२ तक, बुध मार्गी ११/५५, सूर्य (D)
अवम		७	गु.	५५	११	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२९	५६	८	शु.	५१	४	मृग.	२२	४५	व्य.	३६	६	बा.	२३	७	८	२३	आ. १	२१	मिथुन			६	१५	१८	१४	५	६	१८	१५	अष्टमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त, शक आश्विन प्रारम्भ,
२९	५२	९	श.	४८	१९	आर्द्रा	२१	८	व.	३०	४९	तै.	१९	४१	९	२४	२	२२	मिथुन			६	१६	१८	१२	५	७	१७	०	शुक्र स्वाती में १२/२२, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध,
२९	४७	१०	र.	४६	५६	पुन.	२०	५१	प.	२६	३७	व.	१७	३७	१०	२५	३	२३	कर्क	५	४७	६	१६	१८	११	५	८	१५	४७	भ. १७/३७ से ४६/५६ तक, दशमी श्राद्ध,
२९	४३	११	चं.	४६	५५	पुष्य	२१	५५	शि.	२३	३०	ब.	१६	५५	११	२६	४	२४	कर्क			६	१७	१८	१०	५	९	१४	३६	सूर्य हस्त में ४४/२०, प्लूटो मार्गी ३५/३०, इन्दिरा (E)
२९	३८	१२	मं.	४८	१०	आश्ले.	२४	१६	सि.	२१	२४	कौ.	१७	३२	१२	२७	५	२५	सिंह	२४	१६	६	१७	१८	९	५	१०	१३	२७	द्वादशी श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध,
२९	३३	१३	बु.	५०	३५	मघा	२७	४६	सा.	२०	१४	ग.	१९	२३	१३	२८	६	२६	सिंह			६	१८	१८	७	५	११	१२	२१	भ. ५०/३५ बाद, गुरु हस्त १ में २६/०७, प्रदोषव्रत, (F)
२९	२९	१४	गु.	५४	२	पू.फा.	३२	१९	शु.	१९	५४	वि.	२२	१८	१४	२९	७	२७	कन्या	४८	३७	६	१९	१८	६	५	१२	११	१६	भ. २२/१८ तक, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों)(G)
२९	२४	३०	शु.	५८	२४	उ.फा.	३७	४८	शु.	२०	२०	च.	२६	१३	१५	३०	८	२८	कन्या			६	१९	१८	५	५	१३	१०	१४	सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस एवम् अज्ञात मृत्युतिथि (H)

(A) प्रतिपदा श्राद्ध, (B) धनु में ३/३७,शुक्र तुला में ४४/४२, द्वितीया श्राद्ध, (C) चतुर्थी श्राद्ध, (D) सायन तुला में १९ घं. ५१ मि., विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ, सप्तमी श्राद्ध, (E) एकादशी व्रत(स.), एकादशी श्राद्ध, (F) त्रयोदशी श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (G) का श्राद्ध, (H) वालों का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय/पितृपक्ष समाप्त,

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
२३ सितंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	८	४	५	६	७	४	१०
६	०	३	२०	८	५	१६	१७	१७
१८	५६	६	४६	४९	९	५९	२६	२६
१६	५१	२६	५६	४	२४	१७	३	३
५८	८२६	३८	१२	१२	७३	३	३	३
४५	४५	३१	३५	५८	११	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.फा. ३	मृग. ३	मूल १	पू.फा. ३	उ.फा. ४	चित्रा ४	ज्ये. १	पू.फा. २	शत. ४

कुण्डली सूर्योदय (२३ सितं.)

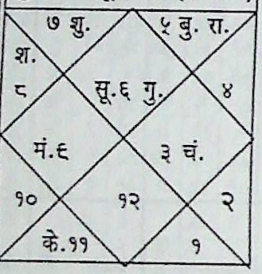

लोकभविष्यः- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार हैं । मंगल धनु में और वृश्चिकस्थ शनि मार्गी है । अतः राजनीतिज्ञों में परस्पर मतभेद बढ़ें । कहीं उग्रवाद व अग्निकाण्ड से जनधनहानि भी हो -

"शनेश्च पंचकं दृष्ट्वा पाताले कम्पते फणीः ।
ईशानदेशभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से १९ सितंबर तक चावल, चना, जौ, मूंग आदि अनाज एवम् सोना, चान्दी, रुई, बिनौला, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे । २० से २३ सितं. तक रुई, गुड़, खाण्ड, घी, चना, तेल, अलसी, एरण्ड, बिनौला, मूंगफली आदि में जल्दी मन्दी बनेगी । २४ से २७ सितंबर तक अनाज, गुड़, खाण्ड, कपास, रुई, हींग, धनिया, हल्दी, नमक में तेजी के योग हैं । आगे अचानक मन्दा संभव है ।

आकाशलक्षणः- १७, १८, २०, २१, २२, २४, २६, २८ सितंबर के लगभग की ग्रहस्थिति के अनुसार भारत के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में कहीं बादलचाल व खण्डवृष्टि हो । शनि-मंगल-सूर्य की स्थिति के अनुसार कहीं प्राकृतिक उत्पात संभव है । ऋतु-परिवर्तन अनुभव होगा ।

कुण्डली सूर्योदय (३० सितं.)

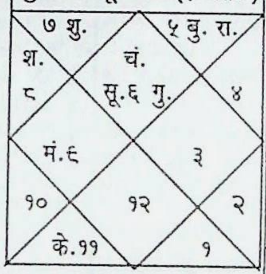

ग्रहस्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
३० सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	८	४	५	६	७	४	१०
१३	१	७	२५	१०	१३	१७	१७	१७
१०	५४	३९	२५	१९	४१	२७	३	३
१५	३२	४१	३८	५२	२३	१९	४८	४८
५९	७३०	३९	७१	१२	७३	४	३	३
०	३५	४२	४	५८	५	१९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	अ.	उ.	उ.	अ.	अ.
हस्त १	उ.फा. २	मूल ३	पू.फा. ४	हस्त १	स्वा. ३	ज्ये. १	पू.फा. २	शत. ४

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, आश्विन शुक्ल पक्ष १३

(१ से १६ अक्तूबर तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद् ऋतु ।

गु. ७ अक्तू. को पूर्व में उदित होगा । बु. ९ अक्तू. को पूर्व में लुप्त हो जाएगा । सायं शु. पश्चिम में, श. पश्चिमकपाल में और मं. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा । ४ अक्तू. को चं.शु. परस्पर काफी आसन्न दीखेंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र. आश्विन	अ. अक्तू.	श. आश्विन	मु. ज़िलहिज्ज	चन्द्रराशि प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.						घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२९	१९	१	श.	६०	०	हस्त	४४	४	ब्र.	२१	२५	किं.	३०	५८	१६	अ.१	९	२९	कन्या			६	२०	१८	४	५	१४	९	१४	बुध उ.फा. में ०/३०, शारद नवरात्र प्रारम्भ, नाना-(A)
२९	१५	१	र.	३	३२	चित्रा	५०	५८	ऐं.	२३	२	ब.	३	३२	१७	२	१०	३०	तुला	१७	२६	६	२०	१८	२	५	१५	८	१६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०,
२९	१०	२	चं.	९	१९	स्वाती	५८	१९	वै.	२५	५	कौ.	९	१९	१८	३	११	मु.१	तुला			६	२१	१८	१	५	१६	७	२०	बुध कन्या में २८/३७, मुहर्रम (हिजरी सन् १४३८)मु. प्रारम्भ,
२९	६	३	मं.	१५	३०	विशा.	६०	०	वि.	२७	२३	ग.	१५	३०	१९	४	१२	२	वृश्चिक	४८	५९	६	२२	१८	०	५	१७	६	२६	भ. ४८/३९ बाद,
२९	१	४	बु.	२१	४८	विशा.	५	५०	प्री.	२९	४३	वि.	२१	४८	२०	५	१३	३	वृश्चिक			६	२२	१७	५९	५	१८	५	३३	भ. २१/४८ तक, शुक्र विशा. में ८/५०, (B)
२८	५६	५	गु.	२७	५२	अनु.	१३	१३	आ.	३१	५०	बा.	२७	५२	२१	६	१४	४	वृश्चिक			६	२३	१७	५७	५	१९	४	४३	गुरु उदित ७ अक्तूबर
२८	५२	६	शु.	३३	१४	ज्येष्ठा	२०	४	सौ.	३३	२४	कौ.	०	३३	२२	७	१५	५	धनु	२०	४	६	२४	१७	५६	५	२०	३	५५	राहु पू.फा. १ केतु शत.३ में २७/०७, गुरु उदित ६घं. २४मि.
२८	४७	७	श.	३७	३०	मूल	२५	५५	शो.	३४	८	ग.	५	२२	२३	८	१६	६	धनु			६	२४	१७	५५	५	२१	३	८	भ. ३७/३० बाद, मंगल पू.षा. में २४/४०, (C)
२८	४३	८	र.	४०	१५	पू.षा.	३०	२२	अ.	३३	४३	वि.	८	५२	२४	९	१७	७	मकर	४६	१५	६	२५	१७	५४	५	२२	२	२३	भ. ८/५२ तक, बुध हस्त में ४४/१७, बुध पूर्व में अस्त(D)
२८	३८	९	चं.	४१	१०	उ.षा.	३३	६	सु.	३१	५४	बा.	१०	४२	२५	१०	१८	८	मकर			६	२५	१७	५३	५	२३	१	४०	सूर्य चित्रा में १६/१५, गुरु बाल्य समाप्त ६ घं. २४ मि., (E)
२८	३४	१०	मं.	४०	५	श्रव.	३३	५३	धृ.	२८	३२	तै.	१०	३७	२६	११	१९	९	मकर			६	२६	१७	५२	५	२४	०	५८	नवरात्रपारणा, विजयादशमी (दशहरा), आयुधपूजा, अपराजिता (F)
२८	२९	११	बु.	३६	५९	धनि.	२२	४२	शू.	२३	३४	व.	८	३३	२७	१२	२०	१०	कुम्भ	३	३१	६	२७	१७	५०	५	२५	०	१८	भ. ८/३३ से ३६/५९ तक, पंचक प्रारम्भ ३/३१, पापांकुशा(G)
२८	२४	१२	गु.	३१	५९	शत.	२९	३७	गं.	१७	२	ब.	४	३०	२८	१३	२१	११	कुम्भ			६	२७	१७	४९	५	२५	५९	४०	गुरु हस्त २ में ५५/२०, शुक्र वृश्चिक में २२/३२, प्रदोषव्रत,
२८	२०	१३	शु.	२५	२०	पू.भा.	२४	५३	वृ.	९	६	तै.	२५	२०	२९	१४	२२	१२	मीन	११	११	६	२८	१७	४८	५	२६	५९	४	
२८	१५	१४	श.	१७	२२	उ.भा.	१८	४९	घृ. / व्या.	० / ५०	१ / २	व.	१७	२२	३०	१५	२३	१३	मीन			६	२९	१७	४७	५	२७	५८	३०	भ. १७/२२ से ४२/५५ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोजागर(H)
२८	११	१५	र.	८	२८	रेव.	११	५१	ह.	३९	३१	ब.	८	२८	३१	१६	२४	१४	मेष	११	५१	६	२९	१७	४६	५	२८	५७	५८	पंचक समाप्त ११/५१, शुक्र अनु. में ७/२५, कार्तिकस्नान प्रारम्भ,(I)

(A)नानी का महालय श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, अक्तूबर प्रारम्भ,(B) उपांगललिताव्रत (देखें पृ. 14), (C)सरस्वती आवाहन(देखें पृ. 15), (D) ६ घं. २५ मि., सरस्वती पूजन(देखें पृ. 15), श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, (E) सरस्वती के लिए बलिदान/सरस्वती विसर्जन(देखें पृ. 15), महानवमी(उपवास, पूजा एवम् बलिदान के लिए), नवरात्र समाप्त, (F) पूजन, सीमोल्लंघन, श्रीमाध्वाचार्य जयन्ती, (G)एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप, (H) व्रत, शरत्पूर्णिमा, (I) श्रीवाल्मीकि जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
९ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	८	५	५	६	७	४	१०
२२	१९	१३	८	१२	२४	१८	१६	१६
२	५२	४२	४१	१६	३८	८	३५	३५
२४	२३	३४	६	१८	२३	४५	१२	१२
५९	७५२	४१	१०१	१२	७२	४	३	३
१७	४२	२	३६	५२	५४	५७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
४ हस्त	२ पू.षा.	१ पू.षा.	४ उ.फा.	१ हस्त	२ विशा.	१ ज्ये.	१ पू.फा.	३ शत.

कुण्डली सूर्योदय(९ अक्तू.)

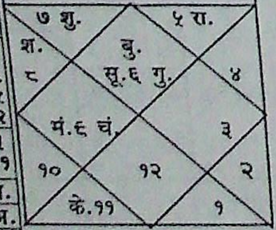

लोकभविष्यः- आश्विन-प्रतिपदा को शनिवार होने से धान का संग्रह न करें, क्योंकि हानिमय है । इस पक्ष के अन्त में शुक्र-शनि दोनों वृश्चिक राशि में संचार करते हैं । कहीं पाक आदि से सीमाप्रान्तों पर युद्धमय स्थिति का भय है -

" शनि-शुक्रौ यदैकस्थौ नरयुद्धं तदा भवेत् ।
अकाले व भवेत् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ से ७ अक्तूबर तक उड़द, मूंग, मोठ, मसूर, अरहर, तेल, घी, सरसों, मूंगफली, गुड़, खाण्ड, रुई में तेजी का माहौल रहे । ९ से १३ अक्तू. तक रुई, सूत, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड, गेहूं, चना, तिल, नारियल, केसर, कपूर, दालवाना, शेयर तेज रहें । १४ अक्तूबर के लगभग बाजारों में मन्दे का झटका आकर १६ अक्तू. को गेहूं, चना, अलसी, सोना, तांबा, चन्दन, मजीठ, सुपारी आदि कुछ तेज रहें ।

आकाशलक्षणः- ३, ५, ७, ९, १०, १३, १५ एवम् १६ अक्तूबर को हि.प्र., जम्मू-काश्मीर, उत्तराखण्ड, आसाम, उड़ीसा के कुछ क्षेत्रों में वायुवेग के साथ वर्षा हो । हिमाचल, जम्मू-काश्मीर के कुछ क्षेत्रों में हिमपात भी संभव है ।

कुण्डली सूर्योदय (१६ अक्तू.)

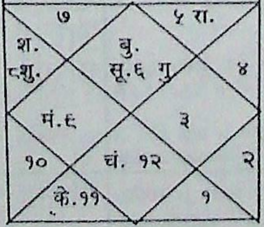

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.)
१६ अक्तूबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	८	५	५	७	७	४	१०
२८	२६	१८	२०	१३	३	१८	१६	१६
५७	२२	३२	४५	४६	८	४४	१२	१२
५९	५५	२१	१२	१	२	४६	५७	५७
५९	९११	४१	१०४	१२	७२	५	३	३
३०	३७	५२	४	४४	४२	२४	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
२ चित्रा	३ रेवती	२ पू.षा.	४ हस्त	२ हस्त	४ विशा.	१ ज्ये.	१ पू.फा.	३ शत.

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, कार्तिक कृष्ण पक्ष १४

(१७ से ३० अक्तूबर तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, शरद्-हेमन्त ऋतु ।

बु. अस्त है । प्रातः गु. पूर्वक्षितिज में उदय होता दीखेगा । सायं शु.श. पश्चिम में और मं. पश्चिम-कपाल में होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	प.	योग	समाप्ति-काल घ.	प.	करण	समाप्ति-काल घ.	प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तू.	श. आश्विन	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
अवम		१	र.	५९	८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,
२८	६	२	च.	४९	४३	अश्वि. भर	४ ५७	२५ १	व.	२८	४८	तै.	२४	२५	का.१	१७	२५	१५	मेष			६	३०	१७	४५	५	२९	५७	२८	सं. सूर्य तुला में ०/०३, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न तक, (A)
२८	२	३	मं.	४०	४२	कृत्ति.	५०	३	सि.	१८	१७	व.	१५	१२	२	१८	२६	१६	वृष	१०	१०	६	३१	१७	४४	६	०	५७	०	म. १५/१२ से ४०/४२ तक,
२७	५८	४	बु.	३२	३२	रोहि.	४४	०	व्य. व.	८ ५९	१८ १२	ब.	६	३७	३	१९	२७	१७	वृष			६	३२	१७	४३	६	१	५६	३४	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, करकचतुर्थी (B) — तुला संक्रान्ति का वार– देखें पृ.
२७	५३	५	गु.	२५	३५	मृग.	३९	१५	प.	५१	१३	तै.	२५	३५	४	२०	२८	१८	मिथुन	११	२५	६	३२	१७	४२	६	२	५६	१०	
२७	४९	६	शु.	२०	१०	आर्द्रा	३६	५	शि.	४४	३४	व.	२०	१०	५	२१	२९	१९	मिथुन			६	३३	१७	४०	६	३	५५	४८	भ. २०/१० से ४८/२० तक, बुध तुला में १९/२७,
२७	४४	७	श.	१६	३१	पुन.	३४	४२	सि.	३९	२२	ब.	१६	३१	६	२२	३०	२०	कर्क	१९	५३	६	३४	१७	३९	६	४	५५	२९	अहोई अष्टमी (पंजाब-हरियाणा),
२७	४०	८	र.	१४	४४	पुष्य	३५	९	सा.	३५	३९	कौ.	१४	४४	७	२३	का.१	२१	कर्क			६	३४	१७	३८	६	५	५५	१२	सूर्य स्वाती में ४२/१७, सूर्य सायन वृश्चिक में २९ घं. १५ मि.,(C)
२७	३६	९	च.	१४	४७	आश्ले.	३७	२२	शु.	३३	२०	ग.	१४	४७	८	२४	२	२२	सिंह	३७	२२	६	३५	१७	३७	६	६	५४	५७	म. ४५/३९ बाद,
२७	३१	१०	मं.	१६	३२	मघा	४१	६	शु.	३२	१६	वि.	१६	३२	९	२५	३	२३	सिंह			६	३६	१७	३६	६	७	५४	४५	म. १६/३२ तक, बुध स्वा. में १६/२२,
२७	२७	११	बु	१९	४३	पू.फा.	४६	७	ब्र.	३२	१५	बा.	१९	४३	१०	२६	४	२४	सिंह			६	३७	१७	३६	६	८	५४	३५	रमा एकादशी व्रत(स.), गोवत्स द्वादशी,
२७	२३	१२	गु.	२४	४	उ.फा.	५२	८	ऐं.	३३	२	तै.	२४	०४	११	२७	५	२५	कन्या	२	३१	६	३७	१७	३५	६	९	५४	२७	मंगल उ.षा. में २७/०७, शुक्र ज्ये. में ८/३७,
२७	१९	१३	शु.	२९	१६	हस्त	५८	४९	वै.	३४	२६	व.	२९	१६	१२	२८	६	२६	कन्या			६	३८	१७	३४	६	१०	५४	२१	म. २९/१६ बाद, प्रदोषव्रत, धनत्रयोदशी, यमप्रीत्यर्थ (D)
२७	१४	१४	श.	३५	२	चित्रा	६०	०	वि.	३६	१५	वि.	२	०९	१३	२९	७	२७	तुला	३२	२१	६	३९	१७	३३	६	११	५४	१७	भ. २/०९ तक, गुरु हस्त ३ में ४९/४२, शनि ज्ये. २ (E)
२७	१०	३०	र.	४१	१०	चित्रा	५	५६	प्री.	३८	१९	च.	८	०६	१४	३०	८	२८	तुला			६	४०	१७	३२	६	१२	५४	१५	दीपावली श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्रीमहावीर निर्वाण दिवस (जैन),

(A) बुध चित्रा में २६/५०, (B) (करवाचौथ) (देखें पृ. 277), (चन्द्रोदय २० घं. ४५ मि.), (C) हेमन्त ऋतु प्रारम्भ, शक कार्त्तिक प्रारम्भ, (D) दीपदान, श्रीहनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (E) में ४/३२, नरकचर्तुदशी (पूर्वारुणोदयवाली).

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२३ अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	८	६	५	७	७	४	१०
५	८	२३	२	१५	११	१९	१५	१५
५५	२२	२७	४६	१४	३६	२३	५०	५०
१४	१७	३८	१५	३५	२१	४४	४२	४२
५९	७८५	४२	१०१	१२	७२	५	३	३
४५	६	३६	११	३१	३०	४७	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
चित्रा ४	पुष्य २	पू.षा. ४	चित्रा ३	हस्त २	अनु. ३	ज्ये. १	पू.फा. १	शत. ३

कुण्डली सूर्योदय (२३ अक्तू.)

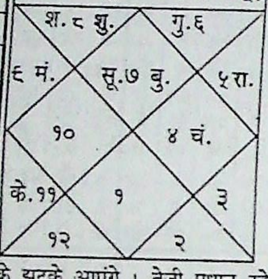

लोकभविष्य:- कार्तिक चान्द्रमास में शनि-शुक्र एकत्र हैं एवम् कार्तिक कृष्ण-सप्तमी शनिवारी होने से व्यापारी वर्ग विशेष लाभान्वित होगा । अनेकत्र खड़ी फसलों को हानि हो -

" कार्त्तिके सप्तमी कृष्णा शनौ धान्यार्घनाशिनी ।
.........श्वेतवस्तु-महर्घं स्यात् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :- १८ से २४ अक्तूबर तक रुई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, चान्दी, बिनौला, अलसी, सरसों आदि में तेजी-मन्दी के झटके आएंगे । तेजी प्रधान रहेगी । २७/२८ अक्तूबर को रुई, घी, तेल, सरसों, उड़द में तेजी एवम् २९ अक्तूबर को हाजर एवं वायदा बाजार मन्दे रहेंगे ।

आकाशलक्षण :- १८, २१, २३, २४, २५, २७, २८, २९ अक्तूबर को पर्वतीय भूभागों पर कहीं बादल-वर्षा एवं हिमपात के समाचार मिलेंगे । उत्तर-दक्षिणी भारत में कहीं बादलचाल व वायुवेग के साथ वर्षा भी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (३० अक्तू.)

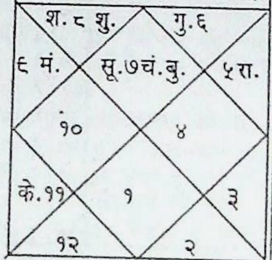

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
३० अक्तूबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	८	६	५	७	७	४	१०
१२	४	२८	१४	१६	२०	२०	१५	१५
५४	५४	२७	२३	४१	३	५	२८	२८
१६	५३	४८	३०	३१	१७	२०	२७	२७
६०	७१२	४३	९७	१२	७२	६	३	३
१	१९	१५	३३	१६	१८	९	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
स्वा. २	चित्रा ४	उ.षा. १	स्वा. ३	हस्त ३	ज्ये. २	ज्ये. २	पू.फा. १	शत. ३

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, कार्तिक शुक्ल पक्ष १५

(३१ अक्तूबर से १४ नवम्बर तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु।

बु. अस्त है । गु. प्रातः पूर्वक्षितिज में होगा । सायं शनि पश्चिम-क्षितिजासन्न, शु. पश्चिम में और मं. पश्चिमकपाल में होगा । ३ नवं. को चं.शु. परस्पर आसन्न होंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. कार्तिक	अं. अक्तूबर	श. कार्तिक	मु. मुहर्रम	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२७	६	१	चं.	४७	२७	स्वाती	१३	१९	आ.	४०	३०	किं.	१४	१८	१५	३१	९	२९	तुला			६	४१	१७	३१	६	१३	५४	१५	गोवर्धनपूजा,, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, अन्नकूट,
२७	२	२	मं.	५३	४४	विशा.	२०	४६	सौ.	४२	४१	बा.	२०	३५	१६	न.१	१०	३०	वृश्चिक	३	५४	६	४१	१७	३०	६	१४	५४	१७	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, मंगल मकर में ४/४७, यमद्वितीया (A)
२६	५८	३	बु.	५९	४७	अनु.	२८	६	शो.	४४	४४	तै.	२६	४५	१७	२	११	स.१	वृश्चिक			६	४२	१७	२९	६	१५	५४	२१	बुध विशा. में २५/१७, सफर मु. प्रारम्भ,
२६	५४	४	गु.	६०	०	ज्येष्ठा	३५	७	अ.	४६	२७	व.	३२	३३	१८	३	१२	२	धनु	३५	७	६	४३	१७	२९	६	१६	५४	२७	भ. ३२/३३ बाद,
२६	५०	४	शु.	५	१९	मूल	४१	३१	सु.	४७	४०	वि.	५	१९	१९	४	१३	३	धनु			६	४४	१७	२८	६	१७	५४	३४	भ. ५/१९ तक,
२६	४६	५	श.	१०	७	पू.षा.	४७	०	धृ.	४८	७	बा.	१०	०७	२०	५	१४	४	धनु			६	४५	१७	२७	६	१८	५४	४३	ज्ञानपञ्चमी (जैन),
२६	४२	६	र.	१३	४७	उ.षा.	५१	११	शू.	४७	३३	तै.	१३	४७	२१	६	१५	५	मकर	३	९	६	४५	१७	२६	६	१९	५४	५४	सूर्य विशा. में १/५७, सूर्यषष्ठी (बिहार),
२६	३८	७	चं.	१५	५८	श्रव.	५३	४७	गं.	४५	४४	व.	१५	५८	२२	७	१६	६	मकर			६	४६	१७	२६	६	२०	५५	६	भ. १५/५८ से ४६/११ तक, शुक्र मूल धनु में १३/००,
२६	३५	८	मं.	१६	२४	धनि	५४	३३	वृ.	४२	२८	ब.	१६	२४	२३	८	१७	७	कुम्भ	२४	२५	६	४७	१७	२५	६	२१	५५	१९	पंचक प्रारम्भ २४/२५, बुध वृश्चिक में ४४/४०, गोपाष्टमी,
२६	३१	९	बु.	१४	५३	शत	५३	२२	ध्रु.	३७	३८	कौ.	१४	५३	२४	९	१८	८	कुम्भ			६	४८	१७	२४	६	२२	५५	३४	अक्षयनवमी, कूष्माण्डनवमी,
२६	२७	१०	गु.	११	२२	पू.भा.	५०	१६	व्या.	३१	१४	ग.	११	२२	२५	१०	१९	९	मीन	३६	१२	६	४९	१७	२४	६	२३	५५	५०	भ. ३८/४० बाद,, बुध अनु में ५३/१५, हरिप्रबोधिनी (B)
२६	२३	११	शु.	५	५८	उ.भा.	४५	२६	ह.	२३	२१	वि.	५	५८	२६	११	२०	१०	मीन			६	५०	१७	२३	६	२४	५६	८	भ. ५/५८ तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), (C)
अवम		१२	शु.	५८	५४	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी तिथिक्षय,
२६	२०	१३	श.	५०	२८	रेव.	३९	९	व.	१४	१०	कौ.	२४	४१	२७	१२	२१	११	मेष	३९	९	६	५०	१७	२२	६	२५	५६	२७	पंचक समाप्त ३९/०९, शनिप्रदोष व्रत,
२६	१६	१४	र.	४१	६	अश्वि.	३१	५०	सि. व्य.	३ ५३	५९ ९	ग.	१५	४७	२८	१३	२२	१२	मेष			६	५१	१७	२२	६	२६	५६	४८	भ. ४१/०६ बाद, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
२६	१३	१५	चं.	३१	१५	भर.	२३	५७	व.	४१	५९	वि.	६	१०	२९	१४	२३	१३	वृष	३६	५५	६	५२	१७	२१	६	२७	५७	११	भ. ६/१० तक, मंगल श्रवण में ४४/४५, (D)

(A) (भाईदूज), विश्वकर्मा पूजा, नवम्बर प्रारम्भ, (B) एकादशी व्रत (स्मार्त) (देखें पृ. 15), भीष्मपंचक प्रारम्भ (देखें पृ. 16), (C) हरिप्रबोधोत्सव, तुलसीविवाह, (देखें पृ. 16), चातुर्मास्य व्रतनियमादि समाप्त, (D) श्रीसत्यनारायण व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्त, भीष्मपंचक समाप्त, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्करराज (राज.),

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ८ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २१ ५५ २०	९ २३ ५९ १७	९ ४ ५९ ५७	६ २८ ४५ १३	५ १८ ३० ५	८ ० ५२ ३४	७ २१ २ ८	४ १४ ५९ ५०	१० १४ ५९ ५०
६० १५	७९० ३२	४३ ५६	९३ ४४	११ ४८	७१ ५५	६ ३१	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. १	धनि. १	उ.षा. ३	विशा. ३	हस्त ३	मूल १	ज्ये. २	पू.फा. १	शत. ३

कुण्डली सूर्योदय (८ नवं.)

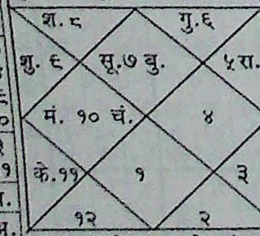

लोकभविष्य:- इस पक्ष में शनि-मंगल की राहु पर विशेष दृष्टि है एवं मंगल पर भी शनि की विशेष दृष्टि है । किसी विशिष्ट व्यक्ति पर अकस्मात् कष्ट आ सकता है । काश्मीर, पाक की ओर से स्थिति चिन्तनीय बन सकती है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सोना, चान्दी, तांबा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी, ऊन एवं वायदा बाजारों में अच्छी तेजी बनेगी । ६, ७, ८ नवंबर को घी, तेल, सरसों, रुई, चान्दी तेज रहे । १० नवंबर को रुई, सूत, सण, सोना, चान्दी में अचानक मन्दा बनकर १४ नवंबर को अनाज, तेल, तिलहन एवम् सोने, चान्दी में जोरदार तेजी से लाभ मिलेगा ।

कुण्डली सूर्योदय (१४ नवं.)

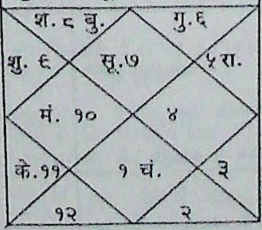

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १४ नवम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६ २७ ५७ १२	० १९ ३९ २२	९ ९ २४ २७	७ ८ २ ४०	५ १९ ३९ ५७	८ ८ ३ १६	७ २१ ४१ ४१	४ १४ ४० ४५	१० १४ ४० ४५
६० २४	९२२ ७	४४ १७	९१ ५०	११ २५	७१ ३५	६ ४२	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
विशा. ३	भर. २	उ.षा. ४	अनु. २	हस्त ३	मूल ३	ज्ये. २	पू.फा. १	शत. ३

आकाशलक्षण:- ३१ अक्तू. एवम् १, २, ६, ७, ८, १० और १४ नवंबर को हि.प्र., उ.प्र., काश्मीर, उत्तराखण्ड आदि में कहीं बर्फबारी, कहीं बादलचाल हो । हरियाणा, पंजाब, उ.प्र. में शीतलहर का प्रकोप बढ़ेगा ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष १६

(१५ से २९ नवम्बर तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।

२० नवं. को बु. पश्चिम में उदित होगा और २४ नवं. को श. पश्चिम में लुप्त हो जाएगा । प्रातः गु. पूर्व में दिखाई देगा । सायं शु. पश्चिम में और मं. पश्चिमकपाल में होगा ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	मार्गशीर्ष	नवंबर	कार्तिक	सफर		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	९	१	मं.	२१	२३	कृत्ति.	१६	०	प.	३०	५३	कौ.	२१	२३	मा.१	१५	२४	१४	वृष			६	५३	१७	२१	६	२८	५७	३५	सं. सूर्य वृश्चिक में ५८/३०, मु. ४५, पुण्यकाल अगले (A)
२६	६	२	बु.	१२	२	रोहि.	८	२९	शि.	२०	१७	ग.	१२	२	२	१६	२५	१५	मिथुन	३५	२	६	५४	१७	२०	६	२९	५८	०	म. ३७/५० बाद,
२६	३	३	गु.	३	३९	मृग. आर्द्रा	१ ५५	५४ ४६	सि.	१०	३२	वि.	३	३९	३	१७	२६	१६	मिथुन			६	५५	१७	२०	७	०	५८	२८	म. ३/३९ तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
अवम		४	गु.	५६	४२	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्थी तिथिक्षय,
२५	५९	५	शु.	५१	३१	पुन.	५३	२१	सा. शु.	१ ५४	५९ ५६	कौ.	२४	६	४	१८	२७	१७	कर्क	३९	१	६	५६	१७	१९	७	१	५८	५७	शुक्र पू.षा. में २२/१७,
२५	५६	६	श.	४८	२२	पुष्य	५१	५८	शु.	४९	३०	ग.	१९	५६	५	१९	२८	१८	कर्क			६	५६	१७	१९	७	२	५९	२८	म. ४८/२२ बाद, सूर्य अनु. में १६/४५, बुध ज्ये. में ३६/५२,
२५	५३	७	र.	४७	२४	आश्ले.	५२	४१	ब्र.	४५	४५	वि.	१७	५३	६	२०	२९	१९	सिंह	५२	४१	६	५७	१७	१९	७	४	०	०	म. १७/५३ तक, नेप्च्यून मार्गी ८/०७, बुध पश्चिम में (B)
२५	५०	८	चं.	४८	३२	मघा	५५	२५	ऐं.	४३	३८	बा.	१७	५८	७	२१	३०	२०	सिंह			६	५८	१७	१८	७	५	०	३५	सूर्य सायन धनु में २६ घं. ५३ मि., श्रीभैरवाष्टमी(कालाष्टमी),
२५	४७	९	मं.	५१	३२	पू.फा.	५९	५६	वै.	४२	५८	तै.	२०	२	८	२२	मा.१	२१	सिंह			६	५९	१७	१८	७	६	१	११	शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ,
२५	४४	१०	बु.	५६	४	उ.फा.	६०	०	वि.	४३	३०	व.	२३	४८	९	२३	२	२२	कन्या	१६	१७	७	०	१७	१८	७	७	१	४९	म. २३/४८ से ५६/०४ तक,
२५	४२	११	गु.	६०	०	उ.फा.	५	४८	प्री.	४४	५२	ब.	२८	५१	१०	२४	३	२३	कन्या			७	१	१७	१७	७	८	२	२८	शनि अस्त १७ घं. १७ मि.,
२५	३९	११	शु.	१	३८	हस्त	१२	३९	आ.	४६	४८	बा.	१	३८	११	२५	४	२४	तुला	४६	२०	७	२	१७	१७	७	९	३	९	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
२५	३६	१२	श.	७	५१	चित्रा	२०	२	सौ.	४८	५८	तै.	७	५१	१२	२६	५	२५	तुला			७	२	१७	१७	७	१०	३	५२	शनिप्रदोष व्रत,
२५	३४	१३	र.	१४	१८	स्वाती	२७	३४	शो.	५१	१०	व.	१४	१८	१३	२७	६	२६	तुला			७	३	१७	१७	७	११	४	३६	म. १४/१८ से ४७/२९ तक,
२५	३१	१४	चं.	२०	४१	विशा.	३४	५९	अ.	५३	१२	श.	२०	४१	१४	२८	७	२७	वृश्चिक	१८	८	७	४	१७	१७	७	१२	५	२२	बुध मूल धनु में ३७/५२, शनि ज्ये. ३ में १५/१५,
२५	२९	३०	मं.	२६	४७	अनु.	४२	५	सु.	५४	५९	ना.	२६	४७	१५	२९	८	२८	वृश्चिक			७	५	१७	१६	७	१३	६	९	शुक्र उ.षा. में ३८/३०, भौमवती अमा,

(A) दिन मध्याह्न तक, गुरु हस्त ४ में ४२/०५, पद्मकयोग १३ घं. १७ मि. तक (पुष्करस्नान का विशेष माहात्म्य), (B) उदित १७ घं. १९ मि.,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२१ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	७	५	८	७	४	१०
५	०	१४	१८	२०	१६	२२	१४	१४
०	४७	३५	३९	५८	२३	२९	१८	१८
३६	३४	२६	३३	२७	३	१०	३०	३०
६०	७६३	४४	८६	१०	७१	६	३	३
३६	४३	३७	४८	५६	८	५३	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
अनु. १	मघा १	श्रव. २	ज्ये. १	हस्त ४	पू.षा. १	ज्ये. २	पू.फा. १	शत. ३

कुण्डली सूर्योदय (२१ नवं.)

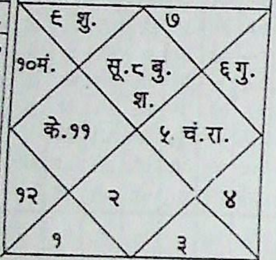

लोकभविष्यः- इस पक्ष में शनि-सूर्य का एकराशिस्थ होना देश के प्रतिष्ठित व्यक्तिविशेष के लिए कष्टप्रद है । इस चान्द्रमास में पांच मंगलवार हैं, अतः कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि व कहीं नेतृत्व में कुछ परिवर्तन हो ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में रुई, तांबा, चान्दी, सोना, ऊनी वस्त्र तेज रहें । आगे १८ नवंबर तक बाजार मन्दे रहकर १९ नवंबर को घी, गुड़, खाण्ड, चावल, रुई व शेयरों में तेजी-मन्दी के झटके आएंगे । बाजार स्थिर नहीं रहेगा । २८/२९ नवंबर को तेजी का वातावरण रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (२९ नवं.)

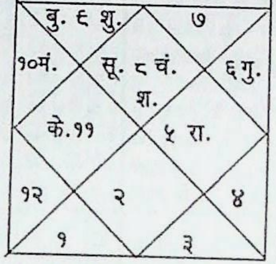

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२९ नवंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	९	८	५	८	७	४	१०
१३	७	२०	०	२२	२५	२३	१३	१३
६	३०	३३	२६	२३	५०	२४	५३	५३
१०	५६	३४	१४	३२	५	४६	४	४
६०	७१५	४४	८५	१०	७०	७	३	३
४८	५३	५६	४७	१५	३१	२	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
अनु. ३	अनु. २	श्रव. ४	मूल १	हस्त ४	पू.षा. ४	ज्ये. ३	पू.फा. १	शत. ३

आकाशलक्षणः- १५, १८, १९ से २९ नवम्बर तक जम्मू-काश्मीर, हि.प्र. एवम् उत्तराखण्ड के सुदूर भागों में बर्फबारी से यातायात बाधित हो । उत्तरी भारत में शीतलहर एवम् धुन्ध का वातावरण रहे ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष १७															तारीखें				चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.)				स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				(३० नवंबर से १३ दिसम्बर तक, सन् २०१६ ई.) दक्षिणायन, दक्षिणगोल, हेमन्त ऋतु ।
दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	प्र. मार्गशीर्ष	अं. नवंबर	श. मार्गशीर्ष	मु. सफर		घ.	प.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	रा.	अं.	क.	वि.	श. अस्त है । प्रातः गु. पूर्व में होगा । सायं बु. पश्चिमक्षितिज में और शु.मं. पश्चिमकपाल में दिखाई देंगे । ३ दिसं. को चं.शु. परस्पर परमासन्न होंगे ।
२५	२६	१	बु.	३२	२८	ज्येष्ठा	४८	४७	धृ.	५६	२४	ब.	३२	२८	१६	३०	९	२९	धनु	४८	४७	७	६	१७	१६	७	१४	६	५७	चन्द्रदर्शन, मु. १५,
२५	२४	२	गु.	३७	३६	मूल	५४	५५	शू.	५७	२३	बा.	५	२	१७	दि.१	१०	र.१	धनु			७	७	१७	१६	७	१५	७	४७	रबि-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ, दिसंबर प्रारम्भ,
२५	२२	३	शु.	४२	३	पू.षा.	६०	०	गं.	५७	४९	तै.	९	४९	१८	२	११	२	धनु			७	७	१७	१६	७	१६	८	३७	सूर्य ज्ये. में २६/५२, मंगल धनि. में ३७/५८, शुक्र (A)
२५	२०	४	श.	४५	४०	पू.षा.	०	२२	वृ.	५७	३४	व.	१३	५१	१९	३	१२	३	मकर	१६	३५	७	८	१७	१६	७	१७	९	२९	भ. १३/५१ से ४५/४० तक,
२५	१८	५	र.	४८	१२	उ.षा.	४	५५	ध्रु.	५६	२९	ब.	१६	५६	२०	४	१३	४	मकर			७	९	१७	१६	७	१८	१०	२२	गुरु चित्रा १ में ३३/४६,
२५	१६	६	चं.	४९	२७	श्रव.	८	२५	व्या.	५४	२२	कौ.	१८	४९	२१	५	१४	५	कुम्भ	३९	४२	७	१०	१७	१६	७	१९	११	१५	पंचक प्रारम्भ ३९/४२, गुह-स्कन्दषष्ठी, चम्पाषष्ठी (महाराष्ट्र),
२५	१५	७	मं.	४९	१०	धनि.	१०	३५	ह.	५१	५	ग.	१९	१८	२२	६	१५	६	कुम्भ			७	१०	१७	१६	७	२०	१२	१०	भ. ४९/१० बाद, मित्रसप्तमी,
२५	१३	८	बु.	४७	१३	शत.	११	१३	व.	४६	२९	वि.	१८	११	२३	७	१६	७	मीन	५५	३८	७	११	१७	१६	७	२१	१३	५	भ. १८/११ तक, वक्री यूरेनस रेव. ३ में ३२/४२,
२५	१२	९	गु.	४३	३१	पूभा.	१०	११	सि.	४०	३१	बा.	१५	२२	२४	८	१७	८	मीन			७	१२	१७	१७	७	२२	१४	०	बुध पू.षा. में ३४/४०,
२५	१०	१०	शु.	३८	९	उ.भा.	७	२८	व्य.	३३	१२	तै.	१०	५०	२५	९	१८	९	मीन			७	१३	१७	१७	७	२३	१४	५७	राहु मघा ४, केतु शत. २ में १९/२८,
२५	९	११	श.	३१	१७	रेव. अश्वि.	३ ५७	८ ३०	व.	२४	४०	व.	४	४३	२६	१०	१९	१०	मेष	३	८	७	१३	१७	१७	७	२४	१५	५३	भ. ४/४३ से ३१/१७ तक, पंचक समाप्त ३/०८, मोक्षदा (B)
२५	८	१२	र.	२३	१३	भर.	५०	४८	प.	१५	७	बा.	२३	१३	२७	११	२०	११	मेष			७	१४	१७	१७	७	२५	१६	५१	मंगल कुम्भ में २९/१५, शुक्र श्रवण में ४/५७, प्रदोषव्रत,
२५	७	१३	चं.	१४	२०	कृत्ति.	४३	२९	शि. सि.	४ ५४	५० १०	तै.	१४	२०	२८	१२	२१	१२	वृष	३	५८	७	१५	१७	१७	७	२६	१७	४९	
२५	६	१४	मं.	५	२	रोहि.	३६	३	सा.	४३	२७	व.	५	२	२९	१३	२२	१३	वृष			७	१५	१७	१८	७	२७	१८	४८	भ. ५/०२ से ३०/२६ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीदत्त जयन्ती,
अवम		१५	मं.	५५	५०	००	०	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथिक्षय,

(A) मकर में २८/५८, (B) एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ७ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २१ १३ ५	१० १६ ३४ २०	९ २६ ३३ ५७	८ ११ १९ ५५	५ २३ ४२ ४८	९ ५ ११ २५	७ २४ २१ १४	४ १३ २७ ३७	१० १३ २७ ३७
६० ५६	८०७ ४३	४५ १०	७३ ५५	९ २७	६९ ३९	७ ५	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये. २	शत. ३	धनि. १	मूल ४	चित्रा १	उ.षा. ३	ज्ये. ३	पू.फा. १	शत. ३

कुण्डली सूर्योदय (७ दिसं.)

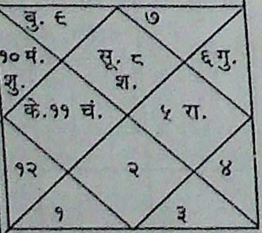

लोकभविष्य:- इस पक्ष में सूर्य-शनि का मेल एवं कुम्भ राशिस्थ मंगल का राहु के साथ समसप्तकयोग और अमावसी मंगलवार का होना उत्तराखण्ड, बिहार, जम्मू-काश्मीर एवं उड़ीसा में उग्रवादजन्य परेशानी करे । मार्ग. शुक्ल एकादशी को शनिवार है । कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने, कहीं सत्ता में रद्दोबदल हो-

"मार्गशुक्ल एकादश्यां शनिवारो भवेद्यदि ।
जलशोषं प्रजानाशं छत्रभंगं विनिर्दिशेत् ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में अनाज मन्दे; रुई, चान्दी, सोने में घटाबढ़ी हो । २/३ दिसं. को सोना, चान्दी, पारा, गुड़, खाण्ड, घी, अनाज में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएं । ८ से १० दिसंबर तक अनाज, गुड़, तेल, तिलहन में जोरदार मन्दी के बाद तेजी बने । सोने-चान्दी में काफी घटाबढ़ी चले ।

आकाशलक्षण:- १ से ५ एवं ८ से १२ दिसंबर तक उत्तरी भारत में जोरदार शीतलहर चलेगी । धुन्ध से यातायात बाधित रहे । हि.प्र., काश्मीर, उ.खण्ड आदि में कहीं भारी हिमपात/हिमस्खलन से हानि हो ।

कुण्डली सूर्योदय (१३ दिसं.)

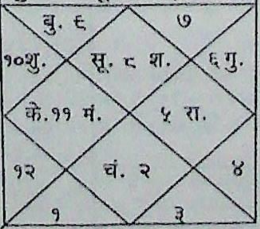

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १३ दिसम्बर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७ २७ १८ ४९	१ १३ ४ ५०	१० १ ५ ९	८ १७ ५३ २	५ २४ ३७ ५२	९ १२ ७ २४	७ २५ ३ ४६	४ १३ ८ ३२	१० १३ ८ ३२
६१ ०	६११ ४५	४५ १५	४९ ५२	९ ४८	६८ ५०	७ ६	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
ज्ये. ४	रोहि. १	धनि. ३	पू.षा. २	चित्रा १	श्रव. १	ज्ये. ३	मघा ४	शत. २

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, पौष कृष्ण पक्ष १८

(१४ से २९ दिसम्बर तक, सन् २०१६ ई.)
दक्षिण–उत्तरायण, दक्षिणगोल, हेमन्त–शिशिर ऋतु।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. (मार्गशीर्ष)	अं. (दिसम्बर)	श. (मार्गशीर्ष)	मु. (र.उ.ल.)	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.
२५	५	१	बु.	४७	८	मृग.	२८	५७	शु.	३३	५	बा.	२१	२९	३०	१४	२३	१४	मिथुन	२	२४	७	१६	१७	१८	७	२८	१९	४८
२५	४	२	गु.	३९	२८	आर्द्रा	२२	४३	शु.	२३	२७	तै.	१३	१८	पौ.१	१५	२४	१५	मिथुन			७	१७	१७	१८	७	२९	२०	४८
२५	३	३	शु.	३३	१५	पुन.	१७	४८	ब्र.	१४	५४	व.	६	२१	२	१६	२५	१६	कर्क	३	५३	७	१७	१७	१९	८	०	२१	५०
२५	३	४	श.	२८	५२	पुष्य	१४	३६	ऐं.	७	४३	ब.	१	३	३	१७	२६	१७	कर्क			७	१८	१७	१९	८	१	२२	५२
२५	२	५	र.	२६	३४	आश्ले.	१३	२४	वै.	२	९	तै.	२६	३४	४	१८	२७	१८	सिंह	१३	२४	७	१९	१७	२०	८	२	२३	५५
									वि.	५८	१७																		
२५	२	६	चं.	२६	२८	मघा	१४	१८	प्री.	५६	५	व.	२६	२८	५	१९	२८	१९	सिंह			७	१९	१७	२०	८	३	२४	५८
२५	२	७	मं.	२८	३०	पू.फा.	१७	१७	आ.	५५	२५	ब.	२८	३०	६	२०	२९	२०	कन्या	३३	२२	७	२०	१७	२०	८	४	२६	३
२५	२	८	बु.	३२	२२	उ.फा.	२२	७	सौ.	५६	२	बा.	०	२६	७	२१	३०	२१	कन्या			७	२०	१७	२१	८	५	२७	८
२५	२	९	गु.	३७	४१	हस्त	२८	२२	शो.	५७	३३	तै.	५	१	८	२२	पौ.१	२२	कन्या			७	२१	१७	२१	८	६	२८	१४
२५	२	१०	शु.	४३	५२	चित्रा	३५	३२	अ.	५९	३७	व.	१०	४६	९	२३	२	२३	तुला	१	५२	७	२१	१७	२२	८	७	२९	२१
२५	२	११	श.	५०	२६	स्वाती	४३	६	सु.	६०	०	ब.	१७	९	१०	२४	३	२४	तुला			७	२२	१७	२३	८	८	३०	२९
२५	३	१२	र.	५६	५१	विशा.	५०	३६	सु.	१	५०	कौ.	२३	३८	११	२५	४	२५	वृश्चिक	३३	४६	७	२२	१७	२३	८	९	३१	३७
२५	३	१३	चं.	६०	०	अनु.	५७	४०	धृ.	३	५५	ग.	२९	४९	१२	२६	५	२६	वृश्चिक			७	२२	१७	२४	८	१०	३२	४६
२५	४	१३	मं.	२	४८	ज्येष्ठा	६०	०	शू.	५	३८	व.	२	४८	१३	२७	६	२७	वृश्चिक			७	२३	१७	२४	८	११	३३	५५
२५	५	१४	बु.	८	३	ज्येष्ठा	४	५	गं.	६	४९	श.	८	३	१४	२८	७	२८	धनु	४	५	७	२३	१७	२५	८	१२	३५	५
२५	५	३०	गु.	१२	२८	मूल	९	४३	वृ.	७	२३	ना.	१२	२८	१५	२९	८	२९	धनु			७	२३	१७	२६	८	१३	३६	१५

२२ दिसं. को बुध पश्चिम में अस्त होगा और २८ दिसं. को श. उदित हो जाएगा । प्रातः गु. पूर्वकपाल में होगा । सायं शु.मं. पश्चिमकपाल में दीखेंगे । २३ दिसं. को प्रातःकाल चं. गु. के काफी निकट दिखाई देगा ।

सं. सूर्य मूल धनु में ३४/०५, मु. ४५, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
भ. ६/२१ से ३३/१५ तक,
श्रीगणेशचतुर्थी व्रत (देखें पृ. 16),

भ. २६/२८ से ५७/२९ तक, बुध वक्री २२/४३,
मंगल शत. में १९/१३,
सूर्य सायन मकर में १६ घं. १५ मि., उत्तर अयन एवं (A)
शुक्र धनि. में ४८/०२,, बुध पश्चिम में अस्त (B)
भ. १०/४६ से ४३/५२ तक,
सफला एकादशी व्रत (स.),

शनि ज्ये. ४ में ३६/०७, सोमप्रदोष व्रत,
भ. २/४८ से ३५/२५ तक,
सूर्य पू. षा. में ३८/२०, वक्री बुध मूल में ४४/२०, (C)
यूरेनस मार्गी १९/०२,

(A) शिशिर ऋतु प्रारम्भ, (B)१७ घं. २१ मि., शक पौष प्रारम्भ, (C) गुरु चित्रा २ में २४/२२, शुक्र कुम्भ में ४८/२७, शनि उदित ७ घं. २३ मि.,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२१ दिसंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	१०	८	५	९	७	४	१०
५	४	७	२०	२५	२१	२६	१२	१२
२७	३२	७	४९	४४	१३	०	४३	४३
९	५४	२१	०	५०	२९	१७	६	६
६१	७३०	४५	२३	७	६७	७	३	३
६	४२	१८	२१	४८	२८	२	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.	अ.
मूल २	उ.फा. ३	शत. १	पू.षा. ३	चित्रा १	श्रव. ४	ज्ये. ३	मघा ४	शत. २

कुण्डली सूर्योदय (२१दिसं.)

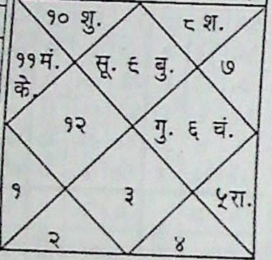

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच बुधवार हैं। भारत की जनता में सुख-समृद्धि रहे । लेकिन इसी चान्द्रमास में पांच गुरुवार भी हैं, अतः पश्चिमी देशों में भारी अशान्ति एवम् कहीं युद्ध का वातावरण बने -

" यत्र मासे पंच वारा जायंते च बृहस्पतेः ।
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- पक्षारम्भ में रुई, सूत, गुड़, खाण्ड, कपास, सोना, चान्दी, अलसी में तेजी । १८ दिसंबर के लगभग मन्दा संभव है । २० से २५ दिसं. तक बाजारों में उठापटक रहे । बाजार मन्दी-प्रधान रहें । २६ से २८ दिसं. तक वायदा एवं हाजर बाजारों में जोरदार तेजी के रिएक्शन्ज़ आएंगे। सावधानी से काम करें ।

आकाशलक्षण:- दिसंबर १५ और १८ से २८ दिसं. तक उत्तरी भारत शीतलहर की चपेट में रहेगा । पर्वतीय भूमाग (काश्मीर, हि.प्र., उ.खण्ड आदि) में भारी हिमपात हो । उ.भारत में वर्षा के योग भी हैं ।

कुण्डली सूर्योदय (२९ दिसं.)

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.)
२९ दिसंबर,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	१०	८	५	१०	७	४	१०
१३	१०	१३	१३	२६	०	२६	१२	१२
३६	२३	९	५	४३	७	५६	१७	१७
१५	३	५४	४	३१	३०	४	४०	४०
६१	७३८	४५	८१	६	६५	६	३	३
१०	२	१९	३७	४२	४४	५३	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. १	मूल ४	शत. २	मूल ४	चित्रा २	धनि. ३	ज्ये. ४	मघा ४	शत. २

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, पौष शुक्ल पक्ष १६

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. पौष	तारीखें अं. दिसंबर	तारीखें श. पौष	तारीखें मु. र.उ.अ.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	(३० दिसं. २०१६ ई. से १२ जनवरी सन् २०१७ ई. तक,) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु । ४ जन. को बु. पूर्व में दृश्य हो जाएगा। प्रातः श. पूर्वक्षितिज में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पूर्व की ओर दिखाई देगा । सायं शु.मं. पश्चिमकपाल में होंगे ।
२५	६	१	शु.	१६	१	पू.षा.	१४	३१	ध्रु.	७	१८	ब.	१६	१	१६	३०	९	३०	मकर	३०	३६	७	२४	१७	२६	८	१४	३७	२५	चन्द्रदर्शन, मु. ४५,
२५	७	२	श.	१८	४०	उ.षा.	१८	२८	व्या.	६	३२	कौ.	१८	४०	१७	३१	१०	र.१	मकर			७	२४	१७	२७	८	१५	३८	३५	रबि-उल-सानी मु. प्रारम्भ,
२५	९	३	र.	२०	२२	श्रव.	२१	३१	ह.	५	४	ग.	२०	२२	१८	ज.१	११	२	कुम्भ	५२	४१	७	२४	१७	२८	८	१६	३९	४६	भ. ५०/४३ बाद, पंचक प्रारम्भ ५२/४१, जनवरी (A)
२५	१०	४	च.	२१	५	धनि.	२३	३६	व. सि.	२ ५९	५१ ५१	वि.	२१	५	१९	२	१२	३	कुम्भ			७	२५	१७	२८	८	१७	४०	५६	भ. २१/०५ तक,
२५	११	५	म.	२०	४४	शत.	२४	३९	व्य.	५५	५८	बा.	२०	४४	२०	३	१३	४	कुम्भ			७	२५	१७	२९	८	१८	४२	६	शुक्र शत. में ५७/०७,
२५	१३	६	बु.	१९	१३	पू.भा.	२४	३५	व.	५१	८	तै.	१९	१३	२१	४	१४	५	मीन	९	४३	७	२५	१७	३०	८	१९	४३	१६	बुध पूर्व में उदित ७ घं. २५ मि.,
२५	१४	७	गु.	१६	२९	उ.भा.	२३	१९	प.	४५	२१	व.	१६	२९	२२	५	१५	६	मीन			७	२५	१७	३१	८	२०	४४	२५	भ. १६/२६ से ४४/२६ तक, अवतार दिन श्रीगुरु (B)
२५	१६	८	शु.	१२	३०	रेव.	२०	५०	शि.	३८	३५	ब.	१२	३०	२३	६	१६	७	मेष	२०	५०	७	२५	१७	३१	८	२१	४५	३४	पंचक समाप्त २०/५०, मंगल पू.भा. में ५८/२२,
२५	१८	९	श.	७	२०	अश्वि.	१७	११	सि.	३०	५४	कौ.	७	२०	२४	७	१७	८	मेष			७	२५	१७	३२	८	२२	४६	४३	
२५	२०	१०	र.	१	७	भर.	१२	३३	सा.	२२	२७	ग.	१	७	२५	८	१८	९	वृष	२६	१४	७	२५	१७	३३	८	२३	४७	५१	भ. २७/३६ से ५४/०५ तक, बुध मार्गी १६/२८, (C)
अवम		११	र.	५४	५	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथिक्षय,
२५	२२	१२	चं.	४६	२९	कृत्ति.	७	८	शु.	१३	२४	ब.	२०	१७	२६	९	१९	१०	वृष			७	२५	१७	३४	८	२४	४८	५९	पुत्रदा एकादशीव्रत (वैष्णव),
२५	२४	१३	मं.	३८	४२	रोहि. मृग.	१ ५५	१५ १८	शु. ब्र.	४ ५४	१ ३५	कौ.	१२	३६	२७	१०	२०	११	मिथुन	२८	१४	७	२५	१७	३५	८	२५	५०	७	सूर्य उ.षा. में ४४/१०, भौमप्रदोष व्रत,
२५	२६	१४	बु.	३१	६	आर्द्रा	४९	३९	ऐं.	४५	२४	ग.	४	५४	२८	११	२१	१२	मिथुन			७	२५	१७	३६	८	२६	५१	१४	भ. ३१/०६ से ५७/३६ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (D)
२५	२८	१५	गु.	२४	६	पुन.	४४	४५	वै.	३६	४८	ब.	२४	६	२९	१२	२२	१३	कर्क	३०	५२	७	२५	१७	३६	८	२७	५२	२०	पौषीपूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,

(A) (सन् २०१७ ई.) प्रारम्भ, (B) गोबिन्द सिंह जी, (C) पुत्रदा एकादशीव्रत (स्मार्त), (D) (देखें पृ. 17),

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) ६ जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	१०	८	५	१०	७	४	१०
२१	२४	१६	५	२७	८	२७	११	११
४५	१	१२	१२	३२	४५	५०	५२	५२
३५	२६	२०	२१	५६	४६	२८	१३	१३
६१	८४४	४५	१७	५	६३	६	३	३
८	३०	१६	५३	२६	२६	४०	११	११
		मा.	व.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.षा. ३	रेव. ३	शत. ४	मूल २	चित्रा २	शत. १	ज्ये. ४	मघा ४	शत. २

कुण्डली सूर्योदय(६ जन.)

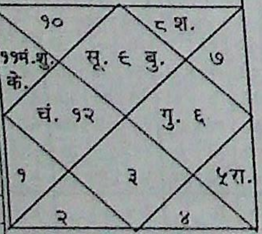

लोकभविष्य:- सूर्य-बुध का एकत्र होना व शुक्र, मंगल एवम् शनि की राहु पर दृष्टि कहीं उग्रवाद से जनधन-हानि करे । उत्तर-पश्चिमी भूभाग पर कहीं प्राकृतिक प्रकोप से हानि के योग हैं । शीतलहर से यातायात बाधित हो ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ३० दिसंबर (२०१६ ई.) से ६ जनवरी (सन् २०१७ ई.) के मध्य दालें, चना आदि अनाज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, लालमिर्च, रुई, सूत, कपास, सोना, चान्दी में अच्छी तेजी संभव है । ८/९ जनवरी के लगभग मन्दी का झटका आए । १० जनवरी से पुनः तेजी का रुख रहे ।

कुण्डली सूर्योदय (१२ जन.)

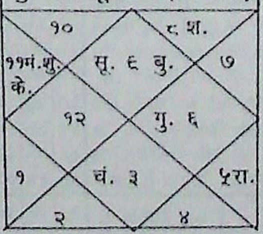

ग्रह स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. (I.S.T.) १२ जनवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	१०	८	५	१०	७	४	१०
२७	२१	२३	५	२८	१५	२८	११	११
५२	२१	४३	३७	३	०	२६	३३	३३
२१	०	४०	२३	२६	५५	५६	८	८
६१	८६८	४५	३०	४	६१	६	३	३
६	५५	१०	३२	३०	१०	२८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. १	पुन. १	पू.भा. २	मूल २	चित्रा २	शत. ३	ज्ये. ४	मघा ४	शत. २

आकाशलक्षण:- दिसं. ३० एवम् १ से ११ जनवरी (सन् २०१७ ई.) तक अनेकत्र खण्डवृष्टि, कोहरा एवम् शीतलहर का वातावरण रहे। हि.प्र., काश्मीर आदि में भारी हिमपात से यातायात बाधित रहे ।

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, माघ कृष्ण पक्ष २०

(१३ से २७ जनवरी तक, सन् २०१७ ई.)
उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

प्रातः बु. पूर्वक्षितिज में, श. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तर-वृत्तासन्न होगा ।सायं शु.मं. पश्चिमक्षितिज में दिखाई देंगे ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	योग	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	करण	समाप्तिकाल घ.	समाप्तिकाल प.	तारीखें प्र. पौष	तारीखें अं. जनवरी	तारीखें श. पौष	तारीखें मु. र.उ.शा.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घ.	प्रवेशकाल प.	चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२५	३१	१	शु.	१८	७	पुष्य	४१	०	वि.	२९	५	कौ.	१८	७	३०	१३	२३	१४	कर्क			७	२५	१७	३७	८	२८	५३	२६	लोहड़ी (पंजाब, हरियाणा, जम्मू-काश्मीर),
२५	३३	२	श.	१३	३०	आश्ले.	३८	४५	प्री.	२२	३२	ग.	१३	३०	मा.१	१४	२४	१५	सिंह	३८	४५	७	२५	१७	३८	८	२९	५४	३२	भ. ४२/०३ बाद, सं. सूर्य मकर में ०/३२, मु. १५, (A)
२५	३६	३	र.	१०	३६	मघा	३८	१५	आ.	१७	२१	वि.	१०	३६	२	१५	२५	१६	सिंह			७	२५	१७	३९	९	०	५५	३८	भ. १०/३६ तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (B)
२५	३८	४	चं.	९	३६	पू.फा.	३९	४१	सौ.	१३	४१	बा.	९	३६	३	१६	२६	१७	कन्या	५५	२१	७	२५	१७	४०	९	१	५६	४३	शुक्र पू.भा. में ५२/४५,
२५	४१	५	मं.	१०	३७	उ.फा.	४३	१	शो.	११	३४	तै.	१०	३७	४	१७	२७	१८	कन्या			७	२४	१७	४१	९	२	५७	४८	
२५	४४	६	बु.	१३	३१	हस्त	४८	३	अ.	१०	५४	व.	१३	३१	५	१८	२८	१९	कन्या			७	२४	१७	४२	९	३	५८	५३	भ. १३/३१ से ४५/४७ तक,
२५	४७	७	गु.	१८	४	चित्रा	५४	२६	सु.	११	२८	ब.	१८	४	६	१९	२९	२०	तुला	२१	८	७	२४	१७	४३	९	४	५९	५८	यूरेनस रेव. ४ में ५६/०, सूर्य सायन कुम्भ में २६ घं. ५३ मि.,
२५	५०	८	शु.	२३	४७	स्वाती	६०	०	धृ.	१२	५७	कौ.	२३	४७	७	२०	३०	२१	तुला			७	२४	१७	४३	९	६	१	२	मंगल मीन में १६/०२,
२५	५३	९	श.	३०	८	स्वाती	१	३९	शू.	१४	५८	ग.	३०	८	८	२१	मा.१	२२	वृश्चिक	५२	१७	७	२३	१७	४४	९	७	२	५	बुध पू.षा. में १४/१७, शक माघ प्रारम्भ,
२५	५६	१०	र.	३६	३१	विशा.	९	९	गं.	१७	७	व.	३	१९	९	२२	२	२३	वृश्चिक			७	२३	१७	४५	९	८	३	९	भ. ३/१९ से ३६/३१ तक,
२५	५९	११	चं.	४२	२७	अनु.	१६	२३	वृ.	१९	२	ब.	९	२९	१०	२३	३	२४	वृश्चिक			७	२३	१७	४६	९	९	४	१२	सूर्य श्रवण में ५०/०७, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
२६	२	१२	मं.	४७	३१	ज्येष्ठा	२२	५६	ध्रु.	२०	२४	कौ.	१४	५९	११	२४	४	२५	धनु	२२	५६	७	२२	१७	४७	९	१०	५	१४	मंगल उ.भा. में ४३/०५,
२६	५	१३	बु.	५१	२७	मूल	२८	३१	व्या.	२१	०	ग.	१९	२९	१२	२५	५	२६	धनु			७	२२	१७	४८	९	११	६	१६	भ. ५१/२७ बाद, प्रदोषव्रत, मेरुत्रयोदशी (जैन),
२६	९	१४	गु.	५४	११	पू.षा.	३२	५६	ह.	२०	४२	वि.	२२	४९	१३	२६	६	२७	मकर	४८	५१	७	२१	१७	४९	९	१२	७	१७	भ. २२/४९ तक, शनि मूल १ धनु में ३०/२२, भारत (C)
२६	१२	३०	शु.	५५	४०	उ.षा.	३६	११	व.	१९	२८	च.	२४	५५	१४	२७	७	२८	मकर			७	२१	१७	५०	९	१३	८	१८	शुक्र मीन में ३२/२०, मौनी अमावस,

(A) पुण्यकाल सारा दिन, प्लूटो पू.षा. ४ में ५०/४३, मकर संक्रन्ति, (B) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11¦), (C) गणतन्त्रदिवस,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २० जनवरी,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	८	५	१०	७	४	१०
६	६	२९	११	२८	२२	२९	११	११
१	४९	४४	५५	३४	५७	२०	७	७
२	४५	२३	२८	४४	४३	३४	४२	४२
६१	७१४	४५	६३	३	५७	६	३	३
४	२९	०	३६	७	२३	८	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.षा. ३	स्वा. १	पू.भा. ३	मूल ४	चित्रा २	पू.भा. १	ज्ये. ४	मघा ४	शत. २

कुण्डली सूर्योदय (२० जन.)

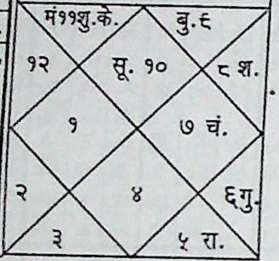

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच शुक्रवार हैं । प्रजा में सुभिक्ष, सुख-समृद्धि रहे -

"शुक्रस्य पंचवाराः स्युर्यत्र मासे निरन्तरम् ।
प्रजावृद्धिः सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तति ।।"

लेकिन मंगल, राहु का षडष्टक एवम् शुक्र-राहु मुस्लिमराष्ट्रों में अशान्ति का वातावरण बनाएंगे ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख :-१४ से २० जनवरी तक घी, तेल, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रुई, सोना, चान्दी में तेजी का उछाला आए । २१/२२ जन. के लगभग सोने-चान्दी में खास मन्दी का झटका आए । २३ से २७ जन. तक गेहूं, जौ, चना, चावल, रुई, सोना, चान्दी, ग्वार, तेल, तिलहन तेज रहें । पक्षान्त में बाजार अस्थिर रहें ।

आकाशलक्षण :-१३, १६, २०, २१, २३ एवम् २६, २७ जन. को काश्मीर, हि.प्र. उ.खण्ड में कहीं बादलवर्षा, हिमपात हो । उत्तरी भारत में वायुवेग से कहीं मौसम ठण्डा व कहीं खण्डवृष्टि भी हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२७ जन.)

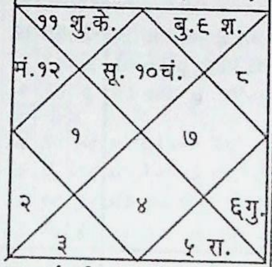

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २७ जनवरी,

सु.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	८	५	१०	८	४	१०
१३	१	४	२०	२८	२९	०	१०	१०
८	२२	५८	६	५२	२७	२	४५	४५
१८	१	५६	८	४८	१३	२५	२७	२७
६१	७६३	४४	७७	१	५३	५	३	३
०	५६	५०	९	५०	७	४६	११	११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. १	उ.षा. २	उ.भा. १	पू.षा. ३	चित्रा २	पू.भा. ३	मूल १	मघा ४	शत. २

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, माघ शुक्ल पक्ष २१

(२८ जनवरी से १० फरवरी तक, सन् २०१७ ई.) उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर ऋतु।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				प्रातः बुध पूर्वक्षितिज में, श. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त में होगा । सायं शु.मं. पश्चिम में दिखाई देंगे ।
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	जनवरी	माघ	र.उ.सा.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२६	१६	१	श.	५५	५९	श्रव.	३८	१६	सि.	१७	१९	किं.	२५	५०	१५	२८	८	२९	मकर			७	२०	१७	५१	९	१४	९	१७	गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
२६	१९	२	र.	५५	१४	धनि.	३९	१८	व्य.	१४	१८	बा.	२५	३७	१६	२९	९	३०	कुम्भ	८	५५	७	२०	१७	५२	९	१५	१०	१६	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, पंचक प्रारम्भ ८/५५,
२६	२३	३	चं.	५३	३१	शत.	३९	२२	व.	१०	२८	तै.	२४	२२	१७	३०	१०	ज.१	कुम्भ			७	१९	१७	५२	९	१६	११	१४	गौरी तृतीया (गोंतरी), जमद-उल-अव्वल मु. प्रारम्भ,
२६	२७	४	मं.	५०	५६	पू.भा.	३८	३४	प.	५	५५	व.	२२	१३	१८	३१	११	२	मीन	२३	५१	७	१९	१७	५३	९	१७	१२	११	भ. २२/१३ से ५०/५६ तक, बुध उ.षा. में ५१/५८, (A)
२६	३०	५	बु.	४७	३५	उ.भा.	३७	०	शि. सि.	० ५४	४२ ५२	ब.	१९	१६	१९	फ.१	१२	३	मीन			७	१८	१७	५४	९	१८	१३	६	श्री(लक्ष्मी)पञ्चमी, वसन्त पञ्चमी, श्रीलक्ष्मी-सरस्वती पूजन,(B)
२६	३४	६	गु.	४३	३२	रेव.	३४	४४	सा.	४८	३०	कौ.	१५	३३	२०	२	१३	४	मेष	३४	४४	७	१७	१७	५५	९	१९	१४	०	पंचक समाप्त ३४/४४,
२६	३८	७	शु.	३८	५२	अश्वि.	३१	५१	शु.	४१	४०	ग.	११	१२	२१	३	१४	५	मेष			७	१७	१७	५६	९	२०	१४	५३	भ. ३८/५२ बाद, बुध मकर में १५/०२, आरोग्यसप्तमी,(C)
२६	४२	८	श.	३३	४१	भर.	२८	२७	शु.	३४	२५	वि.	६	१६	२२	४	१५	६	वृष	४२	३१	७	१६	१७	५७	९	२१	१५	४५	भ. ६/१६ तक, नेप्च्यून शत. ४ में २७/४०, भीष्माष्टमी,
२६	४६	९	र.	२८	७	कृत्ति.	२४	३९	ब्र.	२६	५२	बा.	०	५४	२३	५	१६	७	वृष			७	१५	१७	५८	९	२२	१६	३४	सूर्य धनि. में ५८/१२, गुप्तनवरात्र समाप्त,
२६	५०	१०	चं.	२२	१७	रोहि.	२०	३५	ऐं.	१९	६	ग.	२२	१७	२४	६	१७	८	मिथुन	४८	२९	७	१५	१७	५९	९	२३	१७	२३	भ. ४६/२० बाद, गुरु वक्री १२/५०,
२६	५४	११	मं.	१६	२४	मृग.	१६	२७	वै.	११	१७	वि.	१६	२४	२५	७	१८	९	मिथुन			७	१४	१७	५९	९	२४	१८	१०	भ. १६/२४ तक, जया एकादशीव्रत (स.), भीष्मद्वादशी,
२६	५८	१२	बु.	१०	४१	आर्द्रा	१२	३०	वि. प्री.	३ ५६	३५ ११	बा.	१०	४१	२६	८	१९	१०	कर्क	५४	४६	७	१३	१८	०	९	२५	१८	५५	प्रदोषव्रत,
२७	२	१३	गु.	५	२३	पुन.	८	५८	आ.	४९	१९	तै.	५	२३	२७	९	२०	११	कर्क			७	१२	१८	१	९	२६	१९	४०	
२७	६	१४	शु.	०	४७	पुष्य	६	९	सौ.	४३	१२	व.	०	४७	२८	१०	२१	१२	कर्क			७	१२	१८	२	९	२७	२०	२२	भ. ०/४७ से २८/५७ तक, बुध श्रवण में ३/२५, (D)
अवम		१५	शु.	५७	८	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथिक्षय,

(A) शुक्र उ.भा. में २५/००, वरद्-तिल-कुन्दचतुर्थी, (B) फरवरी प्रारम्भ, (C) रथ सप्तमी (पूर्वारुणोदयवाली), (D) राहु मघा ३, केतु शत.१ में १३/२२, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघी - पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ४ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २१ १५ ४५	० १८ ५४ १६	११ १० ५६ ५४	९ ० ५७ ३३	६ २६ २ १७	११ ६ १० २४	८ ० ४६ ५७	४ १० २० १	१० १० २० १
६० ५०	८५१ ३१	४४ ३६	८६ १२	० २०	४६ ३१	५ १८	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	मा.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
श्रव. ४	भर. २	उ.भा. ३	उ.षा. २	विशा. २	उ.भा. १	मूल १	मघा ४	शत. २

कुण्डली सूर्योदय (४ फर.)

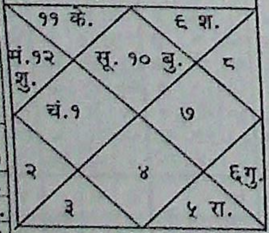

लोकभविष्य:- माघ शुक्ल प्रतिपदा को शनिवार है । अतः कुछ क्षेत्र दुर्भिक्ष की चपेट में रहें, कहीं वर्षा का अभाव भी रहे- " सूर्यपुत्रो यदा याति कदाचिद्दैव-योगतः ।
दुर्भिक्षं जायते घोरं न मेघा जलदाः खलु ।।"

मंगल-शुक्र का गुरु के साथ समसप्तक होने से कहीं उग्रवाद से अशान्ति संभव है ।

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- २९ जनवरी से ५ फरवरी तक सोना, चान्दी, दालवाना, चावल, मोती, रुई, कपास, गुड़, खाण्ड में तेजी रहे । लगभग ६/८ फरवरी को बाजार मन्दे रहें । ९, १० फरवरी को घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल, तेल, कपास, हींग, दाख तेज हों ।

आकाशलक्षण:- ३१ जनवरी एवम् ३, ५, ६, ८, ९, १० फरवरी को वायुवेग रहे । उत्तरी भारत के कुछ भागों में कहीं बादलचाल रहे । ऋतु-परिवर्तन के आसार अनुभव होने लगेंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (१० फर.)

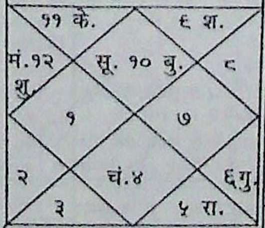

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १० फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९ २७ २० २३	३ १४ १५ ३२	११ १५ २४ २	९ ६ ४८ १८	६ २६ १ २७	११ १० ३३ ५५	८ १ १७ ४४	४ १० ० ५६	१० १० ० ५६
६० ४१	८२८ १६	४४ २४	६१ ३०	० ४८	३९ ५९	४ ५४	३ ११	३ ११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. २	पुष्य ४	उ.भा. ४	उ.षा. ४	विशा. २	उ.भा. ३	मूल १	मघा ४	शत. २

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, फाल्गुन कृष्ण पक्ष २२

(११ से २६ फरवरी तक, सन् २०१७ ई.)

उत्तरायण, दक्षिणगोल, शिशिर-वसन्त ऋतु।

१८ फर. को बुध पूर्व में अस्त हो जाएगा । प्रातः श. पूर्वकपाल में और गु. याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में दीखेगा । सायं शु.मं. पश्चिम-क्षितिजासन्न दीखेंगे ।

दिनमान		तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		करण	समाप्ति-काल		तारीखें प्र.	अं.	श.	मु.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय		सूर्यास्त		स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.)				
घ.	प.			घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.		घ.	प.	माघ	फरवरी	माघ	ज.उ.ऌ.		घ.	प.	घं.	मि.	घं.	मि.	रा.	अं.	क.	वि.	
२७	१०	१	श.	५४	४५	आश्ले.	४	१९	शो.	३८	०	बा.	२५	५६	२९	११	२२	१३	सिंह	४	१९	७	११	१८	३	९	२८	२१	४	मंगल रेव. में ३८/३०,
२७	१५	२	र.	५३	४९	मघा	३	४३	अ.	३३	५५	तै.	२४	१७	फा.१	१२	२३	१४	सिंह			७	१०	१८	४	९	२९	२१	४४	सं. सूर्य कुम्भ में ३३/४३, मु. ३०, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
२७	१९	३	चं.	५४	२९	पू.फा.	४	३५	सु.	३१	४	व.	२४	०९	२	१३	२४	१५	कन्या	२०	२	७	९	१८	४	१०	०	२२	२२	भ. २४/०६ से ५४/२६ तक,
२७	२३	४	मं.	५६	४९	उ.फा.	७	०	धृ.	२९	२८	ब.	२५	३९	३	१४	२५	१६	कन्या			७	८	१८	५	१०	१	२३	०	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
२७	२७	५	बु.	६०	०	हस्त	११	१	शू.	२९	६	कौ.	२८	४४	४	१५	२६	१७	तुला	४३	३३	७	७	१८	६	१०	२	२३	३६	
२७	३२	५	गु.	०	४०	चित्रा	१६	२६	गं.	२९	४८	तै.	०	४०	५	१६	२७	१८	तुला			७	६	१८	७	१०	३	२४	११	
२७	३६	६	शु.	५	५०	स्वाती	२३	०	वृ.	३१	२०	व.	५	५०	६	१७	२८	१९	तुला			७	५	१८	८	१०	४	२४	४४	भ. ५/५० से ३८/४६ तक,
२७	४१	७	श.	११	४९	विशा.	३०	१४	ध्रु.	३३	२१	ब.	११	४९	७	१८	२९	२०	वृश्चिक	१३	२५	७	४	१८	९	१०	५	२५	१७	बुध धनि. में ३०/००, सूर्य सायन मीन में १७ घं. ०२ मि.,(A)
२७	४५	८	र.	१८	६	अनु.	३७	३७	व्या.	३५	२८	कौ.	१८	६	८	१९	३०	२१	वृश्चिक			७	३	१८	९	१०	६	२५	४८	सूर्य शत. में १०/१२,
२७	४९	९	चं.	२४	७	ज्येष्ठा	४४	३५	ह.	३७	१६	ग.	२४	७	९	२०	फा.१	२२	धनु	४४	३५	७	२	१८	१०	१०	७	२६	१७	भ. ५६/४३ बाद, शक फाल्गुन प्रारम्भ,
२७	५४	१०	मं.	२९	१९	मूल	५०	३९	व.	३८	२५	वि.	२९	१९	१०	२१	२	२३	धनु			७	१	१८	११	१०	८	२६	४६	भ. २६/१६ तक, शुक्र रेव. में ३/२५,
२७	५८	११	बु.	३३	१८	पू.षा.	५५	२६	सि.	३८	३५	ब.	१	१८	११	२२	३	२४	धनु			७	०	१८	१२	१०	९	२७	१३	बुध कुम्भ में २६/२०, विजया एकादशी व्रत (स.),
२८	३	१२	गु.	३५	४८	उ.षा.	५८	४५	व्य.	३७	३८	कौ.	४	३३	१२	२३	४	२५	मकर	११	२७	६	५९	१८	१२	१०	१०	२७	३९	
२८	७	१३	शु.	३६	४०	श्रव.	६०	०	व.	३५	२६	ग.	६	१४	१३	२४	५	२६	मकर			६	५८	१८	१३	१०	११	२८	३	भ. ३६/४० बाद, प्रदोषव्रत, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत,
२८	१२	१४	श.	३५	५८	श्रव.	०	३०	प.	३२	१	वि.	६	१९	१४	२५	६	२७	कुम्भ	३०	५०	६	५७	१८	१४	१०	१२	२८	२६	भ. ६/१६ तक, पंचक प्रारम्भ ३०/५०,
२८	१६	३०	र.	३३	५०	धनि. शत.	० ५९	४६ ४३	शि.	२७	२८	च.	४	५४	१५	२६	७	२८	कुम्भ			६	५६	१८	१५	१०	१३	२८	४७	बुध शत. में २०/०२,

(A) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त ७ घं. ०४ मि.,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १९ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	६	५	११	८	४	१०
६	८	२२	२४	२८	१५	१	६	६
२५	२६	२	२	४७	४४	५६	३२	३२
४८	४४	१८	४६	२६	५३	१३	१६	१६
६०	७१३	४४	६६	२	२६	४	३	३
३०	३४	५	२२	२६	५८	१४	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
धनि. ४	अनु. २	रेव. २	धनि. १	चित्रा २	उ.फा. ४	मूल १	मघा ३	शत. १

कुण्डली सूर्योदय (१९ फर.)

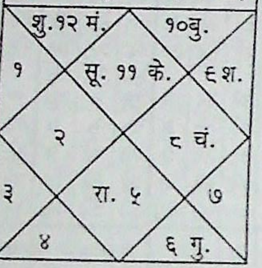

लोकभविष्य:- इस चान्द्रमास में पांच शनिवार एवं पांच इतवार हैं । अतः यह मास राजनीतिज्ञों के लिए भारी संकटपूर्ण रहेगा । किसी विशिष्ट व्यक्ति का पद रिक्त हो । कहीं दुर्भिक्ष की स्थिति बने । कहीं भूकम्प, अग्निकाण्ड व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से हानि हो -" दुर्भिक्षं छत्रभंगश्च वह्निदाहो महर्घता ।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुख:- ११ से १६ फर. तक घी, तेल, अलसी, एरण्ड, मूंगफली आदि तिलहन, लहसुन, रुई, जौ, चना, चावल, नमक तेज रहें । गुड़, खाण्ड, शक्कर मन्दे रहें । १८/१९ फर. को सोना, चान्दी, तिलहन, हल्दी, सोंठ, चावल तेज; आगे २० फरवरी को बाजार मन्दे; २२ फरवरी के लगभग बाजारों में तेजी का उछाला रहे ।

आकाशलक्षण:- ११, १२, १७ से २०, २२, २६ फरवरी को लंका, नेपाल के पूर्वी छोर, शिलांग व अन्य कुछ भागों में बादलचाल व बूंदाबांदी हो । उ. भारत में हवा का जोर रहे एवम् वसन्त ऋतु का आगमन हो ।

कुण्डली सूर्योदय (२६ फर.)

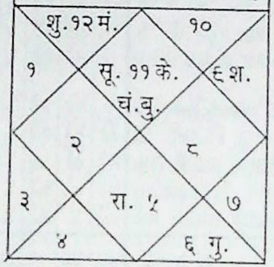

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २६ फरवरी,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	११	१०	५	११	८	४	१०
१३	५	२७	५	२८	१८	२	६	६
२८	४०	१०	५८	२६	१५	२७	१०	१०
४८	४७	५	१३	१७	१५	११	४	४
६०	८१३	४३	१०६	३	१३	३	३	३
२०	५१	४६	७	४४	३४	४०	११	११
		मा.	मा.	व.	मा.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
शत. ३	धनि. ४	रेव. ४	धनि. ४	चित्रा २	रेव. १	मूल १	मघा ३	शत. १

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, फाल्गुन शुक्ल पक्ष २३

बुध अस्त है । प्रातः श. पूर्वकपाल में और गुरु याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में होगा । सायं शु. पश्चिमक्षितिज में और उससे ऊपर मं. होगा ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	तारीखें अं. फरवरी	तारीखें श. फाल्गुन	तारीखें मु. ज.उ.ल.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ (भा. स्टैं. टा.) सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२८	२१	१	चं.	३०	२८	पू.भा.	५७	३३	सि.	२१	५६	किं.	२	९	१६	२७	८	२९	मीन	४३	११	६	५५	१८	१५	१०	१४	२९	७	
२८	२६	२	मं.	२६	६	उ.भा.	५४	३३	सा.	१५	३४	कौ.	२६	६	१७	२८	९	३०	मीन			६	५४	१८	१६	१०	१५	२९	२५	चन्द्रदर्शन(दिखें पृ. 17), मु. ४५,अवतारदिन श्री रामकृष्ण परमहंस.
२८	३०	३	बु.	२१	१	रेव.	५०	५८	शु.	८	३६	ग.	२१	१	१८	मा.१	१०	ज.१	मेष	५०	५८	६	५३	१८	१७	१०	१६	२९	४१	भ. ४८/१४ बाद, पंचक समाप्त ५०/५८, मंगल अश्वि. (A)
२८	३५	४	गु.	१५	२८	अश्वि.	४७	३	शु. ब्र.	१ ५३	१० ३३	वि.	१५	२८	१९	२	११	२	मेष			६	५२	१८	१८	१०	१७	२९	५५	भ. १५/२८ तक,
२८	३९	५	शु.	९	४२	भर.	४३	२	ऐं.	४५	५२	बा.	९	४२	२०	३	१२	३	वृष	५७	२	६	५१	१८	१८	१०	१८	३०	७	
२८	४४	६	श.	३	५४	कृत्ति.	३९	८	वै.	३८	१८	तै.	३	५४	२१	४	१३	४	वृष			६	४९	१८	१९	१०	१९	३०	१६	भ. ५८/१५ बाद, सूर्य पू.भा. में २६/२२, शुक्र वक्री १९/३७,
अवम		७	श.	५८	१५	० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथिक्षय,
२८	४९	८	र.	५२	५७	रोहि.	३५	३०	वि.	३०	५६	वि.	२५	३६	२२	५	१४	५	वृष			६	४८	१८	२०	१०	२०	३०	२४	भ. २५/३६ तक, बुध पू.भा. में ३८/००, होलाष्टक प्रारम्भ,
२८	५३	९	चं.	४८	६	मृग.	३२	१७	प्री.	२३	५४	बा.	२०	३१	२३	६	१५	६	मिथुन	३	५१	६	४७	१८	२१	१०	२१	३०	३०	
२८	५८	१०	मं.	४३	४९	आर्द्रा	२९	३५	आ.	१७	१८	तै.	१५	५७	२४	७	१६	७	मिथुन			६	४६	१८	२१	१०	२२	३०	३३	
२९	३	११	बु.	४०	११	पुन.	२७	३१	सौ.	११	११	व.	१२	०	२५	८	१७	८	कर्क	१२	५९	६	४५	१८	२२	१०	२३	३०	३५	भ. १२/०० से ४०/११ तक, आमला एकादशी व्रत, (स.),
२९	७	१२	गु.	३७	१९	पुष्य	२६	१०	शो.	५	३७	ब.	८	४५	२६	९	१८	९	कर्क			६	४४	१८	२३	१०	२४	३०	३४	गोबिन्द द्वादशी,
२९	१२	१३	शु.	३५	१८	आश्ले.	२५	३९	अ. सु.	० ५६	४० २८	कौ.	६	१८	२७	१०	१९	१०	सिंह	२५	३९	६	४२	१८	२३	१०	२५	३०	३१	बुध मीन में ४९/४७, प्रदोषव्रत,
२९	१७	१४	श.	३४	१६	मघा	२६	४	धृ.	५३	५	ग.	४	४७	२८	११	२०	११	सिंह			६	४१	१८	२४	१०	२६	३०	२६	भ.३४/१६ बाद,
२९	२१	१५	र.	३४	१९	पू.फा.	२७	३२	शू.	५०	३४	वि.	४	१७	२९	१२	२१	१२	कन्या	४३	३	६	४०	१८	२५	१०	२७	३०	१९	भ. ४/१७ तक, बुध उ.भा. में ३१/४०, श्रीसत्यनारायण (B)

होलाष्टक
५ से १२ मार्च

(A) मेष में ४९/३०, जमद-उस्सानी मु. प्रारम्भ, मार्च प्रारम्भ, (B) व्रत, होलाष्टक समाप्त, होलिकादहन (प्रदोष में), जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) ५ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	०	१०	५	११	८	४	१०
२०	१४	२	१८	२७	१९	२	८	८
३०	९	१६	४२	५६	२	५१	४७	४७
२५	४७	०	१३	३७	३९	२	४९	४९
६०	८५०	४३	११३	४	२	३	३	३
५	२०	३२	९	५३	४७	४	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. १	रोहि. २	अश्वि. १	शत. ४	चित्रा २	रेव. १	मूल १	मघा ३	शत. १

कुण्डली सूर्योदय (५ मार्च)

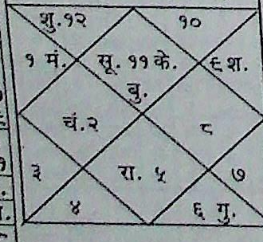

लोकभविष्यः- सूर्य कुम्भस्थ है एवम् मीनस्थ शुक्र का गुरु के साथ समसप्तक होने से प्रजा में रोगभय एवम् किसी क्षेत्र में प्राकृतिक प्रकोप हो-

" शनिक्षेत्रे यदा भानुरन्नस्य महर्घता ।
शुक्रे भौमे गुरुक्षेत्रे रोगपीड़ा महत्यपि ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः- पक्षारम्भ में बाजारों में उथल-पुथल रहे । १ से ४ मार्च तक प्रत्येक जाति के अनाज, रुई, कपास, वारदाना, सोना, चान्दी, गुड़, खाण्ड तेज रहें । ४ से १२ मार्च तक वायदा एवम् हाजर व्यापार में जोरदार तेजी-मन्दी के झटके आएंगे ।

कुण्डली सूर्योदय (१२ मार्च)

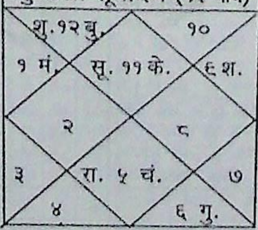

आकाशलक्षणः- १ से ४ मार्च एवम् ४ से १२ मार्च तक मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, लंका, बंगाल, आसाम आदि के कुछ भागों में कहीं बादलचाल एवम् बूंदाबांदी हो ।

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) १२ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	०	११	५	११	८	४	१०
२७	२०	७	२	२७	१७	३	८	८
३०	५	१९	११	१९	५०	१०	२५	२५
२०	३	५०	५४	२३	२५	३२	३४	३४
५९	७७४	४३	११८	५	२०	२	३	३
५१	४५	१४	१२	५३	१२	२५	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
पू.भा. ३	पू.फा. ३	अश्वि. ३	पू.भा. ४	चित्रा २	रेव. १	मूल १	मघा ३	शत. १

श्री वि. सं. २०७३, शाक १९३८, चैत्र कृष्ण पक्ष २४

(१३ से २८ मार्च तक, सन् २०१७ ई.)
उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतु।

२१ मार्च को बुध पश्चिम में उदित होगा । शु. २२ मार्च को पश्चिम में अस्त होकर २५ मार्च को पूर्व में दृश्य हो जाएगा । प्रातः श. याम्योत्तर-वृत्तासन्न और गु. पश्चिमकपाल में दीखेगा । सायं मं. को पश्चिमक्षितिज में देख सकते हैं ।

दिनमान घ.	दिनमान प.	तिथि	वार	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	योग	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	करण	समाप्ति-काल घ.	समाप्ति-काल प.	तारीखें प्र. फाल्गुन	अं. मार्च	श. फाल्गुन	मु. ज.उ.सा.	चन्द्रराशि-प्रवेशकाल	घ.	प.	चण्डीगढ़ भा. स्टैं. टा. सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	स्पष्ट सूर्य प्रातः ५घं. ३०मि. (भा. स्टैं. टा.) रा.	अं.	क.	वि.	
२९	२६	१	चं.	३५	३२	उ.फा.	३०	७	गं.	४८	५८	बा.	४	५५	३०	१३	२२	१३	कन्या			६	३९	१८	२५	१०	२८	३०	१०	वसन्तोत्सव, होला मेला श्री आनन्दपुर साहिब(पं.),
२९	३१	२	मं.	३८	०	हस्त	३३	५५	वृ.	४८	२१	तै.	६	४६	चै.१	१४	२३	१४	कन्या			६	३८	१८	२६	१०	२९	२९	५९	सं.सूर्य मीन में २७/१७, मु. ३०, पुण्यकाल (A)
२९	३५	३	बु.	४१	४१	चित्रा	३८	५४	धु.	४८	३९	व.	९	५०	२	१५	२४	१५	तुला	६	१८	६	३६	१८	२७	११	०	२९	४७	भ. ९/५० से ४१/४१ तक, वक्री शुक्र (B)
२९	४०	४	गु.	४६	३०	स्वाती	४४	५७	व्या.	४९	४७	ब.	१४	५	३	१६	२५	१६	तुला			६	३५	१८	२७	११	१	२९	३२	शनि मूल २ में ७/३२, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, (C)
२९	४५	५	शु.	५२	१०	विशा.	५१	५१	ह.	५१	३४	कौ.	१९	२०	४	१७	२६	१७	वृश्चिक	३५	६	६	३४	१८	२८	११	२	२९	१६	सूर्य उ.भा. में ४८/२०,
२९	५०	६	श.	५८	२०	अनु.	५९	१२	व.	५३	४४	ग.	२५	१५	५	१८	२७	१८	वृश्चिक			६	३३	१८	२९	११	३	२८	५७	भ. ५८/२० बाद, वक्री गुरु चित्रा १ में १८/२७,
२९	५४	७	र.	६०	०	ज्येष्ठा	६०	०	सि.	५५	५५	वि.	३१	२६	६	१९	२८	१९	वृश्चिक			६	३१	१८	२९	११	४	२८	३८	भ. ३१/२६ तक, बुध रेव. में २०/४५, शुक्र वार्धक्य(D)
२९	५९	७	चं.	४	३२	ज्येष्ठा	६	३७	व्य.	५७	४३	ब.	४	३२	७	२०	२९	२०	धनु	६	३७	६	३०	१८	३०	११	५	२८	१६	मंगल भर. में १९/१२, सूर्य सायन मेष में १५ घं. ५८ मि., (E)
३०	४	८	मं.	१०	६	मूल	१३	२४	व.	५८	४७	कौ.	१०	६	८	२१	३०	२१	धनु			६	२९	१८	३०	११	६	२७	५२	बुध पश्चिम में उदित १८ घं. ३० मि. श्रीशीतलाष्टमी,
३०	८	९	बु.	१४	३५	पू.षा.	१९	७	प.	५८	४६	ग.	१४	३५	९	२२	चै.१	२२	मकर	३५	२०	६	२८	१८	३१	११	७	२७	२७	भ. ४६/०३ बाद, शुक्र पश्चिम में अस्त १८ घं. ३१ मि.,(F)
३०	१३	१०	गु.	१७	३२	उ.षा.	२३	२१	शि.	५७	२४	वि.	१७	३२	१०	२३	२	२३	मकर			६	२७	१८	३२	११	८	२७	०	भ. १७/३२ तक,
३०	१८	११	शु.	१८	४०	श्रव.	२५	४८	सि.	५४	३५	बा.	१८	४०	११	२४	३	२४	कुम्भ	५६	१९	६	२५	१८	३२	११	९	२६	३२	पंचक प्रारम्भ ५६/१९, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.) ,
३०	२२	१२	श.	१७	५४	धनि.	२६	२५	सा.	५०	१६	तै.	१७	५४	१२	२५	४	२५	कुम्भ			६	२४	१८	३३	११	१०	२६	१	शुक्र पूर्व में उदित ६ घं. २४ मि., शनिप्रदोषव्रत, (G)
३०	२७	१३	र.	१५	१६	शत.	२५	१३	शु.	४४	३३	व.	१५	१६	१३	२६	५	२६	कुम्भ			६	२३	१८	३४	११	११	२५	२९	भ. १५/१६ से ४३/०६ तक, मेला पिहोवा तीर्थ (हरि.),(H)
३०	३२	१४	चं.	१०	५७	पू.भा.	२२	२५	शु.	३७	३६	श.	१०	५७	१४	२७	६	२७	मीन	८	१५	६	२२	१८	३४	११	१२	२४	५५	बुध अश्विनी मेष में ३/१०,
३०	३६	३०	मं.	५	१७	उ.भा.	१८	२०	ब्र.	२९	४०	ना.	५	१७	१५	२८	७	२८	मीन			६	२०	१८	३५	११	१३	२४	१९	शुक्रबाल्य समाप्त ६ घं. २४ मि., भौमवती अमा, चान्द्रसंवत्सर (I)
अवम		१	मं.	५८	३१	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथिक्षय,

शुक्र अस्त २२ मार्च

शुक्र उदित २५ मार्च

(A) ११घं. ०९मि. बाद, (B) उ.भा. में ४/०२, (C) मेला शीतला माता (कुराली) पं., (D) प्रारम्भ १८ घं. ३१ मि.,(E) उत्तरगोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन, (F) शक चैत्र (संवत् १९३९) प्रारम्भ, (G) महावारुणी पर्व (१९ घं. ५८ मि. से सूर्यास्त तक)(देखें पृ. 17), (H) वारुणी पर्व (सूर्योदय से १२ घं. २६ मि.(I.S.T.) तक)(देखें पृ. 17), (I) (२०७३ वि.) पूर्ण, चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर २०७४ वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ (देखें पृ. 17), वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र प्राशन,

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २१ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	११	५	११	८	४	१०
६	१०	१३	१९	२६	१३	३	७	७
२७	८	४७	४२	२२	३५	२८	५६	५६
५३	५८	२३	२०	१४	३२	५४	५८	५८
५९	७२६	४२	११०	६	३६	१	३	३
३५	५९	५१	४	५३	१	३३	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	अ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. १	मूल ४	भर. १	रेव. १	चित्रा १	उ.भा. ४	मूल २	मघा ३	शत. १

कुण्डली सूर्योदय (२१ मार्च)

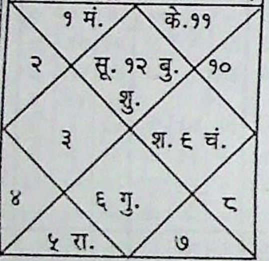

लोकभविष्यः:- चैत्रसंक्रान्ति एवम् अमावस मंगलवारी हैं । गुरु, शुक्र दोनों वक्री भी हैं; अतः उड़ीसा, बिहार, उ.प्र. एवम् जम्मू-काश्मीर में अशान्ति व उपद्रव से जनजीवन त्रस्त रहे । शनि मूल नक्षत्रस्थ होने से जनता में रोगों से कष्ट रहे एवम् पशुओं को भी रोग आदि से हानि हो –

" यदि मूलगतः सौरिर्बहुपीड़ा प्रजायते ।
पशूनां च नराणां च रोगपीड़ा महत्यति ।।"

ग्रहचाल और बाज़ार का रुखः:- १४ से १७ मार्च तक तिल, तेल, अलसी, रूई, सोना तेज रहें। १८ से २० मार्च के लगभग तक लालचन्दन-मिर्च तेज; अनाज, रूई, शेयर मन्दे हों । २० मार्च को अनाज, सोना, चान्दी एवम् रूई में तेजी रहे । २३ से २६ मार्च तक सोना, चान्दी, गुड़, सूत, घी, तेल, तिलहन मन्दे रहें । रूई में तेजी रहे ।

आकाशलक्षणः:- १४, १६ से २०, २३, २५, २६ मार्च के लगभग आसाम, महाराष्ट्र, प. राजस्थान, काश्मीर में तेज हवाओं के साथ कहीं खण्डवृष्टि हो । उ. भारत में तापमान बढ़ने लगे ।

"चन्द्रमौलि-शंकरचरण बार-बार सिरनाय । संवत् यह पूरण कियो गिरा-गणेश मनाय ।।"

कुण्डली सूर्योदय (२८ मार्च)

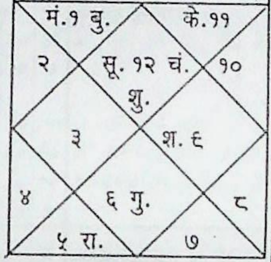

ग्रह स्पष्ट, प्रातः ५ घं.३० मि. (I.S.T.) २८ मार्च,

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०	०	५	११	८	४	१०
१३	११	१८	१	२५	९	३	७	७
२४	४५	४६	१९	३२	१५	३७	३४	३४
१९	२८	२९	१०	१९	१९	४४	४३	४३
५९	८६६	४२	८१	७	३६	०	३	३
२२	४८	३४	३७	२५	२४	५२	११	११
		मा.	मा.	व.	व.	मा.	व.	व.
		उ.	उ.	उ.	उ.	उ.	अ.	अ.
उ.भा. ४	उ.भा. ३	भर. २	अश्वि. १	चित्रा १	उ.भा. २	मूल २	मघा ३	शत. १

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
पौष कृष्ण	1	7	शु.	21 39	उ.फा.	20 27	सौ.	14 28	कन्या		7 24	17 27	7 18	17 31	7 20	17 40	6 47	17 15	1	भ. 8/23 तक, इंग्लिश नववर्ष (2016 ई.) प्रारम्भ,
	2	8	श.	24 22	हस्त	23 35	शो.	15 25	कन्या		7 24	17 28	7 18	17 31	7 20	17 41	6 48	17 15	2	
	3	9	र.	26 59	चित्रा	26 36	अ.	16 21	तुला	13 7	7 25	17 29	7 18	17 32	7 20	17 41	6 48	17 16	3	
	4	10	चं.	29 13	स्वाती	29 17	सु.	17 6	तुला		7 25	17 29	7 19	17 33	7 20	17 42	6 48	17 17	4	भ. 16/06 से 29/13 तक, मंगल स्वाती में 28/32,
	5	11	मं.	30 54	विशा.	— —	धृ.	17 28	वृश्चिक	24 57	7 25	17 30	7 19	17 34	7 21	17 43	6 48	17 17	5	बुध वक्री 18/34, सफला एकादशी व्रत (स्मा.),
	6	12	बु.	— —	विशा.	7 26	शू.	17 23	वृश्चिक		7 25	17 31	7 19	17 34	7 21	17 44	6 49	17 18	6	सफला एकादशी व्रत (वै.),
	7	12	गु.	7 54	अनु.	8 56	गं.	16 47	वृश्चिक		7 25	17 32	7 19	17 35	7 21	17 44	6 49	17 19	7	प्रदोषव्रत,
	8	13	शु.	8 14	ज्येष्ठा	9 47	वृ.	15 39	धनु	9 47	7 25	17 32	7 19	17 36	7 21	17 45	6 49	17 20	8	भ. 8/14 से 20/04 तक, बुध पश्चिम में अस्त 17/32,(A)
	9	14/	श.	7 54	मूल	10 0	ध्रु.	14 2	धनु		7 25	17 33	7 19	17 37	7 21	17 46	6 49	17 20	9	शनैश्चरी अमा,
		30		31 0																अमावस तिथिक्षय,
पौष शुक्ल	10	1	र.	29 40	पू.षा.	9 42	व्या.	12 0	मकर	15 32	7 25	17 34	7 19	17 37	7 21	17 47	6 49	17 21	10	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	11	2	चं.	28 0	उ.षा.	8 57	ह./	9 38	मकर		7 25	17 35	7 19	17 38	7 21	17 47	6 49	17 22	11	चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य उ.षा. में 18/56,
							व.	31 1												
	12	3	मं.	26 6	श्रव./	7 54	सि.	28 15	कुम्भ	19 18	7 25	17 36	7 19	17 39	7 21	17 48	6 49	17 23	12	पंचक प्रारम्भ 19/18,
					धनि.	30 39														
	13	4	बु.	24 5	शत.	29 18	व्य.	25 23	कुम्भ		7 25	17 37	7 19	17 40	7 21	17 49	6 49	17 23	13	भ. 13/06 से 24/05 तक, लोहड़ी (पंजाब, हरि., ज. का.),
	14	5	गु.	22 1	पू.भा.	27 55	व.	22 29	मीन	22 16	7 25	17 37	7 19	17 41	7 21	17 50	6 49	17 24	14	सं. सूर्य मकर में 25/26, मु. 30, पुण्यकाल अगले दिन (B)
	15	6	शु.	19 57	उ.भा.	26 32	प.	19 34	मीन		7 25	17 38	7 19	17 41	7 21	17 51	6 49	17 25	15	
	16	7	श.	17 56	रेव.	25 13	शि.	16 42	मेष	25 13	7 25	17 39	7 19	17 42	7 21	17 51	6 49	17 26	16	भ. 17/56 से 28/57 तक, पंचक समाप्त 25/13, (C)
	17	8	र.	15 58	अश्वि.	23 57	सि.	13 53	मेष		7 25	17 40	7 19	17 43	7 21	17 52	6 49	17 26	17	
	18	9	चं.	14 5	भर.	22 47	सा.	11 8	वृष	28 31	7 24	17 41	7 19	17 44	7 21	17 53	6 49	17 27	18	शुक्र मूल धनु में 30/21,
	19	10	मं.	12 19	कृत्ति.	21 45	शु./	8 28	वृष		7 24	17 42	7 19	17 45	7 21	17 54	6 49	17 28	19	भ. 23/31 बाद,
							शु.	29 55												
	20	11	बु.	10 43	रोहि.	20 54	ब्र.	27 32	वृष		7 24	17 43	7 18	17 46	7 21	17 55	6 49	17 29	20	भ. 10/43 तक, सूर्य सायन कुम्भ में 20/57, पुत्रदा (D)
	21	12	गु.	9 20	मृग.	20 17	ऐं.	25 22	मिथुन	8 33	7 24	17 44	7 18	17 46	7 20	17 55	6 49	17 29	21	बुध पूर्व में उदित 7/24, प्रदोषव्रत,
	22	13	शु.	8 14	आर्द्रा	19 59	वै.	23 28	मिथुन		7 23	17 45	7 18	17 47	7 20	17 56	6 48	17 30	22	
	23	14/	श.	7 31	पुन.	20 7	वि.	21 55	कर्क	14 2	7 23	17 45	7 18	17 48	7 20	17 57	6 48	17 31	23	भ. 7/31 से 19/24 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, पौषीपूर्णिमा (E)
		15		31 16																पूर्णिमा तिथिक्षय,
माघ कृष्ण	24	1	र.	— —	पुष्य	20 44	प्री.	20 46	कर्क		7 22	17 46	7 17	17 49	7 20	17 58	6 48	17 32	24	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य श्रव. में 21/15,
	25	1	चं.	7 33	आश्ले.	21 54	आ.	20 3	सिंह	21 54	7 22	17 47	7 17	17 50	7 19	17 59	6 48	17 32	25	बुध मार्गी 27/19,
	26	2	मं.	8 26	मघा	23 39	सौ.	19 48	सिंह		7 22	17 48	7 16	17 51	7 19	17 59	6 47	17 33	26	भ. 21/10 बाद, भारत गणतन्त्र दिवस,
	27	3	बु.	9 55	पू.फा.	25 57	शो.	20 0	सिंह		7 21	17 49	7 16	17 51	7 19	18 0	6 47	17 34	27	भ. 9/55 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत,
	28	4	गु.	11 57	उ.फा.	28 43	अ.	20 34	कन्या	8 36	7 21	17 50	7 16	17 52	7 18	18 1	6 47	17 35	28	
	29	5	शु.	14 24	हस्त	— —	सु.	21 25	कन्या		7 20	17 51	7 15	17 53	7 18	18 2	6 46	17 35	29	शुक्र पू. षा. में 26/38, राहु उ.फा. 1 सिंह, केतु पू.भा. 3 (F)
	30	6	श.	17 5	हस्त	7 45	धृ.	22 22	तुला	21 18	7 20	17 52	7 15	17 54	7 17	18 2	6 46	17 36	30	भ. 17/05 से 30/24 तक, मंगल विशा. में 11/03,
	31	7	र.	19 44	चित्रा	10 51	शू.	23 16	तुला		7 19	17 53	7 14	17 55	7 17	18 3	6 46	17 37	31	शनि ज्येष्ठा 2 में 16/00,

(A) गुरु वक्री10/10, शुक्र ज्येष्ठा में 8/51,(B) मध्याह्न तक, मकर संक्रान्ति, वक्री बुध धनु में 15/01, (C) वक्री बुध पू.षा. में 28/36, अवतारदिन गुरु गोबिन्द सिंह जी, (D) एकादशी व्रत (स.), (E)माघस्नानप्रारम्भ,(F) कुम्भ में 25/52,

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ कृष्ण	1	8	चं.	22	5	स्वाती	13	46	गं.	23	57	तुला			7	18	17	54	7	14	17	56	7	16	18	4	6	45	17	38	1	
	2	9	मं.	23	56	विशा.	16	15	वृ.	24	13	वृश्चिक	9	41	7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	2	
	3	10	बु.	25	6	अनु.	18	8	धु.	23	59	वृश्चिक			7	17	17	55	7	13	17	57	7	15	18	6	6	44	17	39	3	भ. 12/31 से 25/06 तक,
	4	11	गु.	25	30	ज्येष्ठा	19	18	व्या.	23	10	धनु	19	18	7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	4	षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	5	12	शु.	25	8	मूल	19	43	ह.	21	45	धनु			7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	41	5	बुध उ.षा. में 20/18,
	6	13	श.	24	3	पू.षा.	19	25	व.	19	45	मकर	25	14	7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	6	भ. 24/03 बाद, सूर्य धनिष्ठा में 24/25, शनिप्रदोष व्रत,
	7	14	र.	22	20	उ.षा.	18	29	सि.	17	16	मकर			7	14	17	59	7	10	18	1	7	13	18	9	6	42	17	42	7	भ. 11/10 तक,
	8	30	चं.	20	9	श्रव.	17	3	व्य.	14	22	कुम्भ	28	11	7	14	18	0	7	9	18	1	7	12	18	9	6	42	17	43	8	पंचक प्रारम्भ 28/11, बुध मकर में 27/06, सोमवती (A)
माघ शुक्ल	9	1	पं.	17	36	धनि.	15	16	व.	11	9	कुम्भ			7	13	18	1	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	9	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, शुक्र उ.षा. में (B)
	10	2	बु.	14	52	शत.	13	15	प./	7	44	मीन	29	41	7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	10	
									शि.	28	14																					
	11	3	गु.	12	3	पू.भा.	11	9	सि.	24	44	मीन			7	11	18	2	7	7	18	4	7	10	18	12	6	40	17	45	11	भ. 22/40 बाद, गौरीतृतीया(गौंतरी), वरद–तिल–कुन्दचतुर्थी,
	12	4/	शु.	9	17	उ.भा.	9	7	सा.	21	20	मीन			7	10	18	3	7	6	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	12	भ. 9/17 तक, शुक्र मकर में 14/49, श्री(लक्ष्मी)पंचमी, (C)
		5		30	40																											पंचमी तिथिक्षय,
	13	6	श.	28	17	रेव./	7	12	शु.	18	5	मेष	7	12	7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	13	पंचक समाप्त 7/12, सं. सूर्य कुम्भ में 14/25, मु. 30, (D)
						अश्वि.	29	32																								
	14	7	र.	26	11	भर.	28	10	शु.	15	3	मेष			7	9	18	5	7	5	18	6	7	8	18	14	6	38	17	47	14	भ. 26/11 बाद, रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), आरोग्य– (E)
	15	8	चं.	24	27	कृत्ति.	27	9	ब्र.	12	17	वृष	9	53	7	8	18	6	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	15	भ. 13/19 तक, भीष्माष्टमी,
	16	9	मं.	23	4	रोहि.	26	29	ऐं.	9	48	वृष			7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	16	गुप्त नवरात्र समाप्त,
	17	10	बु.	22	6	मृग.	26	14	वै./	7	38	मिथुन	14	19	7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	35	17	49	17	बुध श्रवण में 8/09, वक्री गुरु पू.फा. 4 में 25/01,
									वि.	29	48																					
	18	11	गु.	21	33	आर्द्रा	26	23	प्री.	28	17	मिथुन			7	5	18	8	7	1	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	18	भ. 9/49 से 21/33 तक, जया एकादशी व्रत, (स.),
	19	12	शु.	21	26	पुन.	26	58	आ.	27	7	कर्क	20	47	7	4	18	9	7	1	18	10	7	4	18	17	6	34	17	50	19	सूर्य सायन मीन में 11/04, वसन्त ऋतु प्रारम्भ, सूर्य शत. (F)
	20	13	श.	21	46	पुष्य	27	59	सौ.	26	17	कर्क			7	3	18	10	7	0	18	10	7	3	18	18	6	33	17	50	20	मंगल वृश्चिक में 16/39, शुक्र श्रवण में 17/02, (G)
	21	14	र.	22	34	आश्ले.	29	27	शो.	25	49	सिंह	29	27	7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	21	भ. 22/34 बाद,
	22	15	चं.	23	50	मघा	–	–	अ.	25	43	सिंह			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	31	17	52	22	भ. 11/12 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीगुरुरविदास (H)
फाल्गुन कृष्ण	23	1	मं.	25	32	मघा	7	22	सु.	25	57	सिंह			7	0	18	12	6	57	18	13	7	1	18	20	6	31	17	52	23	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	24	2	बु.	27	39	पू.फा.	9	42	धृ.	26	29	कन्या	16	20	6	59	18	13	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	24	
	25	3	गु.	30	5	उ.फा.	12	24	शू.	27	15	कन्या			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	25	भ. 16/52 से 30/05 तक,
	26	4	शु.	–	–	हस्त	15	21	गं.	28	11	तुला	28	54	6	57	18	14	6	54	18	15	6	58	18	22	6	28	17	54	26	बुध धनि. में 16/54, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	27	.4	श.	8	42	चित्रा	18	27	वृ.	29	10	तुला			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	55	27	
	28	5	र.	11	21	स्वाती	21	30	धु.	30	2	तुला			6	55	18	16	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	28	मंगल अनु. में 15/20,
	29	6	चं.	13	48	विशा.	24	17	व्या.	30	39	वृश्चिक	17	37	6	54	18	16	6	51	18	17	6	55	18	23	6	25	17	56	29	भ. 13/48 से 26/50 तक.

(A) अमावस, मौनी अमावस, महोदययोग (सूर्योदय से 14 घं. 22 मि. तक), (B) 22/03, यूरेनस रेवती 3 में 15/03, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (C) वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी–सरस्वतीपूजन, (D) पुण्यकाल 8/01 बाद,
(E) सप्तमी, (F) में 28/53, भीष्म द्वादशी, (G) शनिप्रदोष व्रत, (H) जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त,

(E) ... (F) मे 28/53, भीष्म द्वादशी, (G) शनिप्रदोष व्रत, (H) जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, ... (D) पुण्यकाल 8/01 बाद.

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
फाल्गुन कृष्ण	1	7	मं.	15	51	अनु.	26	37	ह.	—	—	वृश्चिक			6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	24	17	56	1	बुध कुम्भ में 24/10.
	2	8	बु.	17	20	ज्येष्ठा	28	20	ह./	6	53	धनु	28	20	6	51	18	18	6	49	18	18	6	53	18	25	6	23	17	57	2	शुक्र धनि. में 11/48.
									व.	30	37																					
	3	9	गु.	18	5	मूल	29	19	सि.	29	45	धनु			6	50	18	19	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	भ. 30/03 बाद,
	4	10	शु.	18	2	पू.षा.	29	31	व्य.	28	15	धनु			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	भ. 18/02 तक, सूर्य पू.भा. में 11/15.
	5	11	श.	17	11	उ.षा.	28	58	व.	26	9	मकर	11	27	6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	बुध शत. में 26/43, विजया एकादशी व्रत (स.),
	6	12	र.	15	36	श्रव.	27	42	प.	23	28	मकर			6	47	18	21	6	44	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	प्रदोषव्रत,
	7	13	चं.	13	21	धनि.	25	52	शि.	20	18	कुम्भ	14	51	6	46	18	21	6	43	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	भ. 13/21 से 23/58 तक, पंचक प्रारम्भ 14/51, (A)
	8	14	मं.	10	34	शत.	23	36	सि.	16	44	कुम्भ			6	45	18	22	6	42	18	22	6	47	18	28	6	18	18	0	8	ग्रहणवेध,
	9	30/	बु.	7	24	पू.भा.	21	2	सा.	12	54	मीन	15	41	6	43	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	बुध पूर्व में अस्त 6/43, खण्डग्रास सूर्यग्रहण (B)
फाल्गुन शुक्ल		1		28	1																											फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय,
	10	2	गु.	24	34	उ.भा.	18	21	शु./	8	54	मीन			6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	चन्द्रदर्शन, मु. 30, ग्रहणवेध, अवतारदिन श्री रामकृष्ण परमहंस,
									शु.	28	53																					
	11	3	शु.	21	12	रेव.	15	42	ब्र.	24	58	मेष	15	42	6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	30	6	15	18	1	11	पंचक समाप्त 15/42, ग्रहणवेध, ,
	12	4	श.	18	3	अश्वि.	13	14	ऐं.	21	15	मेष			6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	भ. 7/37 से 18/03 तक, शुक्र शत. मे 30/25, ग्रहणवेध,
	13	5	र.	15	16	भर.	11	7	वै.	17	51	वृष	16	39	6	39	18	25	6	37	18	25	6	42	18	31	6	13	18	2	13	बुध पू.भा. मे 19/28,
	14	6	चं.	12	57	कृत्ति.	9	27	वि.	14	51	वृष			6	37	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	सं. सूर्य मीन में 11/17, मु. 45, पुण्यकाल 17/41 तक,
	15	7	मं.	11	12	रोहि.	8	19	प्री.	12	18	मिथुन	19	58	6	36	18	27	6	34	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ. 11/12 से 22/38 तक, वक्री गुरु पू.फा. 3 में 12/35,
	16	8	बु.	10	3	मृग.	7	46	आ.	10	15	मिथुन			6	35	18	27	6	33	18	26	6	39	18	32	6	10	18	4	16	होलाष्टक प्रारम्भ,
	17	9	गु.	9	32	आर्द्रा	7	51	सौ.	8	41	कर्क	26	19	6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. मे 19/37,
	18	10	शु.	9	38	पुन.	8	33	शो.	7	37	कर्क			6	32	18	29	6	31	18	28	6	36	18	33	6	8	18	5	18	भ. 21/59 बाद, बुध मीन में 28/37,
	19	11	श.	10	20	पुष्य	9	49	अ.	7	0	कर्क			6	31	18	29	6	30	18	28	6	35	18	34	6	6	18	5	19	भ. 10/20 तक, आमला एकादशी व्रत (स.),
	20	12	र.	11	32	आश्ले.	11	34	सु.	6	48	सिंह	11	34	6	30	18	30	6	29	18	29	6	34	18	34	6	5	18	5	20	सूर्य सायन मेष में 10/00, उत्तरगोल प्रारम्भ, (C)
	21	13	चं.	13	11	मघा	13	46	धृ.	6	57	सिंह			6	29	18	31	6	27	18	29	6	33	18	35	6	4	18	6	21	
	22	14	मं.	15	13	पू.फा.	16	18	शू.	7	24	कन्या	22	59	6	28	18	31	6	26	18	30	6	32	18	35	6	3	18	6	22	भ. 15/13 से 28/22 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत,
	23	15	बु.	17	30	उ.फा.	19	7	गं.	8	4	कन्या			6	26	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	2	18	7	23	शुक्र पू.भा. में 25/12, जन्मदिन श्रीचैतन्य महाप्रभु (D)
चैत्र कृष्ण	24	1	गु.	20	0	हस्त	22	6	वृ.	8	55	कन्या			6	25	18	33	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होलामेला (E)
	25	2	शु.	22	35	चित्रा	25	10	ध्रु.	9	52	तुला	11	38	6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	शनि वक्री 15/21,
	26	3	श.	25	9	स्वाती	28	12	व्या.	10	50	तुला			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	भ. 11/52 से 25/09 तक,
	27	4	र.	27	34	विशा.	—	—	ह.	11	46	वृश्चिक	24	23	6	21	18	34	6	21	18	33	6	27	18	38	5	58	18	9	27	बुध रेव. में 14/18, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	28	5	चं.	29	41	विशा.	7	5	व.	12	32	वृश्चिक			6	20	:8	35	6	19	18	33	6	25	18	38	5	57	18	9	28	
	29	6	मं.	—	—	अनु.	9	40	सि.	13	3	वृश्चिक			6	19	18	36	6	18	18	34	6	24	18	39	5	56	18	9	29	
	30	6	बु.	7	22	ज्येष्ठा	11	49	व्य.	13	12	धनु	11	49	6	18	18	36	6	17	18	34	6	23	18	39	5	55	18	10	30	भ. 7/22 से 19/55 तक,
	31	7	गु.	8	28	मूल	13	23	व.	12	53	धनु			6	16	18	37	6	16	18	35	6	22	18	40	5	54	18	10	31	सूर्य रेव. में 6/32, शुक्र मीन में 27/24, मेला (F)

सूर्यग्रहण–9 मार्च

होलाष्टक 16 से 23 मार्च

(A) शुक्र कुम्भ में 21/06, श्रीमहाशिवरात्रि व्रत, (B) (भारत के अधिकतर भाग में दृश्य), (C) महाविषुवदिन, बुध उ.भा. में 22/06, गोविन्द द्वादशी, प्रदोषव्रत, (D) होलिकादहन, होलाष्टक समाप्त, (E) श्री आनन्दपुर साहिब(पं.), (F) श्रीशीतलामाता (कुराली) पंजाब,

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	तिथि समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
चैत्र कृष्ण	1	8	शु.	8	54	पू.षा.	14	17	प.	12	3	मकर	20	23	6	15	18	38	6	15	18	35	6	21	18	40	5	53	18	11	1	राहु पू.फा. 4, केतु पू.भा. 2 में 23/52, प्लूटो पू.षा. 4 (A)
	2	9	श.	8	34	उ.षा.	14	26	शि.	10	36	मकर			6	14	18	38	6	14	18	36	6	20	18	41	5	52	18	11	2	भ. 20/01 बाद. बुध अश्विनी मेष में 27/44,
	3	10/	र.	7	28	श्रव.	13	50	सि./	8	33	कुम्भ	25	15	6	13	18	39	6	12	18	36	6	19	18	41	5	51	18	12	3	भ. 7/28तक, पंचक प्रारम्भ 25/15, शुक्र उ.भा. में (B)
		11		29	37				सा.	29	55																					एकादशी तिथिक्षय,
	4	12	चं.	27	7	धनि.	12	31	शु.	26	44	कुम्भ			6	12	18	39	6	11	18	37	6	18	18	42	5	50	18	12	4	पापमोचिनी एकादशी व्रत (वै.),
	5	13	मं.	24	4	शत.	10	34	शु.	23	7	मीन	26	47	6	10	18	40	6	10	18	38	6	17	18	42	5	49	18	12	5	भ. 24/04 बाद, बुध पश्चिम में उदित 18/40, (C)
	6	14	बु.	20	37	पू.भा./	8	8	ब्र.	19	8	मीन			6	9	18	41	6	9	18	38	6	16	18	43	5	48	18	13	6	भ. 10/21 तक, मेला पिहोवातीर्थ (हरि.),
						उ.भा.	29	20																								
	7	30	गु.	16	54	रेव.	26	21	ऐं.	14	57	मेष	26	21	6	8	18	41	6	8	18	39	6	15	18	43	5	47	18	13	7	पंचक समाप्त 26/21, चान्द्र संवत्सर 2072 वि. पूर्ण,
चैत्र शुक्ल	8	1	शु.	13	6	अश्वि.	23	22	वै.	10	40	मेष			6	7	18	42	6	7	18	39	6	14	18	44	5	46	18	14	8	चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30. चान्द्र संवत्सर(D)
	9	2/	श.	9	23	भर.	20	34	वि./	6	27	वृष	25	55	6	6	18	43	6	6	18	40	6	13	18	44	5	45	18	14	9	गौरी तृतीया (गणगौर), आन्दोलन तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती,
		3		29	56				प्री.	26	26																					तृतीया तिथिक्षय,
	10	4	र.	26	54	कृत्ति.	18	7	आ.	22	44	वृष			6	4	18	43	6	5	18	40	6	12	18	45	5	44	18	15	10	भ. 16/25 से 26/54 तक, बुध भरणी में 8/23,
	11	5	चं.	24	27	रोहि.	16	11	सौ.	19	30	मिथुन	27	27	6	3	18	44	6	4	18	41	6	10	18	45	5	43	18	15	11	श्रीलक्ष्मी पंचमी, नागपंचमी, हयव्रत,
	12	6	मं.	22	41	मृग.	14	54	शो.	16	49	मिथुन			6	2	18	45	6	2	18	41	6	9	18	46	5	42	18	16	12	स्कन्दषष्ठी, [अर्धकुम्भ–हरिद्वार]
	13	7	बु.	21	41	आर्द्रा	14	21	अ.	14	44	मिथुन			6	1	18	45	6	1	18	42	6	8	18	46	5	41	18	16	13	भ. 21/41 बाद, सं. सूर्य अश्वि. (E) [13 अप्रैल(देखें पृ. 19]
	14	8	गु.	21	29	पुन.	14	36	सु.	13	17	कर्क	8	28	6	0	18	46	6	0	18	43	6	7	18	47	5	40	18	16	14	भ. 9/35 तक, शुक्र रेव. में 15/19, अशोकाष्टमी, (पुनर्वसु (F)
	15	9	शु.	22	3	पुष्य	15	36	धृ.	12	27	कर्क			5	59	18	46	5	59	18	43	6	6	18	47	5	39	18	17	15	यूरेनस रेव. 4 में 8/30, श्रीरामनवमी, नवरात्र समाप्त,
	16	10	श.	23	18	आश्ले.	17	17	शू.	12	10	सिंह	17	17	5	58	18	47	5	58	18	44	6	5	18	48	5	38	18	17	16	वक्री गुरु पू. फा. 2 में 8/42, नवरात्रपारणा,
	17	11	र.	25	7	मघा	19	32	गं.	12	23	सिंह			5	56	18	48	5	57	18	44	6	4	18	48	5	37	18	18	17	भ. 12/13 से 25/07 तक, मंगल वक्री 17/43, (G)
	18	12	चं.	27	19	पू.फा.	22	13	वृ.	12	57	कन्या	28	56	5	55	18	48	5	56	18	45	6	4	18	49	5	36	18	18	18	प्लूटो वक्री 12/53, श्रीविष्णुदमनोत्सव,
	19	13	मं.	29	47	उ.फा.	25	10	ध्रु.	13	47	कन्या			5	54	18	49	5	55	18	45	6	3	18	49	5	35	18	19	19	सूर्य सायन वृष में 20/59, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, (H)
	20	14	बु.	—	—	हस्त	28	14	व्या.	14	45	कन्या			5	53	18	50	5	54	18	46	6	2	18	50	5	34	18	19	20	बुध कृत्ति. में 28/55, श्री शिवदमनोत्सव,
	21	14	गु	8	20	चित्रा	—	—	ह.	15	46	तुला	17	46	5	52	18	50	5	53	18	47	6	1	18	50	5	34	18	20	21	भ. 8/20 से 21/36 तक, श्री सत्यनारायण व्रत,
	22	15	शु.	10	53	चित्रा	7	18	व.	16	45	तुला			5	51	18	51	5	52	18	47	6	0	18	51	5	33	18	20	22	चैत्री पूर्णिमा, वैशाख स्नान प्रारम्भ, उज्जैन (सिंहस्थ)कुम्भ– (I)
वैशाख कृष्ण	23	1	श.	13	20	स्वाती	10	17	सि.	17	39	तुला			5	50	18	52	5	51	18	48	5	59	18	51	5	32	18	21	23	वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	24	2	र.	15	34	विशा.	13	6	व्य.	18	24	वृश्चिक	6	25	5	49	18	52	5	50	18	48	5	58	18	52	5	31	18	21	24	भ. 28/34 बाद, शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ 5/46, [शुक्र अस्त]
	25	3	चं.	17	33	अनु.	15	39	व.	18	56	वृश्चिक			5	48	18	53	5	49	18	49	5	57	18	52	5	30	18	22	25	भ. 17/33 तक, शुक्र अश्वि. मेष में 10/51, (J) [27 अप्रैल]
	26	4	मं.	19	11	ज्येष्ठा	17	53	प.	19	12	धनु	17	53	5	47	18	54	5	48	18	49	5	56	18	53	5	29	18	22	26	
	27	5	बु.	20	23	मूल	19	43	शि.	19	8	धनु			5	46	18	54	5	48	18	50	5	55	18	53	5	29	18	23	27	सूर्य भर. में 11/43, शुक्र पूर्व में अस्त 5/46,
	28	6	गु.	21	4	पू.षा.	21	2	सि.	18	41	मकर	27	17	5	45	18	55	5	47	18	51	5	55	18	54	5	28	18	23	28	भ. 21/04 बाद, बुध वक्री 22/50,
	29	7	शु.	21	10	उ.षा.	21	47	सा.	17	46	मकर			5	44	18	56	5	46	18	51	5	54	18	55	5	27	18	24	29	भ. 9/07 तक,
	30	8	श.	20	37	श्रव.	21	54	शु.	16	21	मकर			5	43	18	56	5	45	18	52	5	53	18	55	5	26	18	24	30	बुध पश्चिम में अस्त 18/56,

(A) में 17/04, श्रीशीतलाष्टमी, (B) 20/08, नेप्च्यून शत. 4 में 17/24, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स्मा.), (C) भौमप्रदोषव्रत, वारुणीयोग (10घं. 34मि. तक), (D) 2073 वि. प्रा.; वासन्त नवरात्र प्रारम्भ, वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र–प्राशन, चन्द्रव्रत, (E) मेष में 19/47, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद, वैशाखी (पं.), अर्धकुम्भ हरिद्वार(देखें पृ. 19), (F) नक्षत्र 14/36 तक), श्रीदुर्गाष्टमी,(G) कामदा एकादशी व्रत (स.), दोलोत्सव, (H) अनग त्रयोदशी, श्रीमहावीर जयन्ती(जैन), भौमप्रदोष व्रत, (I) महापर्व प्रारम्भ, श्री हनुमान जयन्ती(द.भा.), अगस्त्य अस्त, (J) श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
वैशाख कृष्ण	1	9	र.	19	23	धनि.	21	21	शु.	14	24	कुम्भ	9	43	5	42	18	57	5	44	18	52	5	52	18	56	5	26	18	25	1	पंचक प्रारम्भ 9/43.
	2	10	चं.	17	29	शत.	20	9	ब्र.	11	55	कुम्भ			5	42	18	58	5	43	18	53	5	51	18	56	5	25	18	25	2	भ. 6/26 से 17/29 तक.
	3	11	मं.	14	58	पू.भा	18	20	ऐं./	8	54	मीन	12	50	5	41	18	58	5	42	18	54	5	51	18	57	5	24	18	26	3	वरूथिनी एकादशी व्रत (स.). श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती.
									वै.	29	26																					
	4	12	बु.	11	56	उ.भा.	16	0	वि.	25	35	मीन			5	40	18	59	5	42	18	54	5	50	18	57	5	23	18	26	4	वक्री प्लूटो पू.षा. 3 में 28/59, प्रदोषव्रत.
	5	13/	गु.	8	29	रेव.	13	18	प्री.	21	30	मेष	13	18	5	39	19	0	5	41	18	55	5	49	18	58	5	23	18	27	5	भ. 8/29 से 18/38 तक, पंचक समाप्त 13/18.
		14		28	47																											चतुर्दशी तिथिक्षय.
	6	30	शु.	24	59	अश्वि.	10	22	आ.	17	16	मेष			5	38	19	0	5	40	18	55	5	48	18	58	5	22	18	27	6	शुक्र भरणी में 6/38.
वैशाख शुक्ल	7	1	श.	21	17	भर./	7	24	सौ.	13	4	वृष	12	41	5	37	19	1	5	39	18	56	5	48	18	59	5	21	18	28	7	वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ, वक्री बुध भर. में 14/39.
						कृत्ति.	28	35																								
	8	2	र.	17	51	रोहि.	26	6	शो./	9	2	वृष			5	37	19	1	5	39	18	57	5	47	18	59	5	21	18	28	8	चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीशिवाजी जयन्ती, श्रीपरशुराम जयन्ती.
									अ.	29	18																					
	9	3	चं.	14	52	मृग.	24	9	सु.	26	2	मिथुन	13	3	5	36	19	2	5	38	18	57	5	46	19	0	5	20	18	29	9	भ. 25/41 बाद, गुरु मार्गी 17/46, अक्षयतृतीया.
	10	4	मं.	12	30	आर्द्रा	22	52	धृ.	23	19	मिथुन			5	35	19	3	5	37	18	58	5	46	19	1	5	20	18	29	10	भ. 12/30 तक.
	11	5	बु.	10	53	पुन.	22	23	शू.	21	16	कर्क	16	25	5	34	19	3	5	37	18	58	5	45	19	1	5	19	18	30	11	सूर्य कृत्ति. में 5/49, श्रीशंकराचार्य जयन्ती.
	12	6	गु.	10	6	पुष्य	22	44	गं.	19	54	कर्क			5	34	19	4	5	36	18	59	5	45	19	2	5	18	18	30	12	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगंगा जन्म.
	13	7	शु.	10	11	आश्ले.	23	56	वृ.	19	12	सिंह	23	56	5	33	19	5	5	35	19	0	5	44	19	2	5	18	18	31	13	भ. 10/11 से 22/38 तक.
	14	8	श.	11	5	मघा	25	52	ध्रु.	19	8	सिंह			5	32	19	5	5	35	19	0	5	43	19	3	5	17	18	31	14	सं. सूर्य वृष में 16/41, मु. 30, (A)
	15	9	र.	12	42	पू.फा.	28	24	व्या.	19	34	सिंह			5	32	19	6	5	34	19	1	5	43	19	3	5	17	18	32	15	
	16	10	चं.	14	50	उ.फा.	—	—.	ह.	20	22	कन्या	11	6	5	31	19	7	5	34	19	1	5	42	19	4	5	16	18	32	16	भ. 28/04 बाद, शुक्र कृत्ति. में 26/41.
	17	11	मं.	17	18	उ.फा.	7	19	व.	21	22	कन्या			5	30	19	7	5	33	19	2	5	42	19	4	5	16	18	33	17	भ. 17/18 तक, मोहिनी एकादशी व्रत (स.).
	18	12	बु.	19	52	हस्त	10	25	सि.	22	27	तुला	23	58	5	30	19	8	5	33	19	3	5	41	19	5	5	15	18	33	18	
	19	13	गु.	22	23	चित्रा	13	31	व्य.	23	28	तुला			5	29	19	9	5	32	19	3	5	41	19	6	5	15	18	34	19	शुक्र वृष में 19/45, बुध पूर्व में उदित 5/29, प्रदोष व्रत.
	20	14	शु.	24	42	स्वाती	16	28	व.	24	20	तुला			5	29	19	9	5	32	19	4	5	40	19	6	5	15	18	34	20	भ. 24/42 बाद, सूर्य सायन मिथुन में 20/06, श्रीनृसिंह जयन्ती.
	21	15	श.	26	44	विशा.	19	10	प.	24	59	वृश्चिक	12	31	5	28	19	10	5	31	19	4	5	40	19	7	5	14	18	35	21	भ. 13/43 तक, वक्री शनि ज्येष्ठा 1 में 5/49, कुम्भ (B)
ज्येष्ठ कृष्ण	22	1	र.	28	26	अनु.	21	33	शि.	25	23	वृश्चिक			5	28	19	11	5	31	19	5	5	40	19	7	5	14	18	35	22	ज्येष्ठ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध मार्गी 18/49.
	23	2	चं.	—	—	ज्येष्ठा	23	37	सि.	25	31	धनु	23	37	5	27	19	11	5	30	19	6	5	39	19	8	5	14	18	36	23	
	24	2	मं.	5	47	मूल	25	19	सा.	25	22	धनु			5	27	19	12	5	30	19	6	5	39	19	8	5	13	18	36	24	भ. 18/16 बाद,सूर्य रोहि. में 26/07.
	25	3	बु.	6	45	पू.षा.	26	37	शु.	24	54	धनु			5	27	19	12	5	30	19	7	5	39	19	9	5	13	18	37	25	भ. 6/45 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत.
	26	4	गु.	7	20	उ.षा.	27	31	शु.	24	7	मकर	8	53	5	26	19	13	5	29	19	7	5	38	19	9	5	13	18	37	26	
	27	5	शु.	7	28	श्रव.	27	58	ब्र.	22	58	मकर			5	26	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	27	शुक्र रोहि. में 23/00.
	28	6	श.	7	8	धनि.	27	56	ऐं.	21	25	कुम्भ	16	1	5	25	19	14	5	29	19	8	5	38	19	10	5	12	18	38	28	भ. 7/08 से 18/43 तक, पंचक प्रारम्भ 16/01.
	29	7/	र.	6	19	शत.	27	22	वै.	19	28	कुम्भ			5	25	19	15	5	28	19	9	5	38	19	11	5	12	18	39	29	
		8		28	57																											अष्टमी तिथिक्षय.
	30	9	चं.	27	3	पू.भा.	26	16	वि.	17	4	मीन	20	36	5	25	19	15	5	28	19	9	5	37	19	11	5	12	18	39	30	
	31	10	मं.	24	40	उ.भा.	24	41	प्री.	14	15	मीन			5	25	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	12	18	40	31	भ. 13/51 से 24/40 तक.

कुम्भ(सिंहस्थ)महापर्व
उज्जैन–21 मई
(देखें पृ. 19)

(A) पुण्यकाल 10/17 बाद, श्रीजानकी जयन्ती(देखें पृ. 13), (B) (सिंहस्थ) महापर्व–उज्जैन(प्रमुखस्नान)(देखें पृ. 19), श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीबुद्ध जयन्ती, श्रीबुद्ध पूर्णिमा, वैशाखी पूर्णिमा, वैशाखस्नान समाप्त.

मास पक्ष	क्रम	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि–प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
ज्येष्ठ कृ.	1	11	बु.	21	50	रेव.	22	38	आ.	11	3	मेष	22	38	5	24	19	16	5	28	19	10	5	37	19	12	5	11	18	40	1	पंचक समाप्त 22/38. अपरा एकादशी व्रत (स.), भद्रकाली (A)
	2	12	गु.	18	40	अश्वि.	20	16	सौ./ शो.	7 27	30 44	मेष			5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	2	गुरु पू.फा. 3 में 10/03, प्रदोष व्रत.
	3	13	शु.	15	17	भर.	17	42	अ.	23	50	वृष	23	2	5	24	19	17	5	27	19	11	5	37	19	13	5	11	18	41	3	भ. 15/17 से 25/33 तक, राहु पू.फा. 3, केतु पू.भा. 1 (B)
	4	14	श.	11	50	कृत्ति.	15	5	सु.	19	57	वृष			5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	41	4	वक्री मंगल विशा. में 12/11. बुध कृत्ति. में 26/57. (C)
	5	30	र.	8	29	रोहि.	12	36	धृ.	16	12	मिथुन	23	28	5	24	19	18	5	27	19	12	5	36	19	14	5	11	18	42	5	भावुका अमावस.
ज्येष्ठ शुक्ल	6	1/ 2	चं.	5 26	23 50	मृग.	10	26	शू.	12	45	मिथुन			5	24	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	42	6	ज्येष्ठ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15, द्वितीया तिथिक्षय,
	7	3	मं.	24	50	आर्द्रा	8	46	गं.	9	43	कर्क	25	56	5	23	19	19	5	27	19	13	5	36	19	15	5	11	18	43	7	सूर्य मृग. में 23/57, शुक्र मृग. में 19/23, रम्भा तृतीया. (D)
	8	4	बु.	23	35	पुन.	7	45	वृ./ धु.	7 29	14 23	कर्क			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	15	5	11	18	43	8	भ. 12/12 से 23/35 तक, बुध वृष में 9/47. (E)
	9	5	गु.	23	10	पुष्य	7	30	व्या.	28	11	कर्क			5	23	19	20	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	43	9	
	10	6	शु.	23	35	आश्ले.	8	5	ह.	27	40	सिंह	8	5	5	23	19	21	5	27	19	14	5	36	19	16	5	11	18	44	10	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी.
	11	7	श.	24	48	मघा	9	29	व.	27	45	सिंह			5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	16	5	11	18	44	11	भ. 24/48 बाद.
	12	8	र.	26	39	पू.फा.	11	36	सि.	28	18	कन्या	18	13	5	23	19	21	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	12	भ. 13/43 तक.
	13	9	चं.	28	57	उ.फा.	14	16	व्य.	29	11	कन्या			5	23	19	22	5	27	19	15	5	36	19	17	5	11	18	45	13	शुक्र मिथुन में 5/36, नेप्च्यून वक्री 26/16,
	14	10	मं.	—	—	हस्त	17	15	व.	—	—	कन्या			5	23	19	22	5	27	19	16	5	36	19	18	5	11	18	45	14	स. सूर्य मिथुन में 23/20, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद.(F)
	15	10	बु.	7	27	चित्रा	20	19	व.	6	14	तुला	6	47	5	23	19	22	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	15	भ. 20/41 बाद, बुध रोहि. मे 25/17.
	16	11	गु.	9	55	स्वाती	23	16	प.	7	15	तुला			5	24	19	23	5	27	19	16	5	37	19	18	5	11	18	46	16	भ. 9/55 तक, निर्जला एकादशी व्रत (स.).
	17	12	शु.	12	9	विशा.	25	56	शि.	8	8	वृश्चिक	19	18	5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	18	5	12	18	46	17	वक्री मंगल तुला में 24/06. प्रदोष व्रत.
	18	13	श.	14	3	अनु.	28	14	सि.	8	44	वृश्चिक			5	24	19	23	5	27	19	17	5	37	19	19	5	12	18	46	18	शुक्र आर्द्रा में 15/51.
	19	14	र.	15	31	ज्येष्ठा	—	—	सा.	9	2	वृश्चिक			5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	19	भ. 15/31 से 28/01 तक. श्री सत्यनारायण व्रत. (G)
	20	15	चं.	16	32	ज्येष्ठा	6	5	शु.	8	59	धनु	6	5	5	24	19	24	5	28	19	17	5	37	19	19	5	12	18	47	20	सूर्य सायन कर्क में 28/04, दक्षिण अयन एवं वर्षा ऋतु प्रारम्भ.
आषाढ़ कृष्ण	21	1	मं.	17	7	मूल	7	30	शु.	8	35	धनु			5	24	19	24	5	28	19	18	5	38	19	19	5	12	18	47	21	आषाढ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सूर्य आर्द्रा में 23/01
	22	2	बु.	17	17	पू.षा.	8	31	ब्र.	7	52	मकर	14	42	5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	12	18	47	22	भ. 29/11 बाद.
	23	3	गु.	17	5	उ.षा.	9	9	ऐं.	6	49	मकर			5	25	19	24	5	28	19	18	5	38	19	20	5	13	18	47	23	भ. 17/05 तक, बुध मृग. में 22/02. श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	24	4	शु.	16	31	श्रव.	9	25	वै./ वि.	5 27	30 54	कुम्भ	21	25	5	25	19	24	5	29	19	18	5	38	19	20	5	13	18	48	24	पंचक प्रारम्भ 21/25.
	25	5	श.	15	36	धनि.	9	21	प्री.	26	0	कुम्भ			5	25	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	13	18	48	25	
	26	6	र.	14	21	शत.	8	56	आ.	23	50	मीन	26	23	5	26	19	25	5	29	19	18	5	39	19	20	5	14	18	48	26	भ. 14/21 से 25/32 तक. बुध पूर्व में अस्त 5/26,
	27	7	चं.	12	44	पू.भा.	8	10	सौ.	21	23	मीन			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	27	बुध मिथुन में 8/06, यूरेनस अश्वि. 1 मेष में 16/47.
	28	8	मं.	10	47	उ.भा.	7	4	शो.	18	40	मीन			5	26	19	25	5	30	19	19	5	39	19	20	5	14	18	48	28	
	29	9	बु.	8	31	रेव./ अश्वि.	5 27	38 55	अ.	15	41	मेष	5	38	5	27	19	25	5	30	19	19	5	40	19	20	5	14	18	48	29	भ.19/15 बाद, पंचक समाप्त 5/38, मंगल मार्गी (H)
	30	10/ 11	गु.	5 27	59 14	भर.	26	0	सु.	12	30	मेष			5	27	19	25	5	31	19	19	5	40	19	20	5	15	18	48	30	भ. 5/59 तक, बुध आर्द्रा में 13/26, योगिनी एकादशी व्रत(स्मा.), एकादशी तिथिक्षय.

(A) एकादशी (पं). (B) मे 21/42, (C) वटसावित्री व्रत (अमापक्ष), (D) श्रीमहाराणा प्रताप जयन्ती (राज.). (E) बलिदान दिन श्रीगुरु अर्जुनदेव जी, (F) श्रीगंगा दशहरा (हस्त नक्षत्र 17/15 तक),
(G)वटसावित्री व्रत(पूर्णिमापक्ष)(देखें पृ. 13), (H) 29/09, शुक्र पुन. में 12/20.

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

जुलाई, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति-काल घं. मि.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
आषाढ़ कृष्ण	1	12	शु.	24 23	कृत्ति.	23 58	धृ.	9 10	वृष	7 30	5 27	19 25	5 31	19 19	5 40	19 20	5 15	18 48	1	योगिनी एकादशी व्रत (वै.),
	2	13	श.	21 33	रोहि.	21 57	शू./ गं.	5 46 26 25	वृष		5 28	19 25	5 31	19 19	5 41	19 20	5 15	18 48	2	भ. 21/33 बाद, शनिप्रदोष व्रत,
	3	14	र.	18 53	मृग.	20 5	वृ.	23 14	मिथुन	8 59	5 28	19 25	5 32	19 19	5 41	19 20	5 16	18 48	3	भ. 8/13 तक, गुरु पू.फा. 4 में 17/53,
	4	30	चं.	16 31	आर्द्रा	18 33	ध्रु.	20 19	मिथुन		5 29	19 25	5 32	19 19	5 42	19 20	5 16	18 48	4	सोमवती अमा,
आषाढ़ शुक्ल	5	1	मं.	14 36	पुन.	17 28	व्या.	17 48	कर्क	11 41	5 29	19 25	5 33	19 19	5 42	19 20	5 17	18 48	5	आषाढ़ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, सूर्य पुन. में (A)
	6	2	बु.	13 16	पुष्य	16 59	ह.	15 46	कर्क		5 30	19 25	5 33	19 18	5 42	19 20	5 17	18 48	6	बुध पुन. में 17/48, रथयात्रा (श्री जगदीश रथोत्सव)पुरी (B)
	7	3	गु.	12 37	आश्ले.	17 12	व.	14 18	सिंह	17 12	5 30	19 24	5 33	19 18	5 43	19 20	5 17	18 48	7	भ. 24/40 बाद, शुक्र कर्क में 15/36,
	8	4	शु.	12 44	मघा	18 10	सि.	13 26	सिंह		5 31	19 24	5 34	19 18	5 43	19 20	5 18	18 48	8	भ. 12/44 तक, वक्री शनि अनु. 4 में 24/30,
	9	5	श.	13 36	पू.फा.	19 51	व्य.	13 9	कन्या	26 22	5 31	19 24	5 34	19 18	5 44	19 20	5 18	18 48	9	कुमार षष्ठी,
	10	6	र.	15 8	उ.फा.	22 9	व.	13 24	कन्या		5 32	19 24	5 35	19 18	5 44	19 20	5 19	18 48	10	शुक्र पुष्य में 8/42, शुक्र पश्चिम में उदित 19/24, (C)
	11	7	चं.	17 12	हस्त	24 54	प.	14 4	कन्या		5 32	19 24	5 35	19 18	5 45	19 20	5 19	18 47	11	भ. 17/12 बाद, बुध कर्क में 9/47,
	12	8	मं.	19 34	चित्रा	27 54	शि.	14 59	तुला	14 23	5 33	19 23	5 36	19 17	5 45	19 19	5 20	18 47	12	भ. 6/23 तक, मंगल वृश्चिक में 13/55, बुध पुष्य में 24/07,
	13	9	बु.	21 59	स्वाती	-- —	सि.	15 59	तुला		5 33	19 23	5 36	19 17	5 46	19 19	5 20	18 47	13	शुक्रबाल्य समाप्त 19/24, गुप्त नवरात्र समाप्त,
	14	10	गु.	24 15	स्वाती	6 52	सा.	16 53	वृश्चिक	26 57	5 34	19 23	5 37	19 17	5 46	19 19	5 20	18 47	14	
	15	11	शु.	26 8	विशा.	9 36	शु.	17 32	वृश्चिक		5 34	19 22	5 37	19 16	5 46	19 19	5 21	18 47	15	भ. 13/11 से 26/08 तक, हरिशयनी एकादशी व्रत (D)
	16	12	श.	27 32	अनु.	11 56	शु.	17 51	वृश्चिक		5 35	19 22	5 38	19 16	5 47	19 18	5 21	18 46	16	सं. सूर्य कर्क में 10/15, मु. 30, पुण्यकाल 16/39 तक,
	17	13	र.	28 23	ज्येष्ठा	13 46	ब्र.	17 45	धनु	13 46	5 35	19 21	5 38	19 16	5 47	19 18	5 22	18 46	17	प्रदोषव्रत,
	18	14	चं.	28 40	मूल	15 3	ऐं.	17 12	धनु		5 36	19 21	5 39	19 15	5 48	19 18	5 22	18 46	18	भ. 28/40 बाद,
	19	15	मं.	28 26	पू.षा.	15 48	वै.	16 14	मकर	21 54	5 36	19 21	5 39	19 15	5 48	19 17	5 23	18 45	19	भ. 16/33 तक, सूर्य पुष्य में 22/08, बुध आश्ले में (E)
श्रावण कृष्ण	20	1	बु.	27 45	उ.षा.	16 4	वि.	14 52	मकर		5 37	19 20	5 40	19 15	5 49	19 17	5 23	18 45	20	श्रावण कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शुक्र आश्ले. में 29/05,
	21	2	गु.	26 41	श्रव.	15 54	प्री.	13 9	कुम्भ	27 42	5 38	19 20	5 40	19 14	5 49	19 16	5 24	18 45	21	पंचक प्रारम्भ 27/42, अशून्यशयन व्रत,
	22	3	शु.	25 17	धनि.	15 24	आ.	11 9	कुम्भ		5 38	19 19	5 41	19 14	5 50	19 16	5 24	18 44	22	भ. 13/57 से 25/17 तक, सूर्य सायन सिंह में 15/00,
	23	4	श.	23 38	शत.	14 37	सौ.	8 55	कुम्भ		5 39	19 19	5 42	19 13	5 50	19 15	5 25	18 44	23	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	24	5	र.	21 47	पू.भा.	13 37	शो./ अ.	6 29 27 53	मीन	7 53	5 39	19 18	5 42	19 13	5 51	19 15	5 25	18 43	24	गुरु उ.फा. 1 में 20/38,
	25	6	चं.	19 45	उ.भा.	12 26	सु.	25 10	मीन		5 40	19 17	5 43	19 12	5 51	19 15	5 26	18 43	25	भ. 19/45 बाद,
	26	7	मं.	17 36	रेव.	11 6	धृ.	22 21	मेष	11 6	5 41	19 17	5 43	19 12	5 52	19 14	5 26	18 42	26	भ. 6/40 तक, पंचक समाप्त 11/06, मंगल अनु. में (F)
	27	8	बु.	15 22	अश्वि.	9 40	शू.	19 28	मेष		5 41	19 16	5 44	19 11	5 53	19 13	5 26	18 42	27	बुध मघा सिंह में 7/11,
	28	9	गु.	13 4	भर.	8 11	गं.	16 33	वृष	13 48	5 42	19 16	5 44	19 10	5 53	19 13	5 27	18 41	28	भ. 23/55 बाद,
	29	10	शु.	10 47	कृत्ति./ रोहि.	6 40 29 14	वृ.	13 38	वृष		5 42	19 15	5 45	19 10	5 54	19 12	5 27	18 41	29	भ. 10/47 तक, यूरेनस वक्री 26/37,
	30	11	श.	8 34	मृग.	27 56	ध्रु.	10 48	मिथुन	16 33	5 43	19 14	5 45	19 9	5 54	19 12	5 28	18 40	30	कामिका एकादशी व्रत (स.),
	31	12/ 13	र.	6 31 28 42	आर्द्रा	26 52	व्या./ ह.	8 5 29 35	मिथुन		5 44	19 13	5 46	19 8	5 55	19 11	5 28	18 40	31	भ. 28/42 बाद, शुक्र मघा सिंह में 25/29, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी तिथिक्षय,

शुक्र उदित 10 जुलाई

(A) 22/34, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ, (B) (पुष्य नक्षत्र 16/59 तक), (C) विवस्वत् सप्तमी, (D) (स.), श्री विष्णुशयनोत्सव, (E) 18/05, बुध पश्चिम में उदित 19/21, श्रीसत्यनारायण व्रत, गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा), आषाढ़ी पूर्णिमा, चातुर्मास्य व्रत–नियमादि प्रारम्भ, श्री शिवशयनोत्सव, कोकिला व्रत, (F) 11/29,

श्री वि. सं. 2073

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

अगस्त, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
श्रा.कृ.	1	14	घं.	27	15	पुन.	26	9	व.	27	23	कर्क	20	17	5	44	19	13	5	47	19	8	5	55	19	10	5	29	18	39	1	भ. 15/58 तक, श्रावण शिवरात्रि,
	2	30	मं.	26	14	पुष्य	25	52	सि.	25	32	कर्क			5	45	19	12	5	47	19	7	5	56	19	10	5	29	18	38	2	सूर्य आश्ले. में 21/01, भौमवती अमा, हरियाली अमा,
श्रावण शुक्ल	3	1	बु.	25	46	आश्ले.	26	7	व्य.	24	8	सिंह	26	7	5	45	19	11	5	48	19	6	5	56	19	9	5	30	18	38	3	श्रावण शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	4	2	गु.	25	55	मघा	26	58	व.	23	12	सिंह			5	46	19	10	5	48	19	6	5	57	19	8	5	30	18	37	4	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पू.फा. में 24/49,
	5	3	शु.	26	42	पू.फा.	28	26	प.	22	46	सिंह			5	47	19	10	5	49	19	5	5	57	19	8	5	31	18	37	5	राहु पू.फा. 2, केतु शत. 4 में 19/13, मधुस्रवा तृतीया (A)
	6	4	श.	28	4	उ.फा.	–	–	शि.	22	48	कन्या	10	53	5	47	19	9	5	49	19	4	5	58	19	7	5	31	18	36	6	भ. 15/23 से 28/04 तक,
	7	5	र.	–	–	उ.फा.	6	29	सि.	23	15	कन्या			5	48	19	8	5	50	19	3	5	58	19	6	5	32	18	35	7	नागपंचमी,
	8	5	चं.	5	58	हस्त	9	1	सा.	24	2	तुला	22	25	5	49	19	7	5	50	19	2	5	59	19	5	5	32	18	34	8	श्री कल्कि जयन्ती,
	9	6	मं.	8	14	चित्रा	11	53	शु.	24	58	तुला			5	49	19	6	5	51	19	2	5	59	19	5	5	33	18	34	9	
	10	7	बु.	10	39	स्वाती	14	51	शु.	25	55	तुला			5	50	19	5	5	52	19	1	6	0	19	4	5	33	18	33	10	भ. 10/39 से 23/49 तक, गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती,
	11	8	गु.	12	59	विशा.	17	44	ब्र.	26	42	वृश्चिक	11	2	5	50	19	4	5	52	19	0	6	0	19	3	5	33	18	32	11	गुरु उ.फा. 2 कन्या में 21/29, शुक्र पू.फा. में 21/56, (B)
	12	9	शु.	15	2	अनु.	20	17	ऐं.	27	10	वृश्चिक			5	51	19	3	5	53	18	59	6	1	19	2	5	34	18	31	12	
	13	10	श.	16	35	ज्येष्ठा	22	19	वै.	27	13	धनु	22	19	5	52	19	2	5	53	18	58	6	1	19	1	5	34	18	31	13	भ. 29/03 बाद, शनि मार्गी 15/21,
	14	11	र.	17	32	मूल	23	46	वि.	26	46	धनु			5	52	19	1	5	54	18	57	6	2	19	1	5	35	18	30	14	भ. 17/32 तक, पवित्रा एकादशी व्रत (स.),
	15	12	चं.	17	49	पू.षा.	24	34	प्री.	25	48	धनु			5	53	19	0	5	54	18	56	6	2	19	0	5	35	18	29	15	बुध उ.फा. में 25/32, सोमप्रदोष व्रत, भारत स्वतन्त्रता दिवस,
	16	13	मं.	17	26	उ.षा.	24	43	आ.	24	18	मकर	6	39	5	53	18	59	5	55	18	55	6	3	18	59	5	36	18	28	16	सं. सूर्य मघा सिंह में 18/40, मु. 45, पुण्यकाल 12/16 बाद,
	17	14	बु.	16	27	श्रव.	24	17	सौ.	22	20	मकर			5	54	18	58	5	55	18	54	6	3	18	58	5	36	18	27	17	भ. 16/27 से 27/41 तक, श्री सत्यनारायण व्रत, ऋक् (C)
	18	15	गु.	14	56	धनि.	23	22	शो.	19	58	कुम्भ	11	52	5	55	18	57	5	56	18	53	6	3	18	57	5	37	18	26	18	पंचक प्रारंभ 11/52, शुक्ल–कृष्ण यजु उपाकर्म, (D)
भाद्रपद कृष्ण	19	1	शु.	13	0	शत.	22	4	अ.	17	16	कुम्भ			5	55	18	56	5	56	18	52	6	4	18	56	5	37	18	25	19	भाद्रपद कृष्णपक्ष प्रारम्भ, बुध कन्या में 17/25,
	20	2	श.	10	45	पू.भा.	20	29	सु.	14	20	मीन	14	54	5	56	18	55	5	57	18	51	6	4	18	55	5	37	18	25	20	भ. 21/31 बाद, कज्जली तृतीया (देखें पृ. 13),
	21	3/ 4	र.	8 29	18 44	उ.भा.	18	45	धृ.	11	14	मीन			5	56	18	54	5	57	18	50	6	5	18	54	5	38	18	24	21	भ. 8/18 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय (E) चतुर्थी तिथिक्षय,
	22	5	चं.	27	9	रेव.	16	58	शू./ गं.	8 28	4 53	मेष	16	58	5	57	18	53	5	58	18	49	6	5	18	53	5	38	18	23	22	पंचक समाप्त 16/58, शुक्र उ.फा. में 18/39, सूर्य सायन (F)
	23	6	मं.	24	39	अश्वि.	15	12	वृ.	25	46	मेष			5	58	18	52	5	58	18	48	6	6	18	52	5	39	18	22	23	भ. 24/39 बाद,
	24	7	बु.	22	17	भर.	13	33	ध्रु.	22	46	वृष	19	10	5	58	18	51	5	59	18	47	6	6	18	51	5	39	18	21	24	भ. 11/28 तक, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)(देखें पृ. 14)(G)
	25	8	गु.	20	8	कृत्ति.	12	5	व्या.	19	57	वृष			5	59	18	50	5	59	18	46	6	7	18	50	5	39	18	20	25	शुक्र कन्या में 11/53, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (वै.) (H)
	26	9	शु.	18	13	रोहि.	10	52	ह.	17	19	मिथुन	22	21	5	59	18	48	6	0	18	45	6	7	18	49	5	40	18	19	26	भ. 29/25 बाद, मंगल ज्ये. में 8/55, गोकुलाष्टमी (I)
	27	10	श.	16	37	मृग.	9	55	व.	14	57	मिथुन			6	0	18	47	6	0	18	44	6	8	18	48	5	40	18	18	27	भ. 16/37 तक,
	28	11	र.	15	22	आर्द्रा	9	18	सि.	12	51	कर्क	27	4	6	0	18	46	6	1	18	43	6	8	18	47	5	41	18	17	28	गुरु उ.फा. 3 में 10/51, अजा एकादशी व्रत (स.),
	29	12	चं.	14	30	पुन.	9	3	व्य.	11	3	कर्क			6	1	18	45	6	1	18	42	6	9	18	46	5	41	18	16	29	वक्री नेप्च्यून शत. 3 में 6/30, सोमप्रदोष व्रत,
	30	13	मं.	14	3	पुष्य	9	12	व.	9	35	कर्क			6	2	18	44	6	2	18	41	6	9	18	45	5	41	18	15	30	भ. 14/03 से 26/03 तक, सूर्य पू.फा. में 14/40, बुध (J)
	31	14	बु.	14	3	आश्ले.	9	48	प.	8	28	सिंह	9	48	6	2	18	43	6	2	18	40	6	9	18	44	5	42	18	14	31	वक्री यूरेनस रेव. 4 में 29/30,

(A)(संधारा तीज), (B) श्रीदुर्गाष्टमी, (C) उपाकर्म, (D) रक्षाबन्धन (राखी) (अपराह्णकाल 13/44 से 14/56 तक), (E) देखें पृ. 11), बहुला चतुर्थी, (F) कन्या में 22/09, शरद ऋतु प्रारम्भ, (G) (चन्द्रोदय देखें पृ.11), (H) (चन्द्रोदय देखें पृ. 11), दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 14), (I) (नन्दोत्सव), श्री गुग्गानवमी, (J) वक्री 18/33, पर्युषणपर्व प्रारम्भ (जैन).

मास पक्ष	सितम्बर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चन्द्रराशि	प्रवेशकाल घं. मि.	चण्डीगढ सूर्योदय घं. मि.	चण्डीगढ सूर्यास्त घं. मि.	दिल्ली सूर्योदय घं. मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं. मि.	जयपुर सूर्योदय घं. मि.	जयपुर सूर्यास्त घं. मि.	वाराणसी सूर्योदय घं. मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं. मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
भा.कृ.	1	30	गु.	14 33	मघा	10 53	शि.	7 44	सिंह		6 3	18 41	6 3	18 38	6 10	18 43	5 42	18 13	1	कुशोत्पाटिनी अमा, पिठोरी अमा.
भाद्रपद शुक्ल	2	1	शु.	15 32	पू.फा.	12 26	सि.	7 23	कन्या	18 53	6 3	18 40	6 3	18 37	6 10	18 42	5 43	18 12	2	भाद्रपद शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 30, शुक्र हस्त में(A)
	3	2	श.	17 0	उ.फा.	14 27	सा.	7 25	कन्या		6 4	18 39	6 4	18 36	6 11	18 41	5 43	18 11	3	अगस्त्य उदित, मेला डेरा बाबा गोसाई आणां (कुराली-पं.).
	4	3	र.	18 55	हस्त	16 53	शु.	7 47	कन्या		6 4	18 38	6 4	18 35	6 11	18 40	5 43	18 10	4	साम उपाकर्म, श्रीवराह जयन्ती, गौरी तृतीया, (B)
	5	4	चं.	21 9	चित्रा	19 39	शु.	8 28	तुला	6 14	6 5	18 36	6 5	18 34	6 12	18 38	5 44	18 9	5	भ. 8/02 से 21/09 तक, सिद्धिविनायक व्रत,(C)
	6	5	मं.	23 36	स्वाती	22 38	ब्र.	9 20	तुला		6 6	18 35	6 5	18 33	6 12	18 37	5 44	18 8	6	बुध पश्चिम में अस्त 18/35, गुरुवार्धक्य (D)
	7	6	बु.	26 3	विशा.	25 37	ऐं.	10 17	वृश्चिक	18 53	6 6	18 34	6 6	18 32	6 12	18 36	5 44	18 7	7	सूर्य षष्ठी व्रत.
	8	7	गु.	28 19	अनु.	28 26	वै.	11 12	वृश्चिक		6 7	18 33	6 6	18 30	6 13	18 35	5 45	18 6	8	भ. 28/19 बाद, मुक्ताभरण सप्तमी व्रत(सन्तान सप्तमी व्रत).
	9	8	शु.	– –	ज्येष्ठा	– –	वि.	11 54	वृश्चिक		6 7	18 31	6 7	18 29	6 13	18 34	5 45	18 5	9	भ. 17/15 तक, वक्री बुध सिंह में 17/47, गुरु अस्त 18/31,(E)
	10	8	श.	6 11	ज्येष्ठा	6 51	प्री.	12 16	धनु	6 51	6 8	18 30	6 7	18 28	6 14	18 33	5 46	18 3	10	
	11	9	र.	7 29	मूल	8 44	आ.	12 10	धनु		6 8	18 29	6 8	18 27	6 14	18 32	5 46	18 2	11	बाबा श्रीचन्द नवमी (उदासीन संप्रदाय महोत्सव).
	12	10	चं.	8 5	पू.षा.	9 56	सौ.	11 31	मकर	16 7	6 9	18 28	6 8	18 26	6 15	18 31	5 46	18 1	12	भ. 20/01 बाद, वक्री बुध पू.फा. में 26/00, गुरु उ.फा. 4 (F)
	13	11	मं.	7 57	उ.षा.	10 24	शो.	10 16	मकर		6 9	18 26	6 9	18 24	6 15	18 29	5 47	18 0	13	भ. 7/57 तक, सूर्य उ.फा. में 8/28, शुक्र चित्रा में (G)
	14	12/ 13	बु.	7 3 29 27	श्रव.	10 7	अ./ सु.	8 25 30 1	कुम्भ	21 43	6 10	18 25	6 9	18 23	6 15	18 28	5 47	17 59	14	पंचक प्रारम्भ 21/43, प्रदोष व्रत. त्रयोदशी तिथिक्षय.
	15	14	गु.	27 15	धनि.	9 10	धृ.	27 7	कुम्भ		6 11	18 24	6 10	18 22	6 16	18 27	5 47	17 58	15	भ. 27/15 बाद, श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत.
	16	15	शु.	24 35	शत./ पू.भा.	7 38 29 39	शू.	23 50	मीन	24 11	6 11	18 23	6 10	18 21	6 16	18 26	5 48	17 57	16	भ 13/55 तक, सं. सूर्य कन्या में 18/35, मु. 30, (H)
आश्विन कृष्ण	17	1	श.	21 34	उ.भा.	27 22	गं.	20 16	मीन		6 12	18 21	6 11	18 20	6 17	18 25	5 48	17 56	17	आश्विन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, शनि ज्येष्ठा 1 में 17/13, (I)
	18	2	र.	18 22	रेव.	24 55	वृ.	16 31	मेष	24 55	6 12	18 20	6 11	18 18	6 17	18 24	5 49	17 55	18	भ. 28/45 बाद, पचक समाप्त 24/55, मंगल मूल धनु में (J)
	19	3	चं.	15 7	अश्वि.	22 28	ध्रु.	12 44	मेष		6 13	18 19	6 12	18 17	6 18	18 23	5 49	17 54	19	भ. 15/07 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, तृतीया श्राद्ध, चतुर्थी श्राद्ध.
	20	4	मं.	11 57	भर.	20 10	व्या./ ह.	9 0 29 27	वृष	25 38	6 13	18 17	6 12	18 16	6 18	18 21	5 49	17 53	20	पंचमी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध.
	21	5	बु.	9 2	कृत्ति.	18 9	व.	26 10	वृष		6 14	18 16	6 13	18 15	6 18	18 20	5 50	17 52	21	बुध पूर्व में उदित 6/14, षष्ठी श्राद्ध, चन्द्रषष्ठी व्रत.
	22	6/ 7	गु.	6 27 28 19	रोहि.	16 31	सि.	23 14	मिथुन	27 52	6 15	18 15	6 13	18 14	6 19	18 19	5 50	17 50	22	भ. 6/27 से 17/23 तक, बुध मार्गी 11/01, सूर्य सायन (K) सप्तमी तिथिक्षय.
	23	8	शु.	26 41	मृग.	15 21	व्य.	20 42	मिथुन		6 15	18 14	6 14	18 12	6 19	18 18	5 50	17 49	23	अष्टमी श्राद्ध, श्रीमहालक्ष्मी व्रत समाप्त.
	24	9	श.	25 35	आर्द्रा	14 43	व.	18 35	मिथुन		6 16	18 12	6 14	18 11	6 20	18 17	5 51	17 48	24	शुक्र स्वाती में 11/13, नवमी श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध.
	25	10	र.	25 3	पुन.	14 37	प.	16 55	कर्क	8 35	6 16	18 11	6 15	18 10	6 20	18 16	5 51	17 47	25	भ. 13/19 से 25/03 तक, दशमी श्राद्ध.
	26	11	चं.	25 3	पुष्य	15 3	शि.	15 41	कर्क		6 17	18 10	6 15	18 9	6 21	18 15	5 52	17 46	26	सूर्य हस्त में 24/01, प्लूटो मार्गी 20/29, इंदिरा एकादशी (L)
	27	12	मं.	25 34	आश्ले.	16 0	सि.	14 51	सिंह	16 0	6 17	18 9	6 16	18 8	6 21	18 14	5 52	17 45	27	द्वादशी श्राद्ध, संन्यासियों का श्राद्ध.
	28	13	बु.	26 32	मघा	17 25	सा.	14 24	सिंह		6 18	18 7	6 16	18 6	6 22	18 12	5 52	17 44	28	भ. 26/32 बाद, गुरु हस्त 1 में 16/45, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी (M)
	29	14	गु.	27 55	पू.फा.	19 14	शु.	14 17	कन्या	25 45	6 19	18 6	6 17	18 5	6 22	18 11	5 53	17 43	29	भ. 15/13 तक, शस्त्र-विषादि से मृतों (अपमृत्यु वालों) (N)
	30	30	शु.	29 41	उ.फा.	21 26	शु.	14 27	कन्या		6 19	18 5	6 17	18 4	6 22	18 10	5 53	17 42	30	सर्वपितृ श्राद्ध, चतुर्दशी/अमावस एवं अज्ञात मृत्यु तिथि वालों का (O)

गुरु अस्त 9 सितंबर

(A) 5/41, (B) हरितालिका तृतीया, (C) कलंक चतुर्थी(चन्द्रदर्शन निषिद्ध)(चन्द्रास्त 21/04), हरितालिका चतुर्थी, (D) प्रारम्भ 18/31, ऋषिपंचमी, संवत्सरी महापर्व(जैन), (E) राधाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, (F) में 29/40, (G) 13/06, पद्मा एकादशी व्रत (स.), श्रीवामन जयन्ती, श्रवणद्वादशी, (H) पुण्यकाल 12/11 बाद, श्री सत्यनारायण व्रत, प्रोष्ठपदी श्राद्ध, महालय प्रारम्भ, (देखें पृ. 275). पूर्णिमा श्राद्ध, (I) पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध, (J) 7/39, शुक्र तुला में 24/05, द्वितीया श्राद्ध, (K) तुला में 19/51, विषुवदिन, दक्षिणगोल प्रारम्भ, सप्तमी श्राद्ध, (L) व्रत (स.), एकादशी श्राद्ध, (M) श्राद्ध, मघा श्राद्ध, (N) का श्राद्ध, (O) श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, महालय/पितृपक्ष समाप्त.

अक्तूबर, सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अंग्रेजी	तिथि	वार	समाप्तिकाल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्तिकाल घं.	मि.	योग	समाप्तिकाल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.
आश्विन शुक्ल	1	1	श.	—	—	हस्त	23	57	ब्र.	14	54	कन्या		
	2	1	र.	7	45	चित्रा	26	44	ऐं.	15	33	तुला	13	19
	3	2	चं.	10	5	स्वाती	29	41	वै.	16	23	तुला		
	4	3	मं.	12	34	विशा.	—	—	वि.	17	19	वृश्चिक	25	57
	5	4	बु.	15	6	विशा.	8	42	प्री.	18	16	वृश्चिक		
	6	5	गु.	17	32	अनु.	11	40	आ.	19	7	वृश्चिक		
	7	6	शु.	19	41	ज्येष्ठा	14	25	सौ.	19	45	धनु	14	25
	8	7	श.	21	24	मूल	16	46	शो.	20	3	धनु		
	9	8	र.	22	31	पू.षा.	18	34	अ.	19	54	मकर	24	54
	10	9	चं.	22	53	उ.षा.	19	40	सु.	19	11	मकर		
	11	10	मं.	22	28	श्रव.	20	0	धृ.	17	51	मकर		
	12	11	बु.	21	14	धनि.	19	32	शू.	15	52	कुम्भ	7	51
	13	12	गु.	19	15	शत.	18	18	गं.	13	16	कुम्भ		
	14	13	शु.	16	36	पू.भा.	16	25	वृ.	10	7	मीन	10	57
	15	14	श.	13	26	उ.भा.	14	1	ध्रु./ व्या.	6 / 26	29 / 30	मीन		
	16	15/ 1	र.	9 / 30	53 / 9	रेव.	11	14	ह.	22	18	मेष	11	14
कार्तिक कृष्ण	17	2	चं.	26	23	अश्वि./ भर.	8 / 29	16 / 18	व.	18	2	मेष		
	18	3	मं.	22	48	कृत्ति.	26	32	सि.	13	50	वृष	10	35
	19	4	बु.	19	32	रोहि.	24	8	व्य./ व.	9 / 30	51 / 12	वृष		
	20	5	गु.	16	46	मृग.	22	14	प.	27	1	मिथुन	11	6
	21	6	शु.	14	37	आर्द्रा	20	59	शि.	24	23	मिथुन		
	22	7	श.	13	10	पुन.	20	27	सि.	22	19	कर्क	14	31
	23	8	र.	12	28	पुष्य	20	38	सा.	20	50	कर्क		
	24	9	चं.	12	30	आश्ले.	21	31	शु.	19	55	सिंह	21	31
	25	10	मं.	13	13	मघा	23	2	शु.	19	30	सिंह		
	26	11	बु.	14	30	पू.फा.	25	4	ब्र.	19	31	सिंह		
	27	12	गु.	16	15	उ.फा.	27	29	ऐं.	19	51	कन्या	7	38
	28	13	शु.	18	21	हस्त	30	10	वै.	20	25	कन्या		
	29	14	श.	20	40	चित्रा	—	—	वि.	21	9	तुला	19	35
	30	30	र.	23	8	चित्रा	9	2	प्री.	21	59	तुला		
का.शु.	31	1	चं.	25	40	स्वाती	12	0	आ.	22	53	तुला		

तारीख	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.
1	6	20	18	4	6	18	18	3	6	23	18	9	5	54	17	41
2	6	20	18	2	6	18	18	2	6	23	18	8	5	54	17	40
3	6	21	18	1	6	19	18	1	6	24	18	7	5	55	17	39
4	6	22	18	0	6	19	17	59	6	24	18	6	5	55	17	38
5	6	22	17	59	6	20	17	58	6	25	18	5	5	55	17	37
6	6	23	17	57	6	21	17	57	6	25	18	4	5	56	17	36
7	6	24	17	56	6	21	17	56	6	26	18	3	5	56	17	35
8	6	24	17	55	6	22	17	55	6	26	18	1	5	57	17	34
9	6	25	17	54	6	22	17	54	6	27	18	0	5	57	17	33
10	6	25	17	53	6	23	17	53	6	27	17	59	5	58	17	32
11	6	26	17	52	6	23	17	52	6	28	17	58	5	58	17	31
12	6	27	17	50	6	24	17	51	6	28	17	57	5	59	17	30
13	6	27	17	49	6	25	17	49	6	29	17	56	5	59	17	29
14	6	28	17	48	6	25	17	48	6	29	17	55	6	0	17	28
15	6	29	17	47	6	26	17	47	6	30	17	54	6	0	17	27
16	6	29	17	46	6	26	17	46	6	31	17	53	6	1	17	26
17	6	30	17	45	6	27	17	45	6	31	17	52	6	1	17	25
18	6	31	17	44	6	28	17	44	6	32	17	51	6	2	17	24
19	6	32	17	43	6	28	17	43	6	32	17	50	6	2	17	23
20	6	32	17	42	6	29	17	42	6	33	17	50	6	3	17	22
21	6	33	17	40	6	30	17	41	6	33	17	49	6	3	17	21
22	6	34	17	39	6	30	17	40	6	34	17	48	6	4	17	21
23	6	34	17	38	6	31	17	39	6	35	17	47	6	4	17	20
24	6	35	17	37	6	32	17	38	6	35	17	46	6	5	17	19
25	6	36	17	36	6	32	17	38	6	36	17	45	6	5	17	18
26	6	37	17	36	6	33	17	37	6	36	17	44	6	6	17	17
27	6	37	17	35	6	34	17	36	6	37	17	43	6	6	17	17
28	6	38	17	34	6	34	17	35	6	38	17	43	6	7	17	16
29	6	39	17	33	6	35	17	34	6	38	17	42	6	8	17	15
30	6	40	17	32	6	36	17	33	6	39	17	41	6	8	17	14
31	6	41	17	31	6	36	17	33	6	40	17	40	6	9	17	14

तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
1	आश्विन शुक्लपक्ष प्रारम्भ, बुध उ.फा. में 6/32, शारद (A)
2	चन्द्रदर्शन, मु. 30,
3	बुध कन्या में 17/48, हिजरी सन् 1438 प्रारम्भ,
4	भ. 25/50 बाद,
5	भ. 15/06 तक, शुक्र विशा. में 9/54, (B)
6	
7	राहु पू.फा. 1, केतु शत. 3 में 17/15, गुरु उदित 6/24,
8	भ. 21/24 बाद, मंगल पू.षा. में 16/16, (C)
9	भ. 9/58 तक, बुध हस्त में 24/08, बुध पूर्व में अस्त (D)
10	सूर्य चित्रा में 12/55, गुरुबाल्य समाप्त 6/24, सरस्वती (E)
11	नवरात्रपारणा, विजयादशमी (दशहरा), आयुध पूजा, अपराजिता (F)
12	भ. 9/51 से 21/14 तक, पंचक प्रारम्भ 7/51, (G)
13	गुरु हस्त 2 में 28/35, शुक्र वृश्चिक में 15/28, प्रदोष व्रत,
14	
15	भ. 13/26 से 23/40 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (H)
16	पंचक समाप्त 11/14, शुक्र अनु. में 9/27, कार्तिकस्नान प्रारम्भ(I)
17	कार्तिक कृष्णपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा तिथिक्षय, सं. सूर्य तुला में 6/31, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न तक, (J)
18	भ. 12/35 से 22/48 तक,
19	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत., करकचतुर्थी (K)
20	
21	भ. 14/37 से 25/54 तक, बुध तुला में 14/20,
22	अहोई अष्टमी (पंजाब., हरि.),
23	सूर्य स्वाती में 23/29, सूर्यसायन वृश्चिक में 29/15, हेमन्त (L)
24	भ. 24/51 बाद,
25	भ. 13/13 तक, बुध स्वाती में 13/09,
26	रमा एकादशी व्रत (स), गोवत्स द्वादशी,
27	मंगल उ.षा. में 17/28, शुक्र ज्येष्ठा में 10/04,
28	भ. 18/21 बाद, प्रदोषव्रत, धन त्रयोदशी, यम प्रीत्यर्थ (M)
29	भ. 7/31 तक, गुरु हस्त 3 में 26/32, शनि ज्ये. 2 में (N)
30	दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, श्री महावीर निर्वाण दिवस (जैन),
31	कार्तिक शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गोवर्धन पूजा, गोक्रीड़ा, बलिपूजा, अन्नकूट,

गुरु उदित 7 अक्तूबर

तुला संक्रान्ति का वार कहां, कौन सा ? (देखें पृ. 277)

(A) नवरात्र प्रारम्भ, नाना/नानी का महालय श्राद्ध, महाराजा अग्रसेन जयन्ती. (B) उपांगललिता व्रत (देखें पृ 14).(C) सरस्वती आवाहन (देखें पृ 15). (D) 6/25, सरस्वती पूजन (देखें पृ. 15), श्रीदुर्गाष्टमी, महाष्टमी, (E) के लिए बलिदान, सरस्वती विसर्जन (देखें पृ. 15). महानवमी (उपवास, पूजा एवं बलिदान के लिए). नवरात्र समाप्त, (F) पूजन, सीमोल्लंघन, श्री माध्वाचार्य जयन्ती, (G) पापांकुशा एकादशी व्रत (स.), भरत मिलाप, (H) कोजागर व्रत, शरत्पूर्णिमा, (I) श्री वाल्मीकि जयन्ती, (J) बुध चित्रा में 17/14. (K)(करवाचौथ)(चन्द्रोदय 20/45)(देखें पृ 15).(L) ऋतु प्रारम्भ, (M) दीपदान, श्री हनुमान् जयन्ती (उ.भा.), (N) 8/28, नरकचतुर्दशी (पूर्वारुणोदय वाली)

मास पक्ष	गतांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र-प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
कार्तिक शुक्ल	1	2	मं.	28	11	विशा.	15	0	सौ.	23	46	वृश्चिक	8	15	6	41	17	30	6	37	17	32	6	40	17	40	6	10	17	13	1	चन्द्रदर्शन, मु. 30, मंगल मकर में 8/36, यमद्वितीया, भाई (A)
	2	3	बु.	30	37	अनु.	17	57	शो.	24	36	वृश्चिक			6	42	17	29	6	38	17	31	6	41	17	39	6	10	17	12	2	बुध विशा. में 16/49,
	3	4	गु.	–	–	ज्येष्ठा	20	46	अ.	25	18	धनु	20	46	6	43	17	29	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	12	3	भ. 19/44 बाद,
	4	4	शु.	8	52	मूल	23	20	सु.	25	48	धनु			6	44	17	28	6	39	17	30	6	42	17	38	6	11	17	11	4	भ. 8/52 तक,
	5	5	श.	10	47	पू.षा.	25	33	धृ.	26	0	धनु			6	45	17	27	6	40	17	29	6	43	17	37	6	12	17	10	5	ज्ञानपंचमी (जैन),
	6	6	र.	12	16	उ.षा.	27	14	शू.	25	47	मकर	8	1	6	45	17	26	6	41	17	28	6	44	17	36	6	13	17	10	6	सूर्य विशा. में 7/32, सूर्यषष्ठी (बिहार),
	7	7	चं.	13	10	श्रव.	28	17	गं.	25	4	मकर			6	46	17	26	6	42	17	28	6	45	17	36	6	13	17	9	7	भ. 13/10 से 25/16 तक, शुक्र मूल धनु में 11/58,
	8	8	मं.	13	21	धनि.	28	36	वृ.	23	46	कुम्भ	16	32	6	47	17	25	6	42	17	27	6	45	17	35	6	14	17	9	8	पंचक प्रारम्भ 16/32, बुध वृश्चिक में 24/39, गोपाष्टमी,
	9	9	बु.	12	45	शत.	28	9	ध्रु.	21	51	कुम्भ			6	48	17	24	6	43	17	26	6	46	17	35	6	15	17	8	9	अक्षयनवमी, कूष्माण्ड नवमी,
	10	10	गु.	11	22	पू.भा.	26	55	व्या.	19	18	मीन	21	18	6	49	17	24	6	44	17	26	6	47	17	34	6	15	17	8	10	भ. 22/17 बाद, बुध अनु. में 28/07, हरिप्रबोधिनी एकादशी (B)
	11	11/	शु.	9	13	उ.भा.	25	0	ह.	16	10	मीन			6	50	17	23	6	45	17	25	6	47	17	34	6	16	17	7	11	भ. 9/13 तक, हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वै.) (देखें पृ. 15), (C)
		12		30	23																											द्वादशी तिथिक्षय,
	12	13	श.	27	2	रेव.	22	30	व.	12	31	मेष	22	30	6	50	17	22	6	45	17	25	6	48	17	33	6	17	17	7	12	पंचक समाप्त 22/30, शनिप्रदोष व्रत,
	13	14	र.	23	18	अश्वि.	19	36	सि./	8	27	मेष			6	51	17	22	6	46	17	24	6	49	17	33	6	18	17	6	13	भ. 23/18 बाद, वैकुण्ठ चतुर्दशी,
									व्य.	28	7																					
	14	15	चं.	19	22	भर.	16	27	व.	23	40	वृष	21	39	6	52	17	21	6	47	17	24	6	50	17	32	6	18	17	6	14	भ. 9/20 तक, मंगल श्रवण में 24/46, श्रीसत्यनारायण (D)
मार्गशीर्ष कृष्ण	15	1	मं.	15	26	कृत्ति.	13	17	प.	19	14	वृष			6	53	17	21	6	48	17	23	6	50	17	32	6	19	17	6	15	मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष प्रारम्भ, सं. सूर्य वृश्चिक में 30/17, मु.(E)
	16	2	बु.	11	43	रोहि.	10	17	शि.	15	1	मिथुन	20	56	6	54	17	20	6	49	17	23	6	51	17	31	6	20	17	5	16	भ. 22/03 बाद,
	17	3/	गु.	8	22	मृग./	7	41	सि.	11	8	मिथुन			6	55	17	20	6	49	17	22	6	52	17	31	6	20	17	5	17	भ. 8/22 तक, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
		4		29	36	आर्द्रा	29	37																								चतुर्थी तिथिक्षय,
	18	5	शु.	27	32	पुन.	28	16	सा./	7	43	कर्क	22	32	6	56	17	19	6	50	17	22	6	53	17	31	6	21	17	5	18	शुक्र पू.षा. में 15/51,
									शु.	28	54																					
	19	6	श.	26	18	पुष्य	27	44	शु.	26	44	कर्क			6	56	17	19	6	51	17	22	6	53	17	30	6	22	17	4	19	भ. 26/18 बाद, सूर्य अनु. में 13/38, बुध ज्ये. में 21/41,
	20	7	र.	25	55	आश्ले.	28	2	ब्र.	25	15	सिंह	28	2	6	57	17	19	6	52	17	21	6	54	17	30	6	23	17	4	20	भ. 14/07 तक, नेप्च्यून मार्गी 10/12, बुध पश्चिम में (F)
	21	8	चं.	26	23	मघा	29	8	ऐं.	24	25	सिंह			6	58	17	18	6	53	17	21	6	55	17	30	6	23	17	4	21	सूर्य सायन धनु में 26/53, श्रीभैरवाष्टमी(कालाष्टमी),
	22	9	मं.	27	36	पू.फा.	30	58	वै.	24	10	सिंह			6	59	17	18	6	53	17	21	6	56	17	30	6	24	17	4	22	
	23	10	बु.	29	26	उ.फा.	–	–	वि.	24	24	कन्या	13	30	7	0	17	18	6	54	17	20	6	57	17	29	6	25	17	4	23	भ. 16/31 से 29/26 तक,
	24	11	गु.	–	–	उ.फा.	9	20	प्री.	24	58	कन्या			7	1	17	17	6	55	17	20	6	57	17	29	6	25	17	3	24	शनि अस्त 17/17,
	25	11	शु.	7	41	हस्त	12	5	आ.	25	45	तुला	25	33	7	2	17	17	6	56	17	20	6	58	17	29	6	26	17	3	25	उत्पन्ना एकादशी व्रत (स.),
	26	12	श.	10	11	चित्रा	15	3	सौ.	26	38	तुला			7	2	17	17	6	57	17	20	6	59	17	29	6	27	17	3	26	शनिप्रदोष व्रत,
	27	13	र.	12	47	स्वाती	18	5	शो.	27	31	तुला			7	3	17	17	6	57	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	27	भ. 12/47 से 26/04 तक,
	28	14	चं.	15	21	विशा.	21	4	अ.	28	21	वृश्चिक	14	19	7	4	17	17	6	58	17	20	7	0	17	29	6	28	17	3	28	बुध मुल धनु में 22/13, शनि ज्ये. 3 में 13/10,
	29	30	मं.	17	48	अनु.	23	55	सु.	29	4	वृश्चिक			7	5	17	16	6	59	17	20	7	1	17	29	6	29	17	3	29	शुक्र उ.षा. में 22/29, भौमवती अमा,
मा.शु.	30	1	बु.	20	5	ज्येष्ठा	26	36	धृ.	29	39	धनु	26	36	7	6	17	16	7	0	17	19	7	2	17	29	6	30	17	3	30	मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 15,

(A) दूज, विश्वकर्मापूजा, (B) व्रत (स्मा.)(देखें पृ. 15), भीष्म पंचक प्रारम्भ (देखें पृ. 16), (C) हरिप्रबोधोत्सव, तुलसी विवाह(देखें पृ. 16), चातुर्मास्य व्रत-नियमादि समाप्त, (D) व्रत, कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरु नानक जयन्ती, कार्तिकस्नान समाप्त, भीष्म पंचक समाप्त, त्रिपुरोत्सव, मेला पुष्करराज (राज.), (E) 45, पुण्यकाल अगले दिन मध्याह्न तक, गुरु हस्त 4 में 23/43, पद्मकयोग(13/17 तक)(पुष्करस्नान का विशेष माहात्म्य), (F) उदित 17/19.

मास पक्ष	दिनांक	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति-काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि - प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	जयपुर सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	वाराणसी सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
मार्गशीर्ष शुक्ल	1	2	गु.	22	9	मूल	29	5	शू.	30	4	धनु			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	1	
	2	3	शु.	23	57	पू.षा.	—	—	गं.	30	15	धनु			7	7	17	16	7	1	17	19	7	3	17	29	6	31	17	3	2	सूर्य ज्ये. में 17/52, मंगल धनि. में 22/18, शुक्र मकर(A)
	3	4	श.	25	24	पू.षा.	7	16	वृ.	30	10	मकर	13	46	7	8	17	16	7	2	17	19	7	4	17	29	6	32	17	3	3	भ. 12/40 से 25/24 तक,
	4	5	र.	26	26	उ.षा.	9	7	ध्रु.	29	45	मकर			7	9	17	16	7	3	17	20	7	5	17	29	6	33	17	3	4	गुरु चित्रा 1 में 20/40
	5	6	चं.	26	57	श्रव.	10	32	व्या.	28	55	कुम्भ	23	2	7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	33	17	4	5	पंचक प्रारम्भ 23/02, गुह/स्कन्द षष्ठी, चंपा षष्ठी(महा),
	6	7	मं.	26	51	धनि.	11	25	ह.	27	37	कुम्भ			7	10	17	16	7	4	17	20	7	6	17	29	6	34	17	4	6	भ. 26/51 बाद, मित्रसप्तमी,
	7	8	बु.	26	4	शत.	11	41	व.	25	47	मीन	29	26	7	11	17	16	7	5	17	20	7	7	17	29	6	35	17	4	7	भ. 14/28 तक, वक्री यूरेनस रेव. 3 में 20/16,
	8	9	गु.	24	37	पू.भा.	11	17	सि.	23	24	मीन			7	12	17	17	7	6	17	20	7	8	17	29	6	35	17	4	8	बुध पू. षा. में 21/04,
	9	10	शु.	22	28	उ.भा.	10	12	व्य.	20	30	मीन			7	13	17	17	7	7	17	20	7	8	17	30	6	36	17	4	9	राहु मघा 4, केतु शत. 2 में 15/00,
	10	11	श.	19	44	रेव./	8	29	व.	17	6	मेष	8	29	7	13	17	17	7	7	17	20	7	9	17	30	6	37	17	5	10	भ. 9/06 से 19/44 तक, पंचक समाप्त 8/29, मोक्षदा (B)
						अश्वि.	30	13																								
	11	12	र.	16	32	भर.	27	33	प.	13	17	मेष			7	14	17	17	7	8	17	21	7	10	17	30	6	37	17	5	11	मंगल कुम्भ में 18/56, शुक्र श्रवण में 9/13, प्रदोषव्रत,
	12	13	चं.	12	59	कृत्ति.	24	39	शि./	9	11	वृष	8	50	7	15	17	17	7	9	17	21	7	10	17	30	6	38	17	5	12	
									सि.	28	55																					
	13	14/	मं.	9	16	रोहि.	21	41	सा.	24	39	वृष			7	15	17	18	7	9	17	21	7	11	17	31	6	39	17	5	13	भ. 9/16 से 19/26 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, (C) पूर्णिमा तिथिक्षय,
		15		29	35																											
पौष कृष्ण	14	1	बु.	26	8	मृग.	18	51	शु.	20	30	मिथुन	8	14	7	16	17	18	7	10	17	22	7	12	17	31	6	39	17	6	14	पौष कृष्णपक्ष प्रारम्भ,
	15	2	गु.	23	4	आर्द्रा	16	22	शु.	16	40	मिथुन			7	17	17	18	7	11	17	22	7	12	17	31	6	40	17	6	15	सं. सूर्य मूल धनु में 20/55, मु. 45, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
	16	3	शु.	20	36	पुन.	14	25	ब्र.	13	15	कर्क	8	50	7	17	17	19	7	11	17	22	7	13	17	32	6	40	17	7	16	भ. 9/50 से 20/36 तक,
	17	4	श.	18	51	पुष्य	13	8	ऐं.	10	23	कर्क			7	18	17	19	7	12	17	23	7	13	17	32	6	41	17	7	17	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 16).
	18	5	र.	17	56	आश्ले.	12	40	वै./	8	10	सिंह	12	40	7	19	17	20	7	12	17	23	7	14	17	33	6	42	17	7	18	
									वि.	30	38																					
	19	6	चं.	17	55	मघा	13	2	प्री.	29	45	सिंह			7	19	17	20	7	13	17	24	7	15	17	33	6	42	17	8	19	भ. 17/55 से 30/20 तक,, बुध वक्री 16/24,
	20	7	मं.	18	44	पू.फा.	14	15	आ.	29	30	कन्या	20	40	7	20	17	20	7	13	17	24	7	15	17	34	6	43	17	8	20	मंगल शत. में 15/01,
	21	8	बु.	20	17	उ.फा.	16	11	सौ.	29	45	कन्या			7	20	17	21	7	14	17	25	7	16	17	34	6	43	17	9	21	सूर्य सायन मकर में 16/15, उत्तर अयन एवं शिशिर ऋतु प्रारम्भ,
	22	9	गु.	22	25	हस्त	18	42	शो.	30	22	कन्या			7	21	17	21	7	14	17	25	7	16	17	35	6	44	17	9	22	शुक्र धनि. में 26/34, बुध पश्चिम में अस्त 17/21,
	23	10	शु.	24	54	चित्रा	21	34	अ.	31	12	तुला	8	6	7	21	17	22	7	15	17	26	7	17	17	35	6	44	17	10	23	भ. 11/40 से 24/54 तक,
	24	11	श.	27	32	स्वाती	24	36	सु.	—	—	तुला			7	22	17	23	7	15	17	26	7	17	17	36	6	45	17	10	24	सफला एकादशी व्रत (स.),
	25	12	र.	30	7	विशा.	27	37	सु.	8	6	वृश्चिक	20	52	7	22	17	23	7	16	17	27	7	17	17	36	6	45	17	11	25	
	26	13	चं.	—	—	अनु.	30	27	घृ.	8	56	वृश्चिक			7	22	17	24	7	16	17	27	7	18	17	37	6	46	17	11	26	शनि ज्ये. 4 में 21/49, सोमप्रदोष व्रत,
	27	13	मं.	8	30	ज्येष्ठा	—	—	शू.	9	38	वृश्चिक			7	23	17	24	7	17	17	28	7	18	17	37	6	46	17	12	27	भ. 8/30 से 21/33 तक,
	28	14	बु.	10	36	ज्येष्ठा	9	1	गं.	10	7	धनु	9	1	7	23	17	25	7	17	17	29	7	19	17	38	6	46	17	13	28	सूर्य पू.षा. में 23/07, वक्री बुध मूल में 25/07, गुरु चित्रा(D)
	29	30	गु.	12	23	मूल	11	17	वृ.	10	21	धनु			7	23	17	26	7	17	17	29	7	19	17	39	6	47	17	13	29	यूरेनस मार्गी 15/00,
पौ.शु.	30	1	शु.	13	48	पू.षा.	13	12	ध्रु.	10	19	मकर	19	38	7	24	17	26	7	18	17	30	7	19	17	39	6	47	17	14	30	पौष शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन मु. 45.
	31	2	श.	14	52	उ.षा.	14	47	व्या.	10	1	मकर			7	24	17	27	7	18	17	30	7	20	17	40	6	47	17	15	31	

(A) में 18/42, (B) एकादशी व्रत (स.), श्रीगीता जयन्ती, (C) श्रीदत्त जयन्ती, (D) 2 में 17/08, शुक्र कुम्भ में 26/46, शनि उदित 7/23.

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		चन्द्रराशि-प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.		
पौष शुक्ल	1	3	र.	15	33	श्रव.	16	1	ह.	9	26	कुम्भ	28	29	7	24	17	28	7	18	17	31	7	20	17	41	6	48	17	15	1	भ. 27/42 बाद, पंचक प्रारम्भ 28/29, इंग्लिश नववर्ष (A)
	2	4	चं.	15	51	धनि.	16	51	व./	8	33	कुम्भ			7	25	17	28	7	18	17	32	7	20	17	41	6	48	17	16	2	भ. 15/51 तक,
									सि.	31	21																					
	3	5	मं.	15	42	शत.	17	17	व्य.	29	45	कुम्भ			7	25	17	29	7	19	17	33	7	20	17	42	6	48	17	17	3	शुक्र शत. में 30/16,
	4	6	बु.	15	6	पू.भा.	17	15	व.	27	52	मीन	11	18	7	25	17	30	7	19	17	33	7	21	17	43	6	48	17	17	4	बुध पूर्व में उदित 7/25,
	5	7	गु.	14	1	उ.भा.	16	45	प.	25	33	मीन			7	25	17	31	7	19	17	34	7	21	17	43	6	49	17	18	5	भ. 14/01 से 25/13 तक, अवतारदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी,
	6	8	शु.	12	25	रेव.	15	45	शि.	22	51	मेष	15	45	7	25	17	31	7	19	17	35	7	21	17	44	6	49	17	19	6	पंचक समाप्त 15/45, मंगल पू.भा. में 30/46,
	7	9	श.	10	21	अश्वि.	14	18	सि.	19	47	मेष			7	25	17	32	7	19	17	36	7	21	17	45	6	49	17	19	7	
	8	10/	र.	7	52	भर.	12	26	सा.	16	24	वृष	17	55	7	25	17	33	7	19	17	36	7	21	17	46	6	49	17	20	8	भ. 18/27 से 29/03 तक, बुध मार्गी 15/12, पुत्रदा (B)
		11		29	3																											एकादशी तिथिक्षय,
	9	12	चं.	26	1	कृत्ति.	10	16	शु.	12	47	वृष			7	25	17	34	7	19	17	37	7	21	17	46	6	49	17	21	9	पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.),
	10	13	मं.	22	54	रोहि./	7	56	शु./	9	2	मिथुन	18	44	7	25	17	35	7	19	17	38	7	21	17	47	6	49	17	22	10	सूर्य उ.षा. में 25/05, भौमप्रदोष व्रत,
						मृग.	29	32	ब्र.	29	15																					
	11	14	बु.	19	52	आर्द्रा	27	17	ऐं.	25	35	मिथुन			7	25	17	36	7	19	17	39	7	21	17	48	6	49	17	22	11	भ. 19/52 से 30/28 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ. 17)
	12	15	गु.	17	4	पुन.	25	19	वै.	22	8	कर्क	19	47	7	25	17	36	7	19	17	40	7	21	17	49	6	49	17	23	12	पौषी पूर्णिमा, माघस्नान प्रारम्भ,
माघ कृष्ण	13	1	शु.	14	40	पुष्य	23	49	वि.	19	3	कर्क			7	25	17	37	7	19	17	40	7	21	17	50	6	49	17	24	13	माघ कृष्णपक्ष प्रारम्भ, लोहड़ी (पंजाब, हरि., ज.का.),
	14	2	श.	12	49	आश्ले.	22	55	प्री.	16	26	सिंह	22	55	7	25	17	38	7	19	17	41	7	21	17	50	6	49	17	25	14	भ. 24/14 बाद, सं. सूर्य मकर में 7/38, मु. 15, (C)
	15	3	र.	11	39	मघा	22	43	आ.	14	21	सिंह			7	25	17	39	7	19	17	42	7	21	17	51	6	49	17	25	15	भ. 11/39 तक, श्रीगणेश(संकष्ट)चतुर्थी व्रत (चन्द्रोदय (D)
	16	4	चं.	11	15	पू.फा.	23	17	सौ.	12	53	कन्या	29	33	7	25	17	40	7	19	17	43	7	21	17	52	6	49	17	26	16	शुक्र पू.भा. में 28/31,
	17	5	मं.	11	39	उ.फा.	24	37	शो.	12	2	कन्या			7	24	17	41	7	19	17	44	7	21	17	53	6	49	17	27	17	
	18	6	बु.	12	49	हस्त	26	38	अ.	11	46	कन्या			7	24	17	42	7	19	17	45	7	21	17	53	6	49	17	28	18	भ. 12/49 से 25/43 तक,
	19	7	गु.	14	37	चित्रा	29	10	सु.	11	59	तुला	15	51	7	24	17	43	7	18	17	45	7	21	17	54	6	49	17	28	19	यूरेनस रेव. 4 में 31/00, सूर्य सायन कुम्भ में 26/53,
	20	8	शु.	16	54	स्वाती	--	--	धृ.	12	34	तुला			7	24	17	43	7	18	17	46	7	20	17	55	6	49	17	29	20	मंगल मीन में 13/49,
	21	9	श.	19	26	स्वाती	8	3	शू.	13	23	वृश्चिक	28	18	7	23	17	44	7	18	17	47	7	20	17	56	6	48	17	30	21	बुध पू.षा. में 13/06,
	22	10	र.	22	0	विशा.	11	3	गं.	14	14	वृश्चिक			7	23	17	45	7	18	17	48	7	20	17	57	6	48	17	31	22	भ. 8/42 से 22/00 तक,
	23	11	चं.	24	21	अनु.	13	56	वृ.	14	59	वृश्चिक			7	23	17	46	7	17	17	49	7	20	17	57	6	48	17	32	23	सूर्य श्रव. में 27/26, षट्तिला एकादशी व्रत (स.),
	24	12	मं.	26	23	ज्येष्ठा	16	33	ध्रु.	15	32	धनु	16	33	7	22	17	47	7	17	17	50	7	19	17	58	6	48	17	32	24	मंगल उ.भा. में 24/36,
	25	13	बु.	27	57	मूल	18	46	व्या.	15	46	धनु			7	22	17	48	7	17	17	50	7	19	17	59	6	47	17	33	25	भ. 27/57 बाद, प्रदोषव्रत, मेरु त्रयोदशी (जैन),
	26	14	गु.	29	2	पू.षा.	20	32	ह.	15	38	मकर	26	54	7	21	17	49	7	16	17	51	7	19	18	0	6	47	17	34	26	भ. 16/30 तक, शनि मूल 1 धनु में 19/30, (E)
	27	30	शु.	29	37	उ.षा.	21	49	व.	15	8	मकर			7	21	17	50	7	16	17	52	7	18	18	1	6	47	17	35	27	शुक्र मीन में 20/17, मौनी अमावस,
माघ शु.	28	1	श.	29	44	श्रव.	22	39	सि.	14	16	मकर			7	20	17	51	7	15	17	53	7	18	18	1	6	46	17	35	28	माघ शुक्लपक्ष प्रारम्भ, गुप्त नवरात्र प्रारम्भ,
	29	2	र.	29	25	धनि.	23	3	व्य.	13	3	कुम्भ	10	54	7	20	17	52	7	16	17	54	7	17	18	2	6	46	17	36	29	चन्द्रदर्शन, मु. 30, पंचक प्रारम्भ 10/54,
	30	3	चं.	28	44	शत.	23	4	व.	11	31	कुम्भ			7	19	17	52	7	14	17	55	7	17	18	3	6	46	17	37	30	गौरी तृतीया (गौंतरी),
	31	4	मं.	27	41	पू.भा.	22	44	प.	9	41	मीन	16	51	7	19	17	53	7	14	17	55	7	17	18	4	6	45	17	38	31	भ. 16/12 से 27/41 तक, बुध उ.षा. में 28/06, (F)

(A) सन् 2017 ई. प्रारम्भ, (B) एकादशी व्रत (स्मा.), (C) पुण्यकाल सारा दिन, प्लूटो पू.षा. 4 में 27/42, मकर संक्रान्ति, (D) देखें पृ. 11), (E) भारत गणतन्त्र दिवस, (F) शुक्र उ. भा. में 17/19, वरद–तिल–कुन्द चतुर्थी.

तिथ्यादि पंचांग (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी, सन् 2017 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति-काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति-काल घं.	मि.	चन्द्रराशि प्रवेशकाल	घं.	मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	जयपुर सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	वाराणसी सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.	तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
माघ शुक्ल	1	5	बु.	26	20	उ.भा.	22	6	शि./ सि.	7 / 29	35 / 15	मीन			7	18	17	54	7	13	17	56	7	16	18	5	6	45	17	38	1	श्री (लक्ष्मी)पंचमी, वसन्त पंचमी, श्रीलक्ष्मी–सरस्वती पूजन,
	2	6	गु.	24	42	रेव.	21	11	सा.	26	42	मेष	21	11	7	17	17	55	7	13	17	57	7	16	18	5	6	44	17	39	2	पंचक समाप्त 21 / 11.
	3	7	शु.	22	50	अश्वि.	20	1	शु.	23	57	मेष			7	17	17	56	7	12	17	58	7	15	18	6	6	44	17	40	3	भ. 22 / 50 बाद, बुध मकर में 13 / 18, आरोग्य सप्तमी, (A)
	4	8	श.	20	45	भर.	18	39	शु.	21	2	वृष	24	17	7	16	17	57	7	11	17	59	7	14	18	7	6	43	17	40	4	भ. 9 / 48 तक, नेप्च्यून शत. 4 में 18 / 20, भीष्माष्टमी,
	5	9	र.	18	30	कृत्ति.	17	7	ब्र.	18	0	वृष			7	15	17	58	7	11	18	0	7	14	18	8	6	43	17	41	5	सूर्य धनि. में 30 / 32, गुप्त नवरात्र समाप्त,
	6	10	चं.	16	10	रोहि.	15	29	ऐं.	14	53	मिथुन	26	39	7	15	17	59	7	10	18	0	7	13	18	8	6	42	17	42	6	भ. 26 / 59 बाद, गुरु वक्री 12 / 23,
	7	11	मं.	13	48	मृग.	13	49	वै.	11	45	मिथुन			7	14	17	59	7	9	18	1	7	13	18	9	6	42	17	43	7	भ. 13 / 48 तक, जया एकादशी व्रत (स.), भीष्म द्वादशी,
	8	12	बु.	11	30	आर्द्रा	12	13	वि./ प्री.	8 / 29	39 / 41	कर्क	29	8	7	13	18	0	7	9	18	2	7	12	18	10	6	41	17	43	8	प्रदोषव्रत,
	9	13	गु.	9	22	पुन.	10	48	आ.	26	56	कर्क			7	12	18	1	7	8	18	3	7	11	18	11	6	40	17	44	9	
	10	14 / 15	शु.	7 / 30	30 / 3	पुष्य	9	39	सौ.	24	28	कर्क			7	12	18	2	7	7	18	3	7	11	18	11	6	40	17	45	10	भ. 7 / 30 से 18 / 47 तक, बुध श्रवण में 8 / 34, राहु मघा(B) पूर्णिमा तिथिक्षय,
फाल्गुन कृष्ण	11	1	श.	29	5	आश्ले.	8	54	शो.	22	23	सिंह	8	54	7	11	18	3	7	7	18	4	7	10	18	12	6	39	17	45	11	फाल्गुन कृष्णपक्ष प्रारम्भ, मंगल रेव. में 22 / 35,
	12	2	र.	28	41	मघा	8	39	अ.	20	44	सिंह			7	10	18	4	7	6	18	5	7	9	18	13	6	38	17	46	12	सं. सूर्य कुम्भ में 20 / 39, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न बाद,
	13	3	चं.	28	57	पू.फा.	8	59	सु.	19	35	कन्या	15	10	7	9	18	4	7	5	18	6	7	8	18	13	6	38	17	47	13	भ. 16 / 49 से 28 / 57 तक,
	14	4	मं.	29	52	उ.फा.	9	56	धृ.	18	55	कन्या			7	8	18	5	7	4	18	7	7	8	18	14	6	37	17	47	14	श्रीगणेशचतुर्थी व्रत,
	15	5	बु.	–	–	हस्त	11	31	शू.	18	46	तुला	24	32	7	7	18	6	7	3	18	7	7	7	18	15	6	36	17	48	15	
	16	5	गु.	7	23	चित्रा	13	41	गं.	19	2	तुला			7	6	18	7	7	2	18	8	7	6	18	16	6	36	17	48	16	
	17	6	शु.	9	25	स्वाती	16	17	वृ.	19	37	तुला			7	5	18	8	7	2	18	9	7	5	18	16	6	35	17	49	17	भ. 9 / 25 से 22 / 37 तक,
	18	7	श.	11	48	विशा.	19	10	ध्रु.	20	25	वृश्चिक	12	26	7	4	18	9	7	1	18	9	7	4	18	17	6	34	17	50	18	बुध धनि. में 19 / 04, सूर्य सायन मीन में 17 / 02, (C)
	19	8	र.	14	18	अनु.	22	6	व्या.	21	15	वृश्चिक			7	3	18	9	7	0	18	10	7	4	18	18	6	33	17	50	19	सूर्य शत. में 11 / 8,
	20	9	चं.	16	41	ज्येष्ठा	24	52	ह.	21	57	धनु	24	52	7	2	18	10	6	59	18	11	7	3	18	18	6	32	17	51	20	भ. 29 / 42 बाद,
	21	10	मं.	18	45	मूल	27	17	व.	22	23	धनु			7	1	18	11	6	58	18	12	7	2	18	19	6	32	17	51	21	भ. 18 / 45 तक, शुक्र रेव. में 8 / 23,
	22	11	बु.	20	20	पू.षा.	29	11	सि.	22	27	धनु			7	0	18	12	6	57	18	12	7	1	18	19	6	31	17	52	22	बुध कुम्भ में 18 / 44, विजया एकादशी व्रत (स.),
	23	12	गु.	21	18	उ.षा.	30	29	व्य.	22	2	मकर	11	34	6	59	18	12	6	56	18	13	7	0	18	20	6	30	17	53	23	
	24	13	शु.	21	38	श्रव.	–	–	व.	21	9	मकर			6	58	18	13	6	55	18	14	6	59	18	21	6	29	17	53	24	भ. 21 / 38 बाद, प्रदोष व्रत, श्री महाशिवरात्रि व्रत,
	25	14	श.	21	21	श्रव.	7	10	प.	19	46	कुम्भ	19	17	6	57	18	14	6	54	18	14	6	58	18	21	6	28	17	54	25	भ. 9 / 30 तक, पंचक प्रारम्भ 19 / 17,
	26	30	र.	20	28	धनि./ शत.	7 / 30	16 / 49	शि.	17	55	कुम्भ			6	56	18	15	6	53	18	15	6	57	18	22	6	27	17	54	26	बुध शत. में 14 / 57,
फाल्गु. शुक्ल	27	1	चं.	19	6	पू.भा.	29	56	सि.	15	41	मीन	24	12	6	55	18	15	6	52	18	16	6	56	18	23	6	26	17	55	27	फाल्गुन शुक्लपक्ष प्रारम्भ,
	28	2	मं.	17	21	उ.भा.	28	43	सा.	13	8	मीन			6	54	18	16	6	51	18	16	6	55	18	23	6	26	17	55	28	चन्द्रदर्शन(देखें पृ. 17), मु. 45, अव. दिन श्रीरामकृष्ण परमहंस.

(A) रथसप्तमी (पूर्वारुणोदय वाली), (B) 3, केतु शत. 1 में 12 / 33, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीगुरु रविदास जयन्ती, माघी पूर्णिमा, माघस्नान समाप्त, (C) वसन्त ऋतु प्रारम्भ, बुध पूर्व में अस्त 7 / 04,

मास पक्ष	गते	तिथि	वार	समाप्ति-काल		नक्षत्र	समाप्ति-काल		योग	समाप्ति-काल		चन्द्रराशि - प्रवेशकाल			चण्डीगढ़				दिल्ली				जयपुर				वाराणसी				तारीख	भद्रा, ग्रहराशि, नक्षत्र–प्रवेश एवं पर्वोत्सवादि (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है।)
															सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त		सूर्योदय		सूर्यास्त			
				घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.		घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.		
फाल्गुन शुक्ल	1	3	बु.	15	17	रेव.	27	16	शु.	10	19	मेष	27	16	6	53	18	17	6	50	18	17	6	54	18	24	6	25	17	56	1	भ. 26/10 बाद, पंचक समाप्त 27/16, मंगल अश्वि.(A)
	2	4	गु.	13	3	अश्वि.	25	41	शु./	7	21	मेष			6	52	18	18	6	49	18	18	6	53	18	24	6	24	17	57	2	भ. 13/03 तक,
									ब्र.	28	17																					
	3	5	शु.	10	43	भर.	24	4	ऐं.	25	12	वृष	29	39	6	51	18	18	6	48	18	18	6	52	18	25	6	23	17	57	3	
	4	6/	श.	8	23	कृत्ति.	22	29	वै.	22	9	वृष			6	49	18	19	6	47	18	19	6	51	18	26	6	22	17	58	4	भ. 30/07 बाद, सूर्य पू.भा. में 17/22, शुक्र वक्री 14/40,
		7		30	7																											सप्तमी तिथिक्षय,
	5	8	र.	27	59	रोहि.	21	0	वि.	19	11	वृष			6	48	18	20	6	46	18	20	6	50	18	26	6	21	17	58	5	भ. 17/03 तक, बुध पू.भा. में 22/00, होलाष्टक प्रारम्भ,
	6	9	चं.	26	2	मृग.	19	42	प्री.	16	21	मिथुन	8	20	6	47	18	21	6	45	18	20	6	49	18	27	6	20	17	59	6	
	7	10	मं.	24	18	आर्द्रा	18	36	आ.	13	41	मिथुन			6	46	18	21	6	44	18	21	6	48	18	27	6	19	17	59	7	
	8	11	बु.	22	49	पुन.	17	45	सौ.	11	13	कर्क	11	56	6	45	18	22	6	43	18	21	6	47	18	28	6	18	18	0	8	भ.11/34 से 22/49 तक, आमला एकादशी व्रत (स.).
	9	12	गु.	21	39	पुष्य	17	12	शो.	8	59	कर्क			6	44	18	23	6	41	18	22	6	46	18	28	6	17	18	0	9	गोविन्द द्वादशी,
	10	13	शु.	20	50	आश्ले.	16	58	अ./	7	0	सिंह	16	58	6	42	18	23	6	40	18	23	6	45	18	29	6	16	18	1	10	बुध मीन में 26/37, प्रदोषव्रत,
									सु.	29	18																					
	11	14	श.	20	24	मघा	17	7	धृ.	27	55	सिंह			6	41	18	24	6	39	18	23	6	44	18	29	6	15	18	1	11	भ. 20/ 24 बाद,
	12	15	र.	20	24	पू.फा.	17	41	शू.	26	54	कन्या	23	53	6	40	18	25	6	38	18	24	6	43	18	30	6	14	18	2	12	भ. 8/24 तक, बुध उ.भा. में 19/20, श्रीसत्यनारायण व्रत,(B)
चैत्र कृष्ण	13	1	चं.	20	52	उ.फा.	18	42	गं.	26	14	कन्या		.	6	39	18	25	6	37	18	24	6	42	18	30	6	13	18	2	13	चैत्र कृष्णपक्ष प्रारम्भ, वसन्तोत्सव, होला महल्ला (C)
	14	2	मं.	21	50	हस्त	20	12	वृ.	25	58	कन्या			6	38	18	26	6	36	18	25	6	41	18	31	6	12	18	3	14	सं सूर्य मीन में 17/33, मु. 30, पुण्यकाल 11/09 बाद,
	15	3	बु.	23	17	चित्रा	22	10	ध्रु.	26	4	तुला	9	7	6	36	18	27	6	35	18	26	6	40	18	32	6	11	18	3	15	भ. 10/33 से 23/17 तक, वक्री शुक्र उ.भा. में 8/13,
	16	4	गु.	25	11	स्वाती	24	34	व्या.	26	30	तुला			6	35	18	27	6	34	18	26	6	39	18	32	6	10	18	3	16	शनि मूल 2 में 9/36, श्रीगणेशचतुर्थी व्रत, (D)
	17	5	शु.	27	26	विशा.	27	18	ह.	27	12	वृश्चिक	20	36	6	34	18	28	6	32	18	27	6	38	18	33	6	9	18	4	17	सूर्य उ.भा. में 25/54,
	18	6	श.	29	53	अनु.	30	14	व.	28	2	वृश्चिक			6	33	18	29	6	31	18	27	6	37	18	33	6	8	18	4	18	भ. 29/53 बाद, वक्री गुरु चित्रा 1 में 13/56,
	19	7	र.	..	..	ज्येष्ठा	..	..	सि.	28	53	वृश्चिक			6	31	18	29	6	30	18	28	6	36	18	34	6	7	18	5	19	भ. 19/06 तक, बुध रेव. में 14/49, शुक्रवार्धक्य प्रारम्भ(E)
	20	7	चं.	8	19	ज्येष्ठा	9	9	व्य.	29	36	धनु	9	9	6	30	18	30	6	29	18	28	6	34	18	34	6	6	18	5	20	मंगल भर. मे 14/11, सूर्य सायन मेष में 15/58, उत्तर (F)
	21	8	मं.	10	32	मूल	11	51	व.	30	0	धनु			6	29	18	30	6	28	18	29	6	33	18	35	6	5	18	6	21	बुध पश्चिम में उदित 18/30, श्री शीतलाष्टमी,
	22	9	बु.	12	18	पू.षा.	14	7	प.	29	58	मकर	20	35	6	28	18	31	6	27	18	30	6	32	18	35	6	4	18	6	22	भ. 24/53 बाद, शुक्र पश्चिम में अस्त 18/31,(G)
	23	10	गु.	13	28	उ.षा.	15	47	शि.	29	24	मकर			6	27	18	32	6	25	18	30	6	31	18	36	6	3	18	7	23	भ. 13/28 तक.
	24	11	शु.	13	54	श्रव.	16	45	सि.	28	15	कुम्भ	28	57	6	25	18	32	6	24	18	31	6	30	18	36	6	1	18	7	24	पंचक प्रारम्भ 28/57, पापमोचिनी एकादशी व्रत (स.).
	25	12	श.	13	34	धनि.	16	58	सा.	26	30	कुम्भ			6	24	18	33	6	23	18	31	6	29	18	37	6	0	18	8	25	शुक्र पूर्व में उदित 6/24, शनिप्रदोष व्रत, महावारुणी पर्व (H)
	26	13	र.	12	29	शत.	16	28	शु.	24	12	कुम्भ			6	23	18	34	6	22	18	32	6	28	18	37	5	59	18	8	26	भ. 12/29 से 23/37 तक, मेला पिहोवा तीर्थ(हरि.). (I)
	27	14	चं.	10	45	पू.भा.	15	20	शु.	21	24	मीन	9	40	6	22	18	34	6	21	18	32	6	27	18	38	5	58	18	8	27	बुध अश्वि. मेष में 7/38,
	28	30/	मं.	8	27	उ.भा.	13	40	ब्र.	18	13	मीन			6	20	18	35	6	20	18	33	6	26	18	38	5	57	18	9	28	शुक्रबाल्य समाप्त 6/24, भौमवती(J)
		1		29	45																										..	प्रतिपदा तिथिक्षय.

होलाष्टक– 5 से 12 मार्च

शुक्र अस्त 22 मार्च

शुक्र उदित 25 मार्च

(A) मेष में 26/41, (B) होलाष्टक समाप्त, होलिकादहन (प्रदोष में), जन्मदिन श्री. चैतन्य महाप्रभु, (C) श्रीआनन्दपुर साहिब (पं.), (D) मेला श्रीशीतला माता (कुराली–पं.), (E) 18/31, (F) गोल प्रारम्भ, महाविषुवदिन, (G) शक संवत्सर 1939 प्रारम्भ, (H) (16/58 से सूर्यास्त तक)(देखें पृ. 17),,(I) वारुणीपर्व (सूर्योदय से 12/29 तक)(देखें पृ. 17), (J) अमा, चान्द्र संवत्सर 2073 वि. पूर्ण, चैत्र शुक्लपक्ष प्रारम्भ, चान्द्र संवत्सर 2074 वि. प्रारम्भ, वासन्त नवरात्र प्रारम्भ(देखें पृ. 17), वर्षफलश्रवण, तैलाभ्यंग, ध्वजारोहण, निम्बपत्र–प्राशन,

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.फा.	17	30	0	12	6	56	13	41
1/ 2	हस्त	20	27	3	13	10	0	16	47
2/ 3	चित्रा	23	34	6	21	13	7	19	52
4	स्वाती	2	36	9	19	16	0	22	39
5/ 6	विशा.	5	17	11	52	18	26	0	57
6/ 7	अनु.	7	26	13	52	20	16	2	37
7/ 8	ज्येष्ठा	8	56	15	12	21	26	3	38
8/ 9	मूल	9	47	15	54	21	58	4	0
9/10	पू.षा.	10	0	15	58	21	54	3	49
10/11	उ.षा.	9	41	15	32	21	22	3	10
11/12	श्रव.	8	57	14	43	20	28	2	11
12/13	धनि.	7	54	13	36	19	18	0	59
13	शत.	6	39	12	19	17	59	23	39
14	पू.भा.	5	18	10	57	16	37	22	16
15	उ.भा.	3	55	9	34	15	13	20	53
16	रेव.	2	32	8	12	13	52	19	32
17	अश्वि.	1	13	6	53	12	34	18	16
17/18	भर.	23	57	5	39	11	21	17	4
18/19	कृत्ति.	22	47	4	31	10	15	16	0
19/20	रोहि.	21	45	3	31	9	18	15	5
20/21	मृग.	20	54	2	43	8	33	14	24
21/22	आर्द्रा	20	17	2	10	8	5	14	2
22/23	पुन.	19	59	1	59	8	0	14	2
23/24	पुष्य	20	7	2	13	8	21	14	31
24/25	आश्ले.	20	44	2	58	9	14	15	33
25/26	मघा	21	54	4	17	10	42	17	9
26/27	पू.फा.	23	39	6	11	12	44	19	20
28	उ.फा.	1	57	8	36	15	17	21	59
29/30	हस्त	4	43	11	27	18	12	0	58
30/31	चित्रा	7	45	14	32	21	18	4	5

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	स्वाती	10	51	17	36	0	21	7	4
1/ 2	विशा.	13	46	20	26	3	4	9	41
2/ 3	अनु.	16	15	22	47	5	17	11	44
3/ 4	ज्येष्ठा	18	8	0	30	6	49	13	5
4/ 5	मूल	19	18	1	28	7	36	13	41
5/ 6	पू.षा.	19	43	1	42	7	39	13	33
6/ 7	उ.षा.	19	24	1	14	7	1	12	46
7/ 8	श्रव.	18	29	0	10	5	49	11	27
8/ 9	धनि.	17	3	22	38	4	11	9	44
9/10	शत.	15	15	20	46	2	16	7	46
10/11	पू.भा.	13	15	18	44	0	12	5	41
11/12	उ.भा.	11	9	16	38	22	7	3	37
12/13	रेव.	9	6	14	37	20	8	1	40
13	अश्वि.	7	12	12	46	18	20	23	56
14	भर.	5	32	11	10	16	49	22	29
15	कृत्ति.	4	10	9	53	15	37	21	22
16	रोहि.	3	8	8	57	14	46	20	37
17	मृग.	2	29	8	23	14	19	20	16
18	आर्द्रा	2	14	8	14	14	15	20	19
19	पुन.	2	23	8	30	14	37	20	47
20	पुष्य	2	58	9	11	15	25	21	41
21	आश्ले.	3	59	10	19	16	40	23	3
22/23	मघा	5	27	11	53	18	21	0	51
23/24	पू.फा.	7	22	13	55	20	29	3	4
24/25	उ.फा.	9	42	16	20	23	0	5	41
25/26	हस्त	12	24	19	7	1	51	8	36
26/27	चित्रा	15	21	22	7	4	54	11	41
27/28	स्वाती	18	27	1	13	7	59	14	45
28/29	विशा.	21	29	4	13	10	56	17	37

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	अनु.	0	17	6	55	13	31	20	5
2	ज्येष्ठा	2	37	9	7	15	34	21	58
3	मूल	4	20	10	39	16	55	23	9
4	पू.षा.	5	19	11	27	17	31	23	33
5	उ.षा.	5	31	11	27	17	20	23	10
6	श्रव.	4	58	10	42	16	25	22	5
7	धनि.	3	42	9	18	14	51	20	22
8	शत.	1	52	7	20	12	46	18	11
8/ 9	पू.भा.	23	35	4	58	10	20	15	41
9/10	उ.भा.	21	2	2	22	7	41	13	1
10/11	रेव.	18	20	23	40	5	0	10	20
11/12	अश्वि.	15	42	21	3	2	26	7	50
12/13	भर.	13	14	18	40	0	8	5	36
13/14	कृत्ति.	11	7	16	39	22	13	3	49
14/15	रोहि.	9	26	15	6	20	48	2	32
15/16	मृग.	8	18	14	7	19	58	1	51
16/17	आर्द्रा	7	46	13	44	19	44	1	47
17/18	पुन.	7	51	13	58	20	8	2	19
18/19	पुष्य	8	33	14	49	21	7	3	27
19/20	आश्ले.	9	48	16	12	22	38	5	5
20/21	मघा	11	34	18	5	0	37	7	11
21/22	पू.फा.	13	46	20	22	3	0	9	39
22/23	उ.फा.	16	18	22	59	5	41	12	23
23/24	हस्त	19	7	1	51	8	35	15	20
24/25	चित्रा	22	6	4	52	11	38	18	24
26	स्वाती	1	10	7	56	14	42	21	27
27/28	विशा.	4	12	10	56	17	40	0	23
28/29	अनु.	7	5	13	46	20	25	3	3
29/30	ज्येष्ठा	9	40	16	15	22	48	5	20
30/31	मूल	11	49	18	16	0	41	7	3

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2016 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अप्रैल 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	पू.षा.	13	23	19	40	1	55	8	7
1/ 2	उ.षा.	14	16	20	23	2	27	8	28
2/ 3	श्रव.	14	26	20	21	2	13	8	3
3/ 4	घनि.	13	49	19	34	1	15	6	54
4/ 5	शत.	12	31	18	5	23	37	5	7
5/ 6	पू.भा.	10	34	16	0	21	24	2	47
6/ 7	उ.भा.	8	8	13	27	18	46	0	3
7	रेव.	5	20	10	36	15	51	21	6
8	अश्वि.	2	21	7	36	12	51	18	6
8/ 9	भर.	23	22	4	39	9	56	15	15
9/10	कृत्ति.	20	34	1	55	7	17	12	41
10/11	रोहि.	18	7	23	35	5	5	10	37
11/12	मृग.	16	11	21	48	3	27	9	9
12/13	आर्द्रा	14	54	20	42	2	32	8	25
13/14	पुन.	14	21	20	20	2	22	8	28
14/15	पुष्य	14	35	20	46	3	0	9	16
15/16	आश्ले.	15	35	21	57	4	21	10	48
16/17	मघा	17	17	23	48	6	21	12	56
17/18	पू.फा.	19	32	2	10	8	50	15	31
18/19	उ.फा.	22	13	4	56	11	40	18	25
20	हस्त	1	10	7	55	14	41	21	28
21/22	चित्रा	4	14	11	0	17	46	0	33
22/23	स्वाती	7	18	14	4	20	49	3	33
23/24	विशा.	10	17	17	1	23	43	6	25
24/25	अनु.	13	6	19	46	2	25	9	3
25/26	ज्येष्ठा	15	39	22	15	4	49	11	22
26/27	मूल	17	53	0	23	6	51	13	18
27/28	पू.षा.	19	43	2	5	8	26	14	45
28/29	उ.षा.	21	2	3	17	9	29	15	39
29/30	श्रव.	21	47	3	53	9	56	15	56

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मई 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/ 1	घनि.	21	54	3	50	9	43	15	33
1/ 2	शत.	21	21	3	7	8	50	14	30
2/ 3	पू.भा.	20	9	1	45	7	18	12	50
3/ 4	उ.भा.	18	20	23	48	5	13	10	38
4/ 5	रेव.	16	0	21	21	2	41	8	0
5/ 6	अश्वि.	13	18	18	35	23	51	5	7
6/ 7	भर.	10	22	15	38	20	53	2	9
7	कृत्ति.	7	24	12	41	17	58	23	16
8	रोहि.	4	35	9	56	15	18	20	41
9	मृग.	2	7	7	34	13	3	18	35
10	आर्द्रा	0	9	5	45	11	25	17	7
10/11	पुन.	22	52	4	40	10	31	16	25
11/12	पुष्य	22	23	4	23	10	27	16	34
12/13	आश्ले.	22	44	4	57	11	14	17	33
13/14	मघा	23	56	6	21	12	49	19	19
15	पू.फा.	1	52	8	27	15	4	21	43
16/17	उ.फा.	4	24	11	6	17	49	0	33
17/18	हस्त	7	19	14	5	20	51	3	38
18/19	चित्रा	10	25	17	11	23	58	6	45
19/20	स्वाती	13	30	20	16	3	0	9	44
20/21	विशा.	16	27	23	9	5	51	12	31
21/22	अनु.	19	10	1	47	8	24	14	59
22/23	ज्येष्ठा	21	33	4	6	10	38	17	8
23/24	मूल	23	37	6	4	12	30	18	55
25	पू.षा.	1	18	7	40	14	1	20	20
26	उ.षा.	2	37	8	53	15	8	21	20
27	श्रव.	3	31	9	41	15	48	21	54
28	घनि.	3	58	10	0	16	1	21	59
29	शत.	3	56	9	50	15	43	21	33
30	पू.भा.	3	22	9	8	14	53	20	36
31	उ.भा.	2	16	7	55	13	32	19	7

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जून 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	रेव.	0	41	6	12	11	42	17	11
1/ 2	अश्वि.	22	38	4	4	9	29	14	53
2/ 3	भर.	20	16	1	38	7	0	12	21
3/ 4	कृत्ति.	17	42	23	2	4	23	9	43
4/ 5	रोहि.	15	4	20	26	1	48	7	11
5/ 6	मृग.	12	35	18	1	23	28	4	56
6/ 7	आर्द्रा	10	26	15	58	21	31	3	7
7/ 8	पुन.	8	46	14	26	20	10	1	56
8/ 9	पुष्य	7	45	13	37	19	31	1	29
9/10	आश्ले.	7	30	13	34	19	41	1	52
10/11	मघा	8	5	14	22	20	41	3	4
11/12	पू.फा.	9	29	15	57	22	28	5	1
12/13	उ.फा.	11	36	18	13	0	52	7	33
13/14	हस्त	14	16	20	59	3	44	10	29
14/15	चित्रा	17	15	0	1	6	47	13	33
15/16	स्वाती	20	19	3	5	9	49	16	33
16/17	विशा.	23	16	5	58	12	39	19	18
18	अनु.	1	56	8	33	15	8	21	41
19	ज्येष्ठा	4	13	10	44	17	12	23	39
20/21	मूल	6	5	12	28	18	51	1	11
21/22	पू.षा.	7	30	13	47	20	3	2	18
22/23	उ.षा.	8	31	14	42	20	52	3	1
23/24	श्रव.	9	9	15	15	21	19	3	23
24/25	घनि.	9	25	15	26	21	25	3	24
25/26	शत.	9	21	15	16	21	11	3	4
26/27	पू.भा.	8	56	14	46	20	35	2	23
27/28	उ.भा.	8	10	13	55	19	39	1	22
28/29	रेव.	7	4	12	44	18	23	0	1
29	अश्वि.	5	38	11	14	16	48	22	22
30	भर.	3	55	9	27	14	59	20	29

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जुलाई 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	कृत्ति.	2	0	7	30	12	59	18	28
1/ 2	रोहि.	23	58	5	27	10	56	16	26
2/ 3	मृग.	21	57	3	28	8	59	14	32
3/ 4	आर्द्रा	20	5	1	40	7	16	12	53
4/ 5	पुन.	18	33	0	13	5	56	11	41
5/ 6	पुष्य	17	28	23	17	5	8	11	2
6/ 7	आश्ले.	16	59	22	58	5	0	11	5
7/ 8	मघा	17	12	23	22	5	35	11	51
8/ 9	पू.फा.	18	10	0	31	6	55	13	22
9/10	उ.फा.	19	51	2	22	8	56	15	31
10/11	हस्त	22	9	4	48	11	29	18	11
12	चित्रा	0	54	7	39	14	23	21	8
13/14	स्वाती	3	53	10	39	17	23	0	8
14/15	विशा.	6	52	13	34	20	16	2	57
15/16	अनु.	9	36	16	13	22	49	5	24
16/17	ज्येष्ठा	11	56	18	26	0	55	7	21
17/18	मूल	13	46	20	8	2	28	8	46
18/19	पू.षा.	15	3	21	17	3	29	9	39
19/20	उ.षा.	15	48	21	54	3	59	10	2
20/21	श्रव.	16	3	22	3	4	2	9	59
21/22	घनि.	15	54	21	48	3	42	9	33
22/23	शत.	15	24	21	14	3	3	8	50
23/24	पू.भा.	14	37	20	23	2	9	7	53
24/25	उ.भा.	13	37	19	20	1	2	6	44
25/26	रेव.	12	26	18	6	23	47	5	27
26/27	अश्वि.	11	6	16	45	22	24	4	2
27/28	भर.	9	40	15	18	20	55	2	33
28/29	कृत्ति.	8	10	13	48	19	25	1	3
29	रोहि.	6	40	12	18	17	56	23	35
30	मृग.	5	14	10	53	16	33	22	14
31	आर्द्रा	3	56	9	38	15	22	21	6

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अगस्त 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	पुन.	2	52	8	39	14	27	20	17
2	पुष्य	2	9	8	2	13	56	19	53
3	आश्ले.	1	52	7	52	13	55	20	0
4	मघा	2	7	8	16	14	28	20	42
5	पू.फा.	2	58	9	16	15	37	22	0
6	उ.फा.	4	26	10	53	17	23	23	55
7/ 8	हस्त	6	29	13	4	19	42	2	21
8/ 9	चित्रा	9	1	15	42	22	25	5	8
9/10	स्वाती	11	53	18	37	1	22	8	7
10/11	विशा.	14	51	21	35	4	19	11	2
11/12	अनु.	17	44	0	24	7	3	13	41
12/13	ज्येष्ठा	20	16	2	50	9	22	15	52
13/14	मूल	22	19	4	45	11	8	17	28
14/15	पू.षा.	23	46	6	2	12	15	18	25
16	उ.षा.	0	33	6	39	12	42	18	44
17	श्रव.	0	42	6	39	12	33	18	26
18	घनि.	0	17	6	5	11	52	17	38
18/19	शत.	23	22	5	4	10	45	16	25
19/20	पू.भा.	22	4	3	41	9	18	14	54
20/21	उ.भा.	20	29	2	4	7	38	13	12
21/22	रेव.	18	45	0	19	5	52	11	25
22/23	अश्वि.	16	58	22	31	4	4	9	38
23/24	भर.	15	12	20	47	2	22	7	57
24/25	कृत्ति.	13	33	19	10	0	48	6	26
25/26	रोहि.	12	5	17	45	23	26	5	8
26/27	मृग.	10	51	16	36	22	21	4	7
27/28	आर्द्रा	9	55	15	43	21	34	3	25
28/29	पुन.	9	18	15	12	21	7	3	4
29/30	पुष्य	9	3	15	3	21	4	3	8
30/31	आश्ले.	9	12	15	19	21	27	3	37

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
सितंबर 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	मघा	9	48	16	2	22	17	4	34
1/ 2	पू.फा.	10	53	17	13	23	35	6	0
2/ 3	उ.फा.	12	26	18	53	1	23	7	54
3/ 4	हस्त	14	27	21	1	3	37	10	14
4/ 5	चित्रा	16	53	23	33	6	14	12	56
5/ 6	स्वाती	19	39	2	23	9	8	15	52
6/ 7	विशा.	22	37	5	23	12	8	18	53
8	अनु.	1	37	8	21	15	3	21	45
9/10	ज्येष्ठा	4	25	11	5	17	42	0	18
10/11	मूल	6	51	13	23	19	52	2	19
11/12	पू.षा.	8	44	15	6	21	25	3	42
12/13	उ.षा.	9	56	16	7	22	15	4	21
13/14	श्रव.	10	23	16	23	22	21	4	15
14/15	घनि.	10	7	15	56	21	43	3	28
15/16	शत.	9	10	14	50	20	28	2	4
16/17	पू.भा.	7	38	13	10	18	41	0	11
17	उ.भा.	5	39	11	6	16	32	21	57
18	रेव.	3	22	8	45	14	9	19	32
19	अश्वि.	0	55	6	18	11	41	17	4
19/20	भर.	22	28	3	53	9	18	14	44
20/21	कृत्ति.	20	11	1	38	7	7	12	38
21/22	रोहि.	18	9	23	42	5	17	10	53
22/23	मृग.	16	31	22	11	3	52	9	36
23/24	आर्द्रा	15	21	21	9	2	58	8	49
24/25	पुन.	14	43	20	38	2	36	8	35
25/26	पुष्य	14	37	20	40	2	46	8	54
26/27	आश्ले.	15	3	21	14	3	28	9	43
27/28	मघा	16	0	22	18	4	39	11	1
28/29	पू.फा.	17	24	23	50	6	16	12	45
29/30	उ.फा.	19	14	1	45	8	18	14	51

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
अक्तूबर 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
30/1	हस्त	21	26	4	2	10	40	17	18
1/2	चित्रा	23	57	6	38	13	19	20	1
3	स्वाती	2	44	9	27	16	11	22	56
4/5	विशा.	5	41	12	26	19	11	1	57
5/6	अनु.	8	42	15	28	22	12	4	57
6/7	ज्येष्ठा	11	40	18	23	1	5	7	46
7/8	मूल	14	25	21	3	3	39	10	14
8/9	पू.षा.	16	46	23	16	5	45	12	10
9/10	उ.षा.	18	34	0	54	7	12	13	27
10/11	श्रव.	19	40	1	49	7	56	13	59
11/12	धनि.	19	59	1	57	7	51	13	43
12/13	शत.	19	31	1	17	7	0	12	40
13/14	पू.भा.	18	18	23	53	5	26	10	57
14/15	उ.भा.	16	25	21	52	3	16	8	39
15/16	रेव.	14	0	19	20	0	39	5	57
16/17	अश्वि.	11	14	16	30	21	46	3	1
17/18	भर.	8	16	13	31	18	47	0	2
18	कृत्ति.	5	18	10	35	15	53	21	12
19	रोहि.	2	32	7	53	13	16	18	41
20	मृग.	0	8	5	36	11	6	16	39
20/21	आर्द्रा	22	14	3	52	9	31	15	14
21/22	पुन.	20	59	2	47	8	37	14	31
22/23	पुष्य	20	27	2	25	8	27	14	31
23/24	आश्ले.	20	38	2	48	9	0	15	14
24/25	मघा	21	31	3	51	10	13	16	36
25/26	पू.फा.	23	2	5.	30	12	0	18	31
27	उ.फा.	1	4	7	38	14	14	20	50
28	हस्त	3	28	10	8	16	48	23	28
29/30	चित्रा	6	10	12	52	19	35	2	18
30/31	स्वाती	9	2	15	46	22	31	5	15

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
नवंबर 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/1	विशा.	12	0	18	45	1	30	8	15
1/2	अनु.	15	0	21	44	4	29	11	13
2/3	ज्येष्ठा	17	57	0	40	7	23	14	5
3/4	मूल	20	46	3	26	10	5	16	43
4/5	पू.षा.	23	20	5	56	12	30	19	2
6	उ.षा.	1	32	8	1	14	28	20	52
7	श्रव.	3	14	9	34	15	51	22	5
8	धनि.	4	17	10	26	16	32	22	36
9	शत.	4	36	10	34	16	28	22	20
10	पू.भा.	4	9	9	55	15	38	21	18
11	उ.भा.	2	55	8	30	14	2	19	32
12	रेव.	1	0	6	25	11	49	17	10
12/13	अश्वि.	22	30	3	48	9	5	14	21
13/14	भर.	19	35	0	49	6	2	11	15
14/15	कृत्ति.	16	27	21	39	2	51	8	4
15/16	रोहि.	13	17	18	31	23	45	5	1
16/17	मृग.	10	17	15	36	20	56	2	17
17/18	आर्द्रा	7	40	13	6	18	34	0	4
18	पुन.	5	37	11	12	16	51	22	32
19	पुष्य	4	16	10	3	15	54	21	47
20	आश्ले.	3	44	9	43	15	46	21	52
21	मघा	4	2	10	14	16	29	22	47
22/23	पू.फा.	5	8	11	32	17	58	0	27
23/24	उ.फा.	6	57	13	30	20	5	2	42
24/25	हस्त	9	20	16	0	22	40	5	22
25/26	चित्रा	12	5	18	49	1	33	8	18
26/27	स्वाती	15	3	21	48	4	34	11	19
27/28	विशा.	18	5	0	50	7	35	14	19
28/29	अनु.	21	3	3	47	10	30	17	13
29/30	ज्येष्ठा	23	55	6	36	13	17	19	57

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
दिसंबर 2016 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	मूल	2	36	9	15	15	52	22	29
2/3	पू.षा.	5	4	11	39	18	13	0	45
3/4	उ.षा.	7	16	13	46	20	14	2	41
4/5	श्रव.	9	7	15	31	21	53	4	13
5/6	धनि.	10	32	16	48	23	2	5	15
6/7	शत.	11	24	17	32	23	37	5	40
7/8	पू.भा.	11	40	17	38	23	33	5	26
8/9	उ.भा.	11	16	17	4	22	49	4	32
9/10	रेव.	10	12	15	49	21	25	2	58
10/11	अश्वि.	8	29	13	58	19	25	0	50
11	भर.	6	13	11	35	16	56	22	15
12	कृत्ति.	3	33	8	50	14	7	19	23
13	रोहि.	0	39	5	54	11	9	16	25
13/14	मृग.	21	41	2	57	8	14	13	32
14/15	आर्द्रा	18	51	0	12	5	33	10	57
15/16	पुन.	16	22	21	50	3	19	8	50
16/17	पुष्य	14	25	20	2	1	41	7	23
17/18	आश्ले.	13	8	18	57	0	48	6	42
18/19	मघा	12	40	18	41	0	45	6	52
19/20	पू.फा.	13	2	19	16	1	33	7	52
20/21	उ.फा.	14	15	20	40	3	8	9	38
21/22	हस्त	16	11	22	46	5	23	12	1
22/23	चित्रा	18	41	1	23	8	6	14	50
23/24	स्वाती	21	34	4	19	11	5	17	50
25	विशा.	0	36	7	22	14	7	20	52
26	अनु.	3	36	10	20	17	3	23	45
27/28	ज्येष्ठा	6	27	13	7	19	46	2	24
28/29	मूल	9	1	15	37	22	11	4	45
29/30	पू.षा.	11	17	17	48	0	17	6	45
30/31	उ.षा.	13	12	19	38	2	2	8	25

चन्द्रमा का नक्षत्रचरणों में प्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) सन् 2017 ई.

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
जनवरी 2017 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	श्रव.	14	47	21	8	3	27	9	44
1/ 2	घनि .	16	1	22	15	4	29	10	41
2/ 3	शत .	16	51	23	0	5	7	11	13
3/ 4	पू.भा.	17	16	23	19	5	19	11	18
4/ 5	उ.भा.	17	15	23	10	5	3	10	55
5/ 6	रेव.	16	44	22	32	4	18	10	2
6/ 7	अश्वि.	15	45	21	26	3	5	8	42
7/ 8	भर.	14	18	19	52	1	25	6	56
8/ 9	कृत्ति.	12	26	17	55	23	23	4	50
9/10	रोहि.	10	16	15	42	21	7	2	31
10/11	मृग.	7	55	13	19	18	44	0	8
11	आर्द्रा	5	32	10	57	16	23	21	50
12	पुन.	3	17	8	45	14	15	19	47
13	पुष्य	1	19	6	54	12	30	18	9
13/14	आश्ले.	23	49	5	32	11	17	17	5
14/15	मघा	22	55	4	48	10	43	16	42
15/16	पू.फा.	22	43	4	47	10	54	17	4
16/17	उ.फा.	23	17	5	33	11	52	18	13
18	हस्त	0	37	7	4	13	33	20	4
19	चित्रा	2	38	9	13	15	51	22	30
20/21	स्वाती	5	10	11	52	18	35	1	19
21/22	विशा.	8	3	14	48	21	33	4	18
22/23	अनु.	11	2	17	47	0	31	7	14
23/24	ज्येष्ठा	13	56	20	37	3	17	9	55
24/25	मूल	16	33	23	8	5	43	12	15
25/26	पू.षा.	18	46	1	15	7	42	14	8
26/27	उ.षा.	20	32	2	54	9	14	15	32
27/28	श्रव.	21	49	4	4	10	17	16	29
28/29	घनि.	22	39	4	47	10	54	16	59
29/30	शत.	23	3	5	5	11	6	17	6
30/31	पू.भा.	23	4	5	1	10	57	16	51

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
फरवरी 2017 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
31/ 1	उ.भा.	22	44	4	36	10	27	16	17
1/ 2	रेव.	22	6	3	54	9	40	15	26
2/ 3	अश्वि.	21	11	2	55	8	38	14	20
3/ 4	भर.	20	1	1	42	7	21	13	0
4/ 5	कृत्ति.	18	39	0	17	5	54	11	30
5/ 6	रोहि.	17	7	22	43	4	18	9	53
6/ 7	मृग.	15	28	21	4	2	39	8	14
7/ 8	आर्द्रा	13	49	19	24	1	0	6	36
8/ 9	पुन.	12	13	17	51	23	29	5	8
9/10	पुष्य	10	48	16	29	22	11	3	54
10/11	आश्ले.	9	39	15	25	21	13	3	3
11/12	मघा	8	54	14	47	20	43	2	40
12/13	पू.फा.	8	39	14	41	20	45	2	51
13/14	उ.फा.	8	59	15	10	21	23	3	38
14/15	हस्त	9	56	16	17	22	39	5	4
15/16	चित्रा	11	31	18	1	0	32	7	6
16/17	स्वाती	13	41	20	18	2	56	9	36
17/18	विशा.	16	17	22	59	5	42	12	26
18/19	अनु.	19	10	1	54	8	38	15	22
19/20	ज्येष्ठा	22	6	4	49	11	31	18	12
21	मूल	0	52	7	31	14	8	20	43
22	पू.षा.	3	17	9	49	16	18	22	46
23/24	उ.षा.	5	11	11	34	17	55	0	13
24/25	श्रव.	6	29	12	43	18	54	1	3
25/26	घनि.	7	10	13	15	19	17	1	17
26/27	शत.	7	16	13	12	19	6	0	59
27/28	पू.भा.	6	49	12	38	18	26	0	12
28	उ.भा.	5	56	11	40	17	22	23	3

चन्द्र नक्षत्रचरण		1		2		3		4	
मार्च 2017 ई.	नक्षत्र	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	रेव.	4	43	10	22	16	1	21	39
2	अश्वि.	3	16	8	53	14	29	20	5
3	भर.	1	41	7	17	12	52	18	28
4	कृत्ति.	0	4	5	39	11	15	16	52
4/ 5	रोहि.	22	29	4	6	9	43	15	22
5/ 6	मृग.	21	0	2	40	8	20	14	0
6/ 7	आर्द्रा	19	42	1	24	7	7	12	51
7/ 8	पुन.	18	36	0	22	6	9	11	56
8/ 9	पुष्य	17	45	23	35	5	26	11	18
9/10	आश्ले.	17	12	23	6	5	2	11	0
10/11	मघा	16	58	22	58	5	0	11	2
11/12	पू.फा.	17	7	23	13	5	21	11	30
12/13	उ.फा.	17	41	23	53	6	8	12	24
13/14	हस्त	18	42	1	2	7	23	13	47
14/15	चित्रा	20	12	2	39	9	7	15	38
15/16	स्वाती	22	10	4	44	11	19	17	56
17	विशा.	0	34	7	14	13	54	20	36
18	अनु.	3	18	10	2	16	45	23	29
19/20	ज्येष्ठा	6	14	12	58	19	42	2	26
20/21	मूल	9	9	15	51	22	32	5	12
21/22	पू.षा.	11	51	18	27	1	2	7	36
22/23	उ.षा.	14	7	20	35	3	2	9	26
23/24	श्रव.	15	47	22	5	4	21	10	34
24/25	धनि.	16	45	22	52	4	57	10	59
25/26	शत.	16	58	22	54	4	48	10	39
26/27	पू.भा.	16	28	22	14	3	58	9	40
27/28	उ.भा.	15	20	20	57	2	33	8	8
28/29	रेव.	13	40	19	12	0	42	6	10
29/30	अश्वि.	11	38	17	6	22	32	3	58
30/31	भर.	9	23	14	49	20	14	1	40

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जनवरी 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 49''

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	6 40 22	8 15 54 8	5 2 37 22	6 4 28 36	9 5 12 14	4 29 4 27	7 7 58 39	7 17 3 45	5 1 31 44	5 0 47 28	-23 4	1 28	0 10
2	6 44 19	8 16 55 17	5 14 27 3	6 5 1 55	9 5 51 50	4 29 5 44	7 9 11 29	7 17 10 15	5 1 28 33	5 0 47 39	-22 59	- 2 17	1 12
3	6 48 15	8 17 56 26	5 26 14 50	6 5 35 8	9 6 22 58	4 29 6 50	7 10 24 24	7 17 16 44	5 1 25 22	5 0 47 21	-22 53	- 5 55	2 11
4	6 52 12	8 18 57 36	6 8 6 16	6 6 8 16	9 6 44 41	4 29 7 44	7 11 37 22	7 17 23 10	5 1 22 11	5 0 45 31	-22 48	- 9 20	3 5
5	6 56 8	8 19 58 46	6 20 6 36	6 6 41 19	9 6 56 10	4 29 8 27	7 12 50 24	7 17 29 33	5 1 19 1	5 0 41 25	-22 42	-12 25	3 51
6	7 0 5	8 20 59 56	7 2 20 19	6 7 14 17	9 6 56 39	4 29 8 58	7 14 3 29	7 17 35 54	5 1 15 50	5 0 34 43	-22 35	-15 1	4 27
7	7 4 1	8 22 1 6	7 14 50 56	6 7 47 9	9 6 45 35	4 29 9 18	7 15 16 37	7 17 42 13	5 1 12 39	5 0 25 32	-22 28	-16 59	4 52
8	7 7 58	8 23 2 16	7 27 40 33	6 8 19 55	9 6 22 41	4 29 9 26	7 16 29 47	7 17 48 29	5 1 9 28	5 0 14 28	-22 20	-18 9	5 2
9	7 11 55	8 24 3 27	8 10 49 42	6 8 52 36	9 5 47 59	4 29 9 22	7 17 43 1	7 17 54 42	5 1 6 17	5 0 2 29	-22 12	-18 23	4 57
10	7 15 51	8 25 4 37	8 24 17 14	6 9 25 10	9 5 1 59	4 29 9 6	7 18 56 17	7 18 0 53	5 1 3 7	4 29 50 46	-22 4	-17 37	4 36
11	7 19 48	8 26 5 47	9 8 0 29	6 9 57 39	9 4 5 39	4 29 8 39	7 20 9 36	7 18 7 0	5 0 59 56	4 29 40 28	-21 55	-15 49	3 58
12	7 23 44	8 27 6 56	9 21 55 48	6 10 30 1	9 3 0 26	4 29 8 0	7 21 22 57	7 18 13 6	5 0 56 45	4 29 32 31	-21 46	-13 4	3 6
13	7 27 41	8 28 8 5	10 5 59 10	6 11 2 17	9 1 48 15	4 29 7 10	7 22 36 21	7 18 19 6	5 0 53 34	4 29 27 24	-21 36	- 9 33	2 2
14	7 31 37	8 29 9 14	10 20 6 54	6 11 34 26	9 0 31 21	4 29 6 8	7 23 49 46	7 18 25 5	5 0 50 24	4 29 25 1	-21 26	- 5 27	0 50
15	7 35 34	9 0 10 22	11 4 16 1	6 12 6 29	8 29 12 13	4 29 4 54	7 25 3 14	7 18 31 0	5 0 47 13	4 29 24 43	-21 16	- 1 3	- 0 26
16	7 39 30	9 1 11 29	11 18 24 30	6 12 38 26	8 27 53 21	4 29 3 29	7 26 16 44	7 18 36 53	5 0 44 2	4 29 25 28	-21 5	3 24	- 1 40
17	7 43 27	9 2 12 35	0 2 31 2	6 13 10 15	8 26 37 9	4 29 1 52	7 27 30 15	7 18 42 42	5 0 40 51	4 29 26 1	-20 53	7 39	- 2 48
18	7 47 24	9 3 13 41	0 16 34 37	6 13 41 58	8 25 25 43	4 29 0 4	7 28 43 49	7 18 48 27	5 0 37 40	4 29 25 13	-20 42	11 27	- 3 45
19	7 51 20	9 4 14 46	1 0 34 16	6 14 13 34	8 24 20 46	4 28 58 4	7 29 57 25	7 18 54 10	5 0 34 30	4 29 22 17	-20 30	14 35	- 4 29
20	7 55 17	9 5 15 50	1 14 28 32	6 14 45 3	8 23 23 38	4 28 55 54	8 1 11 2	7 18 59 48	5 0 31 19	4 29 16 54	-20 17	16 51	- 4 56
21	7 59 13	9 6 16 54	1 28 15 25	6 15 16 25	8 22 35 11	4 28 53 32	8 2 24 41	7 19 5 24	5 0 28 8	4 29 9 20	-20 4	18 7	- 5 6
22	8 3 10	9 7 17 56	2 11 52 30	6 15 47 40	8 21 55 53	4 28 50 58	8 3 38 22	7 19 10 56	5 0 24 57	4 29 0 19	-19 51	18 20	- 4 59
23	8 7 6	9 8 18 58	2 25 17 10	6 16 18 47	8 21 25 55	4 28 48 14	8 4 52 4	7 19 16 24	5 0 21 47	4 28 50 51	-19 37	17 30	- 4 35
24	8 11 3	9 9 19 59	3 8 27 9	6 16 49 47	8 21 5 10	4 28 45 19	8 6 5 49	7 19 21 48	5 0 18 36	4 28 41 59	-19 23	15 45	- 3 56
25	8 14 59	9 10 20 59	3 21 20 55	6 17 20 39	8 20 53 20	4 28 42 12	8 7 19 34	7 19 27 9	5 0 15 25	4 28 34 38	-19 9	13 14	- 3 7
26	8 18 56	9 11 21 58	4 3 58 1	6 17 51 24	8 20 49 58	4 28 38 55	8 8 33 22	7 19 32 26	5 0 12 14	4 28 29 23	-18 54	10 8	- 2 8
27	8 22 53	9 12 22 57	4 16 19 15	6 18 22 1	8 20 54 35	4 28 35 28	8 9 47 11	7 19 37 39	5 0 9 3	4 28 26 25	-18 39	6 40	- 1 5
28	8 26 49	9 13 23 55	4 28 26 41	6 18 52 29	8 21 6 36	4 28 31 49	8 11 1 2	7 19 42 48	5 0 5 53	4 28 25 32	-18 24	2 58	0 0
29	8 30 46	9 14 24 52	5 10 23 25	6 19 22 50	8 21 25 27	4 28 28 0	8 12 14 55	7 19 47 53	5 0 2 42	4 28 26 13	-18 8	- 0 47	1 4
30	8 34 42	9 15 25 49	5 22 13 33	6 19 53 2	8 21 50 35	4 28 24 0	8 13 28 49	7 19 52 54	4 29 59 31	4 28 27 43	-17 52	- 4 29	2 6
31	8 38 39	9 16 26 45	6 4 1 48	6 20 23 5	8 22 21 27	4 28 19 50	8 14 42 44	7 19 57 51	4 29 56 20	4 28 29 14	-17 36	- 7 59	3 1

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 54"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	8 42 35	9 17 27 40	6 15 53 18	6 20 53 0	8 22 57 33	4 28 15 30	8 15 56 41	7 20 2 44	4 29 53 10	4 28 30 0	-17 19	-11 10	3 49
2	8 46 32	9 18 28 34	6 27 53 17	6 21 22 45	8 23 38 24	4 28 11 0	8 17 10 39	7 20 7 33	4 29 49 59	4 28 29 28	-17 2	-13 56	4 28
3	8 50 28	9 19 29 28	7 10 6 48	6 21 52 21	8 24 23 36	4 28 6 20	8 18 24 38	7 20 12 17	4 29 46 48	4 28 27 16	-16 45	-16 8	4 56
4	8 54 25	9 20 30 21	7 22 38 19	6 22 21 48	8 25 12 45	4 28 1 30	8 19 38 39	7 20 16 57	4 29 43 37	4 28 23 26	-16 27	-17 38	5 10
5	8 58 22	9 21 31 13	8 5 31 17	6 22 51 4	8 26 5 29	4 27 56 31	8 20 52 40	7 20 21 32	4 29 40 27	4 28 18 16	-16 9	-18 17	5 9
6	9 2 18	9 22 32 4	8 18 47 38	6 23 20 11	8 27 1 29	4 27 51 22	8 22 6 42	7 20 26 3	4 29 37 16	4 28 12 21	-15 51	-17 58	4 52
7	9 6 15	9 23 32 54	9 2 27 26	6 23 49 7	8 28 0 28	4 27 46 4	8 23 20 46	7 20 30 30	4 29 34 5	4 28 6 24	-15 33	-16 38	4 18
8	9 10 11	9 24 33 43	9 16 28 38	6 24 17 52	8 29 2 12	4 27 40 37	8 24 34 50	7 20 34 52	4 29 30 54	4 28 1 10	-15 14	-14 16	3 27
9	9 14 8	9 25 34 31	10 0 47 10	6 24 46 27	9 0 6 26	4 27 35 1	8 25 48 55	7 20 39 9	4 29 27 44	4 27 57 16	-14 55	-10 59	2 23
10	9 18 4	9 26 35 17	10 15 17 30	6 25 14 51	9 1 12 59	4 27 29 17	8 27 3 0	7 20 43 21	4 29 24 33	4 27 55 2	-14 36	-7 0	1 9
11	9 22 1	9 27 36 2	10 29 53 23	6 25 43 3	9 2 21 40	4 27 23 24	8 28 17 6	7 20 47 28	4 29 21 22	4 27 54 27	-14 17	-2 34	-0 11
12	9 25 57	9 28 36 46	11 14 28 45	6 26 11 4	9 3 32 19	4 27 17 23	8 29 31 13	7 20 51 31	4 29 18 11	4 27 55 10	-13 57	2 1	-1 30
13	9 29 54	9 29 37 28	11 28 58 25	6 26 38 53	9 4 44 50	4 27 11 15	9 0 45 20	7 20 55 29	4 29 15 1	4 27 56 37	-13 37	6 27	-2 42
14	9 33 51	10 0 38 8	0 13 18 33	6 27 6 30	9 5 59 4	4 27 4 59	9 1 59 27	7 20 59 22	4 29 11 50	4 27 58 5	-13 17	10 26	-3 44
15	9 37 47	10 1 38 47	0 27 26 39	6 27 33 55	9 7 14 56	4 26 58 35	9 3 13 35	7 21 3 9	4 29 8 39	4 27 58 56	-12 56	13 46	-4 31
16	9 41 44	10 2 39 24	1 11 21 21	6 28 1 7	9 8 32 20	4 26 52 5	9 4 27 44	7 21 6 52	4 29 5 28	4 27 58 43	-12 36	16 15	-5 2
17	9 45 40	10 3 39 59	1 25 2 8	6 28 28 7	9 9 51 10	4 26 45 28	9 5 41 52	7 21 10 30	4 29 2 18	4 27 57 17	-12 15	17 46	-5 14
18	9 49 37	10 4 40 32	2 8 28 58	6 28 54 55	9 11 11 23	4 26 38 44	9 6 56 1	7 21 14 2	4 28 59 7	4 27 54 44	-11 54	18 15	-5 9
19	9 53 33	10 5 41 4	2 21 42 1	6 29 21 29	9 12 32 55	4 26 31 54	9 8 10 11	7 21 17 30	4 28 55 56	4 27 51 28	-11 33	17 44	-4 48
20	9 57 30	10 6 41 34	3 4 41 32	6 29 47 50	9 13 55 43	4 26 24 59	9 9 24 20	7 21 20 52	4 28 52 45	4 27 47 56	-11 12	16 17	-4 12
21	10 1 26	10 7 42 2	3 17 27 51	7 0 13 57	9 15 19 44	4 26 17 57	9 10 38 30	7 21 24 9	4 28 49 35	4 27 44 40	-10 50	14 3	-3 24
22	10 5 23	10 8 42 28	4 0 1 23	7 0 39 51	9 16 44 56	4 26 10 51	9 11 52 41	7 21 27 20	4 28 46 24	4 27 42 5	-10 29	11 10	-2 27
23	10 9 20	10 9 42 53	4 12 22 51	7 1 5 31	9 18 11 16	4 26 3 39	9 13 6 52	7 21 30 26	4 28 43 13	4 27 40 25	-10 7	7 51	-1 24
24	10 13 16	10 10 43 16	4 24 33 18	7 1 30 56	9 19 38 43	4 25 56 22	9 14 21 3	7 21 33 27	4 28 40 2	4 27 39 46	-9 45	4 14	-0 17
25	10 17 13	10 11 43 38	5 6 34 21	7 1 56 6	9 21 7 17	4 25 49 1	9 15 35 14	7 21 36 23	4 28 36 52	4 27 40 1	-9 23	0 29	0 49
26	10 21 9	10 12 43 58	5 18 28 12	7 2 21 1	9 22 36 55	4 25 41 36	9 16 49 26	7 21 39 13	4 28 33 41	4 27 40 57	-9 0	-3 14	1 53
27	10 25 6	10 13 44 17	6 0 17 42	7 2 45 41	9 24 7 38	4 25 34 7	9 18 3 39	7 21 41 57	4 28 30 30	4 27 42 16	-8 38	-6 48	2 51
28	10 29 2	10 14 44 34	6 12 6 19	7 3 10 5	9 25 39 25	4 25 26 34	9 19 17 52	7 21 44 36	4 28 27 20	4 27 43 39	-8 16	-10 5	3 42
29	10 32 59	10 15 44 49	6 23 58 1	7 3 34 12	9 27 12 15	4 25 18 58	9 20 32 5	7 21 47 9	4 28 24 9	4 27 44 50	-7 53	-12 58	4 24

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 57"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां	चन्द्र क्रां	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 36 55	10 16 45 3	7 5 57 14	7 3 58 3	9 28 46 8	4 25 11 19	9 21 46 18	7 21 49 37	4 28 20 58	4 27 45 36	-7 30	-15 21	4 55
2	10 40 52	10 17 45 16	7 18 8 36	7 4 21 36	10 0 21 5	4 25 3 38	9 23 0 32	7 21 51 59	4 28 17 47	4 27 45 52	-7 7	-17 5	5 13
3	10 44 49	10 18 45 27	8 0 36 45	7 4 44 52	10 1 57 5	4 24 55 54	9 24 14 46	7 21 54 16	4 28 14 37	4 27 45 40	-6 44	-18 3	5 17
4	10 48 45	10 19 45 36	8 13 25 50	7 5 7 50	10 3 34 8	4 24 48 8	9 25 29 0	7 21 56 26	4 28 11 26	4 27 45 5	-6 21	-18 8	5 6
5	10 52 42	10 20 45 44	8 26 39 10	7 5 30 29	10 5 12 16	4 24 40 21	9 26 43 15	7 21 58 31	4 28 8 15	4 27 44 19	-5 58	-17 15	4 38
6	10 56 38	10 21 45 51	9 10 18 37	7 5 52 49	10 6 51 29	4 24 32 32	9 27 57 29	7 22 0 30	4 28 5 5	4 27 43 33	-5 35	-15 22	3 54
7	11 0 35	10 22 45 55	9 24 23 59	7 6 14 49	10 8 31 47	4 24 24 43	9 29 11 44	7 22 2 23	4 28 1 54	4 27 42 58	-5 12	-12 31	2 55
8	11 4 31	10 23 45 58	10 8 52 43	7 6 36 30	10 10 13 10	4 24 16 53	10 0 25 58	7 22 4 10	4 27 58 43	4 27 42 37	-4 48	- 8 49	1 43
9	11 8 28	10 24 45 59	10 23 39 42	7 6 57 50	10 11 55 41	4 24 9 2	10 1 40 13	7 22 5 52	4 27 55 32	4 27 42 31	-4 25	- 4 30	0 22
10	11 12 24	10 25 45 59	11 8 37 47	7 7 18 49	10 13 39 18	4 24 1 12	10 2 54 27	7 22 7 27	4 27 52 22	4 27 42 35	-4 1	0 9	- 1 0
11	11 16 21	10 26 45 56	11 23 38 36	7 7 39 26	10 15 24 4	4 23 53 23	10 4 8 41	7 22 8 56	4 27 49 11	4 27 42 44	-3 38	4 48	- 2 19
12	11 20 18	10 27 45 51	0 8 33 45	7 7 59 42	10 17 9 59	4 23 45 34	10 5 22 55	7 22 10 20	4 27 46 0	4 27 42 49	-3 14	9 7	- 3 28
13	11 24 14	10 28 45 44	0 23 16 0	7 8 19 36	10 18 57 3	4 23 37 47	10 6 37 9	7 22 11 37	4 27 42 50	4 27 42 48	-2 50	12 48	- 4 22
14	11 28 11	10 29 45 35	1 7 40 2	7 8 39 7	10 20 45 17	4 23 30 1	10 7 51 22	7 22 12 49	4 27 39 39	4 27 42 40	-2 27	15 38	- 4 59
15	11 32 7	11 0 45 23	1 21 42 48	7 8 58 14	10 22 34 42	4 23 22 17	10 9 5 35	7 22 13 54	4 27 36 28	4 27 42 30	-2 3	17 26	- 5 16
16	11 36 4	11 1 45 9	2 5 23 25	7 9 16 58	10 24 25 18	4 23 14 35	10 10 19 48	7 22 14 54	4 27 33 17	4 27 42 26	-1 39	18 11	- 5 15
17	11 40 0	11 2 44 53	2 18 42 37	7 9 35 18	10 26 17 5	4 23 6 56	10 11 34 0	7 22 15 48	4 27 30 7	4 27 42 33	-1 16	17 54	- 4 57
18	11 43 57	11 3 44 35	3 1 42 14	7 9 53 14	10 28 10 3	4 22 59 20	10 12 48 12	7 22 16 35	4 27 26 56	4 27 42 55	-0 52	16 40	- 4 24
19	11 47 53	11 4 44 15	3 14 24 43	7 10 10 44	11 0 4 11	4 22 51 46	10 14 2 23	7 22 17 17	4 27 23 45	4 27 43 33	-0 28	14 37	- 3 38
20	11 51 50	11 5 43 52	3 26 52 42	7 10 27 49	11 1 59 30	4 22 44 17	10 15 16 35	7 22 17 52	4 27 20 35	4 27 44 18	-0 4	11 56	- 2 43
21	11 55 47	11 6 43 27	4 9 8 48	7 10 44 28	11 3 55 56	4 22 36 51	10 16 30 46	7 22 18 21	4 27 17 24	4 27 45 2	0 19	8 44	- 1 42
22	11 59 43	11 7 43 0	4 21 15 21	7 11 0 40	11 5 53 29	4 22 29 30	10 17 44 56	7 22 18 45	4 27 14 13	4 27 45 30	0 43	5 13	- 0 36
23	12 3 40	11 8 42 30	5 3 14 33	7 11 16 25	11 7 52 3	4 22 22 12	10 18 59 7	7 22 19 2	4 27 11 2	4 27 45 31	1 7	1 32	0 30
24	12 7 36	11 9 41 59	5 15 8 23	7 11 31 42	11 9 51 36	4 22 15 0	10 20 13 17	7 22 19 14	4 27 7 52	4 27 44 56	1 30	- 2 12	1 35
25	12 11 33	11 10 41 26	5 26 58 53	7 11 46 31	11 11 52 3	4 22 7 52	10 21 27 27	7 22 19 19	4 27 4 41	4 27 43 41	1 54	- 5 49	2 35
26	12 15 29	11 11 40 51	6 8 48 8	7 12 0 50	11 13 53 15	4 22 0 50	10 22 41 36	7 22 19 19	4 27 1 30	4 27 41 51	2 17	- 9 12	3 28
27	12 19 26	11 12 40 13	6 20 38 30	7 12 14 40	11 15 55 6	4 21 53 53	10 23 55 46	7 22 19 12	4 26 58 20	4 27 39 35	2 41	-12 13	4 13
28	12 23 22	11 13 39 35	7 2 32 39	7 12 27 59	11 17 57 26	4 21 47 2	10 25 9 55	7 22 19 0	4 26 55 9	4 27 37 10	3 4	-14 45	4 46
29	12 27 19	11 14 38 54	7 14 33 45	7 12 40 46	11 20 0 4	4 21 40 17	10 26 24 4	7 22 18 42	4 26 51 58	4 27 34 54	3 28	-16 40	5 8
30	12 31 16	11 15 38 11	7 26 45 17	7 12 53 2	11 22 2 46	4 21 33 38	10 27 38 13	7 22 18 17	4 26 48 47	4 27 33 9	3 51	-17 52	5 16
31	12 35 12	11 16 37 27	8 9 11 9	7 13 4 45	11 24 5 17	4 21 27 6	10 28 52 22	7 22 17 47	4 26 45 37	4 27 32 8	4 14	-18 14	5 9

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अप्रैल 2016 ई. को अयनांश 24° 4' 59''

अप्रैल	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	12 39 9	11 17 36 41	8 21 55 16	7 13 15 54	11 26 7 20	4 21 20 41	11 0 6 30	7 22 17 10	4 26 42 26	4 27 31 59	4 37	-17 43	4 48
2	12 43 5	11 18 35 53	9 5 1 20	7 13 26 28	11 28 8 37	4 21 14 22	11 1 20 39	7 22 16 28	4 26 39 15	4 27 32 39	5 1	-16 14	4 11
3	12 47 2	11 19 35 3	9 18 32 23	7 13 36 28	0 0 8 48	4 21 8 11	11 2 34 47	7 22 15 40	4 26 36 5	4 27 33 51	5 24	-13 50	3 19
4	12 50 58	11 20 34 12	10 2 30 6	7 13 45 52	0 2 7 31	4 21 2 8	11 3 48 54	7 22 14 46	4 26 32 54	4 27 35 13	5 46	-10 33	2 14
5	12 54 55	11 21 33 19	10 16 54 9	7 13 54 39	0 4 4 24	4 20 56 12	11 5 3 2	7 22 13 46	4 26 29 43	4 27 36 12	6 9	-6 32	0 59
6	12 58 51	11 22 32 23	11 1 41 31	7 14 2 49	0 5 59 4	4 20 50 25	11 6 17 8	7 22 12 40	4 26 26 32	4 27 36 21	6 32	-2 1	-0 23
7	13 2 48	11 23 31 26	11 16 46 16	7 14 10 22	0 7 51 9	4 20 44 45	11 7 31 15	7 22 11 29	4 26 23 22	4 27 35 20	6 55	2 42	-1 44
8	13 6 45	11 24 30 27	0 1 59 51	7 14 17 15	0 9 40 15	4 20 39 14	11 8 45 21	7 22 10 12	4 26 20 11	4 27 33 4	7 17	7 18	-2 58
9	13 10 41	11 25 29 26	0 17 12 14	7 14 23 30	0 11 26 3	4 20 33 52	11 9 59 26	7 22 8 49	4 26 17 0	4 27 29 45	7 39	11 25	-4 0
10	13 14 38	11 26 28 22	1 2 13 28	7 14 29 5	0 13 8 11	4 20 28 39	11 11 13 31	7 22 7 20	4 26 13 50	4 27 25 48	8 2	14 43	-4 44
11	13 18 34	11 27 27 17	1 16 55 13	7 14 34 0	0 14 46 22	4 20 23 34	11 12 27 35	7 22 5 46	4 26 10 39	4 27 21 51	8 24	17 0	-5 8
12	13 22 31	11 28 26 9	2 1 11 54	7 14 38 15	0 16 20 18	4 20 18 39	11 13 41 39	7 22 4 6	4 26 7 28	4 27 18 30	8 46	18 9	-5 13
13	13 26 27	11 29 24 59	2 15 1 2	7 14 41 48	0 17 49 45	4 20 13 53	11 14 55 42	7 22 2 21	4 26 4 17	4 27 16 14	9 7	18 10	-4 59
14	13 30 24	0 0 23 47	2 28 22 53	7 14 44 39	0 19 14 28	4 20 9 17	11 16 9 44	7 22 0 30	4 26 1 7	4 27 15 19	9 29	17 9	-4 28
15	13 34 20	0 1 22 32	3 11 19 51	7 14 46 48	0 20 34 15	4 20 4 50	11 17 23 46	7 21 58 34	4 25 57 56	4 27 15 42	9 51	15 16	-3 45
16	13 38 17	0 2 21 16	3 23 55 31	7 14 48 15	0 21 48 56	4 20 0 34	11 18 37 47	7 21 56 32	4 25 54 45	4 27 17 2	10 12	12 42	-2 53
17	13 42 13	0 3 19 56	4 6 14 6	7 14 48 59	0 22 58 22	4 19 56 27	11 19 51 48	7 21 54 26	4 25 51 35	4 27 18 43	10 33	9 36	-1 53
18	13 46 10	0 4 18 35	4 18 19 52	7 14 48 59	0 24 2 25	4 19 52 30	11 21 5 48	7 21 52 14	4 25 48 24	4 27 20 4	10 54	6 9	-0 49
19	13 50 7	0 5 17 12	5 0 16 45	7 14 48 16	0 25 0 58	4 19 48 43	11 22 19 47	7 21 49 57	4 25 45 13	4 27 20 23	11 15	2 29	0 16
20	13 54 3	0 6 15 46	5 12 8 17	7 14 46 48	0 25 53 54	4 19 45 6	11 23 33 46	7 21 47 35	4 25 42 2	4 27 19 8	11 35	-1 15	1 20
21	13 58 0	0 7 14 19	5 23 57 23	7 14 44 36	0 26 41 9	4 19 41 40	11 24 47 44	7 21 45 8	4 25 38 52	4 27 15 59	11 56	-4 55	2 20
22	14 1 56	0 8 12 49	6 5 46 31	7 14 41 39	0 27 22 39	4 19 38 24	11 26 1 41	7 21 42 36	4 25 35 41	4 27 10 54	12 16	-8 24	3 14
23	14 5 53	0 9 11 18	6 17 37 40	7 14 37 57	0 27 58 21	4 19 35 19	11 27 15 39	7 21 39 59	4 25 32 30	4 27 4 8	12 36	-11 33	3 59
24	14 9 49	0 10 9 44	6 29 32 37	7 14 33 29	0 28 28 13	4 19 32 24	11 28 29 35	7 21 37 18	4 25 29 19	4 26 56 12	12 56	-14 15	4 34
25	14 13 46	0 11 8 9	7 11 33 3	7 14 28 15	0 28 52 15	4 19 29 39	11 29 43 32	7 21 34 32	4 25 26 9	4 26 47 50	13 16	-16 21	4 58
26	14 17 42	0 12 6 32	7 23 40 48	7 14 22 16	0 29 10 28	4 19 27 5	0 0 57 28	7 21 31 41	4 25 22 58	4 26 39 53	13 35	-17 46	5 8
27	14 21 39	0 13 4 54	8 5 58 0	7 14 15 30	0 29 22 55	4 19 24 42	0 2 11 24	7 21 28 45	4 25 19 47	4 26 33 6	13 54	-18 22	5 4
28	14 25 36	0 14 3 14	8 18 27 11	7 14 7 59	0 29 29 41	4 19 22 30	0 3 25 19	7 21 25 45	4 25 16 36	4 26 28 6	14 13	-18 6	4 46
29	14 29 32	0 15 1 33	9 1 11 17	7 13 59 42	0 29 30 54	4 19 20 29	0 4 39 14	7 21 22 41	4 25 13 26	4 26 25 10	14 32	-16 55	4 14
30	14 33 29	0 15 59 50	9 14 13 25	7 13 50 39	0 29 26 45	4 19 18 38	0 5 53 9	7 21 19 33	4 25 10 15	4 26 24 11	14 50	-14 51	3 28

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रात: 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 मई 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 2"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्यक्रां.	चन्द्रक्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	14 37 25	0 16 58 5	9 27 36 35	7 13 40 50	0 29 17 26	4 19 16 58	0 7 7 3	7 21 16 20	4 25 7 4	4 26 24 35	15 8	-11 55	2 29
2	14 41 22	0 17 56 19	10 11 23 17	7 13 30 16	0 29 3 14	4 19 15 29	0 8 20 58	7 21 13 3	4 25 3 53	4 26 25 33	15 26	-8 16	1 20
3	14 45 18	0 18 54 32	10 25 34 45	7 13 18 58	0 28 44 31	4 19 14 12	0 9 34 51	7 21 9 42	4 25 0 43	4 26 26 2	15 44	-4 1	0 5
4	14 49 15	0 19 52 43	11 10 10 5	7 13 6 57	0 28 21 40	4 19 13 5	0 10 48 45	7 21 6 17	4 24 57 32	4 26 25 7	16 2	0 34	-1 13
5	14 53 11	0 20 50 52	11 25 5 37	7 12 54 12	0 27 55 7	4 19 12 9	0 12 2 38	7 21 2 48	4 24 54 21	4 26 22 9	16 19	5 14	-2 28
6	14 57 8	0 21 49 0	0 10 14 34	7 12 40 45	0 27 25 25	4 19 11 25	0 13 16 31	7 20 59 16	4 24 51 10	4 26 16 54	16 36	9 37	-3 33
7	15 1 5	0 22 47 6	0 25 27 36	7 12 26 38	0 26 53 6	4 19 10 51	0 14 30 23	7 20 55 40	4 24 48 0	4 26 9 41	16 52	13 24	-4 23
8	15 5 1	0 23 45 11	1 10 34 13	7 12 11 51	0 26 18 45	4 19 10 28	0 15 44 15	7 20 52 0	4 24 44 49	4 26 1 15	17 9	16 14	-4 54
9	15 8 58	0 24 43 14	1 25 24 29	7 11 56 26	0 25 43 1	4 19 10 17	0 16 58 6	7 20 48 17	4 24 41 38	4 25 52 35	17 25	17 57	-5 5
10	15 12 54	0 25 41 15	2 9 50 45	7 11 40 24	0 25 6 33	4 19 10 17	0 18 11 57	7 20 44 31	4 24 38 27	4 25 44 45	17 41	18 27	-4 56
11	15 16 51	0 26 39 14	2 23 48 34	7 11 23 48	0 24 29 58	4 19 10 27	0 19 25 47	7 20 40 42	4 24 35 17	4 25 38 36	17 56	17 47	-4 29
12	15 20 47	0 27 37 12	3 7 16 50	7 11 6 38	0 23 53 56	4 19 10 49	0 20 39 37	7 20 36 49	4 24 32 6	4 25 34 35	18 11	16 8	-3 48
13	15 24 44	0 28 35 8	3 20 17 17	7 10 48 58	0 23 19 3	4 19 11 22	0 21 53 26	7 20 32 54	4 24 28 55	4 25 32 40	18 26	13 42	-2 57
14	15 28 40	0 29 33 2	4 2 53 34	7 10 30 48	0 22 45 54	4 19 12 5	0 23 7 15	7 20 28 56	4 24 25 44	4 25 32 23	18 41	10 40	-1 58
15	15 32 37	1 0 30 54	4 15 10 25	7 10 12 10	0 22 15 2	4 19 13 0	0 24 21 3	7 20 24 56	4 24 22 34	4 25 32 53	18 55	7 15	-0 55
16	15 36 34	1 1 28 44	4 27 13 0	7 9 53 8	0 21 46 56	4 19 14 5	0 25 34 51	7 20 20 52	4 24 19 23	4 25 33 11	19 9	3 35	0 9
17	15 40 30	1 2 26 33	5 9 6 22	7 9 33 43	0 21 22 1	4 19 15 21	0 26 48 38	7 20 16 47	4 24 16 12	4 25 32 14	19 22	-0 10	1 12
18	15 44 27	1 3 24 20	5 20 55 7	7 9 13 57	0 21 0 40	4 19 16 48	0 28 2 25	7 20 12 39	4 24 13 1	4 25 29 15	19 36	-3 54	2 11
19	15 48 23	1 4 22 5	6 2 43 14	7 8 53 52	0 20 43 10	4 19 18 26	0 29 16 11	7 20 8 29	4 24 9 50	4 25 23 42	19 49	-7 28	3 4
20	15 52 20	1 5 19 49	6 14 33 55	7 8 33 32	0 20 29 46	4 19 20 14	1 0 29 57	7 20 4 17	4 24 6 40	4 25 15 29	20 1	-10 45	3 50
21	15 56 16	1 6 17 31	6 26 29 39	7 8 12 58	0 20 20 38	4 19 22 12	1 1 43 43	7 20 0 3	4 24 3 29	4 25 4 54	20 14	-13 38	4 25
22	16 0 13	1 7 15 12	7 8 32 11	7 7 52 13	0 20 15 54	4 19 24 21	1 2 57 28	7 19 55 48	4 24 0 18	4 24 52 39	20 25	-15 57	4 49
23	16 4 9	1 8 12 52	7 20 42 45	7 7 31 19	0 20 15 39	4 19 26 41	1 4 11 14	7 19 51 31	4 23 57 7	4 24 39 44	20 37	-17 35	5 1
24	16 8 6	1 9 10 30	8 3 2 17	7 7 10 19	0 20 19 55	4 19 29 11	1 5 24 58	7 19 47 12	4 23 53 57	4 24 27 15	20 48	-18 26	4 58
25	16 12 3	1 10 8 8	8 15 31 35	7 6 49 15	0 20 28 43	4 19 31 51	1 6 38 43	7 19 42 52	4 23 50 46	4 24 16 18	20 59	-18 25	4 41
26	16 15 59	1 11 5 44	8 28 11 43	7 6 28 11	0 20 42 1	4 19 34 41	1 7 52 28	7 19 38 30	4 23 47 35	4 24 7 44	21 10	-17 29	4 10
27	16 19 56	1 12 3 19	9 11 4 5	7 6 7 8	0 20 59 46	4 19 37 41	1 9 6 12	7 19 34 7	4 23 44 24	4 24 1 59	21 20	-15 38	3 26
28	16 23 52	1 13 0 54	9 24 10 29	7 5 46 10	0 21 21 54	4 19 40 52	1 10 19 57	7 19 29 44	4 23 41 13	4 23 58 57	21 29	-12 58	2 31
29	16 27 49	1 13 58 27	10 7 33 2	7 5 25 19	0 21 48 21	4 19 44 12	1 11 33 41	7 19 25 19	4 23 38 3	4 23 57 59	21 39	-9 33	1 26
30	16 31 45	1 14 56 0	10 21 13 46	7 5 4 37	0 22 19 0	4 19 47 43	1 12 47 26	7 19 20 54	4 23 34 52	4 23 58 2	21 48	-5 34	0 14
31	16 35 42	1 15 53 32	11 5 14 9	7 4 44 9	0 22 53 46	4 19 51 23	1 14 1 10	7 19 16 28	4 23 31 41	4 23 57 49	21 57	-1 11	-0 59

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा.स्टैं.टा.), 1 जून 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 6"

ता.	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्यक्रां.	चन्द्रक्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	16 39 38	1 16 51 3	11 19 34 22	7 4 23 56	0 23 32 33	4 19 55 13	1 15 14 55	7 19 12 1	4 23 28 30	4 23 56 6	22 5	3 23	- 2 11
2	16 43 35	1 17 48 34	0 4 12 30	7 4 4 1	0 24 15 14	4 19 59 13	1 16 28 39	7 19 7 35	4 23 25 20	4 23 52 2	22 13	7 49	- 3 16
3	16 47 32	1 18 46 3	0 19 4 3	7 3 44 27	0 25 1 43	4 20 3 23	1 17 42 23	7 19 3 8	4 23 22 9	4 23 45 16	22 20	11 50	- 4 8
4	16 51 28	1 19 43 32	1 4 1 55	7 3 25 16	0 25 51 55	4 20 7 42	1 18 56 8	7 18 58 40	4 23 18 58	4 23 36 7	22 27	15 8	- 4 43
5	16 55 25	1 20 40 59	1 18 57 13	7 3 6 31	0 26 45 43	4 20 12 11	1 20 9 52	7 18 54 13	4 23 15 47	4 23 25 23	22 34	17 24	- 5 0
6	16 59 21	1 21 38 26	2 3 40 44	7 2 48 15	0 27 43 3	4 20 16 50	1 21 23 36	7 18 49 47	4 23 12 36	4 23 14 15	22 40	18 29	- 4 56
7	17 3 18	1 22 35 52	2 18 4 28	7 2 30 29	0 28 43 49	4 20 21 37	1 22 37 20	7 18 45 20	4 23 9 26	4 23 3 56	22 46	18 21	- 4 33
8	17 7 14	1 23 33 17	3 2 2 56	7 2 13 16	0 29 47 57	4 20 26 34	1 23 51 4	7 18 40 54	4 23 6 15	4 22 55 27	22 52	17 5	- 3 54
9	17 11 11	1 24 30 41	3 15 33 40	7 1 56 39	1 0 55 23	4 20 31 40	1 25 4 48	7 18 36 29	4 23 3 4	4 22 49 24	22 57	14 53	- 3 3
10	17 15 7	1 25 28 4	3 28 37 9	7 1 40 38	1 2 6 3	4 20 36 56	1 26 18 31	7 18 32 5	4 22 59 53	4 22 45 51	23 1	11 59	- 2 4
11	17 19 4	1 26 25 26	4 11 16 7	7 1 25 17	1 3 19 55	4 20 42 20	1 27 32 14	7 18 27 41	4 22 56 42	4 22 44 20	23 6	8 37	- 1 0
12	17 23 1	1 27 22 47	4 23 34 52	7 1 10 35	1 4 36 55	4 20 47 53	1 28 45 58	7 18 23 19	4 22 53 32	4 22 44 1	23 10	4 57	0 4
13	17 26 57	1 28 20 7	5 5 38 30	7 0 56 36	1 5 57 1	4 20 53 35	1 29 59 40	7 18 18 58	4 22 50 21	4 22 43 50	23 13	1 9	1 8
14	17 30 54	1 29 17 26	5 17 32 27	7 0 43 19	1 7 20 12	4 20 59 25	2 1 13 23	7 18 14 38	4 22 47 10	4 22 42 41	23 16	- 2 39	2 7
15	17 34 50	2 0 14 44	5 29 21 57	7 0 30 47	1 8 46 25	4 21 5 24	2 2 27 6	7 18 10 19	4 22 43 59	4 22 39 42	23 19	- 6 18	3 1
16	17 38 47	2 1 12 1	6 11 11 45	7 0 19 0	1 10 15 39	4 21 11 32	2 3 40 48	7 18 6 2	4 22 40 48	4 22 34 17	23 21	- 9 43	3 47
17	17 42 43	2 2 9 17	6 23 5 53	7 0 8 0	1 11 47 53	4 21 17 48	2 4 54 31	7 18 1 47	4 22 37 38	4 22 26 16	23 23	-12 45	4 23
18	17 46 40	2 3 6 32	7 5 7 35	6 29 57 46	1 13 23 6	4 21 24 12	2 6 8 13	7 17 57 34	4 22 34 27	4 22 15 53	23 24	-15 18	4 48
19	17 50 36	2 4 3 47	7 17 19 7	6 29 48 20	1 15 1 16	4 21 30 44	2 7 21 55	7 17 53 23	4 22 31 16	4 22 3 48	23 25	-17 12	5 0
20	17 54 33	2 5 1 1	7 29 41 53	6 29 39 42	1 16 42 20	4 21 37 24	2 8 35 37	7 17 49 13	4 22 28 5	4 21 50 57	23 26	-18 20	4 58
21	17 58 30	2 5 58 15	8 12 16 29	6 29 31 52	1 18 26 18	4 21 44 12	2 9 49 19	7 17 45 6	4 22 24 54	4 21 38 28	23 26	-18 35	4 42
22	18 2 26	2 6 55 29	8 25 2 55	6 29 24 51	1 20 13 6	4 21 51 9	2 11 3 2	7 17 41 2	4 22 21 44	4 21 27 27	23 26	-17 55	4 11
23	18 6 23	2 7 52 42	9 8 0 53	6 29 18 39	1 22 2 40	4 21 58 12	2 12 16 44	7 17 36 59	4 22 18 33	4 21 18 47	23 25	-16 19	3 28
24	18 10 19	2 8 49 55	9 21 10 8	6 29 13 17	1 23 54 55	4 22 5 24	2 13 30 27	7 17 32 59	4 22 15 22	4 21 12 56	23 24	-13 50	2 32
25	18 14 16	2 9 47 7	10 4 30 42	6 29 8 44	1 25 49 47	4 22 12 43	2 14 44 9	7 17 29 2	4 22 12 11	4 21 9 50	23 23	-10 36	1 27
26	18 18 12	2 10 44 20	10 18 2 58	6 29 5 1	1 27 47 7	4 22 20 10	2 15 57 52	7 17 25 8	4 22 9 0	4 21 8 55	23 21	- 6 45	0 16
27	18 22 9	2 11 41 33	11 1 47 34	6 29 2 8	1 29 46 48	4 22 27 44	2 17 11 35	7 17 21 16	4 22 5 50	4 21 9 12	23 19	- 2 30	- 0 56
28	18 26 5	2 12 38 46	11 15 45 1	6 29 0 5	2 1 48 38	4 22 35 26	2 18 25 18	7 17 17 27	4 22 2 39	4 21 9 27	23 16	1 57	- 2 7
29	18 30 2	2 13 35 58	11 29 55 14	6 28 58 51	2 3 52 27	4 22 43 14	2 19 39 2	7 17 13 42	4 21 59 28	4 21 8 29	23 13	6 21	- 3 11
30	18 33 59	2 14 33 11	0 14 16 59	6 28 58 27	2 5 58 1	4 22 51 10	2 20 52 46	7 17 10 0	4 21 56 17	4 21 5 29	23 9	10 27	- 4 4

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 जुलाई 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 11''

जुलाई	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	18 37 55	2 15 30 24	0 28 47 22	6 28 58 52	2 8 5 5	4 22 59 13	2 22 6 30	7 17 6 21	4 21 53 6	4 21 0 4	23 5	13 57	-4 41
2	18 41 52	2 16 27 38	1 13 21 43	6 29 0 7	2 10 13 24	4 23 7 24	2 23 20 14	7 17 2 45	4 21 49 56	4 20 52 28	23 1	16 36	-5 1
3	18 45 48	2 17 24 51	1 27 53 52	6 29 2 11	2 12 22 39	4 23 15 41	2 24 33 58	7 16 59 13	4 21 46 45	4 20 43 23	22 56	18 11	-5 1
4	18 49 45	2 18 22 4	2 12 17 2	6 29 5 5	2 14 32 35	4 23 24 5	2 25 47 43	7 16 55 45	4 21 43 34	4 20 33 51	22 51	18 35	-4 42
5	18 53 41	2 19 19 17	2 26 24 47	6 29 8 46	2 16 42 54	4 23 32 35	2 27 1 27	7 16 52 20	4 21 40 23	4 20 24 58	22 46	17 49	-4 6
6	18 57 38	2 20 16 31	3 10 12 13	6 29 13 16	2 18 53 17	4 23 41 13	2 28 15 12	7 16 48 59	4 21 37 12	4 20 17 40	22 40	16 0	-3 17
7	19 1 34	2 21 13 44	3 23 36 31	6 29 18 34	2 21 3 29	4 23 49 56	2 29 28 57	7 16 45 42	4 21 34 2	4 20 12 32	22 33	13 21	-2 17
8	19 5 31	2 22 10 57	4 6 37 12	6 29 24 38	2 23 13 15	4 23 58 47	3 0 42 42	7 16 42 30	4 21 30 51	4 20 9 41	22 27	10 6	-1 12
9	19 9 28	2 23 8 10	4 19 15 50	6 29 31 30	2 25 22 19	4 24 7 43	3 1 56 27	7 16 39 21	4 21 27 40	4 20 8 47	22 20	6 28	-0 5
10	19 13 24	2 24 5 23	5 1 35 35	6 29 39 7	2 27 30 30	4 24 16 46	3 3 10 12	7 16 36 17	4 21 24 29	4 20 9 10	22 12	2 39	1 1
11	19 17 21	2 25 2 36	5 13 40 47	6 29 47 30	2 29 37 35	4 24 25 55	3 4 23 56	7 16 33 17	4 21 21 18	4 20 9 59	22 4	-1 12	2 3
12	19 21 17	2 25 59 49	5 25 36 23	6 29 56 37	3 1 43 25	4 24 35 10	3 5 37 41	7 16 30 21	4 21 18 8	4 20 10 22	21 56	-4 57	2 59
13	19 25 14	2 26 57 2	6 7 27 35	7 0 6 29	3 3 47 53	4 24 44 31	3 6 51 25	7 16 27 30	4 21 14 57	4 20 9 32	21 47	-8 28	3 46
14	19 29 10	2 27 54 15	6 19 19 28	7 0 17 3	3 5 50 51	4 24 53 58	3 8 5 10	7 16 24 44	4 21 11 46	4 20 6 58	21 38	-11 39	4 24
15	19 33 7	2 28 51 28	7 1 16 40	7 0 28 20	3 7 52 15	4 25 3 30	3 9 18 54	7 16 22 2	4 21 8 35	4 20 2 28	21 29	-14 23	4 51
16	19 37 3	2 29 48 41	7 13 23 14	7 0 40 19	3 9 51 59	4 25 13 9	3 10 32 38	7 16 19 25	4 21 5 24	4 19 56 10	21 19	-16 32	5 5
17	19 41 0	3 0 45 54	7 25 42 16	7 0 52 58	3 11 50 2	4 25 22 52	3 11 46 22	7 16 16 52	4 21 2 14	4 19 48 29	21 9	-17 58	5 5
18	19 44 57	3 1 43 7	8 8 15 56	7 1 6 17	3 13 46 21	4 25 32 42	3 13 0 6	7 16 14 25	4 20 59 3	4 19 40 8	20 59	-18 34	4 51
19	19 48 53	3 2 40 21	8 21 5 13	7 1 20 15	3 15 40 53	4 25 42 36	3 14 13 50	7 16 12 2	4 20 55 52	4 19 31 57	20 48	-18 14	4 22
20	19 52 50	3 3 37 35	9 4 10 2	7 1 34 52	3 17 33 40	4 25 52 36	3 15 27 34	7 16 9 44	4 20 52 41	4 19 24 44	20 37	-16 56	3 39
21	19 56 46	3 4 34 49	9 17 29 21	7 1 50 7	3 19 24 39	4 26 2 41	3 16 41 17	7 16 7 31	4 20 49 31	4 19 19 12	20 25	-14 42	2 43
22	20 0 43	3 5 32 5	10 1 1 31	7 2 5 58	3 21 13 50	4 26 12 51	3 17 55 1	7 16 5 24	4 20 46 20	4 19 15 41	20 14	-11 37	1 37
23	20 4 39	3 6 29 21	10 14 44 38	7 2 22 26	3 23 1 14	4 26 23 6	3 19 8 45	7 16 3 21	4 20 43 9	4 19 14 12	20 1	-7 53	0 24
24	20 8 36	3 7 26 37	10 28 36 49	7 2 39 30	3 24 46 51	4 26 33 26	3 20 22 29	7 16 1 23	4 20 39 58	4 19 14 22	19 49	-3 40	-0 51
25	20 12 32	3 8 23 55	11 12 36 25	7 2 57 9	3 26 30 42	4 26 43 52	3 21 36 13	7 15 59 31	4 20 36 47	4 19 15 29	19 36	0 46	-2 3
26	20 16 29	3 9 21 13	11 26 41 57	7 3 15 22	3 28 12 46	4 26 54 22	3 22 49 56	7 15 57 44	4 20 33 37	4 19 16 43	19 23	5 11	-3 9
27	20 20 26	3 10 18 33	0 10 52 0	7 3 34 9	3 29 53 4	4 27 4 56	3 24 3 40	7 15 56 2	4 20 30 26	4 19 17 13	19 9	9 20	-4 4
28	20 24 22	3 11 15 53	0 25 4 50	7 3 53 30	4 1 31 36	4 27 15 36	3 25 17 24	7 15 54 26	4 20 27 15	4 19 16 25	18 56	12 57	-4 44
29	20 28 19	3 12 13 15	1 9 18 17	7 4 13 23	4 3 8 24	4 27 26 20	3 26 31 9	7 15 52 55	4 20 24 4	4 19 14 2	18 42	15 49	-5 6
30	20 32 15	3 13 10 37	1 23 29 30	7 4 33 49	4 4 43 26	4 27 37 8	3 27 44 53	7 15 51 30	4 20 20 54	4 19 10 12	18 27	17 42	-5 10
31	20 36 12	3 14 8 1	2 7 35 4	7 4 54 47	4 6 16 42	4 27 48 1	3 28 58 37	7 15 50 10	4 20 17 43	4 19 5 22	18 12	18 30	-4 55

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अगस्त 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 16"

अगस्त	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घ. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	20 40 8	3 15 5 25	2 21 31 10	7 5 16 15	4 7 48 13	4 27 58 59	4 0 12 21	7 15 48 55	4 20 14 32	4 19 0 12	17 57	18 10	-4 23
2	20 44 5	3 16 2 51	3 5 14 11	7 5 38 15	4 9 17 58	4 28 10 0	4 1 26 5	7 15 47 47	4 20 11 21	4 18 55 24	17 42	16 46	-3 36
3	20 48 1	3 17 0 17	3 18 41 7	7 6 0 44	4 10 45 56	4 28 21 6	4 2 39 50	7 15 46 44	4 20 8 11	4 18 51 35	17 26	14 28	-2 37
4	20 51 58	3 17 57 45	4 1 50 4	7 6 23 44	4 12 12 6	4 28 32 16	4 3 53 34	7 15 45 46	4 20 5 0	4 18 49 8	17 11	11 26	-1 32
5	20 55 55	3 18 55 13	4 14 40 28	7 6 47 12	4 13 36 26	4 28 43 31	4 5 7 17	7 15 44 54	4 20 1 49	4 18 48 7	16 54	7 56	-0 23
6	20 59 51	3 19 52 42	4 27 13 8	7 7 11 9	4 14 58 55	4 28 54 49	4 6 21 1	7 15 44 8	4 19 58 38	4 18 48 23	16 38	4 9	0 46
7	21 3 48	3 20 50 13	5 9 30 10	7 7 35 34	4 16 19 29	4 29 6 10	4 7 34 44	7 15 43 28	4 19 55 28	4 18 49 34	16 21	0 16	1 51
8	21 7 44	3 21 47 43	5 21 34 41	7 8 0 26	4 17 38 8	4 29 17 36	4 8 48 27	7 15 42 54	4 19 52 17	4 18 51 11	16 4	-3 33	2 50
9	21 11 41	3 22 45 15	6 3 30 38	7 8 25 45	4 18 54 48	4 29 29 5	4 10 2 10	7 15 42 25	4 19 49 6	4 18 52 42	15 47	-7 10	3 41
10	21 15 37	3 23 42 48	6 15 22 31	7 8 51 30	4 20 9 25	4 29 40 38	4 11 15 52	7 15 42 2	4 19 45 55	4 18 53 42	15 30	-10 29	4 23
11	21 19 34	3 24 40 21	6 27 15 6	7 9 17 41	4 21 21 55	4 29 52 14	4 12 29 34	7 15 41 45	4 19 42 45	4 18 53 51	15 12	-13 23	4 53
12	21 23 30	3 25 37 55	7 9 13 10	7 9 44 16	4 22 32 15	5 0 3 54	4 13 43 15	7 15 41 34	4 19 39 34	4 18 53 3	14 54	-15 44	5 10
13	21 27 27	3 26 35 31	7 21 21 18	7 10 11 16	4 23 40 19	5 0 15 37	4 14 56 56	7 15 41 28	4 19 36 23	4 18 51 19	14 36	-17 26	5 14
14	21 31 24	3 27 33 7	8 3 43 31	7 10 38 40	4 24 46 2	5 0 27 24	4 16 10 36	7 15 41 29	4 19 33 12	4 18 48 51	14 17	-18 21	5 4
15	21 35 20	3 28 30 44	8 16 23 4	7 11 6 27	4 25 49 19	5 0 39 13	4 17 24 16	7 15 41 35	4 19 30 2	4 18 46 0	13 59	-18 23	4 39
16	21 39 17	3 29 28 22	8 29 22 2	7 11 34 37	4 26 50 2	5 0 51 6	4 18 37 55	7 15 41 47	4 19 26 51	4 18 43 9	13 40	-17 28	3 59
17	21 43 13	4 0 26 1	9 12 41 8	7 12 3 9	4 27 48 5	5 1 3 1	4 19 51 33	7 15 42 4	4 19 23 40	4 18 40 42	13 21	-15 35	3 6
18	21 47 10	4 1 23 42	9 26 19 35	7 12 32 3	4 28 43 19	5 1 15 0	4 21 5 11	7 15 42 28	4 19 20 29	4 18 38 55	13 1	-12 47	2 0
19	21 51 6	4 2 21 23	10 10 15 11	7 13 1 18	4 29 35 35	5 1 27 1	4 22 18 49	7 15 42 57	4 19 17 19	4 18 37 58	12 42	-9 12	0 46
20	21 55 3	4 3 19 7	10 24 24 29	7 13 30 54	5 0 24 44	5 1 39 5	4 23 32 26	7 15 43 33	4 19 14 8	4 18 37 51	12 22	-5 2	-0 32
21	21 58 59	4 4 16 51	11 8 43 15	7 14 0 51	5 1 10 35	5 1 51 12	4 24 46 3	7 15 44 14	4 19 10 57	4 18 38 22	12 2	-0 33	-1 49
22	22 2 56	4 5 14 38	11 23 6 58	7 14 31 8	5 1 52 57	5 2 3 22	4 25 59 39	7 15 45 0	4 19 7 46	4 18 39 14	11 42	3 59	-2 59
23	22 6 53	4 6 12 26	0 7 31 15	7 15 1 44	5 2 31 36	5 2 15 35	4 27 13 15	7 15 45 53	4 19 4 36	4 18 40 8	11 22	8 18	-3 59
24	22 10 49	4 7 10 15	0 21 52 14	7 15 32 40	5 3 6 20	5 2 27 49	4 28 26 50	7 15 46 51	4 19 1 25	4 18 40 48	11 1	12 6	-4 43
25	22 14 46	4 8 8 7	1 6 6 48	7 16 3 55	5 3 36 55	5 2 40 7	4 29 40 25	7 15 47 55	4 18 58 14	4 18 41 2	10 41	15 9	-5 9
26	22 18 42	4 9 6 0	1 20 12 33	7 16 35 29	5 4 3 5	5 2 52 27	5 0 54 0	7 15 49 5	4 18 55 3	4 18 40 49	10 20	17 16	-5 17
27	22 22 39	4 10 3 55	2 4 7 42	7 17 7 21	5 4 24 36	5 3 4 49	5 2 7 34	7 15 50 21	4 18 51 53	4 18 40 13	9 59	18 20	-5 5
28	22 26 35	4 11 1 52	2 17 50 57	7 17 39 32	5 4 41 11	5 3 17 14	5 3 21 7	7 15 51 42	4 18 48 42	4 18 39 24	9 38	18 18	-4 37
29	22 30 32	4 11 59 50	3 1 21 20	7 18 12 0	5 4 52 34	5 3 29 40	5 4 34 41	7 15 53 9	4 18 45 31	4 18 38 35	9 17	17 14	-3 53
30	22 34 28	4 12 57 51	3 14 38 9	7 18 44 47	5 4 58 31	5 3 42 9	5 5 48 14	7 15 54 42	4 18 42 21	4 18 37 54	8 55	15 13	-2 58
31	22 38 25	4 13 55 53	3 27 40 59	7 19 17 51	5 4 58 45	5 3 54 40	5 7 1 46	7 15 56 21	4 18 39 10	4 18 37 28	8 34	12 27	-1 54

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 सितंबर 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 19"

सितंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	22	42	22	4	14	53	57	4	10	29	41	7	19	51	12	5	4	53	3	5	4	7	13	5	8	15	18	7	15	58	5	4	18	35	59	4	18	37	18	8	12	9	8	-0	45
2	22	46	18	4	15	52	3	4	23	4	35	7	20	24	49	5	4	41	15	5	4	19	48	5	9	28	49	7	15	59	55	4	18	32	48	4	18	37	20	7	50	5	27	0	25
3	22	50	15	4	16	50	10	5	5	26	31	7	20	58	44	5	4	23	13	5	4	32	25	5	10	42	20	7	16	1	51	4	18	29	38	4	18	37	28	7	28	1	36	1	32
4	22	54	11	4	17	48	19	5	17	36	56	7	21	32	54	5	3	58	53	5	4	45	3	5	11	55	50	7	16	3	52	4	18	26	27	4	18	37	35	7	6	-2	16	2	34
5	22	58	8	4	18	46	29	5	29	37	56	7	22	7	21	5	3	28	18	5	4	57	44	5	13	9	19	7	16	5	59	4	18	23	16	4	18	37	37	6	44	-5	58	3	28
6	23	2	4	4	19	44	41	6	11	32	21	7	22	42	3	5	2	51	37	5	5	10	25	5	14	22	48	7	16	8	11	4	18	20	6	4	18	37	31	6	21	-9	25	4	13
7	23	6	1	4	20	42	55	6	23	23	32	7	23	17	0	5	2	9	9	5	5	23	8	5	15	36	15	7	16	10	29	4	18	16	55	4	18	37	18	5	59	-12	27	4	47
8	23	9	57	4	21	41	10	7	5	15	23	7	23	52	12	5	1	21	21	5	5	35	53	5	16	49	42	7	16	12	53	4	18	13	44	4	18	37	1	5	37	-14	59	5	9
9	23	13	54	4	22	39	26	7	17	12	12	7	24	27	38	5	0	28	51	5	5	48	39	5	18	3	8	7	16	15	22	4	18	10	33	4	18	36	48	5	14	-16	54	5	17
10	23	17	51	4	23	37	44	7	29	18	33	7	25	3	19	4	29	32	30	5	6	1	26	5	19	16	33	7	16	17	56	4	18	7	23	4	18	36	44	4	51	-18	5	5	12
11	23	21	47	4	24	36	4	8	11	38	56	7	25	39	14	4	28	33	16	5	6	14	15	5	20	29	57	7	16	20	36	4	18	4	12	4	18	36	55	4	28	-18	27	4	52
12	23	25	44	4	25	34	25	8	24	17	35	7	26	15	22	4	27	32	21	5	6	27	4	5	21	43	20	7	16	23	21	4	18	1	1	4	18	37	23	4	6	-17	55	4	18
13	23	29	40	4	26	32	48	9	7	17	58	7	26	51	43	4	26	31	3	5	6	39	55	5	22	56	41	7	16	26	11	4	17	57	51	4	18	38	6	3	43	-16	26	3	30
14	23	33	37	4	27	31	12	9	20	42	19	7	27	28	18	4	25	30	47	5	6	52	46	5	24	10	2	7	16	29	7	4	17	54	40	4	18	38	53	3	20	-14	1	2	29
15	23	37	33	4	28	29	38	10	4	31	13	7	28	5	4	4	24	33	0	5	7	5	39	5	25	23	22	7	16	32	8	4	17	51	29	4	18	39	34	2	57	-10	45	1	18
16	23	41	30	4	29	28	6	10	18	43	10	7	28	42	4	4	23	39	9	5	7	18	32	5	26	36	41	7	16	35	14	4	17	48	18	4	18	39	55	2	33	-6	45	0	0
17	23	45	26	5	0	26	36	11	3	14	26	7	29	19	15	4	22	50	35	5	7	31	26	5	27	49	58	7	16	38	25	4	17	45	8	4	18	39	43	2	10	-2	17	-1	20
18	23	49	23	5	1	25	7	11	17	59	14	7	29	56	38	4	22	8	33	5	7	44	21	5	29	3	15	7	16	41	41	4	17	41	57	4	18	38	54	1	47	2	23	-2	35
19	23	53	20	5	2	23	41	0	2	50	17	8	0	34	13	4	21	34	8	5	7	57	16	6	0	16	31	7	16	45	2	4	17	38	46	4	18	37	31	1	24	6	57	-3	41
20	23	57	16	5	3	22	16	0	17	39	52	8	1	12	0	4	21	8	13	5	8	10	13	6	1	29	45	7	16	48	29	4	17	35	36	4	18	35	47	1	1	11	3	-4	31
21	0	1	13	5	4	20	54	1	2	20	53	8	1	49	57	4	20	51	27	5	8	23	9	6	2	42	59	7	16	52	0	4	17	32	25	4	18	34	1	0	37	14	26	-5	3
22	0	5	9	5	5	19	34	1	16	47	44	8	2	28	6	4	20	44	18	5	8	36	6	6	3	56	12	7	16	55	36	4	17	29	14	4	18	32	36	0	14	16	52	-5	16
23	0	9	6	5	6	18	16	2	0	56	51	8	3	6	26	4	20	46	59	5	8	49	4	6	5	9	24	7	16	59	17	4	17	26	3	4	18	31	50	-0	9	18	12	-5	8
24	0	13	2	5	7	17	1	2	14	46	36	8	3	44	57	4	20	59	34	5	9	2	2	6	6	22	35	7	17	3	3	4	17	22	53	4	18	31	53	-0	33	18	25	-4	43
25	0	16	59	5	8	15	48	2	28	17	3	8	4	23	38	4	21	21	53	5	9	15	0	6	7	35	45	7	17	6	54	4	17	19	42	4	18	32	44	-0	56	17	35	-4	3
26	0	20	55	5	9	14	37	3	11	29	20	8	5	2	30	4	21	53	41	5	9	27	58	6	8	48	55	7	17	10	50	4	17	16	31	4	18	34	9	-1	19	15	47	-3	11
27	0	24	52	5	10	13	28	3	24	25	15	8	5	41	32	4	22	34	31	5	9	40	57	6	10	2	3	7	17	14	50	4	17	13	21	4	18	35	44	-1	43	13	13	-2	9
28	0	28	49	5	11	12	21	4	7	6	48	8	6	20	45	4	23	23	52	5	9	53	55	6	11	15	11	7	17	18	55	4	17	10	10	4	18	36	59	-2	6	10	4	-1	3
29	0	32	45	5	12	11	17	4	19	35	58	8	7	0	8	4	24	21	8	5	10	6	54	6	12	28	17	7	17	23	4	4	17	6	59	4	18	37	25	-2	30	6	30	0	5
30	0	36	42	5	13	10	15	5	1	54	32	8	7	39	41	4	25	25	38	5	10	19	52	6	13	41	23	7	17	27	19	4	17	3	48	4	18	36	42	-2	53	2	42	1	12

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 अक्तूबर 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 22"

अक्टूबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	0 40 38	5 14 9 15	5 14 4 7	8 8 19 23	4 26 36 42	5 10 32 50	6 14 54 28	7 17 31 38	4 17 0 38	4 18 34 37	-3 16	- 1 10	2 15
2	0 44 35	5 15 8 17	5 26 6 12	8 8 59 16	4 27 53 36	5 10 45 48	6 16 7 31	7 17 36 1	4 16 57 27	4 18 31 13	-3 39	- 4 56	3 11
3	0 48 31	5 16 7 21	6 8 2 24	8 9 39 17	4 29 15 40	5 10 58 46	6 17 20 34	7 17 40 29	4 16 54 16	4 18 26 44	-4 3	- 8 29	3 58
4	0 52 28	5 17 6 27	6 19 54 36	8 10 19 28	5 0 42 11	5 11 11 43	6 18 33 35	7 17 45 1	4 16 51 6	4 18 21 34	-4 26	-11 40	4 35
5	0 56 24	5 18 5 35	7 1 45 2	8 10 59 48	5 2 12 32	5 11 24 39	6 19 46 36	7 17 49 37	4 16 47 55	4 18 16 17	-4 49	-14 22	4 59
6	1 0 21	5 19 4 44	7 13 36 28	8 11 40 17	5 3 46 8	5 11 37 35	6 20 59 35	7 17 54 18	4 16 44 44	4 18 11 26	-5 12	-16 28	5 11
7	1 4 18	5 20 3 56	7 25 32 11	8 12 20 54	5 5 22 24	5 11 50 30	6 22 12 32	7 17 59 3	4 16 41 33	4 18 7 34	-5 35	-17 53	5 10
8	1 8 14	5 21 3 9	8 7 36 3	8 13 1 40	5 7 0 52	5 12 3 24	6 23 25 29	7 18 3 52	4 16 38 23	4 18 5 2	-5 58	-18 31	4 54
9	1 12 11	5 22 2 24	8 19 52 23	8 13 42 34	5 8 41 6	5 12 16 18	6 24 38 23	7 18 8 45	4 16 35 12	4 18 4 0	-6 21	-18 18	4 26
10	1 16 7	5 23 1 41	9 2 25 41	8 14 23 36	5 10 22 42	5 12 29 10	6 25 51 17	7 18 13 42	4 16 32 1	4 18 4 19	-6 43	-17 11	3 44
11	1 20 4	5 24 0 59	9 15 20 18	8 15 4 45	5 12 5 19	5 12 42 2	6 27 4 8	7 18 18 43	4 16 28 51	4 18 5 35	-7 6	-15 10	2 49
12	1 24 0	5 25 0 20	9 28 40 0	8 15 46 2	5 13 48 41	5 12 54 52	6 28 16 58	7 18 23 48	4 16 25 40	4 18 7 7	-7 29	-12 17	1 44
13	1 27 57	5 25 59 42	10 12 27 10	8 16 27 26	5 15 32 33	5 13 7 41	6 29 29 47	7 18 28 57	4 16 22 29	4 18 8 11	-7 51	- 8 38	0 31
14	1 31 53	5 26 59 6	10 26 42 12	8 17 8 58	5 17 16 42	5 13 20 29	7 0 42 34	7 18 34 10	4 16 19 18	4 18 8 2	-8 13	- 4 22	- 0 46
15	1 35 50	5 27 58 32	11 11 22 38	8 17 50 36	5 19 0 58	5 13 33 16	7 1 55 19	7 18 39 26	4 16 16 8	4 18 6 9	-8 36	0 17	- 2 3
16	1 39 47	5 28 57 59	11 26 22 55	8 18 32 21	5 20 45 12	5 13 46 1	7 3 8 2	7 18 44 46	4 16 12 57	4 18 2 24	-8 58	5 1	- 3 12
17	1 43 43	5 29 57 29	0 11 34 32	8 19 14 13	5 22 29 16	5 13 58 45	7 4 20 44	7 18 50 10	4 16 9 46	4 17 57 0	-9 20	9 29	- 4 9
18	1 47 40	6 0 57 1	0 26 47 16	8 19 56 12	5 24 13 6	5 14 11 28	7 5 33 24	7 18 55 37	4 16 6 35	4 17 50 36	-9 41	13 20	- 4 48
19	1 51 36	6 1 56 35	1 11 50 46	8 20 38 16	5 25 56 36	5 14 24 9	7 6 46 3	7 19 1 7	4 16 3 25	4 17 44 3	-10 3	16 15	- 5 7
20	1 55 33	6 2 56 12	1 26 36 18	8 21 20 28	5 27 39 42	5 14 36 48	7 7 58 40	7 19 6 41	4 16 0 14	4 17 38 17	-10 25	18 2	- 5 5
21	1 59 29	6 3 55 50	2 10 58 0	8 22 2 45	5 29 22 22	5 14 49 25	7 9 11 15	7 19 12 19	4 15 57 3	4 17 34 1	-10 46	18 37	- 4 44
22	2 3 26	6 4 55 31	2 24 53 15	8 22 45 9	6 1 4 34	5 15 2 1	7 10 23 49	7 19 18 0	4 15 53 53	4 17 31 40	-11 7	18 2	- 4 6
23	2 7 22	6 5 55 14	3 8 22 17	8 23 27 38	6 2 46 15	5 15 14 35	7 11 36 21	7 19 23 44	4 15 50 42	4 17 31 9	-11 28	16 26	- 3 15
24	2 11 19	6 6 54 59	3 21 27 23	8 24 10 14	6 4 27 26	5 15 27 6	7 12 48 51	7 19 29 31	4 15 47 31	4 17 31 58	-11 49	14 0	- 2 16
25	2 15 16	6 7 54 46	4 4 11 59	8 24 52 55	6 6 8 6	5 15 39 36	7 14 1 20	7 19 35 22	4 15 44 20	4 17 33 17	-12 10	10 57	- 1 11
26	2 19 12	6 8 54 36	4 16 39 58	8 25 35 43	6 7 48 14	5 15 52 4	7 15 13 47	7 19 41 16	4 15 41 10	4 17 34 4	-12 31	7 27	- 0 5
27	2 23 9	6 9 54 28	4 28 55 7	8 26 18 36	6 9 27 50	5 16 4 29	7 16 26 12	7 19 47 12	4 15 37 59	4 17 33 23	-12 51	3 42	1 1
28	2 27 5	6 10 54 22	5 11 0 52	8 27 1 34	6 11 6 54	5 16 16 52	7 17 38 35	7 19 53 12	4 15 34 48	4 17 30 29	-13 11	- 0 9	2 3
29	2 31 2	6 11 54 18	5 23 0 2	8 27 44 39	6 12 45 27	5 16 29 13	7 18 50 57	7 19 59 15	4 15 31 37	4 17 24 59	-13 31	- 3 58	2 58
30	2 34 58	6 12 54 16	6 4 54 53	8 28 27 48	6 14 23 30	5 16 41 31	7 20 3 17	7 20 5 20	4 15 28 27	4 17 16 55	-13 51	- 7 36	3 46
31	2 38 55	6 13 54 17	6 16 47 12	8 29 11 3	6 16 1 3	5 16 53 47	7 21 15 35	7 20 11 29	4 15 25 16	4 17 6 43	-14 10	-10 55	4 23

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 नवंबर 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 25"

नवंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	2	42	51	6	14	54	19	6	28	38	27	8	29	54	24	6	17	38	6	5	17	5	59	7	22	27	51	7	20	17	40	4	15	22	5	4	16	55	9	-14	30	-13	48	4	49
2	2	46	48	6	15	54	23	7	10	30	9	9	0	37	49	6	19	14	42	5	17	18	9	7	23	40	4	7	20	23	54	4	15	18	54	4	16	43	12	-14	49	-16	6	5	2
3	2	50	45	6	16	54	28	7	22	23	57	9	1	21	19	6	20	50	50	5	17	30	16	7	24	52	16	7	20	30	10	4	15	15	44	4	16	31	56	-15	7	-17	44	5	2
4	2	54	41	6	17	54	35	8	4	21	58	9	2	4	54	6	22	26	31	5	17	42	20	7	26	4	24	7	20	36	29	4	15	12	33	4	16	22	17	-15	26	-18	37	4	49
5	2	58	38	6	18	54	44	8	16	26	54	9	2	48	33	6	24	1	47	5	17	54	21	7	27	16	31	7	20	42	50	4	15	9	22	4	16	14	58	-15	44	-18	39	4	23
6	3	2	34	6	19	54	55	8	28	42	5	9	3	32	17	6	25	36	39	5	18	6	19	7	28	28	35	7	20	49	14	4	15	6	11	4	16	10	18	-16	2	-17	49	3	45
7	3	6	31	6	20	55	7	9	11	11	27	9	4	16	5	6	27	11	8	5	18	18	14	7	29	40	36	7	20	55	40	4	15	3	1	4	16	8	8	-16	20	-16	7	2	55
8	3	10	27	6	21	55	20	9	23	59	17	9	4	59	57	6	28	45	13	5	18	30	5	8	0	52	34	7	21	2	8	4	14	59	50	4	16	7	48	-16	38	-13	35	1	55
9	3	14	24	6	22	55	35	10	7	9	49	9	5	43	53	7	0	18	57	5	18	41	53	8	2	4	29	7	21	8	39	4	14	56	39	4	16	8	17	-16	55	-10	17	0	48
10	3	18	20	6	23	55	52	10	20	46	43	9	6	27	53	7	1	52	20	5	18	53	37	8	3	16	21	7	21	15	11	4	14	53	28	4	16	8	23	-17	12	- 6	20	- 0	25
11	3	22	17	6	24	56	9	11	4	52	9	9	7	11	56	7	3	25	23	5	19	5	18	8	4	28	10	7	21	21	46	4	14	50	18	4	16	6	55	-17	28	- 1	55	- 1	38
12	3	26	14	6	25	56	29	11	19	25	49	9	7	56	3	7	4	58	7	5	19	16	54	8	5	39	55	7	21	28	22	4	14	47	7	4	16	3	3	-17	45	2	46	- 2	47
13	3	30	10	6	26	56	50	0	4	24	0	9	8	40	14	7	6	30	33	5	19	28	28	8	6	51	38	7	21	35	1	4	14	43	56	4	15	56	27	-18	1	7	24	- 3	46
14	3	34	7	6	27	57	12	0	19	39	22	9	9	24	27	7	8	2	40	5	19	39	57	8	8	3	16	7	21	41	41	4	14	40	45	4	15	47	25	-18	17	11	39	- 4	31
15	3	38	3	6	28	57	36	1	5	1	29	9	10	8	44	7	9	34	30	5	19	51	22	8	9	14	51	7	21	48	23	4	14	37	34	4	15	36	47	-18	32	15	8	- 4	56
16	3	42	0	6	29	58	2	1	20	18	32	9	10	53	4	7	11	6	3	5	20	2	44	8	10	26	23	7	21	55	7	4	14	34	24	4	15	25	45	-18	47	17	33	- 5	0
17	3	45	56	7	0	58	29	2	5	19	27	9	11	37	26	7	12	37	20	5	20	14	1	8	11	37	50	7	22	1	52	4	14	31	13	4	15	15	36	-19	2	18	43	- 4	43
18	3	49	53	7	1	58	58	2	19	55	45	9	12	21	52	7	14	8	19	5	20	25	14	8	12	49	14	7	22	8	40	4	14	28	2	4	15	7	26	-19	16	18	35	- 4	8
19	3	53	49	7	2	59	29	3	4	2	43	9	13	6	21	7	15	39	1	5	20	36	23	8	14	0	35	7	22	15	28	4	14	24	51	4	15	1	51	-19	30	17	17	- 3	19
20	3	57	46	7	4	0	2	3	17	39	20	9	13	50	52	7	17	9	26	5	20	47	27	8	15	11	51	7	22	22	18	4	14	21	41	4	14	58	52	-19	44	15	2	- 2	19
21	4	1	43	7	5	0	36	4	0	47	34	9	14	35	26	7	18	39	33	5	20	58	27	8	16	23	3	7	22	29	10	4	14	18	30	4	14	57	56	-19	57	12	3	- 1	14
22	4	5	39	7	6	1	12	4	13	31	17	9	15	20	3	7	20	9	21	5	21	9	23	8	17	34	11	7	22	36	3	4	14	15	19	4	14	58	0	-20	10	8	36	- 0	8
23	4	9	36	7	7	1	50	4	25	55	17	9	16	4	43	7	21	38	48	5	21	20	13	8	18	45	15	7	22	42	57	4	14	12	8	4	14	57	50	-20	23	4	50	0	58
24	4	13	32	7	8	2	29	5	8	4	31	9	16	49	25	7	23	7	53	5	21	30	59	8	19	56	15	7	22	49	53	4	14	8	57	4	14	56	10	-20	35	0	57	1	59
25	4	17	29	7	9	3	10	5	20	3	42	9	17	34	10	7	24	36	34	5	21	41	40	8	21	7	10	7	22	56	49	4	14	5	47	4	14	52	4	-20	47	- 2	54	2	54
26	4	21	25	7	10	3	53	6	1	56	56	9	18	18	57	7	26	4	48	5	21	52	16	8	22	18	1	7	23	3	47	4	14	2	36	4	14	44	56	-20	58	- 6	37	3	41
27	4	25	22	7	11	4	37	6	13	47	37	9	19	3	47	7	27	32	32	5	22	2	47	8	23	28	47	7	23	10	46	4	13	59	25	4	14	34	43	-21	9	-10	4	4	18
28	4	29	18	7	12	5	23	6	25	38	19	9	19	48	39	7	28	59	42	5	22	13	12	8	24	39	28	7	23	17	46	4	13	56	14	4	14	21	53	-21	20	-13	7	4	44
29	4	33	15	7	13	6	10	7	7	30	56	9	20	33	34	8	0	26	14	5	22	23	32	8	25	50	5	7	23	24	46	4	13	53	4	4	14	7	17	-21	30	-15	37	4	57
30	4	37	12	7	14	6	58	7	19	26	49	9	21	18	30	8	1	52	1	5	22	33	47	8	27	0	36	7	23	31	48	4	13	49	53	4	13	52	4	-21	40	-17	30	4	58

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 दिसंबर 2016 ई. को अयनांश 24° 5' 29"

दिसंबर	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	4	41	8	7	15	7	48	8	1	27	5	9	22	3	29	8	3	16	58	5	22	43	56	8	28	11	1	7	23	38	50	4	13	46	42	4	13	37	31	-21	50	-18	37	4	45
2	4	45	5	7	16	8	39	8	13	32	53	9	22	48	29	8	4	40	57	5	22	54	0	8	29	21	21	7	23	45	53	4	13	43	31	4	13	24	48	-21	59	-18	54	4	20
3	4	49	1	7	17	9	30	8	25	45	38	9	23	33	32	8	6	3	47	5	23	3	57	9	0	31	35	7	23	52	56	4	13	40	20	4	13	14	49	-22	7	-18	19	3	42
4	4	52	58	7	18	10	23	9	8	7	17	9	24	18	36	8	7	25	20	5	23	13	49	9	1	41	42	7	24	0	0	4	13	37	10	4	13	8	0	-22	16	-16	51	2	53
5	4	56	54	7	19	11	16	9	20	40	27	9	25	3	41	8	8	45	22	5	23	23	35	9	2	51	43	7	24	7	5	4	13	33	59	4	13	4	15	-22	23	-14	34	1	55
6	5	0	51	7	20	12	10	10	3	28	17	9	25	48	49	8	10	3	40	5	23	33	14	9	4	1	37	7	24	14	9	4	13	30	48	4	13	2	55	-22	31	-11	32	0	50
7	5	4	47	7	21	13	5	10	16	34	20	9	26	33	57	8	11	19	55	5	23	42	48	9	5	11	25	7	24	21	14	4	13	27	37	4	13	2	54	-22	38	-7	51	-0	19
8	5	8	44	7	22	14	1	11	0	2	3	9	27	19	7	8	12	33	50	5	23	52	15	9	6	21	4	7	24	28	19	4	13	24	26	4	13	2	51	-22	44	-3	41	-1	29
9	5	12	41	7	23	14	57	11	13	54	9	9	28	4	17	8	13	45	1	5	24	1	36	9	7	30	37	7	24	35	25	4	13	21	16	4	13	1	28	-22	50	0	47	-2	35
10	5	16	37	7	24	15	54	11	28	11	42	9	28	49	29	8	14	53	3	5	24	10	50	9	8	40	1	7	24	42	30	4	13	18	5	4	12	57	45	-22	55	5	21	-3	35
11	5	20	34	7	25	16	52	0	12	53	7	9	29	34	41	8	15	57	27	5	24	19	57	9	9	49	17	7	24	49	36	4	13	14	54	4	12	51	17	-23	1	9	43	-4	21
12	5	24	30	7	26	17	50	0	27	53	33	10	0	19	55	8	16	57	39	5	24	28	58	9	10	58	25	7	24	56	41	4	13	11	43	4	12	42	15	-23	5	13	34	-4	51
13	5	28	27	7	27	18	49	1	13	4	50	10	1	5	9	8	17	53	2	5	24	37	52	9	12	7	24	7	25	3	46	4	13	8	32	4	12	31	26	-23	9	16	33	-5	1
14	5	32	23	7	28	19	49	1	28	16	35	10	1	50	24	8	18	42	54	5	24	46	40	9	13	16	14	7	25	10	52	4	13	5	22	4	12	20	3	-23	13	18	24	-4	50
15	5	36	20	7	29	20	49	2	13	17	53	10	2	35	39	8	19	26	30	5	24	55	20	9	14	24	54	7	25	17	57	4	13	2	11	4	12	9	25	-23	16	18	56	-4	18
16	5	40	16	8	0	21	51	2	27	59	13	10	3	20	55	8	20	3	1	5	25	3	53	9	15	33	25	7	25	25	1	4	12	59	0	4	12	0	39	-23	19	18	10	-3	30
17	5	44	13	8	1	22	53	3	12	14	2	10	4	6	11	8	20	31	34	5	25	12	19	9	16	41	47	7	25	32	5	4	12	55	49	4	11	54	29	-23	21	16	16	-2	30
18	5	48	10	8	2	23	56	3	25	59	22	10	4	51	28	8	20	51	17	5	25	20	38	9	17	49	58	7	25	39	9	4	12	52	38	4	11	51	1	-23	23	13	28	-1	23
19	5	52	6	8	3	24	59	4	9	15	30	10	5	36	45	8	21	1	16	5	25	28	50	9	18	57	59	7	25	46	13	4	12	49	28	4	11	49	51	-23	25	10	4	-0	14
20	5	56	3	8	4	26	4	4	22	5	14	10	6	22	3	8	21	0	44	5	25	36	53	9	20	5	49	7	25	53	15	4	12	46	17	4	11	50	3	-23	26	6	17	0	54
21	5	59	59	8	5	27	9	5	4	32	54	10	7	7	21	8	20	49	0	5	25	44	50	9	21	13	29	7	26	0	17	4	12	43	6	4	11	50	30	-23	26	2	20	1	58
22	6	3	56	8	6	28	15	5	16	43	36	10	7	52	39	8	20	25	39	5	25	52	38	9	22	20	57	7	26	7	19	4	12	39	55	4	11	50	2	-23	26	-1	36	2	54
23	6	7	52	8	7	29	22	5	28	42	36	10	8	37	58	8	19	50	32	5	26	0	19	9	23	28	14	7	26	14	20	4	12	36	44	4	11	47	42	-23	26	-5	25	3	42
24	6	11	49	8	8	30	29	6	10	34	52	10	9	23	16	8	19	3	59	5	26	7	51	9	24	35	18	7	26	21	19	4	12	33	34	4	11	42	54	-23	25	-8	59	4	20
25	6	15	45	8	9	31	38	6	22	24	50	10	10	8	36	8	18	6	45	5	26	15	16	9	25	42	11	7	26	28	18	4	12	30	23	4	11	35	30	-23	23	-12	11	4	47
26	6	19	42	8	10	32	46	7	4	16	10	10	10	53	55	8	17	0	10	5	26	22	32	9	26	48	51	7	26	35	16	4	12	27	12	4	11	25	48	-23	21	-14	54	5	1
27	6	23	39	8	11	33	56	7	16	11	43	10	11	39	15	8	15	46	7	5	26	29	40	9	27	55	18	7	26	42	13	4	12	24	1	4	11	14	28	-23	19	-17	0	5	2
28	6	27	35	8	12	35	5	7	28	13	33	10	12	24	34	8	14	26	53	5	26	36	40	9	29	1	31	7	26	49	9	4	12	20	50	4	11	2	27	-23	16	-18	23	4	50
29	6	31	32	8	13	36	15	8	10	23	3	10	13	9	54	8	13	5	4	5	26	43	31	10	0	7	30	7	26	56	4	4	12	17	40	4	10	50	51	-23	13	-18	57	4	25
30	6	35	28	8	14	37	25	8	22	41	5	10	13	55	13	8	11	43	27	5	26	50	13	10	1	13	14	7	27	2	57	4	12	14	29	4	10	40	40	-23	9	-18	38	3	47
31	6	39	25	8	15	38	36	9	5	8	15	10	14	40	33	8	10	24	38	5	26	56	46	10	2	18	44	7	27	9	49	4	12	11	18	4	10	32	43	-23	5	-17	25	2	57

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टै. टा.), 1 जनवरी 2017 ई. को अयनांश 24° 5' 34"

जनवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT			सूर्य				चन्द्र				मंगल				बुध				गुरु				शुक्र				शनि				मध्यम राहु				स्पष्ट राहु				सूर्य क्रां.		चन्द्र क्रां.		चन्द्रशर	
	घं.	मि.	से.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	रा.	अं.	क.	वि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
1	6	43	21	8	16	39	46	9	17	45	11	10	15	25	52	8	9	11	1	5	27	3	11	10	3	23	57	7	27	16	39	4	12	8	7	4	10	27	26	-23	0	-15	20	1	58
2	6	47	18	8	17	40	56	10	0	32	50	10	16	11	11	8	8	4	32	5	27	9	26	10	4	28	55	7	27	23	28	4	12	4	56	4	10	24	50	-22	55	-12	29	0	53
3	6	51	14	8	18	42	6	10	13	32	30	10	16	56	29	8	7	6	41	5	27	15	32	10	5	33	35	7	27	30	16	4	12	1	46	4	10	24	24	-22	49	- 8	58	- 0	17
4	6	55	11	8	19	43	16	10	26	45	58	10	17	41	47	8	6	18	26	5	27	21	30	10	6	37	57	7	27	37	1	4	11	58	35	4	10	25	19	-22	43	- 4	57	- 1	27
5	6	59	8	8	20	44	25	11	10	15	5	10	18	27	4	8	5	40	17	5	27	27	17	10	7	42	1	7	27	43	45	4	11	55	24	4	10	26	30	-22	37	- 0	37	- 2	34
6	7	3	4	8	21	45	35	11	24	1	29	10	19	12	20	8	5	12	21	5	27	32	56	10	8	45	46	7	27	50	28	4	11	52	13	4	10	26	53	-22	30	3	49	- 3	33
7	7	7	1	8	22	46	43	0	8	5	59	10	19	57	36	8	4	54	28	5	27	38	25	10	9	49	12	7	27	57	8	4	11	49	2	4	10	25	39	-22	22	8	9	- 4	21
8	7	10	57	8	23	47	52	0	22	27	51	10	20	42	51	8	4	46	12	5	27	43	45	10	10	52	16	7	28	3	46	4	11	45	52	4	10	22	24	-22	14	12	6	- 4	53
9	7	14	54	8	24	49	0	1	7	4	17	10	21	28	5	8	4	47	1	5	27	48	55	10	11	55	0	7	28	10	23	4	11	42	41	4	10	17	12	-22	6	15	22	- 5	8
10	7	18	50	8	25	50	7	1	21	50	11	10	22	13	18	8	4	56	17	5	27	53	55	10	12	57	21	7	28	16	57	4	11	39	30	4	10	10	35	-21	57	17	41	- 5	2
11	7	22	47	8	26	51	14	2	6	38	28	10	22	58	29	8	5	13	17	5	27	58	45	10	13	59	20	7	28	23	29	4	11	36	19	4	10	3	26	-21	48	18	50	- 4	36
12	7	26	43	8	27	52	21	2	21	21	0	10	23	43	40	8	5	37	23	5	28	3	26	10	15	0	55	7	28	29	59	4	11	33	8	4	9	56	41	-21	39	18	42	- 3	52
13	7	30	40	8	28	53	27	3	5	49	55	10	24	28	50	8	6	7	55	5	28	7	56	10	16	2	5	7	28	36	27.	4	11	29	58	4	9	51	11	-21	29	17	20	- 2	53
14	7	34	37	8	29	54	33	3	19	58	52	10	25	13	58	8	6	44	15	5	28	12	17	10	17	2	50	7	28	42	53	4	11	26	47	4	9	47	31	-21	18	14	55	- 1	45
15	7	38	33	9	0	55	38	4	3	43	50	10	25	59	5	8	7	25	49	5	28	16	27	10	18	3	9	7	28	49	16	4	11	23	36	4	9	45	49	-21	7	11	43	- 0	33
16	7	42	30	9	1	56	44	4	17	3	22	10	26	44	11	8	8	12	5	5	28	20	27	10	19	3	2	7	28	55	37	4	11	20	25	4	9	45	52	-20	56	8	0	0	40
17	7	46	26	9	2	57	49	4	29	58	24	10	27	29	16	8	9	2	36	5	28	24	17	10	20	2	26	7	29	1	55	4	11	17	14	4	9	47	7	-20	45	4	0	1	48
18	7	50	23	9	3	58	53	5	12	31	41	10	28	14	20	8	9	56	55	5	28	27	56	10	21	1	22	7	29	8	11	4	11	14	4	4	9	48	49	-20	33	- 0	2	2	49
19	7	54	19	9	4	59	58	5	24	47	14	10	28	59	22	8	10	54	39	5	28	31	25	10	21	59	48	7	29	14	24	4	11	10	53	4	9	50	15	-20	20	- 3	59	3	41
20	7	58	16	9	6	1	2	6	6	49	45	10	29	44	23	8	11	55	28	5	28	34	44	10	22	57	43	7	29	20	34	4	11	7	42	4	9	50	46	-20	7	- 7	42	4	22
21	8	2	12	9	7	2	6	6	18	44	14	11	0	29	23	8	12	59	4	5	28	37	51	10	23	55	6	7	29	26	42	4	11	4	31	4	9	49	58	-19	54	-11	3	4	51
22	8	6	9	9	8	3	9	7	0	35	38	11	1	14	22	8	14	5	10	5	28	40	48	10	24	51	57	7	29	32	46	4	11	1	21	4	9	47	40	-19	41	-13	57	5	8
23	8	10	6	9	9	4	12	7	12	28	27	11	1	59	19	8	15	13	34	5	28	43	34	10	25	48	13	7	29	38	48	4	10	58	10	4	9	44	1	-19	27	-16	17	5	12
24	8	14	2	9	10	5	15	7	24	26	40	11	2	44	16	8	16	24	1	5	28	46	9	10	26	43	55	7	29	44	47	4	10	54	59	4	9	39	21	-19	13	-17	56	5	2
25	8	17	59	9	11	6	16	8	6	33	31	11	3	29	10	8	17	36	22	5	28	48	33	10	27	38	59	7	29	50	43	4	10	51	48	4	9	34	11	-18	58	-18	47	4	39
26	8	21	55	9	12	7	18	8	18	51	27	11	4	14	4	8	18	50	27	5	28	50	46	10	28	33	26	7	29	56	36	4	10	48	37	4	9	29	5	-18	43	-18	47	4	2
27	8	25	52	9	13	8	18	9	1	22	1	11	4	58	56	8	20	6	8	5	28	52	48	10	29	27	13	8	0	2	25	4	10	45	27	4	9	24	39	-18	28	-17	53	3	13
28	8	29	48	9	14	9	18	9	14	5	57	11	5	43	46	8	21	23	17	5	28	54	38	11	0	20	20	8	0	8	11	4	10	42	16	4	9	21	19	-18	12	-16	3	2	14
29	8	33	45	9	15	10	17	9	27	3	18	11	6	28	35	8	22	41	49	5	28	56	18	11	1	12	43	8	0	13	54	4	10	39	5	4	9	19	22	-17	56	-13	23	1	7
30	8	37	41	9	16	11	14	10	10	13	37	11	7	13	23	8	24	1	37	5	28	57	46	11	2	4	22	8	0	19	34	4	10	35	54	4	9	18	46	-17	40	-10	0	- 0	5
31	8	41	38	9	17	12	11	10	23	36	15	11	7	58	9	8	25	22	38	5	28	59	3	11	2	55	15	8	0	25	10	4	10	32	44	4	9	19	19	-17	23	- 6	3	- 1	18

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 फरवरी 2017 ई. को अयनांश 24° 5' 39"

फरवरी	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
	8 45 35	9 18 13 6	11 7 10 25	11 8 42 53	8 26 44 47	5 29 0 8	11 3 45 20	8 0 30 42	4 10 29 33	4 9 20 36	-17 6	-1 45	-2 28
2	8 49 31	9 19 14 0	11 20 55 22	11 9 27 35	8 28 8 2	5 29 1 3	11 4 34 34	8 0 36 11	4 10 26 22	4 9 22 6	-16 49	2 41	-3 30
3	8 53 28	9 20 14 53	0 4 50 19	11 10 12 15	8 29 32 18	5 29 1 45	11 5 22 56	8 0 41 36	4 10 23 11	4 9 23 17	-16 31	7 2	-4 20
4	8 57 24	9 21 15 45	0 18 54 16	11 10 56 54	9 0 57 33	5 29 2 17	11 6 10 24	8 0 46 57	4 10 20 1	4 9 23 48	-16 14	11 2	-4 56
5	9 1 21	9 22 16 35	1 3 5 47	11 11 41 30	9 2 23 46	5 29 2 37	11 6 56 55	8 0 52 15	4 10 16 50	4 9 23 28	-15 56	14 26	-5 14
6	9 5 17	9 23 17 23	1 17 22 46	11 12 26 5	9 3 50 54	5 29 2 46	11 7 42 27	8 0 57 29	4 10 13 39	4 9 22 19	-15 37	16 59	-5 13
7	9 9 14	9 24 18 10	2 1 42 15	11 13 10 37	9 5 18 57	5 29 2 43	11 8 26 57	8 1 2 39	4 10 10 28	4 9 20 36	-15 19	18 30	-4 52
8	9 13 10	9 25 18 56	2 16 0 29	11 13 55 8	9 6 47 52	5 29 2 29	11 9 10 24	8 1 7 45	4 10 7 18	4 9 18 39	-15 0	18 50	-4 14
9	9 17 7	9 26 19 40	3 0 13 5	11 14 39 36	9 8 17 39	5 29 2 4	11 9 52 44	8 1 12 47	4 10 4 7	4 9 16 51	-14 41	17 59	-3 19
10	9 21 4	9 27 20 23	3 14 15 32	11 15 24 2	9 9 48 18	5 29 1 27	11 10 33 55	8 1 17 44	4 10 0 56	4 9 15 29	-14 21	16 1	-2 14
11	9 25 0	9 28 21 4	3 28 3 48	11 16 8 26	9 11 19 48	5 29 0 39	11 11 13 54	8 1 22 38	4 9 57 45	4 9 14 44	-14 2	13 9	-1 2
12	9 28 57	9 29 21 44	4 11 34 47	11 16 52 47	9 12 52 10	5 28 59 40	11 11 52 39	8 1 27 28	4 9 54 35	4 9 14 37	-13 42	9 38	0 13
13	9 32 53	10 0 22 23	4 24 46 41	11 17 37 7	9 14 25 22	5 28 58 29	11 12 30 6	8 1 32 13	4 9 51 24	4 9 15 0	-13 22	5 42	1 25
14	9 36 50	10 1 23 0	5 7 39 9	11 18 21 24	9 15 59 26	5 28 57 7	11 13 6 13	8 1 36 54	4 9 48 13	4 9 15 44	-13 2	1 37	2 31
15	9 40 46	10 2 23 36	5 20 13 18	11 19 5 39	9 17 34 21	5 28 55 34	11 13 40 57	8 1 41 31	4 9 45 2	4 9 16 33	-12 41	-2 27	3 28
16	9 44 43	10 3 24 11	6 2 31 26	11 19 49 52	9 19 10 9	5 28 53 49	11 14 14 14	8 1 46 3	4 9 41 52	4 9 17 18	-12 20	-6 19	4 14
17	9 48 39	10 4 24 45	6 14 36 55	11 20 34 3	9 20 46 49	5 28 51 54	11 14 46 1	8 1 50 31	4 9 38 41	4 9 17 51	-11 59	-9 51	4 48
18	9 52 36	10 5 25 17	6 26 33 50	11 21 18 12	9 22 24 22	5 28 49 47	11 15 16 15	8 1 54 54	4 9 35 30	4 9 18 9	-11 38	-12 56	5 9
19	9 56 33	10 6 25 48	7 8 26 44	11 22 2 18	9 24 2 49	5 28 47 29	11 15 44 53	8 1 59 13	4 9 32 19	4 9 18 14	-11 17	-15 29	5 17
20	10 0 29	10 7 26 18	7 20 20 18	11 22 46 23	9 25 42 11	5 28 45 0	11 16 11 51	8 2 3 27	4 9 29 9	4 9 18 11	-10 56	-17 22	5 11
21	10 4 26	10 8 26 47	8 2 19 13	11 23 30 25	9 27 22 28	5 28 42 19	11 16 37 6	8 2 7 37	4 9 25 58	4 9 18 6	-10 34	-18 31	4 52
22	10 8 22	10 9 27 14	8 14 27 48	11 24 14 26	9 29 3 41	5 28 39 28	11 17 0 33	8 2 11 41	4 9 22 47	4 9 18 4	-10 12	-18 51	4 20
23	10 12 19	10 10 27 40	8 26 49 51	11 24 58 24	10 0 45 52	5 28 36 27	11 17 22 9	8 2 15 41	4 9 19 36	4 9 18 10	-9 50	-18 16	3 34
24	10 16 15	10 11 28 4	9 9 28 20	11 25 42 20	10 2 29 0	5 28 33 14	11 17 41 51	8 2 19 36	4 9 16 26	4 9 18 21	-9 28	-16 47	2 38
25	10 20 12	10 12 28 27	9 22 25 6	11 26 26 13	10 4 13 7	5 28 29 51	11 17 59 34	8 2 23 26	4 9 13 15	4 9 18 35	-9 6	-14 25	1 32
26	10 24 8	10 13 28 48	10 5 40 47	11 27 10 5	10 5 58 13	5 28 26 17	11 18 15 15	8 2 27 11	4 9 10 4	4 9 18 45	-8 44	-11 14	0 20
27	10 28 5	10 14 29 8	10 19 14 38	11 27 53 54	10 7 44 20	5 28 22 33	11 18 28 49	8 2 30 51	4 9 6 54	4 9 18 43	-8 21	-7 24	-0 55
28	10 32 2	10 15 29 25	11 3 4 36	11 28 37 41	10 9 31 26	5 28 18 38	11 18 40 13	8 2 34 26	4 9 3 43	4 9 18 23	-7 58	-3 5	-2 8

27	10 28 5	10 14 29 8	10 19 14 38	11 27 53 54	10 7 44 20	5 28 22 33	11 18 28 49	8 2 30 51	4 9 6 54	4 9 18 43	-8 21	-7 24	-0 55
28	10 32 2	10 15 29 25	11 3 4 36	11 28 37 41	10 9 31 26	5 28 18 38	11 18 40 13	8 2 34 26	4 9 3 43	4 9 18 23	-7 58	-3 5	-2 8

दैनिक स्पष्ट निरयण ग्रह (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.), 1 मार्च 2017 ई. को अयनांश 24° 5' 42"

मार्च	साम्पातिक काल 0.0 h GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रां.	चन्द्र क्रां.	चन्द्रशर
	घं. मि. से.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	रा.अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
1	10 35 58	10 16 29 41	11 17 7 31	11 29 21 26	10 11 19 34	5 28 14 33	11 18 49 24	8 2 37 56	4 9 0 32	4 9 17 44	-7 36	1 27	-3 15
2	10 39 55	10 17 29 55	0 1 19 31	0 0 5 8	10 13 8 43	5 28 10 19	11 18 56 17	8 2 41 20	4 8 57 21	4 9 16 50	-7 13	5 57	-4 10
3	10 43 51	10 18 30 7	0 15 36 25	0 0 48 48	10 14 58 53	5 28 5 54	11 19 0 49	8 2 44 39	4 8 54 11	4 9 15 49	-6 50	10 8	-4 50
4	10 47 48	10 19 30 17	0 29 54 19	0 1 32 25	10 16 50 3	5 28 1 20	11 19 2 57	8 2 47 54	4 8 51 0	4 9 14 55	-6 27	13 43	-5 12
5	10 51 44	10 20 30 25	1 14 9 47	0 2 16 0	10 18 42 13	5 27 56 37	11 19 2 39	8 2 51 2	4 8 47 49	4 9 14 21	-6 4	16 29	-5 15
6	10 55 41	10 21 30 30	1 28 20 7	0 2 59 32	10 20 35 22	5 27 51 44	11 18 59 52	8 2 54 6	4 8 44 39	4 9 14 18	-5 40	18 14	-4 59
7	10 59 37	10 22 30 34	2 12 23 17	0 3 43 1	10 22 29 28	5 27 46 42	11 18 54 35	8 2 57 4	4 8 41 28	4 9 14 48	-5 17	18 52	-4 25
8	11 3 34	10 23 30 35	2 26 17 42	0 4 26 28	10 24 24 27	5 27 41 31	11 18 46 47	8 2 59 56	4 8 38 17	4 9 15 44	-4 54	18 20	-3 36
9	11 7 31	10 24 30 34	3 10 2 7	0 5 9 53	10 26 20 17	5 27 36 11	11 18 36 27	8 3 2 43	4 8 35 6	4 9 16 52	-4 30	16 43	-2 35
10	11 11 27	10 25 30 31	3 23 35 27	0 5 53 15	10 28 16 52	5 27 30 43	11 18 23 35	8 3 5 25	4 8 31 56	4 9 17 50	-4 7	14 10	-1 26
11	11 15 24	10 26 30 27	4 6 56 43	0 6 36 34	11 0 14 7	5 27 25 7	11 18 8 14	8 3 8 1	4 8 28 45	4 9 18 18	-3 43	10 54	-0 13
12	11 19 20	10 27 30 20	4 20 5 3	0 7 19 50	11 2 11 54	5 27 19 23	11 17 50 25	8 3 10 32	4 8 25 34	4 9 17 55	-3 20	7 8	0 59
13	11 23 17	10 28 30 11	5 2 59 48	0 8 3 4	11 4 10 6	5 27 13 30	11 17 30 13	8 3 12 57	4 8 22 24	4 9 16 33	-2 56	3 6	2 7
14	11 27 13	10 29 30 0	5 15 40 44	0 8 46 15	11 6 8 31	5 27 7 30	11 17 7 41	8 3 15 17	4 8 19 13	4 9 14 12	-2 33	-1 0	3 7
15	11 31 10	11 0 29 47	5 28 8 13	0 9 29 24	11 8 6 57	5 27 1 23	11 16 42 56	8 3 17 30	4 8 16 2	4 9 11 2	-2 9	-4 59	3 57
16	11 35 6	11 1 29 32	6 10 23 22	0 10 12 30	11 10 5 10	5 26 55 8	11 16 16 4	8 3 19 39	4 8 12 51	4 9 7 25	-1 45	-8 41	4 36
17	11 39 3	11 2 29 16	6 22 28 8	0 10 55 33	11 12 2 54	5 26 48 46	11 15 47 14	8 3 21 41	4 8 9 41	4 9 3 46	-1 21	-11 58	5 1
18	11 43 0	11 3 28 58	7 4 25 17	0 11 38 34	11 13 59 51	5 26 42 18	11 15 16 35	8 3 23 38	4 8 6 30	4 9 0 31	-0 58	-14 44	5 13
19	11 46 56	11 4 28 38	7 16 18 19	0 12 21 33	11 15 55 39	5 26 35 43	11 14 44 17	8 3 25 29	4 8 3 19	4 8 58 5	-0 34	-16 52	5 11
20	11 50 53	11 5 28 16	7 28 11 21	0 13 4 29	11 17 49 57	5 26 29 2	11 14 10 32	8 3 27 14	4 8 0 9	4 8 56 43	-0 10	-18 17	4 56
21	11 54 49	11 6 27 53	8 10 8 58	0 13 47 23	11 19 42 20	5 26 22 14	11 13 35 32	8 3 28 54	4 7 56 58	4 8 56 31	0 13	-18 53	4 29
22	11 58 46	11 7 27 28	8 22 15 57	0 14 30 14	11 21 32 24	5 26 15 21	11 12 59 31	8 3 30 27	4 7 53 47	4 8 57 20	0 37	-18 39	3 49
23	12 2 42	11 8 27 1	9 4 37 5	0 15 13 2	11 23 19 41	5 26 8 23	11 12 22 42	8 3 31 55	4 7 50 36	4 8 58 49	1 1	-17 31	2 57
24	12 6 39	11 9 26 32	9 17 16 39	0 15 55 49	11 25 3 45	5 26 1 19	11 11 45 20	8 3 33 17	4 7 47 26	4 9 0 28	1 24	-15 30	1 56
25	12 10 35	11 10 26 2	10 0 18 9	0 16 38 33	11 26 44 9	5 25 54 11	11 11 7 40	8 3 34 32	4 7 44 15	4 9 1 40	1 48	-12 38	0 48
26	12 14 32	11 11 25 30	10 13 43 40	0 17 21 14	11 28 20 28	5 25 46 58	11 10 29 56	8 3 35 42	4 7 41 4	4 9 1 50	2 12	-9 2	-0 26
27	12 18 29	11 12 24 56	10 27 33 28	0 18 3 53	11 29 52 16	5 25 39 40	11 9 52 24	8 3 36 46	4 7 37 54	4 9 0 32	2 35	-4 50	-1 39
28	12 22 25	11 13 24 19	11 11 45 28	0 18 46 29	0 1 19 10	5 25 32 19	11 9 15 19	8 3 37 44	4 7 34 43	4 8 57 38	2 59	-0 16	-2 49
29	12 26 22	11 14 23 41	11 26 15 16	0 19 29 3	0 2 40 47	5 25 24 54	11 8 38 55	8 3 38 36	4 7 31 32	4 8 53 16	3 22	4 25	-3 49
30	12 30 18	11 15 23 1	0 10 56 25	0 20 11 34	0 3 56 49	5 25 17 26	11 8 3 25	8 3 39 22	4 7 28 21	4 8 47 57	3 45	8 53	-4 35
31	12 34 15	11 16 22 18	0 25 41 24	0 20 54 3	0 5 6 57	5 25 9 55	11 7 29 3	8 3 40 2	4 7 25 11	4 8 42 23	4 9	12 49	-5 2

अक्षांशभेद से भारत में चन्द्रदर्शन की तारीखें और चन्द्र के उन्नत श्रृंग की दिशा तथा अंश (सं. 2073 वि.)

मास	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
भारतीय अक्षांश	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2016 ई.)	चन्द्रदर्शन (2017 ई.)	चन्द्रदर्शन (2017 ई.)
+ 5°	8 अप्रै	8 मई	6 जून	5 जुला.	4 अग.	* 2 सितं.	2 अक्तू.	1 नवं.	30 नवं.	30 दिसं.	29 जन.	*28 फर.
+ 15°	8 "	8 "	6 "	5 "	4 "	3 "	2 "	1 "	30 "	30 "	29 "	28 "
+ 25°	8 "	8 "	6 "	6 "	4 "	3 "	2 "	1 "	30 "	30 "	29 "	28 "
+ 35°	8 "	8 "	6 "	6 "	4 "	3 "	2 "	1 "	30 "	30 "	29 "	28 "

* भारत के दक्षिणी छोर को छोड़ अन्यत्र सर्वत्र चन्द्रदर्शन 3 सितंबर को ही होगा। * 27 फरवरी को भारत के दक्षिणी छोर पर चन्द्रदर्शन की क्षीण सम्भावना है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, सम्पादक– 'श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांगम्' द्वारा लिखित संग्रहणीय प्रकाशन

भारतीय लग्ननिर्णय

भारत के सभी (31) प्रदेशों के प्रसिद्ध लगभग 1000 नगर, उपनगरों में अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल (भाँ.स्टैं.टा.) इस पुस्तक से केवल तीन सामान्य मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही तुरन्त (30–40 सेकण्डों में ही) जाना जा सकता है। यहां एक ऐसा सहायक कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी सहायता से भारत के अन्य किसी भी नगर, ग्राम में आप अभीष्ट तारीख का लग्नारम्भ–समाप्तिकाल तुरन्त जान सकते हैं। यह पुस्तक हमारी 'लघु लग्नसारणी' का ही एक भाग है।

पुस्तक का मूल्य **Rs. 75/–** + डाकव्यय **Rs. 35/–** है। हमारी अन्य किसी भी पुस्तक के साथ इसे मंगवाने पर इसका डाकव्ययसहित मूल्य केवल **Rs. 65/–** ही लिया जाएगा।

(पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है।)

पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, **M.A., M.Phil.,**
कोठी नं. 59, सैक्टर- 6, P.O. पंचकूला-(हरियाणा)
Pin- 134 109 , PHONE- 0172-2565303

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

तारीख	जनवरी 2016				फरवरी 2016				मार्च 2016				अप्रैल 2016			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.
1	--	--	11	42	0	32	11	57	0	8	11	13	1	27	12	21
2	0	6	12	14	1	25	12	36	1	1	11	57	2	15	13	19
3	0	58	12	48	2	18	13	18	1	53	12	45	3	2	14	19
4	1	50	13	23	3	12	14	5	2	45	13	37	.3	47	15	23
5	2	43	14	1	4	6	14	57	3	36	14	35	4	31	16	29
6	3	37	14	42	4	58	15	53	4	25	15	36	5	14	17	36
7	4	31	15	27	5	49	16	54	5	12	16	40	5	57	18	44
8	5	26	16	17	6	38	17	57	5	58	17	46	6	42	19	53
9	6	19	17	11	7	24	19	2	6	42	18	53	7	29	21	1
10	7	11	18	10	8	8	20	7	7	25	20	0	8	19	22	7
11	8	1	19	11	8	51	21	13	8	9	21	8	9	11	23	10
12	8	47	20	14	9	33	22	18	8	54	22	14	10	6	--	--
13	9	31	21	17	10	15	23	23	9	40	23	19	11	2	0	7
14	10	13	22	20	10	59	--	--	10	29	--	--	11	59	0	59
15	10	54	23	24	11	45	0	26	11	21	0	21	12	55	1	46
16	11	34	--	--	12	33	1	28	12	15	1	19	13	51	2	28
17	12	16	0	27	13	25	2	28	13	10	2	13	14	45	3	6
18	12	59	1	30	14	18	3	24	14	5	3	2	15	38	3	42
19	13	46	2	33	15	14	4	16	15	0	3	47	16	30	4	16
20	14	36	3	34	16	10	5	4	15	55	4	27	17	22	4	49
21	15	29	4	33	17	6	5	47	16	49	5	5	18	14	5	22
22	16	24	5	23	18	1	6	27	17	42	5	40	19	6	5	56
23	17	21	6	21	18	55	7	4	18	34	6	14	19	58	6	32
24	18	18	7	8	19	48	7	39	19	26	6	47	20	50	7	10
25	19	15	7	51	20	40	8	13	20	18	7	21	21	42	7	50
26	20	10	8	30	21	32	8	47	21	10	7	55	22	33	8	35
27	21	4	9	6	22	24	9	20	22	2	8	32	23	23	9	23
28	21	57	9	40	23	16	9	55	22	54	9	10	--	--	10	14
29	22	49	10	14	--	--	10	33	23	46	9	52	0	11	11	9
30	23	40	10	47					--	--	10	38	0	57	12	7
31	--	--	11	21					0	37	11	27				

तारीख	मई 2016				जून 2016				जुलाई 2016				अगस्त 2016				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	1	41	13	7	2	24	15	9	2	32	16	13	4	0	17	59	1
2	2	24	14	10	3	7	16	15	3	22	17	17	5	0	18	47	2
3	3	5	15	14	3	52	17	23	4	16	18	19	5	59	19	32	3
4	3	47	16	20	4	41	18	30	5	14	19	16	6	57	20	12	4
5	4	30	17	28	5	34	19	34	6	13	20	8	7	55	20	49	5
6	5	16	18	37	6	31	20	35	7	14	20	55	8	50	21	24	6
7	6	4	19	45	7	30	21	30	8	13	21	37	9	44	21	58	7
8	6	56	20	51	8	31	22	19	9	11	22	16	10	37	22	31	8
9	7	51	21	53	9	30	23	3	10	7	22	51	11	29	23	6	9
10	8	49	22	50	10	28	23	42	11	1	23	25	12	21	23	42	10
11	9	47	23	41	11	24	--	--	11	54	23	59	13	13	--	--	11
12	10	46	--	--	12	18	0	18	12	46	--	--	14	6	0	21	12
13	11	43	0	26	13	10	0	52	13	38	0	32	14	58	1	3	13
14	12	38	1	6	14	2	1	25	14	30	1	7	15	49	1	49	14
15	13	32	1	43	14	54	1	59	15	23	1	45	16	40	2	39	15
16	14	25	2	18	15	46	2	33	16	16	2	25	17	29	3	34	16
17	15	17	2	51	16	39	3	9	17	8	3	9	18	15	4	32	17
18	16	9	3	24	17	32	3	47	18	0	3	58	19	0	5	32	18
19	17	1	3	57	18	25	4	29	18	50	4	50	19	42	6	35	19
20	17	53	4	32	19	17	5	15	19	37	5	46	20	24	7	39	20
21	18	46	5	9	20	7	6	5	20	22	6	45	21	5	8	43	21
22	19	38	5	49	20	55	6	59	21	4	7	46	21	46	9	48	22
23	20	30	6	32	21	41	7	55	21	45	8	48	22	30	10	52	23
24	21	21	7	19	22	23	8	54	22	25	9	50	23	16	11	56	24
25	22	10	8	10	23	4	9	54	23	5	10	52	--	--	12	59	25
26	22	56	9	4	23	44	10	54	23	47	11	56	0	5	14	1	26
27	23	40	10	1	--	--	11	56	--	--	12	59	0	58	14	59	27
28	--	--	10	59	0	24	12	59	0	30	14	3	1	53	15	53	28
29	0	22	11	59	1	4	14	3	1	17	15	6	2	51	16	42	29
30	1	3	13	1	1	47	15	7	2	8	16	7	3	49	17	27	30
31	1	43	14	4					3	3	17	5	4	47	18	8	31

चण्डीगढ़ में चन्द्रोदयास्तकाल (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016–17 ई.

तारीख	सितंबर 2016				अक्तूबर 2016				नवंबर 2016				दिसंबर 2016				जनवरी 2017				फरवरी 2017				मार्च 2017				तारीख
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	घं.	मि.	
1	5	44	18	46	6	21	18	30	7	45	18	53	8	15	19	1	9	19	20	30	9	57	22	22	8	35	21	16	1
2	6	40	19	22	7	13	19	4	8	37	19	33	9	4	19	51	10	0	21	28	10	36	23	24	9	16	22	20	2
3	7	34	19	56	8	6	19	39	9	28	20	17	9	51	20	44	10	39	22	27	11	16	--	--	9	58	23	24	3
4	8	28	20	30	8	58	20	15	10	18	21	5	10	36	21	38	11	17	23	27	11	59	0	27	10	44	--	--	4
5	9	20	21	4	9	50	20	54	11	6	21	55	11	18	22	35	11	55	--	--	12	45	1	30	11	33	0	28	5
6	10	13	21	40	10	41	21	36	11	52	22	49	11	58	23	33	12	35	0	28	13	36	2	34	12	26	1	30	6
7	11	5	22	17	11	32	22	21	12	36	23	45	12	37	--	--	13	16	1	30	14	31	3	36	13	22	2	30	7
8	11	56	22	57	12	22	23	10	13	19	--	--	13	16	0	33	14	1	2	35	15	30	4	36	14	21	3	25	8
9	12	48	23	41	13	10	--	--	13	59	0	43	13	56	1	35	14	50	3	40	16	31	5	32	15	22	4	16	9
10	13	39	--	--	13	56	0	3	14	40	1	44	14	37	2	39	15	45	4	46	17	33	6	22	16	22	5	3	10
11	14	29	0	28	14	41	0	59	15	21	2	47	15	22	3	44	16	44	5	50	18	35	7	8	17	22	5	45	11
12	15	18	1	20	15	24	1	58	16	3	3	52	16	11	4	52	17	46	6	50	19	35	7	50	18	20	6	24	12
13	16	5	2	16	16	6	2	59	16	47	5	0	17	5	6	0	18	49	7	44	20	33	8	28	19	16	7	1	13
14	16	50	3	15	16	48	4	3	17	36	6	8	18	3	7	7	19	52	8	34	21	29	9	4	20	12	7	36	14
15	17	34	4	17	17	31	5	9	18	28	7	18	19	5	8	10	20	53	9	17	22	23	9	39	21	6	8	11	15
16	18	16	5	21	18	15	6	17	19	25	8	26	20	8	9	8	21	51	9	57	23	17	10	14	21	59	8	46	16
17	18	58	6	26	19	1	7	25	20	24	9	30	21	10	9	59	22	47	10	33	--	--	10	49	22	52	9	22	17
18	19	41	7	32	19	51	8	34	21	25	10	28	22	10	10	44	23	41	11	8	0	9	11	25	23	44	10	0	18
19	20	25	8	39	20	45	9	41	22	26	11	21	23	8	11	24	--	--	11	42	1	1	12	4	--	--	10	40	19
20	21	12	9	45	21	41	10	45	23	25	12	7	--	--	12	1	0	34	12	16	1	53	12	46	0	35	11	24	20
21	22	1	10	51	22	39	11	44	--	--	12	48	0	4	12	35	1	27	12	51	2	44	13	32	1	25	12	11	21
22	22	54	11	54	23	38	12	38	0	22	13	26	0	58	13	9	2	19	13	29	3	34	14	21	2	14	13	1	22
23	23	49	12	54	--	--	13	25	1	18	14	1	1	50	13	42	3	11	14	9	4	22	15	13	3	0	13	55	23
24	--	--	13	50	0	36	14	8	2	11	14	34	2	43	14	16	4	3	14	52	5	9	16	10	3	45	14	52	24
25	0	46	14	40	1	33	14	48	3	4	15	7	3	35	14	52	4	54	15	40	5	53	17	8	4	27	15	51	25
26	1	43	15	26	2	28	15	24	3	56	15	41	4	27	15	31	5	43	16	31	6	35	18	8	5	8	16	52	26
27	2	41	16	8	3	23	15	58	4	48	16	16	5	19	16	13	6	31	17	25	7	16	19	10	5	49	17	55	27
28	3	37	16	46	4	16	16	31	5	40	16	53	6	10	16	58	7	16	18	22	7	55	20	12	6	29	19	0	28
29	4	33	17	22	5	8	17	5	6	32	17	32	7	1	17	47	7	59	19	21					7	10	20	5	29
30	5	22	17	56	6	1	17	39	7	24	18	15	7	49	18	39	8	40	20	21					7	53	21	12	30
31					6	53	18	15					8	35	19	34	9	19	21	21					8	39	22	18	31

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2016 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2016 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 22 30	10 13 28	8 20 58	-9 34	1 30	-21 3	-0 46	3 51	1 14	-18 37	2 0	-20 30	1 38	5 56	-0 38	-9 28	-0 48	-21 0	1 35
4	11 22 31	10 13 32	8 21 5	-10 9	1 30	-19 59	-0 1	3 51	1 15	-19 23	1 54	-20 32	1 38	5 56	-0 38	-9 27	-0 48	-21 0	1 35
7	11 22 32	10 13 37	8 21 11	-10 43	1 30	-19 7	0 52	3 51	1 16	-20 4	1 48	-20 35	1 38	5 57	-0 38	-9 25	-0 48	-21 0	1 35
10	11 22 34	10 13 42	8 21 17	-11 16	1 30	-18 33	1 49	3 52	1 17	-20 41	1 41	-20 37	1 38	5 58	-0 38	-9 23	-0 48	-20 59	1 35
13	11 22 37	10 13 47	8 21 23	-11 49	1 30	-18 20	2 41	3 53	1 18	-21 12	1 34	-20 39	1 38	5 59	-0 38	-9 21	-0 48	-20 59	1 34
16	11 22 40	10 13 52	8 21 29	-12 21	1 30	-18 26	3 15	3 56	1 19	-21 39	1 27	-20 41	1 38	6 0	-0 38	-9 19	-0 47	-20 58	1 34
19	11 22 43	10 13 57	8 21 36	-12 52	1 29	-18 44	3 27	3 58	1 19	-22 0	1 19	-20 43	1 39	6 2	-0 37	-9 17	-0 47	-20 58	1 34
22	11 22 47	10 14 3	8 21 42	-13 22	1 29	-19 10	3 20	4 2	1 20	-22 15	1 10	-20 45	1 39	6 3	-0 37	-9 15	-0 47	-20 57	1 33
25	11 22 51	10 14 9	8 21 48	-13 51	1 29	-19 38	2 58	4 6	1 21	-22 24	1 2	-20 47	1 39	6 5	-0 37	-9 13	-0 47	-20 57	1 33
28	11 22 56	10 14 15	8 21 54	-14 19	1 29	-20 6	2 29	4 11	1 22	-22 27	0 53	-20 49	1 39	6 7	-0 37	-9 11	-0 47	-20 56	1 33
31	11 23 1	10 14 21	8 21 59	-14 46	1 28	-20 29	1 57	4 16	1 23	-22 25	0 44	-20 50	1 39	6 9	-0 37	-9 8	-0 47	-20 56	1 33
फर. 1	11 23 3	10 14 23	8 22 1	-14 55	1 28	-20 35	1 46	4 18	1 23	-22 22	0 41	-20 51	1 39	6 10	-0 37	-9 8	-0 47	-20 56	1 33
4	11 23 9	10 14 29	8 22 7	-15 21	1 28	-20 50	1 14	4 25	1 23	-22 12	0 32	-20 52	1 40	6 12	-0 37	-9 5	-0 47	-20 55	1 32
7	11 23 15	10 14 36	8 22 13	-15 46	1 27	-20 56	0 42	4 31	1 24	-21 55	0 23	-20 53	1 40	6 14	-0 37	-9 3	-0 47	-20 55	1 32
10	11 23 21	10 14 42	8 22 18	-16 10	1 26	-20 52	0 13	4 38	1 25	-21 32	0 14	-20 55	1 40	6 17	-0 37	-9 0	-0 47	-20 54	1 32
13	11 23 28	10 14 49	8 22 23	-16 33	1 25	-20 38	-0 15	4 46	1 25	-21 4	0 6	-20 56	1 41	6 19	-0 37	-8 58	-0 47	-20 54	1 32
16	11 23 35	10 14 56	8 22 28	-16 56	1 25	-20 13	-0 40	4 54	1 26	-20 30	-0 3	-20 57	1 41	6 22	-0 36	-8 55	-0 47	-20 54	1 32
19	11 23 43	10 15 2	8 22 33	-17 17	1 24	-19 37	-1 2	5 3	1 26	-19 51	-0 12	-20 57	1 41	6 25	-0 36	-8 53	-0 47	-20 53	1 31
22	11 23 50	10 15 9	8 22 38	-17 37	1 23	-18 49	-1 21	5 11	1 27	-19 6	-0 20	-20 58	1 41	6 28	-0 36	-8 50	-0 47	-20 53	1 31
25	11 23 59	10 15 16	8 22 43	-17 56	1 21	-17 50	-1 38	5 20	1 27	-18 16	-0 28	-20 59	1 42	6 31	-0 36	-8 48	-0 47	-20 52	1 31
28	11 24 7	10 15 23	8 22 47	-18 15	1 20	-16 39	-1 51	5 29	1 28	-17 22	-0 35	-20 59	1 42	6 35	-0 36	-8 45	-0 47	-20 52	1 31
मार्च 1	11 24 13	10 15 27	8 22 50	-18 26	1 19	-15 46	-1 59	5 36	1 28	-16 43	-0 40	-21 0	1 42	6 37	-0 36	-8 44	-0 48	-20 52	1 31
4	11 24 21	10 15 34	8 22 54	-18 43	1 17	-14 16	-2 6	5 45	1 28	-15 42	-0 47	-21 0	1 43	6 40	-0 36	-8 41	-0 48	-20 51	1 31
7	11 24 30	10 15 41	8 22 58	-18 59	1 16	-12 34	-2 11	5 54	1 28	-14 36	-0 54	-21 0	1 43	6 44	-0 36	-8 38	-0 48	-20 51	1 30
10	11 24 39	10 15 48	8 23 1	-19 14	1 14	-10 42	-2 11	6 4	1 29	-13 27	-1 0	-21 0	1 43	6 47	-0 36	-8 36	-0 48	-20 51	1 30
13	11 24 49	10 15 54	8 23 5	-19 28	1 12	-8 38	-2 8	6 13	1 29	-12 14	-1 5	-21 0	1 44	6 51	-0 36	-8 33	-0 48	-20 51	1 30
16	11 24 58	10 16 1	8 23 8	-19 41	1 9	-6 23	-2 0	6 22	1 29	-10 59	-1 10	-21 0	1 44	6 55	-0 36	-8 31	-0 48	-20 50	1 30
19	11 25 8	10 16 8	8 23 10	-19 54	1 7	-3 58	-1 47	6 31	1 29	-9 41	-1 15	-21 0	1 44	6 58	-0 36	-8 29	-0 48	-20 50	1 30
22	11 25 18	10 16 14	8 23 13	-20 6	1 4	-1 24	-1 30	6 40	1 29	-8 20	-1 19	-21 0	1 45	7 2	-0 36	-8 26	-0 48	-20 50	1 30
25	11 25 28	10 16 21	8 23 15	-20 17	1 1	1 19	-1 8	6 48	1 29	-6 58	-1 22	-21 0	1 45	7 6	-0 36	-8 24	-0 48	-20 50	1 29
28	11 25 38	10 16 27	8 23 17	-20 27	0 58	4 7	-0 42	6 56	1 28	-5 33	-1 25	-20 59	1 45	7 10	-0 36	-8 21	-0 48	-20 50	1 29
31	11 25 48	10 16 33	8 23 19	-20 37	0 54	6 57	-0 11	7 3	1 28	-4 8	-1 27	-20 59	1 46	7 14	-0 36	-8 19	-0 48	-20 50	1 29

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2016 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2016 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अप्रैल 1	11 25 52	10 16 35	8 23 20	-20 40	0 53	7 53	-0 0	7 6	1 28	-3 39	-1 28	-20 59	1 46	7 15	-0 36	-8 18	-0 48	-20 50	1 29
4	11 26 2	10 16 41	8 23 21	-20 49	0 49	10 38	0 34	7 13	1 28	-2 12	-1 29	-20 58	1 46	7 19	-0 36	-8 16	-0 48	-20 50	1 29
7	11 26 12	10 16 47	8 23 22	-20 57	0 44	13 13	1 8	7 19	1 27	-0 44	-1 30	-20 58	1 47	7 23	-0 36	-8 14	-0 48	-20 50	1 29
10	11 26 22	10 16 52	8 23 23	-21 5	0 39	15 30	1 41	7 25	1 27	0 44	-1 30	-20 57	1 47	7 26	-0 36	-8 12	-0 48	-20 50	1 29
13	11 26 33	10 16 58	8 23 24	-21 12	0 34	17 28	2 10	7 30	1 27	2 12	-1 30	-20 56	1 47	7 30	-0 35	-8 10	-0 48	-20 50	1 29
16	11 26 43	10 17 3	8 23 24	-21 18	0 29	19 1	2 32	7 35	1 26	3 40	-1 28	-20 55	1 47	7 34	-0 35	-8 8	-0 48	-20 50	1 28
19	11 26 53	10 17 8	8 23 24	-21 24	0 23	20 10	2 47	7 39	1 26	5 7	-1 27	-20 54	1 48	7 38	-0 35	-8 6	-0 48	-20 50	1 28
22	11 27 3	10 17 13	8 23 24	-21 30	0 16	20 54	2 53	7 43	1 25	6 33	-1 25	-20 53	1 48	7 42	-0 35	-8 4	-0 49	-20 50	1 28
25	11 27 14	10 17 18	8 23 23	-21 34	0 9	21 13	2 48	7 46	1 25	7 58	-1 22	-20 52	1 48	7 46	-0 35	-8 3	-0 49	-20 50	1 28
28	11 27 24	10 17 22	8 23 23	-21 38	0 2	21 7	2 32	7 48	1 24	9 22	-1 19	-20 51	1 48	7 49	-0 35	-8 1	-0 49	-20 51	1 28
मई 1	11 27 33	10 17 27	8 23 22	-21 42	-0 6	20 37	2 4	7 49	1 24	10 43	-1 15	-20 50	1 48	7 53	-0 36	-8 0	-0 49	-20 51	1 28
4	11 27 43	10 17 30	8 23 20	-21 44	-0 14	19 46	1 26	7 50	1 23	12 2	-1 11	-20 49	1 49	7 57	-0 36	-7 58	-0 49	-20 51	1 27
7	11 27 53	10 17 34	8 23 19	-21 46	-0 22	18 38	0 40	7 51	1 22	13 19	-1 6	-20 48	1 49	8 0	-0 36	-7 57	-0 49	-20 52	1 27
10	11 28 2	10 17 38	8 23 17	-21 46	-0 31	17 20	-0 12	7 50	1 22	14 33	-1 1	-20 46	1 49	8 4	-0 36	-7 56	-0 49	-20 52	1 27
13	11 28 12	10 17 41	8 23 15	-21 46	-0 40	16 0	-1 4	7 49	1 21	15 44	-0 55	-20 45	1 49	8 7	-0 36	-7 54	-0 49	-20 53	1 27
16	11 28 21	10 17 44	8 23 13	-21 45	-0 49	14 48	-1 52	7 48	1 21	16 51	-0 50	-20 44	1 49	8 11	-0 36	-7 53	-0 49	-20 53	1 27
19	11 28 30	10 17 46	8 23 11	-21 43	-0 59	13 50	-2 34	7 45	1 20	17 54	-0 43	-20 42	1 49	8 14	-0 36	-7 53	-0 49	-20 53	1 26
22	11 28 38	10 17 49	8 23 8	-21 40	-1 8	13 11	-3 6	7 43	1 19	18 54	-0 37	-20 41	1 49	8 17	-0 36	-7 52	-0 50	-20 54	1 26
25	11 28 47	10 17 51	8 23 5	-21 36	-1 17	12 53	-3 29	7 39	1 19	19 48	-0 30	-20 39	1 49	8 20	-0 36	-7 51	-0 50	-20 55	1 26
28	11 28 55	10 17 53	8 23 2	-21 31	-1 26	12 55	-3 42	7 35	1 18	20 38	-0 24	-20 38	1 49	8 23	-0 36	-7 50	-0 50	-20 55	1 26
31	11 29 3	10 17 54	8 22 59	-21 26	-1 35	13 17	-3 46	7 30	1 18	21 23	-0 17	-20 36	1 48	8 26	-0 36	-7 50	-0 50	-20 56	1 26
जून 1	11 29 5	10 17 55	8 22 58	-21 25	-1 38	13 28	-3 46	7 29	1 17	21 37	-0 14	-20 36	1 48	8 27	-0 36	-7 50	-0 50	-20 56	1 26
4	11 29 13	10 17 56	8 22 54	-21 20	-1 46	14 12	-3 40	7 23	1 17	22 14	-0 7	-20 34	1 48	8 30	-0 36	-7 50	-0 50	-20 57	1 25
7	11 29 20	10 17 57	8 22 50	-21 14	-1 54	15 8	-3 27	7 18	1 16	22 46	-0 0	-20 33	1 48	8 32	-0 36	-7 49	-0 50	-20 57	1 25
10	11 29 27	10 17 57	8 22 47	-21 10	-2 2	16 15	-3 8	7 11	1 16	23 12	0 7	-20 32	1 48	8 35	-0 36	-7 49	-0 50	-20 58	1 25
13	11 29 33	10 17 57	8 22 43	-21 6	-2 8	17 29	-2 44	7 4	1 15	23 32	0 14	-20 30	1 47	8 37	-0 36	-7 49	-0 50	-20 59	1 25
16	11 29 40	10 17 57	8 22 39	-21 2	-2 14	18 47	-2 15	6 57	1 14	23 46	0 21	-20 29	1 47	8 39	-0 36	-7 49	-0 51	-20 59	1 24
19	11 29 45	10 17 57	8 22 35	-21 0	-2 20	20 6	-1 44	6 49	1 14	23 54	0 28	-20 28	1 47	8 41	-0 36	-7 50	-0 51	-21 0	1 24
22	11 29 51	10 17 56	8 22 30	-20 59	-2 25	21 22	-1 10	6 40	1 13	23 55	0 35	-20 26	1 46	8 43	-0 36	-7 50	-0 51	-21 1	1 24
25	11 29 56	10 17 55	8 22 26	-21 0	-2 30	22 29	-0 35	6 31	1 13	23 50	0 41	-20 25	1 46	8 45	-0 36	-7 50	-0 51	-21 2	1 24
28	0 0 1	10 17 54	8 22 22	-21 1	-2 34	23 22	-0 0	6 22	1 12	23 38	0 47	-20 24	1 45	8 47	-0 36	-7 51	-0 51	-21 3	1 23

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2016 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2016 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जुलाई 1	0 0 5	10 17 53	8 22 17	-21 4	-2 37	23 57	0 32	6 12	1 12	23 20	0 53	-20 23	1 45	8 48	-0 36	-7 52	-0 51	-21 3	1 23
4	0 0 9	10 17 51	8 22 13	-21 9	-2 40	24 9	1 0	6 2	1 11	22 56	0 59	-20 22	1 45	8 50	-0 37	-7 52	-0 51	-21 4	1 23
7	0 0 13	10 17 49	8 22 8	-21 15	-2 43	23 56	1 22	5 52	1 11	22 26	1 4	-20 21	1 44	8 51	-0 37	-7 53	-0 51	-21 5	1 23
10	0 0 16	10 17 47	8 22 4	-21 22	-2 45	23 19	1 38	5 41	1 11	21 50	1 9	-20 20	1 44	8 52	-0 37	-7 54	-0 51	-21 6	1 22
13	0 0 18	10 17 44	8 21 59	-21 31	-2 47	22 20	1 47	5 30	1 10	21 8	1 13	-20 19	1 43	8 53	-0 37	-7 55	-0 52	-21 7	1 22
16	0 0 21	10 17 41	8 21 55	-21 41	-2 49	21 2	1 49	5 18	1 10	20 21	1 17	-20 19	1 42	8 54	-0 37	-7 56	-0 52	-21 8	1 22
19	0 0 22	10 17 38	8 21 51	-21 52	-2 50	19 30	1 46	5 6	1 9	19 29	1 21	-20 18	1 42	8 54	-0 37	-7 58	-0 52	-21 8	1 21
22	0 0 24	10 17 35	8 21 46	-22 4	-2 51	17 47	1 37	4 54	1 9	18 31	1 23	-20 18	1 41	8 55	-0 37	-7 59	-0 52	-21 9	1 21
25	0 0 25	10 17 32	8 21 42	-22 16	-2 51	15 56	1 23	4 41	1 9	17 30	1 26	-20 18	1 41	8 55	-0 37	-8 0	-0 52	-21 10	1 21
28	0 0 25	10 17 28	8 21 38	-22 30	-2 52	14 0	1 6	4 29	1 8	16 23	1 27	-20 18	1 40	8 55	-0 37	-8 2	-0 52	-21 11	1 20
31	0 0 25	10 17 24	8 21 34	-22 44	-2 52	12 2	0 44	4 16	1 8	15 13	1 29	-20 18	1 39	8 55	-0 37	-8 3	-0 52	-21 12	1 20
अगस्त 1	0 0 25	10 17 23	8 21 32	-22 49	-2 52	11 22	0 37	4 11	1 8	14 49	1 29	-20 18	1 39	8 55	-0 37	-8 4	-0 52	-21 12	1 20
4	0 0 25	10 17 19	8 21 28	-23 3	-2 52	9 23	0 12	3 58	1 8	13 34	1 29	-20 18	1 39	8 55	-0 37	-8 6	-0 52	-21 13	1 19
7	0 0 24	10 17 14	8 21 25	-23 18	-2 52	7 25	-0 16	3 44	1 7	12 16	1 29	-20 18	1 38	8 54	-0 37	-8 7	-0 52	-21 13	1 19
10	0 0 22	10 17 10	8 21 21	-23 33	-2 51	5 31	-0 45	3 30	1 7	10 55	1 28	-20 19	1 37	8 54	-0 37	-8 9	-0 52	-21 14	1 19
13	0 0 20	10 17 6	8 21 17	-23 47	-2 51	3 41	-1 15	3 16	1 7	9 31	1 27	-20 19	1 37	8 53	-0 38	-8 11	-0 52	-21 15	1 18
16	0 0 18	10 17 1	8 21 14	-24 2	-2 50	1 58	-1 47	3 2	1 7	8 5	1 24	-20 20	1 36	8 52	-0 38	-8 12	-0 52	-21 16	1 18
19	0 0 15	10 16 56	8 21 11	-24 16	-2 49	0 23	-2 18	2 47	1 6	6 37	1 22	-20 21	1 35	8 51	-0 38	-8 14	-0 52	-21 17	1 18
22	0 0 12	10 16 51	8 21 8	-24 30	-2 48	-0 59	-2 49	2 33	1 6	5 8	1 18	-20 22	1 35	8 50	-0 38	-8 16	-0 53	-21 17	1 17
25	0 0 9	10 16 47	8 21 5	-24 43	-2 47	-2 8	-3 19	2 18	1 6	3 37	1 14	-20 23	1 34	8 49	-0 38	-8 18	-0 53	-21 18	1 17
28	0 0 5	10 16 42	8 21 3	-24 56	-2 46	-2 57	-3 45	2 3	1 6	2 5	1 10	-20 24	1 33	8 47	-0 38	-8 20	-0 53	-21 19	1 16
31	0 0 1	10 16 37	8 21 0	-25 7	-2 44	-3 24	-4 6	1 48	1 6	0 33	1 5	-20 25	1 33	8 46	-0 38	-8 22	-0 53	-21 19	1 16
सित. 1	11 29 59	10 16 35	8 20 59	-25 11	-2 44	-3 27	-4 12	1 43	1 6	0 2	1 3	-20 26	1 32	8 45	-0 38	-8 23	-0 53	-21 19	1 16
4	11 29 55	10 16 30	8 20 57	-25 21	-2 42	-3 14	-4 22	1 28	1 6	-1 31	0 57	-20 27	1 32	8 43	-0 38	-8 24	-0 53	-21 20	1 16
7	11 29 50	10 16 25	8 20 56	-25 30	-2 41	-2 28	-4 19	1 13	1 6	-3 4	0 51	-20 29	1 31	8 41	-0 38	-8 26	-0 53	-21 21	1 15
10	11 29 44	10 16 20	8 20 54	-25 38	-2 39	-1 8	-4 0	0 57	1 6	-4 36	0 44	-20 31	1 30	8 39	-0 38	-8 28	-0 53	-21 21	1 15
13	11 29 39	10 16 15	8 20 53	-25 44	-2 37	0 36	-3 23	0 42	1 6	-6 7	0 37	-20 32	1 30	8 37	-0 38	-8 30	-0 53	-21 22	1 14
16	11 29 33	10 16 11	8 20 52	-25 49	-2 35	2 30	-2 33	0 27	1 6	-7 38	0 29	-20 34	1 29	8 35	-0 38	-8 32	-0 53	-21 22	1 14
19	11 29 27	10 16 6	8 20 51	-25 53	-2 33	4 12	-1 34	0 11	1 6	-9 7	0 21	-20 36	1 29	8 33	-0 38	-8 34	-0 53	-21 23	1 14
22	11 29 20	10 16 1	8 20 50	-25 54	-2 31	5 26	-0 35	-0 4	1 6	-10 34	0 13	-20 38	1 28	8 30	-0 38	-8 35	-0 53	-21 23	1 13
25	11 29 14	10 15 57	8 20 50	-25 54	-2 29	5 59	0 17	-0 19	1 6	-11 59	0 5	-20 40	1 27	8 28	-0 38	-8 37	-0 53	-21 24	1 13
28	11 29 7	10 15 52	8 20 50	-25 53	-2 27	5 51	0 59	-0 35	1 6	-13 22	-0 4	-20 43	1 27	8 25	-0 38	-8 39	-0 53	-21 24	1 12

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2016 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2016 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
अक्तू. 1	11 29 00	10 15 48	8 20 50	-25 49	-2 24	5 3	1 29	-0 50	1 6	-14 42	-0 13	-20 45	1 26	8 23	-0 38	-8 40	-0 53	-21 24	1 12
4	11 28 53	10 15 44	8 20 51	-25 43	-2 22	3 42	1 47	-1 6	1 6	-15 59	-0 22	-20 47	1 26	8 20	-0 38	-8 42	-0 53	-21 25	1 12
7	11 28 46	10 15 40	8 20 52	-25 36	-2 19	1 59	1 56	-1 21	1 6	-17 13	-0 31	-20 50	1 25	8 18	-0 38	-8 43	-0 53	-21 25	1 11
10	11 28 38	10 15 36	8 20 53	-25 26	-2 17	-0 0	1 56	-1 36	1 6	-18 22	-0 41	-20 52	1 25	8 15	-0 38	-8 45	-0 53	-21 25	1 11
13	11 28 31	10 15 32	8 20 54	-25 15	-2 14	-2 8	1 49	-1 51	1 6	-19 28	-0 50	-20 54	1 24	8 12	-0 38	-8 46	-0 53	-21 26	1 10
16	11 28 24	10 15 29	8 20 56	-25 1	-2 11	-4 20	1 38	-2 6	1 6	-20 29	-0 59	-20 57	1 24	8 9	-0 38	-8 47	-0 53	-21 26	1 10
19	11 28 16	10 15 26	8 20 58	-24 45	-2 9	-6 32	1 24	-2 21	1 6	-21 26	-1 8	-20 59	1 23	8 7	-0 38	-8 49	-0 53	-21 26	1 10
22	11 28 9	10 15 23	8 21 00	-24 27	-2 6	-8 42	1 7	-2 36	1 7	-22 17	-1 16	-21 2	1 23	8 4	-0 38	-8 50	-0 53	-21 26	1 9
25	11 28 2	10 15 20	8 21 2	-24 7	-2 3	-10 48	0 48	-2 50	1 7	-23 3	-1 25	-21 4	1 22	8 1	-0 38	-8 51	-0 52	-21 26	1 9
28	11 27 55	10 15 18	8 21 5	-23 45	-2 0	-12 48	0 29	-3 5	1 7	-23 44	-1 33	-21 7	1 22	7 59	-0 38	-8 51	-0 52	-21 26	1 8
31	11 27 48	10 15 16	8 21 8	-23 21	-1 57	-14 43	0 9	-3 19	1 7	-24 18	-1 41	-21 9	1 22	7 56	-0 38	-8 52	-0 52	-21 26	1 8
नवं. 1	11 27 45	10 15 15	8 21 9	-23 13	-1 56	-15 19	0 2	-3 24	1 7	-24 28	-1 43	-21 10	1 21	7 55	-0 38	-8 52	-0 52	-21 26	1 8
4	11 27 39	10 15 13	8 21 12	-22 46	-1 53	-17 4	-0 18	-3 38	1 8	-24 54	-1 50	-21 13	1 21	7 53	-0 38	-8 53	-0 52	-21 26	1 8
7	11 27 32	10 15 12	8 21 16	-22 17	-1 50	-18 41	-0 38	-3 51	1 8	-25 14	-1 57	-21 15	1 21	7 50	-0 38	-8 54	-0 52	-21 26	1 7
10	11 27 25	10 15 11	8 21 20	-21 46	-1 47	-20 10	-0 57	-4 5	1 8	-25 28	-2 3	-21 18	1 20	7 48	-0 38	-8 54	-0 52	-21 26	1 7
13	11 27 19	10 15 10	8 21 24	-21 14	-1 44	-21 30	-1 15	-4 18	1 9	-25 34	-2 9	-21 20	1 20	7 46	-0 38	-8 54	-0 52	-21 26	1 6
16	11 27 13	10 15 9	8 21 28	-20 39	-1 41	-22 40	-1 32	-4 31	1 9	-25 35	-2 13	-21 23	1 20	7 44	-0 38	-8 54	-0 52	-21 26	1 6
19	11 27 8	10 15 9	8 21 32	-20 3	-1 38	-23 41	-1 47	-4 44	1 9	-25 28	-2 17	-21 25	1 19	7 42	-0 38	-8 54	-0 52	-21 26	1 6
22	11 27 2	10 15 9	8 21 37	-19 25	-1 35	-24 30	-2 1	-4 56	1 10	-25 15	-2 21	-21 27	1 19	7 40	-0 38	-8 54	-0 52	-21 26	1 5
25	11 26 57	10 15 9	8 21 41	-18 45	-1 32	-25 8	-2 11	-5 8	1 10	-24 56	-2 23	-21 30	1 19	7 38	-0 37	-8 54	-0 52	-21 26	1 5
28	11 26 53	10 15 10	8 21 46	-18 4	-1 28	-25 34	-2 19	-5 20	1 11	-24 30	-2 25	-21 32	1 19	7 36	-0 37	-8 54	-0 52	-21 25	1 5
दिसं. 1	11 26 48	10 15 11	8 21 52	-17 21	-1 25	-25 48	-2 24	-5 31	1 11	-23 59	-2 25	-21 34	1 18	7 35	-0 37	-8 53	-0 52	-21 25	1 4
4	11 26 44	10 15 12	8 21 57	-16 37	-1 22	-25 49	-2 24	-5 42	1 12	-23 21	-2 25	-21 36	1 18	7 33	-0 37	-8 53	-0 52	-21 25	1 4
7	11 26 41	10 15 14	8 22 2	-15 51	-1 19	-25 37	-2 18	-5 53	1 12	-22 38	-2 23	-21 38	1 18	7 32	-0 37	-8 52	-0 52	-21 24	1 4
10	11 26 38	10 15 16	8 22 8	-15 4	-1 16	-25 13	-2 6	-6 3	1 13	-21 49	-2 21	-21 40	1 18	7 31	-0 37	-8 51	-0 52	-21 24	1 3
13	11 26 35	10 15 18	8 22 13	-14 16	-1 13	-24 39	-1 45	-6 12	1 13	-20 56	-2 17	-21 42	1 18	7 30	-0 37	-8 51	-0 52	-21 24	1 3
16	11 26 33	10 15 20	8 22 19	-13 27	-1 9	-23 55	-1 15	-6 22	1 14	-19 57	-2 12	-21 44	1 17	7 29	-0 37	-8 50	-0 52	-21 23	1 3
19	11 26 31	10 15 23	8 22 25	-12 36	-1 6	-23 8	-0 33	-6 31	1 14	-18 55	-2 6	-21 46	1 17	7 29	-0 37	-8 48	-0 51	-21 23	1 2
22	11 26 29	10 15 26	8 22 31	-11 45	-1 3	-22 19	0 20	-6 39	1 15	-17 48	-1 59	-21 47	1 17	7 28	-0 37	-8 47	-0 51	-21 23	1 2
25	11 26 28	10 15 30	8 22 37	-10 53	-1 0	-21 34	1 18	-6 47	1 15	-16 38	-1 51	-21 49	1 17	7 28	-0 36	-8 46	-0 51	-21 22	1 2
28	11 26 28	10 15 33	8 22 43	-10 0	-0 57	-20 56	2 14	-6 54	1 16	-15 24	-1 41	-21 51	1 17	7 28	-0 36	-8 45	-0 51	-21 22	1 1
31	11 26 28	10 15 37	8 22 49	-9 7	-0 54	-20 28	2 54	-7 1	1 17	-14 8	-1 31	-21 52	1 17	7 28	-0 36	-8 43	-0 51	-21 21	1 1

यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो के निरयण भोगांश और भौमादि ग्रहों के क्रांति–शर (सन् 2017 ई.) (प्रातः 5 घं. 30 मि., भा. स्टैं. टा.)

तारीख सन्	यूरेनस	नेप्च्यून	प्लूटो	मंगल		बुध		गुरु		शुक्र		शनि		यूरेनस		नेप्च्यून		प्लूटो	
				क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर	क्रांति	शर
2017 ई.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	रा. अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
जन. 1	11 26 28	10 15 39	8 22 51	-8 49	-0 53	-20 21	3 2	-7 4	1 17	-13 42	-1 27	-21 52	1 17	7 28	-0 36	-8 43	-0 51	-21 21	1 1
4	11 26 29	10 15 43	8 22 58	-7 54	-0 50	-20 12	3 14	-7 10	1 18	-12 22	-1 14	-21 54	1 17	7 29	-0 36	-8 41	-0 51	-21 21	1 1
7	11 26 30	10 15 47	8 23 4	-6 59	-0 47	-20 19	3 7	-7 15	1 18	-11 0	-1 0	-21 55	1 17	7 29	-0 36	-8 39	-0 51	-21 20	1 0
10	11 26 31	10 15 52	8 23 10	-6 4	-0 44	-20 38	2 48	-7 21	1 19	-9 37	-0 45	-21 56	1 17	7 30	-0 36	-8 37	-0 51	-21 20	1 0
13	11 26 33	10 15 57	8 23 16	-5 8	-0 41	-21 3	2 23	-7 25	1 20	-8 13	-0 29	-21 57	1 17	7 31	-0 36	-8 35	-0 51	-21 19	1 0
16	11 26 36	10 16 2	8 23 22	-4 13	-0 38	-21 31	1 54	-7 29	1 20	-6 47	-0 11	-21 58	1 17	7 32	-0 36	-8 33	-0 51	-21 19	1 0
19	11 26 39	10 16 7	8 23 28	-3 17	-0 35	-21 55	1 25	-7 33	1 21	-5 22	0 8	-21 59	1 17	7 33	-0 36	-8 31	-0 51	-21 18	0 59
22	11 26 42	10 16 13	8 23 34	-2 20	-0 32	-22 15	0 56	-7 35	1 22	-3 56	0 29	-22 0	1 17	7 34	-0 35	-8 29	-0 51	-21 17	0 59
25	11 26 46	10 16 19	8 23 40	-1 24	-0 29	-22 27	0 28	-7 37	1 23	-2 30	0 50	-22 1	1 17	7 36	-0 35	-8 27	-0 51	-21 17	0 59
28	11 26 50	10 16 25	8 23 46	-0 28	-0 26	-22 30	0 2	-7 39	1 23	-1 5	1 13	-22 2	1 17	7 37	-0 35	-8 25	-0 51	-21 16	0 59
31	11 26 55	10 16 31	8 23 52	0 28	-0 23	-22 24	-0 22	-7 40	1 24	0 18	1 38	-22 2	1 17	7 39	-0 35	-8 22	-0 51	-21 16	0 58
फर. 1	11 26 57	10 16 33	8 23 54	0 46	-0 22	-22 19	-0 30	-7 40	1 24	0 46	1 46	-22 2	1 17	7 40	-0 35	-8 22	-0 51	-21 16	0 58
4	11 27 2	10 16 39	8 24 00	1 42	-0 20	-21 58	-0 52	-7 40	1 25	2 8	2 12	-22 3	1 17	7 42	-0 35	-8 19	-0 51	-21 15	0 58
7	11 27 8	10 16 45	8 24 5	2 38	-0 17	-21 26	-1 11	-7 40	1 26	3 27	2 39	-22 3	1 17	7 44	-0 35	-8 17	-0 51	-21 15	0 58
10	11 27 14	10 16 52	8 24 11	3 33	-0 14	-20 42	-1 28	-7 39	1 27	4 43	3 8	-22 4	1 17	7 47	-0 35	-8 14	-0 51	-21 14	0 58
13	11 27 20	10 16 58	8 24 16	4 27	-0 12	-19 46	-1 42	-7 37	1 27	5 56	3 37	-22 4	1 18	7 49	-0 35	-8 12	-0 51	-21 14	0 57
16	11 27 27	10 17 5	8 24 21	5 21	-0 9	-18 39	-1 53	-7 34	1 28	7 6	4 7	-22 5	1 18	7 52	-0 35	-8 9	-0 51	-21 13	0 57
19	11 27 34	10 17 12	8 24 26	6 15	-0 7	-17 19	-2 2	-7 31	1 29	8 10	4 39	-22 5	1 18	7 54	-0 35	-8 7	-0 51	-21 13	0 57
22	11 27 41	10 17 18	8 24 31	7 7	-0 4	-15 47	-2 6	-7 28	1 29	9 9	5 10	-22 5	1 18	7 57	-0 34	-8 4	-0 51	-21 12	0 57
25	11 27 49	10 17 25	8 24 35	7 59	-0 2	-14 3	-2 8	-7 24	1 30	10 1	5 42	-22 5	1 18	8 0	-0 34	-8 2	-0 51	-21 12	0 56
28	11 27 57	10 17 32	8 24 40	8 51	0 1	-12 7	-2 5	-7 19	1 31	10 46	6 13	-22 5	1 18	8 3	-0 34	-7 59	-0 51	-21 12	0 56
मार्च 1	11 28 00	10 17 34	8 24 41	9 8	0 1	-11 26	-2 3	-7 17	1 31	10 59	6 24	-22 5	1 18	8 4	-0 34	-7 58	-0 51	-21 11	0 56
4	11 28 8	10 17 41	8 24 45	9 58	0 4	-9 14	-1 55	-7 12	1 31	11 32	6 53	-22 5	1 19	8 8	-0 34	-7 56	-0 51	-21 11	0 56
7	11 28 17	10 17 48	8 24 49	10 47	0 6	-6 51	-1 41	-7 6	1 32	11 54	7 21	-22 5	1 19	8 11	-0 34	-7 53	-0 51	-21 11	0 56
10	11 28 26	10 17 55	8 24 53	11 35	0 8	-4 18	-1 23	-6 59	1 33	12 5	7 46	-22 5	1 19	8 14	-0 34	-7 51	-0 51	-21 10	0 56
13	11 28 35	10 18 1	8 24 57	12 23	0 10	-1 36	-1 0	-6 53	1 33	12 2	8 6	-22 5	1 19	8 18	-0 34	-7 48	-0 51	-21 10	0 55
16	11 28 44	10 18 8	8 25 00	13 9	0 12	1 11	-0 32	-6 45	1 33	11 46	8 21	-22 5	1 19	8 21	-0 34	-7 46	-0 51	-21 10	0 55
19	11 28 54	10 18 15	8 25 3	13 54	0 15	3 59	0 1	-6 38	1 34	11 17	8 29	-22 5	1 19	8 25	-0 34	-7 43	-0 51	-21 10	0 55
22	11 29 4	10 18 21	8 25 6	14 38	0 17	6 43	0 37	-6 30	1 34	10 35	8 28	-22 5	1 20	8 28	-0 34	-7 41	-0 51	-21 10	0 55
25	11 29 13	10 18 28	8 25 8	15 20	0 19	9 16	1 14	-6 22	1 34	9 43	8 20	-22 5	1 20	8 32	-0 34	-7 38	-0 51	-21 9	0 55
28	11 29 23	10 18 34	8 25 10	16 1	0 21	11 32	1 49	-6 13	1 35	8 42	8 3	-22 5	1 20	8 36	-0 34	-7 36	-0 51	-21 9	0 54
31	11 29 33	10 18 41	8 25 12	16 41	0 22	13 24	2 22	-6 5	1 35	7 38	7 38	-22 5	1 20	8 39	-0 34	-7 33	-0 51	-21 9	0 54

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2016 से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2016–2017 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 1		पू.षा.	2	23 30
5		पू.षा.	3	5 59
8		पू.षा.	4	12 27
11		उ.षा.	1	18 56
15	मकर	उ.षा.	2	1 26
18		उ.षा.	3	7 59
21		उ.षा.	4	14 35
24		श्रव.	1	21 15
28		श्रव.	2	3 58
31		श्रव.	3	10 43
फरवरी 3		श्रव.	4	17 32
7		धनि.	1	0 25
10		धनि.	2	7 22
13	कुम्भ	धनि.	3	14 25
16		धनि.	4	21 35
फरवरी 20		शत.	1	4 53
23		शत.	2	12 18
26		शत.	3	19 50
मार्च 1		शत.	4	3 29
4		पू.भा.	1	11 15
7		पू.भा.	2	19 07
11		पू.भा.	3	3 08
14	मीन	पू.भा.	4	11 17
17		उ.भा.	1	19 37
21		उ.भा.	2	4 07
24		उ.भा.	3	12 46
27		उ.भा.	4	21 35
31		रेव.	1	6 32
अप्रैल 3		रेव.	2	15 37
7		रेव.	3	0 51
10		रेव.	4	10 14

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 13	मेष	अश्वि.	1	19 47
17		अश्वि.	2	5 31
20		अश्वि.	3	15 26
24		अश्वि.	4	1 30
27		भर.	1	11 43
30		भर.	2	22 03
मई 4		भर.	3	8 30
7		भर.	4	19 06
11		कृत्ति.	1	5 49
14	वृष	कृत्ति.	2	16 41
18		कृत्ति.	3	3 42
21		कृत्ति.	4	14 51
25		रोहि.	1	2 07
28		रोहि.	2	13 28
जून 1		रोहि.	3	0 53
4		रोहि.	4	12 23
7		मृग.	1	23 57
11		मृग.	2	11 36
14	मिथुन	मृग.	3	23 20
18		मृग.	4	11 09
21		आर्द्रा	1	23 01
25		आर्द्रा	2	10 54
28		आर्द्रा	3	22 48
जुलाई 2		आर्द्रा	4	10 41
5		पुन.	1	22 34
9		पुन.	2	10 28
12		पुन.	3	22 21
16	कर्क	पुन.	4	10 15
19		पुष्य	1	22 08
23		पुष्य	2	9 - 58
26		पुष्य	3	21 44

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 30		पुष्य	4	9 25
अगस्त 2		आश्ले.	1	21 01
6		आश्ले.	2	8 33
9		आश्ले.	3	20 00
13		आश्ले.	4	7 22
16	सिंह	मघा	1	18 40
20		मघा	2	5 52
23		मघा	3	16 57
27		मघा	4	3 53
30		पू.फा.	1	14 40
सितंबर 3		पू.फा.	2	1 18
6		पू.फा.	3	11 49
9		पू.फा.	4	22 12
13		उ.फा.	1	8 28
16	कन्या	उ.फा.	2	18 35
20		उ.फा.	3	4 34
23		उ.फा.	4	14 23
27		हस्त	1	0 01
30		हस्त	2	9 28
अक्तूबर 3		हस्त	3	18 46
7		हस्त	4	3 54
10		चित्रा	1	12 55
13		चित्रा	2	21 47
17	तुला	चित्रा	3	6 31
20		चित्रा	4	15 05
23		स्वाती	1	23 29
27		स्वाती	2	7 43
30		स्वाती	3	15 47
नवंबर 2		स्वाती	4	23 43
6		विशा.	1	7 32
9		विशा.	2	15 13

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 12		विशा.	3	22 48
16	वृश्चिक	विशा.	4	6 17
19		अनु.	1	13 38
22		अनु.	2	20 52
26		अनु.	3	3 58
29		अनु.	4	10 58
दिसंबर 2		ज्येष्ठा	1	17 52
6		ज्येष्ठा	2	0 42
9		ज्येष्ठा	3	7 29
12		ज्येष्ठा	4	14 13
15	धनु	मूल	1	20 55
19		मूल	2	3 32
22		मूल	3	10 07
25		मूल	4	16 38
28		पू.षा.	1	23 07
सन् 2017 ई.				
जनवरी 1		पू.षा.	2	5 35
4		पू.षा.	3	12 04
7		पू.षा.	4	18 34
11		उ.षा.	1	1 05
14	मकर	उ.षा.	2	7 38
17		उ.षा.	3	14 13
20		उ.षा.	4	20 49
24		श्रव.	1	3 26
27		श्रव.	2	10 06
30		श्रव.	3	16 49
फरवरी 2		श्रव.	4	23 38
6		धनि.	1	6 32
9		धनि.	2	13 32
12	कुम्भ	धनि	3	20 39

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्र चरण–चार (1 जनवरी, 2016 से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

सूर्य–चार (सन् 2017 ई.)

तारीख 2017 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 16		धनि.	4	3	51
19		शत.	1	11	08
22		शत.	2	18	31
26		शत.	3	2	00
मार्च 1		शत.	4	9	37
4		पू.भा.	1	17	22
8		पू.भा.	2	1	16
11		पू.भा.	3	9	20
14	मीन	पू.भा.	4	17	33
18		उ.भा.	1	1	54
21		उ.भा.	2	10	23
24		उ.भा.	3	19	00
28		उ.भा.	4	3	45

मंगल–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 5		स्वाती	1	4	32
11		स्वाती	2	7	15
17		स्वाती	3	12	52
23		स्वाती	4	21	55
30		विशा.	1	11	03
फरवरी 6		विशा.	2	5	21
13		विशा.	3	6	28
20	वृश्चिक	विशा.	4	16	39
28		अनु.	1	15	20
मार्च 8		अनु.	2	9	25
18		अनु.	3	14	43
अप्रैल 1		अनु.	4	14	40
17	वक्री			17	43
मई 3		अनु.	3	3	23
15		अनु.	2	20	54
25		अनु.	1	16	02

मंगल–चार (सन् 2016–17 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जून 4		विशा.	4	12	11
18	तुला	विशा.	3	0	06
30	मार्गी			5	09
जुलाई 12	वृश्चिक	विशा.	4	13	55
26		अनु.	1	11	29
अगस्त 4		अनु.	2	22	11
12		अनु.	3	19	31
19		अनु.	4	20	41
26		ज्येष्ठा	1	8	55
सितंबर 1		ज्येष्ठा	2	11	48
7		ज्येष्ठा	3	7	33
12		ज्येष्ठा	4	21	47
18	धनु	मूल	1	7	39
23		मूल	2	13	58
28		मूल	3	17	15
अक्तूबर 3		मूल	4	17	53
8		पू.षा.	1	16	16
13		पू.षा.	2	12	46
18		पू.षा.	3	7	40
23		पू.षा.	4	1	11
27		उ.षा.	1	17	28
नवंबर 1	मकर	उ.षा.	2	8	36
5		उ.षा.	3	22	46
10		उ.षा.	4	12	06
15		श्रव.	1	0	46
19		श्रव.	2	12	52
24		श्रव.	3	0	27
28		श्रव.	4	11	34
दिसंबर 2		धनि.	1	22	18
7		धनि.	2	8	43
11	कुम्भ	धनि.	3	18	56
दिसंबर 16		धनि.	4	5	01
20		शत.	1	15	01
25		शत.	2	0	57
29		शत.	3	10	51
सन् 2017 ई.					
जनवरी 2		शत.	4	20	46
7		पू.भा.	1	6	46
11		पू.भा.	2	16	55
16		पू.भा.	3	3	16
20	मीन	पू.भा.	4	13	49
25		उ.भा.	1	0	36
29		उ.भा.	2	11	37
फरवरी 2		उ.भा.	3	22	55
7		उ.भा.	4	10	33
11		रेव.	1	22	35
16		रेव.	2	11	00
20		रेव.	3	23	49
25		रेव.	4	13	02
मार्च 2	मेष	अश्वि.	1	2	41
6		अश्वि.	2	16	48
11		अश्वि.	3	7	24
15		अश्वि.	4	22	32
20		भर.	1	14	11
25		भर.	2	6	19

बुध–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि.
जनवरी 4		उ.षा.	4	0	19
5	वक्री			18	34
7		उ.षा.	3	11	21
11		उ.षा.	2	22	18

बुध–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 14	धनु	उ.षा.	1	15	01
17		पू.षा.	4	4	36
20		पू.षा.	3	7	18
26	मार्गी			3	19
फरवरी 1		पू.षा.	4	18	41
5		उ.षा.	1	20	18
9	मकर	उ.षा.	2	3	06
12		उ.षा.	3	1	19
14		उ.षा.	4	18	27
17		श्रव.	1	8	09
19		श्रव.	2	19	09
22		श्रव.	3	4	07
24		श्रव.	4	11	16
26		धनि.	1	16	54
28		धनि.	2	21	10
मार्च 2	कुम्भ	धनि.	3	0	10
4		धनि.	4	2	00
6		शत.	1	2	43
8		शत.	2	2	23
10		शत.	3	1	02
11		शत.	4	22	42
13		पू.भा.	1	19	28
15		पू.भा.	2	15	20
17		पू.भा.	3	10	22
19	मीन	पू.भा.	4	4	37
20		उ.भा.	1	22	06
22		उ.भा.	2	14	55
24		उ.भा.	3	7	10
25		उ.भा.	4	22	55
27		रेव.	1	14	18
29		रेव.	2	5	29
30		रेव.	3	20	38

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2016 से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2016–17 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अप्रैल 1		रेव.	4	11 58
3	मेष	अश्वि.	1	3 44
4		अश्वि.	2	20 23
6		अश्वि.	3	14 16
8		अश्वि.	4	9 59
10		भर.	1	8 23
12		भर.	2	10 47
14		भर.	3	19 12
17		भर.	4	13 36
21		कृत्ति.	1	4 55
26	वक्री			22 50
मई 7		भर.	4	14 39
13		भर.	3	4 50
22	मार्गी			18 49
31		भर.	4	21 44
जून 5		कृत्ति.	1	2 57
8	वृष	कृत्ति.	2	9 47
11		कृत्ति.	3	5 32
13		कृत्ति.	4	17 54
16		रोहि.	1	1 17
18		रोहि.	2	4 43
20		रोहि.	3	4 57
22		रोहि.	4	2 33
23		मृग.	1	22 02
25		मृग.	2	15 46
27	मिथुन	मृग.	3	8 06
28		मृग.	4	23 13
30		आर्द्रा	1	13 26
जुलाई 2		आर्द्रा	2	3 00
3		आर्द्रा	3	16 06
5		आर्द्रा	4	4 58
6		पुन.	1	17 48

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जुलाई 8		पुन.	2	6 45
9		पुन.	3	20 03
11	कर्क	पुन.	4	9 47
13		पुष्य	1	0 07
14		पुष्य	2	15 13
16		पुष्य	3	7 08
18		पुष्य	4	0 04
19		आश्ले.	1	18 05
21		आश्ले.	2	13 16
23		आश्ले.	3	9 46
25		आश्ले.	4	7 41
27	सिंह	मघा	1	7 11
29		मघा	2	8 26
31		मघा	3	11 37
अगस्त 2		मघा	4	16 58
5		पू.फा.	1	0 49
7		पू.फा.	2	11 46
10		पू.फा.	3	2 28
12		पू.फा.	4	22 20
16		उ.फा.	1	1 32
19	कन्या	उ.फा.	2	17 25
24		उ.फा.	3	16 13
30	वक्री			18 33
सितंबर 5		उ.फा.	2	10 56
9	सिंह	उ.फा.	1	17 47
13		पू.फा.	4	2 00
16		पू.फा.	3	14 58
22	मार्गी			11 01
28		पू.फा.	4	3 37
अक्तूबर 1		उ.फा.	1	6 32
3	कन्या	उ.फा.	2	17 48
5		उ.फा.	3	22 48
8		उ.फा.	4	0 25

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
अक्तूबर 10		हस्त	1	0 08
11		हस्त	2	22 50
13		हस्त	3	21 03
15		हस्त	4	19 06
17		चित्रा	1	17 14
19		चित्रा	2	15 36
21	तुला	चित्रा	3	14 20
23		चित्रा	4	13 30
25		स्वाती	1	13 09
27		स्वाती	2	13 18
29		स्वाती	3	13 57
31		स्वाती	4	15 08
नवंबर 2		विशा.	1	16 49
4		विशा.	2	18 58
6		विशा.	3	21 36
9	वृश्चिक	विशा.	4	0 39
11		अनु.	1	4 07
13		अनु.	2	7 58
15		अनु.	3	12 11
17		अनु.	4	16 45
19		ज्येष्ठा	1	21 41
22		ज्येष्ठा	2	3 00
24		ज्येष्ठा	3	8 47
26		ज्येष्ठा	4	15 08
28	धनु	मूल	1	22 13
दिसंबर 1		मूल	2	6 22
3		मूल	3	16 09
6		मूल	4	4 23
8		पू.षा.	1	21 04
11		पू.षा.	2	22 28
16		पू.षा.	3	3 31
19	वक्री			16 24

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
दिसंबर 22		पू.षा.	2	23 02
26		पू.षा.	1	12 02
29		मूल	4	1 07
31		मूल	3	13 32
(सन् 2017 ई.)				
जनवरी 3		मूल	2	18 47
8	मार्गी			15 12
14		मूल	3	2 42
18		मूल	4	6 47
21		पू.षा.	1	13 06
24		पू.षा.	2	10 48
27		पू.षा.	3	3 33
29		पू.षा	4	16 59
फरवरी 1		उ.षा.	1	4 06
3	मकर	उ.षा.	2	13 18
5		उ.षा.	3	20 59
8		उ.षा.	4	3 23
10		श्रव.	1	8 34
12		श्रव.	2	12 40
14		श्रव.	3	15 45
16		श्रव.	4	17 53
18		धनि.	1	19 04
20		धनि.	2	19 20
22	कुम्भ	धनि.	3	18 44
24		धनि.	4	17 15
26		शत.	1	14 57
28		शत.	2	11 50
मार्च 2		शत.	3	7 58
4		शत.	4	3 20
5		पू.भा.	1	22 00
7		पू.भा.	2	16 03
9		पू.भा.	3	9 34

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2016 से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

बुध–चार (सन् 2017 ई.)

तारीख 2017 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 11	मीन	पू.भा.	4	2 37
12		उ.भा.	1	19 20
14		उ.भा.	2	11 53
16		उ.भा.	3	4 27
17		उ.भा.	4	21 19
19		रेव.	1	14 49
21		रेव.	2	9 21
23		रेव.	3	5 34
25		रेव.	4	4 30
27	मेष	अश्वि.	1	7 38

गुरु–चार (सन् 2016–17 ई.)

जनवरी 8	वक्री			10 10
फरवरी 18		पू.फा.	4	1 01
मार्च 15		पू.फा.	3	12 35
अप्रैल 16		पू.फा.	2	8 42
मई 9	मार्गी			17 46
जून 2		पू.फा.	3	10 03
जुलाई 3		पू.फा.	4	17 53
24		उ.फा.	1	20 38
अगस्त 11	कन्या	उ.फा.	2	21 29
28		उ.फा.	3	10 51
सितंबर 13		उ.फा.	4	5 40
28		हस्त	1	16 45
अक्तूबर 14		हस्त	2	4 35
30		हस्त	3	2 32
नवंबर 15		हस्त	4	23 43
दिसंबर 4		चित्रा	1	20 40
28		चित्रा	2	17 08
फरवरी 6	वक्री			12 23
मार्च 18		चित्रा	1	13 56

शुक्र–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 2		अनु.	3	21 28
5		अनु.	4	15 13
8		ज्येष्ठा	1	8 51
11		ज्येष्ठा	2	2 21
13		ज्येष्ठा	3	19 46
16		ज्येष्ठा	4	13 06
19	धनु	मूल	1	6 21
21		मूल	2	23 31
24		मूल	3	16 38
27		मूल	4	9 40
30		पू.षा.	1	2 38
फरवरी 1		पू.षा.	2	19 33
4		पू.षा.	3	12 26
7		पू.षा.	4	5 15
9		उ.षा.	1	22 03
12	मकर	उ.षा.	2	14 49
15		उ.षा.	3	7 35
18		उ.षा.	4	0 19
20		श्रव.	1	17 02
23		श्रव.	2	9 45
26		श्रव.	3	2 27
28		श्रव.	4	19 08
मार्च 2		धनि.	1	11 48
5		धनि.	2	4 27
7	कुम्भ	धनि.	3	21 06
10		धनि.	4	13 46
13		शत.	1	6 25
15		शत.	2	23 06
18		शत.	3	15 47
21		शत.	4	8 29

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (भा.स्टैं.टा.)
मार्च 24		पू.भा.	1	1 12
26		पू.भा.	2	17 56
29		पू.भा.	3	10 39
अप्रैल 1	मीन	पू.भा.	4	3 24
3		उ.भा.	1	20 08
6		उ.भा.	2	12 54
9		उ.भा.	3	5 41
11		उ.भा.	4	22 29
14		रेवती	1	15 19
17		रेवती	2	8 10
20		रेवती	3	1 02
22		रेवती	4	17 56
25	मेष	अश्वि.	1	10 51
28		अश्वि.	2	3 46
30		अश्वि.	3	20 43
मई 3		अश्वि.	4	13 40
6		भर.	1	6 38
8		भर.	2	23 37
11		भर.	3	16 37
14		भर.	4	9 39
17		कृत्ति.	1	2 41
19	वृष	कृत्ति.	2	19 45
22		कृत्ति.	3	12 50
25		कृत्ति.	4	5 55
27		रोहि.	1	23 00
30		रोहि.	2	16 06
जून 2		रोहि.	3	9 12
5		रोहि.	4	2 17
7		मृग.	1	19 23
10		मृग.	2	12 30
13	मिथुन	मृग.	3	5 36

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं. मि. (ना.स्टैं.टा.)
जून 15		मृग.	4	22 44
18		आर्द्रा	1	15 51
21		आर्द्रा	2	8 59
24		आर्द्रा	3	2 06
26		आर्द्रा	4	19 13
29		पुन.	1	12 20
जुलाई 2		पुन.	2	5 25
4		पुन.	3	22 31
7	कर्क	पुन.	4	15 36
10		पुष्य	1	8 42
13		पुष्य	2	1 47
15		पुष्य	3	18 53
18		पुष्य	4	11 59
21		आश्ले.	1	5 05
23		आश्ले.	2	22 11
26		आश्ले.	3	15 17
29		आश्ले.	4	8 23
अगस्त 1	सिंह	मघा	1	1 29
3		मघा	2	18 35
6		मघा	3	11 41
9		मघा	4	4 48
11		पू.फा.	1	21 56
14		पू.फा.	2	15 05
17		पू.फा.	3	8 15
20		पू.फा.	4	1 27
22		उ.फा.	1	18 39
25	कन्या	उ.फा.	2	11 53
28		उ.फा.	3	5 08
30		उ.फा.	4	22 24
सितंबर 2		हस्त	1	15 41
5		हस्त	2	8 59

ग्रहों के निरयण राशि–नक्षत्रचरण–चार (1 जनवरी, 2016 से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

शुक्र–चार (सन् 2016–17 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
सितंबर 8		हस्त	3	2	20
10		हस्त	4	19	42
13		चित्रा	1	13	08
16		चित्रा	2	6	35
19	तुला	चित्रा	3	0	05
21		चित्रा	4	17	38
24		स्वाती	1	11	13
27		स्वाती	2	4	50
29		स्वाती	3	22	29
अक्तूबर 2		स्वाती	4	16	10
5		विशा.	1	9	54
8		विशा.	2	3	42
10		विशा.	3	21	33
13	वृश्चि.	विशा.	4	15	28
16		अनु.	1	9	27
19		अनु.	2	3	30
21		अनु.	3	21	37
24		अनु.	4	15	49
27		ज्येष्ठा	1	10	04
30		ज्येष्ठा	2	4	25
नवंबर 1		ज्येष्ठा	3	22	50
4		ज्येष्ठा	4	17	21
7	धनु	मूल	1	11	58
10		मूल	2	6	43
13		मूल	3	1	36
15		मूल	4	20	39
18		पू.षा.	1	15	51
21		पू.षा.	2	11	13
24		पू.षा.	3	6	46
27		पू.षा.	4	2	31

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
नवंबर 29		उ.षा.	1	22	29
दिसंबर 2	मकर	उ.षा.	2	18	42
5		उ.षा.	3	15	12
8		उ.षा.	4	12	02
11		श्रव.	1	9	13
14		श्रव.	2	6	49
17		श्रव.	3	4	52
20		श्रव.	4	3	26
23		धनि.	1	2	34
26		धनि.	2	2	19
29	कुम्भ	धनि.	3	2	46
(सन् 2017 ई.)					
जनवरी 1		धनि.	4	4	02
4		शत.	1	6	16
7		शत.	2	9	36
10		शत.	3	14	15
13		शत.	4	20	27
17		पू.भा.	1	4	31
20		पू.भा.	2	14	48
24		पू.भा.	3	3	48
27	मीन	पू.भा.	4	20	17
31		उ.भा.	1	17	19
फरवरी 4		उ.भा.	2	20	43
9		उ.भा.	3	9	41
14		उ.भा.	4	14	54
21		रेव.	1	8	23
मार्च 4	वक्री			14	40
15		उ.भा.	4	8	13
21		उ.भा.	3	15	55
27		उ.भा.	2	0	38

शनि–चार (सन् 2016 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
जनवरी 31		ज्येष्ठा	2	16	00
मार्च 25	वक्री			15	21
मई 21		ज्येष्ठा	1	5	49
जुलाई 9		अनु.	4	0	30
अगस्त 13	मार्गी			15	21
सितंबर 17		ज्येष्ठा	1	17	13
अक्तूबर 29		ज्येष्ठा	2	8	28
नवंबर 28		ज्येष्ठा	3	13	10
दिसंबर 26		ज्येष्ठा	4	21	49
(सन् 2017 ई.)					
जनवरी 26	धनु	मूल	1	19	30
मार्च 16		मूल	2	9	36

राहु-चार (सन् 2016-17 ई.)

जनवरी 30	सिंह	उ.फा.	1	1	52
अप्रैल 1		पू.फा.	4	23	52
जून 3		पू.फा.	3	21	42
अगस्त 5		पू.फा.	2	19	13
अक्तूबर 7		पू.फा.	1	17	15
दिसंबर 9		मघा	4	15	00
फरवरी 10		मघा	3	12	33

केतु-चार (सन् 2016-17 ई.)

जनवरी 30	कुम्भ	पू.भा.	3	1	52
अप्रैल 1		पू.भा.	2	23	52
जून 3		पू.भा.	1	21	42
अगस्त 5		शत.	4	19	13
अक्तूबर 7		शत.	3	17	15
दिसंबर 9		शत.	2	15	00
फरवरी 10		शत.	1	12	33

यूरेनस–चार (सन् 2016–17 ई.)

तारीख 2016 ई.	राशि	नक्षत्र	चरण	घं.	मि. (भा.स्टैं.टा.)
फरवरी 9		रेव.	3	15	03
अप्रैल 15		रेव.	4	8	30
जून 27	मेष	अश्वि.	1	16	47
जुलाई 30	वक्री			2	37
सितंबर 1		रेव.	4	5	30
दिसंबर 7		रेव.	3	20	16
29	मार्गी			15	00
जनवरी 20		रेव.	4	7	00

नेप्च्यून–चार (सन् 2016–17 ई.)

अप्रैल 3		शत.	4	17	24
जून 14	वक्री			2	16
अगस्त 29		शत.	3	6	30
नवंबर 20	मार्गी			10	12
फरवरी 4		शत.	4	18	20

प्लूटो–चार (सन् 2016–17 ई.)

अप्रैल 1		पू.षा.	4	17	04
18	वक्री			12	53
मई 5		पू.षा.	3	4	59
सितंबर 26	मार्गी			20	29
जनवरी 15		पू.षा.	4	3	42

ग्रहों के वक्र/मार्ग, उदयास्त अगले पृष्ठ पर देखिए।

		फरवरी 10	
		शत.	1	12 33

ग्रहों के वक्र–मार्ग / उदयास्त की तारीखें

(1 जनवरी, सन् 2016 से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

ग्रह	वक्र / मार्ग	तारीख
मंगल	वक्री	17 अप्रैल, 2016 ई.
मगल	मार्गी	30 जून, 2016 ई.
बुध	वक्री	5 जनवरी, 2016 ई.
बुध	मार्गी	26 जनवरी, 2016 ई.
बुध	वक्री	28 अप्रैल, 2016 ई.
बुध	मार्गी	22 मई, 2016 ई.
बुध	वक्री	30 अगस्त, 2016 ई.
बुध	मार्गी	22 सितंबर, 2016 ई.
बुध	वक्री	19 दिसंबर, 2016 ई.
बुध	मार्गी	8 जनवरी, 2017 ई.
गुरु	वक्री	8 जनवरी, 2016 ई.
गुरु	मार्गी	9 मई, 2016 ई.
गुरु	वक्री	6 फरवरी, 2017 ई.
शुक्र	वक्री	4 मार्च, 2017 ई.
शनि	वक्री	25 मार्च, 2016 ई.
शनि	मार्गी	13 अगस्त, 2016 ई.
यूरेनस	वक्री	30 जुलाई, 2016 ई.
यूरेनस	मार्गी	29 दिसंबर, 2016 ई.
नेप्च्यून	वक्री	14 जून, 2016 ई.
नेप्च्यून	मार्गी	20 नवंबर, 2016 ई.
प्लूटो	वक्री	18 अप्रैल, 2016 ई.
प्लूटो	मार्गी	26 सितंबर, 2016 ई.
—	—	— —

ग्रह	उदय / अस्त	तारीख
मंगल वर्ष-भर उदित रहेगा।		
बुध	प. में अस्त	8 जनवरी, 2016 ई.
बुध	पूर्व में उदित	21 जनवरी, 2016 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	9 मार्च, 2016 ई.
बुध	प. में उदित	5 अप्रैल, 2016 ई.
बुध	प. में अस्त	30 अप्रैल, 2016 ई.
बुध	पूर्व में उदित	19 मई, 2016 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	26 जून, 2016 ई.
बुध	प. में उदित	19 जुलाई, 2016 ई.
बुध	प. में अस्त	6 सितंबर, 2016 ई.
बुध	पूर्व में उदित	21 सितंबर, 2016 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	9 अक्तूबर, 2016 ई.
बुध	प. में उदित	20 नवंबर, 2016 ई.
बुध	प. में अस्त	22 दिसंबर, 2016 ई.
बुध	पूर्व में उदित	4 जनवरी, 2017 ई.
बुध	पूर्व में अस्त	18 फरवरी, 2017 ई.
बुध	प. में उदित	21 मार्च, 2017 ई.
गुरु	अस्त	9 सितंबर, 2016 ई.
गुरु	उदित	7 अक्तूबर, 2016 ई.
शुक्र	पूर्व में अस्त	27 अप्रैल, 2016 ई.
शुक्र	पश्चिम में उदित	10 जुलाई, 2016 ई.
शुक्र	पश्चिम में अस्त	22 मार्च, 2017 ई.
शुक्र	पूर्व में उदित	25 मार्च, 2017 ई.
शनि	अस्त	24 नवंबर, 2016 ई.
शनि	उदित	28 दिसंबर, 2016 ई.
—	—	— — —

ग्रहोदयास्त निर्णय

सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रहों के सूक्ष्म दैनिक उदयास्तकाल, चन्द्रदर्शन की तारीख तथा मंगल आदि के लोप–दर्शन की तारीखें ज्ञात करने की सरलातिसरल प्रक्रिया इस पुस्तक में आप पाएंगे। प्राचीन एवम् नवीन ज्योतिर्गणित–ग्रन्थों में उपलब्ध ग्रहों के दैनिक उदयास्त का काल तथा लोप–दर्शन का दिन जानने की जटिल गणितप्रक्रियाओं को लेखक ने स्वनिर्मित मौलिक सारणियों तथा शैली द्वारा आश्चर्यजनक रूप में सुबोध, सरल बना दिया है। अनेकों उदाहरणों द्वारा सभी गणित– प्रक्रियाओं को पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

0 से 63° तक के प्रत्येक अक्षांश का दैनिक सूक्ष्म सूर्योदयास्तकाल 48 पृष्ठों की एक विशाल सारणी में दिया गया है। जिससे विश्व के उत्तरी या दक्षिणी अक्षांश के किसी भी स्थल का सूर्योदयास्तकाल स्थानीय (क्षेत्रीय) स्टैं. टा. में तुरन्त जाना जा सकता है।

गुरु और शुक्र के उदयास्त (लोप–दर्शन) की सन् 2001 से 3000 ई. तक के (एक हज़ार वर्षों के) लिए 'उन्नतांश–पद्धति' से निर्णीत वेधसिद्ध सूक्ष्म, शुद्ध तारीखें इस पुस्तक की अनुपम विशेषता है। किस वर्ष में किस भारतीय अक्षांश पर गुरु का लोप–दर्शन, शुक्र का पश्चिमलोप–पूर्वदर्शन या पूर्वलोप-पश्चिम– दर्शन किस तारीख को होगा ?–यह पुस्तक में दी गई विलक्षण सारणी पर दृष्टि डालते ही आप (ज्योतिषानभिज्ञ सामान्य व्यक्ति भी) तुरन्त विद्युद्गति से जान लेंगे। इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए। लेखक की प्रतिज्ञा है– ग्रहों के उदयास्त, लोप–दर्शन पर उनका यह प्रकाशन सर्वथा अपनी ही तरह का है।

मूल्य **Rs. 300/– + डाकव्यय Rs. 50/–**

पुस्तक मिलने का पता:–

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, **M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59/6
P.O. पंचकूला (हरियाणा)– 134 109,
Phone: 0172- 2565 303

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

संक्षिप्तरूपः– अं. नि.= अण्डेमान एवं निकोबार, अरुणा.= अरुणाचल प्रदेश, आं.=आन्ध्र प्रदेश, आसा.= आसाम , उ.= उड़ीसा, उ.प्र.=उत्तरप्रदेश, उ.आं
उत्तरांचल, क.= कर्णाटक , के.= केरल, गु.= गुजरात, गोवा= गोवा, का.= जम्मू–काश्मीर, ता.= तामिलनाडु, त्रि.= त्रिपुरा, दा.ना.= दादर एण्ड नागर
हवेली, डा.= डामन ड्यू, ना.= नागालैण्ड, बं.= प. बंगाल, पं.= पंजाब, पां.= पाण्डिचेरी, बि.=बिहार, झा.ख.= झारखण्ड, मणि.= मणिपुर, म.प्र.= मध्यप्रदेश,
छ.ग.= छत्तीसगढ़, म.= महाराष्ट्र, मिज़ो.= मिज़ोरम, मे.= मेघालय, रा.= राजस्थान, लक्ष.= लक्षद्वीप, सि.= सिक्किम, ह.= हरियाणा, हि.= हिमाचल प्रदेश,

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अकबरपुर	(उ.प्र.)	26 25	82 33	+ 0 12
अंकलेश्वर	(गु.)	21 38	73 02	−37 52
अकोला	(म.)	20 40	77 05	−21 40
अखनूर	(का.)	32 53	74 45	−31 00
अगरतला	(त्रि.)	23 48	91 15	+35 00
अगरोहा	(ह.)	29 21	75 38	−27 28
अंगुल	(उ.)	20 48	85 04	+10 16
अच्छीवाल	(का.)	33 41	75 14	−29 04
अजन्ता	(म.)	20 30	75 48	−26 48
अजनाला	(पं.)	31 51	74 48	−30 48
अजमेर	(रा.)	26 27	74 42	−31 12
अटारी	(पं.)	31 36	74 35	−31 40
अतनेर	(म.प्र.)	21 40	77 59	−18 04
अनन्तनाग	(का.)	33 44	75 10	−29 20
अनन्तपुर	(आं.)	14 42	77 36	−19 36
अनामलै	(ता.)	10 34	76 50	−22 40
अनूपगढ़	(रा.)	29 07	73 06	−37 36
अनूपशहर	(उ.प्र.)	28 22	78 16	−16 56
अबोहर	(पं.)	30 09	74 11	−33 16
अमरकंटक	(म.प्र.)	22 40	81 45	− 3 00
अमरनाथगुफा	(का.)	34 13	75 32	−27 52
अमरावती	(म.)	20 56	77 45	−19 00
अमरावती	(आं.)	16 35	80 20	− 8 40
अमरेली	(गु.)	21 36	71 18	−44 48
अमरोहा	(उ.प्र.)	28 54	78 29	−16 04
अमलापुरम्	(आं.)	16 36	82 03	− 1 48
अमलोह	(पं.)	30 37	76 14	−25 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
अमीनगांव	(आसा.)	26 13	91 45	+37 00
अमृतसर	(पं.)	31 37	74 55	−30 20
अमेठी	(उ.प्र.)	26 08	81 50	− 2 40
अम्ब	(हि.)	31 42	76 07	−25 32
अम्बाला	(ह.)	30 21	76 52	−22 32
अम्बाह	(उ.प्र.)	26 43	78 15	−17 00
अम्बिकापुर	(छ.ग.)	23 07	83 12	+ 2 48
अयोध्या	(उ.प्र.)	26 48	82 12	− 1 12
अरकोट	(ता.)	12 54	79 20	−12 40
अरकोणम्	(ता.)	13 05	79 40	−11 20
अर्की	(हि.)	31 09	76 58	−22 08
अर्वी.	(म.)	21 00	78 18	−16 48
अरारिया	(बि.)	26 08	87 24	+19 36
अल्मोड़ा	(उ.आं.)	29 37	79 40	−11 20
अलवर	(रा.)	27 34	76 38	−23 28
अलीगंज	(उ.प्र.)	27 30	79 11	−13 16
अलीगढ़	(उ.प्र.)	27 53	78 05	−17 40
अलीपुर	(बं.)	22 32	88 20	+23 20
अलीपुर दुआर	(बं.)	26 29	89 44	+28 56
अलीबाग	(म.)	18 38	72 55	−38 20
अवनिगड्डा	(आं.)	16 03	80 59	− 6 04
अशोकनगर	(म.प्र.)	24 33	77 43	−19 08
अहमदनगर	(म.)	19 05	74 44	−31 04
अहमदाबाद	(गु.)	23 03	72 40	−39 20
अहवा	(गु.)	20 44	73 41	−35 16
आगरा	(उ.प्र.)	27 11	78 01	−17 56
आजमगढ़	(उ.प्र.)	26 04	83 11	+ 2 44

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
आडोनी	(आं.)	15 38	77 16	−20 56
आदिलाबाद	(आं.)	19 40	78 31	−15 56
आनन्द	(गु.)	22 34	73 01	−37 56
आनन्दपुरसाहिब	(पं.)	31 15	76 31	−23 56
आनी	(हि.)	31 27	77 25	−20 20
आबू	(रा.)	24 40	72 45	−39 00
आरा	(बि.)	25 34	84 40	+ 8 40
आरामबाग	(बं.)	22 53	87 47	+21 08
आसनसोल	(बं.)	23 41	86 59	+17 56
आसिन्द	(रा.)	25 42	74 21	−32 36
इच्छापुरम्	(उ.)	19 10	84 43	+ 8 52
इटारसी	(म.प्र.)	22 37	77 45	−19 00
इटावा	(उ.प्र.)	26 47	79 02	−13 52
इन्दौर	(म.प्र.)	22 44	75 50	−26 40
इन्दौरा	(हि.)	32 07	75 40	−27 20
इम्फाल	(मणि.)	24 47	93 57	+45 48
इलाहाबाद	(उ.प्र.)	देखें	प्रयाग	—
ईटानगर	(अरुणा.)	27 05	93 40	+44 40
ईसागढ़	(म.प्र.)	24 50	77 53	−18 28
उखरूल	(मणि.)	25 07	94 23	+47 32
उगाला	(ह.)	30 11	76 59	−22 04
उज्जैन	(म.प्र.)	23 09	75 43	−27 08
उड़ी	(का.)	34 05	74 01	−33 56
उडुपी	(क.)	13 23	74 45	−31 00
उत्तरकाशी	(उ.आं.)	30 44	78 27	−16 12
उदयगिरि	(उ.)	19 08	84 10	+ 6 40
उदयपुर	(त्रि.)	23 32	91 29	+35 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
उदयपुर	(रा.)	24 35	73 41	−35 16	कपूरथला	(पं.)	31 23	75 23	−28 28	कालिकट	(के.)	11 15	75 46	−26 56
उन्नाव	(उ.प्र.)	26 32	80 30	− 8 00	करतारपुर	(पं.)	31 27	75 30	−28 00	कालिम्पोंग	(बं.)	27 04	88 29	+23 56
उपशी	(का.)	33 52	77 50	−18 40	कर्णप्रयाग	(उ.आं.)	30 13	79 17	−12 52	काशी	(उ.प्र.)	देखें	वाराणसी	− −
उमरकोट	(उ.)	19 39	82 18	− 0 48	करनाल	(ह.)	29 42	77 02	−21 52	कियारीघाट	(हि.)	31 00	77 05	−21 40
उरई	(उ.प्र.)	25 59	79 28	−12 08	करसोग	(हि.)	31 23	77 13	−21 08	किरकी	(म.)	18 36	73 57	−34 12
उल्हासनगर	(म.)	19 13	73 07	−37 32	कराड	(म.)	17 15	74 12	−33 12	किश्तवाड़	(का.)	33 19	75 48	−26 48
ऊटकमण्ड	(ता.)	11 24	76 44	−23 04	करूर	(ता.)	10 58	78 03	−17 48	किशनगंज	(बि.)	26 10	87 56	+21 44
ऊधमपुर	(का.)	32 54	75 06	−29 36	कालाअम्ब	(हि.)	30 30	77 13	−21 08	किशनगढ़ (अजमेर)	(रा.)	26 34	74 52	−30 32
ऊना	(हि.)	31 29	76 17	−24 52	काल्पा	(हि.)	31 32	78 15	−17 00	कीरतपुरसाहिब	(पं.)	31 11	76 34	−23 44
एकलिंगजी	(रा.)	24 43	73 46	−34 56	करीमगंज	(आसा.)	24 48	92 30	+40 00	कुड्डप्पा	(ता.)	14 28	78 50	−14 40
एटा	(उ.प्र.)	27 38	78 40	−15 20	करीमनगर	(आं.)	18 27	79 06	−13 36	कुड्डालूर	(ता.)	11 43	79 49	−10 44
एरोड	(ता.)	11 20	77 46	−18 56	करौली	(रा.)	26 30	77 01	−21 56	कुफरी	(हि.)	31 06	77 12	−21 12
एर्नाकुलम्	(के.)	10 00	76 16	−24 56	कर्नूल	(आं.)	15 50	78 05	−17 40	कुंभकोणम्	(ता.)	10 59	79 24	−12 24
एलिचपुर	(म.)	21 18	77 33	−19 48	कल्याण	(म.)	19 17	73 11	−37 16	कुमारी अन्तरीप	(ता.)	8 05	77 34	−19 44
एलुरु	(आं.)	16 43	81 09	− 5 24	कवरत्ती	(लक्ष.)	10 33	72 38	−39 28	कुम्हारहट्टी	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
एलेप्पे	(के.)	9 30	76 22	−24 32	कवार्धा	(छ.ग.)	22 00	81 15	− 5 00	कुराली	(पं.)	30 50	76 35	−23 40
एलोरा	(म.)	20 04	75 15	−29 00	कसारागोड	(के.)	12 30	75 00	−30 00	कुरुक्षेत्र	(ह.)	29 59	76 50	−22 40
ऐजावल	(मिज़ो.)	23 43	92 44	+40 56	कसौली	(हि.)	30 55	76 57	−22 12	कुल्लू	(हि.)	31 58	77 06	−21 36
ओखा	(गु.)	22 26	69 02	−53 52	काकिनाडा	(आं.)	16 56	82 13	− 1 08	कूच बिहार	(बं.)	26 19	89 26	+27 44
ओंगोल	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36	कांकेर	(म.प्र.)	20 17	81 32	− 3 52	कृष्णानगर	(बं.)	23 24	88 30	+24 00
ओरैय्या	(उ.प्र.)	26 28	79 31	−11 56	कांगड़ा	(हि.)	32 05	76 18	−24 48	केओंजरगढ़	(उ.)	21 38	85 35	+12 20
ओस्मानाबाद	(म.)	18 09	76 06	−25 36	कांचीपुरम्	(ता.)	12 50	79 44	−11 04	केन्द्रपाड़ा	(उ.)	20 30	86 25	+15 40
औट	(हि.)	31 47	77 11	−21 16	काठगोदाम	(उ.आं.)	29 16	79 32	−11 52	केदारनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 04	−13 44
औरंगाबाद	(म.)	19 52	75 22	−28 32	काठियावाड़	(गु.)	22 00	71 00	−46 00	केप कैमोरिन	(ता.)	देखें	कुमारी	अन्तरीप
कटक	(उ.)	20 26	85 56	+13 44	कादियां	(पं.)	31 49	75 23	−28 28	केसरी	(ह.)	30 14	76 54	−22 24
कटनी	(म.प्र.)	23 47	80 27	− 8 12	कानपुर	(उ.प्र.)	26 28	80 21	− 8 36	कैथल	(ह.)	29 48	76 26	−24 16
कटरा	(का.)	32 59	74 57	−30 12	कामठी (काम्पटी)	(म.)	21 12	79 16	−12 56	कैलाशहर	(त्रि.)	24 18	92 01	+38 04
कटराई	(हि.)	32 07	77 07	−21 32	कारकाल	(क.)	13 12	74 59	−30 04	कोचीन	(के.)	9 58	76 14	−25 04
कटिहार	(बि.)	25 30	87 35	+20 20	कारगिल	(का.)	34 31	76 13	−25 08	कोटकपूरा	(पं.)	30 36	74 54	−30 24
कठुआ	(का.)	32 22	75 32	−27 52	कारवाड़	(क.)	14 50	74 09	−33 24	कोटखाई	(हि.)	31 08	77 36	−19 36
कण्डाघाट	(हि.)	30 58	77 07	−21 32	कारिकाल	(पां.)	10 55	79 50	−10 40	कोटगढ़	(हि.)	31 19	77 29	−20 04
कन्नूर	(के.)	11 52	75 25	−28 20	कालका	(ह.)	30 50	76 56	−22 16	कोटा	(रा.)	25 10	75 52	−26 32
कन्नौज	(उ.प्र.)	27 04	79 55	−10 20	कालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12	कोट्टागुडम्	(आं.)	17 32	80 39	− 7 24

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
कोट्टायम्	(के.)	9 34	76 31	−23 56
कोटद्वारा	(उ.आं.)	29 45	78 32	−15 52
कोंटई	(बं.)	21 50	87 48	+21 12
कोडैकनाल	(ता.)	10 14	77 29	−20 04
कोणार्क	(उ.)	19 54	86 07	+14 28
कोप्पल	(क.)	15 21	76 09	−25 24
कोयम्बटूर	(ता.)	11 00	77 00	−22 00
कोरबा	(छ.ग.)	22 22	82 42	+ 0 48
कोरापुट	(उ.)	18 48	82 41	+ 0 44
कोलकाता	(बं.)	22 34	88 24	+23 36
कोल्हापुर	(म.)	16 42	74 19	−32 44
कोलार	(क.)	13 10	78 10	−17 20
कोल्लेगाल	(क.)	12 08	77 06	−21 36
कोलेबीरा	(बि.)	22 43	84 42	+ 8 48
कोहिमा	(नागा.)	25 39	94 08	+46 32
क्विलोन	(के.)	8 54	76 38	−23 28
खजियार	(हि.)	32 32	76 04	−25 44
खड़गपुर	(बं.)	22 20	87 20	+19 20
खंडवा	(म.प्र.)	21 50	76 23	−24 28
खतौली	(उ.प्र.)	29 17	77 43	−19 08
खन्ना	(पं.)	30 42	76 13	−25 08
खम्भालिया	(गु.)	22 12	69 39	−51 24
खम्मम्	(आं.)	17 16	80 13	− 9 08
खरगोन	(म.प्र.)	21 52	75 36	−27 36
खरड़	(पं.)	30 45	76 37	−23 32
खलीलाबाद	(उ.प्र.)	26 47	83 04	+ 2 16
खुर्जा	(उ.प्र.)	28 13	77 50	−18 40
खुर्दा	(उ.)	20 10	85 38	+12 32
खेड़ा	(गु.)	22 45	72 45	−39 00
खेमकरण	(पं.)	31 08	74 34	−31 44
गगरेट	(हि.)	31 40	76 04	−25 44
गंगटोक	(सि.)	27 22	88 36	+24 24
गंजम्	(उ.)	19 28	85 05	+10 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
गढ़चिराली	(म.)	20 12	80 00	−10 00
गढ़मुक्तेश्वर	(उ.प्र.)	28 48	78 06	−17 36
गढ़वा (गरवा)	(झा.खं.)	24 10	83 52	+ 5 28
गढ़शंकर	(पं.)	31 13	76 08	−25 28
गदग	(क.)	15 26	75 42	−27 12
गया	(बि.)	24 49	85 01	+10 04
गाजियाबाद	(उ.प्र.)	28 40	77 26	−20 16
गाजीपुर	(उ.प्र.)	25 35	83 34	+ 4 16
गांधीधाम	(गु.)	23 06	70 08	−49 28
गिरडीह	(झा.खं.)	24 12	86 21	+15 24
गिलगित	(का.)	35 55	74 21	−32 36
गुड़गांव	(ह.)	28 27	77 04	−21 44
गुंटकल	(आं.)	15 11	77 24	−20 24
गुंटूर	(आं.)	16 20	80 27	− 8 12
गुड़ीवाड़ा	(आं.)	16 27	81 00	− 6 00
गुडूर	(आं.)	14 10	79 51	−10 36
गुना	(म.प्र.)	24 40	77 20	−20 40
गुम्मा	(हि.)	31 06	77 28	−20 08
गुरदासपुर	(पं.)	32 02	75 27	−28 12
गुलबर्गा	(क.)	17 20	76 50	−22 40
गुलमर्ग	(का.)	34 05	74 25	−32 20
गुवाहाटी	(आसा.)	26 10	91 45	+37 00
गोइन्दवाल	(पं.)	31 22	75 08	−29 28
गोंडल	(गु.)	21 56	70 50	−46 40
गोंडा	(उ.प्र.)	27 08	82 01	− 1 56
गोघरा	(गु.)	22 49	73 40	−35 20
गोपालगंज	(बि.)	26 28	84 26	+ 7 44
गोम्पा	(का.)	35 02	77 20	−20 40
गोरखपुर	(उ.प्र.)	26 45	83 22	+ 3 28
गोरस	(म.प्र.)	25 32	76 56	−22 16
गोहाना	(ह.)	29 08	76 42	−23 12
गोंडीया	(म.)	21 26	80 14	− 9 04
ग्वालियर	(म.प्र.)	26 14	78 10	−17 20

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
घरौण्डा	(ह.)	29 33	76 58	−22 08
घाटल	(बं.)	22 40	87 43	+20 52
घाटसिला	(झा.खं.)	22 36	86 29	+15 56
घुमारवीं	(हि.)	31 26	76 43	−23 08
चच्योट	(हि.)	31 32	77 01	−21 56
चण्डीगढ़	(यू.टी.)	30 45	76 50	−22 40
चण्डीमन्दिर कैंट	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
चन्दननगर	(बं.)	22 51	88 21	+23 24
चन्दौसी	(उ.प्र.)	28 27	78 46	−14 56
चन्द्रपुर	(म.)	19 57	79 18	−12 48
चम्बा	(हि.)	32 34	76 08	−25 28
चमौली	(उ.आं.)	30 24	79 21	−12 36
चरखी दादरी	(ह.)	28 37	76 18	−24 48
चामुण्डा जी	(हि.)	32 07	76 23	−24 28
चायल	(हि.)	30 59	77 12	−21 12
चास	(झा.खं.)	23 38	86 10	+14 40
चिक मंगलूर	(क.)	13 19	75 47	−26 52
चिंगलपुट	(ता.)	12 42	80 01	− 9 56
चित्तरंजन	(बं.)	23 52	86 52	+17 28
चित्तूर	(आं.)	13 12	79 07	−13 32
चितौड़गढ़	(रा.)	24 54	74 40	−31 20
चित्रदुर्ग	(क.)	14 14	76 24	−24 24
चित्रौद	(गु.)	23 25	70 42	−47 12
चिदम्बरम्	(ता.)	11 25	79 42	−11 12
चिन्तपूरणी	(हि.)	31 49	76 07	−25 32
चिनसुरा	(बं.)	22 53	88 25	+23 40
चिरगांव	(उ.प्र.)	25 35	78 49	−14 44
चिराला	(आं.)	15 50	80 21	− 8 36
चुंगतास	(का.)	35 37	78 37	−15 32
चुनार	(उ.प्र.)	25 08	82 56	+ 1 44
चुशुल	(का.)	33 34	78 38	−15 28
चूड़चांदपुर	(मणि.)	24 19	93 40	+44 40
चूरू	(रा.)	28 19	75 01	−29 56

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
चेन्नई	(ता.)	देखें	मद्रास	–
चेरापूंजी	(मे.)	25 17	91 42	+36 48
चौपाल	(हि.)	30 57	77 36	−19 36
छतरपुर	(उ.)	19 24	85 00	+10 00
छतरपुर	(म.प्र.)	24 54	79 38	−11 28
छपरा	(बि.)	25 47	84 45	+ 9 00
छिंदवाड़ा	(म.प्र.)	22 03	78 58	−14 08
छिब्रामऊ	(उ.प्र.)	27 09	79 31	−11 56
छोटा उदयपुर	(गु.)	22 19	74 01	−33 56
जगदलपुर	(छ.ग.)	19 05	82 04	− 1 44
जगरांव	(पं.)	30 47	75 29	−28 04
जगाधरी	(ह.)	30 10	77 18	−20 48
जंगीपुर	(बं.)	24 28	88 04	+22 16
जण्डयाला	(पं.)	31 36	75 03	−29 48
जतोग	(हि.)	31 06	77 07	−21 32
जनगांव	(आं.प्र.)	17 44	79 10	−13 20
जबलपुर	(म.प्र.)	23 10	79 59	−10 04
जम्बूसार	(गु.)	22 00	72 50	−38 40
जमशेदपुर	(बि.)	22 50	86 10	+14 40
जमालपुर	(बि.)	25 19	86 32	+16 08
जमूई	(बि.)	24 55	86 13	+14 52
जम्मू	(का.)	32 43	74 54	−30 24
जयपुर	(आसा.)	27 14	95 24	+51 36
जयपुर	(रा.)	26 55	75 52	−26 32
जलगांव	(म.)	21 03	75 39	−27 24
जलपाईगुडी	(बं.)	26 31	88 44	+24 56
जलालाबाद	(उ.प्र.)	27 43	79 40	−11 20
जशपुरनगर	(छ.ग.)	22 53	84 12	+ 6 48
जसरा	(उ.प्र.)	25 17	81 48	− 2 48
जसरोटा	(का.)	32 29	75 27	−28 12
जाखल	(ह.)	29 48	75 50	−26 40
जामनगर	(गु.)	22 28	70 06	−49 36
जालना	(म.)	19 50	75 58	−26 08

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
जालन्धर	(पं.)	31 19	75 34	−27 44
जालेश्वर	(उ.)	21 48	87 14	+18 56
जालोर	(रा.)	25 22	72 38	−39 28
जालौन	(उ.प्र.)	26 09	79 21	−12 36
ज़िरो	(अरुणा.)	27 32	93 47	+45 08
जींद	(ह.)	29 19	76 19	−24 44
ज़ीरा	(पं.)	30 58	74 59	−30 04
जुब्बल	(हि.)	31 07	77 39	−19 14
जूनागढ़	(गु.)	21 32	70 34	−47 44
जेतपुर	(गु.)	21 43	70 42	−47 12
जैतों	(पं.)	30 28	74 53	−30 28
जैसलमेर	(रा.)	26 55	70 54	−46 24
जोगिन्द्रनगर	(हि.)	31 59	76 46	−22 56
जोधपुर	(रा.)	26 18	73 04	−37 44
जोरहाट	(आसा.)	26 45	94 12	+46 48
जौनपुर	(उ.प्र.)	25 44	82 41	+ 0 44
ज्वालाजी	(हि.)	31 53	76 22	−24 32
ज्वालामुखी	(हि.)	31 53	76 19	−24 44
झज्जर	(ह.)	28 37	76 39	−23 24
झाबुआ	(म.प्र.)	22 45	74 38	−31 28
झरिया	(झा.खं.)	23 45	86 24	+15 36
झांसी	(उ.प्र.)	25 26	78 35	−15 40
झालरापाटन	(रा.)	24 33	76 10	−25 20
झालावाड़	(रा.)	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	(रा.)	28 06	75 25	−28 20
टांडा उरमुर	(पं.)	31 42	75 38	−27 28
टिकापाड़ा डैम	(उ.)	20 32	84 56	+ 9 44
टिथवाल	(का.)	34 24	73 47	−34 52
टिहरी	(उ.आं.)	30 20	78 30	−16 00
टीकमगढ़	(म.प्र.)	24 45	78 53	−14 28
टीहरा सुजानपुर	(हि.)	31 51	76 32	−23 52
टुंकुरं	(क.)	13 21	77 05	−21 40
टूटीकोरिन	(ता.)	8 40	78 11	−17 16

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
टुण्डला	(उ.प्र.)	27 12	78 17	−16 52
टोंक	(रा.)	26 11	75 50	−26 40
टोडा रायसिंह	(रा.)	26 00	75 29	−28 04
टोहाना	(ह.)	29 42	75 54	−26 24
ट्रावनकोर	(के.)	9 00	77 00	−22 00
ठयोग	(हि.)	31 07	77 21	−20 36
डगशई	(हि.)	30 53	77 03	−21 48
डबवाली	(पं.)	29 58	74 45	−31 00
डमटाल	(हि.)	32 12	75 40	−27 20
डलहौज़ी	(हि.)	32 32	75 59	−26 04
डामन	(डा.)	20 25	72 53	−38 28
डायमंड हार्बर	(बं.)	22 12	88 12	+22 48
डालटनगंज	(झा.खं.)	24 02	84 04	+ 6 16
डिगबोई	(आसा.)	27 22	95 40	+52 40
डिंडीगुल	(क.)	10 22	78 00	−18 00
डिबाई	(उ.प्र.)	28 13	78 15	−17 00
डिब्रूगढ़	(आसा.)	27 29	94 56	+49 44
डीडवाना	(रा.)	27 24	74 34	−31 44
डीसा	(गु.)	24 14	72 13	−41 08
डूंगरपुर	(रा.)	23 50	73 43	−35 08
डोडा	(का.)	33 10	75 35	−27 40
ड्यू	(डा.)	20 42	71 01	−45 56
ढुबरी	(आसा.)	26 02	89 58	+29 52
तंजावर	(ता.)	10 46	79 09	−13 24
तपा	(पं.)	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	(पं.)	31 27	74 58	−30 08
तवांग	(अरुणा.)	27 35	91 52	+37 28
तांगला	(आसा.)	26 40	91 57	+37 48
ताड़पत्री	(आं.)	14 55	77 59	−18 04
तामलुक	(बं.)	22 18	87 55	+21 40
ताम्बरम्	(ता.)	12 55	80 07	− 9 32
तारकेश्वर	(बं.)	22 54	88 02	+22 08
तारा	(गु.)	24 00	71 51	−42 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
तारादेवी	(हि.)	31 03	77 08	−21 28
तिनसुकिया	(आसा.)	27 28	95 20	+51 20
तिरुवनन्तपुरम्	(के.)	8 30	76 58	−22 08
तिरुपति	(आं.)	13 39	79 25	−12 20
तिरुप्पर	(क.)	11 05	77 20	−20 40
तिरुवन्नामलै	(ता.)	12 13	79 04	−13 44
तुर्रा	(मे.)	25 30	90 13	+30 52
तेजपुर	(आसा.)	26 38	92 49	+41 16
तेनाली	(आं.)	16 13	80 36	− 7 36
तेरुनेलवेली	(ता.)	8 45	77 43	−19 08
त्रिचुरापल्ली	(ता.)	10 49	78 41	−15 16
त्रिचूर	(के.)	10 32	76 14	−25 04
त्रिवेन्द्रम्	(के.)	देखें —	तिरुवनन्तपुरम्	
थराड़	(गु.)	24 26	71 40	−43 20
थानेधार	(हि.)	31 20	77 34	−19 44
थानेसर	(ह.)	29 58	76 56	−22 16
दतिया	(म.प्र.)	25 39	78 27	−16 12
दन्तेवाड़ा	(छ.ग.)	18 52	81 22	− 4 32
दभोई	(गु.)	22 08	73 28	−36 08
दमोह	(म.प्र.)	23 50	79 29	−12 04
दरभंगा	(बि.)	26 10	85 57	+13 48
दसूहा	(पं.)	31 49	75 38	−27 28
दादरी	(ह.)	28 34	77 33	−19 48
दानापुर	(बि.)	25 38	85 05	+10 20
दार्जिलिंग	(बं.)	27 02	88 16	+23 04
दावनगेरे	(क.)	14 30	75 52	−26 32
दिल्ली	(यू.टी.)	28 38	77 12	−21 12
दीनानगर	(पं.)	32 09	75 28	−28 08
दीमापुर	(नागा.)	25 53	93 43	+44 52
दुजाना	(ह.)	28 41	76 37	−23 32
दुमका	(झा.खं.)	24 16	87 15	+19 00
दुर्ग	(म.प्र.)	21 11	81 17	− 4 52
दुर्गापुर	(बं.)	23 29	87 20	+19 20
देओगढ़	(उ.)	21 32	84 46	+ 9 04
देओट सिद्ध	(हि.)	31 28	76 34	−23 44
देवघर	(बि.)	24 30	86 42	+16 48
देवप्रयाग	(उ.आं.)	30 09	78 37	−15 32
देवबन्द	(उ.प्र.)	29 42	77 41	−19 16
देवरिया	(उ.प्र.)	26 31	83 47	+ 5 08
देवलाली	(म.)	19 58	73 52	−34 32
देवास	(म.प्र.)	22 58	76 06	−25 36
देहरा गोपीपुर	(हि.)	31 54	76 13	−25 08
देहरादून	(उ.आं.)	30 19	78 02	−17 52
देहरी	(बि.)	24 52	84 11	+ 6 44
दोराहा मण्डी	(पं.)	30 49	76 02	−25 52
दौसा	(रा.)	26 51	76 21	−24 36
द्रास	(का.)	34 27	75 46	−26 56
द्वारिका	(गु.)	22 14	69 02	−53 52
धनबाद	(झा.खं.)	23 47	86 30	+16 00
धनुष्कोडी	(ता.)	9 12	79 25	−12 20
धमतरी	(छ.ग.)	20 42	81 34	− 3 44
धर्मजयगढ़	(म.प्र.)	22 28	83 13	+ 2 52
धर्मपुर	(हि.)	30 53	77 02	−21 52
धर्मशाला	(हि.)	32 16	76 23	−24 28
ध्रांगधरा	(गु.)	22 59	71 29	−44 04
धार	(म.प्र.)	22 35	75 20	−28 40
धारवाड़	(क.)	15 30	75 04	−29 44
धुले	(म.)	20 58	74 47	−30 52
धेन कानाल	(उ.)	20 40	85 39	+12 36
धौलपुर	(रा.)	26 42	77 53	−18 28
नईहाटी	(बं.)	22 57	88 25	+23 40
नकोदर	(पं.)	31 07	75 29	−28 04
नगर	(हि.)	32 07	77 08	−21 28
नगरोटा बगवां	(हि.)	32 06	76 22	−24 32
नजीबाबाद	(उ.प्र.)	29 38	78 20	−16 40
नडियाद	(गु.)	22 42	72 55	−38 20
नन्दापुर	(उ.)	18 32	82 52	+ 1 28
नन्दुरबार	(म.)	21 22	74 15	−33 00
नयागढ़	(उ.)	20 10	85 08	+10 32
नरवाणा	(ह.)	29 37	76 07	−25 32
नरसिंहपुरा	(उ.)	20 28	85 08	+10 32
नरेन्द्रनगर	(उ.आं.)	30 10	78 20	−16 40
नरैना	(रा.)	26 50	74 11	−33 16
नवद्वीप	(बं.)	23 25	88 22	+23 28
नवरंगपुर	(उ.)	19 15	82 39	+ 0 36
नवलगढ़	(रा.)	27 51	75 18	−28 48
नवसारी	(गु.)	20 52	72 56	−38 16
नवांशहर	(पं.)	31 07	76 08	−25 28
नसीराबाद	(रा.)	26 18	74 46	−30 56
नागापट्टनम्	(ता.)	10 45	79 50	−10 40
नागपुर	(म.)	21 10	79 10	−13 20
नागरकोयल	(ता.)	8 10	77 26	−20 16
नागौर	(रा.)	27 11	73 44	−35 04
नाचना	(रा.)	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	(रा.)	24 56	73 50	−34 40
नान्देड़	(म.)	19 11	77 21	−20 36
नानपाड़ा	(उ.प्र.)	27 52	81 30	− 4 00
नान्दोड़	(गु.)	21 52	73 32	−35 52
नाभा	(पं.)	30 22	76 08	−25 28
नारकण्डा	(हि.)	31 16	77 27	−20 12
नारनौल	(ह.)	28 03	76 14	−25 04
नारायणगढ़	(ह.)	30 29	77 08	−21 28
नालगोंडा	(आं.)	17 04	79 15	−13 00
नालन्दा	(बि.)	25 07	85 25	+11 40
नालागढ़	(हि.)	31 03	76 42	−23 12
नालिया	(गु.)	23 19	68 51	−54 36
नासिक	(म.)	20 00	73 52	−34 32
नाहन	(हि.)	30 33	77 21	−20 36

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
निज़ामाबाद	(आं.)	18 40	78 07	−17 40
निम्बहेड़ा	(रा.)	24 37	74 45	−31 00
निरमण्ड	(हि.)	31 27	77 34	−19 44
नीमच	(म.प्र.)	24 27	74 52	−30 32
नीलगिरि	(उ.)	21 29	86 49	+17 16
नीलोखेड़ी	(ह.)	29 51	76 55	−22 20
नूरपुर	(हि.)	32 18	75 54	−26 24
नूरपुरबेदी	(पं.)	31 09	76 29	−24 04
नैनवा	(रा.)	25 45	75 57	−26 12
नैनीताल	(उ.आं.)	29 23	79 27	−12 12
नैल्लूर	(आं.)	14 29	80 00	−10 00
नोखामण्डी	(रा.)	27 35	73 29	−36 04
नोंगस्टोइन	(मे.)	25 31	91 16	+35 04
नोहर	(रा.)	29 11	74 46	−30 56
नौशहरा	(का.)	33 10	74 15	−33 00
पचपदरा	(रा.)	25 55	72 21	−40 36
पंचकूला	(ह.)	30 42	76 52	−22 32
पंचमढ़ी	(म.प्र.)	22 28	78 26	−16 16
पंजिम	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पटना	(बि.)	25 37	85 13	+10 52
पटियाला	(पं.)	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	(पं.)	31 17	74 51	−30 36
पटौदी	(ह.)	28 18	76 48	−22 48
पठानकोट	(पं.)	32 17	75 42	−27 12
पंढरपुर	(म.)	17 42	75 24	−28 24
पन्ना	(म.प्र.)	24 44	80 14	− 9 04
परभानी	(म.)	19 16	76 51	−22 36
पराकसम	(आं.)	15 30	80 06	− 9 36
पलवल	(ह.)	28 09	77 20	−20 40
पहलगाम	(का.)	34 01	75 20	−28 40
पाकौर	(झा.खं.)	24 38	87 54	+21 36
पाटन	(गु.)	23 50	72 09	−41 24
पाटनगढ़	(उ.)	20 43	83 09	+ 2 36

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
पाठलगांव	(म.प्र.)	22 34	83 28	+ 3 52
पाण्डिचेरी	(पां.)	11 58	79 54	−10 24
पणजी	(गोवा)	15 29	73 50	−34 40
पानीपत	(ह.)	29 23	77 00	−22 00
पापड़हांडी	(उ.)	19 22	82 34	+ 0 16
पालनपुर	(गु.)	24 12	72 29	−40 04
पालमपुर	(हि.)	32 07	76 33	−23 48
पालिताणा	(गु.)	21 30	71 50	−42 40
पाली	(रा.)	25 46	73 20	−36 40
पालयंकोट्टै	(ता.)	8 42	77 46	−18 56
पांवटा साहिब	(हि.)	30 27	77 37	−19 32
पासीघाट	(अरुणा.)	28 05	95 20	+51 20
पिठोरागढ़	(उ.आं.)	29 35	80 13	− 9 08
पिपली	(ह.)	29 58	76 53	−22 28
पिहोवा	(ह.)	29 57	76 37	−23 32
पीलीभीत	(उ.प्र.)	28 38	79 48	−10 48
पुंछ	(का.)	33 51	74 06	−33 36
पुट्टापर्त्ती	(आं.)	14 15	77 45	−19 00
पुदुकोट्टै	(ता.)	10 23	78 49	−14 44
पुरनिया	(बि.)	25 49	87 31	+20 04
पुरी	(उ.)	19 48	85 52	+13 28
पुरुलिया	(बं.)	23 20	86 22	+15 28
पुष्कर	(रा.)	26 30	74 33	−31 48
पूना	(म.)	18 34	73 53	−34 28
पोरबन्दर	(गु.)	21 40	69 36	−51 36
पोर्टब्लेयर	(अं.नि.)	11 41	92 43	+40 52
पोलाची	(ता.)	10 38	77 00	−22 00
पौड़ी	(उ.आं.)	30 09	78 47	−14 52
प्रतापगढ़	(उ.प्र.)	25 50	81 59	− 2 04
प्रतापगढ़	(म.प्र.)	24 02	74 47	−30 52
प्रयाग	(उ.प्र.)	25 28	81 54	− 2 24
प्रोद्दातूर	(ता.)	14 45	78 35	−15 40
फगवाड़ा	(पं.)	31 14	75 46	−26 56

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
फतेहपुर	(उ.प्र.)	25 56	80 52	− 6 32
फतेहपुर सीकरी	(उ.प्र.)	27 06	77 40	−19 20
फतेहाबाद	(उ.प्र.)	27 01	78 19	−16 44
फतेहाबाद	(ह.)	29 31	75 28	−28 08
फरीदकोट	(पं.)	30 40	74 40	−31 20
फरीदाबाद	(ह.)	28 26	77 19	−20 44
फर्रुखाबाद	(उ.प्र.)	27 24	79 34	−11 44
फाज़िल्का	(पं.)	30 25	74 04	−33 44
फिरोज़पुर	(पं.)	30 55	74 40	−31 20
फिरोज़ाबाद	(उ.प्र.)	27 09	78 24	−16 24
फिल्लौर	(पं.)	31 01	75 47	−26 52
फुलेरा	(रा.)	26 52	75 16	−28 56
फूलबानी	(उ.)	20 30	84 18	+ 7 12
फैज़ाबाद	(उ.प्र.)	26 47	82 08	− 1 28
बक्सर	(बि.)	25 34	83 59	+ 5 56
बंगलौर	(क.)	13 00	77 35	−19 40
बंगा	(पं.)	31 11	75 59	−26 04
बटाला	(पं.)	31 48	75 12	−29 12
बठिण्डा	(पं.)	30 11	75 00	−30 00
बड़ानगर	(बं.)	22 38	88 22	+23 28
बड़ौदा	(गु.)	22 18	73 13	−37 08
बदायूं	(उ.प्र.)	28 03	79 07	−13 32
बद्दी	(हि.)	30 55	76 48	−22 48
बद्रीनाथ	(उ.आं.)	30 44	79 29	−12 04
बनगांव	(बं.)	23 04	88 49	+25 16
बनिहाल	(का.)	33 30	75 18	−28 48
बबीना	(उ.प्र.)	25 15	78 28	−16 08
बंबई	(म.)	देखें —	मुम्बई	
बरवाला	(ह.)	29 22	75 54	−26 24
बरेली	(उ.प्र.)	28 22	79 27	−12 12
बरौनी	(बि.)	25 30	85 53	+13 52
बर्दवान	(बं.)	23 16	87 52	+21 28
बलरामपुर	(उ.प्र.)	27 26	82 11	− 1 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बलिया	(उ.प्र.)	25 45	84 10	+ 6 40
बल्लभगढ़	(ह.)	28 21	77 19	−20 44
बसीरहाट	(बं.)	22 40	88 53	+25 32
बस्ति	(उ.प्र.)	26 48	82 43	+ 0 52
ब्रह्मकुण्ड	(आसा.)	27 52	96 23	+55 32
बहराईच	(उ.प्र.)	27 35	81 36	− 3 36
बागलकोट	(क.)	16 14	75 47	−26 52
बाघ	(म.प्र.)	22 22	74 49	−30 44
बातल	(हि.)	32 22	77 36	−19 36
बांकीपुर	(बि.)	25 40	85 12	+10 48
बांकुड़ा	(बं.)	23 15	87 04	+18 16
बाधपत	(उ.प्र.)	28 57	77 13	−21 08
बाटानगर	(बं.)	22 31	88 15	+23 00
बाड़मेर	(रा.)	25 45	71 25	−44 20
बांदा	(उ.प्र.)	25 29	80 20	− 8 40
बामनघाटी	(उ.)	22 13	86 15	+15 00
बारपेटा	(आसा.)	26 20	91 02	+34 08
बारसी	(म.)	18 14	75 44	−27 04
बारागढ़	(उ.)	21 25	83 35	+ 4 20
बाराबंकी	(उ.प्र.)	26 55	81 12	− 5 12
बारामूला	(का.)	34 12	74 20	−32 40
बारासत	(बं.)	22 43	88 29	+23 56
बारीपाड़ा	(उ.)	21 56	86 44	+16 56
बालाघाट	(म.प्र.)	21 48	80 11	− 9 16
बल्लामऊ	(उ.प्र.)	27 15	80 23	− 8 28
बालासौर	(उ.)	21 31	86 54	+17 36
बालीपाड़ा	(आसा.)	26 09	92 09	+38 36
बालुरघाट	(बं.)	25 13	88 46	+25 04
बालेश्वर	(उ.)	21 31	86 59	+17 56
बालोतरा	(रा.)	25 49	72 14	−41 04
बांसवाड़ा	(रा.)	23 30	74 24	−32 24
बिजनौर	(उ.प्र.)	29 22	78 08	−17 28
बिलासपुर	(छ.ग.)	22 05	82 09	− 1 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
बिलासपुर	(हि.)	31 20	76 47	−22 52
बिलासीपाड़ा	(आसा.)	26 13	90 13	+30 52
बिष्णुपुर	(बं.)	23 05	87 19	+19 16
बिहारशरीफ	(बि.)	25 11	85 32	+12 08
बीकानेर	(रा.)	28 01	73 20	−36 40
बीजापुर	(क.)	16 50	75 45	−27 00
बीड़	(म.)	18 59	75 46	−28 56
बीदर	(क.)	17 56	77 35	−19 40
बुक्क पत्तनम	(आं.)	14 12	77 46	−18 56
बुढलाडा	(पं.)	29 56	75 34	−27 44
बुटाणा	(ह.)	29 11	76 38	−23 28
बुद्धगया	(बि.)	24 41	84 58	+ 9 52
बुरनपुर	(बं.)	23 42	86 58	+17 52
बुरहानपुर	(म.प्र.)	21 18	76 14	−25 04
बुलन्दशहर	(उ.प्र.)	28 24	77 51	−18 36
बुलसार	(गु.)	20 36	72 56	−38 16
बूंदी	(रा.)	25 27	75 40	−27 20
बृन्दावन	(उ.प्र.)	27 33	77 44	−19 04
बेगूसराय	(बि.)	25 25	86 08	+14 32
बेट्टिया	(बि.)	26 48	84 33	+ 8 12
बेलगांव	(क.)	15 54	74 36	−31 36
बेला	(पं.)	30 56	76 23	−24 28
बेला(प्रतापगढ़)	(उ.प्र.)	25 54	82 01	− 1 56
बेल्लारी	(क.)	15 11	76 54	−22 24
बैकुण्ठपुर	(छ.ग.)	23 15	82 33	+ 0 12
बैजनाथ	(हि.)	32 04	76 37	−23 32
बैरकपुर	(बं.)	22 46	88 24	+23 36
बोम्डिला	(अरुणा.)	27 19	92 25	+39 40
बोरसाद	(गु.)	22 24	72 59	−38 04
बोलपुर	(बं.)	23 40	87 43	+20 52
बोलानगिर	(उ.)	20 41	83 30	+ 4 00
बौडा	(उ.)	20 50	84 22	+ 7 28
ब्यावर	(रा.)	26 06	74 20	−32 40

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
ब्यास	(पं.)	31 31	75 18	−28 48
भटिण्डा	(पं.)	देखें	बठिण्डा	(पं.)
भण्डारा	(म.)	21 10	79 41	−11 16
भदोही	(उ.प्र.)	25 25	82 34	+ 0 16
भद्रक	(उ.)	21 05	86 30	+16 00
भद्रवाह	(का.)	32 59	75 43	−27 08
भद्राचलम्	(आं.)	17 42	80 53	− 6 28
भरतपुर	(रा.)	27 15	77 30	−20 00
भरमौर	(हि.)	32 27	76 32	−23 52
भरूच	(गु.)	21 40	72 58	−38 08
भवानीपत्तन	(उ.)	19 54	83 10	+ 2 40
भागलपुर	(बि.)	25 15	87 00	+18 00
भातपाड़ा	(बं.)	22 52	88 24	+23 36
भादसों	(पं.)	30 31	76 15	−25 00
भाभर	(गु.)	24 08	71 42	−43 12
भावनगर	(गु.)	21 46	72 10	−41 20
भिंड	(म.प्र.)	26 35	78 46	−14 56
भिलाई	(छ.ग.)	21 13	81 26	− 4 16
भिवंडी	(गु.)	19 18	73 04	−37 44
भिवानी	(ह.)	28 48	76 08	−25 28
भीनमाल	(रा.)	25 00	72 19	−40 44
भीमावरम्	(आं.)	16 34	81 35	− 3 40
भीलवाड़ा	(रा.)	25 21	74 40	−31 20
भुज	(गु.)	23 16	69 40	−51 20
भुवनेश्वर	(उ.)	20 13	85 50	+13 20
भुसावल	(म.)	21 01	75 50	−26 40
भोपाल	(म.प्र.)	23 16	77 24	−20 24
मऊ	(उ.प्र.)	25 17	81 23	− 4 28
मंगलोर	(क.)	12 54	74 51	−30 36
मंगलौर	(उ.आं.)	29 48	77 52	−18 32
मंगालादै	(आसा.)	26 28	92 02	+38 08
मछलीपट्टणम्	(आं.)	16 10	81 08	− 5 28
मजीठा	(पं.)	31 46	74 57	−30 12

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मण्डला	(म.प्र.)	22 37	80 22	– 8 32
मण्ड्या	(क.)	12 34	76 55	–22 20
मण्डी	(हि.)	31 43	76 58	–22 08
मणिकर्ण	(हि.)	32 02	77 21	–20 36
मथुरा	(उ.प्र.)	27 30	77 41	–19 16
मदुरै	(ता.)	9 58	78 10	–17 20
मद्रास	(ता.)	13 05	80 18	– 8 48
मधुपुर	(झा.खं.)	24 16	86 39	+16 36
मधुबनी	(बि.)	26 22	86 05	+14 20
मधीपुरा	(बि.)	25 55	86 47	+17 08
मनाली	(हि.)	32 16	77 10	–21 20
मन्दसोर	(म.प्र.)	24 05	75 06	–29 36
मन्सूरी	(उ.आं.)	30 27	78 07	–17 32
मनसादेवी	(ह.)	30 43	76 51	–22 36
मनीमाजरा	(ह.)	30 42	76 52	–22 32
मलोट	(पं.)	30 13	74 29	–32 04
मवाना	(उ.प्र.)	29 06	77 55	–18 20
महबूबनगर	(आं.)	16 44	77 59	–18 04
महवा	(रा.)	27 03	76 56	–22 16
महाबलिपुरम्	(ता.)	12 37	80 12	– 9 12
महाबलेश्वर	(गु.)	17 58	73 43	–35 08
महुआ	(गु.)	21 05	71 48	–42 48
महेन्द्रगढ़	(ह.)	28 17	76 09	–25 24
महेसाणा	(गु.)	23 37	72 28	–40 08
माछीवाड़ा	(पं.)	30 55	76 11	–25 16
मांगरोल	(गु.)	21 07	70 08	–49 28
माण्डवी (कच्छ)	(गु.)	22 50	69 28	–52 08
मानसा	(पं.)	29 59	75 23	–28 28
मायूरम्	(ता.)	11 08	79 40	–11 20
मारवाड़ जं.	(रा.)	25 43	73 36	–35 36
मालदा	(बं.)	25 05	88 09	+22 36
मालेगांव(नासिक)	(म.)	20 32	74 38	–31 28
मालेरकोटला	(पं.)	30 31	75 52	–26 32

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
माहे	(पां.)	11 42	75 32	–27 52
मिदनापुर	(बं.)	22 25	87 21	+19 24
मिराज	(म.)	16 51	74 42	–31 12
मिर्जापुर	(उ.प्र.)	25 09	82 35	+ 0 20
मीरपुर	(का.)	33 32	73 51	–34 36
मुक्तसर	(पं.)	30 29	74 31	–31 56
मुकेरियां	(पं.)	31 57	75 37	–27 32
मुगलसराय	(उ.प्र.)	25 18	83 07	+ 2 28
मुंगेर	(बि.)	25 23	86 30	+16 00
मुजफ्फरनगर	(उ.प्र.)	29 28	77 41	–19 16
मुजफ्फरपुर	(बि.)	26 07	85 27	+11 48
मुजफ्फराबाद	(का.)	34 23	73 30	–36 00
मुद्रा	(म.प्र.)	24 43	77 35	–19 40
मुन्दरा	(गु.)	22 50	69 48	–50 48
मुम्बई	(म.)	19 00	72 54	–38 24
मुरवाड़ा	(म.प्र.)	23 51	80 22	– 8 32
मुरादाबाद	(उ.प्र.)	28 50	78 47	–14 52
मुरी	(झा.खं.)	23 51	82 34	+ 0 16
मुलाना	(ह.)	30 17	77 03	–21 48
मुर्शिदाबाद	(बं.)	24 11	88 16	+23 04
मेतूर	(ता.)	11 50	77 51	–18 36
मेढ़क	(आं.)	18 03	78 15	–17 00
मेरठ	(उ.प्र.)	28 59	77 42	–19 12
मेलघाट	(म.)	21 44	77 12	–21 12
मैनपुरी	(उ.प्र.)	27 14	79 01	–13 56
मैसूर	(क.)	12 18	76 37	–23 32
मैहर	(म.प्र.)	24 16	80 45	– 7 00
मोकोक चुंग	(नागा.)	26 19	94 32	+48 08
मोगा	(पं.)	30 48	75 10	–29 20
मोतीहारी	(बि.)	26 40	84 57	+ 9 48
मोरवी	(गु.)	22 50	70 50	–46 40
मोरार	(म.प्र.)	26 13	78 14	–17 04
मोरिण्डा	(पं.)	30 48	76 30	–24 00

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
मोरेना (मुरैना)	(म.प्र.)	26 23	78 04	–17 44
मोहनिया	(बि.)	25 11	83 37	+ 4 28
मोहाना	(म.)	25 54	77 45	–19 00
मोहाली	(पं.)	30 43	76 42	–23 12
यनम्	(पां.)	16 44	82 13	– 1 08
यमुनानगर	(ह.)	30 07	77 18	–20 48
यवतमाल	(म.)	20 24	78 08	–17 28
योल	(हि.)	32 11	76 23	–24 28
रक्सौल	(बि.)	26 58	84 51	+ 9 24
रंगिया	(आसा.)	26 28	91 35	+36 20
रतलाम	(म.प्र.)	23 21	75 07	–29 32
रतनगढ़	(रा.)	28 05	74 39	–31 24
रत्नागिरि	(म.)	17 00	73 22	–36 32
राऊरकेला	(उ.)	22 15	84 52	+ 9 28
रांची	(झा.खं.)	23 23	85 23	+11 32
राजकोट	(गु.)	22 18	70 53	–46 28
राजगढ़	(म.प्र.)	24 01	76 45	–23 00
राजनन्दगांव	(छ.ग.)	21 05	81 05	– 5 40
राजपालैयम्	(ता.)	9 27	77 34	–19 44
राजपुरा	(पं.)	30 29	76 36	–23 36
राजमहल	(झा.खं.)	25 03	87 53	+21 32
राजमहेन्द्री	(आं.)	17 05	81 48	– 2 48
राजुला	(गु.)	21 01	71 26	–44 16
राजौरी	(का.)	33 22	74 17	–32 52
रादौर	(ह.)	30 01	77 08	–21 28
राधनपुर	(गु.)	23 52	71 36	–43 36
रानाघाट	(बं.)	23 11	88 35	+24 20
रानीखेत	(उ.आं.)	29 39	79 25	–12 20
रापर	(गु.)	23 33	70 38	–47 28
राबर्ट्सगंज	(उ.प्र.)	24 42	83 04	+ 2 16
रामनाथपुरम्	(ता.)	9 23	78 53	–14 28
रामपुर	(उ.प्र.)	28 49	79 02	–13 52
रामबन	(का.)	33 15	75 15	–29 00

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.	नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
रामपुरबुशहर	(हि.)	31 27	77 38	−19 28	लुम्डिंग	(आसा.)	25 46	93 10	+42 40	शाहदरा	(दिल्ली)	28 41	77 17	−20 52
रामपुराफूल	(पं.)	30 17	75 14	−29 04	लूनावाड़ा	(गु.)	23 08	73 37	−35 32	शाहपुर	(हि.)	32 12	76 10	−25 20
रामानुजगंज	(छ.ग.)	23 48	83 42	+ 4 48	लूनी	(रा.)	26 00	73 00	−38 00	शाहाबाद	(ह.)	30 10	76 52	−22 32
रामेश्वरम्	(ता.)	9 18	79 19	−12 44	लेह	(का.)	34 09	77 35	−19 40	शाहाबाद	(उ.प्र.)	27 39	79 57	−10 12
रायकोट	(पं.)	30 39	75 36	−27 36	लैंस डाऊन	(उ.आं.)	29 50	78 41	−15 16	शिकोहाबाद	(उ.प्र.)	27 06	78 36	−15 36
रायगढ़	(छ.ग.)	21 54	83 26	+ 3 44	लोहारू	(ह.)	28 27	75 49	−26 44	शिमला	(हि.)	31 06	77 10	−21 20
रायचूर	(क.)	16 15	77 20	−20 40	वर्धा	(म.)	20 42	78 40	−15 20	शिमोग	(क.)	13 56	75 34	−27 44
रायपुर	(उ.प्र.)	30 19	78 06	−17 36	वलपरै	(ता.)	10 22	76 58	−22 08	शिलांग	(मे.)	25 36	91 53	+37 32
रायपुर	(छ.ग.)	21 15	81 41	− 3 16	वल्लभीपुर	(गु.)	20 52	71 58	−42 08	शिवपुरी	(म.प्र.)	25 26	77 40	−19 20
रायबरेली	(उ.प्र.)	26 14	81 16	− 4 56	वलसाड़	(गु.)	20 40	72 55	−38 20	शिवसागर	(आसा.)	26 58	94 39	+48 36
रायसिंहनगर	(रा.)	29 32	73 27	−36 12	वारंगल	(आं.)	18 00	79 35	−11 40	शिवहार (शिवविहार)	(बि.)	26 35	85 18	+11 12
रायसेन	(म.प्र.)	23 18	77 47	−18 52	वाल्टेअर	(आं.)	17 47	83 22	+ 3 28	शिवाकाशी	(ता.)	9 26	77 50	−18 40
रियांग	(अरुणा.)	27 32	92 55	+41 40	वाराणसी	(उ.प्र.)	25 20	83 00	+ 2 00	शेखपुरा	(बि.)	25 09	85 53	+13 32
रिवालसर	(हि.)	31 38	76 50	−22 40	विजयनगर	(क.)	15 20	76 30	−24 00	शैलम्	(आं.)	16 02	78 56	−14 16
रीवां	(म.प्र.)	24 31	81 19	− 4 44	विजयपुरी	(आं.)	16 52	79 35	−11 40	शोलापुर	(म.)	17 43	75 56	−26 16
रुड़की	(उ.आं.)	29 52	77 53	−18 28	विजयवाड़ा	(आं.)	16 31	80 39	− 7 24	श्योपुर	(म.प्र.)	25 40	76 40	−23 20
रुद्रप्रयाग	(उ.आं.)	30 16	78 59	−14 04	विदिशा	(म.प्र.)	23 32	77 50	−18 40	श्रीकाकुलम्	(आं.)	18 19	84 00	+ 6 00
रिवाड़ी	(ह.)	28 12	76 40	−23 20	विरामग्राम	(गु.)	23 08	72 04	−41 44	श्रीकालाहस्ती	(आं.)	13 48	79 42	−11 12
रोन्दू	(का.)	35 37	75 06	−29 36	विरुदुनगर	(ता.)	9 36	77 58	−18 08	श्रीगंगानगर	(रा.)	29 49	73 50	−34 40
रोपड़	(पं.)	30 57	76 32	−23 52	विल्लुपुरम्	(ता.)	11 56	79 29	−12 04	श्रीनगर	(उ.आं.)	30 13	78 47	−14 52
रोहडू	(हि.)	31 13	77 45	−19 00	विशाखापट्टनम्	(आं.)	17 42	83 18	+ 3 12	श्रीनगर	(का.)	34 07	74 50	−30 40
रोहतक	(ह.)	28 54	76 38	−23 28	विसनगर	(गु.)	23 41	72 36	−39 36	श्रीमाधोपुर	(रा.)	27 25	75 32	−27 52
लक्सर	(उ.आं.)	29 48	78 02	−17 52	वेंकटपलम्	(उ.)	18 05	81 40	− 3 20	श्रीरंगम्	(ता.)	10 52	78 40	−15 20
लखनऊ	(उ.प्र.)	26 51	80 55	− 6 20	वेरावल	(गु.)	20 53	70 28	−48 08	संगरूर	(पं.)	30 12	75 53	−26 28
लखपत	(गु.)	23 49	68 47	−54 52	वेल्लूर	(ता.)	12 56	79 09	−13 24	संगारेड्डी पेठ	(आं.)	17 37	78 04	−17 44
लखीमपुर	(उ.प्र.)	27 57	80 49	− 6 44	वैष्णोदेवी	(का.)	33 02	74 57	−30 12	सढौरा	(हि.)	30 23	77 13	−21 08
लखीसराय	(बि.)	25 12	86 06	+14 24	व्यारा	(गु.)	21 09	73 28	−36 08	सतना	(म.प्र.)	24 34	80 55	− 6 20
ललितपुर	(उ.प्र.)	24 41	78 25	−15 20	शहडोल	(म.प्र.)	23 20	81 22	− 4 32	सतारा	(म.)	17 49	74 05	−33 40
लातूर	(म.)	18 24	76 34	−23 44	शाजापुर	(म.प्र.)	23 26	76 18	−24 48	सदरा	(गु.)	23 20	72 48	−38 48
लाडवा	(ह.)	29 59	77 05	−21 40	शान्ति निकेतन	(बं.)	23 40	87 42	+20 48	सदिया	(अरुणा.)	27 48	95 38	+52 32
लालसोत	(रा.)	26 34	76 23	−24 28	शान्तिपुर	(बं.)	23 15	88 26	+23 44	सनौर	(पं.)	30 18	76 28	−24 08
लिम्बड़ी	(गु.)	22 36	71 48	−42 48	शामली	(उ.प्र.)	29 27	77 19	−20 44	सपाटू	(हि.)	30 59	76 59	−22 04
लुधियाना	(पं.)	30 55	75 54	−26 24	शाहजहांपुर	(उ.प्र.)	27 53	79 55	−10 20	समराला	(पं.)	30 51	76 11	−25 16

अक्षांशादि सारणी (भारत के सभी ज़िला स्थलों एवम् प्रसिद्ध नगरों के लिए)

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
समाना	(पं.)	30 09	76 12	−25 12
समस्तीपुर	(बि.)	25 55	85 50	+13 20
सम्बलपुर	(उ.)	21 28	84 01	+ 6 04
सरदारशहर	(रा.)	28 27	74 30	−32 00
सरहिंद	(पं.)	30 38	76 22	−24 32
सलीम	(म.)	11 39	78 12	−17 12
सवाई माधोपुर	(रा.)	25 58	76 25	−24 20
सहरसा	(बि.)	25 55	86 35	+16 20
सहसवां	(उ.प्र.)	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	(उ.प्र.)	29 58	77 33	−19 48
सागर	(म.प्र.)	23 50	78 50	−14 40
सांगला	(हि.)	31 29	78 12	−17 12
सांगली	(म.)	16 55	74 37	−31 32
सांगानेर	(रा.)	26 49	75 49	−26 44
सांचोर	(रा.)	24 40	71 50	−42 40
साम्बा	(का.)	32 32	75 08	−29 28
सांभर	(रा.)	26 54	75 13	−29 08
सारनाथ	(उ.प्र.)	25 24	83 01	+ 2 04
सासनी	(उ.प्र.)	27 43	78 05	−17 40
सासाराम	(बि.)	24 57	84 03	+ 6 12
साहिबगंज	(झा.खं.)	25 13	87 40	+20 40
सिऊनी	(म.प्र.)	22 06	79 35	−11 40
सिऊरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सिकती	(बि.)	26 24	87 33	+20 12
सिकन्दराबाद	(आं.)	17 27	78 30	−16 00
सिकन्दराराऊ	(उ.प्र.)	27 42	78 27	−16 12
सिन्दरी	(रा.)	25 33	71 55	−42 20
सिन्दरी	(बं.)	23 45	86 42	+16 48
सिवाना	(रा.)	25 36	72 27	−40 12
सिरसा	(ह.)	29 32	75 04	−29 44
सिरोही	(रा.)	24 53	72 54	−38 24
सिल्चर	(आसा.)	24 49	92 47	+41 08
सिल्वासा	(दा.ना.)	20 17	72 59	−38 04

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
सिलीगुड़ी	(बं.)	26 42	88 26	+23 44
सिहोरा	(म.प्र.)	23 29	80 07	− 9 32
सिंहभूम	(झा.खं.)	22 24	85 30	+12 00
सीकर	(रा.)	27 36	75 09	−29 24
सीतापुर	(उ.प्र.)	27 34	80 41	− 7 16
सीतामढ़ी	(बि.)	26 35	85 32	+12 08
सीवां	(बि.)	26 12	84 23	+ 7 32
सुईगांव	(गु.)	24 10	71 23	−44 28
सुन्दरगढ़	(उ.)	22 07	84 02	+ 6 08
सुन्दरनगर	(हि.)	31 32	76 53	−22 28
सुनाम	(पं.)	30 08	75 48	−26 48
सुपौल	(बि.)	26 07	86 36	+16 24
सुरेन्द्रनगर	(गु.)	22 42	71 41	−43 16
सुल्तानपुर	(उ.प्र.)	26 16	82 04	− 1 44
सूरत	(गु.)	21 10	72 50	−38 40
सूरतगढ़	(रा.)	29 19	73 57	−34 12
सूरी	(बं.)	23 55	87 32	+20 08
सेरमपुर	(बं.)	22 45	88 21	+23 24
सैंज	(हि.)	31 49	77 19	−20 44
सोजत	(रा.)	25 56	73 42	−35 12
सोनगढ़	(गु.)	21 42	71 58	−42 08
सोनपुर	(बि.)	25 42	85 12	+10 48
सोनपुर	(उ.)	20 50	83 58	+ 5 52
सोनहाट	(छ.ग.)	23 29	82 30	0 00
सोनामर्ग	(का.)	34 18	75 18	−28 48
सोनीपत	(ह.)	28 59	77 01	−21 56
सोमनाथ	(गु.)	21 04	70 26	−48 16
सोलन	(हि.)	30 55	77 09	−21 24
हजारीबाग	(झा.खं.)	23 59	85 25	+11 40
हडसर	(हि.)	32 22	76 33	−23 48
हनुमानगढ़	(रा.)	29 35	74 21	−32 36
हफलोंग	(आसा.)	25 11	93 02	+42 08
हमीरपुर	(उ.प्र.)	25 57	80 09	− 9 24

नगर		अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्वी) अं. क.	स्टैंडर्ड अन्तर मि. से.
हमीरपुर	(हि.)	31 41	76 31	−23 56
हरदोई	(उ.प्र.)	27 25	80 07	− 9 32
हरसीपत्तन	(हि.)	31 53	76 39	−23 24
हरिद्वार	(उ.आं.)	29 58	78 13	−17 08
हरिपुर	(हि.)	31 59	76 05	−25 40
हरिपुरधार	(हि.)	30 52	77 28	−20 08
हरीकेपत्तन	(पं.)	31 30	74 57	−30 12
हल्द्वानी	(उ.आं.)	29 13	79 31	−11 56
हल्दिया	(बं.)	22 02	88 05	+22 20
हास्सन	(क.)	13 01	76 03	−25 48
हसनपुर	(ह.)	27 58	77 30	−20 00
हसनपुर	(उ.प्र.)	28 43	78 17	−16 52
हाजीपुर	(बि.)	25 43	85 14	+10 56
हाटकोटी	(हि.)	31 08	77 45	−19 00
हाथरस	(उ.प्र.)	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	(उ.प्र.)	28 43	77 47	−18 52
हालीशहर	(बं.)	22 56	88 25	+23 40
हावड़ा	(बं.)	22 36	88 19	+23 16
हावेरी	(क.)	14 46	75 26	−28 16
हासपेट	(क.)	15 16	76 26	−24 16
हांसी	(हि.)	32 27	77 50	−18 40
हांसी	(ह.)	29 06	76 00	−26 00
हिंगनघाट	(म.)	20 32	78 52	−14 32
हिम्मतनगर	(गु.)	23 35	73 00	−38 00
हिसार	(ह.)	29 10	75 46	−26 56
हीराकुण्ड डैम	(उ.)	21 31	83 57	+ 5 48
हुबली	(क.)	15 20	75 14	−29 04
हैदराबाद	(आं.)	17 22	78 30	−16 00
होडल	(ह.)	27 53	77 22	−20 32
होशंगाबाद	(म.प्र.)	22 46	77 45	−19 00
होशियारपुर	(पं.)	31 32	75 57	−26 12
होसुर	(ता.)	12 45	77 51	−18 36

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

वैशाख

माह	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अप्रैल	१३	१	७ ३६	९ ३०	११ ४४	१४ ०७	१६ २७	१८ ४४	२१ ०६	२३ २६	१ ३१	३ १२	४ ३७	५ ५९
	१४	२	७ ३२	९ २६	११ ४०	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२१ ०२	२३ २२	१ २७	३ ०८	४ ३३	५ ५५
	१५	३	७ २८	९ २२	११ ३७	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ५८	२३ १८	१ २३	३ ०४	४ २९	५ ५१
	१६	४	७ २४	९ १८	११ ३३	१३ ५५	१६ १५	१८ ३३	२० ५४	२३ १४	१ १९	३ ००	४ २५	५ ४७
	१७	५	७ २०	९ १४	११ २९	१३ ५१	१६ ११	१८ २९	२० ५०	२३ १०	१ १५	२ ५६	४ २१	५ ४३
	१८	६	७ १६	९ ११	११ २५	१३ ४७	१६ ०७	१८ २५	२० ४६	२३ ०६	१ ११	२ ५२	४ १७	५ ३९
	१९	७	७ १२	९ ०७	११ २१	१३ ४३	१६ ०३	१८ २१	२० ४२	२३ ०२	१ ०७	२ ४८	४ १३	५ ३५
	२०	८	७ ०८	९ ०३	११ १७	१३ ३९	१५ ५९	१८ १७	२० ३८	२२ ५८	१ ०३	२ ४४	४ ०९	५ ३१
	२१	९	७ ०४	८ ५९	११ १३	१३ ३५	१५ ५५	१८ १३	२० ३४	२२ ५४	० ५९	२ ४०	४ ०५	५ २८
	२२	१०	७ ००	८ ५५	११ ०९	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० ३०	२२ ५१	० ५५	२ ३६	४ ०१	५ २४
	२३	११	६ ५६	८ ५१	११ ०५	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० २७	२२ ४७	० ५१	२ ३२	३ ५७	५ २०
	२४	१२	६ ५२	८ ४७	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० २३	२२ ४३	० ४७	२ २८	३ ५३	५ १६
	२५	१३	६ ४८	८ ४३	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० १९	२२ ३९	० ४३	२ २४	३ ४९	५ १२
	२६	१४	६ ४४	८ ३९	१० ५३	१३ १६	१५ ३६	१७ ५३	२० १५	२२ ३५	० ३९	२ २०	३ ४५	५ ०८
	२७	१५	६ ४१	८ ३५	१० ४९	१३ १२	१५ ३२	१७ ४९	२० ११	२२ ३१	० ३५	२ १६	३ ४२	५ ०४
	२८	१६	६ ३७	८ ३१	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४५	२० ०७	२२ २७	० ३२	२ १३	३ ३८	५ ००
	२९	१७	६ ३३	८ २७	१० ४२	१३ ०४	१५ २४	१७ ४१	२० ०३	२२ २३	० २८	२ ०९	३ ३४	४ ५६
	३०	१८	६ २९	८ २३	१० ३८	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५९	२२ १९	० २४	२ ०५	३ ३०	४ ५२
मई	१	१९	६ २५	८ १९	१० ३४	१२ ५६	१५ १६	१७ ३४	१९ ५५	२२ १५	० २०	२ ०१	३ २६	४ ४८
	२	२०	६ २१	८ १६	१० ३०	१२ ५२	१५ १२	१७ ३०	१९ ५१	२२ ११	० १६	१ ५७	३ २२	४ ४४
	३	२१	६ १७	८ १२	१० २६	१२ ४८	१५ ०८	१७ २६	१९ ४७	२२ ०७	० १२	१ ५३	३ १८	४ ४०
	४	२२	६ १३	८ ०८	१० २२	१२ ४४	१५ ०४	१७ २२	१९ ४३	२२ ०३	० ०८	१ ४९	३ १४	४ ३६
	५	२३	६ ०९	८ ०४	१० १८	१२ ४०	१५ ००	१७ १८	१९ ३९	२१ ५९	० ०४	१ ४५	३ १०	४ ३२
	६	२४	६ ०५	८ ००	१० १४	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ ३५	२१ ५६	० ००	१ ४१	३ ०६	४ २९
	७	२५	६ ०१	७ ५६	१० १०	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ ३२	२१ ५२	२३ ५६	१ ३७	३ ०२	४ २५
	८	२६	५ ५७	७ ५२	१० ०६	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ २८	२१ ४८	२३ ५२	१ ३३	२ ५८	४ २१
	९	२७	५ ५३	७ ४८	१० ०२	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ २४	२१ ४४	२३ ४८	१ २९	२ ५४	४ १७
	१०	२८	५ ४९	७ ४४	९ ५८	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ २०	२१ ४०	२३ ४४	१ २५	२ ५०	४ १३
	११	२९	५ ४६	७ ४०	९ ५४	१२ १७	१४ ३६	१६ ५४	१९ १६	२१ ३६	२३ ४०	१ २१	२ ४६	४ ०९
	१२	३०	५ ४२	७ ३६	९ ५०	१२ १३	१४ ३३	१६ ५०	१९ १२	२१ ३२	२३ ३७	१ १८	२ ४३	४ ०५
	१३	३१	५ ३८	७ ३२	९ ४६	१२ ०९	१४ २९	१६ ४६	१९ ०८	२१ २८	२३ ३३	१ १४	२ ३९	४ ०१
	१४	आर	५ ३४											

ज्येष्ठ

माह	अंग्रेज़ी तारीख	तिथि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मई	१४	१	७ २८	९ ४३	१२ ०५	१४ २५	१६ ४२	१९ ०४	२१ २४	२३ २९	१ १०	२ ३५	३ ५७	५ ३०
	१५	२	७ २४	९ ३९	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१९ ००	२१ २०	२३ २५	१ ०६	२ ३१	३ ५३	५ २६
	१६	३	७ २०	९ ३५	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ५६	२१ १६	२३ २१	१ ०२	२ २७	३ ४९	५ २२
	१७	४	७ १७	९ ३१	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ५२	२१ १२	२३ १७	० ५८	२ २३	३ ४५	५ १८
	१८	५	७ १३	९ २७	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ४८	२१ ०८	२३ १३	० ५४	२ १९	३ ४१	५ १४
	१९	६	७ ०९	९ २३	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ ४४	२१ ०४	२३ ०९	० ५०	२ १५	३ ३७	५ १०
	२०	७	७ ०५	९ १९	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ ४०	२१ ०१	२३ ०५	० ४६	२ ११	३ ३४	५ ०६
	२१	८	७ ०१	९ १५	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ ३६	२० ५७	२३ ०१	० ४२	२ ०७	३ ३०	५ ०२
	२२	९	६ ५७	९ ११	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ ३३	२० ५३	२२ ५७	० ३८	२ ०३	३ २६	४ ५८
	२३	१०	६ ५३	९ ०७	११ २९	१३ ४९	१६ ०७	१८ २९	२० ४९	२२ ५३	० ३४	१ ५९	३ २२	४ ५४
	२४	११	६ ४९	९ ०३	११ २५	१३ ४५	१६ ०३	१८ २५	२० ४५	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १८	४ ५०
	२५	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २१	२० ४१	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १४	४ ४७
	२६	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३८	१५ ५५	१८ १७	२० ३७	२२ ४२	० २२	१ ४८	३ १०	४ ४३
	२७	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३४	१५ ५१	१८ १३	२० ३३	२२ ३८	० १९	१ ४४	३ ०६	४ ३९
	२८	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ ३०	१५ ४७	१८ ०९	२० २९	२२ ३४	० १५	१ ४०	३ ०२	४ ३५
	२९	१६	६ २९	८ ४४	११ ०६	१३ २६	१५ ४३	१८ ०५	२० २५	२२ ३०	० ११	१ ३६	२ ५८	४ ३१
	३०	१७	६ २५	८ ४०	११ ०२	१३ २२	१५ ४०	१८ ०१	२० २१	२२ २६	० ०७	१ ३२	२ ५४	४ २७
	३१	१८	६ २२	८ ३६	१० ५८	१३ १८	१५ ३६	१७ ५७	२० १७	२२ २२	० ०३	१ २८	२ ५०	४ २३
जून	१	१९	६ १८	८ ३२	१० ५४	१३ १४	१५ ३२	१७ ५३	२० १३	२२ १८	२३ ५९	१ २४	२ ४६	४ १९
	२	२०	६ १४	८ २८	१० ५०	१३ १०	१५ २८	१७ ४९	२० ०९	२२ १४	२३ ५५	१ २०	२ ४२	४ १५
	३	२१	६ १०	८ २४	१० ४६	१३ ०६	१५ २४	१७ ४५	२० ०५	२२ १०	२३ ५१	१ १६	२ ३८	४ ११
	४	२२	६ ०६	८ २०	१० ४२	१३ ०२	१५ २०	१७ ४१	२० ०२	२२ ०६	२३ ४७	१ १२	२ ३५	४ ०७
	५	२३	६ ०२	८ १६	१० ३८	१२ ५८	१५ १६	१७ ३७	१९ ५८	२२ ०२	२३ ४३	१ ०८	२ ३१	४ ०३
	६	२४	५ ५८	८ १२	१० ३४	१२ ५४	१५ १२	१७ ३४	१९ ५४	२१ ५८	२३ ३९	१ ०४	२ २७	३ ५९
	७	२५	५ ५४	८ ०८	१० ३०	१२ ५०	१५ ०८	१७ ३०	१९ ५०	२१ ५४	२३ ३५	१ ००	२ २३	३ ५५
	८	२६	५ ५०	८ ०४	१० २६	१२ ४६	१५ ०४	१७ २६	१९ ४६	२१ ५०	२३ ३१	० ५६	२ १९	३ ५१
	९	२७	५ ४६	८ ००	१० २३	१२ ४३	१५ ००	१७ २२	१९ ४२	२१ ४६	२३ २७	० ५२	२ १५	३ ४८
	१०	२८	५ ४२	७ ५६	१० १९	१२ ३९	१४ ५६	१७ १८	१९ ३८	२१ ४३	२३ २३	० ४९	२ ११	३ ४४
	११	२९	५ ३८	७ ५२	१० १५	१२ ३५	१४ ५२	१७ १४	१९ ३४	२१ ३९	२३ २०	० ४५	२ ०७	३ ४०
	१२	३०	५ ३४	७ ४९	१० ११	१२ ३१	१४ ४८	१७ १०	१९ ३०	२१ ३५	२३ १६	० ४१	२ ०३	३ ३६
	१३	३१	५ ३०	७ ४५	१० ०७	१२ २७	१४ ४५	१७ ०६	१९ २६	२१ ३१	२३ १२	० ३७	१ ५९	३ ३२
	१४	आर	५ २६											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

आषाढ़

	अंग्रेज़ी तारीख	आषाढ़ तिथि	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.
	१४	१	७ ४१	१० ०३	१२ २३	१४ ४१	१७ ०२	१९ २२	२१ २७	२३ ०८	० ३३	१ ५५	३ २८	५ २३
	१५	२	७ ३७	९ ५९	१२ १९	१४ ३७	१६ ५८	१९ १८	२१ २३	२३ ०४	० २९	१ ५१	३ २४	५ १९
	१६	३	७ ३३	९ ५५	१२ १५	१४ ३३	१६ ५४	१९ १४	२१ १९	२३ ००	० २५	१ ४७	३ २०	५ १५
	१७	४	७ २९	९ ५१	१२ ११	१४ २९	१६ ५०	१९ १०	२१ १५	२२ ५६	० २१	१ ४३	३ १६	५ ११
	१८	५	७ २५	९ ४७	१२ ०७	१४ २५	१६ ४६	१९ ०६	२१ ११	२२ ५२	० १७	१ ३९	३ १२	५ ०७
	१९	६	७ २१	९ ४३	१२ ०३	१४ २१	१६ ४२	१९ ०३	२१ ०७	२२ ४८	० १३	१ ३६	३ ०८	५ ०३
	२०	७	७ १७	९ ३९	११ ५९	१४ १७	१६ ३९	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४४	० ०९	१ ३२	३ ०४	४ ५९
	२१	८	७ १३	९ ३५	११ ५५	१४ १३	१६ ३५	१८ ५५	२० ५९	२२ ४०	० ०५	१ २८	३ ००	४ ५५
जून	२२	९	७ ०९	९ ३१	११ ५१	१४ ०९	१६ ३१	१८ ५१	२० ५५	२२ ३६	० ०१	१ २४	२ ५६	४ ५१
	२३	१०	७ ०५	९ २७	११ ४७	१४ ०५	१६ २७	१८ ४७	२० ५१	२२ ३२	२३ ५७	१ २०	२ ५३	४ ४७
	२४	११	७ ०१	९ २४	११ ४४	१४ ०१	१६ २३	१८ ४३	२० ४८	२२ २८	२३ ५४	१ १६	२ ४९	४ ४३
	२५	१२	६ ५७	९ २०	११ ४०	१३ ५७	१६ १९	१८ ३९	२० ४४	२२ २५	२३ ५०	१ १२	२ ४५	४ ३९
	२६	१३	६ ५३	९ १६	११ ३६	१३ ५३	१६ १५	१८ ३५	२० ४०	२२ २१	२३ ४६	१ ०८	२ ४१	४ ३५
	२७	१४	६ ५०	९ १२	११ ३२	१३ ४९	१६ ११	१८ ३१	२० ३६	२२ १७	२३ ४२	१ ०४	२ ३७	४ ३१
	२८	१५	६ ४६	९ ०८	११ २८	१३ ४६	१६ ०७	१८ २७	२० ३२	२२ १३	२३ ३८	१ ००	२ ३३	४ २७
	२९	१६	६ ४२	९ ०४	११ २४	१३ ४२	१६ ०३	१८ २३	२० २८	२२ ०९	२३ ३४	० ५६	२ २९	४ २४
	३०	१७	६ ३८	९ ००	११ २०	१३ ३८	१५ ५९	१८ १९	२० २४	२२ ०५	२३ ३०	० ५२	२ २५	४ २०
	१	१८	६ ३४	८ ५६	११ १६	१३ ३४	१५ ५५	१८ १५	२० २०	२२ ०१	२३ २६	० ४८	२ २१	४ १६
	२	१९	६ ३०	८ ५२	११ १२	१३ ३०	१५ ५१	१८ ११	२० १६	२१ ५७	२३ २२	० ४४	२ १७	४ १२
	३	२०	६ २६	८ ४८	११ ०८	१३ २६	१५ ४७	१८ ०८	२० १२	२१ ५३	२३ १८	० ४१	२ १३	४ ०८
	४	२१	६ २२	८ ४४	११ ०४	१३ २२	१५ ४३	१८ ०४	२० ०८	२१ ४९	२३ १४	० ३७	२ ०९	४ ०४
	५	२२	६ १८	८ ४०	११ ००	१३ १८	१५ ४०	१८ ००	२० ०४	२१ ४५	२३ १०	० ३३	२ ०५	४ ००
	६	२३	६ १४	८ ३६	१० ५६	१३ १४	१५ ३६	१७ ५६	२० ००	२१ ४१	२३ ०६	० २९	२ ०१	३ ५६
	७	२४	६ १०	८ ३२	१० ५२	१३ १०	१५ ३२	१७ ५२	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५७	३ ५२
जुलाई	८	२५	६ ०६	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २८	१७ ४८	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
	९	२६	६ ०२	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ २४	१७ ४४	१९ ४९	२१ २९	२२ ५५	० १७	१ ५०	३ ४४
	१०	२७	५ ५८	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ २०	१७ ४०	१९ ४५	२१ २६	२२ ५१	० १३	१ ४६	३ ४०
	११	२८	५ ५५	८ १७	१० ३७	१२ ५४	१५ १६	१७ ३६	१९ ४१	२१ २२	२२ ४७	० ०९	१ ४२	३ ३६
	१२	२९	५ ५१	८ १३	१० ३३	१२ ५०	१५ १२	१७ ३२	१९ ३७	२१ १८	२२ ४३	० ०५	१ ३८	३ ३२
	१३	३०	५ ४७	८ ०९	१० २९	१२ ४७	१५ ०८	१७ २८	१९ ३३	२१ १४	२२ ३९	० ०१	१ ३४	३ २९
	१४	३१	५ ४३	८ ०५	१० २५	१२ ४३	१५ ०४	१७ २४	१९ २९	२१ १०	२२ ३५	२३ ५७	१ ३०	३ २५
	१५	३२	५ ३९	८ ०१	१० २१	१२ ३९	१५ ००	१७ २०	१९ २५	२१ ०६	२२ ३१	२३ ५३	१ २६	३ २१
	१६	श्रा.१	५ ३५											

श्रावण

	अंग्रेज़ी तारीख	श्रावण तिथि	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.
	१६	१	७ ५७	१० १७	१२ ३५	१४ ५६	१७ १६	१९ २१	२१ ०२	२२ २७	२३ ४९	१ २२	३ १७	५ ३१
	१७	२	७ ५३	१० १३	१२ ३१	१४ ५२	१७ १२	१९ १७	२० ५८	२२ २३	२३ ४५	१ १८	३ १३	५ २७
	१८	३	७ ४९	१० ०९	१२ २७	१४ ४८	१७ ०९	१९ १३	२० ५४	२२ १९	२३ ४१	१ १४	३ ०९	५ २३
	१९	४	७ ४५	१० ०५	१२ २३	१४ ४५	१७ ०५	१९ ०९	२० ५०	२२ १५	२३ ३८	१ १०	३ ०५	५ १९
	२०	५	७ ४१	१० ०१	१२ १९	१४ ४१	१७ ०१	१९ ०५	२० ४६	२२ ११	२३ ३४	१ ०६	३ ०१	५ १५
	२१	६	७ ३७	९ ५७	१२ १५	१४ ३७	१६ ५७	१९ ०१	२० ४२	२२ ०७	२३ ३०	१ ०२	२ ५७	५ ११
	२२	७	७ ३३	९ ५३	१२ ११	१४ ३३	१६ ५३	१८ ५७	२० ३८	२२ ०३	२३ २६	० ५८	२ ५३	५ ०७
	२३	८	७ ३०	९ ५०	१२ ०७	१४ २९	१६ ४९	१८ ५३	२० ३४	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४९	५ ०३
जुलाई	२४	९	७ २६	९ ४६	१२ ०३	१४ २५	१६ ४५	१८ ५०	२० ३०	२१ ५६	२३ १८	० ५१	२ ४५	४ ५९
	२५	१०	७ २२	९ ४२	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ४६	२० २७	२१ ५२	२३ १४	० ४७	२ ४१	४ ५६
	२६	११	७ १८	९ ३८	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४२	२० २३	२१ ४८	२३ १०	० ४३	२ ३७	४ ५२
	२७	१२	७ १४	९ ३४	११ ५२	१४ १३	१६ ३३	१८ ३८	२० १९	२१ ४४	२३ ०६	० ३९	२ ३३	४ ४८
	२८	१३	७ १०	९ ३०	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३४	२० १५	२१ ४०	२३ ०२	० ३५	२ ३०	४ ४४
	२९	१४	७ ०६	९ २६	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ ३०	२० ११	२१ ३६	२२ ५८	० ३१	२ २६	४ ४०
	३०	१५	७ ०२	९ २२	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २६	२० ०७	२१ ३२	२२ ५४	० २७	२ २२	४ ३६
	३१	१६	६ ५८	९ १८	११ ३६	१३ ५७	१६ १७	१८ २२	२० ०३	२१ २८	२२ ५०	० २३	२ १८	४ ३१
	१	१७	६ ५४	९ १४	११ ३२	१३ ५३	१६ १३	१८ १८	१९ ५९	२१ २४	२२ ४७	० १९	२ १४	४ २८
	२	१८	६ ५०	९ १०	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १४	१९ ५५	२१ २०	२२ ४३	० १५	२ १०	४ २४
	३	१९	६ ४६	९ ०६	११ २४	१३ ४६	१६ ०६	१८ १०	१९ ५१	२१ १६	२२ ३९	० ११	२ ०६	४ २०
	४	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४२	१६ ०२	१८ ०६	१९ ४७	२१ १२	२२ ३५	० ०७	२ ०२	४ १६
	५	२१	६ ३८	८ ५८	११ १६	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०८	२२ ३१	० ०३	१ ५८	४ १२
	६	२२	६ ३४	८ ५४	११ १२	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २७	० ००	१ ५४	४ ०८
	७	२३	६ ३१	८ ५१	११ ०८	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५५	१९ ३५	२१ ०१	२२ २३	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
अगस्त	८	२४	६ २७	८ ४७	११ ०४	१३ २६	१५ ४६	१७ ५१	१९ ३२	२० ५७	२२ १९	२३ ५२	१ ४६	४ ००
	९	२५	६ २३	८ ४३	११ ००	१३ २२	१५ ४२	१७ ४७	१९ २८	२० ५३	२२ १५	२३ ४८	१ ४२	३ ५७
	१०	२६	६ १९	८ ३९	१० ५६	१३ १८	१५ ३८	१७ ४३	१९ २४	२० ४९	२२ ११	२३ ४४	१ ३८	३ ५३
	११	२७	६ १५	८ ३५	१० ५३	१३ १४	१५ ३४	१७ ३९	१९ २०	२० ४५	२२ ०७	२३ ४०	१ ३४	३ ४९
	१२	२८	६ ११	८ ३१	१० ४९	१३ १०	१५ ३०	१७ ३५	१९ १६	२० ४१	२२ ०३	२३ ३६	१ ३१	३ ४५
	१३	२९	६ ०७	८ २७	१० ४५	१३ ०६	१५ २६	१७ ३१	१९ १२	२० ३७	२१ ५९	२३ ३२	१ २७	३ ४१
	१४	३०	६ ०३	८ २३	१० ४१	१३ ०२	१५ २२	१७ २७	१९ ०८	२० ३३	२१ ५५	२३ २८	१ २३	३ ३७
	१५	२	५ ५९	८ १९	१० ३७	१२ ५८	१५ १८	१७ २३	१९ ०४	२० २९	२१ ५१	२३ २४	१ १९	३ ३३
	१६	भा.१	५ ५५											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

भाद्रपद

अंग्रेज़ी तारीख		भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
अगस्त	१६	१	८ १५	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ १९	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
	१७	२	८ ११	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १५	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
	१८	३	८ ०७	१० २५	१२ ४७	१५ ०७	१७ ११	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
	१९	४	८ ०३	१० २१	१२ ४३	१५ ०३	१७ ०७	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
	२०	५	७ ५९	१० १७	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०३	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३६
	२१	६	७ ५६	१० १३	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३२
	२२	७	७ ५२	१० ०९	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५६	१८ ३६	२० ०२	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २८
	२३	८	७ ४८	१० ०५	१२ २७	१४ ४७	१६ ५२	१८ ३३	१९ ५८	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०२	५ २४
	२४	९	७ ४४	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४८	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४३	२ ५८	५ २०
	२५	१०	७ ४०	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४४	१८ २५	१९ ५०	२१ १२	२२ ४५	० ३९	२ ५४	५ १६
	२६	११	७ ३६	९ ५४	१२ १५	१४ ३५	१६ ४०	१८ २१	१९ ४६	२१ ०८	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
	२७	१२	७ ३२	९ ५०	१२ ११	१४ ३१	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०४	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
	२८	१३	७ २८	९ ४६	१२ ०७	१४ २७	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ००	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
	२९	१४	७ २४	९ ४२	१२ ०३	१४ २३	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५६	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
	३०	१५	७ २०	९ ३८	११ ५९	१४ १९	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५२	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
	३१	१६	७ १६	९ ३४	११ ५५	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितम्बर	१	१७	७ १२	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
	२	१८	७ ०८	९ २६	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
	३	१९	७ ०४	९ २२	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ ०९	० ०४	२ १८	४ ४०
	४	२०	७ ००	९ १८	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३७
	५	२१	६ ५७	९ १४	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३३
	६	२२	६ ५३	९ १०	११ ३२	१३ ५२	१५ ५७	१७ ३८	१९ ०३	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २९
	७	२३	६ ४९	९ ०६	११ २८	१३ ४८	१५ ५३	१७ ३४	१८ ५९	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०३	४ २५
	८	२४	६ ४५	९ ०२	११ २४	१३ ४४	१५ ४९	१७ ३०	१८ ५५	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५९	४ २१
	९	२५	६ ४१	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४५	१७ २६	१८ ५१	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५५	४ १७
	१०	२६	६ ३७	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४१	१७ २२	१८ ४७	२० ०९	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १३
	११	२७	६ ३३	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३७	१७ १८	१८ ४३	२० ०५	२१ ३८	२३ ३३	१ ४७	४ ०९
	१२	२८	६ २९	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३३	१७ १४	१८ ३९	२० ०१	२१ ३४	२३ २९	१ ४३	४ ०५
	१३	२९	६ २५	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २९	१७ १०	१८ ३५	१९ ५७	२१ ३०	२३ २५	१ ३९	४ ०१
	१४	३०	६ २१	८ ३९	११ ००	१३ २१	१५ २५	१७ ०६	१८ ३१	१९ ५४	२१ २६	२३ २१	१ ३५	३ ५७
	१५	३१	६ १७	८ ३५	१० ५६	१३ १७	१५ २१	१७ ०२	१८ २७	१९ ५०	२१ २२	२३ १७	१ ३१	३ ५३
	१६	आ.१	६ १३											

आश्विन

अंग्रेज़ी तारीख		आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
सितम्बर	१६	१	८ ३१	१० ५३	१३ १३	१५ १७	१६ ५८	१८ २३	१९ ४६	२१ १८	२३ १३	१ २७	३ ४९	६ ०९
	१७	२	८ २७	१० ४९	१३ ०९	१५ १३	१६ ५४	१८ १९	१९ ४२	२१ १४	२३ ०९	१ २३	३ ४५	६ ०५
	१८	३	८ २३	१० ४५	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५०	१८ १५	१९ ३८	२१ १०	२३ ०५	१ १९	३ ४२	६ ०१
	१९	४	८ १९	१० ४१	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४६	१८ ११	१९ ३४	२१ ०७	२३ ०१	१ १५	३ ३८	५ ५८
	२०	५	८ १५	१० ३७	१२ ५७	१५ ०२	१६ ४२	१८ ०८	१९ ३०	२१ ०३	२२ ५७	१ ११	३ ३४	५ ५४
	२१	६	८ ११	१० ३३	१२ ५३	१४ ५८	१६ ३९	१८ ०४	१९ २६	२० ५९	२२ ५३	१ ०७	३ ३०	५ ५०
	२२	७	८ ०७	१० २९	१२ ४९	१४ ५४	१६ ३५	१८ ००	१९ २२	२० ५५	२२ ४९	१ ०४	३ २६	५ ४६
	२३	८	८ ०३	१० २५	१२ ४५	१४ ५०	१६ ३१	१७ ५६	१९ १८	२० ५१	२२ ४५	१ ००	३ २२	५ ४२
	२४	९	८ ००	१० २१	१२ ४१	१४ ४६	१६ २७	१७ ५२	१९ १४	२० ४७	२२ ४१	० ५६	३ १८	५ ३८
	२५	१०	७ ५६	१० १७	१२ ३७	१४ ४२	१६ २३	१७ ४८	१९ १०	२० ४३	२२ ३८	० ५२	३ १४	५ ३४
	२६	११	७ ५२	१० १३	१२ ३३	१४ ३८	१६ १९	१७ ४४	१९ ०६	२० ३९	२२ ३४	० ४८	३ १०	५ ३०
	२७	१२	७ ४८	१० ०९	१२ २९	१४ ३४	१६ १५	१७ ४०	१९ ०२	२० ३५	२२ ३०	० ४४	३ ०६	५ २६
	२८	१३	७ ४४	१० ०५	१२ २५	१४ ३०	१६ ११	१७ ३६	१८ ५८	२० ३१	२२ २६	० ४०	३ ०२	५ २२
	२९	१४	७ ४०	१० ०१	१२ २२	१४ २६	१६ ०७	१७ ३२	१८ ५५	२० २७	२२ २२	० ३६	२ ५८	५ १८
	३०	१५	७ ३६	९ ५७	१२ १८	१४ २२	१६ ०३	१७ २८	१८ ५१	२० २३	२२ १८	० ३२	२ ५४	५ १४
अक्तूबर	१	१६	७ ३२	९ ५४	१२ १४	१४ १८	१५ ५९	१७ २४	१८ ४७	२० १९	२२ १४	० २८	२ ५०	५ १०
	२	१७	७ २८	९ ५०	१२ १०	१४ १४	१५ ५५	१७ २०	१८ ४३	२० १५	२२ १०	० २४	२ ४६	५ ०६
	३	१८	७ २४	९ ४६	१२ ०६	१४ १०	१५ ५१	१७ १६	१८ ३९	२० ११	२२ ०६	० २०	२ ४३	५ ०३
	४	१९	७ २०	९ ४२	१२ ०२	१४ ०६	१५ ४७	१७ १२	१८ ३५	२० ०८	२२ ०२	० १६	२ ३९	४ ५९
	५	२०	७ १६	९ ३८	११ ५८	१४ ०३	१५ ४३	१७ ०९	१८ ३१	२० ०४	२१ ५८	० १२	२ ३५	४ ५५
	६	२१	७ १२	९ ३४	११ ५४	१३ ५९	१५ ४०	१७ ०५	१८ २७	२० ००	२१ ५४	० ०८	२ ३१	४ ५१
	७	२२	७ ०८	९ ३०	११ ५०	१३ ५५	१५ ३६	१७ ०१	१८ २३	१९ ५६	२१ ५०	० ०५	२ २७	४ ४७
	८	२३	७ ०५	९ २६	११ ४६	१३ ५१	१५ ३२	१६ ५७	१८ १९	१९ ५२	२१ ४६	० ०१	२ २३	४ ४३
	९	२४	७ ०१	९ २२	११ ४२	१३ ४७	१५ २८	१६ ५३	१८ १५	१९ ४८	२१ ४३	२३ ५७	२ १९	४ ३९
	१०	२५	६ ५७	९ १८	११ ३८	१३ ४३	१५ २४	१६ ४९	१८ ११	१९ ४४	२१ ३९	२३ ५३	२ १५	४ ३५
	११	२६	६ ५३	९ १४	११ ३४	१३ ३९	१५ २०	१६ ४५	१८ ०७	१९ ४०	२१ ३५	२३ ४९	२ ११	४ ३१
	१२	२७	६ ४९	९ १०	११ ३०	१३ ३५	१५ १६	१६ ४१	१८ ०३	१९ ३६	२१ ३१	२३ ४५	२ ०७	४ २७
	१३	२८	६ ४५	९ ०६	११ २६	१३ ३१	१५ १२	१६ ३७	१७ ५९	१९ ३२	२१ २७	२३ ४१	२ ०३	४ २३
	१४	२९	६ ४१	९ ०२	११ २३	१३ २७	१५ ०८	१६ ३३	१७ ५६	१९ २८	२१ २३	२३ ३७	१ ५९	४ १९
	१५	३०	६ ३७	८ ५९	११ १९	१३ २३	१५ ०४	१६ २९	१७ ५२	१९ २४	२१ १९	२३ ३३	१ ५५	४ १५
	१६	का.१	६ ३३											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

मास	अंग्रेज़ी तारीख	कार्तिक प्रविष्टे	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.
अक्तूबर	१६	१	८ ५५	११ १५	१३ १९	१५ ००	१६ २५	१७ ४८	१९ २०	२१ १५	२३ २९	१ ५१	४ ११	६ २९
	१७	२	८ ५१	११ ११	१३ १५	१४ ५६	१६ २१	१७ ४४	१९ १६	२१ ११	२३ २५	१ ४७	४ ०७	६ २५
	१८	३	८ ४७	११ ०७	१३ ११	१४ ५२	१६ १७	१७ ४०	१९ १३	२१ ०७	२३ २१	१ ४४	४ ०४	६ २१
	१९	४	८ ४३	११ ०३	१३ ०८	१४ ४८	१६ १४	१७ ३६	१९ ०९	२१ ०३	२३ १७	१ ४०	४ ००	६ १७
	२०	५	८ ३९	१० ५९	१३ ०४	१४ ४५	१६ १०	१७ ३२	१९ ०५	२० ५९	२३ १३	१ ३६	३ ५६	६ १३
	२१	६	८ ३५	१० ५५	१३ ००	१४ ४१	१६ ०६	१७ २८	१९ ०१	२० ५५	२३ ०९	१ ३२	३ ५२	६ ०९
	२२	७	८ ३१	१० ५१	१२ ५६	१४ ३७	१६ ०२	१७ २४	१८ ५७	२० ५१	२३ ०६	१ २८	३ ४८	६ ०६
	२३	८	८ २७	१० ४७	१२ ५२	१४ ३३	१५ ५८	१७ २०	१८ ५३	२० ४७	२३ ०२	१ २४	३ ४४	६ ०२
	२४	९	८ २३	१० ४३	१२ ४८	१४ २९	१५ ५४	१७ १६	१८ ४९	२० ४४	२२ ५८	१ २०	३ ४०	५ ५८
	२५	१०	८ १९	१० ३९	१२ ४४	१४ २५	१५ ५०	१७ १२	१८ ४५	२० ४०	२२ ५४	१ १६	३ ३६	५ ५४
	२६	११	८ १५	१० ३५	१२ ४०	१४ २१	१५ ४६	१७ ०८	१८ ४१	२० ३६	२२ ५०	१ १२	३ ३२	५ ५०
	२७	१२	८ ११	१० ३१	१२ ३६	१४ १७	१५ ४२	१७ ०४	१८ ३७	२० ३२	२२ ४६	१ ०८	३ २८	५ ४६
	२८	१३	८ ०७	१० २८	१२ ३२	१४ १३	१५ ३८	१७ ०१	१८ ३३	२० २८	२२ ४२	१ ०४	३ २४	५ ४२
	२९	१४	८ ०३	१० २४	१२ २८	१४ ०९	१५ ३४	१६ ५७	१८ २९	२० २४	२२ ३८	१ ००	३ २०	५ ३८
	३०	१५	८ ००	१० २०	१२ २४	१४ ०५	१५ ३०	१६ ५३	१८ २५	२० २०	२२ ३४	० ५६	३ १६	५ ३४
	३१	१६	७ ५६	१० १६	१२ २०	१४ ०१	१५ २६	१६ ४९	१८ २१	२० १६	२२ ३०	० ५२	३ १२	५ ३०
नवम्बर	१	१७	७ ५२	१० १२	१२ १६	१३ ५७	१५ २२	१६ ४५	१८ १७	२० १२	२२ २६	० ४८	३ ०९	५ २६
	२	१८	७ ४८	१० ०८	१२ १२	१३ ५३	१५ १८	१६ ४१	१८ १३	२० ०८	२२ २२	० ४५	३ ०५	५ २२
	३	१९	७ ४४	१० ०४	१२ ०९	१३ ४९	१५ १५	१६ ३७	१८ ०९	२० ०४	२२ १८	० ४१	३ ०१	५ १८
	४	२०	७ ४०	१० ००	१२ ०५	१३ ४६	१५ ११	१६ ३३	१८ ०६	२० ००	२२ १५	० ३७	२ ५७	५ १४
	५	२१	७ ३६	९ ५६	१२ ०१	१३ ४२	१५ ०७	१६ २९	१८ ०२	१९ ५६	२२ ११	० ३३	२ ५३	५ १०
	६	२२	७ ३२	९ ५२	११ ५७	१३ ३८	१५ ०३	१६ २५	१७ ५८	१९ ५२	२२ ०७	० २९	२ ४९	५ ०७
	७	२३	७ २८	९ ४८	११ ५३	१३ ३४	१४ ५९	१६ २१	१७ ५४	१९ ४९	२२ ०३	० २५	२ ४५	५ ०३
	८	२४	७ २४	९ ४४	११ ४९	१३ ३०	१४ ५५	१६ १७	१७ ५०	१९ ४५	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ५९
	९	२५	७ २०	९ ४०	११ ४५	१३ २६	१४ ५१	१६ १३	१७ ४६	१९ ४१	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ५५
	१०	२६	७ १६	९ ३६	११ ४१	१३ २२	१४ ४७	१६ ०९	१७ ४२	१९ ३७	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ५१
	११	२७	७ १२	९ ३२	११ ३७	१३ १८	१४ ४३	१६ ०५	१७ ३८	१९ ३३	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ४७
	१२	२८	७ ०८	९ २९	११ ३३	१३ १४	१४ ३९	१६ ०२	१७ ३४	१९ २९	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ ४३
	१३	२९	७ ०५	९ २५	११ २९	१३ १०	१४ ३५	१५ ५८	१७ ३०	१९ २५	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ ३९
	१४	३०	७ ०१	९ २१	११ २५	१३ ०६	१४ ३१	१५ ५४	१७ २६	१९ २१	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ ३५
	१५	मा. १	६ ५७											

मास	अंग्रेज़ी तारीख	मार्गशीर्ष प्रविष्टे	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.
नवम्बर	१५	१	९ १७	११ २१	१३ ०२	१४ २७	१५ ५०	१७ २२	१९ १७	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ ३१	[illegible]
	१६	२	९ १३	११ १७	१२ ५८	१४ २३	१५ ४६	१७ १८	१९ १३	२१ २७	२३ ५०	२ १०	४ २७	[illegible]
	१७	३	९ ०९	११ १३	१२ ५४	१४ १९	१५ ४२	१७ १५	१९ ०९	२१ २३	२३ ४६	२ ०६	४ २३	[illegible]
	१८	४	९ ०५	११ १०	१२ ५०	१४ १६	१५ ३८	१७ ११	१९ ०५	२१ १९	२३ ४२	२ ०२	४ १९	[illegible]
	१९	५	९ ०१	११ ०६	१२ ४७	१४ १२	१५ ३४	१७ ०७	१९ ०१	२१ १६	२३ ३८	१ ५८	४ १५	[illegible]
	२०	६	८ ५७	११ ०२	१२ ४३	१४ ०८	१५ ३०	१७ ०३	१८ ५७	२१ १२	२३ ३४	१ ५४	४ १२	[illegible]
	२१	७	८ ५३	१० ५८	१२ ३९	१४ ०४	१५ २६	१६ ५९	१८ ५३	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	४ ०८	[illegible]
	२२	८	८ ४९	१० ५४	१२ ३५	१४ ००	१५ २२	१६ ५५	१८ ५०	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	४ ०४	[illegible]
	२३	९	८ ४५	१० ५०	१२ ३१	१३ ५६	१५ १८	१६ ५१	१८ ४६	२१ ००	२३ २२	१ ४२	४ ००	[illegible]
	२४	१०	८ ४१	१० ४६	१२ २७	१३ ५२	१५ १४	१६ ४७	१८ ४२	२० ५६	२३ १८	१ ३८	३ ५६	[illegible]
	२५	११	८ ३७	१० ४२	१२ २३	१३ ४८	१५ १०	१६ ४३	१८ ३८	२० ५२	२३ १४	१ ३४	३ ५२	६ १३
	२६	१२	८ ३३	१० ३८	१२ १९	१३ ४४	१५ ०७	१६ ३९	१८ ३४	२० ४८	२३ १०	१ ३०	३ ४८	६ ०९
	२७	१३	८ ३०	१० ३४	१२ १५	१३ ४०	१५ ०३	१६ ३५	१८ ३०	२० ४४	२३ ०६	१ २६	३ ४४	६ ०६
	२८	१४	८ २६	१० ३०	१२ ११	१३ ३६	१४ ५९	१६ ३१	१८ २६	२० ४०	२३ ०२	१ २२	३ ४०	६ ०२
	२९	१५	८ २२	१० २६	१२ ०७	१३ ३२	१४ ५५	१६ २७	१८ २२	२० ३६	२२ ५८	१ १८	३ ३६	५ ५८
	३०	१६	८ १८	१० २२	१२ ०३	१३ २८	१४ ५१	१६ २३	१८ १८	२० ३२	२२ ५४	१ १४	३ ३२	५ ५४
दिसम्बर	१	१७	८ १४	१० १८	११ ५९	१३ २४	१४ ४७	१६ २०	१८ १४	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ २८	५ ५०
	२	१८	८ १०	१० १५	११ ५५	१३ २१	१४ ४३	१६ १६	१८ १०	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ २४	५ ४६
	३	१९	८ ०६	१० ११	११ ५२	१३ १७	१४ ३९	१६ १२	१८ ०६	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ २०	५ ४२
	४	२०	८ ०२	१० ०७	११ ४८	१३ १३	१४ ३५	१६ ०८	१८ ०२	२० १७	२२ ३९	० ५९	३ १६	५ ३८
	५	२१	७ ५८	१० ०३	११ ४४	१३ ०९	१४ ३१	१६ ०४	१७ ५८	२० १३	२२ ३५	० ५५	३ १३	५ ३४
	६	२२	७ ५४	९ ५९	११ ४०	१३ ०५	१४ २७	१६ ००	१७ ५४	२० ०९	२२ ३१	० ५१	३ ०९	५ ३०
	७	२३	७ ५०	९ ५५	११ ३६	१३ ०१	१४ २३	१५ ५६	१७ ५१	२० ०५	२२ २७	० ४७	३ ०५	५ २६
	८	२४	७ ४६	९ ५१	११ ३२	१२ ५७	१४ १९	१५ ५२	१७ ४७	२० ०१	२२ २३	० ४३	३ ०१	५ २२
	९	२५	७ ४२	९ ४७	११ २८	१२ ५३	१४ १५	१५ ४८	१७ ४३	१९ ५७	२२ १९	० ३९	२ ५७	५ १८
	१०	२६	७ ३८	९ ४३	११ २४	१२ ४९	१४ ११	१५ ४४	१७ ३९	१९ ५३	२२ १५	० ३५	२ ५३	५ १४
	११	२७	७ ३५	९ ३९	११ २०	१२ ४५	१४ ०८	१५ ४०	१७ ३५	१९ ४९	२२ ११	० ३१	२ ४९	५ १०
	१२	२८	७ ३१	९ ३५	११ १६	१२ ४१	१४ ०४	१५ ३६	१७ ३१	१९ ४५	२२ ०७	० २७	२ ४५	५ ०७
	१३	२९	७ २७	९ ३१	११ १२	१२ ३७	१४ ००	१५ ३२	१७ २७	१९ ४१	२२ ०३	० २३	२ ४१	५ ०३
	१४	३०	७ २३	९ २७	११ ०८	१२ ३३	१३ ५६	१५ २८	१७ २३	१९ ३७	२१ ५९	० १९	२ ३७	४ ५९
	१५	पौ. १	७ १९											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टैं.टा.]

अंग्रेज़ी तारीख		पौष प्रविष्टे	पौष											
			धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
दिसम्बर	१५	१	९ २३	११ ४	१२ २९	१३ ५२	१५ २४	१७ १९	१९ ३३	२१ ५६	० १६	२ ३३	४ ५५	७ १५
	१६	२	९ १९	११ ००	१२ २५	१३ ४८	१५ २१	१७ १५	१९ २९	२१ ५२	० १२	२ २९	४ ५१	७ ११
	१७	३	९ १६	१० ५६	१२ २२	१३ ४४	१५ १७	१७ ११	१९ २५	२१ ४८	० ०८	२ २५	४ ४७	७ ०७
	१८	४	९ १२	१० ५३	१२ १८	१३ ४०	१५ १३	१७ ०७	१९ २२	२१ ४४	० ०४	२ २१	४ ४३	७ ०३
	१९	५	९ ०८	१० ४९	१२ १४	१३ ३६	१५ ०९	१७ ०३	१९ १८	२१ ४०	० ००	२ १७	४ ३९	६ ५९
	२०	६	९ ०४	१० ४५	१२ १०	१३ ३२	१५ ०५	१६ ५९	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ १४	४ ३५	६ ५५
	२१	७	९ ००	१० ४१	१२ ०६	१३ २८	१५ ०१	१६ ५६	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	२ १०	४ ३१	६ ५१
	२२	८	८ ५६	१० ३७	१२ ०२	१३ २४	१४ ५७	१६ ५२	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	२ ०६	४ २७	६ ४७
	२३	९	८ ५२	१० ३३	११ ५८	१३ २०	१४ ५३	१६ ४८	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	२ ०२	४ २३	६ ४३
	२४	१०	८ ४८	१० २९	११ ५४	१३ १६	१४ ४९	१६ ४४	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ५८	४ १९	६ ३९
	२५	११	८ ४४	१० २५	११ ५०	१३ १२	१४ ४५	१६ ४०	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ५४	४ १५	६ ३६
	२६	१२	८ ४०	१० २१	११ ४६	१३ ०९	१४ ४१	१६ ३६	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ५०	४ १२	६ ३२
	२७	१३	८ ३६	१० १७	११ ४२	१३ ०५	१४ ३७	१६ ३२	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ४६	४ ०८	६ २८
	२८	१४	८ ३२	१० १३	११ ३८	१३ ०१	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ ४२	४ ०४	६ २४
	२९	१५	८ २८	१० ०९	११ ३४	१२ ५७	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ ३८	४ ००	६ २०
	३०	१६	८ २४	१० ०५	११ ३०	१२ ५३	१४ २६	१६ २०	१८ ३४	२० ५७	२३ १७	१ ३४	३ ५६	६ १६
	३१	१७	८ २०	१० ०१	११ २६	१२ ४९	१४ २२	१६ १६	१८ ३०	२० ५३	२३ १३	१ ३०	३ ५२	६ १२
जनवरी	१	१८	८ १६	९ ५७	११ २२	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २६	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ ४७	६ ०७
	२	१९	८ १२	९ ५३	११ १८	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २२	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ ४३	६ ०३
	३	२०	८ ०८	९ ४९	११ १४	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १८	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ ३९	५ ५९
	४	२१	८ ०४	९ ४५	११ १०	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १४	२० ३६	२२ ५६	१ १४	३ ३५	५ ५५
	५	२२	८ ००	९ ४१	११ ०६	१२ २८	१४ ०१	१५ ५६	१८ १०	२० ३२	२२ ५२	१ १०	३ ३१	५ ५१
	६	२३	७ ५६	९ ३७	११ ०२	१२ २४	१३ ५७	१५ ५२	१८ ०६	२० २८	२२ ४८	१ ०६	३ २७	५ ४७
	७	२४	७ ५२	९ ३३	१० ५८	१२ २०	१३ ५३	१५ ४८	१८ ०२	२० २४	२२ ४४	१ ०२	३ २३	५ ४३
	८	२५	७ ४८	९ २९	१० ५४	१२ १६	१३ ४९	१५ ४४	१७ ५८	२० २०	२२ ४०	० ५८	३ १९	५ ३९
	९	२६	७ ४४	९ २५	१० ५०	१२ १३	१३ ४५	१५ ४०	१७ ५४	२० १६	२२ ३६	० ५४	३ १५	५ ३६
	१०	२७	७ ४०	९ २१	१० ४६	१२ ०९	१३ ४१	१५ ३६	१७ ५०	२० १२	२२ ३२	० ५०	३ १२	५ ३२
	११	२८	७ ३६	९ १७	१० ४२	१२ ०५	१३ ३७	१५ ३२	१७ ४६	२० ०८	२२ २८	० ४६	३ ०८	५ २८
	१२	२९	७ ३२	९ १३	१० ३८	१२ ०१	१३ ३३	१५ २८	१७ ४२	२० ०४	२२ २४	० ४२	३ ०४	५ २४
	१३	मा.१	७ २८											

अंग्रेज़ी तारीख		माघ प्रविष्टे	माघ											
			मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
जनवरी	१३	१	९ ०९	१० ३४	११ ५७	१३ २९	१५ २४	१७ ३८	२० ००	२२ २०	० ३८	३ ००	५ २०	७ २४
	१४	२	९ ०५	१० ३०	११ ५३	१३ २६	१५ २०	१७ ३४	१९ ५७	२२ १७	० ३४	२ ५६	५ १६	७ २०
	१५	३	९ ०१	१० २७	११ ४९	१३ २२	१५ १६	१७ ३०	१९ ५३	२२ १३	० ३०	२ ५२	५ १२	७ १७
	१६	४	८ ५८	१० २३	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २६	१९ ४९	२२ ०९	० २६	२ ४८	५ ०८	७ १३
	१७	५	८ ५४	१० १९	११ ४१	१३ १४	१५ ०८	१७ २३	१९ ४५	२२ ०५	० २२	२ ४४	५ ०४	७ ०९
	१८	६	८ ५०	१० १५	११ ३७	१३ १०	१५ ०४	१७ १९	१९ ४१	२२ ०१	० १९	२ ४०	५ ००	७ ०५
	१९	७	८ ४६	१० ११	११ ३३	१३ ०६	१५ ०१	१७ १५	१९ ३७	२१ ५७	० १५	२ ३६	४ ५६	७ ०१
	२०	८	८ ४२	१० ०७	११ २९	१३ ०२	१४ ५७	१७ ११	१९ ३३	२१ ५३	० ११	२ ३२	४ ५२	६ ५७
	२१	९	८ ३८	१० ०३	११ २५	१२ ५८	१४ ५३	१७ ०७	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ २८	४ ४८	६ ५३
	२२	१०	८ ३४	९ ५९	११ २१	१२ ५४	१४ ४९	१७ ०३	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ २४	४ ४४	६ ४९
	२३	११	८ ३०	९ ५५	११ १७	१२ ५०	१४ ४५	१६ ५९	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ २०	४ ४१	६ ४५
	२४	१२	८ २६	९ ५१	११ १४	१२ ४६	१४ ४१	१६ ५५	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	२ १६	४ ३७	६ ४१
	२५	१३	८ २२	९ ४७	११ १०	१२ ४२	१४ ३७	१६ ५१	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	२ १३	४ ३३	६ ३७
	२६	१४	८ १८	९ ४३	११ ०६	१२ ३८	१४ ३३	१६ ४७	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	२ ०९	४ २९	६ ३३
	२७	१५	८ १४	९ ३९	११ ०२	१२ ३४	१४ २९	१६ ४३	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	२ ०५	४ २५	६ २९
	२८	१६	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३०	१४ २५	१६ ३९	१९ ०२	२१-२२	२३ ३९	२ ०१	४ २१	६ २५
	२९	१७	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १८	२३ ३५	१ ५७	४ १७	६ २२
	३०	१८	८ ०२	९ २८	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १४	२३ ३१	१ ५३	४ १३	६ १८
	३१	१९	७ ५९	९ २४	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २८	१८ ५०	२१ १०	२३ २७	१ ४९	४ ०९	६ १४
फरवरी	१	२०	७ ५५	९ २०	१० ४२	१२ १५	१४ ०९	१६ २४	१८ ४६	२१ ०६	२३ २३	१ ४५	४ ०५	६ १०
	२	२१	७ ५१	९ १६	१० ३८	१२ ११	१४ ०५	१६ २०	१८ ४२	२१ ०२	२३ २०	१ ४१	४ ०१	६ ०६
	३	२२	७ ४७	९ १२	१० ३४	१२ ०७	१४ ०२	१६ १६	१८ ३८	२० ५८	२३ १६	१ ३७	३ ५७	६ ०२
	४	२३	७ ४३	९ ०८	१० ३०	१२ ०३	१३ ५८	१६ १२	१८ ३४	२० ५४	२३ १२	१ ३३	३ ५३	५ ५८
	५	२४	७ ३९	९ ०४	१० २६	११ ५९	१३ ५४	१६ ०८	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २९	३ ४९	५ ५४
	६	२५	७ ३५	९ ००	१० २२	११ ५५	१३ ५०	१६ ०४	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २५	३ ४५	५ ५०
	७	२६	७ ३१	८ ५६	१० १९	११ ५१	१३ ४६	१६ ००	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ २१	३ ४२	५ ४६
	८	२७	७ २७	८ ५२	१० १५	११ ४७	१३ ४२	१५ ५६	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३८	५ ४२
	९	२८	७ २३	८ ४८	१० ११	११ ४३	१३ ३८	१५ ५२	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ १४	३ ३४	५ ३८
	१०	२९	७ १९	८ ४४	१० ०७	११ ३९	१३ ३४	१५ ४८	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ १०	३ ३०	५ ३४
	११	३०	७ १५	८ ४०	१० ०३	११ ३५	१३ ३०	१५ ४४	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ०६	३ २६	५ ३०
	१२	फा.१	७ ११											

दैनिक लग्नसारणी, चण्डीगढ़ (U.T.) में लग्नों का समाप्तिकाल [भा.स्टै.टा.]

फाल्गुन

अंग्रेज़ी तारीख		फाल्गुन प्रविष्टे	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
फरवरी	१२	१	८ ३६	९ ५९	११ ३२	१३ २६	१५ ४०	१८ ०३	२० २३	२२ ४०	१ ०२	३ २२	५ २६	७ ०७
	१३	२	८ ३३	९ ५५	११ २८	१३ २२	१५ ३६	१७ ५९	२० १९	२२ ३६	० ५८	३ १८	५ २३	७ ०४
	१४	३	८ २९	९ ५१	११ २४	१३ १८	१५ ३२	१७ ५५	२० १५	२२ ३२	० ५४	३ १४	५ १९	७ ००
	१५	४	८ २५	९ ४७	११ २०	१३ १४	१५ २९	१७ ५१	२० ११	२२ २८	० ५०	३ १०	५ १५	६ ५६
	१६	५	८ २१	९ ४३	११ १६	१३ १०	१५ २५	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४६	३ ०६	५ ११	६ ५२
	१७	६	८ १७	९ ३९	११ १२	१३ ०६	१५ २१	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ४२	३ ०२	५ ०७	६ ४८
	१८	७	८ १३	९ ३५	११ ०८	१३ ०३	१५ १७	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३८	२ ५८	५ ०३	६ ४४
	१९	८	८ ०९	९ ३१	११ ०४	१२ ५९	१५ १३	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० ३४	२ ५४	४ ५९	६ ४०
	२०	९	८ ०५	९ २७	११ ००	१२ ५५	१५ ०९	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० ३०	२ ५०	४ ५५	६ ३६
	२१	१०	८ ०१	९ २३	१० ५६	१२ ५१	१५ ०५	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २६	२ ४६	४ ५१	६ ३२
	२२	११	७ ५७	९ २०	१० ५२	१२ ४७	१५ ०१	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० २२	२ ४३	४ ४७	६ २८
	२३	१२	७ ५३	९ १६	१० ४८	१२ ४३	१४ ५७	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १९	२ ३९	४ ४३	६ २४
	२४	१३	७ ४९	९ १२	१० ४४	१२ ३९	१४ ५३	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० १५	२ ३५	४ ३९	६ २०
	२५	१४	७ ४५	९ ०८	१० ४०	१२ ३५	१४ ४९	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ११	२ ३१	४ ३५	६ १६
	२६	१५	७ ४१	९ ०४	१० ३६	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०७	२ २७	४ ३१	६ १२
	२७	१६	७ ३७	९ ००	१० ३३	१२ २७	१४ ४१	१७ ०४	१९ २४	२१ ४२	० ०३	२ २३	४ २८	६ ०८
	२८	१७	७ ३४	८ ५६	१० २९	१२ २३	१४ ३७	१७ ००	१९ २०	२१ ३७	२३ ५९	२ १९	४ २४	६ ०५
मार्च	१	१८	७ ३०	८ ५२	१० २५	१२ १९	१४ ३३	१६ ५६	१९ १६	२१ ३३	२३ ५५	२ १५	४ २०	६ ०१
	२	१९	७ २६	८ ४८	१० २१	१२ १५	१४ ३०	१६ ५२	१९ १२	२१ २९	२३ ५१	२ ११	४ १६	५ ५७
	३	२०	७ २२	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २६	१६ ४८	१९ ०८	२१ २६	२३ ४७	२ ०७	४ १२	५ ५३
	४	२१	७ १८	८ ४०	१० १३	१२ ०८	१४ २२	१६ ४४	१९ ०४	२१ २२	२३ ४३	२ ०३	४ ०८	५ ४९
	५	२२	७ १४	८ ३६	१० ०९	१२ ०४	१४ १८	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३९	१ ५९	४ ०४	५ ४५
	६	२३	७ १०	८ ३२	१० ०५	१२ ००	१४ १४	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३५	१ ५५	४ ००	५ ४१
	७	२४	७ ०६	८ २८	१० ०१	११ ५६	१४ १०	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ ३१	१ ५१	३ ५६	५ ३७
	८	२५	७ ०२	८ २४	९ ५७	११ ५२	१४ ०६	१६ २८	१८ ४८	२१ ०६	२३ २७	१ ४८	३ ५२	५ ३३
	९	२६	६ ५८	८ २१	९ ५३	११ ४८	१४ ०२	१६ २४	१८ ४४	२१ ०२	२३ २३	१ ४४	३ ४८	५ २९
	१०	२७	६ ५४	८ १७	९ ४९	११ ४४	१३ ५८	१६ २०	१८ ४०	२० ५८	२३ २०	१ ४०	३ ४४	५ २५
	११	२८	६ ५०	८ १३	९ ४५	११ ४०	१३ ५४	१६ १६	१८ ३६	२० ५४	२३ १६	१ ३६	३ ४०	५ २१
	१२	२९	६ ४६	८ ०९	९ ४१	११ ३६	१३ ५०	१६ १२	१८ ३२	२० ५०	२३ १२	१ ३२	३ ३६	५ १७
	१३	३०	६ ४२	८ ०५	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०९	१८ २९	२० ४६	२३ ०८	१ २८	३ ३२	५ १३
	१४	चै.१	६ ३८											

चैत्र

अंग्रेज़ी तारीख		चैत्र प्रविष्टे	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
			घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
मार्च	१४	१	८ ०१	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०५	१८ २५	२० ४२	२३ ०४	१ २४	३ २९	५ ०९	६ ३५
	१५	२	७ ५७	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१६ ०१	१८ २१	२० ३८	२३ ००	१ २०	३ २५	५ ०६	६ ३१
	१६	३	७ ५३	९ २६	११ २०	१३ ३५	१५ ५७	१८ १७	२० ३४	२२ ५६	१ १६	३ २१	५ ०२	६ २७
	१७	४	७ ४९	९ २२	११ १६	१३ ३१	१५ ५३	१८ १३	२० ३०	२२ ५२	१ १२	३ १७	४ ५८	६ २३
	१८	५	७ ४५	९ १८	११ १२	१३ २७	१५ ४९	१८ ०९	२० २७	२२ ४८	१ ०८	३ १३	४ ५४	६ १९
	१९	६	७ ४१	९ १४	११ ०९	१३ २३	१५ ४५	१८ ०५	२० २३	२२ ४४	१ ०४	३ ०९	४ ५०	६ १५
	२०	७	७ ३७	९ १०	११ ०५	१३ १९	१५ ४१	१८ ०१	२० १९	२२ ४०	१ ००	३ ०५	४ ४६	६ ११
	२१	८	७ ३३	९ ०६	११ ०१	१३ १५	१५ ३७	१७ ५७	२० १५	२२ ३६	० ५६	३ ०१	४ ४२	६ ०७
	२२	९	७ २९	९ ०२	१० ५७	१३ ११	१५ ३३	१७ ५३	२० ११	२२ ३२	० ५२	२ ५७	४ ३८	६ ०३
	२३	१०	७ २५	८ ५८	१० ५३	१३ ०७	१५ २९	१७ ४९	२० ०७	२२ २८	० ४९	२ ५३	४ ३४	५ ५९
	२४	११	७ २२	८ ५४	१० ४९	१३ ०३	१५ २५	१७ ४५	२० ०३	२२ २५	० ४५	२ ४९	४ ३०	५ ५५
	२५	१२	७ १८	८ ५०	१० ४५	१२ ५९	१५ २१	१७ ४१	१९ ५९	२२ २१	० ४१	२ ४५	४ २६	५ ५१
	२६	१३	७ १४	८ ४६	१० ४१	१२ ५५	१५ १७	१७ ३७	१९ ५५	२२ १७	० ३७	२ ४१	४ २२	५ ४७
	२७	१४	७ १०	८ ४२	१० ३७	१२ ५१	१५ १३	१७ ३३	१९ ५१	२२ १३	० ३३	२ ३७	४ १८	५ ४३
	२८	१५	७ ०६	८ ३८	१० ३३	१२ ४७	१५ १०	१७ ३०	१९ ४७	२२ ०९	० २९	२ ३३	४ १४	५ ३९
	२९	१६	७ ०२	८ ३५	१० २९	१२ ४३	१५ ०६	१७ २६	१९ ४३	२२ ०५	० २५	२ ३०	४ १०	५ ३६
	३०	१७	६ ५८	८ ३१	१० २५	१२ ३९	१५ ०२	१७ २२	१९ ४०	२२ ०१	० २१	२ २६	४ ०७	५ ३२
	३१	१८	६ ५४	८ २७	१० २१	१२ ३६	१४ ५८	१७ १८	१९ ३६	२१ ५७	० १७	२ २२	४ ०३	५ २८
अप्रैल	१	१९	६ ५०	८ २३	१० १७	१२ ३२	१४ ५४	१७ १४	१९ ३२	२१ ५३	० १३	२ १८	३ ५९	५ २४
	२	२०	६ ४६	८ १९	१० १३	१२ २८	१४ ५०	१७ १०	१९ २८	२१ ४९	० ०९	२ १४	३ ५५	५ २०
	३	२१	६ ४२	८ १५	१० १०	१२ २४	१४ ४६	१७ ०६	१९ २४	२१ ४५	० ०५	२ १०	३ ५१	५ १६
	४	२२	६ ३८	८ ११	१० ०६	१२ २०	१४ ४२	१७ ०२	१९ २०	२१ ४१	० ०१	२ ०६	३ ४७	५ १२
	५	२३	६ ३४	८ ०७	१० ०२	१२ १६	१४ ३८	१६ ५८	१९ १६	२१ ३७	२३ ५७	२ ०२	३ ४३	५ ०८
	६	२४	६ ३०	८ ०३	९ ५८	१२ १२	१४ ३४	१६ ५४	१९ १२	२१ ३३	२३ ५३	१ ५८	३ ३९	५ ०४
	७	२५	६ २७	७ ५९	९ ५४	१२ ०८	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०८	२१ २९	२३ ५०	१ ५४	३ ३५	५ ००
	८	२६	६ २३	७ ५५	९ ५०	१२ ०४	१४ २६	१६ ४६	१९ ०४	२१ २६	२३ ४६	१ ५०	३ ३१	४ ५६
	९	२७	६ १९	७ ५१	९ ४६	१२ ००	१४ २२	१६ ४२	१९ ००	२१ २२	२३ ४२	१ ४६	३ २७	४ ५२
	१०	२८	६ १५	७ ४७	९ ४२	११ ५६	१४ १८	१६ ३८	१८ ५६	२१ १८	२३ ३८	१ ४२	३ २३	४ ४८
	११	२९	६ ११	७ ४३	९ ३८	११ ५२	१४ १४	१६ ३४	१८ ५२	२१ १४	२३ ३४	१ ३८	३ १९	४ ४४
	१२	३०	६ ०७	७ ४०	९ ३४	११ ४८	१४ ११	१६ ३१	१८ ४८	२१ १०	२३ ३०	१ ३५	३ १५	४ ४१
	१३	वै.१	६ ०३											

भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल

यहां पीछे जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह चण्डीगढ़ में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बतलाती है। इसी लग्नसारणी से नीचे दिए गए कोष्ठक की सहायता से भारत के प्रमुख-प्रमुख नगरों में लग्नों का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) आसानी से इस प्रकार जाना जा सकता है :-दैनिक लग्नसारणी से अपनी अभीष्ट तारीख को चण्डीगढ़ में लग्न का समाप्तिकाल जान लीजिए और उसमें अपने नगर के आगे और लग्न के नीचे इस कोष्ठक में लिखे मिनटों को चिह्न के अनुसार जोड़ने या घटाने से उस नगर में लग्न का समाप्ति काल मालूम हो जाएगा। जैसे-मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुन लग्न का समाप्ति काल जानना है। ९ अप्रैल को चण्डीगढ़ में मिथुन का समाप्तिकाल १२ घं. ० मि. है, यह हमने दैनिक लग्नसारणी से ज्ञात किया। नीचे कोष्ठक में मद्रास, के आगे मिथुन के नीचे + १९ मिनट लिखे हैं। + होने से १९ मिनटों को १२ घं. ० मिनट में जोड़ने पर १२ घं. १९ मिनट मद्रास में ९ अप्रैल को मिथुनलग्न का समाप्तिकाल (भा.स्टै.टा.) बन गया।

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
अजमेर	+१७	+१८	+१७	+१४	+१०	+६	+१	-१	०	+४	+८	+१२
अम्बाला	०	०	०	०	०	०	-१	-१	-१	०	०	०
अमृतसर	+७	+६	+६	+७	+८	+९	+१०	+१०	+१०	+९	+८	+७
अलवर	+७	+८	+७	+५	+२	-२	-५	-६	-६	-३	०	+४
अलीगढ़	+१	+२	+१	-१	-४	-८	-११	-१२	-१२	-९	-६	-२
अहमदाबाद	+३०	+३३	+३१	+२५	+१८	+११	+४	-१	+१	+८	+१५	+२३
आगरा	+१	+३	+२	-१	-४	८	-११	-१३	-१३	-९	-६	-२
उज्जैन	+१८	+२१	+१९	+१३	+६	-१	-८	-१३	-११	-४	+३	+११
उदयपुर	+२४	+२६	+२५	+२०	+१४	+८	+२	-२	०	+५	+१२	+१८
इन्दौर	+१८	+२२	+२०	+१४	+५	-३	-१०	-१५	-१३	-६	+३	+१०
करनाल	+१	+१	+१	०	०	-१	-२	-२	-२	-१	-१	०
कलकत्ता	-३२	-२८	-३०	-३६	-४५	-५३	-६०	-६५	-६३	-५६	-४७	-४०
कांगड़ा	०	-१	-१	+१	+२	+३	+५	+६	+५	+४	+३	+१
कानपुर	-६	-५	-६	-९	-१३	-१७	-२२	-२४	-२३	-१९	-१५	-११
काशी	-१५	-१३	-१४	-१८	-२४	-२९	-३४	-३७	-३६	-३१	-२५	-२०
कुरुक्षेत्र	+२	+२	+२	+१	+१	०	-१	-१	-१	०	०	+१
कोटा	+१४	+१६	+१५	+११	+५	०	-५	-८	-७	-२	+४	+९
गुड़गांव	+४	+४	+४	+२	०	-२	-४	-५	-५	-३	-१	+१
गुरदासपुर	+३	+२	+२	+४	+५	+६	+८	+९	+८	+७	+६	+४
गोरखपुर	-१८	-१७	-१८	-२१	-२५	-२९	-३४	-३६	-३५	-३१	-२७	-२३
ग्वालियर	+३	+५	+४	०	-४	-९	-१३	-१६	-१५	-११	-६	-२
चम्बा	-१	-२	-१	०	+२	+५	+७	+८	+७	+६	+३	+१
जम्मू	+४	+३	+४	+५	+७	+१०	+१२	+१३	+१२	+११	+८	+६
जयपुर	+११	+१२	+११	+८	+५	+१	-३	-५	-४	०	+३	+७
जालन्धर	+५	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+६	+५
जीन्द	+५	+६	+५	+४	+३	+१	०	-१	-१	+१	+२	+४
जैसलमेर	+३१	+३२	+३१	+२८	+२५	+२१	+१७	+१५	+१६	+२०	+२३	+२७
जोधपुर	+२३	+२५	+२४	+२०	+१६	+११	+७	+४	+५	+९	+१४	+१८
झांसी	+३	+५	+४	०	-६	-११	-१६	-१९	-१८	-१३	-७	-२
दिल्ली	+३	+३	±३	+१	-१	-३	-५	-६	-६	-४	-२	०
देहरादून	-५	-५	-५	-५	-५	-५	-६	-६	-६	-५	-५	-५
नागपुर	+८	+११	+१०	+२	-७	-१७	-२६	-३१	-३९	-२०	-११	-२
गया	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+२	+२	[illegible]	+३	+३

नगर \ लग्न	मेष मि.	वृष मि.	मिथुन मि.	कर्क मि.	सिंह मि.	कन्या मि.	तुला मि.	वृश्चिक मि.	धनु मि.	मकर मि.	कुंभ मि.	मीन मि.
नैनीताल	-८	-७	-८	-९	-१०	-१२	-१३	-१४	-१४	-१२	-११	-९
पटियाला	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१	+१	+१	+२	+२	+२
पठानकोट	+१	+१	+१	+३	+४	+६	+८	+९	+८	+७	+५	+३
पटना	-२४	-२२	-२३	-२७	-३२	-३८	-४२	-४५	-४४	-३९	-३४	-२९
पुंछ	+४	+३	+४	+७	+१०	+१४	+१८	+२०	+१९	+१५	+१२	+८
प्रयाग	-११	-९	-१०	-१४	-१९	-२४	-२९	-३१	-३१	-२६	-२१	-१६
फरीदकोट	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+८
फिरोजपुर	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९	+९
बम्बई	+३६	+४१	+३८	+२९	+१८	+७	-४	-१०	-८	+३	+१४	+२५
बरेली	-६	-६	-६	-८	-१०	-१२	-१४	-१५	-१५	-१३	-११	-९
बंगलौर	+२६	+३३	+३०	+१७	०	-१६	-३२	-४०	-३७	-२२	-६	+११
बुलन्दशहर	०	०	०	-२	-४	-६	-८	-९	-९	-७	-५	-३
भटिण्डा	+८	+८	+८	+८	+८	+८	+७	+७	+७	+८	+८	+८
भरतपुर	+३	+५	+४	+१	-२	-६	-९	-११	-११	-७	४	०
भुवनेश्वर	-१८	-१४	-१६	-२४	-३४	-४४	-५४	-५८	-५७	-४८	-३८	-२८
भोपाल	+११	+१४	+१२	+६	-१	-८	-१५	-२०	-१८	-११	-४	+४
मद्रास	+१५	+२२	+१९	+६	-११	-२७	-४३	-५१	-४८	-३३	-१७	०
मथुरा	+३	+४	+३	+१	-२	-६	-९	-१०	-१०	-७	-४	०
मण्डी (हि.प्र.)	-२	-३	-३	-२	-१	०	+२	+२	+२	+१	०	-१
मलेरकोटला	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३	+३	+३	+४	+४	+४
मेरठ	-१	०	-१	-२	-३	-५	-६	-७	-७	-५	-४	-२
रोपड	+१	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+१
रोहतक	+४	+५	+४	+३	+१	०	-२	-३	-३	-१	+१	+२
लखनऊ	-९	-८	-९	-१२	-१५	-१९	-२३	-२५	-२४	-२०	-१७	-१३
लुधियाना	+३	+३	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+४	+३
शिमला	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-१	-२
श्रीनगर (का.)	+१	०	+१	+४	+७	+११	+१५	+१७	+१६	+१२	+९	+५
सहारनपुर	-१	-१	-१	-२	-२	-३	-४	-४	-४	-३	-३	-२
हरिद्वार	-४	-४	-४	-५	-५	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-५
हिसार	+७	+८	+७	+६	+५	+३	+२	+१	+१	+३	+४	+६
हैदराबाद	+१५	+२१	+१८	+८	-५	-१७	-२९	-३५	-३३	-२२	-९	+३
होशियारपुर	+२	+१	+१	+२	+३	+४	+५	+५	+५	+४	+३	+२

प्राचीन पद्धति द्वारा लग्न एवं दशम का साधन

जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि की गणित में शुद्ध लग्न का साधन सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं श्रमसाध्य विषय है। इसके लिए ज्योतिषी को स्थानीयकाल का ज्ञान होना चाहिए, नगरों के अक्षांश–रेखांशों की प्रामाणिक सूची भी उसके पास होनी चाहिए, किञ्च भिन्न–भिन्न अक्षांशों की लग्नसारणियां उसके पास होना नितान्त आवश्यक है, क्योंकि किसी स्थान पर लग्न स्पष्ट करने के लिए उस स्थान के अक्षांश की लग्नसारणी का ही प्रयोग होता है। आगे हमने साम्पातिक काल द्वारा लग्न एवं दशम लग्न स्पष्ट करने की नवीन विधि दी है। यह विधि अपेक्षाकृत अधिक सूक्ष्म और सुविधाजनक है। इस विधि में अभीष्ट नगर का सूर्योदय, सूर्योदयात् इष्ट काल, दिनमान और इष्टकालिक सूर्य की ज़रुरत नहीं होती, जबकि प्रचीन विधि में इनकी ज़रुरत रहती है। यहां हम लग्न एवं दशम साधन की प्राचीन विधि दे रहे हैं।

लग्न साधनविधि

जिस नगर में लग्न स्पष्ट करना है, उस नगर में उस दिन का सूक्ष्म सूर्योदयकाल ज्ञात कीजिए। सूर्योदयकाल से अभीष्ट समय का सूर्योदयात् इष्ट (घ. प.) बना लीजिए और इष्टकालिक सूर्य स्पष्ट कर लीजिए। इस पंचांग में दी गई "अक्षांशादि सारणी" से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश ज्ञात कर लीजिए। अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी द्वारा इस प्रकार लग्न स्पष्ट कीजिए:–

आगे 29, 30, 31 अक्षांशों की तीन लग्नसारणियां दी गई हैं, जो दिल्ली, पंजाब, तथा हरियाणा के लगभग सभी नगरों के लिए पर्याप्त हैं। अपने अभीष्ट नगर के अक्षांश वाली लग्नसारणी में इष्टकालिक स्पष्ट सूर्य की राशि के आगे और अंश के नीचे लिखे घड़ी, पलों को लेकर अलग लिख लीजिए। सारणी में इन घड़ी, पलों के दाईं ओर अगले अंश के नीचे जो घड़ी–पल दिए गए हैं, उनसे इन अलग लिखे गए घड़ी, पलों का अन्तर जानिए। अन्तर के इन पलों को "सहायक सारणी" (जो अगले पृष्ठ पर दी गई है) के बाईं ओर पहले कॉलम में देखिए। इसके आगे इस सारणी में जहां स्पष्ट सूर्य की कला–विकलाओं के बराबर या लगभग बराबर कला–विकलाएं लिखी हों, उनके बिल्कुल ऊपर सारणी की पहली लाईन में जो पल लिखे हों, उन्हें लेकर अलग लिखे हुए घड़ी, पलों में जोड़ दीजिए और उसमें इष्टकाल के घड़ीपल भी जोड़ दीजिए। इसे हम "अभीष्ट घड़ी–पल" कहेंगे। "अभीष्ट घड़ी–पल" यदि 60 घड़ी से अधिक हों तो उनमें से 60 घड़ी घटाकर, शेष ग्रहण करना चाहिए। "अभीष्ट घड़ी– पलों" के बराबर (बराबर न मिलें तो उनसे कुछ कम) घड़ी, पल लग्नसारणी में ढूंढिये, जिन्हें "सारणीस्थ घड़ी–पल" कहा जाएगा। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के बाईं ओर लग्नसारणी के पहले कॉलम में लिखी राशि और सबसे ऊपर लिखे अंशों को अलग लिख लीजिए। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" के दाईं ओर सारणी के अगले अंश के नीचे दिए गए घड़ी–पलों का "सारणीस्थ घड़ी–पलों" से अन्तर कीजिए। इसे "सारणीस्थ अन्तर" कहेंगे। "सारणीस्थ घड़ी–पलों" और "अभीष्ट घड़ी–पलों" का भी अन्तर कीजिए। अन्तर के ये पल "सहायक सारणी" के बिल्कुल ऊपर वाली लाईन में जहां लिखे हैं, उसके नीचे "सारणीस्थ अन्तर" के बराबर पलों के आगे जो कला– विकला मिलें, उन्हें अलग लिखे राशि, अंशों में जोड़ दें। अब इसमें अगले पृष्ठ पर दी गई "अयनांश संस्कार सारणी" से अपने संवत् के आगे दी गई कलाओं को लेकर चिन्ह के अनुसार जोड़ने या घटाने पर निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

उदाहरण– मान लीजिए– वि. सं. 2029 के वैशाख प्रविष्टे 3 को 58 घ. 45 प. इष्ट पर शिमला (हि.प्र.) में लग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य 0 रा., 2 अंश 37 क. 47 वि. है। शिमला के अक्षांश 31 अंश 6 क. (उत्तर) हैं, अतः 31 अक्षांश वाली लग्नसारणी में स्पष्ट सूर्य की 0 (मेष) राशि के आगे 2 अंश के नीचे 2 घ. 55 प. हैं, इन्हें अलग लिखा। सारणी में 2 घ. 55 प. के दाईं ओर 3 अंश के नीचे 3 घ. 2 प. लिखे हैं। इनका 2 घ. 55 प. से अन्तर 7 पल है। "सहायक सारणी" के बाईं ओर पहले कॉलम में लिखे हुए 7 पल के आगे वाली पंक्ति में स्पष्ट सूर्य की 37 क. 47 वि. नहीं मिलीं। अतः सारणी में इनके लगभग बराबर 34 क. 17 वि. देखें, जिनके बिल्कुल ऊपर 4 पल लिखे हैं। इन्हें अलग लिखे 2 घ. 55 पल में जोड़ा और इष्टकाल के घ. प. भी इसमें जोड़े तो 61 घ. 44 प. (60 घ. घटाने पर 1 घ. 44 प.) 'अभीष्ट घड़ी–पल' हुए। लग्नसारणी में 'अभीष्ट घड़ी–पल' 1 घ. 44 प. नहीं हैं, अतः इससे कुछ कम 1 घ. 40 प. सारणी में देखें, जो "सारणीस्थ घडी पल" हैं। इनके बाईं ओर सारणी के पहले कॉलम में 11 राशि और बिल्कुल ऊपर की लाईन में 21 अंश लिखे हैं। इन 11 रा. 21 अं. को अलग लिखा। लग्न सारणी में "सारणीस्थ घड़ी–पलों" (1 घ. 40 प.) के दाईं ओर 22 अंश के नीचे 1 घ. 46 प. का 1 घ. 40 प. से अन्तर 6 पल 'सारणीस्थ अन्तर' है। "अभीष्ट घड़ी–पल" (1 घ. 44 प.) और सारणीस्थ घड़ी–पल (1 घ. 40 प.) का अन्तर 4 पल है। 'सहायक सारणी' की ऊपर वाली लाईन में लिखे गए 4 पल के नीचे सारणीस्थ अन्तर के बराबर 6 पल के आगे 40क. 00वि. लिखा है। इन्हें 11रा. 21 अं. में जोड़ने पर 11 रा. और 21अं. 40क. 00 वि. हुआ। "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. 2029 के आगे +1 कला लिखा है। इसे चिन्हानुसार 11 रा. 21 अं. 40 क. 0 वि. में जोड़ने पर 11 रा. 21 अं. 41 क. 00 वि. निरयण लग्न स्पष्ट हुआ।

दशम लग्नसाधन

आगे साम्पातिक काल द्वारा दशम लग्न साधन की सरल पद्धति दी है, जिससे अभीष्ट स्थल का सूर्योदय, दिनमान तथा तात्कालिक सूर्यस्पष्ट जानने की अवश्यकता नहीं होती है। प्राचीन पद्धति से, जिसका निर्देश यहां किया जा रहा है, इन सब की आवश्यकता रहती है।

सारणी (अक्षांश २९° उत्तर) (पलभा ६।३९।६)

दिल्ली, मेरठ, रोहतक, हिसार, जींद, नैनीताल, मुरादाबाद आदि के लिए।

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
० प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
वृष घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१ प.	४८	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३
मि. घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
२ प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
३ प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
सिं. घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७ प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
धनु घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
८ प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९ प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३
कु. घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१० प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४८

लग्न सारणी ३०° उत्तर (पलभा ६।५५।४२)

अम्बाला, करनाल, कुरुक्षेत्र, देहरादून, नाभा, पटियाला, भटिण्डा, जैसलमेर, अल्मोड़ा, सहारनपुर और हरिद्वार आदि के लिए

अंश →	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प.	४४	५१	५८	५	१३	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४०
वृष घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
मि. घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२ प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२
क. घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४
सिं. घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३
क. घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०
तु. घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६ प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
वृ. घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६
७ प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०
धनु घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
म. घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
९ प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८
कु. घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१५
मी. घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	३	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४

लग्न सारणी (अक्षांश ३१ उत्तर) (पलभा ७।१२।३७)

कपूरथला, चण्डीगढ़ , जालंधर, फरीदकोट, फिरोजपुर, रोपड़, लुधियाना, शिमला आदि के लिए

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
० प	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
वृष घ	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
१ प	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१
मि. घ	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
२ प	२१	३१	४१	५१	१	१०	२०	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६
क. घ	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३ प	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	४	१५	२७	३९	५१	३	१५	२७	३८	५०
सिं. घ	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४ प	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२
क. घ	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५ प	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२
तु. घ	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
६ प	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६
वृ. घ	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
७ प	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५
धनु घ	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
८ प	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६
म. घ	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
९ प	२६	३६	४६	५६	६	१५	२५	३५	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२५	३३	४१
कु. घ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
१० प	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२५	३२	३९	४६	५३	०	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	८	१५
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११ प	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१४	२१	२८	३४	४१

दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अंश→	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मेष घ	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८
० प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृष घ	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३
१ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
मि. घ	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९
२ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
क. घ	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४
३ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
सिं. घ	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२९
४ प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५४	४	१३	२२	३१	४०	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
क. घ	२९	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३
५ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८
तु. घ	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८
६ प	३८	४७	५६	६	१५	२४	३३	४३	५३	३	१३	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२
वृ. घ	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३
७ प	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१४	२४	३५	४६	५७	८	१९	२९	४०	५१	२	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४९
धनु घ	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९
८ प	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३५	४६	५७	८	१८	२९	४०	५१	१	१२
म. घ	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४
९ प	१२	२३	३४	४५	५५	६	१७	२८	३८	४८	५८	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
कु. घ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
१० प	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३६	४५	५५	४	१३	२२	३१	४१	५०	५९	९	१८	२७	३६	४६	५५	४	१३	२३	३२	४१	५०	०
मी. घ	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
११ प	०	९	१८	२८	३७	४६	५५	५	१४	२३	३२	४२	५१	०	९	१९	२८	३७	४७	५६	५	१४	२४	३३	४२	५१	१	१०	१९	२८	३८

दशमलग्न साधनविधि

इष्टकाल के घ. प. में से दिनार्ध (अभीष्ट नगर के दिनमान का आधा) घटाएं। यदि दिनार्ध से इष्ट कम हो तो इष्ट में ६० घड़ी जोड़कर दिनार्ध घटाएं, जो शेष बचे वह नतकाल होगा। नतकाल के घ. प. को इष्ट के घ. प. समझकर तात्कालिक स्पष्ट सूर्य द्वारा दशम लग्नसारणी से ठीक उसी तरह दशम लग्न स्पष्ट कीजिए जैसे कि ऊपर लग्नसारणी से लग्न स्पष्ट किया गया है। दशम लग्नसारणी सभी नगरों के लिए एक ही होती है।

दशमलग्न साधन का उदाहरण:— वि. सं. २०२६ के वैशाख प्रविष्टे ३ को शिमला में ५८घ. ४५ प. इष्ट पर दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय स्पष्ट सूर्य ० रा. २ अं. ३७ क. ४७ वि. है। इस दिन शिमला में दिनमान ३१ घ. ५६ प. है, अतः दिनार्ध १६ घ. ० प. हुआ। इष्ट काल ५८ घ. ४५ प. में से दिनार्ध घटाने पर ४२ घ. ४५ प. नतकाल हुआ, जो दशमसाधन के लिए इष्टकाल है। दशमलग्न सारणी में स्पष्ट सूर्य की ० राशि के आगे २ अंश के नीचे ३ घ. ५६ प. मिला। इसे पृथक् लिखा। सारणी में ३ घ. ५६ प. के दाईं ओर (३ अं. के नीचे) ४ घ. ०६ प. लिखा है। ३।५६ और ४।६ का अन्तर १० पल है। सहायक सारिणी में १० पल के आगे स्पष्ट सूर्य की ३७ क. ४७ वि. के लगभग बराबर ३६ क. ०० वि. है। इसके ऊपर सारिणी में ६ पल लिखा है। इन ६ पलों को अलग लिखे ३ घ. ५६ प. में जोड़कर इसमें नतकाल जोड़ा तो ४६ घ. ४७ प. 'अभीष्ट घडी–पल' हुए। "दशम लग्नसारणी" में इन "अभीष्ट घड़ी–पलों" से कुछ कम घ. प. ४६।४२ 'सारणीस्थ घड़ी पल' धनु (८) राशि के आगे १६ अंश के नीचे लिखे हैं। अतः ८ रा. १६ अं. को अलग लिखा। सारणी में ४६।४२ के दाईं ओर (१७ अं. के नीचे) लिखे ४६।५२ का ४६।४२ से अन्तर १० पल का "सारणीस्थ अन्तर" हुआ। 'सारणीस्थ घड़ी–पल' ४६।४२ और अभीष्ट घड़ीपल ४६।४७ का अन्तर ५ पल है। अब 'सहायक सारणी' में १० पल के आगे ५ पल के नीचे ३० क. ०० वि. मिली। इन्हें अलग लिखे ८ रा. १६ अं. में जोड़ने पर ८ रा.१६ अं. में जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३० क. ० वि. हुई। इसमें "अयनांश संस्कार सारणी" में वि. सं. २०२६ के आगे दिया गया अयनांश संस्कार + १क. चिह्नानुसार जोड़ने पर ८ रा. १६ अं. ३१ क. ०० वि. निरयण दशमलग्न स्पष्ट हुआ।

सहायक सारणी

पल	१		२		३		४		५		६		७		८		९		१०		११		१२		१३	
→ ↓	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.	क.	वि.
६	१०	०	२०	०	३०	०	४०	०	५०	०	६०	०														
७	८	३४	१७	९	२५	४३	३४	१७	४२	५१	५१	२६	६०	०												
८	७	३०	१५	०	२२	३०	३०	०	३७	३०	४५	०	५२	३०	६०	०										
९	६	४०	१३	२०	२०	०	२६	४०	३३	२०	४०	०	४६	४०	५३	२०	६०	०								
१०	६	०	१२	०	१८	०	२४	०	३०	०	३६	०	४२	०	४८	०	५४	०	६०	०						
११	५	२७	१०	५५	१६	२२	२१	४९	२७	१६	३२	४४	३८	११	४३	३८	४९	५	५४	३३	६०	०				
१२	५	०	१०	०	१५	०	२०	०	२५	०	३०	०	३५	०	४०	०	४५	०	५०	०	५५	०	६०	०		
१३	४	३७	९	१४	१३	५१	१८	२८	२३	५	२७	४२	३२	१९	३६	५६	४१	३३	४६	१०	५०	४७	५५	२३	६०	०

अयनांश संस्कार सारणी

विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला	विक्रम संवत्	संस्कार कला
२०२३	+ ७	२०३१	०	२०३९	— ७	२०४७	— १३	२०५५	— २०	२०६३	—२६	२०७१	—३३
२०२४	+ ६	२०३२	— १	२०४०	— ८	२०४८	— १४	२०५६	— २१	२०६४	—२७	२०७२	—३४
२०२५	+ ५	२०३३	— २	२०४१	— ९	२०४९	— १५	२०५७	— २२	२०६५	—२८	२०७३	—३५
२०२६	+ ४	२०३४	— ३	२०४२	— ९	२०५०	— १६	२०५८	—२२	२०६६	—२९	२०७४	—३६
२०२७	+ ३	२०३५	— ४	२०४३	—१०	२०५१	— १७	२०५९	—२३	२०६७	—३०	२०७५	—३६
२०२८	+ २	२०३६	— ४	२०४४	—११	२०५२	— १८	२०६०	—२४	२०६८	—३१	२०७६	—३७
२०२९	+ १	२०३७	— ५	२०४५	—१२	२०५३	— १८	२०६१	—२५	२०६९	—३१	२०७७	—३८
२०३०	+ १	२०३८	— ६	२०४६	— १३	२०५४	— १९	२०६२	—२६	२०७०	—३२	२०७८	—३९

सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की नवीन सरल विधि

यहां हम सूक्ष्म लग्न एवं दशमलग्न स्पष्ट करने की एक नवीन सरल विधी दे रहे है । स्पष्ट सूर्य द्वारा लग्न स्पस्ट करने में अधिक परिश्रम होता है, इसलिए इस विषय में पाश्चात्य ज्योतिषियों ने साम्पातिककाल' की पद्धति को अपनाया है । यहां हम ''साम्पातिककाल क्या है''- इस विषय का कुछ सैद्धान्तिक- विवेचन न करते हुए, इससे लग्न स्पष्ट-करने की सर्व- साधारणोपयोगी विधि प्रस्तुत कर रहे हैं ।

विधि:- सां. का. (साम्पतिककाल) से लग्न स्पष्ट करने के लिए सर्वप्रथम नीचे लिखे उपकरण (चीजें), जो इस पंचांग में दिए गए कोष्ठकों (सारणियों) से बिना किसी परिश्रम के तैयार किए जा सकते है, तैयार करें

(१) अभीष्ट नगर के अक्षांश (उत्तर या दक्षिण)
(२) अभीष्ट नगर के रेखांश (पूर्व या पश्चिम)
(३) अभीष्ट नगर का स्टैण्डर्ड अन्तर (+या-)

ये तीनों उपकरण 'अक्षांशादि सारणी' से उठाइये।

विशेष- यदि ''अक्षांशादि सारणी'' में अभीष्ट नगर न मिले तो उसके निकटतम किसी अन्य नगर के अक्षांशादि प्रयोग में लाए जा सकते है ।

ध्यान रहे- भारत के सभी नगरों के अक्षांश उत्तर और रेखांश पूर्व ही है ।

(४) अभीष्ट नगर का स्थानीयमध्यमकाल- जिस समय लग्न स्पष्ट करना हो उस समय के स्वदेशीय स्टैण्डर्ड - टाईम में अभीष्ट नगर (जहां का लग्न स्पष्ट करना हो, वहां) के स्टैण्डर्ड - अन्तर के मिनटादि (या घण्टादि) को चिन्हानुसार जोड़ने या घटाने से अभीष्ट नगर का **''स्थानीयमध्यमकाल''** बन जाता है + यह चिह्न जोड़ने की एवं- यह चिह्न घटाने की प्रक्रिया को बतलाता हैं ।

जैसे- चण्डीगढ में दोपहर के १२घं. ५७ मि. (भा. स्टैं टा.) पर स्थानीयमध्यकाल जानने के लिए इस (भा. स्टैं टा.) में से चण्डीगढ का स्टैण्डर्ड अन्तर -२२ मिनट ३२ सेकण्ड चिन्हानुसार घटाया, तो १२ घं. ३४ मि. २८ सें. स्थानीयमध्यमकाल बना।

१सितं.१९४२ ई. से १५ अक्तू १९४५ ई. तक भारत में युद्ध के कारण घड़ियां एक घण्टा आगे की गई थी । अतः इन दिनों में घड़ियों द्वारा जाने गए टाईम में से १ घण्टा घटा कर उसे भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समझना चाहिए।

जैसे- सन्१९४४ की २० अग. को काई बच्चा भारत में युद्ध के समयानुसार दिन में १२ बज कर ४५ मि. पर पैदा हुआ । इसका जन्मपत्र बनाने के लिए हमें इस बच्चे का जन्म काल भा. स्टै.टा. के अनुसार ११ घं ४५ मि. मानना होगा ।

(५) अभीष्ट तारीख का अयनांश - आगे दो [नं.(१) और नं.(२)] अयनांशसारणियां दी गई है । अयनांशसारणी नं.(१) में से अभीष्ट सन् के आगे लिखाअंशादि अयनांश लें, और अयनांशसारणी नं. (२) में से अभीष्ट मास की अभीष्ट तारीख का विकलादि फल लेकर उसमें जोड़ दें; - यह अभीष्ट तारीख का अयनांश होगा ।

जैसे - १५ जुलाई १९६९ ई. को अयनांश जानने के लिए अयनांशसारणी नं.(१) में से सन् १९६९ ई. के आगे लिखा अयनांश २३अं.२५ क २६ वि. प्राप्त किया । इसमें अयनांशसारणी नं.(२) से प्राप्त की गई १५ जुलाई की २७ वि. जोडने पर २३ अं.२५क. ५६ वि. हमारा अभीष्ट अयनांश हुआ ।

(६) इष्टकालिक साम्पातिककाल - आगे साम्पातिककाल के चार कोष्ठक दिए गये है । इनके आधार पर इष्टकालिक साम्पातिककाल इस प्रकार सरलता से बनाया जा सकता है-

सां. का. कोष्ठक नं. (१) में से अभीष्ट सन् का सां. का. उठाएं। उसमें साम्पातिक काल कोष्ठक नं.(२) से अभीष्टमास की अभीष्ट तारीख का (लीप ईयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख की जगह उससे एक आगे की तारीख का) सां. का. लेकर जोड़ें । इसमें सां. का. कोष्ठक नं.(३) से अभीष्ट नगर के रेखांशों द्वारा सैकण्डात्मक संस्कार उठा कर चिन्हानुसार जोडें या घटाएं । इस प्रकार मिले सां. का के घं. मि. में अभीष्ट स्थानीयमध्यमकाल (जिसका साधन पहले बताया जा चुका है) के घण्टा- मिनटादि जोडें और फिर इस योगफल में स्थानीयमध्यमकाल के घण्टा- मिनटों द्वारा सां. का. कोष्ठक नं.(४) से प्राप्त किए गए मिनटादि जोड़ देने से इष्टसमय का घण्टादि सां. का बन जाएगा । इस प्रकार बना सां. का. यदि २४ घं. से अधिक हो तो उसमें से २४ घटा कर शेष ही ग्रहण करना चाहिए ।

साम्पातिककाल साधन का उदाहरण - यहां हम १५ जुलाई १९६९ को भा. स्टै टा. के अनुसार प्रातः १०घं.४५मि. पर चम्बा (हि. प्र.) में सां. का. स्पष्ट करेगें । अक्षांशादि सारणी में चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. (उत्तर), रेखांश ७६ अं. १०क.(पूर्व) एंव स्टैं. अन्तर - २५ मि. २० से. है । स्टैण्डर्ड अन्तर ऋण चिह्न वाला है, अतः इसे १० घण्टे४५ मि. में से घटाने पर १० घं. १९ मि. ४० से. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल हुआ । सां. का . कोष्ठक नं. (१) से सन् १९६९ ई. का सां. का. (६घं.४१ मि. २ से.) लिया । इसमें कोष्ठक नं.(२) सें लिया गया १५ जुला. का सां का. (१२घं. ४८ मि. ४९ से.) जोड़ा तो १९ घं.२९ मि. ५१ सै. हुआ । चम्बा के रेखांश ७६अं.१० क. के लिए कोष्टक नं.(३) वाला संस्कार तो० है। अब १९घं. २९ मि. ५१सैं. चम्बा का स्थानीयमध्यमकाल १०घं.१९मि ४० सै. जोडा तो २९घं. ४९मि. ३१ सै. हुए। इसमें कोष्ठक न. (४) से स्थानीयमध्यमकाल के १०घं. २० मि. उठाए गए १ मि. ४२सै. जोड़ने पर २९ घं. ५१ मि. १३ से. हुए । क्योंकि यहां घण्टे२४से अधिक हैं अतः२४ घं. घटाए तो ५घं. ५१मि. १३से. अभीष्ट साम्पातिककाल हुआ ।

साम्पातिककाल बनाते समय नीचे लिखी इन बातों को भी ध्यान में रखें:-

(१) यदि धन (+) चिह्न वाले स्टैण्डर्डअन्तर (स्टैं. अं.) के मिनटों को स्टैण्डर्ड टाईम में जोड़ने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. या इससे ज्यादा हो जाए तब उसमें से २४ घण्टा घटा दें और ऊपर बतलाई विधि से प्राप्त साम्पातिककाल में ४ मि. जोड कर उसे शुद्ध साम्पातिककाल समझें । जैसे - कलकता में २जन. १९७४ ई. को २३ घंटा ५५ मि. (रात के ११ बज कर ५५ मि.) भा. स्टै. टा. पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । कलकत्ता का रेखांश ८८अं. २४ क, (पूर्व) और स्टैं अन्तर +२३ मि. ३६ से. है। स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए२३ घं. ५५ मि. में २३ मि. ३६ सै. जोड़े तो २४ घं. १८ मि. ३६ से. हुए यह २४ घ. से ज्यादा हो गया है, अतः इसमें से २४ घं. घटाने पर ० घं. १८ मि. ३६ से.

स्थानीयमध्यमकाल हुआ । अब सां. का. बनाने के लिए कोष्टक नं.(१) से १९७४ केआगे लिखे ६ घं. ४० मि. १२ से. में कोष्ठक नं.(२) से लिए गए २ जन. के ० घं. ३ मि. ५७ से. जोडने पर ६ घं. ४४ मि. ९ से. हुए। इसमें कोष्ठक नं. (३) से कलकता के रेखांश ८८ से प्राप्त −८ से. चिह्न के अनुसार घटाए , तो ६ घं. ४४ मि. १ से. हुए । इसमें स्थानीयमध्यमकाल जोड़ने पर ७ घं. . २ मि. ३७ से. हुए । इसमें कोष्ठक नं.(४)से स्थानीयमध्यमकाल के ० घं. १९ मि. द्वारा प्राप्त ३ से. जोडने पर ७घं. २ मि. ४० से. हुए । क्योंकि स्टैं .टा. में स्टैं. अन्तर के मिनट जोडने पर स्थानीयमध्यमकाल २४ घं. से ज्यादा हो गया था । अत: उपरोक्त नियमानुसार इसमें ४ मि. और जोड़ने पर ७ घं. ६ मि. ४० से. हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल बना । लग्न और दशम की स्पष्ट करने के लिए इसी सां. का. को प्रयोग में लाइए ।

(२)सां. का. बनाते समय दूसरी बात यह भी ध्यान में रखें कि यदि स्टैं. टा. से ऋण चिह्न वाले स्टैं. अन्तर के मिनटादि अधिक हों तो स्थानीयमध्यमकाल बनाने के लिए स्टैं. टा. में २४ घंटे जोड कर स्टैं. अन्तर घटाना चाहिए और ऐसी स्थिति में सा.का. कोष्ठक नं. (४)का प्रयोग नहीं करना चाहिए । जैसे- जयपुर में १५ मार्च १९७० को ०घं. १५ मि.(भा. स्टै. टा.) पर साम्पातिककाल ज्ञात करना है । जयपुर के रेखांश ७५ अं. ५२ क. (पूर्व)और स्टैं अं.- २६ मि. ३२ से. है । यहां स्टैं टा. के घं. मि. में से स्टैं. अं. ज्यादा है , अत: स्टै. टा. में २४ घं. जोड़ कर स्टैं अं. घटाने पर २३ घं. ४८ मि. २८ से. स्थानीयमध्यमकाल बना । सां. का. के कोष्ठक नं.(१)से प्राप्त १९७० ई. के ६ घं. ४० मि. ५ से. में कोष्ठक नं. (२) से प्राप्त १५ मार्च के ४ घं. ४७ मि. ४९ से जोड़ने पर ११ घं. २७ मि. ५४ से. हुए । जयपुर के रेखांश ७६ (पूर्व) का कोष्ठक नं. ३ वाला संस्कार लगभग ० है । अब ११ घं. २७ मि. ५४ से. में स्थानीयमध्यमकाल जोड़ा तो ३५ घं. १६ मि. २२ से. हुए । क्योंकि हमारा स्टैं. टा. हमारे नगर के ऋण स्टैं. अं. से कम था अत: यहां साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(४)का प्रयोग हम नहीं करेगें । इसलिए हमारा अभीष्ट साम्पातिककाल ११घं. १६ मि. २२ से. ही हुआ । यहां घंटे २४ से अधिक होने से उसमें से २४ घंटे घटा दिए गए हैं।

(३)जैसाकि हम पहिले भी लिख चुके हैं - लीप इयर (२९ फरवरी वाले साल)में फरवरी के बाद के महीनों की किसी तारीख का सां. का. बनाना हो तो उस तारीख में एक जोड़ कर साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२) को प्रयोग में लाना चाहिए। जैसे -मान लीजिए , १५ मार्च सन् १९४४ को किसी नगर में सां. का. स्पष्ट करना है। साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (१) में सन् १९४४ के आगे लिखे ६ घं. ३७ मि. १७ से. मिलें । क्योंकि हमारा सन् लीप इयर है और हमारी तारीख (१५ मार्च)फरवरी के बाद की भी है , इसलिए ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं. (२)'' में से हम १५ मार्च की जगह १६ मार्च के घं. मि. सै. (४ घं.५१ मि. ४५ से.)ही लेगें और इन्हें ही ६ घं. ३७मि. १७ से. में जोड़ेंगे । ध्यान रहे- यदि सन् १९४४ की १० फर. को हमें सां. का. स्पष्ट करना हो तो ''साम्पातिककाल कोष्ठक नं.(२)''से १० फर.के ही घं. मि. से. उठाने होगें ।

साम्पातिककाल से लग्नसाधन की विधि:-

उपर दी गई विधि से जाने गए अभीष्ट सां. का. (साम्पातिककाल) के घं. मि. को आगे दी गई लग्नसारणी के बाईं ओर वाले पहिले कालम में देखें । इसके आगे अभीष्ट नगर के अक्षांश के नीचे जो लग्न की अंश कला लिखी हैं, उन्हें अलग नोट कर लें। क्योंकि सारणी में सां. का. ३०-३० मिनटों के अन्तर पर और लग्नसारणी ३-३ अक्षांशों के अन्तर पर दी हुई है । अत: अधिकतर यहां सम्भव है कि आपको लग्न सारणी में अभीष्ट सां. का. के घं. मिं. न मिले और यह भी अधिकतर सभव है कि आपको लग्नसारणी में अभीष्ट सां का. के घं. मि. न मिलें और यह भी सम्भव है कि अभीष्ट अक्षांश वाली लग्नसारणी भी न मिले । ऐसी स्थिति में सारणी में अभीष्ट सां. का. के समीपतम (अभीष्ट सां. का. से कम)सां. का. के आगे और अपने अभीष्ट अक्षांश के समीपतम(अभीष्ट अक्षांश से कम) अक्षांश वाली लग्नसारणी में लिखीं लग्न की अंश - कलाएं नोट करें - यह ''स्थूलतम लग्न''है । अब ३० मि. में लग्न की गति सारणी से ही ज्ञात कीजिए, (अर्थात् यह ज्ञात कीजिए कि ३०मि. में लग्न कितना आगे बढ़ता है) ३० मि. की लग्नगति की कलाओं को सां. का. के शेष मिनटों से गुणा करके ३० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''स्थूलतम लग्न'' में जोड़ देने से ''स्थूललग्न''बन जाएगा। अब सारणी से ही ३ अक्षांशों की लग्न की गति मालूम करें । ३ अक्षांशों में लग्न घटता है तो यह ''३ अक्षाशों की लग्नगति'' ऋण, अन्यथा धन होगी । अपने अक्षांश की शेष अंश−कलाओं की कलाएं बना कर उन्हें ''३ अक्षाशों की लग्नगति '' की कलाओं से गुणा करके १८० से भाग देने पर कलाएं मिलेंगी । इन्हें ''३ अक्षांशों की लग्नगति'' के धन,ऋण चिह्न के अनुसार स्थूललग्न में जोड़ने या घटाने से सायनलग्न स्पष्ट होगा । इसमें से उस दिन के अयनांश घटा देने पर फलितोपयोगी निरयण लग्न स्पष्ट हो जाएगा।

दशमलग्न स्पष्ट करने की विधि :- लग्नसारणी के दूसरे कालम में दशम (दशमलग्न)दिया गया है । इससे सभी नगरों में दशमलग्न स्पष्ट किया जा सकता है (अर्थात् -दशम स्पष्ट करने के लिए अंक्षाशों की जरूरत नहीं होती।) अभीष्ट सां. का. के घं. मि. के आगे सारणी में दशम (दशमलग्न)की अंश-कलाएं उठा लें। यह ''स्थूलदशमलग्न'' है। सां.का. के शेष मिनटों से दशमलग्न की ३० मि. की गति की कलाओं को गुणा करके ३०से भाग देने पर कलाएं मिलेगी। इन्हें ''स्थूलदशमलग्न'' में जोड़ने पर इष्टकालिक सायनदशम होगा । इसमें से उसदिन का अयनांश घटा देने पर निरयण दशमलग्न स्पष्ट हो जाएगा।

लग्नसाधन का उदाहरण:-चम्बा (हि.प्र.) में १५ जुलाई सन् १९६९ को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा. स्टै. टा.)पर लग्न स्पष्ट करना है ।

ऊपर हमने चम्बा में १५ जुलाई १९६९ को प्रात: १० घंटे ४५मि. (भा. स्टै. टा.)पर सां.का. ५ घं. ५१ मि. १३ सै. स्पष्ट किया है । चम्बा के अक्षांश ३२ अं.२९ क. है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घं. ३० मि. के आगे लग्न १७३ अं. ३४ क. लिखा है । यह ''स्थूलतम लग्न''है। लग्नसारणी में अक्षांश ३२ के नीचे सां. का. ५ घ. ३० मि. के आगे १७३ अं. ३४ क. और सां. का.६घं. ० मि. के आगें १८० अं.० क. लिखा है ।इन दोनों का अन्तर ६अं. २६ क. (=३८६क.) लग्न की ३० मि. की गति है । हमारे अभीष्ट सां. का. ५ घं. ५१ मि. और ५ घं. ३० मि. का अन्तर २१ मि. है । इन २१ मि. (सा.का.के शेष मिनटों) से लग्न की ३० मिनट की गति कलाओं (३८६) को गुणा करके ३० का भाग देने पर २७० क. (= ४ अं. ३० क.) मिलीं । इन्हें '' स्थूलतम लग्न '' में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. ''स्थूल लग्न ''हुआ ।

मिली। इन्हें "स्थूलतम लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ४ क. "स्थूल लग्न" हुआ।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग १ म}

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८°(उ.)	अक्षांश ११°(उ.)	अक्षांश १४°(उ.)	अक्षांश १७°(उ.)	अक्षांश २०°(उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
० ०	० ०	९३ १२	९४ २५	९५ ४०	९६ ५६	९८ १४
० ३०	८ १०	१०० ३	१०१ १५	१०२ २७	१०३ ४१	१०४ ५७
१ ०	१६ १७	१०६ ५४	१०८ ३	१०९ १३	११० २४	१११ ३६
१ ३०	२४ १८	११३ ४७	११४ ५३	११५ ५९	११७ ६	११८ १४
२ ०	३२ ११	१२० ४३	१२१ ४५	१२२ ४७	१२३ ५०	१२४ ५२
२ ३०	३९ ५५	१२७ ४५	१२८ ४३	१२९ ४०	१३० ३६	१३१ ३३
३ ०	४७ २८	१३४ ५४	१३५ ४५	१३६ ३६	१३७ २७	१३८ १८
३ ३०	५४ ५१	१४२ १०	१४२ ५५	१४३ ३९	१४४ २२	१४५ ६
४ ०	६२ ५	१४९ ३३	१५० १०	१५० ४६	१५१ २३	१५१ ५८
४ ३०	६९ १२	१५७ ३	१५७ ३१	१५८ ०	१५८ २७	१५८ ५५
५ ०	७६ ११	१६४ ३८	१६४ ५८	१६५ १७	१६५ ३६	१६५ ५४
५ ३०	८३ ७	१७२ १८	१७२ २८	१७२ ३८	१७२ ४७	१७२ ५७
६ ०	९० ०	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८० ०	१८० ०
६ ३०	९६ ५३	१८७ ४२	१८७ ३२	१८७ २२	१८७ १३	१८७ ३
७ ०	१०३ ४९	१९५ २२	१९५ २	१९४ ४३	१९४ २४	१९४ ६
७ ३०	११० ४८	२०२ ५७	२०२ २९	२०२ ०	२०१ ३३	२०१ ५
८ ०	११७ ५५	२१० २७	२०९ ५०	२०९ १४	२०८ ३७	२०८ २
८ ३०	१२५ ९	२१७ ५०	२१७ ५	२१६ २१	२१५ ३८	२१४ ५४
९ ०	१३२ ३२	२२५ ६	२२४ १५	२२३ २४	२२२ ३३	२२१ ४२
९ ३०	१४० ५	२३२ १५	२३१ १७	२३० २०	२२९ २४	२२८ २७
१० ०	१४७ ४९	२३९ १७	२३८ १५	२३७ १३	२३६ १०	२३५ ८
१० ३०	१५५ ४२	२४६, १३	२४५ ७	२४४ १	२४२ ५४	२४१ ४६
११ ०	१६३ ४३	२५३ ६	२५१ ५७	२५० ४७	२४९ ३६	२४८ २४
११ ३०	१७१ ५०	२५९ ५७	२५८ ४५	२५७ ३३	२५६ १९	२५५ ३
१२ ०	१८० ०	२६६ ४८	२६५ ३५	२६४ २०	२६३ ४	२६१ ४६

साम्पातिक काल	सभी स्थलों के लिए	अक्षांश ८°(उ.)	अक्षांश ११°(उ.)	अक्षांश १४°(उ.)	अक्षांश १७°(उ.)	अक्षांश २०°(उ.)
	दशम	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न	लग्न
घं. मि.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.	अं. क.
१२ ०	१८० ०	२६६ ४८	२६५ ३५	२६४ २०	२६३ ४	२६१ ४६
१२ ३०	१८८ १०	२७३ ४१	२७२ २७	२७१ ११	२६९ ५३	२६८ ३३
१३ ०	१९६ १७	२८० ३९	२७९ २५	२७८ ९	२७६ ५०	२७५ २९
१३ ३०	२०४ १८	२८७ ४३	२८६ ३०	२८५ १५	२८३ ५७	२८२ ३५
१४ ०	२१२ ११	२९४ ५७	२९३ ४६	२९२ ३३	२९१ १६	२८९ ५५
१४ ३०	२१९ ५५	३०२ २१	३०१ १४	३०० ४	२९८ ५०	२९७ ३२
१५ ०	२२७ २८	३०९ ५८	३०८ ५६	३०७ ५१	३०६ ४२	३०५ २८
१५ ३०	२३४ ५१	३१७ ४९	३१६ ५४	३१५ ५५	३१४ ५३	३१३ ४५
१६ ०	२४२ ५	३२५ ५४	३२५ ७	३२४ १७	३२३ २३	३२२ २५
१६ ३०	२४९ १२	३३४ १२	३३३ ३५	३३२ ५५	३३२ १२	३३१ २६
१७ ०	२५६ ११	३४२ ४१	३४२ १५	३४१ ४८	३४१ १८	३४० ४५
१७ ३०	२६३ ७	३५१ १८	३५१ ५	३५० ५१	३५० ३६	३५० १९
१८ ०	२७० ०	० ०	० ०	० ०	० ०	० ०
१८ ३०	२७६ ५३	८ ४१	८ ५५	९ ९	९ २४	९ ४१
१९ ०	२८३ ४९	१७ १९	१७ ४५	१८ १२	१८ ४२	१९ १५
१९ ३०	२९० ४८	२५ ४८	२६ २५	२७ ५	२७ ४८	२८ ३४
२० ०	२९७ ५५	३४ ६	३४ ५३	३५ ४३	३६ ३७	३७ ३५
२० ३०	३०५ ९	४२ ११	४३ ६	४४ ५	४५ ७	४६ १४
२१ ०	३१२ ३२	५० २	५१ ४	५२ ९	५३ १८	५४ ३२
२१ ३०	३२० ५	५७ ३९	५८ ४६	५९ ५६	६१ १०	६२ २८
२२ ०	३२७ ४९	६५ ३	६६ १४	६७ २७	६८ ४४	७० ५
२२ ३०	३३५ ४२	७२ १७	७३ ३०	७४ ४५	७६ ३	७७ २५
२३ ०	३४३ ४३	७९ २१	८० ३५	८१ ५१	८३ १०	८४ ३१
२३ ३०	३५१ ५०	८६ १९	८७ ३३	८८ ४९	९० ७	९१ २७
२४ ०	० ०	९३ १२	९४ २५	९५ ४०	९६ ५६	९८ १४

अब लग्न सारणी में ३२ अक्षांश और ३५ अक्षांश वाले कालमों में सां.का. ५घं. ३० मि. के आगे क्रमश: १७३ अं. ३४ क. और १७३ अं. ४४ क. लिखा है। इन दोनों का अन्तर १० क. हुआ। यह लग्न की "३ अक्षांश की गति" है। क्योंकि लग्न ३५ अक्षांश में बढ़ रहा है। अत: यह गति धन है। ३२ अक्षांश और चम्बा के अक्षांश ३२ अं. २९ क. का अन्तर २९ क. है। इससे ३ अक्षांश की लग्न की गति कलाओं (१०) को गुणा करके १८० से भाग देने पर लब्धि १ क. मिली। क्योंकि ३ अक्षांशों की लग्न गति धन है अत: इसे "स्थूल लग्न" में जोड़ने पर १७८ अं. ५ क. सायन लग्न हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३अं. २६कं. घटा देने पर १५४ अं. ३९ क. (=५ रा ४ अं. ३९ क.) निरयणलग्न बन गया।

दशमलग्न साधन का उदाहरण- १५ जुला. १९६९ ई. को प्रात: १० घं. ४५ मि. (भा.स्टै.टा.) पर ही चम्बा, हि.प्र. में दशमलग्न स्पष्ट करना है। इस समय चम्बा में सां का ५ घं. ५१ मि. है। लग्नसारणी के दूसरे कालमें में सां.का. ५ घं. ३० मिनट के आगे दशमलग्न८३ अं.७क. है, यह "स्थूल दशमलग्न" है। सारणी में सां.का. ५ घं.३०मि. और ६ घं. ० मि. के आगे क्रमश: ८३ अं. ७ क. एवं ९० अं. ० क. है इन दोनों का अन्तर ६ अं. ५३ क. (=४१३ क.) है, यह ३० मि. की दशमलग्न की गति है। इन कलाओं को सां. का. के शेष मि. (५ घं. ५१ मि.- ५घं. ३० मि.=२१ मि.) से गुणा करके ३० का भाग देने पर २८९ क. (=४अं.४९क.) मिली। इन्हें "स्थूलदशमलग्न" में जोड़ने पर ८७ अं. ५६ क. सायन दशमलग्न स्पष्ट हुआ। इसमें से इस दिन का अयनांश २३ अं. २६ क. घटा देने पर ६४ अं.३० क. (=२ रा.४अं. ३०क.) इष्टकालिक निरयण दशम लग्न हुआ।

ध्यान दें-यहां हमने सां.का. के सेकण्ड और अयनांश की विकलाओं को अनावश्यक समझकर छोड़ दिया है। क्योंकि लग्न और दशम में विकलाओं तक की सूक्ष्मता लाने का प्रयास वस्तुत: अर्थहीन है। कला तक की सूक्ष्मता भी लग्न में संभव नहीं है; इस तथ्य का विस्तार पूर्वक स्पष्टीकरण गणित द्वारा "गणकमार्तण्ड" में हमने किया है वहाँ पढ़ें।

लग्न सारणी (पूरे भारत के लिए) {भाग २ य}

सम्पातिक काल		सभी स्थलों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	कं.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
०	०	०	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४
०	३०	८	१०	१०६	१४	१०७	३४	१०८	५७	११०	२४	१११	५३
१	०	१६	१७	११२	४९	११४	४	११५	२२	११६	४३	११८	७
१	३०	२४	१८	११९	२२	१२०	३३	१२१	४५	१२३	०	१२४	१७
२	०	३२	११	१२५	५६	१२७	०	१२८	७	१२९	१७	१३०	२५
२	३०	३९	५५	१३२	३१	१३३	२९	१३४	२९	१३५	३०	१३६	[illegible]
३	०	४७	२८	१३९	३	१४०	००	१४०	५२	१४१	४५	१४२	४०
३	३०	५४	५१	१४५	५०	१४६	३४	१४७	१८	१४८	४	१४८	५०
४	०	६२	५	१५२	३४	१५३	१०	१५३	४७	१५४	२४	१५५	९
४	३०	६९	१२	१५९	२२	१५९	५०	१६०	१७	१६०	४६	१६१	१४
५	०	७६	११	१६६	१३	१६६	३२	१६६	५०	१६७	९	१६७	२८
५	३०	८३	७	१७३	६	१७३	१५	१७३	२५	१७३	३४	१७३	४४
६	०	९०	०	१८०	००	१८०	००	१८०	०	१८०	०	१८०	०
६	३०	९६	५३	१८६	५४	१८६	४५	१८६	३५	१८६	२६	१८६	१६
७	०	१०३	४९	१९३	४७	१९३	२८	१९३	१०	१९२	५१	१९२	३२
७	३०	११०	४८	२००	३८	२००	१०	१९९	४३	१९९	१४	१९८	४६
८	०	११७	५५	२०७	२६	२०६	५०	२०६	१३	२०५	३६	२०४	५९
८	३०	१२५	५९	२१४	१०	२१३	२६	२१२	४२	२११	५६	२११	१०
९	०	१३२	३२	२२०	५१	२२०	००	२१९	८	२१८	१५	२१७	२०
९	३०	१४०	५	२२७	२९	२२६	३१	२२५	३१	२२४	३०	२२३	२८
१०	००	१४७	४९	२३४	४	२३३	०	२३१	५३	२३०	४५	२२९	३५
१०	३०	१५५	४२	२४०	३८	२३९	२७	२३८	१५	२३७	०	२३५	४३
११	०	१६३	४३	२४७	११	२४५	५६	२४४	३८	२४३	१७	२४१	५३
११	३०	१७१	५०	२५३	४६	२५२	२६	२५१	३	२४९	३६	२४८	७
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	३	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६

साम्पातिक काल		सभीस्थलों के लिए		अंक्षाश २३° (उ.)		अंक्षाश २६° (उ.)		अंक्षाश २९° (उ.)		अंक्षाश ३२° (उ.)		अंक्षाश ३५° (उ.)	
		दशम		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न		लग्न	
घं.	मि.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	कं.	अं.	क.	अं.	क.	अं.	क.
१२	०	१८०	००	२६०	२५	२५९	१	२५७	३४	२५६	३	२५४	२६
१२	३०	१८८	१०	२६७	१०	२६५	४३	२६४	१२	२६२	३६	२६०	५४
१३	०	१९६	१७	२७४	३	२७२	३४	२७१	०	२६९	२१	२६७	३३
१३	३०	२०४	१८	२८१	९	२७९	३९	२७८	२	२७६	१९	२७४	२९
१४	०	२१२	११	२८८	३०	२८६	५९	२८५	२२	२८३	३६	२८१	४५
१४	३०	२१९	५५	२९६	९	२९४	४०	२९३	४	२९१	२०	२८९	२६
१५	००	२२७	२८	३०४	१०	३०२	४४	३०१	१२	२९९	२८	२९७	३८
१५	३०	२३४	५१	३१२	३३	३११	१५	३०९	४८	३०८	१३	३०६	२५
१६	०	२४२	५	३२१	२२	३२०	१३	३१८	५६	३१७	३०	३१५	५४
१६	३०	२४९	१२	३३०	३५	३२९	३९	३२८	३६	३२७	२५	३२६	४
१७	०	२५६	११	३४०	९	३३९	३०	३३८	४५	३३७	५४	३३६	५८
१७	३०	२६३	७	३५०	००	३४९	४०	३४९	१६	३४८	४९	३४८	१९
१८	०	२७०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१८	३०	२७६	५३	१०	०	१४	२०	१०	४४	११	११	११	४१
१९	०	२८३	४९	१९	५१	२०	३०	२१	१५	२२	६	२३	४
१९	३०	२९०	४८	२९	२५	३०	२१	३१	२४	३२	३५	३३	५६
२०	०	२९७	५५	३८	३८	३९	४७	४१	४	४२	३०	४४	६
२०	३०	३०५	९	४७	२७	४८	४५	५०	१२	५१	४७	५३	३५
२१	०	३१२	३२	५५	५०	५७	१६	५८	४८	६०	३२	६२	२२
२१	३०	३२०	५	६३	५१	६५	२०	६६	५६	६८	४०	७०	३४
२२	०	३२७	४९	७१	३०	७३	१	७४	३८	७६	२४	७८	१५
२२	३०	३३५	४२	७८	५१	८०	२१	८१	५८	८३	४१	८५	३१
२३	०	३४३	४३	८५	५६	८७	२६	८९	०	९०	३९	९२	२६
२३	३०	३५१	५०	९२	५०	९४	१७	९५	४८	९७	२४	९९	६
२४	०	०००	०	९९	३५	१००	५९	१०२	२६	१०३	५७	१०५	३४

साम्पातिककाल कोष्ठक नं. १

सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.	सन्	घं.	मि.	से.
१९७१	६	३९	०७	१९७८	६	४०	१९	१९८५	६	४१	३२	१९९२	६	३८	४७	१९९९	६	३९	५९	२००६	६	४१	११	२०१३	६	४२	२३	२०२०	६	३९	३९
१९७२	६	३८	१०	१९७९	६	३९	२२	१९८६	६	४०	३५	१९९३	६	४१	४६	२०००	६	३९	०२	२००७	६	४०	१४	२०१४	६	४१	२६	२०२१	६	४२	३८
१९७३	६	४१	१०	१९८०	६	३८	२४	१९८७	६	३९	३८	१९९४	६	४०	४९	२००१	६	४२	०१	२००८	६	३९	१७	२०१५	६	४०	२९	२०२२	६	४१	४०
१९७४	६	४०	१२	१९८१	६	४१	२३	१९८८	६	३८	४०	१९९५	६	३९	५२	२००२	६	४१	०४	२००९	६	४२	१६	२०१६	६	३९	३१	२०२३	६	४०	४३
१९७५	६	३९	१५	१९८२	६	४०	२६	१९८९	६	४१	३९	१९९६	६	३८	५४	२००३	६	४०	०७	२०१०	६	४१	१९	२०१७	६	४२	३१	२०२४	६	३९	४६
१९७६	६	३८	१७	१९८३	६	३९	२९	१९९०	६	४०	४१	१९९७	६	४१	५३	२००४	६	३९	०९	२०११	६	४०	२१	२०१८	६	४१	३३	२०२५	६	४२	४५
१९७७	६	४१	१६	१९८४	६	३८	३२	१९९१	६	३९	४४	१९९८	६	४०	५६	२००५	६	४२	०९	२०१२	६	३९	२४	२०१९	६	४०	३६	२०२६	६	४१	४८

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० २

ता.	जनवरी			फरवरी			मार्च			अप्रैल			मई			जून		
↓	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.
१	०	०	०	२	२	१३	३	५२	३७	५	५४	५१	७	५३	७	९	५५	२१
२	०	३	५७	२	६	९	३	५६	३३	५	५८	४७	७	५७	४	९	५९	१७
३	०	७	५३	२	१०	६	४	०	३०	६	२	४३	८	१	०	१०	३	१४
४	०	११	५०	२	१४	२	४	४	२६	६	६	४०	८	४	५७	१०	७	१०
५	०	१५	४६	२	१७	५९	४	८	२३	६	१०	३६	८	८	५३	१०	११	७
६	०	१९	४३	२	२१	५५	४	१२	१९	६	१४	३३	८	१२	५०	१०	१५	३
७	०	२३	३९	२	२५	५२	४	१६	१६	६	१८	२९	८	१६	४६	१०	१९	०
८	०	२७	३६	२	२९	४८	४	२०	१२	६	२२	२६	८	२०	४३	१०	२२	५६
९	०	३१	३२	२	३३	४५	४	२४	९	६	२६	२२	८	२४	३९	१०	२६	५३
१०	०	३५	२९	२	३७	४२	४	२८	५	६	३०	१९	८	२८	३६	१०	३०	४९
११	०	३९	२५	२	४१	३९	४	३२	२	६	३४	१६	८	३२	३२	१०	३४	४६
१२	०	४३	२२	२	४५	३५	४	३५	५९	६	३८	१३	८	३६	२९	१०	३८	४२
१३	०	४७	१८	२	४९	३२	४	३९	५६	६	४२	९	८	४०	२५	१०	४२	३९
१४	०	५१	१५	२	५३	२८	४	४३	५२	६	४६	६	८	४४	४२	१०	४६	३५
१५	०	५५	१२	२	५७	२५	४	४७	४९	६	५०	२	८	४८	१८	१०	५०	३२
१६	०	५९	८	३	१	२१	४	५१	४५	६	५३	५९	८	५२	१५	१०	५४	२८
१७	१	३	४	३	५	१८	४	५५	४२	६	५७	५५	८	५६	११	१०	५८	२५
१८	१	७	१	३	९	१४	४	५९	३८	७	१	५२	९	०	८	११	२	२१
१९	१	१०	५७	३	१३	११	५	३	३५	७	५	४८	९	४	४	११	६	१८
२०	१	१४	५४	३	१७	८	५	७	३१	७	९	४५	९	८	१	११	१०	१५
२१	१	१८	५१	३	२१	५	५	११	२८	७	१३	४१	९	११	५८	११	१४	११
२२	१	२२	४८	३	२५	१	५	१५	२५	७	१७	३८	९	१५	५५	११	१८	८
२३	१	२६	४४	३	२८	५८	५	१९	२२	७	२१	३४	९	१९	५१	११	२२	५
२४	१	३०	४१	३	३२	५४	५	२३	१८	७	२५	३१	९	२३	४८	११	२६	१
२५	१	३४		३	३६	५१	५	२७	१५	७	२९	२८	९	२७	४४	११	२९	५८
२६	१	३८	३४	३	४०	४७	५	३१	११	७	३३	२४	९	३१	४१	११	३३	५४
२७	१	४१	३०	३	४४	४४	५	३५	८	७	३७	२०	९	३५	३७	११	३७	५१
२८	१	४६	२७	३	४८	४०	५	३९	५	७	४१	१७	९	३९	३४	११	४१	४७
२९	१	५०	२३	३	५२	३७	५	४३	१	७	४५	१३	९	४३	३०	११	४५	४४
३०	१	५४	२०				५	४६	५८	७	४९	१०	९	४७	२७	११	४९	४१
३१	१	५८	१६				५	५०	५४				९	५१	२४			

जुलाई			अगस्त			सितम्बर			अक्तूबर			नवम्बर			दिसम्बर			ता.
घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	घं.	मि.	से.	↓
११	५३	३८	१३	५५	५०	१५		४	१७	५६	२१	१९	५८	३४	२१	५६	५०	१
११	५७	३४	१३	५९	४७	१६	२	०	१८	०	१७	२०	२	३१	२२	०	४७	२
१२	१	३१	१४	३	४४	१६	५	५७	१८	४	१४	२०	६	२७	२२	४	४३	३
१२	५	२७	१४	७	४०	१६	९	५३	१८	८	१	२०	१०	२४	२२	८	४०	४
१२	९	२४	१४	११	३६	१६	१३	५०	१८	१२	७	२०	१४	२०	२२	१२	३६	५
१२	१३	२१	१४	१५	३३	१६	१७	४६	१८	१६	३	२०	१८	१७	२२	१६	३३	६
१२	१७	१७	१४	१९	२९	१६	२१	४३	१८	२०	०	२०	२२	१३	२२	२०	३०	७
१२	२१	१४	१४	२३	२६	१६	२५	४०	१८	२३	५७	२०	२६	१०	२२	२४	२७	८
१२	२५	१०	१४	२७	२३	१६	२९	३७	१८	२७	५४	२०	३०	६	२२	२८	२३	९
[illegible]	[illegible]	६	१४	३१	२०	१६	३३	३३	१८	३१	५०	२०	३४	३	२२	३२	२०	१०
१२	३३	३	१४	३५	१६	१६	३७	३०	१८	३५	४७	२०	३८	०	२२	३६	१६	११
	३६	५९	१४	३९	१३	१६	४१	२६	१८	३९	४३	२०	४१	५६	२२	४०	१३	१२
१२	४०	५६	१४	४३	९	१६	४५	२३	१८	४३	४०	२०	४५	५२	२२	४४	९	१३
१२	४४	५२	१४	४७	६	१६	४९	१९	१८	४७	३७	२०	४९	४९	२२	४८	६	१४
१२	४८	४९	१४	५१	२	१६	५३	१६	१८	५१	३३	२०	५३	४५	२२	५२	२	१५
१२	५२	४५	१४	५४	५९	१६	५७	१२	१८	५५	३०	२०	५७	४२	२२	५५	५९	१६
१२	५६	४२	१४	५८	५५	१७	१	९	१८	५९	२६	२१	१	३९	२२	५९	५६	१७
१३	०	३८	१५	२	५२	१७	५	५	१९	३	२२	२१	५	३६	२३	३	५३	१८
१३	४	३५	१५	६	४८	१७	९	२	१९	७	१९	२१	९	३२	२३	७	४९	१९
१३	८	३२	१५	१०	४५	१७	१२	५८	१९	११	१५	२१	१३	२९	२३	११	४६	२०
१३	१२	२९	१५	१४	४१	१७	१६	५५	१९	१५	१२	२१	१७	२५	२३	१५	४२	२१
१३	१६	२५	१५	१८	३८	१७	२०	५१	१९	१९	८	२१	२१	२२	२३	१९	३९	२२
१३	२०	२२	१५	२२	३४	१७	२४	४८	१९	२३	५	२१	२५	१८	२३	२३	३५	२३
१३	२४	१८	१५	२६	३१	१७	२८	४४	१९	२७	१	२१	२९	१५	२३	२७	३२	२४
१३	२८	१५	१५	३०	२७	१७	३२	४१	१९	३०	५८	२१	३३	११	२३	३१	२८	२५
१३	३२	११	१५	३४	२४	१७	३६	३७	१९	३४	५४	२१	३७	८	२३	३५	२५	२६
१३	३६	८	१५	३८	२०	१७	४०	३४	१९	३८	५१	२१	४१	४	२३	३९	२१	२७
१३	४०	४	१५	४२	१७	१७	४४	३१	१९	४२	४८	२१	४५	१	२३	४३	१८	२८
१३	४४	१	१५	४६	१४	१७	४८	२८	१९	४६	४५	२१	४८	५७	२३	४७	१४	२९
१३	४८	५७	१५	५०	११	१७	५२	२४	१९	५०	४१	२१	५२	५४	२३	५१	११	३०
१३	५१	५४	१५	५४	७				१९	५४	३८				२३	५५	७	३१
															२३	५९	३	३२

लीप इयर हो तो केवल फरवरी के बाद के महीनों में अभीष्ट तारीख में एक जोड़ कर कोष्ठक नं० २ को प्रयोग में लाइए ।

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ३

रेखांश	०°	पू.२०°	पू.४०°	पू.६०°	पू.८०°	पू.१००°	पू.१२०°	पू.१४०°	पू.१६०°
संस्कार सेकण्ड	+५०	+३७	+२४	+११	-२	-१५	-२८	-४१	-५४
रेखांश	१८०°	प.१६०°	प.१४०°	प.१२०°	प.१००°	प.८०	प.६०°	प.४०°	प.२०°
संस्कार सेकण्ड	-६७/+१६१	+१४६	+१४७	+१३१	+११६	+१०३	+८९	+७७	+६३

साम्पातिक काल कोष्ठक नं० ४

मि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५
घं.	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से	मि. से
०	० ००	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ७	० ७	० ८	० ९
१	० १०	० ११	० ११	० १२	० १३	० १४	० १५	० १६	० १६	० १७	० १८	० १९
२	० २०	० २१	० २१	० २२	० २३	० २४	० २५	० २५	० २६	० २७	० २८	० २९
३	० ३०	० ३०	० ३१	० ३२	० ३३	० ३४	० ३४	० ३५	० ३६	० ३७	० ३८	० ३९
४	० ३९	० ४०	० ४१	० ४२	० ४३	० ४४	० ४४	० ४५	० ४६	० ४७	० ४८	० ४८
५	० ४९	० ५०	० ५१	० ५२	० ५३	० ५३	० ५४	० ५५	० ५६	० ५७	० ५७	० ५८
६	० ५९	१ ००	१ १	१ २	१ २	१ ३	१ ४	१ ५	१ ६	१ ७	१ ७	१ ८
७	१ ९	१ १०	१ ११	१ ११	१ १२	१ १३	१ १४	१ १५	१ १६	१ १६	१ १७	१ १८
८	१ १९	१ २०	१ २०	१ २१	१ २२	१ २३	१ २४	१ २५	१ २५	१ २६	१ २७	१ २८
९	१ २९	१ ३०	१ ३०	१ ३१	१ ३२	१ ३३	१ ३४	१ ३४	१ ३५	१ ३६	१ ३७	१ ३८
१०	१ ३९	१ ३९	१ ४०	१ ४१	१ ४२	१ ४३	१ ४३	१ ४४	१ ४५	१ ४६	१ ४७	१ ४८
११	१ ४८	१ ४९	१ ५०	१ ५१	१ ५२	१ ५३	१ ५३	१ ५४	१ ५५	१ ५६	१ ५७	१ ५७
१२	१ ५८	१ ५९	२ ०	२ १	२ २	२ २	२ ३	२ ४	२ ५	२ ६	२ ६	२ ७
१३	२ ८	२ ९	२ १०	२ ११	२ ११	२ १२	२ १३	२ १४	२ १५	२ १६	२ १६	२ १७
१४	२ १८	२ १९	२ २०	२ २०	२ २१	२ २२	२ २३	२ २४	२ २५	२ २५	२ २६	२ २७
१५	२ २८	२ २९	२ २९	२ ३०	२ ३१	२ ३२	२ ३३	२ ३४	२ ३४	२ ३५	२ ३६	२ ३७
१६	२ ३८	२ ३९	२ ३९	२ ४०	२ ४१	२ ४२	२ ४३	२ ४३	२ ४४	२ ४५	२ ४६	२ ४७
१७	२ ४८	२ ४८	२ ४९	२ ५०	२ ५१	२ ५२	२ ५२	२ ५३	२ ५४	२ ५५	२ ५६	२ ५७
१८	२ ५७	२ ५८	२ ५९	३ ०	३ १	३ २	३ २	३ ३	३ ४	३ ५	३ ६	३ ६
१९	३ ७	३ ८	३ ९	३ १०	३ ११	३ ११	३ १२	३ १३	३ १४	३ १५	३ १५	३ १६
२०	३ १७	३ १८	३ १९	३ २०	३ २०	३ २१	३ २२	३ २३	३ २४	३ २५	३ २५	३ २६
२१	३ २७	३ २८	३ २९	३ २९	३ ३०	३ ३१	३ ३२	३ ३३	३ ३४	३ ३४	३ ३५	३ ३६
२२	३ ३७	३ ३८	३ ३८	३ ३९	३ ४०	३ ४१	३ ४२	३ ४३	३ ४३	३ ४४	३ ४५	३ ४६
२३	३ ४७	३ ४८	३ ४८	३ ४९	३ ५०	३ ५१	३ ५२	३ ५२	३ ५३	३ ५४	३ ५५	३ ५६

अयनांश सारणी नं० १

ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश	ई. सन्	अयनांश
	अं. क. वि.		अं. क. वि.		अं. क. वि.
१९५१	२३ १० २१	१९७५	२३ ३० २८	१९९९	२३ ५० ३४
१९५२	२३ ११ १२	१९७६	२३ ३१ १७	२०००	२३ ५१ २४
१९५३	२३ १२ ०२	१९७७	२३ ३२ ०८	२००१	२३ ५२ १५
१९५४	२३ १२ ५२	१९७८	२३ ३२ ५६	२००२	२३ ५३ ०५
१९५५	२३ १३ ४२	१९७९	२३ ३३ ४६	२००३	२३ ५३ ५५
१९५६	२३ १४ ३३	१९८०	२३ ३४ ३६	२००४	२३ ५४ ४६
१९५७	२३ १५ २३	१९८१	२३ ३५ २६	२००५	२३ ५५ ३६
१९५८	२३ १६ १३	१९८२	२३ ३६ २०	२००६	२३ ५६ २६
१९५९	२३ १७ ०३	१९८३	२३ ३७ १०	२००७	२३ ५७ १७
१९६०	२३ १७ ५४	१९८४	२३ ३८ ००	२००८	२३ ५८ ०७
१९६१	२३ १८ ४४	१९८५	२३ ३८ ५१	२००९	२३ ५८ ५७
१९६२	२३ १९ ३५	१९८६	२३ ३९ ४१	२०१०	२३ ५९ ४८
१९६३	२३ २० २५	१९८७	२३ ४० ३१	२०११	२४ ०० ३८
१९६४	२३ २१ १५	१९८८	२३ ४१ २१	२०१२	२४ ०१ २८
१९६५	२३ २२ ०५	१९८९	२३ ४२ १२	२०१३	२४ ०२ १८
१९६६	२३ २२ ५५	१९९०	२३ ४३ ०२	२०१४	२४ ०३ ०९
१९६७	२३ २३ ४६	१९९१	२३ ४३ ५२	२०१५	२४ ०३ ५९
१९६८	२३ २४ ३६	१९९२	२३ ४४ ४२	२०१६	२४ ०४ ४९
१९६९	२३ २५ २६	१९९३	२३ ४५ ३३	२०१७	२४ ०५ ४०
१९७०	२३ २६ १६	१९९४	२३ ४६ २३	२०१८	२४ ०६ ३०
१९७१	२३ २७ ०७	१९९५	२३ ४७ १३	२०१९	२४ ०७ २०
१९७२	२३ २७ ५७	१९९६	२३ ४८ ०३	२०२०	२४ ०८ १०
१९७३	२३ २८ ४७	१९९७	२३ ४८ ५४	२०२१	२४ ०९ ०१
१९७४	२३ २९ ३७	१९९८	२३ ४९ ४४	२०२२	२४ ०९ ५१

अयनांश सारणी नं. २

तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८	तारीख	१	४	७	१०	१३	१६	१९	२२	२५	२८
	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.		वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.	वि.
जनवरी	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	जुलाई	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२८	२९
फरवरी	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	अगस्त	२९	३०	३०	३१	३१	३१	३२	३२	३३	३३
मार्च	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	सितम्बर	३४	३४	३४	३५	३५	३६	३६	३६	३७	३७
अप्रैल	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	अक्तूबर	३८	३८	३९	३९	३९	४०	४०	४१	४१	४२
मई	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	नवम्बर	४२	४२	४३	४३	४४	४४	४४	४५	४५	४६
जून	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	दिसम्बर	४६	४७	४७	४७	४८	४८	४९	४९	४९	५०

महर्षि–पराशरोक्त विंशोत्तरी महादशान्तर्दशा ज्ञान–चक्र

सूर्यदशा वर्ष ६ एक घड़ी में ३६ दिन	चंद्रदशा वर्ष १० एक घड़ी में ६० दिन	भौम दशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	राहु दशा वर्ष १८ एक घड़ी में १०८ दिन	गुरु दशा वर्ष १६ एक घड़ी में ९६ दिन	शनिदशा वर्ष १९ एक घड़ी में ११४ दिन	बुधदशा वष १७ एक घड़ी में १०२ दिन	केतुदशा वर्ष ७ एक घड़ी में ४२ दिन	शुक्रदशा वर्ष २० एक घड़ी में १२० दिन
कृ. उफा. उषा	रो. ह. श्रव.	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. श.	पुन. वि. पूभा.	पु. अनु. उभा.	आश्ले. ज्ये. रे.	म. मू. अश्वि.	पूफा. पूषा. भ.
तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्	तन्मध्येऽन्तरम्
ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.	ग्र. व. मा. दि.
र. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	बृ. २ १ १८	श. ३ ० ३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	बृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ९	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	र. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	बृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ९	शु. २ १० ०	र. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	बृ. १ ४ ०	श. १ १ ९	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	र. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
बृ. ० ९ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	र. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	र. ० ९ १८	चं. १ ७ ०	मं. ० ११ २७	रा. १ ० १८	बृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	र. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ९	रा. २ ६ १८	बृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	र. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ०६	रा. २ १० ६	बृ. २ ३ ६	श. १ १ ९	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	र. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	बृ. २ ६ १२	श. २ ८ ९	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

शिवोक्त योगिनी–दशाऽन्तर्दशा ज्ञानार्थ चक्र

मंगला व. १	पिंगला व. २	धान्या व. ३	भ्रामरी व. ४	भद्रा व. ५	उल्का व. ६	सिद्धा व. ७	संकटा व. ८	दशा तथा वर्ष
चन्द्र	सूर्य	गुरु	मंगल	बुध	शनि	शुक्र	केतु	दशेश ग्रह
आर्द्रा चि. श्रव.	पुन. स्वा. ध.	पुष्य वि. श.	अश्वि आश्ले अनु पूभा	भ. म. ज्ये. उ.भा.	कृ. पूफा. मू. रे.	रो. उ.फा. पूषा.	मृ. ह. उ.षा.	जन्म नक्षत्र
मं. ० १०	पिं. १ १०	धा. ३ ०	भ्रा. ५ १०	भ. ८ १०	उ. १२ ०	सि. १६ १०	सं. २१ १०	
पिं. ० २०	धा. २ ०	भ्रा. ४ ०	भ. ६ २०	उ. १० ०	सि. १४ ०	सं. १८ २०	मं. २ २०	
धा. १ ०	भ्रा. २ २०	भ. ५ ०	उ. ८ ०	सि. ११ २०	सं. १६ ०	मं. २ १०	पिं. ५ १०	
भ्रा. १ १०	भ. ३ १०	उ. ६ ०	सि. ९ १०	सं. १३ १०	मं. २ ०	पिं. ४ २०	धा. ८ ०	अन्तर्दशा के
भ. १ २०	उ. ४ ०	सि. ७ ०	सं. १० २०	मं. १ २०	पिं. ४ ०	धा. ७ ०	भ्रा. १० २०	मास, दिन
उ. २ ०	सि. ४ २०	सं. ८ ०	मं. १ १०	पिं. ३ १०	धा. ६ ०	भ्रा. ९ १०	भ. १३ १०	
सि. २ १०	सं. ५ १०	मं. १ ०	पिं. २ २०	धा. ५ ०	भ्रा. ८ ०	भ. ११ २०	उ. १६ ०	
सं. २ २०	मं. ० २०	पिं. २ ०	धा. ४ ०	भ्रा. ६ २०	भ. १० ०	उ. १४ ०	सि. १८ २०	

वर्षकुण्डली में १२ भावों में स्थित ग्रहों का फल

ग्रह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य	चिन्ता	नृपभय	धनलाभ	हानि	कष्ट	शत्रुनाश	पीड़ा	कष्ट	धर्मनाश	सुख	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष	शत्रुनाश	सुख	पीड़ा	कष्ट	दुःख	भाग्योदय	विजय	धनलाभ	व्यय
भौम	ज्वर	धननाश	जय	व्यसन	दुर्गति	शत्रुनाश	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्यलाभ	धनलाभ	विरोध
बुध	सुख	धनलाभ	सुख	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुख	मानलाभ	सुखलाभ	विग्रह
गुरु	सुख	धनलाभ	जय	वाहनलाभ	पुत्रलाभ	कष्ट	सुख	रोग	धर्मलाभ	राज्यलाभ	धनलाभ	शोक
शुक्र	मानप्राप्ति	धनप्राप्ति	कीर्तिलाभ	सुखलाभ	धनलाभ	शत्रुभीति	स्त्रीसुख	कष्ट	धर्मोदय	मानलाभ	धनलाभ	व्यय
शनि	वायुरोग	पीड़ा	धनलाभ	दुःख	पुत्रप्राप्ति	जय	स्त्रीकष्ट	रोग	भाग्यहानि	धनहानि	धनलाभ	चिन्ता
राहु	सिरदर्द	राजभय	सुख	दुःख	बुद्धिनाश	शत्रुनाश	रोगभय	दुःख	हानि	विजय	सुखलाभ	व्याधि
केतु	चिन्ता	क्लेश	आरोग्य	राजभय	दुर्बुद्धि	सुख	क्लेश	पीड़ा	भाग्यनाश	धनलाभ	लाभ	शोक
मुन्था	सुख	यश, अर्थ	पुष्टि	दुःख	सुखप्राप्ति	कष्ट	व्यसन	दुःख	भाग्योदय	राज्यप्राप्ति	लाभ	कष्ट

दशा का भुक्तभोग्य

गत नक्षत्र की घट्यादि को ६० में से घटाकर इष्ट--घटीपल जोड़ने से भयात होता है। ६० में से घटाए हुए अंकों में प्रवेश नक्षत्र के घट्यादि जोड़ने से भभोग होता है। भयात और भभोग की घटियों को ६० से गुणा कर पल बना लें। भयात के पलों को दशा के वर्षों से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध अंक वर्ष; फिर शेषांक को १२ से गुणा करें, भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध मास; फिर शेषांक को ३० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध दिन, फिर शेषाक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों का भाग दें, लब्धांक घटी; फिर शेषांक को ६० से गुणाकर भभोग के पलों से भाग दें, लब्ध पल होंगे। यह वर्षादि दशा का भुक्त होता है। इसको दशा के वर्षों में से घटाने पर भोग्य दशा होगी।

सूर्यसिद्धान्तीय वर्षप्रवेश-सारणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	४	५	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४९	५	२१	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

गताब्द	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	१	२	३	४	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३
घटी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०

गताब्द	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६
घटी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४	५०	५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

सूचना– वेधसिद्ध वर्षमान सूर्य सिद्धान्तीय वर्षमान से ८.५पल कम है। अतः सूक्ष्म-वर्षप्रवेशकालिक इष्ट निकालने के लिए गताब्दों को ८.५ से गुणा करके पलात्मक फल को सारणी से साधित इष्ट में से घटा देना चाहिए। यही सूक्ष्म-वर्ष मानानुसारी इष्ट होगा, चाहो तो इस इष्ट पर भी फल अनुभव करें।

वर्षफलसाधन-प्रकारः– (१) अभीष्ट सवत् (जिस संवत् का वर्ष निकालना हो) में से जन्म समय का सवत् हीन करने से जो शेष बचे उसे गतवर्ष, (गताब्द) जानें। स्मरण रहे, कि– मेषार्कप्रवेश से प्रथम और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के अनंतर का यदि वर्ष करना हो तो पिछले संवत् से करना होगा–वर्षायनर्तुयुगपूर्वकमत्र सौरात्– इस प्रकार गताब्द निकालकर उसी गताब्द अंक के नीचे सारणी मे जो वारादि अंक हैं, उनमें जन्म का वार, इष्ट, घड़ी, पल जोड़ने से वर्षप्रवेशकालिक वारादि इष्ट ज्ञात हो जाता है। यदि नीचे घट्यादि अंक साठ से अधिक हों तो ६० का भाग देने से लब्धांक को ऊपर युक्त करते जाना। ऊपर से वारांक में सात से अधिक आ जाए तो सात का भाग देकर लब्ध त्याग देने से शेष को वर्षप्रवेश समय का स्पष्ट वारादि इष्ट समझें।

(२) जिस दिन जन्म समय के स्पष्ट सूर्यतुल्य वर्ष में सूर्य मिले, उसी दिन वर्षप्रवेश जानना। प्रविष्टो के अनुसार कभी-कभी वार नहीं मिलता। वहां पर गणितागत वार को ठीक जानें। इस इष्ट के अनुसार स्वदेशीय लग्नसारणी से लग्नसाधन करके वर्षकुण्डली लगाएं।

मुन्थानयनप्रकार– गताब्दसंख्या में जन्मलग्न जोड़कर उसमें १२ का भाग देना, जो शेष बचे उसे मुन्था जानें। यह मुन्था प्रति दिन पांच कला चलती है।

मुद्दा दशा– गत वर्ष में जन्मनक्षत्र जोड़कर, उसमें से दो घटाएं, ९ का भाग देने से जो शेष बचे उसे दशा समझें। १ शेष से सूर्य, २ से चन्द्रमा, ३ से मंगल, ४ से राहु, ५ से गुरु, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, और ९ शेष से शुक्र की दशा जानें।

दशा के दिन– सूर्य के १८ दिन, चन्द्रमा के ३०, मंगल २१, राहु ५४, गुरु ४८, शनि ५७, बुध ५१, केतु २१, शुक्र ६० – ये दशा के दिन हैं।

हर्ष स्थान बल– सूर्य वर्ष लग्न से ९, चन्द्रमा ३, मंगल ६, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५वें और शनि १२ वें स्थान में हों तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वोच्च बल– सू. १।५, चं. २।४, मं. १।८।१०, बुध ३।६, गुरु ९।१२।४, शु २।७।१२ तथा श. १०।११ ७ राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुषस्त्री-ग्रह-बल– स्त्रीग्रह (चं.,बु.,शु.,श) १।२।३।७।८।९ और पुरुष ग्रह (सू., मं., बृ.) ४।५।६।१०।११।१२वें स्थानों में ५ बल देते हैं। दिनरात्रि बल–दिन के वर्षेष्ट में पुरुषग्रह ५ बल देते हैं और रात्रि के इष्ट में स्त्रीग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
दिनलग्नपति→	सू.	शु.	श.	शु.	गु.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	गु..	चं.
रात्रिलग्नपति→	गु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	गु.	चं.

वर्ष में दृष्टि-ज्ञान और फल

⁂ वर्ष में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो उस भाव से ५वें, ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य में शीघ्र सफलता, सुख, प्रेम, लाभ और जिन मनुष्यों के साथ पहले शत्रुता होती है, उनसे प्रेम होता है। ⁂ तीसरे ग्यारहवें गुप्त मित्र दृष्टि से देखता है। फल– कार्य कठिनता से एवं गुप्त भाव से सफल हो।⁂ पहले, सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होती है। फल– शत्रुता करे, मित्र से बैर, धनहानि, बनते काम को बिगड़ना आदि फल होते हैं।⁂ ४–१०वें गुप्तशत्रु दृष्टि से देखता है। फल– कार्य बड़ी कठिनता से सफल हो, गुप्तरूप से शत्रु भी उत्पन्न होते हैं।

अथ वर्षेश निर्णयः– जन्म लग्नेश १, वर्ष लग्नेश २, मुन्थेश ३, त्रैराशीश ४, समयेश ५ (दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो उस राशि का स्वामी और रात्रि में हो तो चन्द्रराशि का स्वामी समयेश होता है।) इन पांच अधिकारियों में से जो सबसे बलवान् हो और लग्न को देखे वह वर्षेश होता है। यदि पांचों में से कोई भी लग्न को न देखता हो तो उन में से जो अधिक बलवान् हो वही वर्षेश्वर होगा। कई ग्रहों का बल समान हों तो जिसकी लग्न पर अधिक दृष्टि हो वह और बल, दृष्टि, अधिकार– तीनों समान हों तो मुन्थेश ही वर्षेश हो। यदि चन्द्रमा वर्षेश प्राप्त हो तो जिससे वह इत्थशाल करे या जिसकी राशि में बैठा हो वही वर्षेश हो। फल– वर्षेश ६। ८। १२ वें व अस्तंगत, हीनबली हो तो वर्ष में दुःख, शोक, चिन्ता, भयविशेष होगा। यदि बलिष्ठ होकर शुभ स्थान में सुयोग के साथ बैठा हो तो वर्ष में सुखैश्वर्य की वृद्धि हो।

वर्ष में तबदीली का योग– वर्षकुण्डली में लग्नेश– तृतीयेश वा चतुर्थेश–नवमेश एक घर में हों या एक-दूसरे को मित्रदृष्टि से देखें तो उस वर्ष तबदीली होगी। अगर वर्षलग्नेश वक्री हो और वह मित्रग्रह से दृष्ट हो तो भी तबदीली का योग बनेगा।

सूक्ष्म, शुद्ध वर्षमान के अनुसार वर्षप्रवेशकाल

वेध द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि– सूर्यसिद्धान्तीय वर्षमान वास्तविक (शुद्ध) वर्षमान से १/३ मिनट अधिक है। शुद्ध वर्षफल बनाने के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल का होना आवश्यक है। हम यहां "सूक्ष्म वर्ष–प्रवेश–सारणी" दे रहे हैं। जो दैवज्ञ वर्षफल के लिए सूक्ष्म वर्षप्रवेशकाल जानना चाहते हैं, उन्हें इसी सारणी का प्रयोग करना चाहिए।

इस सारणी में घं. मि. का प्रयोग है, अतः इससे वर्षप्रवेशकाल जानने के लिए जातक के जन्म का स्टैं. टा. ही यहां प्रयोग में लाना होगा। जैसे– मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेशकाल जानना है। उस व्यक्ति के जन्म का वार चन्द्र और जन्मकाल (भा. स्टैं. टा.) ८घं. २०मि. (प्रातः) है। उसके वारादि जन्मकाल (2 वा. 8 घं. 20 मि.) में सारणी से गताब्द 9 द्वारा प्राप्त वारादि काल 4 वा. 7 घं. 22 मि. जोड़ने पर 6 वा. 15 घं. 42 मि. मिले। इसका अर्थ हुआ कि इस व्यक्ति के दसवें वर्ष का प्रवेश शुक्रवार को 15 घं. 42 मि. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा।

ध्यान रहे– इस सारणी के प्रयोग से प्राप्त वार रात्रि के 12 बजे बदलने वाला होगा। अतः यहां प्रयोग में लाया जाने वाला जन्मकालिक वार भी इसी प्रकार होना चाहिए।

सूक्ष्म वर्षप्रवेश सारणी

गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.	गताब्द	वार घं. मि.
१	१/६/९	१३	२/७/५९	२५	३/९/४९	३७	४/११/३९	४९	५/१३/२९	६१	६/१५/१९	७३	०/१७/९	८५	१/१८/५९	९७	२/२०/४९	१०९	३/२२/३९
२	२/१२/१८	१४	३/१४/८	२६	४/१५/५८	३८	५/१७/४८	५०	६/१९/३८	६२	०/२१/२८	७४	१/२३/१८	८६	३/१/८	९८	४/२/५८	११०	५/४/४८
३	३/१८/२७	१५	४/२०/१७	२७	५/२२/७	३९	६/२३/५७	५१	१/१/४७	६३	२/३/३७	७५	३/५/२७	८७	४/७/१७	९९	५/९/७	१११	६/१०/५७
४	५/०/३७	१६	६/२/२७	२८	०/४/१६	४०	१/६/६	५२	२/७/५६	६४	३/९/४६	७६	४/११/३६	८८	५/१३/२६	१००	६/१५/१६	११२	०/१७/६
५	६/६/४६	१७	०/८/३६	२९	१/१०/२६	४१	२/१२/१६	५३	३/१४/०६	६५	४/१५/५६	७७	५/१७/४५	८९	६/१९/३५	१०१	०/२१/२५	११३	१/२३/१५
६	०/१२/५५	१८	१/१४/४५	३०	२/१६/३५	४२	३/१८/२५	५४	४/२०/१५	६६	५/२२/५	७८	६/२३/५५	९०	१/१/४५	१०२	२/३/३४	११४	३/५/२४
७	१/१९/०४	१९	२/२०/५४	३१	३/२२/४४	४३	५/०/३४	५५	६/२/२४	६७	०/४/१४	७९	१/६/४	९१	२/७/५४	१०३	३/९/४४	११५	४/११/३४
८	३/१/१३	२०	४/३/३	३२	५/४/५३	४४	६/६/४३	५६	०/८/३३	६८	१/१०/२३	८०	२/१२/१३	९२	३/१४/३	१०४	४/१५/५३	११६	५/१७/४३
९	४/७/२२	२१	५/९/१२	३३	६/११/२	४५	०/१२/५२	५७	१/१४/४२	६९	२/१६/३२	८१	३/१८/२२	९३	४/२०/१२	१०५	५/२२/२	११७	६/२३/५२
१०	५/१३/३२	२२	६/१५/२२	३४	०/१७/११	४६	१/१९/१	५८	२/२०/५१	७०	३/२२/४१	८२	५/०/३१	९४	६/२/२१	१०६	०/४/११	११८	१/६/१
११	६/१९/४१	२३	०/२१/३१	३५	१/२३/२१	४७	३/१/११	५९	४/०३/१	७१	५/४/५०	८३	६/६/४०	९५	०/८/३०	१०७	१/१०/२०	११९	२/१२/१०
१२	१/१/५०	२४	२/३/४०	३६	३/५/३०	४८	४/७/२०	६०	५/९/१०	७२	६/११/०	८४	०/१२/५०	९६	१/१४/४०	१०८	२/१६/२९	१२०	३/१८/१९

वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए।

जिस प्रकार जातक का जन्म जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लग्न का निर्णय किया जाता है, ठीक उसी प्रकार वर्षप्रवेश के समय जातक जिस स्थान पर हो उसी स्थान के अक्षांश–रेखांशानुसार ही वर्षप्रवेश का लग्न होना चाहिए, क्योंकि वर्ष प्रवेश भी जातक का एक 'उपजन्म' ही है। इस प्रकार न्यूयार्क (अमेरिका) में जन्म लेने वाला जातक यदि अपने किसी वर्ष के प्रवेश के समय दिल्ली (भारत) में मौजूद है तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न दिल्ली के अक्षांश–रेखांशानुसार ही लगाना चाहिए। इसी तरह यदि दिल्ली में जन्म लेने वाला जातक वर्षप्रवेश के समय न्यूयार्क में हो तो उसके उस वर्ष का प्रवेशकालीन लग्न न्यूयार्क के अक्षांश–रेखांशानुसार ही होना चाहिए। क्योंकि प्राचीनकाल में अधिकतर लोग अपने जन्मस्थान को छोड़कर बहुत कम दूसरे स्थान पर जाते थे, अतः ज्योतिषी लोगों में वर्षप्रवेश के लग्न को जन्मस्थान से ही जोड़ने की परम्परा बन गई, जो तर्कसंगत नहीं है।

इस विषय को स्पष्टता से जानने के लिए 'सं. 2052 वि. के' "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृ. 41/42 पर मेरा लेख "वर्षप्रवेश का लग्न किस स्थान का होना चाहिए?" पढ़ें।

मास प्रवेशकाल

भिन्न–भिन्न राशियों में संचार करता हुआ सूर्य जब–जब जातक के जन्म–कालिक स्पष्ट सूर्य की अंश, कला, दिकलाओं के तुल्य अंश, कला, विकलाओं पर आता है, तब–तब जातक के मासों का प्रारम्भ (मासप्रवेश) होता है। उदाहरणार्थ– यदि जातक का जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य 2 रा. 10 अं. 25 क. 40 वि. है, तो जब जब (सूर्य) जातक की आयु के विभिन्न वर्षों में मेष आदि राशियों के 10 अं. 25 क. 40 वि. पर पहुँचेगा– इसका निर्णय सूर्य की मास–प्रवेश वाले दिन की गति और उस दिन के पंचांगस्थ दैनिक सूर्य तथा मास–प्रवेशकालिक सूर्य के अन्तर से त्रैराशिक द्वारा किया जा सकता है। (इसके लिए सं. 2050 वि. के "श्रीमार्त्तण्ड पंचांग" में पृष्ठ 41 पर दिया गया मेरा लेख "स्पष्टमान से मास–प्रवेशकाल" पढ़ें।)

–प्रियव्रत शर्मा

ग्रहशील-चक्र

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहाः
३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	३/१०	०	३/१०	३/१०	एकपाददृष्टिः
५/९	५/९	५/९	५/९	०	५/९	५/९	५/९	५/९	द्विपाददृष्टिः
४/८	४/८	०	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	४/८	त्रिपाददृष्टिः
७	७	४/७/८	७	५/७/९	७	३/७/१०	७	७	सम्पूर्णदृष्टिः
चं. मं. गु.	र. बु.	र. बृ. चं.	र. रा. शु.	र. चं. मं.	बु. रा. श.	बु. रा. शु.	बु. श. शु.	बुध	मित्र—ग्रहाः
बु.	मं.श.गु.शु.	शु. श.	मं. गु. श.	रा. श.	मं. गु.	गु.	गु.	०	समग्रहाः
श. रा. शु.	रा.	बु. रा.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.	र. चं. मं.	०	शत्रुग्रहाः
मेष १०	वृष ३	मकर २८	कन्या १५	कर्क ५	मीन २७	तुला २०	मिथुन १५	धनु १५	उच्चराशयः परमोच्चांशाः
तुला १०	वृश्चिक ३	कर्क २८	मीन १५	मकर ५	कन्या २७	मेष २०	धनु १५	मिथुन १५	नीचराशयः नीचांशाः
सिंह	कर्क	मे., वृश्चि.	मि., क.	ध., मी.	वृष, तुला	म., कुं.	कन्या	मीन	स्वगृहाणि
सिंह	वृष	मेष	कन्या	धनु	तुला	कुम्भ	कर्क	मकर	मूलत्रिकोण
क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	शूद्र	विप्र	विप्र	शूद्र निषाद	निषाद	निषाद	वर्णः
पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष	पुरुष, स्त्री, नपुंसकः
मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रभात	प्रभात	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	अपराह्न	समय
पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैर्ऋत्य	नैर्ऋत्य	दिशा
सुवर्ण	रौप्य	सुवर्ण	कांस्य	सुवर्ण	रौप्य	लौह	लौह	लौह	धातु
चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगपद	अपद	अपद	पाद
उग्र	सौम्य	उग्र	शुभ	शुभ	शुभ	पाप	पाप	पाप	सौम्यादि
सत्त्व	सत्त्व	तम	रज	सत्त्व	रज	तम	तम	तम	गुण
स्थिर	चर	चर	द्विस्व.	स्थिर	चर	पक्षी,स्थिर	चर	पक्षी	चरादि
तिक्त	क्षार	कटु	सर्वरस	मधुर	अम्ल	कषाय	कषाय	कषाय	रस
पशु	जलभू.	दुग्ध	श्मशान	वाणी	जल	उत्कट	ऊषर	ऊषर	भूमि
पित्त	श्लेष्म	पित्त	समधातु	समधातु	कफशुक्र	वायु	धूम्र	वायु	पित्तादि
वृद्ध	युवा	युवा	युवा	वृद्ध	युवा	अतिवृद्ध	वृद्ध	वृद्ध	अवस्था
पाटल	गौरश्वेत	रक्त	नील	पीत	श्वेत	नील	धूम्र	धूम्र	रंग
मूल	जीव	धातु	जीव	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु	धात्वादि
वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर	स्थानम्

वर्ष में योगिनी के लिए जन्म-नक्षत्रसंख्या में गताब्द जोड़ें, 3 और जोड़ें, 8 से भाग दें, तो शेष मंगलादि योगिनी दशा होती है।

वर्षयोगिनीमतेन मुद्ददादशा (मास—दिन)							
मं.	पि.	धा.	भ्रा.	भ.	उ.	सि.	सं.
०	०	१	१	१	२	२	२
१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

गर्भयोग—

वर्ष–कुण्डली में लग्नेश पांचवें या सातवें पड़ा हो व पंचमेश और सप्तमेश लग्न में पड़े हों तो उस वर्ष गर्भयोग होता है। मुंथेश और चन्द्रमा बली होकर पांचवें हो और पंचमेश भी बली हो तो गर्भ होता है।

जन्मपत्री न हो तो वर्ष बनाने की रीति

स्पष्ट प्रश्नलग्न की राशि को छोड़कर अंशादिक की कला करें, फिर उसमें १५० (डेढ़ सौ) का भाग दें। लब्ध, जो राश्यादि चार फल आवे उसकी राशि के अंक में प्रश्नलग्न की राशि के अंक मिलाएं। प्राप्तांक को मुन्था का स्पष्ट लग्न समझें और प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि के स्वामी को जन्मलग्नेश जानें अर्थात् पंचाधिकारियों में जन्मलग्नपति के स्थान में प्रश्नलग्न से चतुर्थराशि का स्वामी जो हो उसे लग्नेश समझिए। प्रश्नपत्र पर वर्ष बनाने में इतना ही विशेष है। अन्य सर्व रीति में कुछ न्यूनाधिक नहीं है।

अरिष्ट योग

यदि जन्मलग्न ही वर्ष लग्न हो और जन्मनक्षत्र भी वर्ष में आ जाए तो यह द्विजन्मा वर्ष अशुभ है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ न हों तो अशुभ, कष्टभय होता है। वर्ष में गुरु, चन्द्र शुभ हों तो अशुभ फल नहीं होगा।

आवश्यक मुहूर्त्त

कोई भी कार्य यदि शास्त्र–सम्मत शुभ–मुहूर्त्त में किया जाए तो वह अवश्य सफल होकर सुखप्रद होता है। गया–गोदावरी–यात्रा में, नवरात्रकृत्य में एवम् चातुर्मास्य व्रत में गुरु–शुक्रास्त का दोष नहीं होता।

गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३। **शुभ नक्षत्र–**तीनों उत्तरा, मृ., ह., अनु., रो., स्वा., श्र., ध., श.। **शुभ लग्न–** जब लग्न और ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभग्रह हों;३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; सूर्य, मंगल या गुरु लग्न को देखते हों, विषम राशि के नवांश में चन्द्रमा हो, रजोदर्शनकाल से पहली चार रात्रि छोड़ कर १६ रात्रि तक समरात्रि में गर्भ हो तो पुत्र, विषम में हो तो कन्या होती है।

चित्रा, पुन. पुष्य, अश्विनी गर्भाधान के लिए मध्यम हैं।

गर्भाधान के लिए अशुभकाल

भद्रा; ४, ६, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां; संक्रान्ति का दिन, सन्ध्याकाल, मंगल, रवि, शनिवार, रजोदर्शनकाल की पहली चार रात्रियां; ज्येष्ठा, रेवती और आश्लेषा नक्षत्रों के अन्त की दो–दो घड़ी; मूल, अश्विनी और मघा के आदि की २–२ घड़ी; ४, ८, १२ लग्नों के अन्त की आधी–आधी घड़ी; ५, ९, १ लग्नों की आधी–आधी घड़ी; ५, १, १५ तिथियों के अन्त की एक–एक घड़ी; ६, ११, १ तिथियों के आदि की एक–एक घड़ी; निर्बल तारा, जन्मनक्षत्र, मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा नक्षत्र एवम् ग्रहण के दिन, व्यतिपात, वैधृति योग; माता–पिता के श्राद्ध का दिन; दिन का समय; परिघ योग का आधा भाग; उत्पात से हत नक्षत्र; जन्मराशि से अष्टमलग्न; पापयुक्त लग्न तथा पापाकान्त नक्षत्र गर्भाधान के लिए वर्जित है।

गर्भमासों के स्वामी

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चन्द्रमा	शनि	बुध	गर्भाधान समय का लग्नेश	चन्द्रमा	सूर्य

स्त्री–पुरुष के चन्द्रबल की विशेषता

गर्भाधान संस्कार में स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए और अन्यकार्यों में पति का चन्द्रबल देखना चाहिए– यह सदा स्मरण रखें।

पुंसवन संस्कार का मुहूर्त्त

यह संस्कार गर्भाधान के तीसरे मास में गुरु, रवि, मंगलवार को मृग., पुन., पु., ह., मू. और श्रवण नक्षत्रों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ १५ तिथियों में जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९ और १० स्थानों में शुभग्रह और ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तो शुभ होता है। तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती नक्षत्र तथा सोम, बुध और शुक्रवार भी शुभ हैं।

सीमान्त संस्कार का मुहूर्त्त

गर्भाधान के छठे या आठवें मास में जब मास का स्वामी बली हो तब पुंसवन के मुहूर्त्त में निर्दिष्ट तिथियों, वारों, नक्षत्रों और लग्नों में सीमान्त शुभ होता है। **"सीमान्त जातकादीनि प्राशनान्तानि यानि वै। न दोषो मलमासस्य मौढ्यस्य गुरुशुक्रयोः।।"**

गर्भ–रक्षा के लिए विष्णुपूजा

गर्भाधान के आठवें मास में श्रवण, रोहिणी और पुष्य नक्षत्र में; शुभ लग्न, वार और तिथियों में जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध हो तब गर्भ की रक्षा के लिए विष्णु की पूजा करनी चाहिए।

मेधाजनन संस्कार

बालक के उत्पन्न होने के अनन्तर नाल काटने से पहले दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगाकर सुवर्णसहित अंगुली से शहद और गौ के घी को मिलाकर **"ॐ भूस्त्वयि दधामि, ॐ भुवस्त्वयि दधामि, ॐ स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भू र्भुवः स्वस्त्वयि दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्व त्वयि दधामि"**– इन पांचों मन्त्रों से बालक को थोड़ा–थोड़ा चार बार मधु चटावें– ऐसा करने से बालक बुद्धिमान् और यशस्वी होता है।

स्तनपान कराने व सूतिकापथ्य का मुहूर्त

रिक्ता., अमा, भद्रा, व्यतिपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभ तिथियां हों; वार चं. बु. गु. श. हों; नक्षत्र मृग., पुन., पु., श्र., रे., म. हों– तब स्तनपान कराना शुभ है। आगे अन्नप्राशन में कही गई तिथि, नक्षत्रों में सूतिकापथ्य शुभ है।

प्रसूता स्त्री के स्नान का मुहूर्त्त

रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृग., ह., स्वा., अश्वि. और अनु. नक्षत्रों में; रवि, गुरु और भोम वारों में; १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियों में शुभ हैं। आर्द्रा, पुन., पु., श्र., म., भ., कृ., वि. मू. और चित्रा नक्षत्र तथा शनि और बुधवार त्याज्य हैं। अन्य नक्षत्र और वार मध्यम हैं।

प्रसूता स्त्री द्वारा जलपूजन का मुहूर्त्त

मास समाप्त होने पर बुध, गुरु या चन्द्रवार को ४, ९, १४, तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु., नक्षत्रों में जलपूजन उत्तम है। परन्तु गुरु और शुक्र के अस्त में; चैत्र, पौष या अधिक मास में (मास पूरा होने पर भी) जलपूजन नहीं करना चाहिए।

जातकर्म और नामकरण का मुहूर्त्त

संक्रान्तिदिन, भद्रा और व्यतिपात को छोड़कर १, २, ३, ५, ७, १०, ११ १२, १३ तिथियों में जन्मकाल से ११वें या १२वें दिन सोम, बुध और शुक्रवार को मृ., रे., चि., अनु., तीनों उत्तरा, रो., ह., अश्विनी, पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., नक्षत्रों में, जब लग्न से १, ४, ५, ७, १० स्थानों में शुभग्रह तथा ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों तब शुभ होता है।

अथ दोला (झूला) आरोहणमुहूर्त्त

जन्म दिन से १०, १२, १६, १८, ३२वें दिन शुक्रवार में; मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि., तीनों उत्तरा, रो. नक्षत्रों में ४, ९, १४, ३० तिथियों के अलावा अन्य तिथियों में; १, ४, ७, १० लग्नों में शुभग्रह से युक्त होने पर एवं १, ४, ५, ६, ७, ९, १०, ११ वें शुभग्रह हों तथा ३, ६, ११ वें पापग्रह हो तो उत्तम होता है।

निष्क्रमण का मुहूर्त्त

स्वा., अश्वि., पुन., ह., मू., पु., अनु., श्र., रो., ध. नक्षत्रों में; भौम एवं शनि को छोड़कर अन्य वारों में, रिक्ता, अमा, भद्रादि से रहित शुभ दिन में; तीसरे, चौथे मास में शुभ है। शीघ्रता होने पर १२वें दिन बालक का निष्क्रमण करें। इसी दिन सूर्य और नक्षत्र पूजन पूर्वक सूर्य नक्षत्रों का दर्शन करा दें।

सूर्य नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें				
५ नैरोग्य	५ मरण	५ कृषता	५ व्याधि	७ सौख्य

भूम्युपवेशन–मुहूर्त्त

पांचवें महीने में, पृथ्वी, वाराह का पूजन करके भौम के पूर्ण बल में तीनों उत्तरा, रो., मृग., ज्ये., अनु., अश्वि., हस्त, पुष्य, अभि– इन नक्षत्रों में; ४, ९, १४, ३०– इन तिथियों को, छोड़कर स्थिर लग्न एवं शुभ दिन में बालक के करधनी का त्रिसूत्र बांधकर पृथ्वी पर बैठाएं।

भूम्युपवेशन के लिए मंत्र– " रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये।" इति।।

इसी समय बालक के सामने पुस्तक, कलम, वस्त्र, शस्त्र, स्वर्ण, चांदी, तुला आदि वस्तु रखें। जिसको बालक ग्रहण करे उससे उसकी आजीविका होती है।

अन्नप्राशन का मुहूर्त्त

जन्ममास से ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र का और ५, ७, ९ या ११ वें मास में कन्या का भद्रादि दोषरहित १, ३, ५, ७, १०, १३, १५ तिथियों में; सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को म., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पु., अभि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., तीनों उत्तरा, रोहिणी नक्षत्रों में; जन्मराशि या जन्मलग्न से आठवें लग्न या नवांशक तथा मेष, वृश्चिक और मीन लग्न को छोड़कर शेष लग्नों में; १, ३, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों या शुभ ग्रह की दृष्टि हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; दशम स्थान पापग्रहरहित हो; १, ६, ८ स्थान में चन्द्रमा न हो तो शुभ होता है। किसी–किसी के मत से जन्मनक्षत्र अनु., शततारिका (शतभिषा) और स्वाती अशुभ हैं।

कर्णवेध का मुहूर्त्त

चैत्र, पौष देवशयन (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक), जन्ममास, जन्मनक्षत्र, ४, ९, १४ तिथियां, जन्मतारा, क्षयतिथि और सम वर्षों को छोड़कर जन्म के १२वें या १६वें दिन; ६वें, ७वें, ८वें मास या विषम वर्षों में सोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को श्र., ध., पुन., मृ., रे., चि., अनु., ह., अश्वि., पुष्य, अभि. नक्षत्रों में जब लग्न से अष्टम स्थान शुद्ध हो; १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; तुला, वृष, धनु या मीन लग्न में बृहस्पतिवार हो तो कर्णच्छेदन श्रेष्ठ है। इस संस्कार के समय पर करने से मनुष्य के हर्निया (अंत्रवृद्धि) जैसे भयानक रोग की जड़ ही कट जाती है।

कन्या के नासिकाच्छेदन का मुहूर्त्त

कर्णवेधोक्त नक्षत्रों में तथा उत्तरा ३, शत., स्वा. में शुभ तिथ्यादिक, शुक्लपक्ष में दिन के प्रथम प्रहर के समय नासिका वेध शुभ है।

मुण्डनमुहूर्त्त

गर्भाधानकाल से या जन्मकाल से विषम अर्थात् ३रे, ५वें, ७वें वर्ष में (मनु जी के मत से प्रथम वर्ष में भी) चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में चन्द्र, बुध, गुरु और शुक्रवार, लग्न तथा नवांशक में, जन्मराशि या जन्मलग्न से अष्टम लग्न को छोड़कर; २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में संक्रान्तिदिन को छोड़कर जब लग्न से आठवां स्थान शुद्ध (ग्रहरहित) हो; ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों; ज्ये., मू., रे., चि., स्वा., पुन., श्र., ध., श., ह., अश्वि., पुष्य और अभिजित् नक्षत्रों में मुण्डन शुभ है।

ध्यान रहे– लड़के की माता को पांच मास का गर्भ हो तो मुण्डन निषिद्ध है, परन्तु पांच वर्ष से अधिक अवस्था के बालक के लिए निषेध नहीं है। जेठे लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए।

मुण्डनकर्म में विशेष–स्वकुल–शिष्टाचारानुसार पूर्वोक्त नक्षत्र, तिथ्यादि; शुभ समय में अपने–अपने इष्टदेव के स्थानों में मुण्डन तथा कर्णवेध का होना देखा जाता है, जो **"यथा कुलधर्म वः"**– इस स्मृति के अनुसार से ठीक ही है।

क्षौर बनवाने का मुहूर्त्त

मुण्डन के लिए जो तिथियां और नक्षत्र शुभ बतलाये गए हैं वे ही हजामत बनवाने के लिए शुभ हैं– वर्जित काल–शनि, रवि, भौमवार; हजामत में नौवें दिन, संध्याकाल, ४, ८, ९, १४, १५, ३० तिथियां, संक्रान्तिदिन, रात्रि में, बिना आसन, संग्राम में, यात्रा करने के दिन, स्नान करके, शरीर में उबटन लगवाकर और भोजन के पीछे हजामत बनवाना अशुभ है।

विशेष फल– यज्ञ, विवाह, मृतककर्म में, कारागार से छूटने पर, ब्राह्मण और राजा की आज्ञा से किसी भी समय(बिना मुहूर्त्त के भी) हजामत बनवाई जा सकती है। किसी–किसी आचार्य का मत है कि जो लोग राजकार्य में नियुक्त हैं वे रूपजीवी (जैसे– नट–भांड आदि) किसी भी दिन हजामत बनवा सकते हैं।

कर्णवेध और क्षौर का वार– ब्राह्मण रविवार को,, क्षत्रिय सोमवार को, वैश्य और शूद्र शनिवार को क्षौरोक्त तिथ्यादि में हजामत बनवा सकते हैं।

अक्षरारम्भ का मुहूर्त्त

जन्म से ५वें या ७वें वर्ष में उत्तरायण सूर्य में गणेश, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी का पूजन करके सोम, बुध, गुरु और शुक्रवार को हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., श्र., स्वा., रे., पुन., आर्द्रा, चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में बुरे योगों और भद्रा को छोड़कर २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में (शुक्लपक्ष उत्तम) अक्षरारम्भ शुभ होता है। लग्न में मेष, कर्क तुला और मकर राशियां नहीं होनी चाहिएं।

विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

उत्तरायण में (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार को; २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ तिथियों में; भ.., आर्द्रा, पुन., हस्त, चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., म., तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, आश्ले., अनु., रेवती नक्षत्रों में; जब लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० स्थानों में शुभ ग्रह हों तो विद्यारम्भ शुभ है।

फारसी, अंग्रेज़ी विद्यारम्भ का मुहूर्त्त

सूर्य, भौम, शनिवार हों; ४, ९, १४ तिथि हों; ज्ये., आश्ले., म., तीनों पूर्वा, भ., कृ., वि., आर्द्रा, उ. षा., शत. नक्षत्र शुभ हैं।

सीने–पिरोने (सूचिकर्म) का मुहूर्त्त

अश्वि., पु., चि., अनु., ध. नक्षत्र; सूर्य, बुध, चन्द्र, गुरु, शनि वार एवम् १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १०, ११, १३, १५ तिथियां शुभ हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार का मुहूर्त्त

यज्ञ और उपवीत– इन दो शब्दों से यज्ञोपवीत बना है। देवताओं की पूजा, संगति (सम्मेलन या कान्फ्रेंस) और जिसमें दान हों, उसे यज्ञ कहते हैं। उपवीत का अर्थ है– पिरो देने वाला अर्थात् देवपूजा, सम्मेलन और दान के साथ पुरुष को मिला देने वाला संस्कृत (तन्तु–धागाविशेष)– यह यज्ञोपवीत का अर्थ हुआ। बालक को गुरु, चन्द्र शुद्धि देखकर जन्म से या गर्भ से **(गर्भाज्जनेर्वा इति पारस्करमन्वादीनां मते विकल्पः)** ब्राह्मण आठवें वर्ष, क्षत्रिय ११वें, वैश्य १२वें, वर्ष में करें। यदि इन वर्षों में न किया जा सके तो ब्राह्मण १६, क्षत्रिय २२ और वैश्य २५वें वर्ष तक संस्कार कर सकते हैं। उसके बाद सावित्रीपतित व्रात्य संज्ञा वाले होते हैं। माघादि पांच मासों में देवशयनी से पूर्व ह., अश्वि., पुष्य, अभि., ३ उत्तरा, रो., आश्ले., स्वा., श्र., ध., मू., मृग., रे., चि., अनु., तीनों पूर्वा, आर्द्रा वेधरहित, इन नक्षत्रों में (क्षत्रिय, वैश्यों के लिए पुनर्वसु भी ग्राह्य है) सू., चं., बु., (बुधास्त हो तो बुधवार त्याज्य) श., गुरुवार को शुक्ल २, ३, १०, ११, १२ तथा कृष्ण पक्ष की २, ३, ५ तिथियों में शुभ है। किन्तु सोपपदा तिथि (जैसे– आषाढ़ शुक्ल १०, ज्येष्ठ शुक्ल २, पौष शुक्ल ११, माघ शुक्ल १२), संक्रान्तिदिन तथा रोगबाण को छोड़कर मध्याह्न से पहले शुभ है। शु., गु., चं. और लग्नेश ६, ८ स्थानों में चं., शु. १२वें स्थान में और १, ५, ८वें भावों में पापग्रह अशुभ है। शुभ ग्रह ६, ८, १२ स्थानों के सिवाय अन्य स्थानों में; पाप ग्रह ३, ६, ११ स्थानों, वृष या कर्क का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तो शुभ होता है। गुरु, शुक्र के बाल्य–वृद्धत्व–अस्त के समय को छोड़कर उपनयन शुभ है। यदि गोचराष्टक वर्ग से बालक के उपनयन संस्कार के लिए समयशुद्धि न मिले अथवा सिंह, मकर किंवा अशुभ स्थान में गुरु हो तो सौर चैत्र मे उपनयन संस्कार किया जा सकता है–ऐसी शास्त्र की आज्ञा है।

मेलापक सारणी देखने की रीति और अष्टकूट दोषों के परिहार

लेखक:- प्रियव्रत शर्मा

आगे चार पृष्ठों पर 'मेलापक सारणी' दी गई है । इसके बाई ओर पहिले,दूसरे कालमों में लड़की की और सबसे ऊपर वाली पहिली,दूसरी पंक्तियों में लड़के की राशियां तथा चरण-नक्षत्र दिए गए हैं । लड़की के नक्षत्र चरण के आगे लड़के के नक्षत्र-चरण के नीचे वर्ण आदि अष्टकूटों के गुण और मिलान में होने वाले वर्ण आदि दोषों का निर्देश है । वर्ण आदि दोषों के लिए नीचे लिखे सांकेतिक अक्षरों का इस सारणी में प्रयोग किया गया है:-

वर्ण दोष के लिए	= ब	राशीश दोष के लिए	= र
वश्य दोष के लिए	= व	गण दोष के लिए	= ग
तारा दोष के लिए	= त	भकूट दोष के लिए	= भ
योनि दोष के लिए	= य	नाडी दोष के लिए	= न

उदाहरणार्थ - यदि लड़की का जन्म चित्रा के ४ र्थ चरण में और लड़के का पू. भा. के २ य चरण में हुआ हो तो इनके मिलान में इस मेलापक सारणीसे अष्टकूटों के गुण १८ ½ मिले, और ज्ञात हुआ कि इस मिलान में त (तारा), य (योनि), ग (गण), तथा भ (भकूट) दोष हैं ।

अष्टकूट दोषों के परिहार-

वर, कन्या के राशीशों अथवा नवमांशेशों की मैत्री तथा राशीशों , नवशांशेशों को एकता द्वारा नाड़ी दोष के अलावा शेष सभी दोषों का परिहार हो जाता है । राशीश-नवमांशेशों की मैत्री-एकता के अलावा अन्य और भी अनेक परिहार हैं, जिनसे वर्ण आदि दोष दूर हो जाते हैं। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है -

(१) वर्ण दोष का परिवार:- वर की राशि के वर्ण से कन्या की राशि का वर्ण उत्तम होने पर वर्ण दोष होता है । लेकिन यदि वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो तो वर्ण दोष का परिहार हो जाता है । सभी ग्रहों के वर्ण इस प्रकार हैं:-

रवि का वर्ण क्षत्रिय,चन्द्र का वैश्य,मंगल का क्षत्रिय,बुध का शूद्र, गुरु का ब्राह्मण, शुक्र का ब्राह्मण और शनि का शूद्र है ।

(२) वश्य दोष का परिहार:- वर कन्या की राशियों की योनिमैत्री होने पर वश्य दोष दूर हो जाता है ।

(३) तारा दोष का परिहार:-वर कन्या के राशीशों, नवमांशेशों की मैत्री या एकता के अलावा तारा दोष का दूसरा कोई परिहार नहीं है ।

(४) योनि दोष का परिहार:- भकूट और वश्य कूटों में से कोई एक भी यदि शुभ(ठीक) हों तो योनिदोष का परिहार हो जाता है ।

(५) राशीश दोष का परिहार:- भकूट शुभ होने पर (यानि द्विर्द्वादश, नवपंचम और षडष्टक का अभाव होने पर) राशीश दोष दूर हो जाता है ।

(६) गण दोष का परिहार:- वर -कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों या भकूट दोष न हों तो गण दोष दूर हो जाता है।

(७) भकूट दोष का परिहार :- वर कन्या के राशीशों, नवांशेशों की मैत्री या एकता ही भकूट दोष का प्रमुख परिहार है। यदि इसके साथ ताराशुद्धि या वश्यशुद्धि भी हो तो भकूट दोष का उत्तम परिहार माना जाता है ।

(८) नाड़ी दोष का परिहार :- वर,कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों, अथवा नक्षत्र एक और राशियां, भिन्न-भिन्न हों तो नाड़ी दोष दूर हो जाता है । दोनों के नक्षत्रों के चरणों का वेध न होने की स्थिति में भी नाड़ी दोष का परिहार माना जाता है ।

नाड़ी दोष के परिहार के प्रसंगमें वर-कन्या में से किसी एक का जन्म नक्षत्र के प्रथम चरण में और दूसरे का चतुर्थ चरण में अथवा एक का द्वितीय चरण में और दूसरे का तृतीय चरण में हुआ हो तो पादवेध मान लिया जाता है । लेकिन यह नियम सर्वत्र लागू नहीं होता । इसके स्पष्टीकरण के लिए सं. २०४७ के 'श्री मार्त्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ ३४ पर दिया गया मेरा लेख **''पाद वेध द्वारा नाड़ी दोष के परिहार में परम्परागत एक भ्रांति''** पढ़ना चाहिए । यह लेख मेरी पुस्तक **'ग्रहयोग एवं दाम्पत्य जीवन'** में भी है ।

ध्यान दें:-जैसा कि ऊपर भी बता चुके हैं,वर,कन्या के राशीशों,नवमांशों की मैत्री और एकता तो वर्ण,वश्य,तारा,योनि,राशीश,गण और भकूट दोषों का परिहार कर देती है,लेकिन नाड़ी दोष का परिहार इनसे नहीं होता । नाड़ी दोष का परिहार तो केवल उपरोक्त स्थितियों में ही होता है ।

दैवज्ञ को यह विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए,कि नाड़ीदोष का यदि परिहार नहीं मिले तो किसी भी स्थिति में (भले ही अन्य सातों कूट शुद्ध क्यों न हों, मिलान में गुण अठाईस भी क्यों न प्राप्त हों), सम्बन्ध करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए । इस बारे में मुहूर्तशास्त्रकारों का यही स्पष्ट निर्णय है ।

'नाड़ीदोषस्तु विप्राणाम्'-वाक्य को संहिताकारों ने मान्यता नहीं दी है । 'मुहूर्त चिन्तामणि' आदि अन्य प्रामाणिक मुहूर्तग्रन्थों ने भी इसकी उपेक्षा की हैं,अत: इसे मान्यता नहीं दी जा सकती।

'एकनक्षत्र जातानां नाड़ीदोषो न विद्यते'- वाक्य भी प्रामाणिक नहीं है । एक ही नक्षत्र में उत्पन्न वर,कन्या को नाड़ी दोष तब नहीं माना जाता, जबकि उनका जन्म भिन्न-भिन्न चरणों में हुआ हो । 'मुहूर्तचिन्तामणि' का वाक्य है -**'नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्'** (अर्थात् दोनों का नक्षत्र एक होने पर दोष (नाड़ीदोष) की निवृत्ति तभी होती है,जबकि दोनों के चरण भिन्न-भिन्न हों)। **ध्यान रहे**, दोनों का जन्म एक ही नक्षत्र के एक ही चरण में होने पर नाड़ी दोष परमाधिक माना जाता है। एक ही नक्षत्र में पादवेध भी नहीं माना जाता ।

दोषपूर्ण अष्टकूटों के ,परिहारों को प्रमाणित करने वाले शास्त्रवाक्य बहुत हैं,उनको विस्तारभय से यहां उद्धृत नहीं किया गया। उन्हें मेरी पुस्तक **''ग्रहयोग एवं दाम्पत्यजीवन''** में आप देख सकते हैं)

सरलता पूर्वक एक ही दृष्टि में सभी अष्टकूटों के परिहार आ जाएं- इसके लिए नीचे दिया गया यह कोष्टक देखें :-

अष्टकूट परिहार कोष्ठक

कूट	परिहार
वर्ण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वर के राशीश का वर्ण कन्या के राशीश के वर्ण से उत्तम हो।
वश्य	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ योनिमैत्री हो ।
तारा	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।
योनि	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ वश्यशुद्धि हो। ३ सद्‌भकूट हो।
राशीश	१ दोनों के नवमांशेशों में मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो।
गण	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो। २ भकूट दोष न हो। ३ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों ।
भकूट	१ राशीशों या नवमांशेशों की मैत्री या एकता हो।*
नाडी	१ दोनों की राशि एक और नक्षत्र भिन्न - भिन्न हों । २ दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों । ३ दोनों का नक्षत्र एक और चरण भिन्न - भिन्न हों । ४ पाद वेध न हो।

* यदि इस परिहार के साथ ताराशुद्धि , वश्यशुद्धि में से कोई एक भी हो तो यह परिहार उत्तम माना जाता है।

परिहृत कूट के गुण

वर्ण आदि जो कूट दोषपूर्ण होता है, उसके लिए निर्धारित पूरे गुणों को छोड़ दिया जाता है। जब उस दोषपूर्ण कूट का कोई उपरोक्त परिहार मिल जाए तब उसके पूरे गुणों को पुनः स्वीकार कर उन्हें मेलापक सारणी से प्राप्त गुण संख्या में जोड़कर उस गुणसंख्या को वास्तविक गुणसंख्या माना जाए- ऐसा कुछ आचार्यों का मत है । कुछ आचार्यों का मत है कि परिहार द्वारा दोष का पूरा नहीं, अपितु आंशिक निवारण होता है,अतः परिहृत कूट के आधे गुणों को ही स्वीकार करना चाहिए । यह (दूसरा)मत तर्कसंगत है। इसके अनुसार परिहृत कूट के आधे गुण(उस कूट के लिए निर्धारित पूरे गुणों का आधा भाग)मेलापक सारणी से मिली गुणसंख्या में जोड़कर उसे ही यथार्थ गुणसंख्या मानना युक्तियुक्त है ।

कितने गुण मिलने पर सम्बन्ध कर देना चाहिए ?

परिहृत कूटों की आधी गुणसख्या को मेलापक सारणी में उपलब्ध गुणसंख्या में जोड़ने. पर मिली गुणसंख्या यदि १६ $\frac{१}{२}$ से कम है तो सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । यदि षडष्टक भकूट का परिहार न मिल रहा हो तब २० से कम गुण संख्या होने पर सम्बन्ध नहीं करना चाहिए । ध्यान रहे- यहां प्रत्येक स्थिति में नाड़ी दोष का परिहार मिलना नितान्त आवश्यक है। यदि नाड़ी दोष के उपरोक्त परिहारों में से कोई एक भी परिहार न मिल रहा हो तब तो २८ गुण मिलने पर भी सम्बन्ध करने की अनुमति शास्त्रकारों ने नहीं दी है ।

यदि किसी विशेष कारण (विवशता) वश सम्बन्ध करना आवश्यक (अपरिहार्य)हो जाए, तब १६ से कम गुणों और षडष्टक तथा नाड़ीदोष के अपरिहार की स्थिति में भी गाय,अन्न,वस्त्र,सुवर्ण का यथाशक्ति दान, तथा जप -शान्ति करके सम्बन्ध किया जा सकता है । इस स्थिति में कन्या का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने की भी परम्परा है । लेकिन दान,जप,शान्ति करना भी इस स्थिति में अत्यन्त आवश्यक है । साधाराण स्थिति में (नितान्त विवशता की स्थिति के अभाव में) लड़की का नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाना सर्वथा अशास्त्रीय है । नाम बदलकर मिलान को अनुकूल बनाने का 'सिद्धान्त' अपनाने पर तो किसी भी लड़की का किसी भी लड़के के साथ और किसी भी लड़के का किसी भी लड़की के साथ सम्बन्ध बेरोक-टोक किया जा सकता है और वहां अष्टकूटों के गुण इच्छानुसार अधिकाधिक प्राप्त किए जा सकते हैं, जिससे दोषपूर्ण कूटों का परिहार बतलाने वाले सभी शास्त्रवाक्य अर्थहीन हो जायेंगे।

मिलान में कुछ और विचार्य विषय

यद्यपि संहिताओं में इन आठ कूटों के अतिरिक्त अनेक और भी विचार्य विषय मिलते हैं, लेकिन वर्गमैत्री और नृदूरत्व भी विचार करने की भी कुछ दैवज्ञों में परम्परा हैं,इन दोनों का विवेचन इस प्रकार है-

वर्गमैत्री-।

वर्गमैत्री का विचार वर कन्या के नाम के आदिम वर्णों से सम्बद्ध है। हिन्दी वर्णमाला के अकार आदि स्वर अवर्ग क आदि पांच वर्ण 'कवर्ग च' आदि पांच वर्ण चवर्ग ट आदि पाँच वर्ण टवर्ग त आदि पाच वर्ण तवर्ग प आदि पांच वर्ण 'पवर्ग य आदि पांच वर्ण यवर्ग तथा श' आदि पांच वर्ण 'शवर्ग' कहलाते हैं। इन अवर्ग आदि आठ वर्गों को उपरोक्त क्रमानुसार क्रमशः प्रथम वर्ग, द्वितीय वर्ग, आदि संज्ञाएं दी गई हैं। इन आठ वर्गों के स्वामी क्रमशः गरुड़, मार्जार,सिंह, श्वान

सर्प, मूषक, मृग और मेष माने गये हैं । प्रत्येक वर्गेश अपने से पंचम वर्ग के स्वामी का शत्रु माना गया है । जैसे :- गरुड और सर्प तथा मूषक और मार्जार परस्पर शत्रु हैं ।

नामाक्षरों से वर्ग ज्ञान कोष्ठक :

वर्ग	अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्ग के वर्ण	अ, इ, उ,ए	क, ख, ग, घ,ङ	च,छ,ज, झ,ञ	ट,ठ,ड, ढ,ण	त,थ,द, ध,न	प. फ,ब, भ,म	य,र, ल,व	श,ष, स,ह
वर्गेश	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेष

वर, कन्या के नामों के आदिम वर्णों के वर्गों के स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अच्छा नहीं माना जाता, उनका जीवन दुःखमय रहता है ।

यदि वर्गेशों में शत्रुता है तो अष्टकूटों से प्राप्त गुण १७ से अधिक होने पर ही सम्बन्ध करना चाहिए। यदि मिलान में अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १४,१५ ही हों और नाडी दोष न हो तब वर्गेश की एकता (अभिन्नता) होने पर सम्बन्ध किया जा सकता है-ऐसा कुछ लोगों का मत है

नृदूर

वर का नक्षत्र या नक्षत्र चरण यदि कन्या के नक्षत्र या नक्षत्र चरण से तुरन्त परवर्ती हो तो 'नृदूर' दोष कहलाता है। जैसे - कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी और वर का भरणी, अथवा कन्या का जन्म अश्विनी के प्रथम चरण में और वर का अश्विनी के द्वितीय चरण में हो तो भी नृदूर दोष होगा। 'नृदूर' दोष का फल मुहूर्त्त शास्त्रों में बहुत अशुभ लिखा है।

दोनों (वर ,कन्या) की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न या दोनों का नक्षत्र एक और राशियां भिन्न-भिन्न हों तो नृदूर का परिहार हो जाता है।

अष्टकूटों से प्राप्त गुण लगभग १६ $\frac{१}{२}$,१७,१८ हों और 'नृदूर' दोष का परिहार न मिले, तब नाड़ी दोष के अभाव में भी मिलान को कुछ मुहूर्त्तकार अच्छा नहीं मानते । १८ से अधिक गुण होने पर 'नृदूर' की उपेक्षा की जा सकती है।

नामराशि से अष्टकूटों का निर्णय

वर और कन्या-दोनों का यदि जन्मकाल ज्ञात न हो, तब दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों (नामों के आदिम अक्षरों से अबकहड़ा चक्र द्वारा निर्णीत राशि और नक्षत्रों) के आधार पर ही मेलापक सारणी से अष्ट कूटों के गुणों का निर्णय करना चाहिए। अपिच यदि वर, कन्या-दोनों में से किसी एक का जन्मकाल ज्ञात न हो तो भी दोनों की नामराशि, नामनक्षत्रों के आधार पर ही अष्टकूटों का निर्णय करना चाहिए। एक की जन्मराशि, जन्मनक्षत्र और दूसरे की नामराशि, नाम नक्षत्र के आधार पर अष्टकूटों का निर्णय करने की अनुमति शास्त्र नहीं देते।

कुज (मंगली) दोष-

निम्नलिखित स्थितियों में कुजदोष (मंगली दोष) माना गया है -

(१) जन्म कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भावमें मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो।
(२) चन्द्र कुण्डली में १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या कोई क्रूर ग्रह हो ।
(३) शुक्र से १,४,७,८,१२ वें भाव में मंगल या अन्य कोई क्रूर ग्रह हो ।

कुजदोष बनाने वाला ग्रह अस्त, नीचस्थ या शत्रुराशिस्थ हो तो कुजदोष का फल अधिक माना गया है । कुजदोष दाम्पत्य जीवन के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

कुजदोष के सामान्य कुछ परिहार -

इन स्थितियों में वर, कन्या का कुज दोष दूर हो जाता है -

(१) कुजदोष बनाने वाला ग्रह (क्रूरग्रह) उच्चस्थ स्वराशिस्थ, स्वनवांशस्थ, मित्रराशिस्थ, उच्चनवांश या मित्रनवांश में हो।
(२) कुजदोष बनाने वाले ग्रह पर वृहस्पति की पूर्णदृष्टि हो ।
(३) वर-कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोष विद्यमान हो तो दोनों के कुजदोष समाप्त हो जाते हैं।

ध्यान रहे, कुजदोष वाले वर और कन्या दोनों की कुण्डलियों में कुजदोषों का परिहार मिलने पर कुजदोष का कुफल समाप्त हो जाता है । दोनों की कुण्डलियों में से किसी एक की कुण्डली में ही कुजदोष परिहार हो तो कुजदोष का कुप्रभाव रहता है ।

कुण्डली मिलान की प्रामाणिकता

हमारे ज्योतिष के मानक ग्रन्थों (संहिता, जातक, मुहूर्त्त ग्रन्थों) में वर, कन्या का सम्बन्ध करने से पूर्व उनकी कुण्डलियों में ग्रहस्थितियों के मिलान द्वारा कुजदोष के परिहार की चर्चा कहीं भी नहीं की गई है। पुनरपि कुण्डली मिलान की परम्परा सभी भारतीय प्रदेशों में प्रचलित है । इसका शास्त्रीय मूल अभी तक अज्ञात है। आश्चर्य है- सभी वशिष्ठ, नारद, गर्ग आदि की संहिताओं, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि मुहूर्त्तग्रन्थों तथा वर-कन्या के सम्बन्ध की अनुकूलता के परीक्षण के लिए रचित 'विवाहवृन्दावन' आदि सभी ग्रन्थों में वर-कन्या के सम्बन्ध के लिए केवल अष्टकूटों के परीक्षण का ही [illegible] है, कुण्डली मिलान का कहीं भी नहीं ।

षट्कूट चक्र

वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण और नाड़ी ज्ञापक चक्र।

राशि	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
नक्षत्र	अश्वि.	भर	कृ.	कृ.	रो.	मृ.	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	उ.फा.	ह.	चि.
चरण	१, २ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२
वर्ण	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.
वश्य	च.	च.	च.	च.	च.	च.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	व.	व.	व.	द्वि.	द्वि.	द्वि.
योनि	अ.	ग.	मे.	मे.	स.	स.	स.	श्वा.	मा.	मा.	मे.	मा.	मू.	मू.	गौ.	गौ.	म	व्या.
राशीश	म.	म.	म.	शु.	शु.	शु.	बु.	बु.	बु.	च.	च.	च.	सू.	सू.	सू.	बु.	बु.	बु.
गण	दे.	म.	रा.	रा.	म.	दे.	दे.	म.	दे.	दे.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.
नाड़ी	आ.	म.	अ.	अ.	अ.	म.	म	आ.	आ.	आ.	म.	अं.	अ.	म.	आ.	आ.	आ.	म.

राशि	तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
नक्षत्र	चि.	स्वा	वि.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	उ.षा.	श्रव.	ध.	ध.	श.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा	रेव.
चरण	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१,२ ३,४	१	२,३ ४	१,२ ३,४	१,२	३,४	१,२ ३,४	१,२ ३	४	१,२ ३,४	१,२ ३,४
वर्ण	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.	क्ष.	क्ष.	क्ष.	वै.	वै.	वै.	शू.	शू.	शू.	ब्रा.	ब्रा.	ब्रा.
वश्य	द्वि.	द्वि.	द्वि.	की.	की.	की.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.	द्वि.	द्वि.	द्वि.	ज.	ज.	ज.
योनि	व्या.	म.	व्या.	व्या.	मृ.	मृ.	श्वा.	वा.	न.	न.	वा.	सि.	सि.	अ.	सि.	सि	गौ.	ग.
राशीश	शु.	शु.	शु.	म.	मं.	मं.	गु.	गु.	गु.	श.	श.	श.	श.	श.	श.	गु.	गु.	गु.
गण	रा.	दे.	रा.	रा.	दे.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.	रा.	रा.	रा.	म.	म.	म.	दे.
नाड़ी	म.	अं.	अं.	अं.	म.	आ.	आ.	म.	अं.	अं.	अं.	म.	म.	आ.	आ.	आ.	म.	अं.

वर्ण- ब्रा.= ब्राह्मण, क्ष= क्षत्रिय, वै= वैश्य, शू.=शूद्र

योनि- अ.=अश्व, ग=गज, मे=मेष, स=सर्प, श्वा.=श्वान, मा.=मार्जार, मू = मूषक,म=महिष, व्या=व्याघ्र, मृ=मृग, वा=वानर, न=नकुल, सिं=सिंह

गण- दे=देत, म=मनुष्य, रा=राक्षस

वश्य- च=चतुष्पद, की=कीट, व= वनचर, द्वि=द्विपद, ज=जलचर

राशीश- सू=सूर्य, चं=चन्द्र, मं.=मंगल, बु=बुध, गु=गुरु, शु=शुक्र, श=शनि

नाड़ी- आ=आद्य, म=मध्य, अं=अन्त्य

ग्रहयोग एवं दाम्पंत्य जीवन

अब प्रकाशित है

(मिलान सम्बन्धी सभी समस्याओं का आमूलचूड़ समाधान)

अब प्रकाशित है

वर्ण आदि अष्टकूट, मंगली दोष, विवाहमुहूर्त साधन आदि विवाह सम्बन्धी सभी ज्ञातव्य विषयों का सरल-सुबोध शैली में पूरा विस्तृत विवेचन इसमें आपको मिलेगा। गुण मिलान में घटित होने वाले अष्टकूट दोषों एवं उनके परिहारों का सप्रमाण सुस्पष्ट निर्देश करने वाली, वर-कन्या के जन्मनक्षत्रों के चरणों के अनुसार बनाई गई ३६ पृष्ठों पर फैली अद्वितीय मौलिक 'मेलापक सारणी' तथा मंगलीक दोष का बलाबल बतलाने वाले कोष्ठक इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। सन् १९७० ई. से सन् २००० ई. तक पैदा हुए वर कन्याओं का जन्मलग्न, जन्मनक्षत्र-चरण और जन्मकुण्डली बिना किसी पुराने पंचांग की सहायता के आप इस पुस्तक में दिए गए अद्भुत कोष्ठकों द्वारा १०-१५ मिनटों में ही स्वयं जानकर वर-कन्या की ग्रहस्थितियों का मिलान कर सकते हैं। मिलान सम्बन्धी सभी विवादास्पद विषयों का शास्त्रीय समाधान किया गया है।'! दूसरा संस्करण उपलब्ध है।

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सैक्टर-6.पो. पंचकूला-134109

मेलापक सारणी (भाग 1)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	28 न	33	28½ त	18½ ब भ त	21½ ब भ त	22½ ब भ त	26 ब त र	17 ब न त र	19 ब न त र	23½ न त	31½ त	28 ग	21 व भ ग	25 व भ	15½ व भ न त	11 ब भ नतर	9 तबभ यनर	13 व भ त र
	भर. 1,2,3,4	34	28 न	29 ग	19 ब ग भ	21½ ब भ त	14½ ब भ त न	18 न ब त र	26 ब त र	27 ब त र	31½ त	23½ न त	25½ ग त	20 ग व भ	18 व भ न	26 व भ	21½ ब भ र	20 ब भ र त	4 बभग नतर
	कृत्ति. 1	27½ ग त	29 ग	28 न	18 ब भ न	10 ग ब न भ	16½ ग ब भ त	20 ग ब त	20 ग ब त	21 ग ब त र	25½ ग त	26½ ग त	23½ न त	16½ व भ न त	20 ग व भ	20 ग व भ	15½ ग व भ	15½ ग व भ र	18 ब भ त
वृष	कृत्ति. 2,3,4	18½ ग भ त	20 ग भ	19 भ न	28 न	20 ग न	26½ ग त	17½ ग ब भ त	17½ ब ग भ त	18½ ग ब भ त	22 ग त र	23 ग त र	20 न त र	18½ न व त र	22 र व ग	22 र व ग	21 ग भ	21 ग भ	23½ भ त
	रोहि. 1,2,3,4	23½ भ त	23½ भ त	11 ग भ न	20 ग न	28 न	36	27½ ब भ	23½ ब भ त	22½ भ ब त य	26 त र य	27 त र	12 ग न तरय	10½ रवग नतय	24½ र व त य	27 र व	26 भ	26 भ	20 ग भ
	मृग. 1,2	23½ भ त	14½ भ न त	18½ भ त ग	27½ त ग	35	28 न	19 ब भ न	24 ब भ	22½ ब भ त य	26 त य र	19 त र न	21 त र य ग	19½ गरव त य	15½ र व नतय	24½ र व त	23½ भ त	26 भ	13 भ न ग
मिथुन	मृग. 3,4	27 तर	18 न त र	22 त र ग	19½ भ ग त	27 भ	20 भ न	28 न	33	31½ त य	19 भ व तयर	12 भ न वतर	14 भवत यगर	23½ व त य ग	19½ व न त य	28½ व त	31½ त	34	21 न ग
	आर्द्रा 1,2,3,4	19 त र न	27 त र	21 त र ग	18½ ग भ त	24½ भ त	26 भ	34	28 न	25 न य	12½ भ न तयर	20 भ व त र	13 गभर वतय	23½ ग त व	29½ व त	21½ न व त	24½ न त	24½ न त	27 ग य
	पुन. 1,2,3	20 न त र	27 त र	23 त र	20½ भ त ग	22½ भ त	23½ भ त य	31½ त य	24 न य	28 न	15½ न भ व र	22½ भ व र	17 भ व तरग	22½ य व त ग	26½ य व त	21½ न व त	24½ न त	25½ न त	27½ त ग
कर्क	पुन. 4	22½ ब न त	29½ ब त	25½ ब त ग	22 ब ग त र	24 ब त य र	25 ब त य र	18 बभव रतय	10½ बभव नयर	14½ ब भ रनत	28 न	35	29½ त ग	16½ बभय ग त	20½ ब भ त य	15½ ब भ न त	18 न भ त र	19 न ब वतर	21 ब ग वतर
	पुष्य 1,2,3,4	30½ ब त	21½ ब न त	26½ ब त ग	23 ब त र ग	25 ब त र	18 ब न त र	11 बभन वतर	18 ब भ वतर	21½ ब भ व र	35	28 न	30 ग	19½ ब भ ग त	15½ ब भ न त	23½ ब भ त	26 ब व त र	27 ब व त र	12 नबवय तरग
	आश्ले. 1,2,3,4	26 ब ग	24½ ब ग त	22½ न ब त	19 न ब त र	11 गबत नयर	19 ग ब तयर	12 गबत भवयर	12 गबभ वतयर	15 गबत भवर	28½ ग त	29 ग	28 न	15 य ब भ न	15½ गबय भ त	18½ ग ट भ त	21 ग ब वतर	21 ग ब वतर	26 ब व त र
सिंह	मघा 1,2,3,4	20 ग व भ	20 ग व भ	16½ व भ न त	17½ वब रनत	9½ वबत गरनय	17½ वबत गरय	21½ व ब गतय	22½ व ब ग त	20½ व ब गयत	16½ ग भ य त	19½ ग भ त	16 न भ य	28 न	30 ग	27½ ग त	16½ व ब गभत	16½ व ब गभत	21½ व ब भ त
	पू.फा. 1,2,3,4	26 व भ	18 व भ न	20 ग व भ	21 ब व र ग	23½ व ब रतय	15½ वबन रतय	19½ व ब नतय	28½ व ब त	26½ व ब त य	22½ य भ त	17½ भ न त	16½ ग भ य त	30 ग	28 न	35	24 व ब भ	22½ व ब भ त	7½ वबत गनभ
	उ.फा. 1	16½ ब भ त न	26 व भ	20 व ग भ	21 व ब ग र	26 व ब र	24½ व ब र त	28½ व ब त	20½ व ब न त	21½ व ब न त	17½ भ न त	25½ भ त	19½ ग भ त	27½ ग त	35	28 न	17 व ब भ न	16 व ब भ न	13½ वयब तगभ
कन्या	उ.फा. 2,3,4	13 भ न त र	22½ भ र	16½ ग भ र	21 ग भ	26 भ	24½ भ त	31½ ब त	23½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	22 ग व त र	17½ ग व भ त	25 भ व	18 व भ न	28 न	27 न	24½ य ग त
	हस्त 1,2,3,4	10 य भ नतर	20 भ त र	17½ भ र ग	22 भ ग	25 भ	26 भ	33 ब	22½ न ब त	24½ न ब त	20 न व त र	28 व त र	23 व त र ग	18½ व भ त ग	22½ व भ त	16 व भ न	26 न	28 न	28 य ग
	चित्रा 1,2	13 गभत यर	5 गभन तयर	19 भ त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	19 ग ब न	26 ग ब य	25½ ग ब त	21 ग व त र	12 गनव तयर	27 व त र	22½ व भ त	8½ ग व भनत	14½ व य गभत	24½ ग य त	27 ग य	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 2)

कन्या \ वर		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पू.षा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
मेष	अश्वि. 1,2,3,4	22½ बय तग	26½ बय त	22½ तब यग	18½ गभ तय	25½ भत	14 भन ग	13½ भन ग	25 भ	23½ भत	25 ब तर	26 बत र	20 बत यरग	20 बत यरग	15 बन तरग	16 बन तयर	14½ नभ तय	24½ भ त	26 भ
	भर. 1,2,3,4	13½ बगन तय	29½ बत	21½ गब तय	17½ गभ तय	17½ नभ त	19½ गभ त	20 गभ	18 नभ	26 भ	27½ बर	26 ब तर	10 बय गनतर	10 बय गनतर	20 गब तर	24 बय तर	22½ तभ य	17½ नभ त	26½ भत
	कृत्ति. 1	27½ बत य	15½ बग नत	19½ बन तय	15½ भन तय	19½ गभ त	25½ भत	24½ भत	18 गभ य	12 गभ न	13½ बग नर	11½ बय रगन	25 बत यर	25 बत यर	27 बत र	19 बग तयर	17½ गभ तय	19½ गभ त	11½ गभ तन
वृष	कृत्ति. 2,3,4	22½ बभ तय	10½ गब भनत	14½ बभ तनय	20½ न तय	24½ गत	30½ त	20 भ तर	13½ यग भर	7½ गभ नर	12 गभ न	10 यग भन	23½ भत य	29½ बत	31½ बत	23½ गब तय	20 गत यर	22 ग तर	14 गन तर
	रोहि. 1,2,3,4	19 गब भ	15½ बभ नत	9½ तबग नभ	15½ गन त	29½ त	23½ ग त	14 गभ तर	19 रभ तय	11½ यभ नर	16 भय न	17 नभ य	20 गभ	26½ गब	24½ गब त	30½ बत	27 तर	27 तर	19 र नत
	मृग. 1,2	12 बभ नग	25 बभ	18½ बभ तग	24½ तग	21½ नत	24½ तग	15 भत रग	10 नभ तयर	17 यभ तर	21½ भय त	25 भय	13 नभ ग	19 बग न	27 बग	29½ बत	26 तर	18 न तर	27 तर
मिथुन	मृग. 3,4	14 नभ ग	27 भ	20½ भत ग	14 भव तरग	11 भवन तर	14 भव तरग	23 तर ग	18 नत यर	25 यत र	20 भय वत	23½ भव य	11½ नभ वग	13 नभ ग	21 भग	23½ भत	25½ तव र	17½ नव तर	26½ वत र
	आर्द्रा 1,2,3,4	20 गभ य	27 भ	20 गभ य	13½ रगव भय	17 तभ वयर	3 यतगव भनर	16 गन तर	28 तर	28 तर	23 भव त	23 भव त	17½ गभ वय	19 गभ य	12 गभ न	17 नभ य	19 नर वय	26½ वत र	26½ वत र
	पुन. 1,2,3	20½ भत ग	28 भ	22 भग	15½ वभ रग	21½ वभ र	7 रगव भनत	14 यरत नग	27 तर	27 तर	22 वत भ	23 वत भ	17 वतभ यग	18½ भग तय	14 नभ ग	16 नभ य	18 रन यव	28 रव	27½ वत र
कर्क	पुन. 4	20½ बत रग	28 वर ब	22 वर बग	20 गभ	26 भ	11½ तग भन	8 वतब भगनय	21 बभ वत	21 बभ वत	26 बत र	27 बत र	21 बगत यर	12½ बभव तयगर	8 बभव नगर	10 बभर नवय	16 नभ य	26 भ	25½ भत
	पुष्य 1,2,3,4	11½ गनबव तयर	26½ बव तर	21 रबग वय	19 भ यग	18 भन	21 भग	17 गबभ वत	11 यबभ तनव	21 बभ वत	26 बत र	25 बय तर	13 गबन तयर	4½ भबगय वनतर	14½ बवत रगभ	18 बभव यर	24 भय	18 नभ	27 भ
	आश्ले. 1,2,3,4	25½ बव तर	12½ गबव तरन	17½ नबव तर	15½ नभ त	20 गभ	26 भ	22½ बभ वय	16 गबव भत	8 गबव भनत	13 गबर नत	13 बगत नर	26 बत यर	17½ बभव तरय	19½ बभव तर	11½ गबभ वतयर	17½ गभ तय	21 गभ	13 गभ न
सिंह	मघा 1,2,3,4	24½ बव तर	11½ बवत रगन	16½ बवत रन	22½ नव त	25½ गव त	33 व	25 भव	19 गव भ	8½ वगभ नतय	3½ बरतय गभन	4½ बरत गभन	18½ बर तभ	24½ बव तर	25½ बव तर	18½ बवर गत	18½ गभ त	19½ गभ त	13 गभ न
	पू.फा. 1,2,3,4	10½ बवत रगन	25½ बव तर	18½ बवर गत	24½ गव त	23½ नव त	25½ गव त	19 गव भ	17 भव न	24 भव न	17 बर भय	18½ बत भत	4½ बरत गभन	10½ बवत रगन	19½ बवर गत	24½ बव रत	24½ भत	17½ नभ त	25½ भत
	उ.फा. 1	16½ बवत यगर	25½ बव तर	16½ बवय गतर	22½ यव गत	31½ वत	17½ गव तन	9½ गव नभत	25 भव	25 भव	20 बर भ	20 बर भ	11½ बरत गभय	17½ बवत गरय	11½ बवत गनर	15½ बवत नरय	15½ नभ तय	26½ भत	25½ भत
कन्या	उ.फा. 2,3,4	16½ गबय भत	25½ बभ त	16½ गबय भत	18 यवत गर	27 वत र	13 गवत नर	14 गन तर	29½ र	29½ र	24½ भव	24½ भव	16 गभ वतय	16½ गबभ तय	10½ गबन भत	14½ बभन तय	17½ तनव यर	28½ वत र	27½ वत र
	हस्त 1,2,3,4	20 बभ यग	26½ बभ त	18½ बभ तयग	20 वग तयर	26 वत र	13 नव तरग	15 नत रग	27 तर	28½ र	23½ भव	24½ भव	18½ भग वय	19 बभ यग	8½ बयभ नतग	13½ बभ नतय	16½ वनत यर	26½ वत र	27½ वत र
	चित्रा 1,2	20 बभ न	19 गब भय	26½ बभ त	28 वत र	11 गवन तयर	25 वत यर	27 तय र	14 गन तर	22 गत र	17 गभ त	18½ गभ व	15½ भव नय	16 बय भन	24 बभ य	16½ गबत भय	19½ गवत यर	10½ गयव नतर	19½ वगत यर

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीशदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 3)

वर / कन्या		मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
		अश्वि. 1,2,3,4	भर. 1,2,3,4	कृत्ति. 1	कृत्ति. 2,3,4	रोहि. 1,2,3,4	मृग. 1,2	मृग. 3,4	आर्द्रा 1,2,3,4	पुन. 1,2,3	पुन. 4	पुष्य 1,2,3,4	आश्ले. 1,2,3,4	मघा 1,2,3,4	पू.फा. 1,2,3,4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1,2,3,4	चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	22½ ग त य	14½ ग न त य	28½ त य	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	21 ग भ	19½ ग भ त	20½ ग र व त	11½ गनय वरत	26½ व त र	25½ व र त	11½ वरग न त	17½ व य गरत	17½ य ग भ त	20 ग भ य	21 भ न
	स्वाती 1,2,3,4	27½ य त	29½ त	17½ न त	12½ भ न त	15½ भ न त	26 भ	27 भ	26 भ	28 भ	29 व र	27½ व त र	14½ न व त र	13½ व न त ग	25½ व र त	25½ व र त	25½ भ त	27½ भ त	21 भ य ग
	विशा. 1, 2,3	22½ त य ग	22½ त य ग	20½ त य न	15½ त भ न य	10½ ग भ त न	18½ ग भ त	19½ ग भ त	20 ग भ य	21 ग भ	22 ग व र	21 ग त र	18½ न व त र	17½ व र त न	19½ व र त ग	17½ बयर ग त	17½ य ग भ त	18½ ग भ त य	27½ भ त
वृश्चिक	विशा. 4	16½ बगभ य त	16½ बगभ य त	14½ ब भ नयत	19½ ब न य त	14½ ब ग न त	22½ ब ग त	12 बवर गभत	12½ वबय गभर	13½ ब व गभर	19 ग भ	18 ग भ य	15½ भ न त	21½ ब व न त	23½ ब व ग त	21½ ब व गयत	17 तबव गयर	18 बवग तयर	27 ब व त र
	अनु. 1,2,3,4	24½ ब भ त	15½ ब भ न त	19½ ब भ ग त	24½ ब त ग	27½ ब त	20½ ब न त	10 बवत नभर	15½ तबव रभय	20½ ब व भ र	26 भ	18 भ न	21 भ ग	24½ ब व त ग	20½ ब व त न	29½ ब व त	25 ब व त र	26 ब व त	11 बरव नतय
	ज्येष्ठा 1,2, 3,4	12 ब ग भ न	18½ ब ग त भ	24½ ब भ त	29½ ब त	22½ ब ग त	22½ ब ग त	12 तबव गभर	2 तवबय गभनर	5 तबवर गभन	10½ त ग भ न	20 ग भ	26 भ	31 ब व	23½ ब व ग त	16½ तबव ग न	12 तबव गनर	12 तबव गनर	24 बवत य र
धनु	मूल 1,2,3,4	12 ग भ न	20 ग भ	24½ भ त	19 ब भ त र	13 ब ग तभर	13 रबग त भ	21 ब ग त र	15 बगन त र	12 रबग तनय	8 यगभ वनत	17 ग भ व त	23½ भ व य	25 व भ	19 व ग भ	9½ तवग भ न	13 तरब ग न	13 तरब ग न	26 र ब त य
	पू.षा. 1,2,3,4	26 भ	18 भ न	18 ग भ य	12½ ब य गभर	18 ब भ तयर	10 रबभ तनय	18 ब न तयर	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	13 य भ नवत	17 ग भ व त	19 व ग भ	17 व भ न	25 व भ	28½ ब र	27 ब त र	13 तबग न र
	उ.षा 1	24½ भ त	26 भ	12 ग भ न	6½ रबय भ न	10½ बयर भ न	17 ब य तभर	25 ब य त र	27 ब त र	27 ब त र	23 भ व त	23 भ व त	9 ग भ वनत	8½ तगव यभन	24 व भ य	25 व भ	28½ ब र	28½ ब र	21 ग ब त र
मकर	उ.षा. 2,3,4	27 त र	28½ र	14½ ग न र	12 ग भ न	16 भ न य	22½ य भ त	20 ब य त भ	22 ब भ त	22 ब भ व त	28 त र	28 त र	14 ग न त र	4½ तयर गभन	20 र भ य	21 र भ	24½ भ त	24½ व भ	17 ग भ व त
	श्रव. 1,2,3,4	27 त र	26 त र	13½ य न र	11 य भ ग न	16 भ न य	25 भ य	22½ ब भ व य	21 ब भ व त	22 ब भ व त	28 त	26 य त र	15 न त र	6½ तगर भ न	18½ र भ त	20 भ र	23½ भ व	24½ भ व	19½ भ व
	धनि. 1,2	20 ग त य र	11 यगन त र	26 त य र	23½ भ त य	20 ग भ	12 ग भ न	9½ वबग भ न	16½ वयब ग भ	16 बगव त भ	22 ग त र	13 रगन तय	28 त र	19½ र भ त	5½ तगर भ न	12½ तयर ग भ	16 गभव त य	17½ ग भ व	15½ भ न व य
कुम्भ	धनि. 3,4	20 ग त य र	11 यगत न र	26 त य र	30½ त य	27 ग	19 ग न	12 ग भ न	19 ग भ य	18½ ग भ त	13½ ग भ वतर	4½ तयर गभनव	19½ भ व त र	25½ व त र	11½ वतर ग न	18½ वरग त य	17½ ग भ त य	19 ग भ य	17 य भ न
	शत. 1,2,3,4	15 ग न त र	21 ग त र	28 त र	32½ त	25½ ग त	27 ग	20 ग भ	12 ग भ न	13 ग भ न	8 गभव न र	14½ गभव त र	20½ व भ त र	26½ व र त	20½ व र ग त	12½ वरत ग न	11½ त ग न भ	8½ तयग न भ	25 भ य
	पूभा. 1,2,3	18 न त य र	25 य त र	20 ग र त य	24½ ग त य	31½ त	31½ त	24½ भ त	17 भ न य	18 भ न	13 भ न व	20 भ र व य	13½ गभव त र	19½ व र त ग	25½ व र त	16½ वरय न त	15½ भ न त	15½ भ न त य	17½ ग भ त य
मीन	पूभा. 4	14½ बभत न य	21½ ब य त भ	16½ गबत भ य	19 गबत य र	26 ब त र	26 ब त र	25½ ब व त र	18 बनव य र	19 न ब व र	18 न भ	25 भ य	18½ ग भ त	17½ ब ग त भ	23½ ब भ त	14½ बभत न य	16½ रबन वतय	16½ रबन वतय	18½ रबग वतय
	उ.भा. 1,2,3,4	24½ ब भ त	16½ ब भ त न	18½ ग ब त भ	21 ग ब त र	26 ब त र	18 न ब त र	17½ न ब वतर	25½ ब र व त	28 ब व र	27 भ	19 भ न	21 ग भ	18½ ग ब त भ	16½ ब भ न	25½ ब भ त	27½ ब व त र	26½ ब व त र	9½ बतर यवगन
	रेव. 1,2,3,4	25 ब भ	24½ ब भ त	11½ तगब भ न	14 गबन त र	17 व न त र	26 ब त र	25½ ब र व त	24½ र ब व त	26½ र ब व त	25½ भ त	27 भ	14 भ न ग	13 ब भ ग न	23½ ब भ त	23½ ब भ त	25½ ब र व त	26½ ब र व त	19½ बयर वतग

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

मेलापक सारणी (भाग 4)

वर / कन्या		तुला			वृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वाती 1,2,3,4	विशा. 1,2,3	विशा. 4	अनु. 1,2,3,4	ज्ये. 1,2,3,4	मूल 1,2,3,4	पूषा. 1,2,3,4	उ.षा. 1,	उ.षा. 2,3,4	श्रव. 1,2,3,4	धनि. 1,2,	धनि. 3,4	शत. 1,2,3,4	पूभा. 1,2,3	पूभा. 4	उ.भा. 1,2,3,4	रेव. 1,2,3,4
तुला	चित्रा 3,4	28 न	27 ग य	34½ त	23½ भ द त	6½ यगव तनभ	20½ भ व त य	27 त य र	14 ग भ त र	22 ग त र	25 ग त व	26½ ग व	23½ न व य	18 न भ य	26 भ य	18½ ग भ त य	12½ गभव तयर	3½ वतयग भनर	12½ यरग भवत
	स्वाती 1,2,3,4	28 य ग	28 न	20 न य ग	9 भवय न ग	21½ भ व त	16½ भ व त ग	23 त र ग	27 त र ग	19 त न र	22 न व त	23 न व त	26½ व य ग	21 य ग भ	20 ग य भ	25 य भ	19 व भ य र	19½ व त भ र	12½ वतभ न र
	विशा. 1,2,3	34½ त	19 ग न य	28 न	17 भ व न	16 ग व भ य	20½ भ व त य	27 त य र	22 ग त र	14 ग न त र	17 ग न व त	17 ग न व त	30 व त य	24½ भ त य	26 भ य	20 ग भ य	14 गभव य र	13 गयभ त र	4½ गभव नतयर
वृश्चिक	विशा. 4	22½ ब व भ त	7 बवग नभय	16 ब व न भ	28 न	27 ग य	31½ त य	21½ बवत य भ	16½ बवग भ त	8½ बवग नभत	12 गबन त र	12 बनग त र	25 ब त य र	24 बवत य र	25½ ब व य र	19½ बवग य र	19 ग भ य	18 ग य भ	9½ गभन त य
	अनु. 1,2,3,4	6½ बवतभ यगन	21½ ब व भ त	16 बवभ य ग	28 य ग	28 न	31 ग	15½ बवत गयभ	13½ तबव न भ	21½ ब व त भ	25 ब त र	26 ब त र	12 तयब नरग	11 तयबव नरग	21 बवत र ग	24½ ब व य र	24 भ य	18 न भ	27 भ
	ज्येष्ठा 1,2,3,4	19½ बवत भ य	15½ तबव ग भ	19½ बवभ त य	31½ त य	30 ग	28 न	14 बवन भ य	16½ बवत ग भ	16½ बवत ग भ	20 ग व त र	20 ग ब त र	25 ब त य र	24 बवत य र	18 बवन र त	10 तबवय गनर	9½ गभत न य	21 ग भ	21 ग भ
धनु	मूल 1,2,3,4	26 त ब य र	21 ग ब त र	26 त ब य र	22½ भ व त य	15½ गवभ य त	15 य व न भ	28 न	28 ग	26½ ग त	15 गबभ व त	15 गबभ व त	20 बभव त य	28½ ब व य	21½ ब न त	14½ गनब त य	16 गनव त य	25 ग व त	26 ग व
	पूषा. 1,2,3,4	13 गबत न र	27 ब त र	21 ग ब त र	17½ ग व भ त	15½ भ व न त	17½ ग व भ त	28 ग	28 न	34	22½ ब भ व	23 ब भ व त	6 गबवभ नतय	14½ गबत न य	23½ ग ब त	28½ ब त य	30 व त य	23 न व त	31 व त
	उ.षा 1	21 ग ब त र	19 न ब त र	13 गबन त र	9½ गवभ न त	23½ भ व त	17½ ग व भ त	26½ ग त	34	28 न	16½ ब भ व न	14½ ब भ व न	15 गबव भ त	23½ ग ब त	23½ ग ब त	29½ ब त	31 व त	31 व त	23 न व त
मकर	उ.षा. 2,3,4	24 ग ब त	22 न ब व त	16 ग ब न त	13 ग न त र	27 त र	21 ग त र	16 ग भ व त	23½ भ व	17½ न भ व	28 न	26 न	26½ ग त	17 गबभ व त	17 गबव भ त	23 ब भ व त	30½ त	30½ त	22½ न त
	श्रव. 1,2,3,4	26½ ब व ग	22 न ब व त	17 नबग व त	14 न त र	27 त र	22 त र	17 भ व त ग	23 भ व त	14½ न भ व	25 न	28 न	28 य ग	18½ बभव य ग	18 बभव त ग	21 बभव त य	28½ त य	29½ त	22½ न त
	धनि. 1,2	22½ न ब व य	24½ ग ब व य	29 ब व त य	26 त य र	12 गनत य र	26 त य र	21 भ व त य	7 गभय वनत	16 ग भ व त	26½ ग त	27 ग य	28 न	18½ ब भ न व	23½ ब भ व य	19 गबव त भ	26½ ग त	15½ ग न त य	22½ ग य त
कुम्भ	धनि. 3,4	18 न भ य	20 ग भ य	24½ भ त य	25 त व य र	11 गवय तनर	25 त व य र	29½ त य	15½ ग त न य	24½ त ग	18 ग भ व त	18½ ग भ व य	19½ भ व न	28 न	33 य	28½ ग त	18 ग भ व त	7 तगभ वनय	14 गयव भ त
	शत. 1,2,3,4	26 भ य	19 भ य ग	26 भ य	26½ य व र	21 ग व त र	19 न व त र	22½ न त	24½ ग त	24½ ग त	18 ग भ व त	18 ग भ व त	24½ भ व य	33 य	28 न	19 ग न य	8½ गभव न य	17 ग भ व त	16 ग भ व त
	पूभा. 1,2,3	18½ ग भ त य	26 भ य	20 ग भ य	20½ ग व य र	26½ व य र	11 गवत यनर	15½ न ग त य	29½ त य	30½ त	24 भ व त	23 भ व त य	20 भ ग व त	28½ ग त	19 न ग य	28 न	17½ न भ व	22½ भ व य	20 भ य व त
मीन	पूभा. 4	11½ गबवभ तयर	19 बभव य र	13 गबव भयर	19 ग भ य	25 भ य	9½ गभन त य	15 गबत न य	29 ब व त य	30 ब व त	29½ ब त	28½ ब त य	25½ ग ब त	17 ग ब भ त	7½ गबय भतन	16½ ब भ त न	28 न	33 य	30½ य त
	उ.भा. 1,2,3,4	2½ यवबर गभनत	19½ भवब त र	12 गवर भयब	18 ग य भ	19 न भ	21 ग भ	24 ग ब व त	22 न ब व त	30 ब व त	29½ ब त	29½ ब त	14½ गबत न य	6 गबवन भतय	16 गबव भ त	21½ ब भ त य	33 य	28 न	35
	रेव. 1,2,3,4	12½ बभव तयर	11½ बभत दनर	4½ बभवन तगयर	10½ नभत य ग	27 भ	22 भ ग	26½ ब ग व	29 ब व त	21 न ब व त	20½ न ब त	21½ न ब त	22½ ब य त ग	14 बवय भतग	16 बभव त ग	18 बयभ वत	29½ य त	34	28 न

(ब =वर्णदोष। व =वश्यदोष। त =तारादोष। य =योनिदोष। र =राशीदोष। ग =गणदोष। भ =भकूट दोष। न =नाड़ी दोष।)

लग्न–गण्डान्त

कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु, मीन और मेष के अन्त एवम् आदि की आधी–आधी घड़ी लग्नगण्डान्त होता है। वह जन्म में ही भयप्रद होता है।

अथ विवाहमासाः–आचार्य चूड़ामणौ–"माङ्गल्येषु विवाहेषु कन्या–संवरणेषु च। दशमासाः प्रशस्यन्ते चैत्र–पौष–विवर्जिताः॥" वर्षासु पाणिग्रहणं न केचित् केचिद्वदन्तीत्यपरो विशेषः। तस्मात्सदाचार इह प्रमाणं देशे यथा यत्र तथैव तत्र॥ केशवेन यदि नोररीकृतं श्रावणादिषु च पाणिपीडनम्। तेन चोक्तमपरैरुदाहृतं तद्विकल्प इति मन्यते मया॥

अथ जन्म–मासादिषु निषेधः– सबसे बड़े (जेठे) लड़के अथवा सबसे बड़ी लड़की (जेठी) के जन्ममास (अर्थात् जन्मतिथि से ३० दिन) जन्मनक्षत्र अथवा जन्मतिथि में विवाह करना शुभ नहीं है। द्वितीयादि गर्भोत्पन्न को दोष नहीं है। **अत्यावश्यके परिहारः–** जातं दिनं दूषयते वशिष्ठः पञ्चैव गर्गस्त्रिदिनं तथात्रिः। तज्जन्मपक्षं किल भागुरिश्च व्रते विवाहे गमने क्षुरे च॥

यदि दो कार्यों की आवश्यकता हो तो– एक घर में दो शुभ काम करना मना है, परन्तु अति आवश्यकता में ९ दिन का अन्तर देकर दो घरों में अलग–अलग मण्डप गाड़कर और जो पुरोहित पहला कार्य करा चुका हो, उसी से दूसरा कार्य न करावें, दूसरे आचार्य से करावें। इसी प्रकार जिस गृह में पहला कार्य हुआ हो तो दूसरे कार्य में दूसरे घर में मण्डप गाड़कर कार्य को करें।

अथ ज्येष्ठ विचारः– ज्येष्ठ पुत्र व कन्या का ज्येष्ठ मास में विवाह करना अशुभ है। अत्यावश्यकता में कृत्तिका के सूर्य को छोड़कर दानादि पूर्वक करें।

षट्मास के भीतर दो विवाह आदि का निर्णय– दो सगी बहनों का विवाह एक साथ या छः मास के अन्दर करें तो निस्संदेह ३ वर्ष के अन्दर अशुभ फल हो। पुत्र के विवाह के पीछे षट्मास तक कन्या का विवाह न करें और कन्या व पुत्र के पीछे छः मास तक यज्ञोपवीत न करें, अर्थात् पहले कर लें और मंगलकार्य के पीछे अमंगल अर्थात् श्राद्ध, तिलतर्पण भी न करें। मुण्डन भी विवाह, जनेऊ के पीछे न करें। वर्ष पलटने पर फिर भले ही शुभकार्य कर लें। वहां छः मास का विचार नहीं है। यह ६ महीने का निषेध तीन पीढ़ी तक ही है।

विवाहादि शुभ कार्यों में मरणाशौच– साहे चिट्ठी (कुंकम पत्रिका) आने पर विवाह दिन निश्चित हो जाने पर किसी की मृत्यु हो जावे तो माता के मरण से ६ मास, पिता के मरण से एक साल, स्त्री के मरण से तीन मास, भाई व पुत्र के मरण से १ ½ मास, कुल वालों के मरण से २२ ½ दिन तक कोई शुभ कार्य न करें। अति संकट में ३० दिन बाद शान्ति करके अथवा विशेष शान्ति और गोदान करके अशौच के बाद करें।

त्रिबल शुद्धि विचार

विवाह के शुद्ध मुहूर्त्त पंचांग के अन्त में दिए गए हैं। उनमें से उत्तम मुहूर्त्त देखकर और उसी दिन वर की राशि से सूर्य, चन्द्र देखिए तथा कन्या राशि से चन्द्र, गुरु देखिए। बस, इसी को त्रिबलशुद्धि कहते है। यह त्रिबलशुद्धि जिस उत्तम विवाहलग्न के दिन मिले वही विवाह–दिन उत्तम है। यदि रवि, गुरु पूज्य हों तो मध्यम है, यदि सूर्य नेष्ट हो तो विवाह नहीं बनेगा–ऐसा समझें। इसी प्रकार कुमार के उपनयन में भी त्रिबल (गु.सू.चं.) शुद्धि प्रथम देखें– **"झष–चाप–कुलीरस्थो जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयनादिषु॥ (बृहस्पतिः)॥** अत्यावश्यकता में **"द्विरर्च्यो द्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात्। उच्च उच्चांशके ग्राह्यः चन्द्रादष्टमगो रविः। नीचे नीचांशके त्याज्यः अरिलाभादिगोऽपि चेत्॥"**

तुलाराशौ अपूज्यःरविः–धर्म–धी–धनगतो दिवाकरस्तौलिराशि–जनितस्य शोभनः।।

आवश्यके पूज्यरवि–परिहारः– गार्ग्याङ्गिरोवत्स वशिष्ठ गौतम पराशराद्याः मुनयो वदन्ति। द्वितीयपञ्चांकगतो दिवाकरस्त्रयोदशाहात्परतः शुभावहः॥ (मु.प्र.सा.)।

विवाहादौ त्रिबल–शोधनम्

पूज्यगुरुः– १०/६/३/१
श्रेष्ठगुरुः–९/५/११/२/७
नेष्टगुरुः– ४/८/१२
श्रेष्ठरविः– ३/६/१०/११
पूज्यरविः– २/५/९
विशेष पूज्य रविः– १/७
नेष्टरविः– ४/८/१२
नेष्टचन्द्रः– ४/८
श्रेष्ठचन्द्रः–१/२/३/५/६//७/९/१०/११/१२

कन्या–वरयोःतैलादि–लापन (बन्न)–दिन–संख्या

राशि →	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
तैल सं.	७	१०	५	१०	५	७	७	५	५	५	५	७

अथ विवाहे तिथि–वार–नक्षत्राणि–रो., मृ., उत्तरा. ३, म., ह., स्वा., अनु., मू., रे. एतद्वेध–रहितेषु शुभेऽह्नि। अमाक्षय–रहित–तिथिषु कात्यायनमते अश्वि., चि., श्र., धनिष्ठास्वपि शुभम्॥

अथ विवाहांगकृत्यारम्भ मुहूर्तः

वर, कन्या की चन्द्रशुद्धि विचार कर विवाहदिन से पहिले ३/६/९– इन दिनों को छोड़कर विवाह के नक्षत्रों में चन्द्रशुद्धि वाली सौभाग्यवती स्त्री के प्रथमोद्योग से हल्दी हाथ, दलना, पीसना, कूटना, मंगलकशादि स्थापन करना, घर लीपना, आंगनसफाई, भूषण चढ़ाना, वस्त्र सिलाना, वेदी रचना, चन्दोया बांधना, गणेशादि पूजन और नान्दीश्राद्ध, मंगलस्नानादि सर्वकार्य का आरम्भ करना शुभ होता है।

विवाह–मुहूर्त में दस दोषों का विचार

विवाह के मुहूर्त में लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, पञ्चवाण, एकार्गल, उपग्रह, क्रान्तिसाम्य और दग्धातिथि– इन दस दोषों का विचार करना आवश्यक है। इन सबका विचार करके इस वर्ष के विवाहमुहूर्त लग्न दिए हुए हैं। इन दसों दोषों में जो दोष जिस मुहूर्त में हैं, वे क्रमानुसार टेढ़ी रेखा से सूचित किए गए हैं। उक्त दसों दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है।

(१) लत्तादोष–ज्ञान चक्र

सूर्य	पूर्णचन्द्र	भौम	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	← लग्न नक्षत्र
दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	दक्षिण	वाम	← दिशा
धननाशः	भयम्	मृत्युः	भयम्	बन्धुनाशः	कार्यहानिः	कुलक्षयः	मरणम्	← फलम्

यथा–सूर्य अश्विनी नक्षत्र पर हो और विवाह उ.फा. का हो। सूर्यस्थित अश्विनी नक्षत्र से गिना तो, उ.फा. १२वां हुआ, यह सूर्य की लत्तादोषयुक्त साहा हुआ। इसी प्रकार अन्य ग्रहों की लत्ता भी जानें।

(२) पातदोष ज्ञानचक्र

रो.	मृ	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.	विवाह नक्षत्र	
आर्द्रा पुन. श पू.फा. चि मू.	मृ. आ. ज्ये. ध. म. ह.	अ. मृ. ज्ये. पुष्य ह. रे.	कृ. आ. वि. पू.फा. उ.भा. पू.भा.	भ. मृ. श. पू.भा. स्वा. म.	कृ. श्र. ध. पुष्य ह. रे.	अ. आ. उ.षा. पू.भा. पू.षा. पू.फा.	रो. ज्ये. ध. आश्ले. मू. उ.भा.	भ. पुन. श. वि. अनु उ.षा.	भ. श. वि. उ.फा. पू.फा. मू.	अ. ज्ये. ध. म. पू.फा. स्वा.	सूर्यस्थित नक्षत्र	हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गण्ड और शूल योगों का अन्त जिस नक्षत्र में हो वह पात से दूषित होता है। इन नक्षत्रों में विवाह करने से पात दोष होता है।

(३) युतिदोष

जिस नक्षत्र का विवाह हो उसी नक्षत्र में यदि कोई ग्रह हो तो वहां उस ग्रह की युति का दोष समझा जाता है। चन्द्र उच्च, मित्र वा स्वक्षेत्री हो तो युति दोष नहीं होता, किन्तु श्रेष्ठ है। सू., मं., शु., श., रा., के. की युति दारिद्र्य, मृत्यु आदि भयप्रद मानी गई है। शुक्र की युति विशेष करके वर्जित है।

(४) वेध दोषचक्र

अश्वि.	रोहि.	मृग.	मघा	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वा.	अनु.	मूल	उ.षा.	श्रव.	धनि.	उ.भा.	रेव.
पू.फा.	अभि.	उ.षा.	श्रव.	रेव.	उ.भा.	पू.भा.	शत.	भर.	पुन.	मृग.	मघा	आश्ले.	हस्त	उ.फा.

ऊपर के नक्षत्र का विवाह हो और नीचे के नक्षत्र पर ग्रह हो तो वेधदोष होता है। यह सर्वत्र अवश्य ही त्याग देना चाहिए।

(५) जामित्र दोषचक्र

विवाह नक्षत्र→	रो.	मृग.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	उ.षा.	उ.भा.	रे.
ग्रह नक्षत्र→	अनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	अ.	कृ.	मृग.	पुन.	उ.फा.	ह.

विवाहलग्न से सातवें ग्रह होने से जामित्रदोष होता है। ऊपर वैवाहिक नक्षत्र और नीचे ग्रह नक्षत्र हैं। यानी 14वें नक्षत्र में पापी ग्रह का जामित्रदोष वर्जनीय है।

(६) बाणज्ञान–चक्र

बाण नाम	गतांशाः प्रति राशौ अर्कस्य	कर्मसु वर्ज्याः	वारे वर्ज्याः	समयपरत्वेन वर्ज्याः
रोगः	८/१७/२६	व्रतबंध	रवौ	रात्रौ त्याज्यम्
अग्निः	२/११/२०/२९	गेहगोपे	भौमे	सदैव वर्ज्यम्
नृपः	४/१३/२२	नृपसेवायम्	मन्दे	दिवा त्याज्यम्
चौरः	६/१५/२४	यात्रायाम्	भौमे	रात्रौ वर्ज्यम्
मृत्युः	१/१०/१९/२८	विवाहे	बुधे	संध्र.योः वर्ज्यम्

(७) एकार्गल दोष

व्याघात, गण्ड, व्यतिपात, विष्कम्भ, शूल, वैधृति, वज्र, परिघ, अतिगण्ड–ये योग हों और सूर्य के नक्षत्र से विवाह का नक्षत्र अभिजित् सहित गिनने से विषम हो तो एकार्गल दोष होता है।

(८) उपग्रहदोष

सूर्य के नक्षत्र से ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र पर चन्द्रमा हो तो उपग्रह दोष होता है।

(९) स्थूल–क्रान्तिसाम्य–दोषचक्र					
मेष	वृष	मिथुन	कर्क	कन्या	तुला
सिंह	मकर	धनु	वृश्चि.	मीन	कुम्भ

नीचे और ऊपर की राशि पर कहीं भी सूर्य एवं चन्द्रमा हो तो स्थूल रूप से क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह सर्वत्र वर्जित है। जैसे–मेष के सूर्य और सिंह के चन्द्रमा में या सिंह के सूर्य और मेष के चन्द्रमा में। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित है। जिसका निर्णय महापातगणित से करना चाहिए।

(१०) दग्धातिथि–दोषचक्र						
९	२	४	६	५	१०	← सूर्य
१२	११	१	३	८	७	राशयः
२	४	६	८	१०	१२	← तिथयः

इन संक्रान्तियों में ये तिथियां दग्धा होती हैं। विशेषतः ये मध्यप्रदेश में ही वर्ज्य हैं।

"भुजंगं क्रान्तिसाम्यञ्च बाणवेधं तथैव च। लग्नहीन–विवाहन्तु कलौ पञ्च विवर्जयेत्।। *–कश्यपः*

लत्तादि–दोषाणां परिहारवाक्यानि

लत्ता मालवके (उज्जैन प्रान्ते) देशे, पातश्च कुरु (कुरुक्षेत्रबांगरे) जांगले (फिरोज़पुर–भटिण्डाप्रान्ते)। एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्।। उपग्रहर्क्षं कुरुवाहलिकेषु (कुरुक्षेत्र, आगराप्रान्ते) कलिंगबंगेषु (जगन्नाथपुरी–बंगाल–अयोध्यायां) च पातितं भम्। सौराष्ट्रे (काठियावाड़े) शाल्वे (उज्जैनप्रान्ते) च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे।। युतिदोषो भवेद्गौडे (बंगाले) जामित्रस्य च यामुने (मथुराप्रान्ते)। मासदग्धाश्च तिथयो मध्यदेशे विवर्जिताः।।

विशेष परिहारः– चित्रांगते पातविचित्रदेशे मैत्रे मघा मालवके निषिद्धाः पौष्णश्रुतिश्चोत्तरदेशजातः सर्वत्र वर्ज्यश्च भुजंगपातः।।

युतिपरिहारः–स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥

अत्यावश्यके वेध–परिहारः– "पादमेकं शुभैर्विद्धमशुभैर्नैव कृत्स्नतः।"
–(नारदः)

ग्रह प्रथम चरण में हो तो चतुर्थ चरण में वेध होता है, यदि चतुर्थ चरण में हो तो प्रथम चरण विद्ध होता है। द्वितीय में हो तो तृतीय, तथा तृतीय चरण में ग्रह हो तो द्वितीय चरण विद्ध होता है। आवश्यकता में चरणमात्र का त्याग किया जाता है– **भुक्तं भोग्यं तथाक्रान्तं विद्धं पापग्रहेण च। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥**

अस्यापवादः– ऋक्षाणि क्रूरविद्धानि क्रूरयुक्तादिकानि च। भुक्त्वा चन्द्रेण युक्तानि शुभार्हाणि प्रचक्षते।।

एकार्गलोपग्रह–पात–लत्ता–जामित्रकर्तर्युदयास्त दोषाः। नश्यन्ति चन्द्रार्क–बलोपपन्ने लग्ने यथार्काभ्युदये तु दोषाः॥ – (मु.चिं.)

उक्तानुक्ताश्च ये दोषास्तान्निहन्ति बली गुरुः।
केन्द्रसंस्थः सितो वापि पन्नगान् गरुडो यथा॥

विवाहे लग्न–शुद्धिचक्रम्												
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	←भावाः
चं. पाप.	०	शु.	रा.	०	चं. शु. लग्नेश	सर्वे	चं. मं. शुभाः लग्नेश	०	मं.	०	श.	← त्याज्याः
चं. मं.	कुलिकं क्रान्तिसाम्यञ्च				चं.	मं.	चं. मं.	विद्धभञ्च				← गोधूलौ त्याज्याः

लग्नभंगयोगा :– व्यये शनिः खेऽवनिजस्तृतीये भृगुस्तनौ चन्द्रखला न शस्ताः। लग्नेट् कविर्ग्लौ च रिपौ मृतौ ग्लौ लग्नेट् शुभाराश्च मदे न सर्वे (अस्तेऽब्जगुरु समौ)॥ वर्गोत्तमं विनान्त्यांशो विवाहे न शुभप्रदः। वर्गोत्तमश्चेदन्त्यांशः पुत्रपौत्रादिवृद्धिदः॥ दम्पत्योरष्टमं लग्नन्त्वष्टमो राशिरेव च। यदि लग्नंगतः सोऽपि दम्पत्योर्निधनप्रदः॥ पंग्वन्धादिलग्नानां गौडमालवयोरेव त्यागः। बादरायणः मासशून्याह्वयास्तारा राशयो वधिरादयः। गौडमालवयोस्त्याज्यास्त्वन्यदेशे न गर्हिताः।।

कर्तरी दोषः– लग्नस्य पृष्ठाग्रगयोश्च साध्वोः सा कर्तरी स्यादृजुवक्रगत्योः। तावेव शीघ्रौ यदि वक्रचारौ न कर्तरी चेति पितामहोक्तिः॥ इय कर्तरी चन्द्रस्यपि द्रष्टव्या। **केषाञ्चिल्लग्नदोषाणां परिहाराः** –पापौ कर्तरिकारकौ रिपुगृहनीचास्तंगौ कर्तरी दोषो नैव सितेऽरिनीचगृहगे तत्पष्ठदोषेऽपि न। भौमेऽस्ते रिपुनीचगे नहि भवेद्: भौमोऽष्टमो दोषकृन्नीचे नीचनवांशके शशिनि रिःफाष्टारिदोषोऽपि न॥

दोषापवादाः ज्योतिर्निबन्धे– दोषाश्च बहव सन्ति गुणाः स्वल्पाः कलौ युगे। तथापि दोषा नश्यन्ति स्वापवादगुणैः सह॥

अपवादान्तरम्– उक्तानुक्ताश्च ये दोषस्तान्निहन्ति बली गुरुः। केन्द्र-संस्थः सितो वापि पन्नगान्गरुडो यथा॥ मुहूर्तलग्नषड्वर्गकुनवांश ग्रहोद्भवाः। ये दोषास्तान्निहन्त्येव यत्रैकादशगःशशी॥ अब्दायनर्तुमासोत्त्थाः पक्षतिथ्यृक्षसम्भवाः। ते सर्वे नाशमायान्ति केन्द्रसंस्थे शुभग्रहे॥ लग्नाधिपो यदा केन्द्रे लग्नादेकादशालये। सर्वग्रहकृतं रिष्टमेकोपि विलयं नयेत्॥ बलवान् केन्द्रगः सौम्यो हन्ति दोष–शतत्रयम्। द्यूनं विहाय दैत्येज्यः सहस्रं लक्षमंगिरा॥ स्मरण रहे कि– पूर्वोक्त अपवाद वाक्यों में सप्तमरहित केन्द्र (१/४/१०) ही ग्रहण करना चाहिए।

विवाहे ग्रहाणां रेखाप्रद–स्थानानि

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.	ग्रहाः	मुहूर्त गणपतौ
३	२	३	१	१	१	३	३	३		लग्नं शुभं विवाहे स्याद्
६	३	६	२	२	२	६	६	६		दशविंशोपकाधिकंम्।
८	११	११	३	३	४	८	८	८		
११			४	४	५	११	११	११		
			५	५	९					
			६	६	१०					
			९	९	११					
			१०	१०						
			११	११						
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥	१॥		विंशोपकबलम्

अथ गोधूलि लग्नविचारः– लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या यौवनशालिनी। तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम्॥ लग्नं यदा नास्ति विशुद्धमन्यद् गोधूलिकं साधु तदा वदन्ति। लग्ने विशुद्धे सति वीर्ययुक्ते गोधूलिकं नैव फलं विधत्ते॥ मार्ग., माघ, फाल्गुन में संध्यासमय सूर्य गोलक समान दृष्टिगोचर होने पर चैत्र, वैशाख में गौओं की धूली से आकाश आच्छदित होने पर, ज्येष्ठ, आषाढ़ में सूर्य आधा अस्त होने पर, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक में सूर्य पूर्ण अस्त होने पर गोधूलि लग्न होता है।

गोधूलिके त्याज्या दोषाः– कुलिकं क्रातिसाम्यञ्च लग्ने षष्ठेऽष्टमे शशी। तथा गोधूलिके त्याज्यं पञ्चदोषैस्तु दूषितम्। अस्तं याते गुरुदिवसे सौरे सार्के। अर्थात् बृहस्पतिवार को सूर्य अस्त होने के पीछे।क्योंकि सूर्य अस्त से पहले वारबेला होगी और शनिवार को सूर्य अस्त से पहले (क्योंकि सूर्य अस्त हो जाने में कुलिकं मुहूर्त होगा) गोधूलि समझना चाहिए।

संकीर्ण वर्णसंकर चाण्डालादि जाति का विवाह मुहूर्त्त

कृष्णपक्ष क्रूरवार निषिद्ध नक्षत्र योगों में संकीर्ण जाति वालों का विवाह धन, पुत्र आयु प्रीती लाभ देता है। ऐसा शौनकादि मुनि कहते हैं।

पुनर्विवाहे (रीत) सूर्यभात् शुभाशुभज्ञानाय चक्रम्

नक्षत्र→	३	३	३	३	३	३	३	३
फल→	मृत्यु	धन	मरण	मृत्यु	पुत्र	दुर्भग	श्री	उन्नति

अन्यच्च– सूर्यभात् ४/११/१८/२५ संख्यकसाभिजिदभेषु पुनर्विवाहे मृत्युः। अत्र तिथि–गासवेध भृगु–गुर्वस्तादि दोषोऽपि नावलोकनीयः।

वधु प्रवेश का मुहूर्त्त

जब वधू विवाह होने पर पति के घर पहले आती है वह वधू प्रवेश कहा जाता है। विवाह के १६ दिन के भीतर सम दिनों में अथवा ५, ७, ९वें दिन; इनके उपरान्त एक मास तक विषम दिनों में; एकवर्ष के भीतर विषम मास में; एक वर्ष के उपरान्त ३रे, ५वें वर्ष में भी स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है। ५वर्ष के उपरान्त जब चाहे तब शुभ मुहूर्त में हो सकता है। १६ दिन के भीतर पूर्वोक्त दिनों में तिथ्यादि पंचांगशुद्धि, चन्द्रबल, गुरुशुक्र के मूढत्व का भी विचार नहीं करना– व्यतिपाते क्षयतिथौ ग्रहणे वैधृतौ तथा अमासंक्रान्ति–तिथ्यादौ प्राप्तकालेऽपि नाचरेत्॥ रेव., अश्वि., रोहि., मृग., श्रव., धनि., हस्त, चित्रा, स्वा., मघा, मूल, उत्तरा ३, पुष्य, अनु., इन नक्षत्रों में और चं., बु., बृ. शु. श. इन वारों में १/२/३/५/६/७/८/१०/११/१२/१३/१५ तिथियों में, ५/८/११ लग्नों में चतुर्थाष्टम शुद्ध हों तो वधु प्रवेश शुभ है।

वधु–प्रवेश–समय

वधुप्रवेशो न दिवा–प्रशस्तः राजप्रवेशो न निशि–प्रशस्तः।
दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः सत्कीर्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः॥

विवाहतः प्रथम वर्षे वधू–निवासफलम्– विवाह के बाद आषाढ़ मास में कन्या पति के घर रहे तो अपनी सास को, क्षय मास में अपने शरीर को, ज्येष्ठ में ज्येष्ठ को, पौष में श्वसुर को और अधिक मास में पति को नाश करती है। विवाह के बाद चैत्र मास में पिता के घर रहे तो पिता को अशुभ है, सास आदि के अभाव में उस मास का कोई दोष नहीं होता।

द्विरागमन का मुहूर्त

प्योके (पितृगृह) से दूसरी बार पति के घर जाने को द्विरागमन कहते हैं। विवाह से एक वर्ष के भीतर अथवा तीसरे या पांचवें वर्ष वृश्चिक कुम्भ, मेष के सूर्य में जब सूर्य और बृहस्पति शुद्ध हो तब रोम, बुध, गुरु, शुक्रवार को २, ३, ६, ७ या १२ वीं राशि के लग्न में हस्त, अश्वि., पुष्य, अभिजित्, तीनों उत्तरा, रोहि. स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत., मूल, मृग., रेव., चित्रा, अनुराधा नक्षत्रों में शुभ है। शुक्र सामने या दाहिने हो तो अशुभ है।

विशेषः– द्विरागमं षोडशवासरान्ते एकादशाहे समवासरेषु। न चात्र ऋक्षं न तिथिर्न योगो न वारशुद्ध्यादि विचारणीयम्।।

शुक्र सम्मुख व दक्षिण में निषेध– सम्मुख या दक्षिण शुक्र में यदि नूतन वधू जावे तो वन्ध्या हो, छोटे बालक को साथ लेकर जावे तो बालक की मृत्यु हो, गर्भिणी जावे तो गर्भ का सुख न पावे। यदि ऐसे समय राजविद्रोह–राजपीडन आदि उपद्रव या दुर्भिक्ष के दुःख से यात्रा करनी पड़े एवम् विवाह सम्बन्धी यात्रा में या देवतीर्थ यात्रा के सम्बन्ध में जाना पड़े तो सम्मुख या दक्षिण शुक्र का दोष नहीं होता। यदि रेवती से मृगशिर तक के चन्द्रमा में भी जावे तो दोष नहीं, क्योंकि तब तक शुक्र अन्धा होता है।

विशेषः– सिंहस्थे वा गुरौ शुक्रे सम्मुखेऽस्तंगतेऽपि वा। शुभो दीपोत्सवे वध्वाः प्रवेशः पतिमन्दिरे।।

अत्यावश्यकेऽभिमुखे शुक्रदोषनाशाय शान्तिः– राजते वाथ सौवर्णे कांस्यपात्रेऽथवा पुनः। शुक्लपुष्पांबरयुते श्वेततण्डुलपूरिते।। निधाय राजतं शुक्रं शुचिमुक्ता फलान्वितम्। महाश्वेत गवायुक्तं सामगाय निवेदयेत्।

प्रथम स्त्रीसंगम मुहूर्त

रजोदर्शनानन्तर १६ रात्रि पर्यन्त, ४ रात्रि के बाद समरात्रि में, (पञ्चदशवर्षोपरि रजोदर्शनाभावेऽपि) रो., मृ., पुष्य, ह., चि. अनु., ध., उत्तरा. ३, रिक्ता अमावस रहित तिथि में, शुभवार, रात्रि के प्रथम पहर को छोड़कर। शुभ समय में चित्त को प्रसन्न कर, प्रथम दिन स्त्री संगम करें।

मनुष्य का स्त्री के प्रति कर्त्तव्य–स्त्री का अपमान या तिरस्कार न करें, आदर सत्कार करें। विशेष गुप्त बात न कहें और विशेषाधिकार भी न दें, क्योंकि स्त्री जाति पुरुष की समान कोटि में नहीं आ सकती। अपवाद में एक–दो हो सकती है। प्रभुकृत शरीर रचना भी कोई वस्तु है, उसे समझना चाहिए। उसका दिल और दिमाग़ तथा ओज प्रकृति ने पुरुष से न्यून बनाया है। पशुओं में भी घोड़े, हाथी, सांड, भैंसा आदि अपनी स्त्री जाति पर पूर्ण प्रभुत्व रखते हैं।

नववधुद्वारा पाककर्म मुहूर्त

द्विरागमनोत्तरं मृग., उत्तरा. ३, पुष्य, कृ., ज्ये., श्रव., धनि., श., रो., वि., रे. एषु नक्षत्रेषु शुभवासरे (रविभौमवर्जिते), रिक्ताक्षयरहिततिथौ, २/५/८/११ लग्नेषु, चतुर्थाष्टमशुद्धे सप्तमभावे च बलान्विते सति पाक्कर्म शुभम्।

सधवा स्त्री का वस्त्र, सुवर्णरत्नभूषणादिधारण करने का मुहूर्त

हस्त., चित्रा., स्वा., अनु., धनि., रेवती., अश्वि. एषु भेषु, बु., गु., शु., वारेषु रिक्तामावस्यारहित तिथिषु, नूतन वस्त्रसौवर्णरत्नरजत–दन्तादि भूषणानां धारणं प्रशस्तम्।।

चूड़ीचक्र में विशेषः– सूर्य नक्षत्र से गणना करने पर ८ अशुभ। ३ शुभ। २ अशुभ। ७ शुभ। २ अशुभ। ४ शुभ। १ अशुभ। गुरुशुक्रोदय में शुभ।

वस्त्रधारणे विशेषः– विप्रादेशात्तथोद्वाहे क्षमापालने समर्पितम्। निन्द्येपि धिष्ण्ये वारादौ धारयेच्च नवाम्बरम्।।

आभूषण बनवाने का मुहूर्त्त

हस्त., अ., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत., उत्तरा.३, रोहि. एषु नक्षत्रेषु रिक्तामाक्षयरहित तिथौ, शुभवासरे द्विपुष्करत्रिपुष्करयोगे वा भूषणं कार्यम्।।

दुकान खेलने का मुहूर्त्त

हस्त, चित्रा, रोहि., रेव., उत्तरा. ३, पुष्य, अश्वि., अभि. इन नक्षत्रों में ४। ९। १४। ३० इन तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगलवार को छोड़कर अन्यवारों में, कुम्भ लग्न को छोड़कर अन्य लग्नों में, २। १०। ११ स्थानों में शुभ ग्रह बैठे हों, ३। ६ में पापग्रह हों, ८। १२ वां स्थान पाप रहित हो, शुभ दशा भी हो तो दुकान करना शुभ है, चन्द्र लग्न में हो तो अत्यन्त शुभ है।

भर्तृगृह से पितृ गृहागमन मुहूर्त्त

पूर्वा.३, भ., मू., म. ज्ये., आर्द्रा, आश्ले. एतदभिन्नेषु, चं., बु., शु., वारेषु सत्तिथौ शुभलग्ने कुयोगादिराहित्ये प्रशस्तः।।

घोड़े पर चढ़ने का मुहूर्त्त

भ., आर्द्रा, आश्ले., म., पूर्वा. 3, ज्ये., मू. इन नक्षत्रों को छोड़कर, शेष नक्षत्रों में रविवार को शुभ है।

हट्टचक्रः— सूर्य नक्षत्र से दुकान खेलने के दिन तक, नक्षत्र गिन कर चक्र से शुभाशुभ फल जानें।

हट्टचक्र

नक्षत्र	२	३	४	४	३	४	४	४
स्थान	आसन	मुख	अग्नि	नैर्ऋत	सम्मुख	वायव्य	ईशान	मध्य
फल	सौख्य	विक्रयनाश	अर्थनाश	सुख	महाश्रेष्ठ	चोरभय	सर्वहानि	शुभप्रद

सेवाकर्म (नौकरी) मुहूर्त्त

अ., मू., चि., ह., पुष्य, अनु., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, र., बु., बृ., शु. वारेषु शुभः। लग्नस्थे, १०, ११ सूर्ये—भौमे वा स्वामिसेवकयोः राशीश—योनि—मैत्र्यां सत्यां शुभः।

व्यवहार (बही) पत्रारम्भ मुहूर्त्त

अश्वि., रो., मू., पुन., पु., उत्तरा. ३, ह., चि., अनु., श्रव., रे. एषु भेषु रिक्तामारहिततिथौ, सू., चं., बु., बृ., श. वारेषु शुभे युते शुभे लग्ने चरे द्विस्वभावे च व्यायाष्टरहिते पापैः केन्द्रकोणगैः शुभैः स्यात्।।

द्रव्यप्रयोगमुहूर्त्त

पुन., स्वा., मृग., रे., चि., अनु., वि., पुष्य., श्रव., ध., श., अश्वि. एषु नक्षत्रेषु १। ४। ७। १०, लग्नेषु ९। ८। ५ शुद्धिरहिते द्रव्यप्रयोगः शुभः। अत्रावसरे ९। ५ शुभः, ग्रहाणां तु न कोऽपि दोषः।।

ऋण लेने के लिए वर्जितकाल

मंगलवार, संक्रान्ति दिन, वृद्धियोग, हस्तनक्षत्रयुक्त रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्त न हो। मंगलवार को ऋण चुकाना अच्छा है। बुधवार को धन न देना चाहिए। कृ., रो., आर्द्रा, आश्ले., उत्तरा ३, वि., ज्ये., मू. नक्षत्रों में भद्रा, व्यतिपात और अमावस में गया धन फिर मिलता नहीं या झगड़े आदि पर उतारू होना पड़ता है।

श्रीकाशीनाथ के मत से क्रयविक्रय मुहूर्त्त

पुष्य, पूभा., अनु., श्रव., ह., म., स्वा., उत्तरा.३, आश्ले., रे., एषु भेषु सत्तिथौ, शुभदिने उत्तमशकुनं विचार्य क्रयविक्रयणं कार्यम्।

वस्तु खरीदने के नक्षत्रः— रे., शत., अश्वि., स्वा., श्रव., चि., वारों में, बुध, रवि श्रेष्ठ माने गए हैं।

वस्तु बेचने के नक्षत्रः— पू. फा., पू. षा., पू. भा., वि., कृ., आश्ले., भ. ये ७ नक्षत्र और गुरुवार, चन्द्रवार श्रेष्ठ माने गए हैं।

नोटः— बेचने के नक्षत्रों में खरीदना और खरीदने के नक्षत्रों में बेचने वालों को ९५ फीसदी नुकसान रहेगा, इसमें संशय नहीं। इसी कारण खरीदने—बेचने के नक्षत्र दिखाए गए हैं, परन्तु सम्प्रति प्रचलित सट्टे जैसे भयानक व्यापार में तो धैर्य का काम ही नहीं, सिवाय घबराहट के दिन भर में १० बार बेचना, २० बार खरीदना। ऐसे व्यापारी क्या करेंगे, इन नक्षत्रों को।

लेकिन हमारा कहना है कि विश्वास करके परीक्षा तो कीजिये, बात कहा तक सच है। सट्टे में भी प्रथम बार व्यापार करने वाले व्यापारी अवश्य ध्यान करें तभी मालूम होगा कि ऋषियों के वाक्य कहां तक सत्य हैं।

प्रार्थनापत्र (अर्जी) देने का मुहूर्त्त

४। ९। १४ तिथि हों, मं., श. वार हों, कृ., आर्द्रा, भ., अश्वि., आश्ले., म., ज्ये., मू., वि., पूर्वा. ३ नक्षत्र हों, भद्रा होवे तो अत्युत्तम है।

गृहादि निर्माण में आय विचार

गृहस्वामी के हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई को परस्परगुणाकर, आठ का भाग देवें, जो शेष रहे वह क्रम से ध्वजादि आय होते हैं। १ ध्वज, २ धुम्र, ३ सिंह, ४ श्वान, ५ वृषभ, ६ गर्दभ, ७ हस्ति, ८ (०)। इनमें एकादि विषम संख्या की आय शुभ और २ आदि सम संख्या को अशुभ जानना। गृह की भूमि को अन्दर से मापना चाहिए और देवस्थान की भूमि को बाहर से मापना चाहिए। ३२ हाथ चौड़े घर में आयादि विचार की आवश्यकता नहीं है और न चार द्वार वाले घर में ही। ब्राह्मण को ध्वजाय, क्षत्रिय को सिंहाय, वैश्य को गजाय और शुद्र को वृषभाय विशेष शुभ होती है। अन्य आय नीच जाति के लिए शुभ है।

ग्रामभात् वासकर्तुः नक्षत्र यावद् साभिजित् गणना कार्या

स्थान	नक्षत्र	फलम्
मस्तके	७	धनलाभः
पृष्ठे	७	हानिःनैस्वम्
हृदये	७	सुखलाभः
पादे	७	पर्यटनम्

घर का नक्षत्र और व्यय ज्ञान

घर केक्षेत्रफल (हस्तादि लम्बाई–चौड़ाई के गुणन) को आठ से गुणाकर २७ का भाग दें। जो अंक शेष रहे, तदनुसार अश्विन्यादि गृह का नक्षत्र जानें। इस नक्षत्र को ८ से भाग देवें। शेषांक तुल्य व्यय जानें। आय से व्यय कम हो तो शुभ, अन्यथा अशुभ।

वास्तुभूमि का शुभाशुभ जानना

नई बस्ती में गृहादि बनाना हो तो भुमिपूजन पूर्वक शाम को एक हाथ चौड़ा, एक हाथ लम्बा और एक हाथ गहरा गड्ढा बनाकर, उसको जल से भर देवें। प्रातःकाल उसको देखें यदि जलयुक्त हो तो शुभ, निर्जल मध्यम, निर्जल फटा हुआ हो तो अशुभ है।

मकान बनाने के लिए पृथ्वी की शुभाशुभ परीक्षा

मकान की नींव को इतना गहरा खोदें कि जल दीखने लगे अथवा दूसरी मिट्टी जब तक निकले अथवा साढे तीन हाथ गहरी खोदें अर्थात् मनुष्य के बराबर खोदें। खोदते समय यदि ज़मीन में पत्थर निकले तो धन–आयु की वृद्धि हो; अगर गुठली निकले तो धननाश हो और अगर अस्थि, राख, बाल निकले तो मकान बनाने वाले को व्याधि–पीड़ा हो।

गृहारम्भमुहूर्त्त

वैशा., श्रा., मार्ग., माघ, फाल्गुन सौर महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं; भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २। ३। ५। ६। ७। १०। ११। १२। १३। १५ और कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, इन तिथियों में चं., बु., गु., शु., श. वारों में; रो., मृ., चि., ह., स्वा., अनु., उत्तरा. ३, ध., श., रे. वेधरहित नक्षत्रों में; २। ३। ५। ६। ८। ११। १२ लग्नों में; पञ्चवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में; लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभग्रह और ३। ६। ११ वें स्थान में पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है। केवल तृणमय गृहारम्भ में वत्सचक्र व मासादि का विचार नहीं करना।

गृहारम्भे वत्सचक्रम्

सूर्यनक्षत्र से गृहारम्भ नक्षत्र तक अभिजित् सहित गणना करें।

स्थानानि	न.	फलानि
शीर्षे	३	अग्निदाहः
अ. पादे	४	शून्यमसत्
पृ. पादे	४	स्थिरता
पृष्ठे	३	लक्ष्मीप्राप्तिः
द. कुक्षौ	४	लाभःशुभम्
पुच्छे	३	स्वामिनाशः
वामकुक्षौ	४	निर्धनता
मुखे	३	पीड़ा असत्

विशेषः– पुष्य, उत्तरा. ३, रो., म., आश्ले., पू.षा., इनमें से जिस पर बृहस्पति हो, उस नक्षत्र में बृहस्पतिवार को गृहारम्भ हो तो पुत्र और सम्पत्तिदायक होता है। रो., ह., अ., उ. फा., चि. इनमें से जिस पर बुध हो उस नक्षत्र में बुधवार को गृहारम्भ हो तो सुख और पुत्र होते हैं। वि., अ., चि., ध., श., आर्द्रा इनमें से जिस पर शुक्र हो उस नक्षत्र में और शुक्रवार को गृहारम्भ हो तो धनधान्यदायक होता है।

भूमिप्रसुप्तज्ञानम्ः– "संक्रान्ति मिति दिन पांचवें सप्तम नवम जोय।

१०। २१। २४ में षंड्दिन पृथ्वी सोय।। तत्रात्यावश्यके क्रमात् ५। ११। ७। ६। २। १० एताः घटिका भूमिकर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः।" **अन्यच्च–** सूर्य के नक्षत्र से ५। ७। ९। १२। १९। २६ इतनी संख्या के नक्षत्रों में पृथ्वी शयन के कारण मकान की नींव, तड़ाग, वापी, कूपादि का खोदना उत्तम नहीं होता।

गृहमध्य में कूपविचार								
मध्य	ई.	पू.	आ.	द.	नै.	प.	उ.	वा.
र्थहानि	सुपुष्टि	सुप्राप्ति	पुत्रनाश	स्त्रीनाश	गृहेशनाश	संपत्	सुख	शत्रुभय

अथ चुल्लिचक्र–विचार

सूर्य के नक्षत्र से ६ नक्षत्रपीठ के सुखप्रद। ४ मस्तक के मृत्युप्रद। ८ बाहु के सुन्दर–सुख–भोगदायक। ५ गर्भ के नाशक। २ भुज के भोगदायक। २ चरण के नाशक। यह चुल्लिचक्र गर्गाचार्य ने कहा है, पण्डित जन विचार करें। उपरोक्त शुभ नक्षत्रों में चुल्हा बनावें तथा इन्हीं शुभ नक्षत्रों में प्रथम अग्नि जलावें।

नूतनगृह प्रवेश मुहूर्त्त

माघ–फाल्गुन–वैशाख–ज्येष्ठ मासेषु शोभनाः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्य (मार्ग.)कार्त्तिक मासयोः।। (यहां चन्द्रमास लेना) उत्तरा. ३, अनु., रो., मृ., चि., रे. इन नक्षत्रों में रिक्तामारहित तिथियों में। चं., बृ., श. इन वारों में। २। ५। ८। ११ लग्नों में; **अत्यावश्यके** ३। ६। ९। १२ लग्नों में भी; लग्न से १। २। ३। ५। ७। ९। १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हों, ३। ६। ११ में क्रूर हों १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा न हो; चौथा, ८वां स्थान शुद्ध हो; जन्म लग्न या जन्म राशि से ८वीं राशि लग्न में न हो; चन्द्र–तारा शुभ हो और कुम्भ चक्र की भी शुद्धि हो, तो आगे गौ, कन्या, जलपूर्ण–पुष्पमाला युक्तकलश, शंखध्वनि व मंगलगान के साथ दम्पति का गृह प्रवेश शुभ है।

गृहप्रवेश का विशेष मुहूर्त्त

पुराने अर्थात् जीर्ण या तृणकुटीर अथवा अग्नि–वर्षा इत्यादि के भय से बनवाये हुए नए घर में भी वैशाख., श्रावण, कार्त्तिक., मार्गशीर्ष और फाल्गुन मास में शत., पुष्य, स्वा. और धनि. नक्षत्रों तथा गुरु, शुक्र के अस्त में भी गृह प्रवेश हो सकता है।

सूर्यराशिवशात् खातज्ञानम्				
खाते राहोर्मुखात्पृष्ठदिग्भागःशुभदो भवेत्।				
राहुमुखम्	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालया-रम्भे सूर्यः	मीन, मेष, वृष	मिथुन, कर्क,सिंह	कन्या,तुला, वृश्चिक	धनु,मकर, कुम्भ
गृहारम्भे सूर्यः	सिंह, कन्या, तुला	वृश्चि., धनु, मकर	कुम्भ, मीन, मेष,	वृष, मिथुन, कर्क
जलाशया-रम्भे सूर्यः	मकर,कुम्भ, मीन	मेष, वृष, मिथुन	कर्क, सिंह, कन्या	तुला,वृश्चि., धनु
खातदिशा-ज्ञानम्	आग्नेय्यां	ऐशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां

द्वारशाखाचक्रम्		
सूर्यनक्षत्रात्		
स्थान.	न	फलानि
शिरसि	४	श्रीप्राप्तिः
कोणे	८	उद्वसनं
शाखा	८	सौख्यमं
देहल्यां	३	गृहेशनाशः
मध्ये	४	सौख्यम्

चक्रमिदं विलोक्य सुधिया द्वारं विधेयं शुभम्।

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रम्			
सूर्यभात्			
५ अशुभ	८ शुभ	८ अशुभ	६ शुभ

कूप, तालाब और बावड़ी खुदवाने का मुहूर्त्त

अनु., हस्त., उत्तरा. ३, रोहि., धनि., शत., भरणी, पू.षा., रेवती, पुष्य, मृग. नक्षत्र हों व चन्द्रमा मकर के उत्तरार्ध, मीन या कर्क में हो, लग्न में बुध या गुरु हो, शुक्र १०वें स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हों तो शुभ है। यदि २। १०। ४। ११। १२ लग्न हों तो अत्यउत्तम है।

सूर्यनक्षत्रात्कूप–नलचक्रम्			सूर्यभात्तड़ागचक्रम्		
ईशान ३ क्षार जल	पूर्व ३ खण्डितजल	आग्ने. ३ सुजल	ईशान २ जलनाश	पूर्व २ शोक	आग्ने. २ जलाधिक्य
उत्तर ३ उत्तम जल	मध्य ३ स्वादु तथा शीघ्रजल	दक्षिण ३ निर्जल	उत्तर २ अमृतजल	मध्य ५ बहुजल	दक्षिण २ जलनाश
वायव्य ३ मिश्रितजल	पश्चिम ३ जल	नैर्ऋत्यां ३ अमृतजल	वायव्य ३ जलनाश	पश्चिम २ बहुजल	नैर्ऋत्य २ अमृतजल

गणनाक्रमः—मध्य—पूर्व—आग्नेय—दक्षिणादिक्रमेण बोध्यम्— अवशिष्टानि ६ नक्षत्राणि 'वारिवाह' संज्ञकानि सन्ति। तत्फलम्—वारिवाहे वारिहानिः। गणनाक्रमः— पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, मध्य में वारिवाह।

रोहिणीभात् वापीचक्रम्		
ईशान अश्विनी, भरणी, कृत्तिका मध्यजलम्	पूर्व पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा जलाभावः	आग्ने. मघा, पू.फा., उ.षा. मध्यजलम्
उत्तर पू.भा., उ.भा., रेवती मिष्ठजलम्	मध्य रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा शीघ्रजलम्	दक्षिण हस्त, चित्रा., स्वाती जलाभाव
वायव्य श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा. क्षारजलम्	पश्चिम मूल, .पू.षा., उ.षा. अमृतजलम्	नैर्ऋत्यां विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा बहुजलम्

जलाशयारामदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्त

"देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिने।।
मातृ—भैरववाराहनारसिंहत्रिविक्रमाः। महिषासुरहंत्री च स्थाप्या वै दक्षिणायने।।"

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनु., श्रवण, धनि., शत., उत्तरा. 3, रेवती एषु भेषु कुजशनिवर्जितवारेषु २। ३। ५। ७। ८। १०। ११। १२। १३ तिथिषु शुक्ले १। २। ३। ५ तिथिषु कृष्णे, गुरुशुक्रयोः नीचनिर्ब—लास्तादिरहितकाले, कर्तुः सूर्यचन्द्रतारानुकूल्ये सति जन्मलग्नयोरष्टमराशिलग्नरहिते स्थिर (२। ५। ८। ११) लग्नेषु लग्नात् १। ४। ७। १०। ९। ५। २। ११ स्थानेषु शुभैः, ६। ११ सेन्दुभिः पापैः पूर्वाह्ने देवप्रतिष्ठा कार्या।

देवता—विशेषेण लग्नम्:— सिंहे सूर्यः शिवो द्वन्द्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां हरिः। कुम्भे वेधाश्चरे क्षुद्राद्यंगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः।। यस्य देवस्य यत्तिथिवारनक्षत्रादिकं तद्दिनेयदि तस्य प्रतिष्ठा मुहूर्त्तो भवेत्तदा अत्युत्तमः।।

वास्तुशान्ति मुहूर्त्त

श्रव., धनि., मृग., मूल, अनु., रेवती, हस्त, चित्रा, स्वा., उत्तरा. 3, पुन., पुष्य, रोहि., अश्वि. एषु भेषु शुभेऽह्नि सत्तिथौ बलिदानपुरस्सरं वास्त्वर्चनं कार्यम्।

अग्नि का वास किस लोक में है

जिस दिन हवन करना हो, उस दिन तिथि और वार क संख्या जोडकर एक ओर जोड़ना, पुनः ४ का भाग देना। यदि पूरा भाग लग जाए, (०—शेष रहे) अथवा तीन शेष रहे, तब अग्नि का वास पृथ्वी पर सुखकारक होता है, शेष १ बचने पर आकाश में प्राणहानिकारक, शेष २ बचने पर पाताल में धनहानि करता है। तिथि की गणना शुक्ल प्रतिपदा से तथा वार की गणना रविवार से करनी। इसके बाद आहुतिचक्र ज़रूर देखिए।

विशेषः— यात्राविवाहव्रतगोचरेषु चौलोपनीताद्याखिलव्रतेषु। दुर्गाविधानेषु सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। महारुद्रे व्रतेऽमायां ग्रस्तेन्द्वर्कास्तराहुणा। नित्यनैमित्तिके कार्ये अग्निचक्रं न दर्शयेत्।। दिग्दाहेप्यथवा घोरे ग्रहास्ते भूमिकम्पने। केतूनामुदये शान्तौ चक्रं यत्नेन चिन्तयेत्।। लक्षकोटिहवने मखेऽखिले चातिरुद्रकरणेमहाविधौ। देवखातभवने सुरालयादग्निचक्रमवलोकयेत्सुधीः।। दुर्गभंगे गृहे वापि विवादे शत्रुविग्रहे। शान्तिकार्ये नृपक्रोधे चक्रं तत्र निरीक्षयेत्।।

ग्रहमुखे होमाहुतिज्ञानाय चक्रम्
(सूर्य नक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनना)

ग्रहाः	सू.	बु.	शु.	श.	चं.	मं.	गु.	रा.	के.
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फलम्	नेष्ट	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	श्रेष्ठ	नेष्ट	नेष्ट

पापग्रहमुखे—हवने कृते शान्तिः—क्रूरग्रहमुखे चैव सञ्जाते हवने शुभे। शान्तिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुम्बिने। आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेतामधोमुखीम्। गोमूत्र—मधुगन्धाद्यैरर्चितां प्रतिमां ततः। कुण्डे निधाय सम्पूज्य तत्र होमो विधीयते।।

अथ ऋणी–धनी विचार– स्ववर्गं द्विगुणं कृत्वा परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद् भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत्।।(अर्थात् अपने वर्ग को दूना कर, दूसरे के वर्ग में जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। फिर दूसरे का वर्ग दूना करके, अपना वर्ग जोड़ना, फिर ८ का भाग देना। जिसका शेषांक अधिक बचे, वह दूसरे का ऋणी होगा।), लेकिन वशिष्ठ आदि का मत है कि जिसका शेषांक कम बचे, वह दूसरे का ऋणी होता है– यही प्रामाणिक है।

हलप्रवहण मुहूर्त्त

मृग., रेव., चित्रा, अनु., रोहि., उत्तरा.३, हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., श., मूल, मघा, विशा. एषु भेषु रिक्तामाषष्ट्यष्ठमीरहित सत्तिथौ शुभ–ग्रहस्य वासरे, १। ५। ७। १०। ११ लग्नेषु भूमिशयन–भद्रादीन् वर्जयित्वा हलचक्रशुद्धौ सत्यां हलप्रवहणं शुभम्।

हलचक्रम्					बीजवपने राहुचक्रम्								
सूर्यमुक्तनक्षत्र से दिन नक्षत्र तक गिनें					राहुनक्षत्रात् दिनभं यावत् गणना कार्या								
नक्षत्र	३	७	९	८	८	३	१	३	१	३	१	३	४
फल	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

बीजवपने मुहूर्त्त

हस्त, अश्वि., पुष्य, उत्तरा. 3, चित्रा, अनु., मृग., रेवती, स्वा., धनि., मघा, मूल एषु भेषु सत्तिथौ भौमातिरिक्तवारेषु सुशकुने राहुचक्रशुद्धौ सत्यां शुभः।

विशेषः– रवौ रौद्रा(आर्द्रा) द्यपादस्थे भूमेः संजायते रजः।
तस्माद्दिनत्रयं तत्तु बीजवापे परित्यजेत्।।

नवान्न–भक्षण–मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., हस्त, अश्वि., पुष्य, अभि., स्वा., पुन., श्रवण, धनि., शत. एवम् विषघटी रहित नक्षत्रों में शुभ है, नन्दा–रिक्ता तिथियों और पौष–चैत्र को छोड़कर अन्य मासों में सू., बु., गु., शुक्रवार शुभ है।

गौ, बैल आदि पशु लेने का मुहूर्त्त

अश्वि., पुन., पुष्य, हस्त, विशा., ज्ये., धनि., शत., रेव. नक्षत्र में गौ लेना–बेचना। अन्य पशु पुन., पूर्वा. 3, हस्त, अनु., ज्ये., मूल, धनि., रेवती में लेना–बेचना शुभ है। गाय लेनी हो तो उ.फा. से दिन नक्षत्र तक गिने। ३ तक लाभदायक, ५ तक हानि, ११ तक अर्थलाभ, १६ तक सुख, २२ तक महालाभ, २३ तक वृद्धि, २७ तक भय होता है। वृषभ (बैल) लेना हो तो ६ नक्षत्र लाभदायक; फिर दो–दो के क्रम से गाय के समानफल जानें। महिषी (भैंस) लेनी हो तो भी गौ नक्षत्रगणना क्रम से शुभाशुभफल हेतु सूर्य नक्षत्र तक गिनें– नौमी चौदस चौथ चौपाया। मंगल हान करे घर आया।।

सूर्यनक्षत्रात्काष्ठादि (गुहारा आदि) संस्थापनचक्रम्							
नक्षत्र संख्या फल	६ उत्तमपाक शुभ	२ शवदहन नेष्ट	४ सर्पभय नेष्ट	४ मित्रलाभ शुभ	४ रोगभय नेष्ट	४ क्वाथकर्म नेष्ट	४ सुख शुभ

लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त्त

मृग., रेवती, चित्रा, अनु., उत्तरा. 3, रोहि., हस्त., पुष्य, अश्वि., शत., मूल, विशा. नक्षत्रों में रिक्तारहित शुभ तिथियों में और चं., बु., बृ., शुक्रवार हों, शुक्लपक्ष में ४। १०। ११। १२ लग्न में शुभ हैं।

तृणकाष्ठादिसंग्रहे निषेधः – तृण–काष्ठ का सञ्चय और पलंग बनवाना आदि कर्म कुम्भ–मीन के चन्द्रमा (पञ्चककाल) में नहीं करना चाहिए।

औषधसेवन का मुहूर्त्त

हस्त, अ., पुष्य, अभि., मृग., रेवती, चित्रा, अनु., स्वा., पुन., श्रव., धनि., शत. व मूल में जन्मनक्षत्र को छोड़कर, इन नक्षत्रों में ४। ९। १४ को छोड़कर, शुभ तिथियों में, भौम–शनि को छोड़कर, अन्यवारों में शुभ है।

अथ यात्रा–मुहूर्त्त–विचारः

हस्त, मृग., श्रव., अश्वि., पुष्य, पुन., धनि., अनु., रेवती, एषु भेषु यात्रा अत्युत्तमा; रोहि., उत्तरा. ३, पूर्वा. ३, एषु भेषु मध्या; भरणी, कृत्ति., आर्द्रा, आश्ले., मघा, चित्रा, स्वा., विशा., ज्ये., एतद्भेषु निन्द्याः। तत्रात्यावश्यकेऽपि यात्रायां भरण्यादि भानां क्रमात् ७। २१। १४। १४। ११। ४०। १४। १४। १४ एता घटिकाः गमन कर्मण्यवश्यं वर्जनीयाः। २। ३। ५। ७। १०। ११। १२ कृष्णपक्षस्य प्रतिपत्सु द्विग्द्वारलग्नेषु वा यात्रा शुभा।

द्विग्द्वारलग्नानि

दिशा→	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
शुभम्→	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११	४। ८। १२
मध्यमम्→	२। ६ १०	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९
भयम्→	४। ८ १२	१। ५। ९	२। ६। १०	३। ७। ११
महद्भयम्→	३। ७। ११	४। ८। १२	१। ५। ९	२। ६। १०

यात्रा में शुभाशुभ लग्नः– जन्मलग्न और जन्मराशि से अष्टमलग्न तथा कुम्भ या कुम्भ के नवांश में यात्रा कदापि न करें। शुभलग्न वह है, जब १। ४। ५। ७। ९। १० स्थानों में शुभ ग्रह और ३। ६। १०। ११ वें पापग्रह हों। अशुभ लग्न वह है– जब १। ६। ८। १२वें चन्द्रमा, १०वें शनि, ६वें शुक्र, १२। ६। ८वें लग्नेश हो। **अन्यच्च–** यात्रायामष्टमं शुद्धं विवाहे सप्तमं तथा। दशमं तु गृहारम्भे चतुर्थं तु प्रवेशने।।

जन्मलग्नेश, दशेश अस्त हों व मारकदशा हो तो सुमुहूर्त्त में भी दूर की यात्रा न करें, प्रथम तीर्थयात्रा व देवदर्शन गुरु–शुक्रास्त में वर्जित है।

दिक्शूलज्ञानाय चक्रम्									नक्षत्रशूलचक्रम्			
दिशा	पूर्व	आ.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.	पू.	द.	प.	उ.
वार	चं.,श.	चं.,बृ.	गुरु	सू.,शु.	सू.,शु.	भौम	मं.	बु.,श.	ज्ये.	पू.भा.	रोहि.	उ.फा.

दिक्शूलपरिहारः– न वारदोषाः प्रभवन्ति रात्रौ देवेज्यदैत्येज्यदिवाकराणाम्। दिवा शशांकार्कजभूसुतानां सर्वत्र निन्द्यो बुधवारदोषः॥१॥ सूर्यवारे घृतं प्राश्य चन्द्रवारे पयस्तथा। गुड़मंगारके वारे बुधवारे तिलानपि। गुरुवारे दधि प्राश्यं शुक्रवारे यवानपि। माषान्भुक्त्वा शनेर्वारे शूले गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥२॥

यात्रायां कालज्ञान चक्रम्

सम्मुखे	शनौ	शुक्रे	गुरौ	बुधे	भौमे	चन्द्रे	रवौ
नेष्टः	पूर्वे	आग्नेय्यां	दक्षिणे	नैर्ऋत्यां	पश्चिमे	वायव्ये	उत्तरे

योगिनीवास–चक्रम्

दिशा	पूर्व	आग्ने.	दक्षि.	नैर्ऋ.	पश्चि.	वाय.	उत्तर	ईशा.
तिथि	१। ६	३। ११	५। १३	४। १२	६। १४	७। १५	२। १०	८। ३०

योगिनी साधारण यात्रा में सामने और दाहिने अशुभ होती है, पीछे और बाएं की शुभ किंवा युद्ध यात्रा में बाएं ओर की और सम्मुख की विशेष त्याज्य है।

समयशूलः– उषाकाल में पूर्व को, गोधूलि में पश्चिम को, अर्द्धरात्रि में उत्तर को और मध्याह्नकाल में दक्षिण को नहीं जाना चाहिए।

गर्ग–गुरु–अङ्गिरामत– गर्ग जी के मत से ५ या ४ घड़ी रात रहे तो गमन करें। बृहस्पति के मत से अच्छा शकुन मिलने पर यात्रा करें। अङ्गिरा के मत से जब मन प्रफुल्लित हो तब ही चला जाए। भगवान् के मत से ब्राह्मण की आज्ञा लेकर यात्रा करने से शुभ होता है। पंच–पंच (५५) उषाकालः सप्तपञ्चाशद (५७) रुणोदयः। अष्ट पंच (५८) भवेत्प्रातः शेषः सूर्योदयो भवेत्।।

चन्द्रवासचक्रम्

पूर्वे	दक्षि.	पश्चि.	उत्तरे
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

एकस्मिन् राशौ आवश्यके तात्कालिक–यात्रायां घट्यात्मकं चन्द्रवासचक्रम्

दिशा	पू.	द.	प.	उ.	पू.	द.	प.	उ.
घटी	१७	१५	२१	१६	१७	१५	२०	१४

घट्यात्मक चन्द्रवास

जिस दिशा का चन्द्र होवे उस दिशा से गिनना चाहिए। कुम्भ और मीन के चन्द्रमा में दक्षिण को कदापि न जाएं।

चन्द्रफलम्:– सम्मुखे अर्थलाभाय दक्षिणे सुख–सम्पदः। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः ॥१॥ सर्वे दोषाःलयं यान्ति पूर्णचन्द्रे हि सम्मुखे॥

सम्मुखे चन्द्रप्रशंसा—भगणदोषं वार-संक्रान्ति-दोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्धदोषम्। कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादि दोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमाः सम्मुखस्थः॥

सर्वाङ्कसिद्धियोग—यात्राकालिक शुक्लादि तिथि तथा वार की संख्या को जोड़कर तीन जगह रखें। क्रमशः ७। ८। ३ का भाग दें। शेष प्रथम स्थान में शून्य हो तो क्लेश, मध्य में हो तो धनक्षति और अन्त में हो तो मृत्यु होती है। सर्वत्र अङ्क आने से सौख्य, जयलाभ हो। विजयादशमी को बिना सर्वांकादि मुहूर्त्त के भी यात्रा सफल होती है। बायां स्वर चलते समय पूर्व व ईशान को, दायां चलते समय दक्षिण व नैर्ऋत्य को मत जाएं, हानि होती है। जाने वाले का अच्छे मुहूर्त्त और अच्छे शकुन में भी जाने को मन न चाहे तो भी कदापि न जाएं, क्योंकि मुहूर्त्त एवम् शकुन से मन की इच्छा प्रबल है।

वर्ण के क्रम से प्रस्थान का विधान— यदि यात्रा मुहूर्त्त में किसी अत्यावश्यक कार्यवश विलम्ब हो जाय, तो उसी मुहूर्त्त में ब्राह्मण जनेऊ, माला, क्षत्रिय शस्त्र, वैश्य मधु-घृत व रुपया और शूद्र फल को अपने वस्त्र में बांध, किसी घर के या नगर के बाहर जाने की दिशा में प्रस्थान के समय रखे। अथवा मन की सबसे प्यारी वस्तु को रख देना चाहिए।

यात्रा से पहले त्याज्य वस्तुः— यात्रा के तीन दिन पहले दूध त्याग दें, पांच दिन पूर्व हजामत, तीन दिन पूर्व तैल, सात दिन पूर्व मैथुन और समर्थ न हो तो एक दिन पहले तो सब त्याज्य वस्तुओं का त्याग अवश्य ही करें।

दिने चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्		रात्रौ चतुर्घटिका मुर्हूत्तम्
सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि	घटि.	सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३॥।	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ
चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ	७॥	अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग
लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग	११।	चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ
अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग	१५	रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत
काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर	१८॥।	काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर,
शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ	२२॥	लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग
रोग, लाभ, शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत	२६।	उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल
उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चर, काल	३०	शुभ, चर, काल, उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ

सूचनाः— यदि ३० घटी से न्यूनाधिक दिन या रात्रि का मान हो तो उसमें ८ का भाग देने से एक भाग के घटी-पल ज्ञात होंगे।

यात्रा में शुभ शकुन— मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। अन्न धन लक्ष्मी बहू मिले चलते प्रातःकाल॥ विप्र, दो अश्व, गजमद, फल, अन्न, दुग्ध, गोदधि, सर्षप, कमल, निर्मलवस्त्र, वाद्य, वेश्या, मयूर, नकुल, सिंहासन, शस्त्र, मांस, दीप्ताग्नि, मत्स्य, ससुत-स्त्री, गोरी कन्या, धोबी, कार्यसिद्धि वाक्य, जलपूर्णघट। यात्रा पश्चात् रिक्तघट यात्रा के समय देखने में शुभ है।

यात्रा में अशुभ शकुन :— बन्ध्या स्त्री, चर्म, अस्थि, इन्धन, संन्यासी, भैंसों का युद्ध, सर्प, शत्रु, मार्जारयुद्ध, कुटुम्बकलह, विधवास्त्री, जातिभ्रष्ट, अङ्गहीन, छिक्का, दुष्टवाणी यात्रा के समय देखना अशुभ तथा कष्टप्रद है।

आवश्यके रामदैवज्ञोक्त यात्रामुहूर्त्तचक्रम्

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चि.	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	लाभ
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	दारिद्र्य	दारिद्र्य	मिश्र
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	हानि	दुःख	लाभ	लाभ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	शुभ	लाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	लाभ	लाभ	सुख
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय	लाभ	मृत्यु	लाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	लाभ	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	सिद्धि	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	सिद्धि	लाभ	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	लाभ	शुभ
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शुभ	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तृतीया-त्रयोदशी, चंतुर्थी-चतुर्दशी, पञ्चमी-पूर्णमासी का फल समान जानना। अमावस्या में यात्रा वर्जित है, पक्ष का विचार नहीं है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पांव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े। कार्य सिद्ध हो, यात्रा सफल होगी।

नौकायात्रा—मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. ३, अनु., श्रव., धनि.—एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र—तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. ३, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. —एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः— प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौ.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	घृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यो में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यो में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम—दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली—(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राजयसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३— इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.— इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.— ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं— **अतोऽन्यदभेषु निन्द्याः।**

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य—पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा—तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– "मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः— आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं—विधिश्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पातनम्

तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि

तदत्राह–
रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि। षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग—स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री—पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर.	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सदद्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व—बुद्धि		

इन्हीं अंगो में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति—पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया—पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते है।

काकविष्ठा विचार :— शिरसि—मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे—भरे या फूले—फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

नौकायात्रा–मुहूर्त्तः

चित्रा, हस्त, पु., मृग., पूर्वा. 3, अनु., श्रव., धनि.–एषु भेषु सत्तिथौ शुभेऽह्नि चन्द्र–तारानुकूल्ये सति शुभः।

यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमुहूर्त्तः

मृग., रेवती, अनु., रोहि., उत्तरा. 3, हस्त, अश्वि., पुष्य, स्वा., श्रवण, धनि. –एषु भेषु; चं., बु., बृ., शु., श. वारेषु; १। २। ३। ५। ७। १०। ११। १३ तिथिषु; ३। ५। ८। ९। ११। १२ एषु लग्नेषु; १। ४। ७। १०। ५। ९ स्थानेषु शुभैः; ३। ६। ११ स्थानेषु पापैः; ४। ८ शुद्धौ शुभः। विशा., कृत्ति., पूर्वा. ३, भरणी, मघा, मूल, ज्ये., आर्द्रा, आश्ले., नक्षत्राणि; ४। ९। १४। ६। १२। ८। ३० तिथयः; सू., मं. वारौ; १। ४। ७। १० लग्नानि सर्वदा वर्जनीयानि।

मंगलवार को मिलाप कष्टप्रद सिद्ध होता है।

विशेषः— प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम्। नवमे जातु नो कुर्याद्दिने वारे तिथाविति।।

अथ घातचन्द्रवारादीनां चक्रम्

राशि→	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
घात चन्द्र	मे.	क.	कुं.	सिं.	म.	मि.	ध.	वृष	मी.	सिंह	ध.	कुम्भ
घात वार	र.	श.	चं.	बु.	श.	श.	बृ.	शु.	शु.	मं.	बृ.	शु.
घात नक्षत्र	म.	ह.	स्वा.	अनु.	मू.	श्र.	श.	रे.	भ.	रो.	आ.	आश्ले.
स्त्री चन्द्रघात	मे.	ध.	ध.	मि.	वृश्चि.	वृश्चि.	मी.	ध.	कन्या	वृश्चि.	मि.	मेष
घात मास	का.	मार्ग.	पौं.	मा.	फा.	चैत्र	वैशा.	ज्ये.	आषा.	श्रावण	भाद्र.	आ.
घातयोग	वि.	सु.	प.	धृ.	प्री.	सु.	अ.गं.	वृ.	वै.	गं.	व्या.	वै.
घातलग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घाततिथि	१	५	२	२	३	५	४	१	३	४	३	५
घाततिथि	६	१०	७	७	८	१०	९	६	८	९	८	१०
घाततिथि	११	१५	१२	१२	१३	१५	१४	११	१३	४	१३	१५

युद्ध, विवाद, राजसेवा,वाहन, रोगादि कार्यो में घातचक्र देखना और तीर्थयात्रा तथा विवाहादि शुभ कार्यो में घाततिथि आदि देखने की आवश्यकता नहीं होती। **"घाततिथिर्घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम्।।"**

वाम–दक्षिणनिर्देश

अग्रे चक्रोक्त सर्व फल पुरुषों के दक्षिण अंग में और स्त्रियों के वामांग में विचार करना, पुरुषों के वाम भाग में और स्त्रियों के दक्षिण भाग में विपरीत अशुभ, भयकारी फल होता है। जो फल पल्लीपात का है, वही सरट (गिरगिट) के चढ़ने का समझें। सरट के गिरने का तथा पल्ली के चढ़ने का फल वृथा होता है।

अथाङ्ग विभाग में पल्ली–(छिपकली, कोढ़किरली) पतन का फल

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	भ्रूमध्ये	राज्यसंबंधः	वामपादे	नाशः
नासाग्रे	व्याधिः	वामकर्णे	बहुलाभः	अधरोष्ठे	ऐश्वर्यलाभः
वामभुजे	राज्यभयम्	स्तनयोः	दौर्भाग्यम्	दक्षिणभुजे	नृपतुल्यता
जानद्वये	शुभागमः	हस्तयोः	वस्त्रलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः
कटिभागे	अश्वलाभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	नाभौ	बहुधनम्
गुल्फद्वये	बन्धनम्	दक्षिणपादे	गमनम्	मुखे	मिष्ठान्नभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	उत्तरोष्ठे	धननाशः	पादमध्ये	स्त्रीनाशः
दक्षिणकर्णे	आयुवृद्धिः	नेत्रयोः	धनप्राप्तिः	पादान्ते	मृत्युः
कण्ठे	शत्रुनाशः	उदरे	भूषणलाभः	केशान्ते	रणम्
जंघयोः	शुभम्	स्कन्धयोः	विजयः	नखेषु	धान्यलाभः
द.मणिबंधे	मनस्तापः	हृदये	धनलाभः	दक्षिणांगुष्ठे	धनलाभः

पल्लीपतने प्रशस्तवारतिथ्यर्क्षाणि

यदि छिपकली १। २। ३। ५। ६। १०। ११। १२। १३– इन तिथियों में गिरे तो श्रेष्ठ फलदायक है तथा चं., बु., गु., शु.– इन वारों में भी शुभ फल देती है। पुष्य, अश्वि., रोहि., मूल, पुन., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वा., धनि., रेवती, अनु., शत.– ये नक्षत्र शुभफलदायक हैं। इसके अलावा अन्य नक्षत्रों में गिरे तो शुभ नहीं– अतोऽन्यद्भेषु निन्द्याः।

पल्ली (किरली) पतनोपरान्त कर्तव्य–पल्ली (किरली) तथा सरट (गिरगिट) स्पर्श होने पर वस्त्रसहित स्नान करें। जन्मनक्षत्र, मृत्युयोग, दग्धा–तिथि, भद्रा आदि से दूषित दिन को पापग्रहयुक्त लग्न में तथा अष्टम चन्द्रमा से पल्ली आदि के स्पर्श होने से अरिष्ट होता है। उसकी शान्ति के लिए जप, होम, मृत्युञ्जय जाप एवम् तिल, स्वर्ण, दान और पञ्चगव्य से स्नान तथा घृत का छायापात्र दान भी करना उत्तम है।

छिक्का फलम्

छिक्का प्रायः सब दिशाओं की नेष्ट होती है। गौ की छिक्का मरण करती है– "मदिरा के योग अथवा छींक सूंघनी छल कर लीन्हीं, पीन सरदी घास फल हीनी। छींक पीठी की कुशवाल उचारे; बाईं कारज सवै सवारे॥१॥ सम्मुख छींक लड़ाई भापै; छींक दाहिनी द्रव्य विनाशै ॥२॥ ऊंची छींक कहे जयकारी; नीची छींक होय भयकारी। अपनी छींक महा दुखदाई; ऐसे छींक विचारो भाई ॥३॥

कन्या, विधवा, मालिन, धोबिन, रजस्वला, वैश्या, चमारी की छींक विशेष अशुभप्रद होती है। भोजनान्त में छींक होय तो दूसरे दिन प्रिय भोजन मिले।

अथ शुभ छिक्काः– आसने शयने शौचे दाने चैव तु भोजने। वामांगे पृष्ठतश्चैव षट् छिक्कास्तु शुभावहाः। एक नाक से दो छींक भी शुभ मानी जाती है– एक नाक दो छींक; काम बने सब ठींक॥

तीर्थ में मुण्डनविचार

मुण्डनं चोपवासञ्च सर्वतीर्थेष्वयं विधिः। वर्जयित्वा कुरुक्षेत्रं विशालां (उज्जयिनीं) गिरिजां गयाम्।।

अथ वारंपरत्वेन तैलाभ्यंगे फलं–विधिश्च								तैलाभ्यंगे वर्ज्यानि
सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वाराः	तदत्राह– रवौ भौमे व्यतिपाते संक्रांतौ वैधृतावपि । षष्ट्यष्टम्योश्च विष्ट्यां च तैलाभ्यंगो न पर्वसु।।
तापम्	सुकीर्ति	मृतिः	श्री.	वित्त हानि	विपत्ति	सुख सुयोग	फलम्	
पुष्पं	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०	पालनम्	

विशेष– यदि प्रतिदिन तेल लगाने का स्वभाव हो तब अथवा उत्सव के दिन व वातरोग में तेल लगाने में दोष नहीं है। अभिमन्त्रित औषधि में पकाया हुआ सरसों का तेल व सुगंधित तेल लगाने से किसी दिन दोष नहीं है।

अंग–स्फुरण का फल

पुरुषों का दायां और स्त्रियों का बायां अंग फरकना शुभ है।
मस्तक का स्फुरण (फरकना) स्त्री–पुरुष दोनों के लिए शुभ है।

स्थान	फल	स्थान	फल	स्थान	फल
मस्तक	पृथ्वीलाभ	वक्षस्थल	विजय	ओष्ठ	प्रियवस्तुप्राप्ति
ललाट	स्थानलाभ	हृदय	इष्टसिद्धि	हनु	महाभाग्य
स्कन्ध	भोगवृद्धि	कटि	प्रमाद	कण्ठ	ऐश्वर्यलाभ
भ्रूमध्य	सुखप्राप्ति	कटिपार्श्व	प्रीति	ग्रीवाधोभाग	शत्रुभय
भ्रूयुग्म	महत्सौख्य	नाभि	स्त्रीनाश	पृष्ठ	पराजय
कपोल	शुभप्राप्ति	आंत्रिक	कोषवृद्धि	मुख	मित्रप्राप्ति
नेत्र	धनप्राप्ति	भग	पतिप्राप्ति	भुज	मधुरभोजन
नेत्रकोण	लक्ष्मीलाभ	कुक्ष	सुप्रीति	भुजमध्य	धनागम
नेत्रसमीप	प्रियसंगम	उदर	कोषलाभ	वस्तिदेश	भाग्योन्नति
नेत्रपक्षम	राज्यलाभ	लिंग	स्त्रीलाभ	ऊरु	वस्त्रलाभ
हस्त	सद्द्रव्यलाभ	गुदा	वाहनलाभ	जानु	शत्रुवृद्धि
नेत्रोर्ध्व	विजय	वृषण	पुत्रलाभ	जंघा	स्वामीप्रीति
पादोर्ध्व	स्थानलाभ	पादतल	नृपत्व–बुद्धि		

इन्हीं अंगों में तिल, लसन, मस्सा हो व खुजली उठे तो भी चक्रोक्त फल जानें। पैर के तलुओं में खुजली उठे तो यात्रा हो। राजाओं के हाथ में तिल व खाज हो तो जय होती है। साधारण व्यक्ति को लाभ होता है।

काकस्पर्श का फल

मस्तक पर काक स्पर्श धननाश, मरण तथा कलह करता है। कमर, कन्धे पर अशुभ होता है। स्त्री के मस्तक पर काक बैठना पति–पुत्र का नाश करता है। वृक्ष के नीचे दहीं आदि के उत्तम भोजन के कारण काक का स्पर्श दोषकारक नहीं होता, किन्तु अकस्मात् स्पर्श दोष करता है। काकमैथुन का देखना छः मास में मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट व इच्छितकार्य का नाश करता है। इसके दोष दूर करने के निमित्त उड़द के आटे की काकप्रतिमा मृण्मय (मिट्टी के) पात्र में स्थापित कर उड़द, चावल, घी, मीठे का नैवेद्य देवें। ग्राम में दक्षिण की ओर बाहर चौराहे पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, दक्षिणादि से पूजन कर मृत्युञ्जय मन्त्र का यथाशक्ति जप करें (या करावें), घृतच्छाया–पात्र दान, पञ्चगव्य से स्नान भी करे। इस विधान के करने से सम्पूर्ण दोष नष्ट होते हैं।

काकविष्ठा विचार :– शिरसि–मृत्युः वा कष्टम्। स्कन्धयोः रोगः। भुजयोः प्रियार्तिः। उदरे शोकः। गुह्ये सन्तानकष्टम्। जंघयोः वाहनपीड़ा। पादयोः प्रवासः।

कौवा उड़ता हुआ या किसी सूखे पेड़ पर बैठा हुआ किंवा पूर्व की तरफ बैठा हुआ अथवा दक्षिण दिशा की ओर मुंह किए किसी के ऊपर काली बीठ कर दे तो अशुभ होता है। यदि किसी हरे–भरे या फूले–फले पीपल, बड आदि श्रेष्ठ पेड पर बैठा हुआ सफेद बीठ कर दे तो शुभ जानिए।

....

विवाहादि मुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

प्रो. प्रियव्रत शर्मा, 59/6 (अभिजित्), P.O. पंचकूला-134 109;

(इन विवाहादि मुहूर्त्तों के शोधन में नालाबलोग (पंचकूला) निवासी, मेरे योग्य शिष्य चि. सुरेशानन्द गौतम, का पर्याप्त सहयोग मिला है।)

-: समयशुद्धि :-

शुक्र-अस्त :- शुक्र इस वर्ष वैशाख कृष्ण ५, बुधवार (२७ अप्रै., २०१६ ई.) को पूर्व में अस्त होकर आषाढ़ शुक्ल ६, रविवार (१० जुला. २०१६ ई.) को पश्चिम में उदित होगा । इसके पश्चात् शुक्र संवत् के अन्त में, चैत्र कृष्ण ६, बुधवार से चैत्र कृष्ण १२, शनिवार (२२ से २५ मार्च, २०१७ ई.) तक भी अस्त रहेगा ।

गुरु-अस्त :- गुरु इस वर्ष भाद्रपद शुक्ल ८, शुक्रवार (६ सितं., २०१६ ई.) को अस्त होकर आश्विन शुक्ल ६, शुक्रवार (७ अक्तू., २०१६ ई.) को उदित होगा ।

गुरु-शुक्र के अस्त का यह उपरोक्त काल पंजाब, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली आदि के लिए है । क्योंकि, अक्षांशभेद से इन ग्रहों के उदय-अस्त की तारीखें भिन्न-भिन्न होती हैं, इसलिए अपने अभीष्ट-स्थल के अक्षांशानुसार उस स्थल के गुरु-शुक्र की उदय-अस्त की तारीख नीचे दिए गए कोष्ठक से जानकर विवाहादि मुहूर्त्तों का दैवज्ञ को निर्णय करना चाहिए ।

अक्षांशभेद से भारत के विभिन्न स्थलों पर गुरु–शुक्र का उदय–अस्त 'सं. २०७३ वि.'

अक्षांश →	+५°	+१५°	+२५°	+३५°
शुक्र पूर्व में अस्त	१० मई,' १६ ई.	७ मई,' १६ ई.	३ मई,' १६ ई.	२४ अप्रै,' १६ ई.
शुक्र पश्चिम में उदित	१ जुला.,'१६ ई.	४ जुला.,'१६ ई.	७ जुला.,'१६ ई.	१२ जुला.,'१६ ई.
गुरु अस्त	१४ सितं.,'१६ ई.	१३ सितं.,'१६ ई.	११ सितं.,'१६ ई.	८ सितं.,'१६ ई.
गुरु उदित	८ अक्तू.,'१६ ई.	७ अक्तू.,'१६ ई.	७ अक्तू.,'१६ ई.	७ अक्तू.,'१६ ई.
शुक्र पश्चिम में अस्त	१६ मार्च,'१७ ई.	२० मार्च,'१७ ई.	२१ मार्च,'१७ ई.	२२ मार्च,'१७ ई.
शुक्र पूर्व में उदित	२७ मार्च,'१७ ई.	२६ मार्च,'१७ ई.	२५ मार्च,'१७ ई.	२५ मार्च,'१७ ई.

ध्यान रहे :- गुरु-शुक्र के अस्तकाल में तो शुभकृत्य वर्जित रहते ही हैं, इनके अस्तदिन से ३ दिन पहले वार्धक्यदोष और उदयदिन के ३ दिन बाद तक भी बाल्यदोष के कारण शुभकृत्य नहीं किए जाते ।

ध्यान दें - मुहूर्त्तों में जिस लग्न का कुछ भाग किसी विशेष दोष के कारण वर्जित है, उस लग्न के आगे क्रोष्ठक में भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम के अनुसार यह निर्देश दिया गया है कि- इस लग्न को इस टाईम के बाद अथवा पहले ही मुहूर्त्तों में स्वीकार करें ।

दैवज्ञ ध्यान दें-

इन आगे दिए जा रहे शुद्ध विवाहमुहूर्त्त देखने से आपको ज्ञात होगा कि- शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या अब हमारे पंचांग में पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है । दैवज्ञों के लिए इस अधिक संख्या का कारण यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है ।

भारत के अधिकतर पंचांगों में लग्नस्थ चन्द्र-पापग्रह, षष्ठस्थ चन्द्र-शुक्र-लग्नेश, सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु-केतु तथा अष्टमस्थ चन्द्र-मंगल-लग्नेश या शुभग्रह होने पर परम्परया लग्नभंग माना जा रहा है । ऐसी स्थिति में उस लग्न को पंचांगकार तभी विवाहयोग्य मानते हैं, जबकि वहां लग्नभंग का परिहार हो । इस परम्परा में लग्नस्थ चन्द्र और पापीग्रह तथा षष्ठस्थ लग्नेश और सप्तमस्थ सूर्य-मंगल-बुध-शुक्र-शनि-राहु- केतु एवम् अष्टमस्थ लग्नेश का परिहार बिल्कुल नहीं माना जाता और इन स्थितियों में उस लग्न को विवाह में सर्वथा अयोग्य दैवज्ञ लोग मानते चले आ रहे हैं। लेकिन संहिताओं में अनेक ऐसे विशेष स्पष्टवाक्य हमें मिलते हैं, जो सप्तमहीन केन्द्र-त्रिकोणस्थ बुध-शुक्र-गुरु, एकादशस्थ सूर्य-चन्द्र, सप्तमहीन केन्द्रस्थ या एकादशस्थ लग्नेश आदि दस ग्रहादि-स्थितियों को सभी प्रकार के लग्नभंगों का परिहारक घोषित करते हैं । लग्नभंग के इन संहितोक्त विशेष परिहारों में से यदि केवल एक भी परिहार लग्नकुण्डली में प्राप्त हो जाए तब संहिताकारों का कहना है कि- उस एकमात्र परिहार से ही वहां लग्नभंगकारक सभी दोष पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं । ये परिहार दशमस्थ मंगल, चतुर्यस्थ राहु, तृतीयस्थ शुक्र, सप्तमस्थ गुरु-चन्द्र और द्वादशस्थ शनि की पूजा वाले दोषों का भी पूरीतरह निवारण करते हैं; यह भी इन परिहार वाक्यों से सुस्पष्ट है । संहिताओं के इन्हीं प्रबल प्रमाणवाक्यों के आधार पर हमने सं. २०७० वि. से लग्नभंगकारक दोषों के इन संहितोक्त विशेष परिहारों को भी दृष्टि में रखते हुए विवाहार्थ शुद्ध लग्नों का यहां निर्णय करना प्रारम्भ किया है, जिससे शुद्ध विवाहलग्नों की संख्या में यह वृद्धि हुई है । इस बारे में अधिक स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक "मुहूर्त्त गजानन" में दिया "लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)" लेख अवश्य पढ़िए ।

सिंहस्थ गुरु- इस वर्ष भी गुरु सिंहस्थ है। वैसे सिंहस्थ गुरु का पूराकाल शुभ-कृत्यों में वर्जित माना गया है । लेकिन परम्परया इसकाल में से वही काल वर्जित किया जाता है, जिसमें गुरु सिंह के नवांश (पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण) में स्थित हो । इसीलिए 'सिंहे सिंहांशकः त्याज्यः'-यह वाक्य दैवज्ञों में प्रचलित है । हमने भी इसी परम्परा का अनुसरण किया है । ध्यान रहे- सिंह-सिंहांशस्थ गुरु गतवर्ष आ चुका है- इसवर्ष यह नहीं है।

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय			लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
				चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि		
चैत्र शु. १० श.	वैशा. ४	अप्रै. १६	मघा	सिंह	मेष	सिंह	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	ल.गोधू., १०(२६/३७ बाद), १२, (१९/३७ से २६/३७ तक क्रां.सा.),
चैत्र शु. ११ र.	वैशा. ५	अप्रै. १७	मघा	सिंह	मेष	सिंह	।ऽ ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ३, ४ (१२/१३ तक),
चैत्र शु. १२ चं.	वैशा. ६	अप्रै. १८	उ.फा.	सिंह/कन्या	मेष	सिंह	ऽ। ।ऽशु. ऽके. ऽनृ. ।। ।।	ल. ९, १०, १२, (शुक्र-पादवेधाभाव),
चैत्र शु. १३ मं.	वैशा. ७	अप्रै. १९	उ.फा.	कन्या	मेष	सिंह	ऽ। ।ऽशु. ऽके.। ।। ।।	दि.ल. ३, ४ (११/४० तक), गोधू., ८, ९, १० (२५/१० तक),
								(११/४० से १८/२५ तक (शुक्र-पादवेध),
चैत्र शु. १३ मं.	वैशा. ७	अप्रै. १९	हस्त	कन्या	मेष	सिंह	।। ।। ।। ऽ। ।।	ल. १० (२५/१० बाद), १२,
चैत्र शु. १४ बु.	वैशा. ८	अप्रै. २०	हस्त	कन्या	मेष	सिंह	।। ।। ।ऽचौ. ऽ। ।।	दि.ल. ३, ४, गोधू., ८, ९, १०, १२ (२८/१४ तक),
चैत्र शु. १५ शु.	वैशा. १०	अप्रै. २२	स्वा.	तुला	मेष	सिंह	।। ।। ऽसू.ऽरो. ऽऽ ।।	दि.ल. ३, ४, रा.ल. ९, १०, १२,
वैशा. कृ. १ श.	वैशा. ११	अप्रै. २३	स्वा.	तुला	मेष	सिंह	।। ।। ऽसू.। ऽऽ ।।	दि.ल. ३, ४,
आषा. शु. ९ बु.	आषा. ३०	जुला. १३	स्वा.	तुला	मिथुन	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	ल. गोधू., १२, १,
आषा. शु. १० गु.	आषा. ३१	जुला. १४	स्वा.	तुला	मिथुन	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ४ (६/५२ तक),
आषा. शु. १५ मं.	श्राव. ४	जुला. १९	उ.षा.	धनु/मकर	कर्क	सिंह	।। ।। ऽसू.। ऽऽ ।।	दि.ल. ९ (१७/२६ बाद), गोधू., १२,
श्राव. कृ. १ बु.	श्राव. ५	जुला. २०	उ.षा.	मकर	कर्क	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६, ७, ८ (१६/०४ तक),
श्राव. कृ. १ बु.	श्राव. ५	जुला. २०	श्रव.	मकर	कर्क	सिंह	।। ।। ऽसू.शु. ऽनृ. ।ऽ ।।	दि.ल. ८(१६/०४ बाद), ९, १२, १,
श्राव. कृ. २ गु.	श्राव. ६	जुला. २१	श्रव.	मकर	कर्क	सिंह	।। ।। ऽसू.शु.। ।ऽ ।।	दि.ल. ६, ७, ८ (१५/५४ तक),
श्राव. कृ. २ गु.	श्राव. ६	जुला. २१	धनि.	मकर	कर्क	सिंह	।। ।ऽबु.शु. ऽबु.शु. ।। ।। ।	दि.ल. ८(१५/५४ बाद), ९, रा.ल.१२, १, (शुक्र-पादवेधाभाव),
								(२७/४२ बाद बुध-पादवेध),
श्राव. कृ. ५ र.	श्राव. ९	जुला. २४	उ.भा.	मीन	कर्क	सिंह	।। ।। ऽगु. ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ७ (१३/३७ बाद), ९, गोधू., १२, १,
श्राव. कृ. ६ चं.	श्राव. १०	जुला. २५	उ.भा.	मीन	कर्क	सिंह	।। ।। ऽगु. ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. ६, ७ (१२/२६ तक),
श्राव. कृ. ६ चं.	श्राव. १०	जुला. २५	रेव.	मीन	कर्क	सिंह	ऽचं.। ।ऽगु. ।। ।। ।।	दि.ल. ७ (१२/२६ बाद), ९ गोधू., (गुरु-पादवेधाभाव),
श्राव. कृ. १० शु.	श्राव. १४	जुला. २९	रोहि.	वृष	कर्क	सिंह	ऽबु.। ।। ऽमं. ।। ऽ ।।	दि.ल. ६ (१०/४७ बाद), ७, ९, गोधू., १२, १,
श्राव. शु. २ गु.	श्राव. २०	अग. ४	मघा	सिंह	कर्क	सिंह	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ५, ६, ७, ८, ९, गोधू., १ (२३/१२ तक),
श्राव. शु. ४ श.	श्राव. २२	अग. ६	उ.फा.	सिंह/कन्या	कर्क	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।। ।।	दि.ल. ५(८/३२ बाद), ६, ७, ८ (१५/२३ तक),
								(८/३२ तक मृत्युबाण),
श्राव. शु. ५ र.	श्राव. २३	अग. ७	हस्त	कन्या	कर्क	सिंह	।। ।। ।ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ५, ६, ७, ८, ९, गोधू., १,
श्राव. शु. ५ चं.	श्राव. २४	अग. ८	हस्त	कन्या	कर्क	सिंह	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ५, ६ (९/०१ तक),
श्राव. शु. ५ चं.	श्राव. २४	अग. ८	चित्रा	कन्या/तुला	कर्क	सिंह	।ऽ ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ६ (९/०१ बाद), ७, ८, ९, गोधू., १,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
श्राव. शु. ६ मं.	श्राव. २५	अग. ९	चित्रा	तुला	कर्क	सिंह	।ऽ ।। ।ऽनृ. ।। ।।	दि.ल. ५, ६, ७ (११/५३ तक),
श्राव. शु. १५ गु.	भाद्र. ३	अग. १८	धनि.	कुम्भ	सिंह	कन्या	।। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. १ (२२/२२ बाद), (२०/३५ तक मृत्युबाण),
भाद्र. कृ. ३ र.	भाद्र. ६	अग. २१	उ.भा.	मीन	सिंह	कन्या	।। ।। ऽबु.गु.। ।। ।।	दि.ल. ६ (८/१८ बाद), ७ (११/१४ तक), ९ (१६/१४ बाद), १०, गोधू.,
भाद्र. कृ. ८ गु.	भाद्र. १०	अग. २५	रोहि.	वृष	सिंह	कन्या	।। ।। ऽमं.श. ऽरो. ऽऽ ।।	दि.ल. ७ (१२/०५ बाद), ९, १०, गोधू., २, ३,
भाद्र. कृ. ९ शु.	भाद्र. ११	अग. २६	रोहि.	वृष	सिंह	कन्या	।। ।। ऽश.। ऽऽ ।।	दि.ल. ६, ७ (१०/५२ तक),
भाद्र. कृ. ९ शु.	भाद्र. ११	अग. २६	मृग.	वृष/मिथुन	सिंह	कन्या	।ऽ ।। ऽमं.। ।ऽ ।।	दि.ल. ७ (१०/५२ बाद), ८, ९, १०, गोधू., २, ३,
भाद्र. शु. १ शु.	भाद्र. १८	सितं. २	उ.फा.	सिंह/कन्या	सिंह	कन्या	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ९(१५/३२ बाद), १०, रा. ल. २, ३,
भाद्र. शु. २ श.	भाद्र. १९	सितं. ३	उ.फा.	कन्या	सिंह	कन्या	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ६, ७, ८, ९ (१४/२७ तक),
भाद्र. शु. २ श.	भाद्र. १९	सितं. ३	हस्त	कन्या	सिंह	कन्या	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ९ (१४/२७ बाद), १०, रा.ल. २, ३,
भाद्र. शु. ३ र.	भाद्र. २०	सितं. ४	हस्त	कन्या	सिंह	कन्या	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. ६, ७, ८, ९, १० (१६/५३ तक),
भाद्र. शु. ३ र.	भाद्र. २०	सितं. ४	चित्रा	कन्या	सिंह	कन्या	।। ।। ।ऽरो. ।। ।।	दि.ल. १० (१६/५३ बाद), रा.ल. २, ३,
आश्वि. शु. ९ चं.	आश्वि.२५	अक्तू.१०	उ.षा.	मकर	कन्या	कन्या	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ७, ९, १०, गोधू.,
आश्वि. शु. ९ चं.	आश्वि.२५	अक्तू.१०	श्रव.	मकर	कन्या	कन्या	ऽमं.। ।। ।। ।ऽ ।।	ल. २, ३,
आश्वि. शु. १० मं.	आश्वि.२६	अक्तू.११	श्रव.	मकर	कन्या	कन्या	ऽमं.। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ७, ९, १०, गोधू.,
आश्वि. शु. १३ शु.	आश्वि.२९	अक्तू.१४	उ.भा.	मीन	कन्या	कन्या	।। ।ऽबु.गु. ।। ।। ।।	ल. गोधू., २, (२१/५२ बाद बुध पादवेध), (२७/१६ बाद गुरु-पादवेध),
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	कार्त्ति. ३	अक्तू.१९	रोहि.	वृष	तुला	कन्या	।ऽ ।। ऽशु.ऽअ. ऽऽ ।।	दि.ल. ८ (९/५१ बाद), ९, १०, १२, गोधू., २, ४ (२४/०८ तक),
कार्त्ति. कृ. ४ बु.	कार्त्ति. ३	अक्तू.१९	मृग.	वृष	तुला	कन्या	।। ।। ऽश.ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ४ (२४/०८ बाद), ५, ६ (३०/१२ तक),
कार्त्ति. कृ. ५ गु.	कार्त्ति. ४	अक्तू.२०	मृग.	मिथुन	तुला	कन्या	।। ।। ऽश. ।। ऽ ।।	दि.ल. १२ (१६/३७ जाद), गोधू., २, ३ (२२/१४ तक),
कार्त्ति. कृ. १० मं.	कार्त्ति. ९	अक्तू.२५	मघा	सिंह	तुला	कन्या	।। ।। ।ऽरो. ।ऽ ।।	दि.ल. १० (१३/१३ बाद), १२, गोधू., २, ३, ४ (२३/०२ तक),
कार्त्ति. शु. २ मं.	कार्त्ति. १६	नवं. १	अनु.	वृश्चिक	तुला	कन्या	।। ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. ११ (१५/०० बाद), १२, रा.ल. २, ३, ४, ५, ६,
कार्त्ति. शु. ३ बु.	कार्त्ति. १७	नवं. २	अनु.	वृश्चिक	तुला	कन्या	।। ।। ।। ।। ।।	दि.ल. ८, ९, १०, ११, १२,
कार्त्ति. शु. ४ शु.	कार्त्ति. १९	नवं. ४	मूल	धनु	तुला	कन्या	ऽरा.। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ८(८/५२ बाद), ९, १०, ११, १२, गोधू., २, ३, ४ (२३/२० तक),

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१६ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
कार्त्ति. शु. ७ चं.	कार्त्ति.२२	नवं. ७	श्रव.	मकर	तुला	कन्या	।ऽ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ८ (८/२५ बाद), ९, १० (१३/१० तक), रा.ल. ५ (२५/१६ बाद), ६ (२८/१७ तक), (८/२५ तक क्रा.सा.),
कार्त्ति. शु. ७ चं.	कार्त्ति.२२	नवं. ७	धनि.	मकर	तुला	कन्या	ऽमं.। ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. ६ (२८/१७ बाद),
कार्त्ति. शु. ८ मं.	कार्त्ति.२३	नवं. ८	धनि.	मकर/कुम्भ	तुला	कन्या	ऽमं.। ॥ ।ऽनृ. ।ऽ ॥	दि.ल. ९, १०, ११, १२, गोधू., २, ३, ६ (२८/३६ तक),
कार्त्ति. शु. ११ शु.	कार्त्ति.२६	नवं. ११	उ.भा.	मीन	तुला	कन्या	।ऽ ।ऽगु. ॥ ॥ ॥	दि.ल. ११ (१४/०२ बाद),१२, गोधू., २, ३, ५ (२५/०० तक), (८/३० से १४/०२ तक गुरु-पादवेध),
कार्त्ति. शु. ११ शु.	कार्त्ति.२६	नवं. ११	रेव.	मीन	तुला	कन्या	ऽसू.। ॥ ऽगु.। ऽ। ॥	ल. ५ (२५/०० बाद), ६,
कार्त्ति. शु. १३ श.	कार्त्ति.२७	नवं. १२	रेव.	मीन	तुला	कन्या	ऽसू.। ॥ ऽगु.ऽरो. ऽ। ॥	दि.ल. ९, १०, ११, १२, गोधू., २, ३,
मार्ग. कृ. २ बु.	मार्ग. २	नवं. १६	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ऽबु.। ऽ। ॥	दि.ल. ९ (१०/१७ तक),
मार्ग. कृ. २ बु.	मार्ग. २	नवं. १६	मृग.	वृष/मिथुन	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ऽश.। ॥ ॥	दि.ल. ९ (१०/१७ बाद), १०, १२, १, रा.ल. ३,
मार्ग. कृ. १० बु.	मार्ग. ९	नवं. २३	उ.फा.	सिंह/कन्या	वृश्चिक	कन्या	ऽबु.। ॥ ॥ ।ऽ।	दि.ल. ९, १०, ११, १२, १ (१६/३१ तक),
मार्ग. कृ. ११ गु.	मार्ग. १०	नवं. २४	उ.फा.	कन्या	वृश्चिक	कन्या	ऽबु.। ॥ ।ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. ९ (९/२० तक),
मार्ग. कृ. ११ गु.	मार्ग. १०	नवं. २४	हस्त	कन्या	वृश्चिक	कन्या	॥ ऽगु.। ।ऽरो. ।ऽ ॥	दि.ल. ९ (९/२० बाद),१०, ११, १२, १, गोधू., ३, ५, ६,
मार्ग. कृ. ११ शु.	मार्ग. ११	नवं. २५	हस्त	कन्या	वृश्चिक	कन्या	॥ ऽगु.। ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ९, १० (१२/०५ तक),
मार्ग. कृ. ११ शु.	मार्ग. ११	नवं. २५	चित्रा	कन्या/तुला	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. १० (१२/०५ बाद), ११, १२, १, गोधू., ३, ५, ६,
मार्ग. शु. १ बु.	मार्ग. १६	नवं. ३०	मूल	धनु	वृश्चिक	कन्या	ऽरा.। ॥ ॥ ऽ। ॥	ल. ६ (२६/३६ बाद),
मार्ग. शु. २ गु.	मार्ग. १७	दिसं. १	मूल	धनु	वृश्चिक	कन्या	ऽरा.। ॥ ।ऽचौ. ऽ। ॥	दि.ल. ९, १०, ११, १२, १, रा.ल. ३, ५, ६,
मार्ग. शु. ४ श.	मार्ग. १९	दिसं. ३	उ.षा.	धनु/मकर	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ।ऽरो. ॥ ॥	दि.ल. ९, १०, ११ (१२/४० तक), रा.ल. ६ (२५/२४ बाद),
मार्ग. शु. ५ र.	मार्ग. २०	दिसं. ४	उ.षा.	मकर	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ॥ ॥ ॥	दि.ल. ९ (९/०७ तक),
मार्ग. शु. ५ र.	मार्ग. २०	दिसं. ४	श्रव.	मकर	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	दि.ल. ९ (९/०७ बाद), १०, ११, १२, १, गोधू., ३, (कन्या और तुला लग्न में मृत्युबाण),
मार्ग. शु. ९ गु.	मार्ग. २४	दिसं. ८	उ.भा.	मीन	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ।ऽनृ. ॥ ॥	दि.ल. १० (११/१७ बाद), ११, १२, १, गोधू., ३,
मार्ग. शु. १० शु.	मार्ग. २५	दिसं. ९	रेव.	मीन	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽऽ ॥	ल. ६, ७,
मार्ग. शु. ११ श.	मार्ग. २६	दिसं. १०	रेव.	मीन	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ।ऽचौ. ऽऽ ॥	दि.ल. ९ (८/२९ तक),
मार्ग. शु. ११ श.	मार्ग. २६	दिसं. १०	अश्वि.	मेष	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ऽगु. ऽचौ. ॥ ॥	ल. ७ (२७/११ बाद),
मार्ग. शु. १३ चं.	मार्ग. २८	दिसं. १२	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कन्या	॥ ॥ ॥ ।ऽ ॥	ल. ६ (२४/३९ बाद), ७,

शुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

मास -तिथि-वार	प्रविष्टा	तारीख २०१६-१७ ई.	विवाह नक्षत्र	विवाह लग्न के समय चन्द्रराशि	सूर्यराशि	गुरुराशि	लत्ता आदि दस दोष-रेखाएं	शुद्धलग्न (सर्वत्र भा. स्टैं. टा. दिया गया है ।)
मार्ग. शु. १४ मं.	मार्ग. २६	दिसं. १३	रोहि.	वृष	वृश्चिक	कन्या	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ६(६/१६ तक), रा.ल. ३ (१६/२६ बाद),
माघ कृ. ४ चं.	माघ ३	जन. १६	उ.फा.	सिंह/कन्या	मकर	कन्या	।। ।। ऽमं.शु.ऽअ. ।। ।।	ल. ६ (२३/१७ बाद), ७, ८, ६,
माघ कृ. ५ मं.	माघ ४	जन. १७	उ.फा.	कन्या	मकर	कन्या	।। ।। ऽमं.शु.। ।। ।।	दि.ल. ११, १२, १ (१२/०२ तक), २(१४/२६ बाद), ३, गोधू., ६, ७ (२४/३७ तक),
माघ कृ. ५ मं.	माघ ४	जन. १७	हस्त	कन्या	मकर	कन्या	ऽचं.बु.। ।। ।। ऽ। ।।	ल. ७ (२४/३७ बाद), ८, ६,
माघ कृ. ६ बु.	माघ ५	जन. १८	हस्त	कन्या	मकर	कन्या	ऽचं.बु.। ।। ।ऽनृ. ऽ। ।।	दि.ल. ११, १२, १ (१२/४६ तक), रा.ल. ७ (२५/४३ से २६/३८ तक),
माघ कृ. १० र.	माघ ६	जन. २२	अनु.	वृश्चिक	मकर	कन्या	।ऽ ।। ।ऽरो. ऽऽ ।।	ल. ६ (२२/०० बाद), ७, ८, ६,
माघ कृ. ११ चं.	माघ १०	जन. २३	अनु.	वृश्चिक	मकर	कन्या	।ऽ ।। ।। ऽऽ ।।	दि.ल. ११, १२, २ (१३/५६ तक),
माघ शु. २ र.	माघ १६	जन. २६	धनि.	कुम्भ	मकर	कन्या	।ऽ ।। ।ऽचौ. ऽ। ।।	दि.ल. २ (१३/०३ बाद), ३, रा. ल. ६(२३/०३ तक),
माघ शु. ५ बु.	माघ १६	फर. १	रेव.	मीन	मकर	कन्या	।। ।। ।। ।। ।।	ल. ६ (२२/०६ बाद), (२४/०० बाद मृत्युबाण),
माघ शु. ६ गु.	माघ २०	फर. २	अश्वि.	मेष	मकर	कन्या	ऽमं.ऽ ।। ऽगु.ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ८, ६, (२४/०० तक मृत्युबाण),
माघ शु. ७ शु.	माघ २१	फर. ३	अश्वि.	मेष	मकर	कन्या	ऽमं.ऽ ।। ऽगु.ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. ११, १२, २, ३, गोधू.,
माघ शु. ६ र.	माघ २३	फर. ५	रोहि.	वृष	मकर	कन्या	।। ।। । ऽनृ. ।ऽ ।।	ल. ६ (२१/२८ बाद), ८, ६, (१२/५२ से २१/२८ तक क्रा.सा.)
माघ शु. १० चं.	माघ २४	फर. ६	रोहि.	वृष	मकर	कन्या	।। ।। ।। ।ऽ ।।	दि.ल. ११, १२, २, ३ (१४/५३ तक),
फाल्गु. कृ. ४ मं.	फाल्गु. ३	फर. १४	हस्त	कन्या	कुम्भ	कन्या	।। ।। ऽशु. ऽअ. ।ऽ ।।	ल. ६ (२०/५५ बाद), ८, ६, १०, (२०/०६ तक मृत्युबाण),
फाल्गु. कृ. ५ बु.	फाल्गु. ४	फर. १५	हस्त	कन्या	कुम्भ	कन्या	।। ।। ऽशु. ऽअ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२, १, २ (११/३१ तक), (शुक्र-पादवेधाभाव),
फाल्गु. कृ. ७ श.	फाल्गु. ७	फर. १८	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	कन्या	ऽबु. ।। ।। ऽचौ. ।ऽ ।।	ल. ६ (२०/२५ तक), ७ (२४/०१ बाद), ८, ६, १०,
फाल्गु. कृ. ८ र.	फाल्गु. ८	फर. १६	अनु.	वृश्चिक	कुम्भ	कन्या	ऽबु. ।। ।। ऽचौ. ।ऽ ।।	दि.ल. १२, १, २, ३, ४, गोधू., ६ (२२/०६ तक),
फाल्गु. शु. १ चं.	फाल्गु.१६	फर. २७	उ.भा.	मीन	कुम्भ	कन्या	ऽश. ऽ ।। ।ऽचौ. ।। ।।	ल. १० (२६/५६ बाद),
फाल्गु. शु. २ मं.	फाल्गु.१७	फर. २८	उ.भा.	मीन	कुम्भ	कन्या	ऽश. ऽ ।। ।ऽचौ. ।। ।।	दि.ल. १२, १, २, ३, ४, रा.ल. ६, ८, ६, १० (२८/४३ तक),
फाल्गु. शु. ६ श.	फाल्गु.२१	मार्च ४	रोहि.	वृष	कुम्भ	कन्या	।। ।। ।ऽअ. ऽऽ ।।	ल. ८, ६, १०,

नोट- आगामी सं. २०७४ वि. के मुहूर्त्तों में वर्ज्य गुरु-शुक्रास्तादि-काल एवम् सम्भावित विवाहमुहूर्त्तों की तारीखों के लिए अगला पृष्ठ देखें ।

वि. सं. 2074 में (28 मार्च, 2017 ई. से 17 मार्च, 2018 ई. तक)सम्भावित शुद्ध विवाहमुहूर्त्त

प्रतिवर्ष हमें ऐसे दैवज्ञों एवं अन्य अनेक लोगों के Phone Calls/पत्र आते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि– आगामी वर्ष में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* किन–किन दिनों में संभावित हैं। उनकी इस जिज्ञासा की शान्ति के लिए यह स्तम्भ प्रारम्भ किया गया है। इससे यह पर्याप्त स्पष्टता से ज्ञात हो जाता है कि– आगामी वर्ष के किन–किन दिनों में *शुद्ध विवाहमुहूर्त्त* संभावित हैं और किन–किन दिनों में नहीं। **यहां जिन तारीखों के आगे गुणनचिह्न (×) दिया गया है, उन दिनों में शुद्ध विवाहमुहूर्त्त बिल्कुल नहीं बनते। इनके अतिरिक्त जहां गुणनचिह्न नहीं दिया है, उन दिनों में शुद्ध मुहूर्त्त बनने की पर्याप्त संभावना है।** — प्रियव्रत शर्मा

तारीख	मार्च,'17	अप्रै.'17	मई '17	जून '17	जुला'17	अग.'17	सितं.17	अक्तू.'17	नवं.'17	दिसं.17	जन.'18	फर.'18	मार्च,'18	तारीख
1	–	×	×						×		×	×	×	1
2	–	×	×						×		×	×		2
3	–	×	×						×		×	×		3
4	–	×							×		×	×		4
5	–	×					×		×	×	×			5
6	–	×				×	×		×	×	×			6
7	–	×				×	×		×	×	×			7
8	–	×				×	×	×	×		×			8
9	–	×				×	×	×	×		×			9
10	–	×				×	×	×	×		×			10
11	–	×					×	×			×			11
12	–	×					×	×		×	×	×		12
13	–	×					×	×		×	×	×	×	13
14	–	×					×	×		×	×	×	×	14
15	–				×		×	×		×	×	×	×	15
16	–				×		×	×	×	×	×	×	×	16
17	–						×	×	×	×	×		×	17
18	–					×	×	×	×	×	×		–	18
19	–					×	×	×	×	×	×		–	19
20	–					×	×	×		×	×		–	20
21	–			×	×	×		×		×	×		–	21
22	–			×	×	×		×		×	×		–	22
23	–	×		×	×			×		×	×	×	–	23
24	–	×	×	×				×		×	×	×	–	24
25	–	×	×	×				×		×	×	×	–	25
26	–	×		×				×		×	×	×	–	26
27	–	×						×		×	×	×	–	27
28	×		×					×		×	×	×	–	28
29	×		×					×		×	×	–	–	29
30	×		×					×		×	×	–	–	30
31	×	–		–			–	×	–	×	×	–	–	31

इस वर्ष (सं. 2074 वि.) में इन निम्नांकित प्रमुख दोषों के कारण निम्नांकित ये तारीखें विवाहकृत्य के लिए स्पष्टरूप में सर्वथा वर्जित हैं–

मीनस्थ सूर्यदोष

(28 मार्च से 13 अप्रैल, 2017 ई. तक)

चन्द्रग्रहणदोष

(6 से 10 अगस्त, 2017 ई. तक)

महालय(श्राद्धपक्ष)दोष

(5 से 20 सितंबर, 2017 ई.तक)

गुरुवार्धक्य–अस्त–बाल्यदोष

(8 अक्तूबर से 10 नवंबर, 2017 ई. तक)

शुक्रवार्धक्य–अस्त–बाल्य एवम् धनुस्थ सूर्यदोष

(12 दिसं.,'17 से 4 फरवरी, 2018 ई. तक)

होलाष्टक–दोष

(23 फरवरी से 1 मार्च, 2018 ई. तक)

मीनस्थ सूर्यदोष

(13 से 17 मार्च, 2018 ई. तक)

ध्यान दें– इन उपरोक्त तारीखों तथा अन्य उन तारीखों को भी जो विवाहकृत्य में वर्जित हैं, इस बाईं ओर दिए कोष्ठक में गुणनचिह्न से अंकित किया गया है।

सं. २०७३ वि. में भिन्न-भिन्न राशि वाले वरों और कन्याओं के विवाह-निर्णय के लिए त्रिबल-शुद्धि

(अर्थात् किस राशि वाले वर और कन्या के लिए सं. २०७३ वि. में कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को शुद्ध (ग्राह्य) बनते हैं ?)

लोग अपनी सुविधा के अनुसार किसी खास महीने में या किसी खास तारीख के आस-पास ही विवाह-मुहूर्त्त (साहा) निकालने के लिए ज्योतिषियों से अनुरोध किया करते हैं। ऐसी स्थिति में ज्योतिषी को विवाहमुहूर्त्तों में जगह-जगह त्रिबल-शुद्धि जानने का झंझट करना पड़ता है। इस झंझट से ज्योतिषियों को छुटकारा दिलाने के लिए हम यहां नीचे 'त्रिबलशुद्धि कोष्टक' दे रहे हैं। संवत् २०७३ वि. के शुद्ध विवाह-मुहूर्त्त इस पंचांग में पृ. २५६ पर दिए गए हैं । किस-किस महीने में किस-किस तारीख वाले विवाहमुहूर्त्त में, किस-किस राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं, यह त्रिबलशुद्धि के अनुसार नीचे दिए गए 'त्रिबल-शुद्धि कोष्टक' में लिख दिया गया है । अमुक राशि वाले लड़के (वर) और अमुक राशि वाली कन्या के लिए इस वर्ष कुल कितने विवाहमुहूर्त्त किन-किन तारीखों को बनते हैं- इस कोष्ठक द्वारा साधारण व्यक्ति भी एक ही नजर में यह तुरन्त जान सकता है। इस कोष्ठक से यह भी तुरन्त जाना जा सकता है कि- अमुक राशि वाली लड़कियों और लड़कों का विवाह इस वर्ष किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है। वर के लिए 'सूर्य की पूजा' और कन्या के लिए 'गुरु की पूजा' वाला समय भी इस कोष्ठक में दिया गया है ।

लड़का-लड़की की राशियों वाले कॉलमों/कोष्ठकों में जो-जो तारीखें समानरूप से मिलती हों, उन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में उस लड़के-लड़की का विवाह हो सकता है। जैसे- मेषराशि वाले लड़के और सिंहराशि वाली लड़की का विवाह सं. २०७३ वि. में अगस्त(२०१६ ई.) के महीने में किन-किन तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में हो सकता है ?- यह मालूम करना है। नीचे 'त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक' देखें,-लड़के वाले कॉलम में जन्मराशि मेष के आगे अगस्त, २०१६ ई. की १८, २१, २५, २६ तारीखें हैं, जबकि लड़की वाले कॉलम में जन्मराशि सिंह के आगे अगस्त, २०१६ की ४, ६, ७, ८, ९, १८, २५, २६ तारीखें हैं । इसलिए यह समझना चाहिए कि अगस्त, २०१६ ई. में मेष राशि वाले लड़के और सिंह राशि वाली लड़की का विवाह त्रिबलशुद्धि के अनुसार अगस्त की केवल १८, २५ और २६ तारीखों वाले विवाहमुहूर्त्तों में ही हो सकता है, क्योंकि अगस्त की केवल यही तारीखें, दोनों (लड़का-लड़की) की राशियों (मेष-सिंह) वाले कॉलमों (कोष्ठकों) में एक-सी मिलती हैं । इस प्रकार विवाह की तारीखों का निश्चय करके शुद्ध विवाह-मुहूर्त्तों से उस दिन विवाह के लग्न का निर्णय कर लीजिए । क्योंकि, आजकल लड़कियों का विवाह बड़ी अवस्था में होता है, अतः चतुर्थ-अष्टम-द्वादश गुरु को शास्त्रनिर्देशानुसार नेष्ट न मानकर पूज्य ही माना गया है ।

ध्यान दें- लड़के की राशि से १, २, ५, ७, ९ वें स्थित सूर्य एवं कन्या की राशि से १, ३, ६, १०वें स्थित गुरु यदि स्वराशि, मित्रराशि या स्वोच्चराशि में हों तो उन्हें शास्त्र-निर्देशानुसार यहां पूज्य न मानकर शुभ ही माना जाता है । इसी लिए इस वर्ष सिंह राशिस्थ गुरु मित्रराशि में होने से किसी के लिए पूज्य नहीं है, जबकि कन्याराशिस्थ गुरु मिथुन, तुला एवं कुम्भ राशि वाली कन्याओं के लिए पूज्य रहेगा ।

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७३ वि.) (८ अप्रैल, सन् २०१६ ई. से २८ मार्च, सन् २०१७ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
मेष	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला.१३, १४; अग. १८, २१, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०, २५; नवं. ४, ७, ८, ११, १२; जन. १६, १७, १८, २९; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, २७, २८; मार्च ४;	ज्येष्ठ , कार्त्तिक ,	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला.१३, १४, १९, २०, २१, २४, २५, २९; अग. ४, ६, ७, ८, ९, १८, २१, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०, २५; नवं. ४, ७, ८, ११, १२, १६, २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३; जन. १६, १७, १८, २९; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, २७, २८; मार्च ४;	- - -
वृष	जुला.१३, १४, १९(२१/५४ बाद), २०, २१, २४, २५, २९; अग. ६(१०/५३ बाद), ७, ८, ९; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०; नवं. १, २, ७, ८, ११, १२, १६, २३(१३/३० बाद), २४, २५; दिसं. ३(१३/४६ बाद), ४, ८, ९, १०, १२, १३; जन. १६(२९/३३ बाद), १७, १८, २२, २३, २९; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	ज्येष्ठ , आषाढ़ , आश्विन , माघ ,	अप्रैल १८(२८/५६ बाद), १९, २०, २२, २३; जुला.१३, १४, १९(२१/५४ बाद), २०, २१, २४, २५, २९; अग. ६(१०/५३ बाद), ७, ८, ९, १८, २१, २५, २६; सितं. २(१८/५३ बाद), ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०; नवं. १, २, ७, ८, ११, १२, १६, २३(१३/३० बाद), २४, २५; दिसं. ३(१३/४६ बाद), ४, ८, ९, १०, १२, १३; जन. १६(२९/३३ बाद), १७, १८, २२, २३, २९; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	- - -

त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७३ वि.) (८ अप्रैल, सन् २०१६ ई. से २८ मार्च, सन् २०१७ ई. तक)

(कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)

नाम/जन्म-राशि	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है।	लड़की	इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
मिथुन	अप्रैल १६, १७, १८(२८/५६ तक), २२, २३; जुला.१३, १४, १९(२१/५४ तक), २४, २५, २९; अग. ४, ६(१०/५३ तक), ८(२२/२५ बाद), ९, १८, २१, २५, २६; सितं. २(१८/५३ तक); अक्तू. १९, २०, २५; नवं. १, २, ४, ८(१६/३२ बाद), ११, १२, १६, २३(१३/३० तक), २५(२५/३३ बाद), ३०; दिसं. १, ३(१३/४६ तक), ८, ९, १०, १२, १३; फर. १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १६, १७, १८(२८/५६ तक), २२, २३; जुला.१३, १४, १९ (२१/५४ तक), २४, २५, २९; अग. ४, ६(१०/५३ तक), ८(२२/२५ बाद), ९, १८, २१, २५, २६; सितं. २(१८/५३ तक); अक्तू. १४, १९, २०, २५; नवं. १, २, ४, ८(१६/३२ बाद), ११, १२, १६, २३(१३/३० तक), २५(२५/३३ बाद), ३०; दिसं. १, ३(१३/४६ तक), ८, ९, १०, १२, १३; जन. १६(२९/३३ तक), २२, २३, २९; फर. १, २, ३, ५, ६, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	कन्या
कर्क	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०; जुला. १९,२०, २१, २४, २५, २९; अग. ४, ६, ७, ८(२२/२५ तक), २१, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४; नवं. १६, २३, २४, २५(२५/३३ तक), ३०; दिसं. १, ३, ८, ९, १०, १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३; फर. १, २, ३, ५, ६ ;	माघ,	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०; जुला.१९, २०, २१, २४, २५, २९; अग. ४, ६, ७, ८(२२/२५ तक), २१, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८(१६/३२ तक), ११, १२, १६, २३, २४, २५(२५/३३ तक), ३०; दिसं. १, ३, ८, ९, १०, १२, १३; जन. १६ १७, १८, २२, २३; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	- - -
सिंह	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला. १३, १४; अग. १८, २५, २६; सितं. २, ३,-४; अक्तू. १०, ११, १९, २०, २५; नवं. ४, ७, ८; जन. १६, १७, १८, २९; फर. २, ३, ५, ६, १४, १५; मार्च ४;	आश्विन, फाल्गुन,	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला. १३, १४, १९, २०, २१, २९; अग. ४, ६, ७, ८, ९, १८, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १९, २०, २५; नवं. ४, ७, ८, १६, २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, १०(८/२९ बाद), १२, १३; जन. १६ १७, १८, २९; फर. २, ३, ५, ६, १४, १५; मार्च ४;	---
कन्या	जुला.१३, १४, १६(२१/५४ बाद), २०, २१, २४, २५, २९; अग. ४, ७, ८, ९; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०, २५; नवं. १, २, ७, ८, ११, १२, १६, २३, २४, २५; दिसं. ३(१३/४६ बाद), ४, ८, ९, १०(८/२९ तक), १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३, २९; फर. १, ५, ६, १४, १५, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	ज्येष्ठ , आश्विन, कार्त्तिक, माघ ,	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला. १३, १४, १९(२१/५४ बाद), २०, २१, २४, २५, २९; अग. ४, ६, ७, ८, ९, १८, २१, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १९, २०, २५; नवं. १, २, ७, ८, ११, १२, १६, २३, २४, २५; दिसं. ३(१३/४६ बाद), ४, ८, ९, १०(८/२९ तक), १२, १३; जन. १६ १७, १८, २२, २३, २९; फर. १, ५, ६, १४, १५, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;	---
तुला	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला.१३, १४, १९(२१/५४ तक), २४, २५; अग. ४, ६, ७, ८, ९, १८, २१, २६(२२/२१ बाद); सितं. २, ३, ४; अक्तू. २०, २५; नवं. १, २, ४, ८(१६/३२ बाद), ११, १२, १६(२०/५६ बाद), २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३(१३/४६ तक), ८, ९, १०;फर. १४, १५, १८, १९, २७, २८;	आषाढ़ , कार्त्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३; जुला.१३, १४, १९(२१/५४ तक), २४, २५; अग. ४, ६, ७, ८, ९, १८, २१, २६(२२/२१ बाद); सितं. २, ३, ४; अक्तू. १४, २०, २५; नवं. १, २, ४, ८(१६/३२ बाद), ११, १२, १६(२०/५६ बाद), २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३(१३/४६ तक), ८, ९, १०; जन. १६, १७, १८, २२, २३, २९; फर. १, २, ३, १४, १५, १८, १९, २७, २८;	कन्या

नाम/ जन्म-राशि	त्रिबल-शुद्धि कोष्ठक (सं. २०७३ वि.) (८ अप्रैल, सन् २०१६ ई. से २८ मार्च, सन् २०१७ ई. तक) (कोष्ठकों में दिया गया काल भा. स्टैं. टा. है।)			इस वर्ष जिस राशि में स्थित गुरु लड़की के लिए पूज्य है।
	लड़का	सौर मास, जिनमें लड़के के लिए सूर्य पूज्य है ।	लड़की	
वृश्चिक	अप्रैल १६, १७, १८, १६, २०, २२, २३; जुला. १६, २०, २१, २४, २५, २६; अग. ४, ६, ७, ८, ६, २१, २५, २६(२२/२१ तक) ; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४; नवं. १६(२०/५६ तक), २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०, १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३; फर. १, २, ३, ५, ६;	ज्येष्ठ,	अप्रैल १६, १७, १८, १६, २०, २२, २३; जुला.१३, १४, १६, २०, २१, २४, २५, २६; अग. ४, ६, ७, ८, ६, २१, २५, २६(२२/२१ तक); सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १६, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८(१६/३२ तक), ११, १२, १६(२०/५६ तक), २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०, १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १६, २७, २८; मार्च ४;	– – –
धनु	अप्रैल १६, १७, १८, १६, २०, २२, २३; जुला. १३, १४,; अग. १८, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १६, २०, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८; जन. १६, १७, १८, २२, २३, २६; फर. २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १६; मार्च ४;	आषाढ़ , माघ,	अप्रैल १६, १७, १८, १६, २०, २२, २३; जुला.१३, १४, १६, २०, २१, २६; अग. ४, ६, ७, ८, ६, १८, २५, २६; सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १६, २०, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८, १६, २३, २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, १०(८/२६ बाद), १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३, २६; फर. २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १६; मार्च ४;	– – –
मकर	जुला. १३, १४, १६, २०, २१, २४, २५, २६; अग. ६(१०/५३ बाद), ७, ८, ६; अक्तू. १०, ११, १४, १६, २०; नवं. १, २, ४, ७, ८, ११, १२, १६, २३(१३/३० बाद), २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०(८/२६ तक), १२, १३; जन. १६(२६/३३ बाद), १७, १८, २२, २३, २६; फर. १, ५, ६, १४, १५, १८, १६, २७, २८; मार्च ४;	ज्येष्ठ , आश्विन, माघ ,फाल्गुन,	अप्रैल १८(२८/५६ बाद), १६, २०, २२, २३; जुला. १३, १४, १६, २०, २१, २४, २५, २६; अग. ६(१०/५३ बाद), ७, ८, ६, १८, २१, २५, २६; सितं. २(१८/५३ बाद), ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १६, २०; नवं. १, २, ४, ७, ८, ११, १२, १६, २३(१३/३० बाद) २४, २५, ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०(८/२६ तक), १२, १३; जन. १६(२६/३३ बाद), १७, १८, २२, २३, २६; फर. १, ५, ६, १४,१५, १८, १६, २७, २८; मार्च ४;	– – –
कुम्भ	अप्रैल १६, १७, १८(२८/५६ तक), २२, २३; जुला. १३, १४, १६, २०, २१, २४, २५; अग. ४, ६(१०/५३ तक), ८(२२/२५ बाद), ६, १८, २१, २६(२२/२१ बाद); सितं. २(१८/५३ तक); अक्तू. २०, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८, ११, १२, १६(२०/५६ बाद), २३(१३/३० तक), २५(२५/३३ बाद), ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०; फर. १८, १६, २७, २८;	आषाढ़ , कार्तिक, फाल्गुन,	अप्रैल १६, १७, १८(२८/५६ तक), २२, २३; जुला. १३, १४, १६, २०, २१, २४, २५; अग. ४, ६(१०/५३ तक), ८(२२/५५ बाद), ६, १८, २१, २६ (२२/२१ बाद); सितं. २(१८/५३ तक); अक्तू. १०, ११, १४, २०, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८, ११, १२, १६(२०/५६ बाद), २३(१३/३० तक), २५(२५/३३ बाद), ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०; जन. १६(२६/३३ तक), २२, २३, २६; फर. १, २, ३, १८, १६, २७, २८;	कन्या
मीन	अप्रैल १६, १७, १८, १६, २०; जुला. १६, २०, २१, २४, २५, २६; अग. ४, ६, ७, ८(२२/२५ तक), १८, २१, २५, २६(२२/२१ तक); सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४; नवं. १६(२०/५६ तक), २३, २४, २५(२५/३३ तक), ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०, १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३, २६; फर. १, २, ३, ५, ६;	आश्विन,	अप्रैल १६, १७, १८, १६, २०; जुला. १६, २०, २१, २४, २५, २६; अग. ४, ६, ७, ८(२२/२५ तक), १८, २१, २५, २६(२२/२१ तक); सितं. २, ३, ४; अक्तू. १०, ११, १४, १६, २५; नवं. १, २, ४, ७, ८, ११, १२, १६(२०/५६ तक), २३, २४, २५(२५/३३ तक), ३०; दिसं. १, ३, ४, ८, ६, १०, १२, १३; जन. १६, १७, १८, २२, २३, २६; फर. १, २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १६, २७, २८; मार्च ४;	– – –

फर. १, २, ३, ५, ६; | १५, १८, १९, २७, २८; मार्च ४;

अशुद्ध विवाह-मुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

प्रतिवर्ष हमें ज्योतिषियों एवं अन्य लोगों के ऐसे अनेकों पत्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें वे ऐसे अनेक विवाहमुहूर्तों के बारे में हमसे स्पष्टीकरण चाहते हैं, जिन्हें हमने अपने पंचांग में तो अशुद्ध विवाहमुहूर्तों की कोटि में रखा होता है, लेकिन किसी अन्य पंचांग में उन्हें शुद्ध विवाहमुहूर्त्त मानकर, उनमें विवाहलग्न लगाए होते हैं। इस समस्या को दृष्टि में रखकर अशुद्ध विवाहमुहूर्तों का स्पष्टीकरण हम इस स्तम्भ में दिया करते हैं। यह स्तम्भ ज्योतिषियों को शुद्ध और अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त-सम्बन्धी दुविधा से मुक्त कराने में काफी हद तक समर्थ सिद्ध हुआ है और इससे ज्योतिषी लोग स्वयं यह भलीभांति जान सकते हैं कि– अमुक नक्षत्र, अमुक दिन, अमुक समय या अमुक लग्न में विवाह करना शास्त्रविरुद्ध क्यों है ? यहां साथ-साथ उन दोषों का निर्देश भी किया गया है, जिनके कारण विवाहनक्षत्र होते हुए भी, वहां विवाह नहीं किया जा सकता। जहां भद्रा, व्यतीपात, क्रूरग्रहवेध आदि दोषों से रहित होने से विवाहनक्षत्र का काल शुद्ध होने पर भी लग्नभंग-परिहार नहीं हो सका, वहां 'लग्नाभाव' दोष लिखा गया है। *ध्यान रहे*– यहां जिन युति, वेध आदि दोषों का निर्देश किया गया है, वे सभी ऐसे हैं, जिनका कोई परिहार नहीं है। नीचे सं. २०७३ वि. के अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त दिए जा रहे हैं। – प्रियव्रत शर्मा

तिथि-वार			तारीख २०१६ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
वर्षारम्भ (८ अप्रैल, २०१६ ई.) से १३ अप्रैल, २०१६ ई. तक मीनस्थ रवि।					
चैत्र शु.	१४	बु.	अप्रै. २०	चित्रा	केतुवेध,
चैत्र शु.	१४	गु.	अप्रै. २१	चित्रा	केतुवेध,
चैत्र शु.	१५	शु.	अप्रै. २२	चित्रा	केतुवेध,
२४ अप्रैल से १२ जुलाई, २०१६ ई. तक शुक्र-वार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष।					
आषा. शु.	१३	र.	जुला. १७	मूल	सूर्यवेध,
आषा. शु.	१४	चं.	जुला. १८	मूल	सूर्यवेध,
श्राव. कृ.	३	शु.	जुला. २२	धनि.	बुध व शुक्रपादवेध,
श्राव. कृ.	७	मं.	जुला. २६	रेव.	गुरुपादवेध,
श्राव. कृ.	७	मं.	जुला. २६	अश्वि.	राहुवेध,
श्राव. कृ.	८	बु.	जुला. २७	अश्वि.	राहुवेध,
श्राव. कृ.	११	श.	जुला. ३०	मृग.	क्रान्तिसाम्य,
श्राव. शु.	१	बु.	अग. ३	मघा	लग्नाभाव,
श्राव. शु.	३	शु.	अग. ५	उ.फा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु.	५	र.	अग. ७	उ.फा.	लग्नाभाव,
श्राव. शु.	६	मं.	अग. ९	स्वा.	केतुवेध,
श्राव. शु.	७	बु.	अग. १०	स्वा.	केतुवेध,
श्राव. शु.	८	गु.	अग. ११	अनु.	भौमयुति अपरिहार्य,
श्राव. शु.	९	शु.	अग. १२	अनु.	भौमयुति अपरिहार्य,
श्राव. शु.	१०	श.	अग. १३	मूल	लग्नाभाव,
श्राव. शु.	११	र.	अग. १४	मूल	मृत्युबाण,
श्राव. शु.	१४	बु.	अग. १७	श्रव.	सूर्यवेध,
श्राव. शु.	१४	बु.	अग. १७	धनि.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ.	२	श.	अग. २०	उ.भा.	लग्नाभाव,
भाद्र. कृ.	३	र.	अग. २१	रेव.	भुजंगपात,
भाद्र. कृ.	५	चं.	अग. २२	रेव.	भुजंगपात
भाद्र. कृ.	५	चं.	अग. २२	अश्वि.	राहुवेध,
भाद्र. कृ.	६	मं.	अग. २३	अश्वि.	राहुवेध,
भाद्र. कृ.	१०	श.	अग. २७	मृग.	भद्रा,
भाद्र. शु.	४	चं.	सितं. ५	चित्रा	क्रान्तिसाम्य,
भाद्र. शु.	४	चं.	सितं. ५	स्वा.	केतुवेध,
भाद्र. शु.	५	मं.	सितं. ६	स्वा.	केतुवेध,
७ सितं. से ९ अक्तू., २०१६ ई. तक गुरुवार्धक्य, अस्त एवं बाल्यदोष तथा १७ से ३० सितं. तक श्राद्धपक्षदोष।					
आश्वि. शु.	१०	मं.	अक्तू. ११	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.	११	बु.	अक्तू. १२	धनि.	भुजंगपात,
आश्वि. शु.	१४	श.	अक्तू. १५	उ.भा.	मृत्युबाण,
आश्वि. शु.	१४	श.	अक्तू. १५	रेव.	मृत्युबाण,
कार्त्ति. कृ.	३	मं.	अक्तू. १८	रोहि.	व्यतीपात, भद्रा,
कार्त्ति. कृ.	९	चं.	अक्तू. २४	मघा	क्रान्तिसाम्य,
कार्त्ति. कृ.	११	बु.	अक्तू. २६	उ.फा.	चन्द्रपादवेध,
कार्त्ति. कृ.	१२	गु.	अक्तू. २७	उ.फा.	मृत्युबाण,
कार्त्ति. शु.	१	चं.	अक्तू. ३१	स्वा.	क्षीणचन्द्र,
कार्त्ति. शु.	४	गु.	नवं. ३	मूल	भद्रा,
कार्त्ति. शु.	५	श.	नवं. ५	उ.षा.	भौमयुति, भुजंगपात,
कार्त्ति. शु.	६	र.	नवं. ६	उ.षा.	भौमयुति, भुजंगपात,
कार्त्ति. शु.	६	र.	नवं. ६	श्रव.	क्रान्तिसाम्य,
कार्त्ति. शु.	१०	गु.	नवं. १०	उ.भा.	भद्रा,
कार्त्ति. शु.	१३	श.	नवं. १२	अश्वि.	राहुवेध,
कार्त्ति. शु.	१४	र.	नवं. १३	अश्वि.	राहुवेध,
मार्ग. कृ.	३	गु.	नवं. १७	मृग.	भद्रा,
मार्ग. कृ.	७	र.	नवं. २०	मघा	भौमवेध,
मार्ग. कृ.	८	चं.	नवं. २१	मघा	भौमवेध,
मार्ग. कृ.	९	मं.	नवं. २२	उ.फा.	लग्नाभाव,
मार्ग. कृ.	१२	श.	नवं. २६	चित्रा	मृत्युबाण,
मार्ग. शु.	६	चं.	दिसं. ५	श्रव.	मृत्युबाण,

अशुद्ध विवाहमुहूर्त्त (सं. २०७३ वि.)

तिथि-वार			तारीख २०१६-१७ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
मार्ग. शु.	६	चं.	दिसं. ५	धनि.	भौमयुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु.	७	मं.	दिसं. ६	धनि.	भौमयुति अपरिहार्य,
मार्ग. शु.	१०	शु.	दिसं. ९	उ.भा.	व्यतिपात,
मार्ग. शु.	१४	मं.	दिसं. १३	मृग.	मृत्युबाण,
१५ दिसं., २०१६ ई. से १३ जन., २०१७ ई. तक धनुःस्थ सूर्य।					
माघ कृ.	३	र.	जन. १५	मघा	मृत्युबाण,
माघ कृ.	६	बु.	जन. १८	चित्रा	भौमवेध,
माघ कृ.	७	गु.	जन. १९	चित्रा	भौमवेध,
माघ कृ.	७	गु.	जन. १९	स्वा.	केतुवेध,
माघ कृ.	८	शु.	जन. २०	स्वा.	केतुवेध,
माघ कृ.	९	श.	जन. २१	स्वा.	केतुवेध,
माघ कृ.	१२	मं.	जन. २४	मूल	मृत्युबाण,

तिथि-वार			तारीख २०१७ ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
माघ शु.	१	श.	जन. २८	धनि.	क्षीणचन्द्र, व्यतिपात,
माघ शु.	४	मं.	जन. ३१	उ.भा.	भौमयुति अपरिहार्य,
माघ शु.	५	बु.	फर. १	उ.भा.	भौमयुति अपरिहार्य,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	मृत्युबाण,
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	मृग.	वैधृति,
माघ शु.	११	मं.	फर. ७	मृग.	वैधृति, भद्रा,
फाल्गु. कृ.	३	चं.	फर. १३	उ.फा.	भौमवेध,
फाल्गु. कृ.	४	मं.	फर. १४	उ.फा.	भौमवेध,
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	भुजंगपात,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	स्वा.	केतुवेध,
फाल्गु. कृ.	६	शु.	फर. १७	स्वा.	केतुवेध,

तिथि-वार			तारीख २०१७ई.	विवाह नक्षत्र	दोष
फाल्गु. कृ.	९	चं.	फर. २०	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
फाल्गु. कृ.	१०	मं.	फर. २१	मूल	शनियुति अपरिहार्य,
फाल्गु. कृ.	११	बु.	फर. २२	उ.षा.	व्यतिपात,
फाल्गु. कृ.	१२	गु.	फर. २३	उ.षा.	व्यतिपात, क्षीणचन्द्र,
फाल्गु. शु.	२	मं.	फर. २८	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	भौमयुति अपरिहार्य,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	अश्वि.	भद्रा,
फाल्गु. शु.	४	गु.	मार्च २	अश्वि.	भौमयुति अपरिहार्य,

५ से १२ मार्च, २०१७ ई. तक होलाष्टक और १३ मार्च को मासान्त एवम् तदनन्तर वर्षान्त तक मीनस्थ सूर्य।

विवाहमुहूर्त्तों के शोधन में वेध–युति आदि दोषों के शास्त्रीय परिहार

इस पंचांग में दिए जाने वाले विवाहमुहूर्त्तों में जहां वेध, युति, कर्त्तरी, दग्धातिथि, षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र, भौम, शुक्र के दोषों के परिहार मिल जाते हैं, वहां उन मुहूर्त्तों को शास्त्रानुसार शुद्ध मान लिया जाता है और विवाहलग्न लगा दिए जाते हैं। इन दोषों के परिहार निम्नांकित स्थितियों में माने गए हैं:- *वेध परिहार-* सप्तशलाका एवं पंचशलाका वेध में क्रूरग्रह द्वारा विद्ध नक्षत्र के तो चारों चरण दूषित माने जाते हैं, वेध का वहां परिहार नहीं है। सौम्य ग्रह द्वारा वेध होने पर पादवेधपद्धति से केवल विद्ध चरण को ही दूषित माना जाता है। वहां शेष तीनों चरण वेधदोष से मुक्त रहते हैं। पादवेधपद्धति में वेधक सौम्यग्रह नक्षत्र के पहिले चरण में हो तो वह वेध्य नक्षत्र के चौथे चरण को, चतुर्थ चरण में स्थित वेधक सौम्य ग्रह वेध्य नक्षत्र के पहिले चरण को; द्वितीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के तृतीय चरण को एवं तृतीय चरणस्थ वेधक ग्रह वेध्य नक्षत्र के द्वितीय चरण को विद्ध करता है। *युतिदोष का परिहार-* नक्षत्र के साथ सौम्यग्रह की युति का दोष सामान्य माना जाता है, लेकिन क्रूरग्रह की युति बहुत ही अशुभ फलप्रद मानी जाती है। यदि चन्द्रमा अपनी उच्च राशि (वृष) या मित्रराशि (सिंह, मिथुन, कन्या) में हो तो क्रूरग्रह की युति का दोष भी समाप्त हो जाता है। *कर्त्तरीदोष का परिहार-* मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध स्थित हो तो कर्त्तरीदोष का परिहार हो जाता है। कर्त्तरी बनाने वाले ग्रह यदि शत्रुराशि या अपनी नीचराशि में हों या दोनों अस्त हों, तो भी लग्न का कर्त्तरीदोष नहीं रहता। यदि मुहूर्त्तलग्न से द्वितीय भाव में कोई शुभ ग्रह बैठा हो अथवा बारहवें भाव में गुरु बैठा हो तो भी कर्त्तरीदोष निष्प्रभाव हो जाता है और ऐसा कर्त्तरीदोष विवाहमुहूर्त्त को अग्राह्य नहीं बना सकता। चन्द्र-कर्त्तरीदोष का परिहार भी चन्द्रमा के स्थान को लग्न समझकर, इन्हीं योगों से देखना चाहिए। *दग्धातिथि का परिहार-* मुहूर्त्त के लग्न से सप्तमरहित केन्द्र या त्रिकोण में गुरु, शुक्र या बुध बैठा हो, तो दग्धातिथि का परिहार हो जाता है, इस परिहार की स्थिति में दग्धातिथि में विवाहलग्न शुद्ध माना जाता है। *षष्ठाष्टमस्थ चन्द्र का परिहार-* नीचराशि (वृश्चिक) में चन्द्रमा हो तो वह लग्न से छठे या आठवें भाव में होने पर भी दोषकारक नहीं होता। *अष्टमस्थ मंगल का परिहार-* मंगल अस्त (अदृश्य) हो या वह नीचराशि (कर्क) अथवा शत्रु राशि (मिथुन या कन्या) में हो, तो लग्न से अष्टमस्थ होने पर भी वह दोषकारक नहीं होता। *षष्ठाष्टमस्थ शुक्र का परिहार-* शुक्र यदि नीचराशि (कन्या) अथवा शत्रुराशि (कर्क या सिंह) में हो, तो वह षष्ठाष्टमस्थ होने पर भी अशुभ फल नहीं करता।

ध्यान रहे- ये लग्नभंग के सामान्य (अपूर्ण) परिहार हैं, जिन्हें पंचांगकार परम्परया प्रयोग में ला रहे हैं। लेकिन इनसे अतिरिक्त अन्य लग्नभंग के विशेष परिहार भी हैं, जिनका हमने सं. २०७० वि. से लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक " मुहूर्त्त गजानन " में दिया "लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)" लेख पढ़िए।

लग्नशोधन में प्रयोग करना प्रारम्भ किया है। स्पष्टता के लिए मेरी पुस्तक “ मुहूर्त्त गजानन ” में दिया “लग्नभंग-परिहार (एक संशोधन)” लेख पढ़िए।

मुण्डनादि अन्य मुहूर्त्त (सं.२०७३ वि.) (सर्वत्र भा.स्टैं.टा. दिया गया है।)

(मुण्डन, उपनयन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश आदि के शुद्ध मुहूर्त्त प्रतिवर्ष इतने कम क्यों होते हैं ?)

मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में हम भद्रा, क्रूरग्रहयुति, क्रूरग्रहवेध, क्रान्तिसाम्य, कलशचक्रदोष, वृषवास्तुचक्रदोष, व्यतीपात, अतिगण्ड आदि योग तथा अन्य मुहूर्तशास्त्रोक्त निरवशेष निषिद्ध पदार्थों का पूरी तरह विचार कर शुद्धकाल का निर्णय करते हैं, जिससे कई बार तो इनके शुद्ध मुहूर्त वर्ष में असह्यरूप से कम (एक–एक या दो–दो भी) हो जाते हैं। सर्वथा दोषमुक्त शास्त्रीय मुहूर्तसाधन के आग्रह के कारण इन मुहूर्तों की संख्या हमारे पंचांग में अन्य पंचांगों से, जिनके सम्पादक इन विचार्य विषयों की उपेक्षा करके मुहूर्तों की संख्या बढाने की शास्त्रविरुद्ध प्रवृत्ति लिए हैं; काफी कम होती है। विश्वास रखिए, हमारे 'मार्त्तण्ड पंचांग' में दिए गए शुद्ध मुहूर्तों के अतिरिक्त जो मुहूर्त्त अन्य पंचांगों में आपको मिलते हैं; उनकी मुहूर्तशास्त्रीय शुद्धता वस्तुतः विचारणीय है। ध्यान रहे– मुण्डनादि इन मुहूर्तों के शोधन में हमने केवल शुद्धकाल का निर्णय किया है, शुद्ध लग्नों का नहीं। अतः दैवज्ञों को चाहिए कि– आवश्यक मुहूर्त्त के लिए दिए गए शुद्धकाल की अवधि में गुरु, शुक्र, बुध, सूर्य एवम् लग्नेश आदि की शुभस्थानों में स्थिति को ध्यान मे रखते हुए बलवान् लग्न का वे स्वयं निर्णय करें। यदि शुद्ध काल के समय 'अभिजित्–मुहूर्त्त' भी उपलबध हो तो शुभकार्य के लिए लग्न के स्थान पर 'अभिजित्–मुहूर्त्त' का प्रयोग करना चाहिए; क्योंकि 'अभिजित्–मुहूर्त्त' में बलवान् लग्न की शक्ति मानी गई है।

मुण्डन–मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

तिथि–वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ शु.	७	शु.	फर. ३	अश्वि.	
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	हस्त	११/३१ तक,(शुक्रवेध),
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	११/३१ बाद,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	७/२३ तक,
फाल्गु. कृ.	६	चं.	फर. २०	ज्ये.	१६/४१ बाद,
फाल्गु. कृ.	१३	शु.	फर. २४	श्रव.	
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	१५/१७ तक,

मुण्डन में विशेषः– किसी देवस्थल/तीर्थ पर बिना मुहूर्त्त के भी मुण्डन करवाना शुभ माना गया है। नवरात्रों के दिनों में भी शक्तिपीठों (देवी–मन्दिरों) के समीप मुण्डन करवाने की पंजाब, हिमाचल आदि प्रदेशों में पुरानी परम्परा है।

अक्षरारम्भ–मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

माघ कृ.	६	बु.	जन. १८	हस्त	१२/४६ तक,
माघ कृ.	११	चं.	जन. २३	अनु.	१३/५६ तक,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	
माघ शु.	१२	बु.	फर. ८	आर्द्रा	१२/१३ तक,

अक्षरारम्भ–मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

तिथि–वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	हस्त	११/३१ तक,(शुक्रवेध),
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	११/३१ बाद,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	१३/४१ तक,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	१५/१७ तक,

विद्यारम्भ–मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

माघ कृ.	६	बु.	जन. १८	हस्त	१२/४६ तक,
माघ शु.	२	र.	जन. २६	धनि.	१३/०३ बाद,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	
माघ शु.	१२	बु.	फर. ८	आर्द्रा	११/३० तक,
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	हस्त	११/३१ तक,(शुक्रवेध),
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	११/३१ बाद,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	१३/४१ तक,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	

अक्षरारम्भ और विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोगः– बच्चे को वर्णमाला का ज्ञान करवाने के लिए अक्षरारम्भ के और संस्कृत, अंग्रेजी, गणित, रसायन आदि विषयों का अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए विद्यारम्भ के मुहूर्त्तों का प्रयोग करना चाहिए।

उपनयन–मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

तिथि–वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ.	५	मं.	जन. १७	उ.फा.	
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	रोहि.	
फाल्गु. कृ.	३	चं.	फर. १३	पू.फा.	८/५६ तक,
फाल्गु. कृ.	३	चं.	फर. १३	उ.फा.	८/५६ बाद,
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	हस्त	११/३१ तक,
फाल्गु. शु.	२	मं.	फर. २८	उ.भा.	

द्विरागमन–मुहूर्त्त (सन् २०१६–१७ ई.)

मार्ग. शु.	२	गु.	दिसं. १	मूल	
मार्ग. शु.	६	चं.	दिसं. ५	श्रव.	
मार्ग. शु.	१०	शु.	दिसं. ९	उ.भा.	२०/३० से २२/२८ तक,
मार्ग. शु.	१३	चं.	दिसं. १२	रोहि.	२४/३६ बाद,
फाल्गु. शु.	१	चं.	फर. २७	उ.भा.	२६/५६ बाद,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	१५/१७ तक,

द्विरागमन में विशेष– विवाह के दिन से 16 दिन के भीतर द्विरागमन के इन मुहूर्त्तों के बिना भी द्विरागमन हो सकता है। यदि नव–विवाहिता वधू का द्विरागमन दिवाली के दिन प्रदोष के समय दीपकों के प्रकाश में हो तो अच्छा माना जाता है।

गृहारम्भ-मुहूर्त्त (सन् २०१६-१७ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. कृ.	१	बु.	जुला. २०	उ.षा.	१६/०४ बाद,
*श्राव. कृ.	१०	शु.	जुला. २९	रोहि.	१०/४० बाद,
*श्राव. शु.	५	चं.	अग. ८	चित्रा	६/०१ बाद,
*कार्ति. कृ.	१२	गु.	अक्तू. २७	उ.फा.	
*कार्ति. शु.	३	बु.	नवं. २	अनु.	
कार्ति. शु.	११	शु.	नवं. ११	उ.भा.	६/१३ बाद, (गुरुवेध),
मार्ग. कृ.	२	बु.	नवं. १६	रोहि.	१०/१७ तक,
मार्ग. कृ.	२	बु.	नवं. १६	मृग.	१०/१७ बाद,
*मार्ग. कृ.	१०	बु.	नवं. २३	उ.फा.	१६/३१ तक,
*मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २४	उ.फा.	६/२० तक,
*मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २४	हस्त	६/२० बाद,
*मार्ग. कृ.	११	शु.	नवं. २५	हस्त	१२/०५ तक,
*मार्ग. कृ.	११	शु.	नवं. २५	चित्रा	१२/०५ बाद,
*मार्ग. कृ.	१२	श.	नवं. २६	चित्रा	१५/०३ तक,
मार्ग. शु.	११	श.	दिसं. १०	रेव.	८/२६ तक,
*माघ कृ.	६	बु.	जन. १८	हस्त	१२/४६ तक,
*माघ कृ.	७	गु.	जन. १९	चित्रा	(शुक्रवेध),
*माघ कृ.	११	चं.	जन. २३	अनु.	१३/५६ तक,
*माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	रोहि.	१४/५३ तक,
*फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	

* तारा अंकित मुहूर्त्त भी सभी मुहूर्त्तदोषों से मुक्त हैं। इनमें केवल वृष–वास्तुचक्रशुद्धि नहीं है।

नूतन गृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ.	११	चं.	जन. २३	अनु.	१३/५६ तक,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	रोहि.	१४/५३ तक,
*फाल्गु. कृ.	३	चं.	फर. १३	उ.फा.	८/५६ से १६/४६ तक,
*फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	११/३१ से १८/४६ तक,
*फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	१३/४१ तक,
फाल्गु. कृ.	७	श.	फर. १८	अनु.	१६/१० बाद,
फाल्गु. कृ.	१२	गु.	फर. २३	उ.षा.	२२/०२ बाद,
*फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	१५/१७ तक,

* तारा अंकित मुहूर्त्तों में केवल कलशचक्रशुद्धि नहीं है, अन्यथा ये निर्दोष हैं।

पुरातनगृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
वैशा. कृ.	१	श.	अप्रै. २३	स्वा.	१०/१७ तक,
वैशा. कृ.	७	शु.	अप्रै. २९	उ.षा.	६/०७ बाद,
वैशा. कृ.	१०	चं.	मई २	शत.	६/२६ तक, १७/२६ से २०/०६ तक,
वैशा. कृ.	१२	बु.	मई ४	उ.भा.	१६/०० तक,
वैशा. कृ.	१३	गु.	मई ५	रेव.	८/२६ तक,
वैशा. शु.	३	चं.	मई ९	मृग.	१४/५२ तक,
वैशा. शु.	६	गु.	मई १२	पुष्य	२२/४४ तक,
वैशा. शु.	१०	चं.	मई १६	उ.फा.	
ज्ये. कृ.	४	गु.	मई २६	उ.षा.	७/२० बाद,
ज्ये. कृ.	६	श.	मई २८	धनि.	१८/४३ से २१/२५ तक,
ज्ये. कृ.	११	बु.	जून १	रेव.	२२/३८ तक,
ज्ये. शु.	१	चं.	जून ६	मृग.	१०/२८ तक,
ज्ये. शु.	५	गु.	जून ९	पुष्य	७/२० तक,

पुरातनगृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
ज्ये. शु.	११	गु.	जून १६	स्वा.	२३/१६ तक,
ज्ये. शु.	१३	श.	जून १८	अनु.	१४/०३ तक,
श्राव. कृ.	१	बु.	जुला. २०	उ.षा.	१६/०४ तक,
श्राव. कृ.	२	गु.	जुला. २१	धनि.	१५/५४ बाद,
श्राव. कृ.	३	शु.	जुला. २२	धनि.	१३/५७ तक,
श्राव. कृ.	६	चं.	जुला. २५	उ.भा.	१२/२६ तक,
श्राव. कृ.	६	चं.	जुला. २५	रेव.	१२/२६ से १६/४५ तक,
श्राव. कृ.	१०	शु.	जुला. २९	रोहि.	१०/४७ बाद,
श्राव. कृ.	११	श.	जुला. ३०	मृग.	१०/४८ तक,
श्राव. शु.	५	चं.	अग. ८	चित्रा	६/०१ बाद,
श्राव. शु.	७	बु.	अग. १०	स्वा.	१०/३६ तक,
श्राव. शु.	९	शु.	अग. १२	अनु.	१५/०२ से २०/१७ तक,
श्राव. शु.	१५	गु.	अग. १८	धनि.	१६/५८ तक,
कार्ति. कृ.	४	बु.	अक्तू. १९	रोहि.	१९/३२ से २४/०८ तक,
कार्ति. कृ.	५	गु.	अक्तू. २०	मृग.	१६/३७ तक,
कार्ति. कृ.	१२	गु.	अक्तू. २७	उ.फा.	१९/५१ तक,
कार्ति. शु.	१	चं.	अक्तू. ३१	स्वा.	१२/०० तक,
कार्ति. शु.	३	बु.	नवं. २	अनु.	१७/५७ तक,
कार्ति. शु.	९	बु.	नवं. ९	शत.	१२/४५ से २१/५१ तक,
कार्ति. शु.	११	शु.	नवं. ११	उ.भा.	६/१३ से २५/०० तक,
कार्ति. शु.	१३	श.	नवं. १२	रेव.	२२/३० तक,
मार्ग. कृ.	२	बु.	नवं. १६	रोहि.	१०/१७ तक,
मार्ग. कृ.	६	श.	नवं. १९	पुष्य	
मार्ग. कृ.	१०	बु.	नवं. २३	उ.फा.	१६/३१ तक,
मार्ग. कृ.	११	शु.	नवं. २५	चित्रा	१२/०५ बाद,
मार्ग. कृ.	१२	श.	नवं. २६	चित्रा	१५/०३ तक,

पुरातनगृहप्रवेश-मुहूर्त्त (सन् २०१६-१७ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
मार्ग. शु.	६	चं.	दिसं. ५	घनि.	१०/३२ बाद,
मार्ग. शु.	११	श.	दिसं. १०	रेव.	८/२६ तक,
माघ कृ.	७	गु.	जन. १६	चित्रा	
माघ कृ.	८	शु.	जन. २०	स्वा.	१२/३४ तक,
माघ कृ.	११	चं.	जन. २३	अनु.	१३/५६ तक,
माघ शु.	३	चं.	जन. ३०	शत.	११/३१ तक,
माघ शु.	५	बु.	फर. १	उ.भा.	२२/०६ तक,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	२१/११ तक,
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	रोहि.	१४/५३ तक,
फाल्गु. कृ.	३	चं.	फर. १३	उ.फा.	८/५६ से १६/४६ तक,
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	११/३१ से १८/५६ तक,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	१३/४१ तक,
फाल्गु. कृ.	६	शु.	फर. १७	स्वा.	६/२५ तक,
फाल्गु. कृ.	१२	गु.	फर. २३	उ.षा.	२२/०२ बाद,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	१५/१७ तक,
फाल्गु. शु.	१२	गु.	मार्च ६	पुष्य	८/५६ तक, ११/२३ से १७/१२ तक,

सर्वदेव प्रतिष्ठा-मुहूर्त्त (सन् २०१७ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
माघ कृ.	६	बु.	जन. १८	हस्त	१२/४६ तक,
माघ कृ.	११	चं.	जन. २३	अनु.	१३/५६ तक,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	
माघ शु.	७	शु.	फर. ३	अश्वि.	
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	रोहि.	
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	हस्त	११/३१ तक, (शुक्रवेध),
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	
फाल्गु. कृ.	८	र.	फर. १९	अनु.	१४/१८ तक,
फाल्गु. कृ.	१३	शु.	फर. २४	श्रव.	
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	

तामसदेव-प्रतिष्ठामुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. शु.	१३	श.	नवं. १२	रेव.	
मार्ग. कृ.	२	बु.	नवं. १६	रोहि.	१०/१७ तक,
मार्ग. कृ.	५	शु.	नवं. १८	पुन.	
मार्ग. कृ.	१०	बु.	नवं. २३	उ.फा.	
मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २४	उ.फा.	६/२० तक,
मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २४	हस्त	६/२० बाद,
मार्ग. कृ.	११	शु.	नवं. २५	हस्त	१२/०५ तक,
मार्ग. कृ.	१२	श.	नवं. २६	चित्रा	
मार्ग. शु.	५	र.	दिसं. ४	उ.षा.	६/०७ तक,
मार्ग. शु.	५	र.	दिसं. ४	श्रव.	६/०७ बाद,
मार्ग. शु.	६	चं.	दिसं. ५	श्रव.	१०/३२ तक,
मार्ग. शु.	११	श.	दिसं. १०	रेव.	८/२६ तक,

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१६ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
श्राव. कृ.	१	बु.	जुला. २०	उ.षा.	१६/०४ तक,
श्राव. कृ.	५	र.	जुला. २४	उ.भा.	१३/३७ बाद,
श्राव. कृ.	६	चं.	जुला. २५	उ.भा.	१२/२६ से १६/४५ तक,
श्राव. कृ.	८	बु.	जुला. २७	अश्वि.	६/४० तक,
श्राव. शु.	५	र.	अग. ७	उ.फा.	६/२६ तक,
श्राव. शु.	५	र.	अग. ७	हस्त	६/२६ बाद,
श्राव. शु.	५	चं.	अग. ८	हस्त	६/०१ तक,
श्राव. शु.	५	चं.	अग. ८	चित्रा	६/०१ बाद,
भाद्र. कृ.	५	चं.	अग. २२	रेव.	१६/५८ तक
भाद्र. कृ.	५	चं.	अग. २२	अश्वि.	१६/५८ बाद,
भाद्र. कृ.	८	गु.	अग. २५	रोहि.	१२/०५ से २०/०८ तक,
भाद्र. कृ.	१२	चं.	अग. २९	पुष्य	६/०३ बाद,
भाद्र. शु.	१	शु.	सितं. २	उ.फा.	१२/२६ बाद,
भाद्र. शु.	२	श.	सितं. ३	उ.फा.	१४/२७ तक,
भाद्र. शु.	२	श.	सितं. ३	हस्त	१४/२७ बाद,
भाद्र. शु.	३	र.	सितं. ४	हस्त	१६/५३ तक

विपणि-मुहूर्त्त (सन् २०१६-१७ ई.)

तिथि-वार			तारीख	नक्षत्र	शुद्धकाल (भा.स्टैं.टा.)
कार्त्ति. कृ.	५	गु.	अक्तू. २०	मृग.	१६/३७ बाद,
कार्त्ति. कृ.	८	र.	अक्तू. २३	पुष्य	१२/२८ तक,
कार्त्ति. कृ.	१२	गु.	अक्तू. २७	उ.फा.	
कार्त्ति. शु.	३	बु.	नवं. २	अनु.	१७/५७ तक,
कार्त्ति. शु.	११	शु.	नवं. ११	उ.भा.	६/१३ से १६/१० तक,
कार्त्ति. शु.	१३	श.	नवं. १२	रेव.	
मार्ग. कृ.	२	बु.	नवं. १६	रोहि.	१०/१७ तक,
मार्ग. कृ.	२	बु.	नवं. १६	मृग.	१०/१७ बाद,
मार्ग. कृ.	६	श.	नवं. १९	पुष्य	
मार्ग. कृ.	१०	बु.	नवं. २३	उ.फा.	१६/३१ तक,
मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २४	उ.फा.	६/२० तक,
मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २४	हस्त	६/२० बाद,
मार्ग. कृ.	११	शु.	नवं. २५	हस्त	१२/०५ तक,
मार्ग. कृ.	११	गु.	नवं. २५	चित्रा	१२/०५ बाद,
मार्ग. कृ.	१२	श.	नवं. २७	चित्रा	१५/०३ तक,
मार्ग. शु.	५	र.	दिसं. ४	उ.षा.	६/०७ तक,
मार्ग. शु.	११	श.	दिसं. १०	रेव.	८/२६ तक,
माघ कृ.	६	बु.	जन. १८	हस्त	१२/४६ तक,
माघ कृ.	७	गु.	जन. १९	चित्रा	
माघ कृ.	११	चं.	जन. २३	अनु.	१३/५६ तक,
माघ शु.	६	गु.	फर. २	रेव.	
माघ शु.	७	शु.	फर. ३	अश्वि.	
माघ शु.	१०	चं.	फर. ६	रोहि.	१४/५३ तक,
फाल्गु. कृ.	३	चं.	फर. १३	उ.फा.	८/५६ से १६/४६ तक,
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	हस्त	११/३१ तक,
फाल्गु. कृ.	५	बु.	फर. १५	चित्रा	११/३१ बाद,
फाल्गु. कृ.	५	गु.	फर. १६	चित्रा	१३/४१ तक,
फाल्गु. कृ.	८	र.	फर. १९	अनु.	२२/०६ तक,
फाल्गु. शु.	३	बु.	मार्च १	रेव.	
फाल्गु. शु.	४	गु.	मार्च २	अश्वि.	१४/४३ बाद,

सर्वार्थसिद्धि आदि योग (सं. २०७३ वि.) (भा. स्टैं. टा.)

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हम पाठकों की सुविधा के लिए सर्वार्थसिद्धि, अमृतसिद्धि, सिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर एवं रवि – इन तिथि–भ–वार से बनने वाले एवं सूर्य और चन्द्र के नक्षत्र–संयोग से उत्पन्न सुयोगों के शास्त्रोक्त काल का सूक्ष्म निर्णय करते हैं।

सर्वार्थसिद्धि एवं अमृतसिद्धि योग– जैसा कि– इनके नाम से ही स्पष्ट है, इन योगों के समय कोई भी शुभ कार्य किया जाए तो वह सफल होता है। यात्रा, गृहप्रवेश, नूतन–कार्यारम्भ आदि सभी कार्यों के लिए शीघ्रता या अन्य किसी अपरिहार्य कारणवश यदि व्यतीपात, वैधृति, गुरु–शुक्रास्त, अधिकमास एवं वेध आदि का विचार संभव न हो तो सर्वार्थसिद्धि आदि इन योगों का आश्रय लेना चाहिए। यहां **ब्रैकेटों (Brackets) में दिए गए अमृतसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष फलदायक माने गए हैं।** ये योग (अमृतसिद्धि संज्ञक सर्वार्थ सिद्धि-योग) जिन–जिन वारों में घटित हुए हैं, उनका निर्देश भी हमने यहां साथ–साथ कर दिया है। **ध्यान रहे– गुरुवार** वाले अमृतसिद्धि योग (जिन्हें गुरुपुष्यामृत योग भी कहा जाता है) के समय विवाह, **मंगलवार** वाले अमृतसिद्धि योग के समय नए घर में प्रवेश तथा **शनिवार** वाले अमृतसिद्धि योग के समय यात्रा नहीं करनी चाहिए। शेष सभी कार्यों के लिए इन्हें निःसंकोच प्रयोग में लाइए।

रवियोग– रवियोग भी सर्वार्थसिद्धि योगों की भान्ति ही सभी कार्यों के लिए शुभ माने जाते हैं। रवियोग सभी बुरे योगों को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति रखता है– " **कुयोगविध्वंस–कराः शुभेषु।**"

सिद्धियोग– सिद्धियोग भी **सर्वार्थसिद्धि** और **रवियोगों** की भान्ति ही प्रत्येक कार्य के लिए महत्त्वशाली माने गए हैं। सिद्धियोग में **यमघण्ट, विष** आदि कुयोगों का प्रभाव प्रायः समाप्त हो जाता है– ऐसा शास्त्रनिर्देश है।

त्रिपुष्करयोग– मुहूर्त्तविदों का कथन है कि–इस योग में सम्पन्न किया गया या घटित कोई शुभकार्य अथवा कोई शुभाशुभ घटना कालान्तर में त्रिगुणित हो जाती है। इसमें बहुमूल्य वस्तुओं (आभूषण, भूमि, गाडी आदि) का क्रय (खरीदना) त्रिगुणकारी माना जाता है। **द्विपुष्करयोग**–ये योग भी त्रिपुष्करयोगों की ही भान्ति शुभाशुभ सभी घटनाओं को द्विगुणित करते हैं। त्रिपुष्कर एवं द्विपुष्कर–इन सुयोगों का सत्यापक शास्त्रवचन इस तरह है– " **त्रिपुष्करस्त्रिगुणदो द्विगुणो यमलांघ्रिभे।**"

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.
अप्रै. ८	सू. उ.	अप्रै. ८	२३ २२	अप्रै. २५	सू. उ.	अप्रै. २५	१५ ३६	मई २७	सू. उ.	मई २८	३ ५८	(जुला. २	सू. उ.	जुला. २	२१ ५७)श.
अप्रै. ११	सू. उ.	अप्रै. ११	१६ ११	अप्रै. २६	२१ ४८	अप्रै. ३०	२१ ५४	मई ३१	सू. उ.	जून १	० ४१	जुला. ८	१८ ११	जुला. ९	सू. उ.
(अप्रै. ११	१६ १२	अप्रै. १२	० २७)चं.	मई ३	१८ २१	मई ४	सू. उ.	जून २	सू. उ.	जून २	२० १६	जुला. १०	सू. उ.	जुला. १०	२२ ०६
अप्रै. १२	० २८	अप्रै. १२	सू. उ.	मई ५	सू. उ.	मई ६	१० २२	(जून ४	१५ ०६	जून ५	सू. उ.)श.	(जुला. १०	२२ १०	जुला. ११	सू. उ.)र.
अप्रै. १४	सू. उ.	अप्रै. १४	१४ ३६	(मई ८	४ ३६	मई ८	सू. उ.)श.	(जून ६	सू. उ.	जून ६	१० २६)चं.	जुला. १७	१३ ४७	जुला. १८	सू. उ.
(अप्रै. १४	१४ ३७	अप्रै. १४	२१ २६)गु.	(मई ९	सू. उ.	मई १०	० ०६)चं.	(जून ९	सू. उ.	जून ९	७ ३०)गु.	जुला. २४	१३ ३८	जुला. २५	सू. उ.
अप्रै. १४	२१ ३०	अप्रै. १५	सू. उ.	(मई १२	सू. उ.	मई १२	२२ ४४)गु.	जून १२	११ ३७	जून १३	सू. उ.	जुला. २६	११ ०७	जुला. २६	१७ ३६
अप्रै. २०	सू. उ.	अप्रै. २१	४ १४	मई १६	० २५	मई १६	सू. उ.	जून २४	सू. उ.	जून २४	६ २५	(जुला. २६	१७ ३७	जुला. २७	सू. उ.)मं.
अप्रै. २३	सू. उ.	अप्रै. २३	१० १७	मई १८	सू. उ.	मई १८	१० २५	जून २८	सू. उ.	जून २८	७ ०४	अग. २	२ १०	अग. २	सू. उ.

सर्वार्थसिद्धि योग (सन् २०१६-१७ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त		प्रारम्भ		समाप्त	
२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६-१७ ई.	घं. मि.	२०१६-१७ ई.	घं. मि.
अग. ३	१ ५३	अग. ३	सू. उ.	नवं. ७	सू. उ.	नवं. ८	४ १७
अग. ५	सू. उ.	अग. ६	४ २६	(नवं. १२	१ ०१	नवं. १२	सू. उ.)शु.
अग. ७	सू. उ.	अग. ८	सू. उ.	नवं. १३	सू. उ.	नवं. १३	१९ ३६
अग. ११	१७ ४५	अग. १२	सू. उ.	नवं. १५	सू. उ.	नवं. १५	१३ १७
अग. १४	सू. उ.	अग. १४	२३ ४६	नवं. १६	सू. उ.	नवं. १७	सू. उ.
अग. २१	सू. उ.	अग. २१	१८ ४५	नवं. १८	५ ३८	नवं. १९	४ १६
(अग. २३	सू. उ.	अग. २३	१५ १२)मं.	नवं. २६	१५ ०४	नवं. २७	सू. उ.
अग. २४	१३ ३४	अग. २५	सू. उ.	नवं. २८	२१ ०५	नवं. २९	सू. उ.
अग. २९	९ ०४	अग. ३०	सू. उ.	दिसं. ४	सू. उ.	दिसं. ४	९ ०७
अग. ३०	९ १३	अग. ३१	सू. उ.	दिसं. ५	सू. उ.	दिसं. ५	१० ३२
सितं. २	सू. उ.	सितं. २	१२ २६	दिसं. ९	१० १३	दिसं. ९	२२ २८
(सितं. ४	सू. उ.	सितं. ४	१६ ५३)र.	(दिसं. ९	२२ २९	दिसं. १०	सू. उ.)शु.
(सितं. ८	१ ३८	सितं. ८	सू. उ.)बु.	दिसं. १३	० ४०	दिसं. १३	सू. उ.
सितं. ८	सू. उ.	सितं. ९	४ २६	दिसं. १५	१६ २३	दिसं. १६	१४ २५
सितं. ११	सू. उ.	सितं. ११	८ ४४	दिसं. २१	१६ १२	दिसं. २२	सू. उ.
सितं. १९	० ५६	सितं. १९	सू. उ.	दिसं. २४	सू. उ.	दिसं. २५	० ३६
सितं. २०	२० ११	सितं. २२	सू. उ.	दिसं. २६	सू. उ.	दिसं. २७	६ २७
सितं. २५	१४ ३८	सितं. २६	१५ ०३	दिसं. ३१	१४ ४८	जन. १	सू. उ.
सितं. २७	सू. उ.	सितं. २७	१६ १०	जन. ५	१६ ४६	जन. ६	सू. उ.
(अक्तू. ५	८ ४३	अक्तू. ६	सू. उ.)बु.	(जन. ६	सू. उ.	जन. ६	१५ ४५)शु.
अक्तू. ९	१८ ३५	अक्तू. १०	सू. उ.	जन. ९	१० १७	जन. १०	सू. उ.
अक्तू. १०	१९ ४१	अक्तू. ११	सू. उ.	जन. १२	सू. उ.	जन. १३	१ १९
अक्तू. १६	११ १५	अक्तू. १७	सू. उ.	(जन. १३	१ २०	जन. १३	सू. उ.)गु.
अक्तू. १८	सू. उ.	अक्तू. १९	२ ३२	जन. १८	सू. उ.	जन. १९	२ ३८
अक्तू. १९	सू. उ.	अक्तू. २०	० ०८	जन. २१	सू. उ.	जन. २१	८ ०३
अक्तू. २१	२१ ००	अक्तू. २२	सू. उ.	जन. २३	सू. उ.	जन. २३	१३ ५६
अक्त. २३	सू. उ.	अक्त. २३	२० ३८	जन. २७	२१ ५०	जन. २८	२२ ३९
(नवं. २	सू. उ.	नवं. २	१७ ५७)बु.	जन. ३१	२२ ४५	फर. १	सू. उ.
नवं. ६	सू. उ.	नवं. ७	३ १४	फर. २	सू. उ.	फर. ३	२० ०१

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१७ ई.	घं. मि.	२०१७ ई.	घं. मि.
फर. ६	सू. उ.	फर. ६	१५ २९
(फर. ६	१५ ३०	फर. ७	सू. उ.)चं.
फर. ९	सू. उ.	फर. ९	१० ४८
(फर. ९	१० ४९	फर. १०	सू. उ.)गु.
फर. १५	सू. उ.	फर. १५	११ ३१
फर. २४	सू. उ.	फर. २५	७ १०
फर. २८	सू. उ.	मार्च १	४ ४३
मार्च २	सू. उ.	मार्च ३	१ ४१
(मार्च ४	२२ ३०	मार्च ५	सू. उ.)श.
(मार्च ६	सू. उ.	मार्च ६	१९ ४२)चं.
(मार्च ९	सू. उ.	मार्च ९	१७ १२)गु.
मार्च १२	१७ ४२	मार्च १३	सू. उ.
मार्च २४	सू. उ.	मार्च २४	१६ ४५
मार्च २८	सू. उ.	मार्च २८	१३ ४०

रवि योग (सन् २०१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

अप्रै. ९	२० ३५	अप्रै. १०	१८ ०७
अप्रै. ११	१६ १२	अप्रै. १२	१४ ५४
अप्रै. १५	१५ ३७	अप्रै. १७	१९ ३२
अप्रै. २०	१ ११	अप्रै. २१	४ १४
अप्रै. २८	२१ ०३	अप्रै. २९	२१ ४७
मई ९	२ ०७	मई १०	० ०९
मई १०	२२ ५३	मई ११	५ ४८
मई ११	२२ २४	मई १२	२२ ४४
मई १५	१ ५३	मई १७	७ १९
मई १९	१३ ३२	मई २०	१६ २८
मई २८	३ ५९	मई २९	३ ५६
जून ७	८ ४७	जून ७	२३ ५६
जून ८	७ ४६	जून ९	७ ३०
जून १०	८ ०६	जून ११	९ २९

रवि योग (सन् २०१६ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ		समाप्त	
२०१६ ई.	घं. मि.	२०१६ ई.	घं. मि.
जून १३	१४ १७	जून १५	२० १९
जून १८	१ ५७	जून १९	४ १४
जून २६	८ ५७	जून २७	८ १०
जुला. ७	१७ १३	जुला. ८	१८ १०
जुला. ९	१९ ५२	जुला. १०	२२ ०९
जुला. १३	३ ५५	जुला. १५	९ ३६
जुला. १७	१३ ४७	जुला. १८	१५ ०३
जुला. २५	१२ २७	जुला. २६	११ ०६
अग. ६	४ २७	अग. ७	६ २९
अग. ८	९ ०२	अग. ९	११ ५३
अग. ११	१७ ४५	अग. १३	२२ १९
अग. १६	० ३५	अग. १६	१८ ३९
अग. १७	० ४४	अग. १८	० १७
अग. २३	१५ १३	अग. २४	१३ ३३
सितं. ४	१६ ५४	सितं. ५	१९ ३९
सितं. ६	२२ ३९	सितं. ८	१ ३७
सितं. १०	६ ५२	सितं. १२	९ ५६
सितं. १३	८ २८	सितं. १३	१० २४
सितं. १५	९ ११	सितं. १६	९ ३८
सितं. २१	१८ १०	सितं. २२	१६ ३१
अक्तू. ४	५ ४२	अक्तू. ५	८ ४२
अक्तू. ६	११ ४१	अक्तू. ७	१४ २५
अक्तू. ९	१८ ३५	अक्तू. १०	१२ ५४
अक्तू. १०	१९ ४१	अक्तू. १२	१९ ३२
अक्तू. १४	१६ २६	अक्तू. १५	१४ ०१
अक्तू. २०	२२ १५	अक्तू. २१	२० ५९
नवं. २	१७ ५८	नवं. ३	२० ४६
नवं. ४	२३ २१	नवं. ६	१ ३३
नवं. ९	४ ३७	नवं. ११	२ ५५

रवि योग (सन् २०१६-१७) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१६-१७ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त २०१६-१७ ई.	समाप्त घं. मि.
नवं. १२	२२ ३१	नवं. १३	१९ ३६
नवं. १९	४ १७	नवं. २०	२ १७
नवं. २०	३ ४५	नवं. २१	४ ०२
दिसं. २	५ ०६	दिसं. २	१७ ५१
दिसं. ३	७ १७	दिसं. ४	९ ०७
दिसं. ५	१० ३३	दिसं. ६	११ २५
दिसं. ८	११ १८	दिसं. १०	८ २९
दिसं. १२	३ ३४	दिसं. १३	० ३९
दिसं. १९	१३ ०३	दिसं. २०	१४ १५
जन. १	१६ ०२	जन. २	१६ ५१
जन. ३	१७ १८	जन. ४	१७ १५
जन. ६	१५ ४६	जन. ८	१२ २६
जन. १०	७ ५७	जन. ११	१ ०४
जन. ११	५ ३३	जन. १२	३ १७
जन. १८	० ३८	जन. १९	२ ३८
जन. ३०	२३ ०५	जन. ३१	२२ ४४
फर. १	२२ ०७	फर. २	२१ ११
फर. ४	१८ ४०	फर. ६	६ ३१
फर. ६	१५ ३०	फर. ७	१३ ४९
फर. ९	१० ४९	फर. १०	९ ३९
फर. १६	१३ ४२	फर. १७	१६ १७
मार्च १	४ ४४	मार्च २	३ १६
मार्च ३	१ ४२	मार्च ४	० ०४
मार्च ६	१९ ४३	मार्च ८	१७ ४५
मार्च १०	१६ ५९	मार्च ११	१७ ०७
मार्च १९	६ १५	मार्च २०	९ ०९

सिद्धियोग (सन् २०१६-१७) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१६-१७ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त २०१६-१७ ई.	समाप्त घं. मि.
अप्रै. १४	सू. उ.	अप्रै. १४	१४ ३६
अप्रै. २३	सू. उ.	अप्रै. २३	१० १७
मई ३	१८ २१	मई ४	सू. उ.
मई ३१	सू. उ.	जून १	० ४१
जून २८	सू. उ.	जून २८	७ ०४
जुला. ८	१८ ११	जुला. ९	सू. उ.
जुला. १७	१३ ४७	जुला. १८	सू. उ.
अग. ५	सू. उ.	अग. ६	४ २६
अग. १४	सू. उ.	अग. १४	२३ ४६
अग. २४	१३ ३४	अग. २५	सू. उ.
सितं. २	सू. उ.	सितं. २	१२ २६
सितं. ११	सू. उ.	सितं. ११	८ ४४
सितं. २१	सू. उ.	सितं. २१	१८ ०९
अक्तू. १०	१९ ४१	अक्तू. ११	सू. उ.
नवं. ७	सू. उ.	नवं. ८	४ १७
नवं. १८	५ ३८	नवं. १८	सू. उ.
नवं. २६	१५ ०४	नवं. २७	सू. उ.
दिसं. ५	सू. उ.	दिसं. ५	१० ३२
दिसं. १५	१६ २३	दिसं. १६	सू. उ.
दिसं. २४	सू. उ.	दिसं. २५	० ३६
जन. १२	सू. उ.	जन. १३	१ १९
जन. २१	सू. उ.	जन. २१	८ ०३
जन. ३१	२२ ४५	फर. १	सू. उ.
फर. ९	सू. उ.	फर. ९	१० ४८
फर. २८	सू. उ.	मार्च १	४ ४३
मार्च २८	सू. उ.	मार्च २८	१३ ४०

द्विपुष्करयोग (२०१६-१७ ई.) (भा.स्टैं.टा.)

प्रारम्भ २०१६-१७ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त २०१६-१७ ई.	समाप्त घं. मि.
मई २८	७ ०९	मई २९	३ ५६
जुला. ३०	८ ३५	जुला. ३१	३ ५६
अग. ९	८ १५	अग. ९	११ ५३
अक्तू. २	७ ४६	अक्तू. ३	२ ४४
नवं. २६	सू. उ.	नवं. २६	१० ११
दिसं. ६	सू. उ.	दिसं. ६	११ २५
जन. २९	५ ४५	जन. २९	२३ ०३
मार्च १४	२० १३	मार्च १४	२१ ५०
मार्च २५	सू. उ.	मार्च २५	१३ ३४

त्रिपुष्कर योग (२०१६-१७ ई.) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१६-१७ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त २०१६-१७ ई.	समाप्त घं. मि.
अप्रै. २३	१३ २१	अप्रै. २४	१३ ०६
मई ३	१४ ५९	मई ३	१८ २०
मई ७	२१ १८	मई ८	४ ३५
जून २६	१४ २२	जून २७	सू. उ.
जुला. ५	१४ ३७	जुला. ५	१७ २८
जुला. १०	१५ ०९	जुला. १०	२२ ०९
अग. २०	सू. उ.	अग. २०	१० ४५
अग. २८	१५ २३	अग. २९	सू. उ.
सितं. १३	७ ५८	सितं. १३	१० २४
अक्तू.२२	सू. उ.	अक्तू.२२	१३ १०
नवं. १	सू. उ.	नवं. १	१५ ००
नवं. ६	१२ १७	नवं. ७	३ १४
दिसं. २०	१४ १६	दिसं. २०	१८ ४४
दिंसं. २५	३ ३३	दिसं. २६	३ ३७
जन. ९	५ ०४	जन. ९	सू. उ.
फर. १८	सू. उ.	फर. १८	११ ४८
मार्च ४	८ २४	मार्च ४	२२ २९

अमृतसिद्धि योग (सन् २०१६-१७) (भा. स्टैं. टा.)

प्रारम्भ २०१६-१७ ई.	प्रारम्भ घं. मि.	समाप्त २०१६-१७ ई.	समाप्त घं. मि.
(अप्रै. ११	१६ १२	अप्रै. १२	० २७)चं.
(अप्रै. १४	१४ ३७	अप्रै. १४	२१ २९)गु.
(मई ८	४ ३६	मई ८	सू. उ.)श.
(मई ९	सू. उ.	मई १०	० ०९)चं.
(मई १२	सू. उ.	मई १२	२२ ४४)गु.
(जून ४	१५ ०६	जून ५	सू. उ.)श.
(जून ६	सू. उ.	जून ६	१० २६)चं.
(जून ९	सू. उ.	जून ९	७ ३०)गु.
(जुला. २	सू. उ.	जुला. २	२१ ५७)श.
(जुला.१०	२२ १०	जुला. ११	सू. उ.)र.
(जुला.२६	१७ ३७	जुला. २७	सू. उ.)मं.
(अग. २३	सू. उ.	अग. २३	१५ १२)मं.
(सितं. ४	सू. उ.	सितं. ४	१६ ५३)र
(सितं. ८	१ ३८	सितं. ८	सू. उ.)बु.
(अक्तू. ५	८ ४३	अक्तू. ६	सू. उ.)बु.
(नवं. २	सू. उ	नवं. २	१७ ५७)बु.
(नवं. १२	१ ०१	नवं. १२	सू. उ.)शु.
(दिसं. ९	२२ २९	दिसं. १०	सू. उ.)शु.
(जन. ६	सू. उ.	जन. ६	१५ ४५)शु.
(जन. १३	१ २०	जन. १३	सू. उ.)गु.
(फर. ६	१५ ३०	फर. ७	सू. उ.)चं.
(फर. ९	१० ४९	फर. १०	सू. उ.)गु.
(मार्च ४	२२ ३०	मार्च ५	सू. उ.)श.
(मार्च ६	सू. उ.	मार्च ६	१९ ४२)चं.
(मार्च ९	सू. उ.	मार्च ९	१७ १२)गु.

श्रीमार्त्तण्ड पञ्चाङ्ग (सं. 2073 वि.) का 'शोधनिबन्ध विशेषांक'

(लेखक एवम् सम्पादक – प्रियव्रत शर्मा)

इस विशेषांक के विषय :–

विषय	पृष्ठ
(i) पूर्णिमा का महालय श्राद्ध किस दिन करें ?	275
(ii) सं. 2073 वि. में भारत में रसेश कहां, कौन–सा	277
(iii) जन्मकुण्डलियां कृत्रिम, लेकिन फलादेश यथार्थ	279
(iv) प्रणयविवाह का मुहूर्त्त	281
(v) दशाप्रारम्भ का सूक्ष्म काल	283
(vi) किस ग्रह का रत्न धारण करें ?	289
(vii) समस्याएं और समाधान	294

अभिजित् प्रकाशन ' की पुस्तकों के विज्ञापन इस पंचांग में कहां–कहां ?

पुस्तक	पृष्ठ	पुस्तक	पृष्ठ
(i) भारतीय लग्ननिर्णय	35, 186	(vi) शताब्दी विश्वकुण्डली दर्पण	299
(ii) लघु लग्नसारणी	297	(vii) व्रत–पर्व–विवेक	300
(iii) ग्रहोदयास्त–निर्णय	199	(viii) मुहूर्त्त–गजानन	टा. पृ. 4
(iv) गणक मार्त्तण्ड	298	(viii) ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन	276
(v) शताब्दी ग्रहभोगांश	299	(x) विश्व लग्नसारणी	274

ये पुस्तकें एवम् मुफ्त विस्तृत पुस्तक–सूचीपत्र (catalogue) मंगवाने के लिए हमें नीचे दिए पते पर लिखिए।

ग्राहकों के लिए हर्षप्रद समाचार

'अभिजित् प्रकाशन' की उपरोक्त इन सभी पुस्तकों में से Rs. 1000/– या इससे अधिक मूल्य की पुस्तकें मंगवाने वाले ग्राहक को पुस्तकमूल्य पर 20 प्रतिशत की छूट दी जाएगी और डाकखर्च भी माफ किया जाएगा।

पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य आप हमारे (अभिजित् प्रकाशन, पंचकूला– हरियाणा के) O.B.C. Bank (ORIENTAL BANK OF COMMERCE) के Account no. 09 88 11 31 00 13 92 (IFSC- ORBC- 0100988) में भी जमा करवा सकते हैं। हमारे इस बैंक खाता में पैसे जमा करवाने के बाद हमारे फोन नं: 090413 30161 पर हमें अपना नाम, पता, फोन नं. और पुस्तकें, जो आप मंगवाना चाहते हैं, SMS द्वारा सूचित करना न भूलें।

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर 6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, **Phone: 0172-2565 303**

पृष्ठ सं. 604
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज

विश्वलग्न सारणी

साईज़-24x18½ सें.मी.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

(i) 0° से 50° अक्षांश तक 30–30 और 50° से 66° अक्षांश तक 15–15 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर बनाई गईं 332 पृष्ठों पर फैली 166 लग्नसारणियां साम्पातिक काल के 1–1 मिनट के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्न बतलाती हैं। इनसे विश्व के किसी भी उत्तरी तथा दक्षिणी अक्षांश वाले नगर का इष्टकालिक राश्यादि लग्न स्पष्ट करने के लिए 2 मिनट से अधिक समय नहीं लगता है।

(ii) मेषादि बारह लग्नों का दैनिक प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल बतलाने वाली 25 पृष्ठों की विलक्षण सारणियां 5–5 अक्षांश–कलाओं के अन्तर पर 0° से 60° अक्षांशों के लिए बनाई गई हैं, जिनसे विश्व के किसी भी नगर में किसी भी दिन (तारीख को) किसी भी सायन एवं निरयण लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल (अभीष्ट देश के स्टैं. टा. में) मात्र मौखिक जोड़–घटाव द्वारा तुरन्त (लगभग एक मिनट में ही) जाना जा सकता है। क्योंकि, ये सारणियां लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल सेकण्ड तक सूक्ष्म बतलाती हैं, अतः सन्दिग्ध (सन्धिगत) लग्न का निर्णय इन सारणियों से वस्तुतः चुटकियों में अनायास ही हो जाता है। सन्देहास्पद लग्नराशि के निर्णय का यह नवीनतम अत्यन्त सरल प्रकार है।

(iii) सन् 1900 से 2100 ई. तक का सेकण्ड तक सूक्ष्म साम्पातिक काल और स्पष्ट अयनांश दिया गया है।

(iv) भारत के 4,000 नगर/उपनगरों तथा विश्व के अन्य 210 देशों के प्रसिद्ध लगभग 5,000 नगरों के अक्षांश–रेखांश तथा स्था. मं. का. और स्टैं. टा. का अन्तर 80 पृष्ठों पर दिया गया है।

(v) विश्व के लगभग छः सौ (600) देश / द्वीप/ उपद्वीपों की स्टैं. टाईम मेरिडियन्स तथा उनके स्टैं.टा. का G. M. T. एवं भा. स्टैं. टा. से अन्तर 21 पृष्ठों के विशाल कोष्ठक में विवरणसहित दिया है।

(vi) क्रान्ति और अक्षांश की 20–20 कलाओं के अन्तर पर 0° से 66° अक्षांशों के लिए सेकण्ड तक सूक्ष्म 24 पृष्ठों की मौलिक चरसारणी है, जिससे विश्व के किसी भी स्थल का सेकण्ड तक शुद्ध सूर्योदयास्तकाल आसानी से तुरन्त जाना जा सकता है।

(vii) अमेरिका, कनाडा आदि सभी विशाल देशों के अलग–अलग Time-Zones (कालक्षेत्रों) में पड़ने वाले सम्पूर्ण प्रान्तों (राज्यों) की लम्बी सूची दी गई है, जिससे स्पष्ट हो जाता है कि– इन देशों के किस प्रदेश में कौन सा टाईम प्रचलित है और उसका भा. स्टैं. टा. से कितना अन्तर है।

(viii) विश्व के विभिन्न देशों में 1940 ई. के बाद आज तक हुए सभी समय–परिवर्तनों के वर्षादि का विस्तृत रिकॉर्ड 7 पृष्ठों के कोष्ठक में अंकित हैं।

(ix) अमेरिका, कनाडा आदि देशों में प्रचलित समरटाईम (D.S.T.) के प्रारम्भ और समाप्ति की तारीखों तथा प्रथम/द्वितीय विश्वयुद्धों के दौरान विभिन्न देशों द्वारा किए गए सभी समय-परिवर्तनों के वर्ष–मास–तारीखों का विवरण 9 पृष्ठों पर दिया गया है।

(x) सारणियों से लग्नसाधन आदि की प्रत्येक गणित–प्रक्रिया को छः छः, सात–सात विभिन्नदेशीय नगरों के उदाहरणों द्वारा पूरी तरह स्पष्ट किया गया है।

अनेक उपयोगी क्रान्ति, वेलान्तर आदि के कोष्ठक तथा लग्न एवं द्वादशभावसाधन आदि से सम्बद्ध "सन्धिगत लग्न का निर्णय", "विषम विभागात्मकभाव–एक समीक्षा" आदि अनेक मौलिक लेख आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित एवं मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नहीं मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

मूल्य Rs. 750/– + डाकव्यय Rs. 60/–

पुस्तक मिलने का पताः– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, **M.A., M.Phil.,**
'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109,
Phone: 0172-2565 303

पूर्णिमा का महालय श्राद्ध किस दिन करें ?

आज से लगभग 30–40 वर्ष पूर्व अनेक पञ्चांगकार पूर्णिमा में दिवंगत व्यक्ति का महालय–श्राद्ध (कन्यागत श्राद्ध) आश्विन अमा के दिन ही लिखते रहे हैं। इसे हम सर्वथा अशास्त्रीय तो नहीं कह सकते; हां, उनका यह मत आंशिकरूप से अवश्य अशास्त्रीय था। सभी पितरों का महालय श्राद्ध उनकी अपनी मृत्युतिथि में करना चाहिए– यह प्रमुख शस्त्रीयनियम है, (अपमृत्यु वालों, सौभाग्यवती स्त्रियों, संन्यासी आदि कुछेक के लिए यह नियम लागू नहीं होता)। इसके साथ ही शास्त्र कहते हैं, आश्विन अमा के दिन अमामृत्युतिथि वालों , चतुर्दशी में प्राकृतिक (अपमृत्यु से भिन्न)मृत्यु वालों का महालय श्राद्ध करना चाहिए। किंच, क्योंकि यह **"अमा" सर्वपितृ अमा** है, अतः इस दिन उन दिवंगतों का महालयश्राद्ध भी, जिनकी मृत्युतिथि अज्ञात है, करना चाहिए तथाच इसी दिन ज्ञात–मृत्युतिथि वाले सभी दिवंगतों का महालय श्राद्ध भी समुदितरूप में (एकत्र) पुनः करना चाहिए। इस प्रकार स्पष्ट है आश्विन अमा के दिन सभी ज्ञात एवम् अज्ञात मृत्युतिथि वाले दिवंगतों का समुदित (इकट्ठा) महालयश्राद्ध करने का विधान है। इसीलिए इस अमा को **' सर्वपितृ अमा'** कहा गया है। **ध्यान दें**– क्योंकि यह **'सर्वपितृ अमा'** है, इसलिए पूर्णिमा में दिवंगतों का महालय श्राद्ध भी इसी दिन वे पंचांगकार भ्रान्तिवश लिखते रहे, जबकि पूर्णिमा में दिवंगतों का महालय भाद्रपूर्णिमा के दिन करना चाहिए और उसे आश्विन अमा के दिन ज्ञातमृत्युतिथि वालों के महालयश्राद्ध के साथ आवृत्त करने का विधान है। देखिए, नीचे दिया गया विवेचन स्पष्ट करता है कि भाद्रपूर्णिमा को, जिसे **प्रौष्ठपदी पूर्णिमा** की संज्ञा दी गई है, महालय पक्ष (पितृपक्ष, आश्विन कृष्णपक्ष) का ही अंग माना गया है, अतः पूर्णिमा का महालयश्राद्ध इसदिन करना शास्त्रप्रतिपादित है। **गार्ग्य** का वचन है–

" पौर्णमासीषु सर्वासु निषिद्धं पिण्डपातनम्।
वर्जयित्वा प्रौष्ठपदीं यथादर्शस्तथैव सा।।"– (*गार्ग्य*)

अर्थात्– पूर्णिमा में श्राद्ध करना यद्यपि निषिद्ध है, लेकिन प्रौष्ठपदी पूर्णिमा को श्राद्धार्थ अमा के समान ग्राह्य समझना चाहिए।

गार्ग्य के इस वाक्य का स्पष्ट संकेत है कि– प्रौष्ठपदीपूर्णिमा महालय श्राद्ध का अंग है। अतः इसमें पूर्णिमा–मृत्युतिथि वालों का महालयश्राद्ध करना चाहिए। **'स्मृत्यन्तर'** का यह वचन तो इसे और भी स्पष्ट कर रहा है कि– प्रौष्टपदी पूर्णिमा को मिलाकर पितृपक्ष (आश्विनकृष्ण) की 16 तिथियां माननी चाहिएं और इन तिथियों में 16 महालय श्राद्ध करने चाहिएं–

" तिथयः पञ्चदश स्युः प्रेतपक्षे तु षोडश।
अनुमत्यादिकं कुर्यात् पितृणां दत्तमक्षयम्।।"

अर्थात्– वैसे तो पक्ष में तिथियां 15 ही होती हैं, लेकिन प्रेतपक्ष (पितृपक्ष) में ये 16 मानी गई हैं, क्योंकि इसमें ⊕अनुमति (पूर्णिमा,यानी प्रौष्ठपदी पूर्णिमा) भी समाविष्ट है। इन 16 तिथियों में श्राद्ध करने का अक्षय माहात्म्य है।

हेमाद्रि एवं अन्य कई आचार्यों ने भी **'स्मृत्यन्तर'**कार के इस मत का समर्थन किया है; लेकिन कुछेक ने आश्विन कृष्णपक्ष को तिथिवृद्धि हो जाने की स्थिति में षोडशतिथ्यात्मक बतलाया

⊕ दो प्रकार की पूर्णिमाएं मानी गई हैं, एक **'अनुमति'**, जिसमें चन्द्रमा की एक कला कम होती है। दूसरी **'राका'**, जिसमें चन्द्रमा सर्वथा पूर्ण (16 कला–सम्पन्न) होता है (**" कलाहीने सानुमतिः पूर्णे राका निशाकरे"**–'अमरः)। इस पद्य में **'स्मृत्यन्तर'**कार ने पूर्णिमा के लिए **'अनुमति'** का प्रयोग किया है, क्योंकि एक कलाहीन चन्द्रमा वाली पूर्णिमा भी पूर्णिमा ही कहलाती है।

है, जो कि गलत है। क्योंकि किसी तिथि की वृद्धि हो जाने पर उस तिथि में दो श्राद्ध नहीं हो सकते, वहां श्राद्ध तो एक ही होगा। **देवल** का यह कहना भी सर्वथा अयुक्त है कि आश्विन शुक्ल प्रतिपदा क्षीणचन्द्र के कारण अमा के समान है, अतः उसे आश्विन कृष्णपक्ष के साथ मिलाने पर वह पक्ष षोडशतिथ्यात्मक हो जाता है–

" अहःषोडशकं यत्तु शुक्ल –प्रतिपदा सह।
चन्द्रक्षयाऽविशेषेण सापि दर्शात्मिका स्मृता।।– (*देवल*)

यदि वादिपरितोषन्यायेन **देवल** की यह बात मान भी ली जाए तो पितृपक्ष में दो अमाएं हो जाएंगी। पूर्णिमा का महालय उस अमा में कैसे किय जा सकता है। एक पक्ष में दो अमाएं भी किस काम की ?

इस विषय में **धर्मसिन्धुकार** का यह वाक्य भी हास्यास्पद है; जो तिथिवृद्धि हो जाने की स्थिति में आश्विन कृष्ण में सोलह श्राद्धों के अनुष्ठान की बात करता है–

" तत्र (महालये) शक्तेन भाद्रपदापरपक्षे प्रतिपदमारभ्य दर्शान्तं तिथिवृद्धौ षोडश महालयाः कर्त्तव्याः, वृद्धिक्षयाभावे पञ्चदशैव महालयाः।"

क्योंकि तिथिक्षय हो या तिथिवृद्धि, दोनों स्थितियों में महालयश्राद्ध तो पन्द्रह ही रहते हैं– यह स्पष्ट है।

इस प्रकार उपरोक्त निबन्ध का यह सारांश है– पूर्णिमा तिथि में दिवंगत का महालयश्राद्ध **प्रौष्ठपदी पूर्णिमा को, चतुर्दशी में सामान्य (अपमृत्यु से अतिरिक्त) मृत्यु वालों एवं अमा मृत्युतिथि वालों का महालयश्राद्ध 'सर्वपितृअमा' में किया जाए।** किञ्च इसी सर्वपितृअमा में सभी ज्ञात– अज्ञात मृत्युतिथि वालों का भी महालय समुदित (इकट्ठा) किया जाए। पंचांग में पंचांगकारों को भाद्र–पूर्णिमा (प्रौष्ठपदी पूर्णिमा) के दिन **महालयारम्भ, पूर्णिमा महालयश्राद्ध,** और आश्विनकृष्णपक्ष प्रतिपदा के दिन **पितृपक्ष प्रारम्भ** तथा आश्विन अमा के दिन **पितृपक्ष एवं महालय समाप्त**– इसप्रकार लिखना चाहिए– यही शास्त्रानुमत है। यह प्रसन्नता की बात है– अब लगभग सभी पंचांगकार इस शास्त्रानुमति का अनुसरण करते हुए प्रौष्ठपदी पूर्णिमा को महालय का अंग मानते हुए पूर्णिमा मृत्युतिथि वालों का महालय श्राद्ध इसी (प्रौष्ठपदी पूर्णिमा) तिथि में निर्दिष्ट करने लगे हैं।

ध्यान रहे– पुरी के शंकराचार्य जगदगुरु श्री निरञ्जनदेव तीर्थ जी ने इस शास्त्रीय मत का भारी विरोध किया, लेकिन उन्हें धर्मशास्त्रमर्मज्ञ पंचांगकारों ने प्रमाण नहीं माना।

ग्रहयोग एवम् दाम्पत्य जीवन

मिलानसम्बन्धी प्रत्येक समस्या का पूर्ण शास्त्रीय समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य,

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 550/- M.O. या D.D. द्वारा नीचे लिखे पते पर अपना Address साफ–साफ लिखते हुए भेजिए। V.P.P. नहीं की जाएगी।

Mrs. Veena Chaturvedi, ABHIJIT PRAKASHAN,
Kothi No.59, Sector 6, P.O. PANCHKULA, (Haryana)
PIN. 134 109 Phone- 0172- 2565 303

इसवर्ष (सं. 2073 वि. में) भारत के कुछ भाग में रसेश चन्द्र और कुछ भाग में रवि होगा :–

लेखक–प्रियव्रत शर्मा,

हमारे वर्ष आदि के दस पदाधिकारियों (वर्षेश, मन्त्री, धान्येश आदि) का निर्णय वर्षारम्भ एवं मेषादि संक्रान्तियों के समय वर्त्तमान 'वार' के स्वामी पर आधारित है। क्योंकि, भारतीय ज्योतिषानुसार वार स्थानीय सूर्योदय पर प्रारम्भ होता है। अतः स्थानभेद से वारों में भिन्नता रहती है, इसी कारण वर्षारम्भकालीन तथा संक्रान्ति–(सूर्यद्वारा राशि–संक्रमण)– कालीन वार हमेशा सूर्योदयकाल–भेद के कारण भूगोल के एक अर्धभाग पर कुछ और तथा दूसरे अर्धभाग पर कुछ और हुआ करता है। ये दोनों वार एक–दूसरे से आगे या पीछे वाले होते हैं। **उदाहरणार्थ–** यदि एक भूगोलार्ध पर रविवार है तो दूसरे भूगोलार्ध पर या तो चन्द्रवार होगा या शनिवार। यह स्थिति अनिवार्यतः घटित रहती है। इस कारण प्रतिवर्ष हमारे इन दस पदाधिकारियों में से प्रत्येक पदाधिकारी दो भूगोलार्धों पर भिन्न–भिन्न (दो–दो) हुआ करते हैं। इस प्रकार की स्थिति एक ही देश में भी अक्सर उत्पन्न होती रहती है। इस प्रकार की स्थिति का हम भारतीय भी दो–तीन वर्षों में एक–दो वार अक्सर सामना करते हैं। गत वर्ष (सं. 2072 वि.) में कन्यासंक्रान्ति के 'वार' के विषय में यही स्थिति उत्पन्न हुई थी। जिस पर अच्छा लम्बा लेख हमने उस वर्ष के पंचांग में दिया था। (इस विषय की अधिक स्पष्टता के लिए कृपया उस लेख को पुनः पढ़ें)। भारत में इसवर्ष **(सं. 2073 वि. में)** भी (17 अक्तूबर, 2016 ई. चन्द्रवार *) को यह समस्या आ पड़ी है। इसवर्ष भारत में तुला–संक्रान्तिकाल स्थानभेद से दो वारों (चन्द्रवार और रविवार) में घटित हो रहा है। **यहां दिया गया भारत मानचित्र देखिए–** इसमे अंकित **'क–ख'** रेखा पर स्थित भारत–भूभाग पर सूर्योदय 6^h 30^m (भा.स्टैं.टा.) पर होगा। इस रेखा से पूर्व में स्थित स्थलों पर सूर्योदय इससे (6^h 30^m से) पहले हो जाएगा और इससे पश्चिमस्थ स्थलों पर यह इसके अनन्तर होगा। देखिए– इसवर्ष **इसदिन** (17 अक्तूबर, 2016 ई. को) यह तुलासंक्रान्ति 6^h 31^m (भा.स्टैं.टा.) पर घटित हुई है। अतः यह **'क–ख'** रेखा से पूर्व में स्थित भारतभूभाग पर सूर्योदयानन्तर घटित होने के कारण वहां चन्द्रवार को घटित हुई है। (अर्थात् यह तब घटित हुई है, जब इस भारतभूभाग पर चन्द्रवार है।) अतः **'क–ख'** रेखा से पूर्वस्थ इस भारतभूभाग पर इसवर्ष **'रसेश'** (तुलासंक्रान्ति–वारेश) **'चन्द्र'** होगा। **किञ्च–** यह तुलासंक्रान्ति–संक्रमणकाल इस **'क–ख'** रेखा के पश्चिमस्थ भारत–भूभाग में सूर्योदय से (चन्द्रवार की प्रवृत्ति से) पहले का है, अतः वहां संक्रान्तिकालीन वार **रविवार है।** इसलिए भारत के इस भूभाग का रसेश **रवि** माना जाएगा।

ध्यान दें–इन दोनों रसेशों (रवि और चन्द्र) का फल परस्पर **बिल्कुल** विपरीत (एक का शुभ, दूसरे का अशुभ) लिखा है। **देखिए– यह क–ख'** रेखा पंजाब, जम्मू–कश्मीर , राजस्थान, म.प्र., महाराष्ट्र–प्रदेशों को विभाजित कर रही है। इन विभाजित प्रदेशों के ये भाग इस विभाजक रेखा के अनुरूप शुभ–अशुभ फलों के भागी किस प्रकार बनते हैं– यह द्रष्टव्य है।

---

* *यह 'चन्द्रवार' अर्धरात्रि पर परिवर्त्तित होने वाली 'वारपद्धति' के अनुसार है, जबकि भारतीय ज्योतिष–पद्धति अनुसार 'वार' सूर्योदय पर परिवर्तित होता है।*

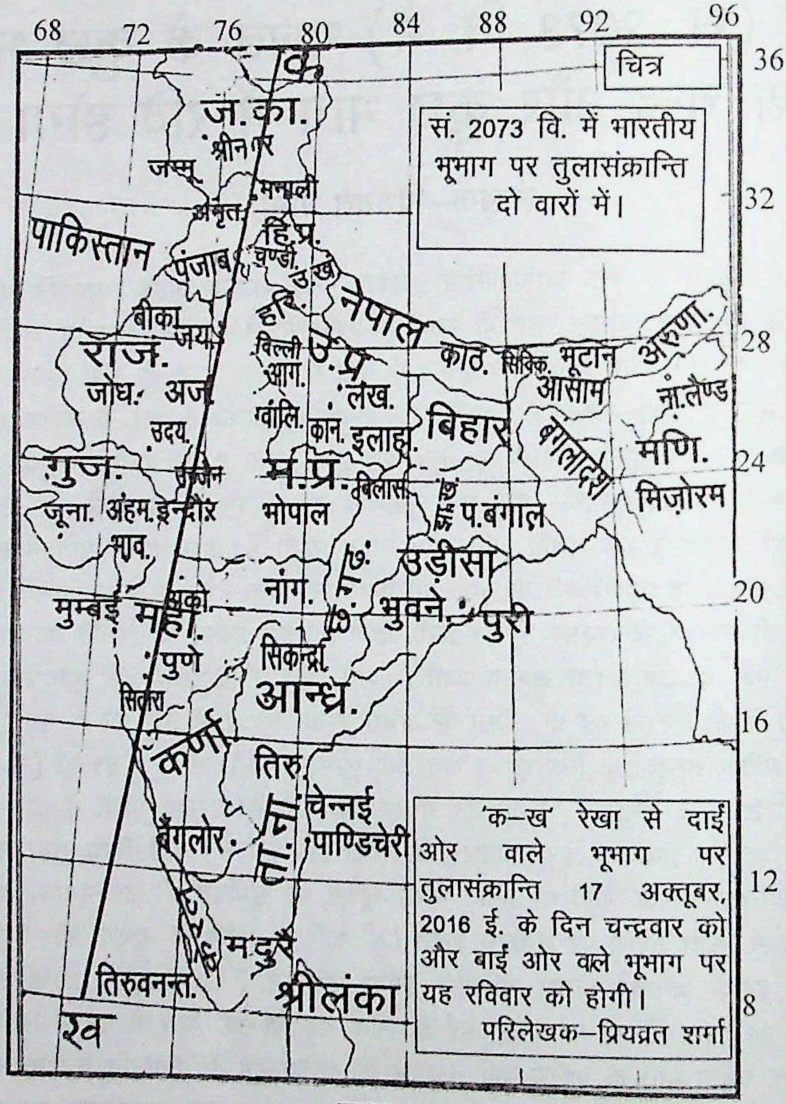

उन्मुक्त एवं पूर्वाग्रहमुक्त चिन्तन **प्रो. प्रियव्रत शर्मा** के व्यक्तित्व का एक स्पृहणीय गुण है। उनके द्वारा सृष्ट ज्योतिष–साहित्य अनेकत्र परम्परागत साहित्य से आश्चर्यजनक रूप में विमुखता लिए हुए है। तर्कनिष्ठ, युक्तियुक्त होने के कारण वह इस शास्त्र की रूढ़िवादी विचारपरम्परा को उन्मूलित करने की पूर्ण क्षमता रखता है। इनके द्वारा सम्पादित "ग्रहयेग एवम् दाम्पत्य जीवन" तथा "मुहूर्त्त गजानन" अवश्य पढ़िए। 'कुण्डलीमिलान' और 'मुहूर्त्तशोधन' के बारे में रूढ़िवादी हिन्दूसमाज की परम्परीण धारणाएं कहां तक श्रद्धेय हैं– आप अच्छी तरह जान जाएंगे।

हमें लिखिए –

श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

(पृष्ठ 273 भी देखिए।)

जन्मकुण्डलियां कृत्रिम, लेकिन फलादेश यथार्थ

लेखक– प्रियव्रत शर्मा,

ध्यान रहे– यदि जातक को दैवज्ञ व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता हो, तब उसकी जन्मकुण्डली आदि से उसके चरित्, प्रकृति एवं अतीत या वर्तमान घटनाओं का भी यथावत् निर्देश कर पाना दैवज्ञ के लिए सचमुच टेढ़ी खीर है। जातक की वर्तमान एवं अतीत घटनाओं का उसकी जन्मपत्री में दी गई ग्रहस्थिति आदि (वह वास्तव हो या अवास्तव) के फलितयोगों से समन्वय कर डालने की प्रवृत्ति या कुशलता दैवज्ञों में अक्सर पाई जाती है। **श्री गुरुनानक, श्री आद्य शंकराचार्य, सम्राट् विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, जैन महावीर आदि महापुरुषों** की पुरातन साहित्य में उपलब्ध अनेक जन्मकुण्डलियों का मूल गणित द्वारा परीक्षण मैंने अपने महानिबन्ध **हमारे अवतार एवं महापुरुषों की कृत्रिम जन्मकुण्डलियां** में किया है। आश्चर्य की बात है– ये सभी कुण्डलियां कृत्रिम सिद्ध हुई हैं। इन कुण्डलियों में ग्रहों की स्थितियां जातकग्रन्थों में निर्दिष्ट महापुरुषयोगों को दृष्टि में रखकर किन्हीं चतुर ज्योतिषियों ने बनाई हैं। इनमें से अधिकतर कुण्डलियों में तीन या चार ग्रहों को उच्चस्थ दिखलाया गया है, जबकि गणितपरीक्षण से स्पष्ट हुआ है कि– इन महापुरुषों के जन्म के समय इस प्रकार ग्रह उच्चस्थ नहीं थे। इससे और भी आश्चर्य की बात यह है कि– अनेक लब्धप्रतिष्ठ दैवज्ञों ने, जिन्हें यह ज्ञात नहीं था कि– ये जन्मकुण्डलियां (इन जन्मकुण्डलियों में दर्साई ग्रहस्थितियां) वास्तविक नहीं हैं, इन महापुरुषों के जीवन की प्रमुख–प्रमुख घटनाओं एवं इनकी प्रकृति, योग्यता, सम्पत्ति, विपत्ति, उत्त्थान, पतन, यश–प्रतिष्ठा, मृत्युकाल आदि सभी का सम्बन्ध प्राचीन और आधुनिक ग्रन्थों में प्रकाशित इन कृत्रिम जन्मकुण्डलियों में प्रदर्शित कृत्रिम ग्रहयोगायोगों से भी सिद्ध कर डाला है। मध्यप्रदेश के एक विख्यात दैवज्ञ द्वारा सम्पादित **'कुण्डलीसंग्रह'** नामक पुस्तक में इन महापुरुषों की ऐसी अनेक कृत्रिम जन्मकुण्डलियां ऐसे ही फलादेशसहित प्रकाशित हैं। क्योंकि ये सभी कुण्डलियां शताब्दियों पूर्व लिखे गए प्रामाणिक ग्रन्थों में प्रकाशित मिलती हैं, अतः **'कुण्डलीसंग्रह'** के सम्पादक इस दैवज्ञ ने इन्हें वास्तविक समझकर ही इन पर फलादेश लिख डाला। इन कृत्रिम जन्मकुण्डलियों में दिखाए गए ग्रहयोगों का इन महापुरुषों के जीवन की घटनाओं से समन्वय दिखलाने वाले ऐसे फलितीय विवरण हमें अनेक अन्य प्रामाणिक ग्रन्थों में भी प्रकाशित मिलते हैं। दैवज्ञों द्वारा इन महापुरुषों की बनावटी जन्मकुण्डलियों में निर्दिष्ट बनावटी ग्रहस्थितियों को आधार मान कर लिखा गया, इन महापुरुषों की जीवनघटनाओं और उनके गुणावगुण आदि पर पूरी तरह घटित होने वाला यह फलादेश स्पष्ट करता है कि– फलितीय योगायोगों की जातक के जीवन की घटना आदि के अनुरूप व्याख्या कर सकना संभव है, क्योंकि प्रत्येक फलितीय योग की उपलभ्यमान बीसों फलितीय पद्धतियों के अनुसार अनन्त विधाएं बनती हैं। किसी जातक के वर्तमान या अतीत जीवन-घटना आदि के साथ उन विधाओं में से किसी अभीष्ट विधा का समन्वय कर डालने की क्षमता प्रत्येक प्रवीण दैवज्ञ में रहती है। एक ही ग्रहयोग की सम्भावित अनन्त, अगण्य विधाओं के बारे में **'यवनेश्वर'** ने भी अपने जातक ग्रन्थ में निर्देश किया है और इनकी उपमा उसने अपरिमेय समुद्रजल से इस प्रकार की है–

"अन्योन्य–राश्यंशक–सम्प्रयोगैः अन्योन्य–सन्दर्शन–संगमैश्च।
अन्योन्य–संयोग–विकल्पनाभिः इदं समुद्राम्बुवदप्रमेयम्।।"

देखिए– जगद्गुरु आदिशंकराचार्य के जन्मकाल के बारे में भारी मतभेद है, जिनमें शताब्दियों का अन्तर है। विभिन्न कालीन प्राचीन दैवज्ञों ने इनके आधार पर जगद्गुरु की अनेकों जन्मकुण्डलियां बनाई हैं, ये शताब्दियों पूर्व के विभिन्न प्राचीन ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। उनमें से उदाहरणार्थ केवल तीन कुण्डलियां

यहां उद्धृत की जा रही हैं–

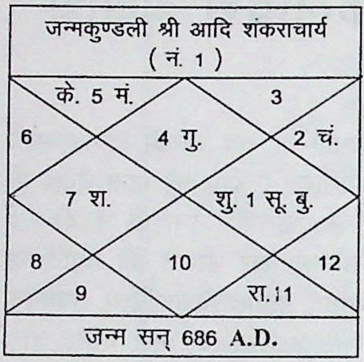

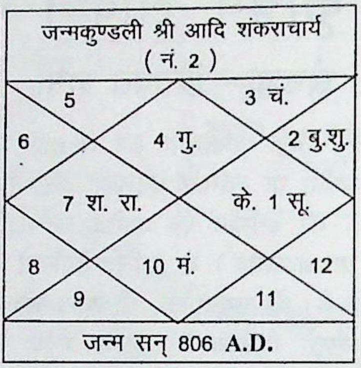

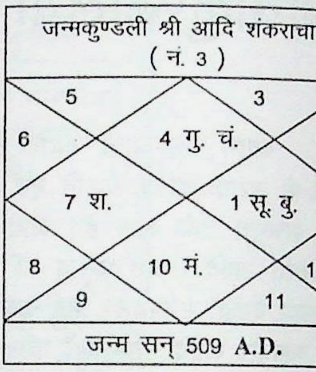

(आश्चर्य है– श्रीशंकराचार्य की एक ऐसी ही कुण्डली B.C. की भी उपलब्ध है।)

देखिए– इनमें नं. (1) **कुण्डली** सातवीं शताब्दी की, नं. (2) **कुण्डली** नवम शताब्दी की और नं. (**कुण्डली** छठी शताब्दी की है। इन कुण्डलियों के निर्माता दैवज्ञों ने केवल इस बात को ध्यान में रखा कि– इनमें चार ग्रह उच्चस्थ हों, क्योंकि **'बृहज्जातक'** आदि जातक ग्रन्थकारों ने तीन या चार ग्रहों उच्चस्थिति को **'महापुरुषयोग'** माना है –

" वक्राऽर्कजार्क–गुरुभिः सकलैस्त्रिभिश्च स्वोच्चेषु षोडश नृपाः कथितैक लग्ने।
द्व्येकाश्रितेषु च तथैकतमे विलग्ने स्वक्षेत्रगे शशिनि षोडश भूमिपाः स्युः।।"

–(बृहज्जातव

इन कुण्डलियों की मूल गणित द्वारा परीक्षा करने पर ये सभी गलत सिद्ध हुई हैं। इस प्रकार व कृत्रिम महापुरुषयोगों वाली राम, कृष्ण, महात्मा बुद्ध, जैन महावीर, नानक, अशोक आदि अनेक महापुरु की प्रचलित जन्मकुडलियों की गणितपरीक्षा मैंने अपनी प्रकाश्यमान **" फलितज्योतिष के निराधार सिद्धान्त** पुस्तक के एक प्रकरण में विस्तार से की है, जिससे वे सभी आधारहीन सिद्ध हुई हैं। ❀

❀ (मेरा प्रयास है, यह मेरी पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित हो, ताकि फलितज्योतिष के ब में प्रचलित अनेक निराधार धारणाएं समाज से निरस्त हों।)

विश्वलग्न सारणी [मूल्य Rs. 810 / सडाकव्यय

विश्व के किसी भी स्थल का सूक्ष्म लग्न केवल साधारण जोड़–घटाव द्वारा बतलाने वाला लग्नसम्बन्धी प्रचुर सामग्री से समृद्ध अपूर्व प्रकाशन

इस पुस्तक की सभी सारणियां Electronic Computer द्वारा बनाई और मुद्रित की गई हैं, जिससे इनमें गणित ए मुद्रणसम्बन्धी अशुद्धि की कोई सम्भावना ही नहीं है।

लग्न पर ऐसी व्यापक जानकारी देने वाली परिपूर्ण, प्रौढ़ एवं प्रामाणिक पुस्तक आपको और कोई नह मिलेगी– यह हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं।

पुस्तक मिलने का पता:–'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूल (हरियाणा) – 134 109, **Phone:** 0172.2565 303

प्रणयविवाह का मुहूर्त्त

लेखक :– प्रियव्रत शर्मा,

प्रणयविवाह (Love-Marriage), जिसे शास्त्रों में गान्धर्व–विवाह की संज्ञा दी गई है, यद्यपि उत्कृष्टकोटि की विवाहप्रणाली के रूप में शास्त्रकारों द्वारा समर्थित नहीं है, तथापि इस प्रणाली का पर्याप्त प्रचलन अब भारत में भी पाश्चात्य सभ्यता और उच्चशिक्षा के प्रभाव के कारण दिखाई पड़ने लगा है। प्रणयविवाह करने वाले प्रमी–प्रेमिका विवाहबन्धन में बंधने के लिए अक्सर इतनी शीघ्रता में होते हैं कि– वे शास्त्रप्रतिपादित मुहूर्त्तकाल की प्रतीक्षा नहीं कर पाते; कुण्डली मिलान की बात तो दूर रही। बिना कुण्डली मिलान करवाए, बिना मुहूर्त्त के ही मन्दिर आदि में जाकर एक दूसरे के गले में वर–माला डालकर पति–पत्नी बन जाना ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से यद्यपि अपराध है, फिर भी **"प्रेमावेश किसी भी प्रकार के नियन्त्रण को सहन नहीं करता"**– इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को दृष्टि में रखकर हम यहां मुहूर्त्तसम्बन्धी दो आवश्यक बातें बतला रहे हैं, जिन्हें यदि प्रणयविवाह के समय ध्यान में रखा जाए तो प्रेमी–प्रेमिका का दाम्पत्य–जीवन कुछ दृष्टियों से पर्याप्त सुख–समृद्धिमय हो सकता है। वे दो आवश्यक बातें ये, हैं–

(1) प्रेमविवाह के समय मृत्युबाण के समय को सावधानीपूर्वक छोड़ देना चाहिए। इससे दोनों जीवनसाथी अकाल मृत्यु से बचे रहेंगे।

हम यहां दो कोष्ठक (1), (2) दे रहे हैं, इनकी सहायता से बड़ी आसानी से यह जाना जा सकता है कि– मृत्युबाण किस दिन कब से कब तक रहेगा।

मृत्युबाण एक वर्ष में 48 बार आता है। जब भी यह आता है, तब यह लगभग $25\frac{1}{2}$ घण्टे तक रहता है। कोष्ठक (1) में **"मृत्युबाण की लगभग तारीखें"** (जिन तारीखों के आसपास मृत्युबाण प्रतिवर्ष आया करता है) दी गई हैं। यदि प्रणयविवाह की तारीख का कोष्ठक (1) में दी गई **" मृत्युबाण की लगभग तारीख "** से अन्तर आगे या पीछे तीन दिन से अधिक हो तब उस दिन प्रणयविवाह निःशंक होकर किया जा सकता है। क्योंकि कोष्ठक (1) में दी गई इन **"मृत्युबाण की लगभग तारीखों"** से मृत्युबाण के काल का अन्तर आगे या पीछे तीन दिन से ज्यादा कभी नहीं होता। यदि प्रणय–विवाह का दिन कोष्ठक (1) में दी गई **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** से एक, दो या तीन दिन आगे या पीछे हो, तब सम्भव है कि– उसदिन मृत्युबाण हो। ऐसी स्थिति में मृत्युबाण की वास्तविक तारीख और टाईम का ज्ञान कोष्ठक (1) और कोष्ठक (2) की सहायता से इस प्रकार कर लीजिए–

जिसदिन तारीख के आसपास प्रणयविवाह करने की इच्छा है, उस तारीख के समीप वाली **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** के आगे कोष्ठक (1) में लिखे वार घं. मि. उठा लें। इन्हें अपने ईस्वी सन् के आगे कोष्ठक (2) में दिए गए वार घं. मि. में जोड़ दें ;– यह मृत्युबाण शुरु होने का वार और टाईम (भा. स्टै. टा.) होगा। इस वार के अनुसार मृत्युबाण के शुरु होने की ठीक तारीख का निर्णय किया जा सकता है। यह तारीख (मृत्युबाण शुरु होने की तारीख) **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** (जो हमें कोष्ठक (1) से मिली है) से दो दिन से ज्यादा आगे–पीछे नहीं हो सकती, जैसा कि पहले भी बतला चुके हैं, मृत्युबाण 25 घं. 30 मि. (अर्थात् 1 दिन 1 घं. 30 मि.) रहता है। अतः मृत्युबाण शुरु होने के वार और टाईम में 1 दिन (वार), 1 घं. 30 मि. जोड़ देने पर इसकी समाप्ति का वार घं. मि. (भा. स्टै. टा.) मालूम हो जाएंगे।

मान लीजिए– 7 जनवरी 1983 ई. के दिन मृत्युबाण ज्ञात करना है। कोष्ठक (1) में जनवरी की 3 और 12 तारीखें **"मृत्युबाण की लगभग तारीखें"** लिखी हैं, जो हमारी 7 जनवरी के समीप की तारीखें हैं। इन दोनों तारीखों से 7 जनवरी का अन्तर तीन दिन से ज्यादा है, अतः स्पष्ट है कि– इसदिन मृत्युबाण नहीं होगा।

मान लीजिए– 4 जनवरी, 1983 ई. को मृत्युबाण मालूम करना है, इस तारीख के समीप वाली **"मृत्युबाण की लगभग तारीख"** कोष्ठक (1) में 3 जनवरी है। इस कोष्ठक में 3 जन. के आगे 4 वार, 18 घं., 28 मि. लिखा है। कोष्ठक (2) से ई. सन् 1983 के आगे लिखे 5 वार, 0 घं. 37 मि. है। इसमें 4/18/28

जोड़ने पर 9 वार (2 वार) 19 घं. 5 मि. मिले। यह मृत्युबाण के प्रारम्भ होने का वार और भा.स्टैं.टा. है 1983 ई. में 3 जनवरी को सोमवार ही है, अतः स्पष्ट हुआ कि– **मृत्युबाण 1983 ई. को 3 जनवरी के दि 19 घं. 5 मि. (I.S.T.) अर्थात् शाम के 7 बजकर 5 मि. पर प्रारम्भ होगा।** क्योंकि मृत्युबाण 1 दिन, 1 घं. 3 मि. तक रहता है, अतः इसकी समाप्ति 2 वार, 19 घं. 5 मि.+ 1 वार, 1 घं. 30 मि.= 3 वार, 20 घं. 35 मि पर [अर्थात् मंगलवार (4 जन.) को 20 घं. 35 मि. पर] होगी। **सारांश यह हुआ कि– यह मृत्युबाण जनवरी, 1983 ई. को 19 घं. 5 मि. से प्रारम्भ होकर 4 जनवरी, 1983 ई. को 20 घं. 35 मि. तक चलेग अतः इस अवधि में प्रणयविवाह नहीं करना चाहिए।**

ध्यान रहे, इन कोष्ठकों से जाना गया मृत्युबाण का वार **अंग्रेज़ी** पद्धति के अनुसार रात के बार बजे शुरू होने वाला है। 1 संख्या से रविवार, 2 से सोमवार इत्यादि समझें। 0 या 7 संख्या में शनिव समझना चाहिए।

(2) मृत्युबाण का विचार कर लेने के बाद प्रणयविवाह (परस्पर वर माला डालने) के सम लग्न का विचार कर लेना भी नितान्त आवश्यक है। विवाह के समय लग्नेश यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, नव दशम या ग्यारहवें भाव में हो अथवा गुरु, शुक्र या बुध में से कोई भी ग्रह लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम या दश भाव में पड़ा हो तो उस समय किया गया विवाह–सम्बन्ध अटूट, पारस्परिक–प्रेम का पोषक एवं अनेकवि सुख सम्पदाओं को देने वाला माना जाता है। मुहूर्तकारों का कहना है कि– इस प्रकार की ग्रहस्थिति वा लग्न के समय यदि विवाह किया जाए तो मुहूर्त–सम्बन्धी अनेक महादोष लगभग समाप्त हो जाते हैं।

कोष्ठक (1)

मृत्यबाण की लगभग तारीख	वा.घं. मि.	मृत्यबाण की लगभग तारीख	वा.घं. मि.
जन. 3	4 18 28	जुला. 5	5 09 29
12	6 14 27	14	0 20 07
15	2 13 09	17	3 23 37
24	4 09 23	27	6 09 47
फर. 2	6 05 54	अग. 5	1 19 36
11	1 03 04	15	4 04 54
14	4 02 18	18	0 07 47
23	6 00 27	27	2 15 55
मार्च 3	0 23 30	सितं. 5	4 23 13
12	2 23 16	15	0 05 30
15	5 23 31	18	4 07 20
25	1 00 54	27	5 12 04
अप्रै. 3	3 03 20	अक्तू. 6	0 15 44
12	5 07 00	15	2 18 14
15	1 08 29	18	5 18 49
24	3 13 38	27	0 19 47
मई 3	5 19 49	नवं. 5	2 19 47
13	1 05 08	14	4 18 48
16	4 05 47	17	0 18 14
25	6 14 14	26	2 16 01
जून 3	1 23 25	दिसं. 5	4 13 14
13	4 09 18	14	6 09 53
16	0 12 43	17	2 08 38
25	2 22 59	26	4 04 43

कोष्ठक (2)

ई. सन्	वा. घं. मि.	ई. सन्	वा. घं. मि.	ई. सन्	वा. घं. मि.
1980	1 06 09	2010	3 22 44	2040	6 15 19
1981	2 12 18	2011	5 04 53	2041	0 21 28
1982	3 18 27	2012	6 11 02	2042	2 03 37
1983	5 00 37	2013	0 17 11	2043	3 09 46
1984	6 06 46	2014	1 23 21	2044	4 15 56
1985	0 12 55	2015	3 05 30	2045	5 22 05
1986	1 19 04	2016	4 11 39	2046	0 04 14
1987	3 01 13	2017	5 17 48	2047	1 10 23
1988	4 07 22	2018	6 23 57	2048	2 16 32
1989	5 13 32	2019	1 06 06	2049	3 22 41
1990	6 19 41	2020	2 12 16	2050	5 04 50
1991	1 01 50	2021	3 18 25	2051	6 11 00
1992	2 07 59	2022	5 00 34	2052	0 17 09
1993	3 14 08	2023	6 06 43	2053	1 23 18
1994	4 20 17	2024	0 12 52	2054	3 05 27
1995	6 02 27	2025	1 19 01	2055	4 11 36
1996	0 08 36	2026	3 01 11	2056	5 17 45
1997	1 14 45	2027	4 07 20	2057	6 23 55
1998	2 20 54	2028	5 13 29	2058	1 06 04
1999	4 03 03	2029	6 19 38	2059	2 12 13
2000	5 09 12	2030	1 01 47	2060	3 18 22
2001	6 15 22	2031	2 07 56	2061	5 00 31
2002	0 21 31	2032	3 14 06	2062	6 06 40
2003	2 03 40	2033	4 20 15	2063	0 12 50
2004	3 09 49	2034	6 02 24	2064	1 18 59
2005	4 15 58	2035	0 08 33	2065	3 01 08
2006	5 22 07	2036	1 14 42	2066	4 07 17
2007	0 04 17	2037	2 20 51	2067	5 13 26
2008	1 10 26	2038	4 03 01	2068	6 19 35
2009	2 16 35	2039	5 09 10	2069	1 01 45

दशाप्रारम्भ का सूक्ष्म काल

लेखक– प्रियव्रत शर्मा,

[दशा की प्रारम्भकालिक लग्नकुण्डली में दशेश आदि की शुभाशुभ स्थिति के आधार पर दशा का शुभाशुभ फल प्रभावित होता है,–ऐसा 'वराहमिहिर' आदि का मत है। दशा की प्रारम्भकालिक कुण्डली बनाने के लिए दशा के प्रारभ होने (दशाप्रवेश) का काल सूक्ष्म (सर्वथा शुद्ध) होना चाहिए। जन्मपत्रियों में दशाओं के जो प्रारम्भकाल दैवज्ञों द्वारा परम्परया लिखे जाते हैं, उनमें घण्टा–मिनटों या घड़ी–पलों तक की सूक्ष्मता की तो बात छोड़िये, दिन तक की भी सूक्ष्मता नहीं होती। यद्यपि मेरा मत है (जोकि सिद्धान्तानुसार संगत भी है), कि दशा–प्रवेशकाल में क्रियात्मकरूप से इतनी सूक्ष्मता लाना लगभग असम्भव है*, पुनरपि यहां गणित द्वारा इसका सूक्ष्मकाल जानने की यथार्थ पद्धति, जिसे मौलिक रूप से मैंने ज्ञात किया है, दे रहा हूँ। इससे उन पाठकों को भी सान्तवना मिलेगी, जो दशाप्रवेशकाल को परम सूक्ष्मता से जानने के लिए मुझे पत्र लिखते रहे हैं।]

जन्मकालिक नक्षत्र के भुक्तकाल (भयात) को जन्मकालिक दशेश के पूर्ण दशावर्षों से गुणाकर भभोग से भाग देकर पांच लब्धियां (क्रमशः वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल) प्राप्त करें। यह जन्मकालिक दशेश की दशा का **भुक्तकाल** होगा। इसे जन्मकालीन दशेश के पूर्ण दशावर्षों में से घटाने पर शेष वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल उस (जन्मकालीन) दशेश की दशा के जन्मकालीन **भोग्यवर्ष** आदि होंगे। इन्हें जन्मकालिक **विक्रमसंवत्**◈ और **जन्मकालिक** स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं में क्रमशः जोड़ दें। (**अर्थात्**– वि. संवत् में भोग्य वर्ष और जन्मकालिक स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं में क्रमशः भोग्यमास–दिन–घड़ी–पल जोड़ दें)। यहां जोड़ करते समय जन्मकालिक स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकलाओं को क्रमशः मास, दिन, घड़ी, पल मानना होगा– यह ध्यान रहे। इस प्रकार जो योगफल प्राप्त

---

* *अपने इस मत का प्रतिपादन मैंने इस लेख के अन्त में किया है, उसे पढ़िए।*

⬟ *यहां पाठक को यह बतला देना आवश्यक है कि– सूर्य आदि के दशावर्ष (6, 10 आदि) सौर वर्ष हैं। सूर्य का भगणकाल (12 राशियों का भोगकाल) सौर वर्ष कहलाता है।* ***उदाहरणार्थ– "चन्द्रमा के दशावर्ष 10 हैं–"*** *इसका अभिप्राय है कि-चन्द्रमा के दशाकाल में सूर्य 10 भगण पूरे करता है (अर्थात् 12 राशियों को 10 बार भोगता है)। यहां यह भी समझ लेना चाहिए कि– सूर्य द्वारा* ***1 राशि का भोगकाल एक सौरमास, 1 अंश का भोगकाल 1 सौरदिन, 1 कला का भोगकाल 1 सौर घड़ी और 1 विकला का भोगकाल 1 सौरपल*** *होता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि– भुक्त–भोग्य दशा के जो वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल भयात, भभोग द्वारा उपरोक्त गणित से प्राप्त होते हैं, वे क्रमशः सूर्य के भुक्त–भोग्य वर्ष (भगण) राशि, अंश, कला, विकलाएं ही होती हैं। जैसे– यहां आगे दिए गए उदाहरण में जातक के जन्म के समय गुरु की दशा का भुक्तकाल 4 वर्ष, 8 मास, 2 दिन, 38 घड़ी, 44 पल है। इसका अभिप्राय है कि– जातक के जन्म के समय गुरु की दशा की उतनी अवधि बीत चुकी है,* ***जितनी अवधि में सूर्य 4 भगण, 8 राशि, 2 अंश, 38 कला और 44 विकला*** *पार कर जाता है। इसी तरह यहां जन्म के समय गुरु की भोग्यदशा 11 वर्ष, 3 मास, 27 दिन, 21, घड़ी, 16 पल है। इसका अभिप्राय है कि– जन्म के समय गुरु की दशा की उतनी अवधि शेष है, जितनी* ***अवधि में सूर्य 11 भगण, 3 राशि, 27 अंश, 21 कला और 16 विकलाएं भोगता है। ध्यान रहे–*** *दशा के भुक्त, भोग्यसाधन की प्रक्रिया से प्राप्त सूर्य के भुक्त–भोग्य भगण, राशि, अंश, कला, विकलाओं को दैवज्ञ लोग क्रमशः वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पल ही कहा करते हैं, जो ठीक ही है। क्योंकि दशा के भुक्त–भोग्य का यह काल सौर वर्ष, मांस आदि ही तो है। हमने भी इस लेख में इसे गणितप्रक्रिया के लिए अनेकत्र वर्ष, मास आदि ही लिखा है।*

◈ *यहां सर्वत्र विक्रम संवत् का प्रारम्भ मेषसंक्रान्तिकाल से ही माना जाएगा, चैत्र शुक्ल–प्रतिपदा से नहीं, यह ध्यान रहे।*

होगा, वह **जन्मकालिक दशेश की दशा** का समाप्तिकालिक क्रमशः वि. संवत् और स्पष्ट सूर्य की राशि, अंश, कला, विकलाएं होंगी।※ इस (जन्मकालिक दशेश के दशा-समाप्तिकालिक) विक्रम संवत् में परवर्ती दशेशों के पूर्ण दशावर्षों को उत्तरोत्तर यथाक्रम जोड़ देने पर शेष सभी दशेशों की दशाओं के समाप्तिकालीन वि. संवत् प्राप्त हो जाएंगे। **ध्यान रहे–** इन सभी दशाओं के समाप्ति के समय स्पष्टसूर्य के राश्यादि ठीक वही होंगे, जो जन्मकालीन दशेश की दशा की समाप्ति के समय हैं। **नीचे दिया गया उदाहरण देखिए–**

9 मार्च, 1997 ई. (वि. सं. 2053) को प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) पर किसी जातक का जन्म हुआ, जबकि स्पष्टसूर्य 10 रा. 24 अं. 38 कला 25 वि. था। इसके जन्म के समय पू.भा. नक्षत्र और भभोग 21घं. 10 मि.(=1270 मि.) तथा भयात 6 घं. 11 मि.(=371 मि.) था। इसका जन्मकालिक दशेश गुरु है। गुरु के दशावर्षो(16) को भयात (371 मि.) से गुणा करके भभोग (1270 मि.) से भाग देकर पांच लब्धियां क्रमशः 4 वर्ष, 8 मास, 2 दिन, 38 घड़ी, 44 पल मिले। यह जातक के जन्म के समय गुरु की भुक्त दशा है। इसे गुरु के दशावर्षो(16) में से घटाने पर 11 वर्ष, 3 मास, 27 दिन, 21 घड़ी, 16 पल मिले। ये जन्म के समय गुरु की भोग्यदशा है। दशा के इन भोग्य वर्ष, मास, दिन, घड़ी, पलों को जन्मकालिक वि. संवत् 2053 और स्पष्टसूर्य के राश्यादि 10/24/38/25 याने (10 मास, 24 दिन, 38 घड़ी, 25 पल) में क्रमशः जोड़ देने पर योगफल 2065/2/21/59/41 मिला। **जैसे–**

वर्ष	मास	दिन	घड़ी	पल
2053	10	24	38	25
+ 11	3	27	21	16
2065	2	21	59	41

इसका अभिप्राय यह हुआ कि–वि. सं. 2065 में जब स्पष्टसूर्य के राश्यादि 2/21/59/41 होंगे, ठीक उसी समय गुरु की दशा समाप्त हो जाएगी। अब गुरु से अग्रिम दशेशों (शनि, बुध, केतु, शुक्र आदि) के दशावर्षों (19, 17, 7, 20 आदि) को गुरुदशा की समाप्ति के वर्ष 2065(वि. सं.) में क्रमशः उत्तरोत्तर जोड़ देने पर शनि आदि की दशाओं के समाप्तिवर्ष (वि. सं.) क्रमशः 2084, 2101, 2108, 2128 आदि ज्ञात हो गए। यहां प्रत्येक ग्रह की दशा की समाप्ति के समय स्पष्ट सूर्य के राश्यादि 2/21/59/41 ही होंगे,– यह तो पूर्वोक्त निर्देशानुसार स्पष्ट ही है। इसे हम चक्र द्वारा इस भान्ति दर्सा सकते हैं:–

दशासमाप्ति–कालिक वर्ष और स्पष्टसूर्य

[(जन्मतारीख 9/3/97, समय प्रातः 5 घं. 30 मि.(भा.स्टैं.टा.)]

दशेश		गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
दशासमाप्तिवर्ष वि. संवत्)		2065	2084	2101	2108	2128	2134	2144	2151
दशासमाप्ति के समय स्पष्टसूर्य	रा.	2	2	2	2	2	2	2	2
	अं.	21	21	21	21	21	21	21	21
	क.	59	59	59	59	59	59	59	59
	वि.	41	41	41	41	41	41	41	41

※ *ध्यान दें– यहां दशा के भोग्यकाल (वर्ष आदि) में जन्मकालिक वि. संवत् और स्पष्टसूर्य को जोड़ते समय हमने स्पष्टसूर्य की राशि, अंश, कला, विकलाओं को यद्यपि क्रमशः मास, दिन, घड़ी, पल माना है, लेकिन यहा इनके योगफल को हमें स्पष्टसूर्य के राशि, अंश, कला, विकला ही मानना होगा।*

इस प्रकार प्रत्येक दशा की समाप्ति का वर्ष तो स्पष्टतया ज्ञात हो ही जाता है, लेकिन इनकी समाप्ति का दिन (तारीख) व काल (घं. मि.) तभी मालूम हो सकेगा, जब हम यह ज्ञात कर लें कि– दशा–समाप्तिकालीन स्पष्ट सूर्य (जो सभी दशाओं की समाप्ति के समय समान है), इन भिन्न–भिन्न दशावर्षों में कब–कब(किन–किन तारीखों को किस–किस समय) होगा। इसे ज्ञात करने की विधि इस प्रकार है– जातक के जन्म के ईस्वी सन्■ से पूर्ववर्ती ई. सन् के पंचांग में दिए गए दैनिक स्पष्ट ग्रहों में देखिए कि– हमारा दशासमाप्ति–कालीन स्पष्टसूर्य वहां किन दो पंक्तियों◈ के मध्य पड़ता है। इन दोनों पंक्तियों वाले स्पष्टसूर्य के राश्यादि का अन्तर कीजिए (अर्थात् सूर्य की गति निकालिए)। प्रथम पंक्ति के स्पष्टसूर्य का दशा–समाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य से अन्तर कीजिए। इस अन्तर को 24 से गुणा करके सूर्यगति से भाग देकर दो लब्धियां (घं. मि.) प्राप्त कीजिए। इन्हें प्रथम पंक्ति के वार◆ तथा काल (घं. मि.) में जोड़िए। इससे जो वार घं. मि. प्राप्त होंगे, उनमें 1 वार, 6 घं. 9 मि. जोड़ दें। इससे प्राप्त योगफल (वा.घं. मि.) में **'प्रथम दशा की वर्षसंख्या'*** **द्वारा दशा–समाप्तिकाल–कोष्ठक** से प्राप्त वार, घं. मि. जोड़ देने पर जन्मकालीन दशेश की दशासमाप्ति का वार और काल (घं. मि.) प्राप्त हो जाएंगे। इसमें जन्मकालीन दशेश से अग्रिम (क्रमानुसार परवर्त्ती) दशेश की दशा की वर्षसंख्या द्वारा **"दशा–समाप्तिकाल कोष्ठक"** से ही प्राप्त वार, घं. मि. जोड़ देने पर उस परवर्त्ती दशेश की दशासमाप्ति का वार और काल मालूम हो जाएगा। इसी प्रकार क्रमानुसार उससे परवर्ती शेष दशेशों की दशाओं की वर्षसंख्याओं द्वारा इसी कोष्ठक से प्राप्त वार, घं. मि. को उत्तरोत्तर जोड़ते हुए उनकी दशाओं के समाप्तिकालीन वार, घं. मि. (काल) भी मालूम कर लेने चाहिएं।

दशासमाप्ति–काल कोष्ठक

वर्ष–संख्या	वार	घं.	मि.	वर्ष–संख्या	वार	घं.	मि.	वर्ष–संख्या	वार	घं.	मि.
0	0	00	00	8	3	01	13	16	6	02	27
1	1	6	9	9	4	07	22	17	0	08	36
2	2	12	18	10	5	13	32	18	1	14	45
3	3	18	27	11	6	19	41	19	2	20	54
4	5	00	37	12	1	01	50	20	4	03	03
5	6	06	46	13	2	07	59				
6	0	12	55	14	3	14	08				
7	1	19	04	15	4	20	17				

आगे उदाहरण देखिए–इस उदाहरण से आप इस गणितप्रक्रिया को अत्यन्त सहजता से जान लेंगे।

■ *क्योंकि ईस्वी सन् जनवरी आदि मास व स्टैं. टा. का ही प्रयोग सर्वसाधारण द्वारा किया जाता है और इससे गणितप्रक्रिया कुछ सहज भी हो जाती है, अतः अब हम वि. संवत् तथा चैत्र आदि मास व घड़ी–पलों की जगह ई. सन्, जनवरी आदि मास तथा स्टैं. टा. में ही दशाओं का समाप्तिकाल निकालेंगे।*

◈ *स्पष्टग्रह पंचांग में जिस दिन (तारीख) का दिया होता है, उस दिन (तारीख) को ग्रह की पंक्ति कहते हैं। पंक्ति के ग्रह पंचांग में जिस समय के दिए रहते हैं, उस समय को* ***'पंक्तिकाल'*** *कहते हैं।* ***जैसे– 'श्रीमार्तण्ड पंचांग' में दैनिक*** *स्पष्टग्रह प्रातः 5 घण्टा 30 मिनट के दिए रहते हैं, अतः यहां* ***'पंक्तिकाल'*** ***प्रातः 5 घं. 30 मि.है।***

◆ *यहां वार सर्वत्र पाश्चात्य पद्धति वाला (रात्रि के 12 बजे बदलने वाला) ही लिया जाएगा।*

* *जन्मकालीन दशेश की दशा के समाप्तिकालीन ई. सन् और जन्मकालीन ई. सन् के अन्तर को यहां* ***"प्रथम दशा की वर्षसंख्या"*** *लिखा गया है।*

हमारे उदाहरण में जन्म के ई. सन् 1997 से पूर्ववर्ती ई. सन् 1996 है। इस वर्ष के (ई. सन् 1996 वाले) पंचांग में हमारा दशा–समाप्तिकालीन स्पष्टसूर्य 2/21/59/41 (राश्यादि) 7 और 8 जुलाई वाली पंक्तियों के बीच पड़ता है।⊕ इन दोनों पंक्तियों वाले स्पष्टसूर्य के राश्यादि का अन्तर (सूर्यगति) 57/12 (कलादि) है। प्रथम पंक्ति वाले स्पष्टसूर्य 2/21/20/55 और दशा–समाप्तिकालीन स्पष्ट सूर्य 2/21/59/41 के अन्तर 38/46 (कलादि) को 24 से गुणा कर सूर्यगति (57/12) से भाग देकर दो लब्धियां 16 घं. 16 मि. मिलीं। इन्हें प्रथम पंक्ति के वार रविवार (1) और काल 5 घं. 30 मि. में जोड़ने पर 1 वार 21 घं. 46 मि. हुए। इसमें 1 वार 6 घं. 9 मि. जोड़े तो 3 वार 3 घं. 55 मि. हुए। इसमें प्रथम दशा (गुरु दशा) की वर्षसंख्या 11 द्वारा **"दशा–समाप्ति-कालकोष्ठक"** से प्राप्त 6 वार 19 घं. 41 मि. जोड़ देने पर 2 वार 23 घं. 36 मि. मिले। **इसका अर्थ हुआ कि–** गुरु की दशा 2 वार (चन्द्रवार) को रात्रि में 11 घं. 36 मि.(भा.स्टैं.टा.) पर समाप्त होगी। इसमें शनिदशा की वर्षसंख्या 19 द्वारा **"दशासमाप्ति–काल कोष्ठक"** से प्राप्त 2 वार 20 घं. 54 मि. जोड़ने पर 5 वार 20 घं. 30 मि. हुए। यह शनिदशा की समाप्ति का वार और काल (भा.स्टैं.टा.) है। इसी प्रकार इसमें (शनिदशा की समाप्ति के वार और काल में) बुध–दशा की वर्षसंख्या 17 द्वारा इसी कोष्ठक से प्राप्त वा. घ. मि. जोड़ने पर बुधदशा कीसमाप्ति का वार और काल मालूम हो जाएगा। इसी प्रकार शेष ग्रहों की दशाओं की समाप्ति के वार–काल मालूम हो जाएंगे। नीचे दिए गए चक्र में इस उदाहरण के सभी ग्रहों की दशासमाप्ति के वार और काल दर्साए गए हैं–

दशासमाप्तिकाल–चक्र

[जन्मतारीख 9–3–97, समय प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.)]

दशेश	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्र	मंगल
दशासमाप्ति–वर्ष (ई. सन्)	2008	2027	2044	2051	2071	2077	2087	2094
दशासमाप्ति–वार	चं.	गु.	शु.	र.	गु.	गु.	बु.	शु.
दशा समाप्तिकाल (घं. मि.) (भा.स्टैं.टा.)	23/36	20/30	5/6	00/10	3/13	16/8	5/40	00/44
दशासमाप्ति–तारीख	7 जुला.	8 जुला.	8 जुला.	9 जुला.	9 जुला.	8 जुला.	9 जुला.	9 जुला.

इसप्रकार दशाओं की समाप्ति के वर्ष (ई. सन्) और वार ज्ञात हो जाते हैं। इनकी तारीखों का निर्णय इसप्रकार करना चाहिए–

जन्मकालिक ई. सन् से पूर्ववर्ती ई. सन् में जिस तारीख को दशा–समाप्तिकालिक स्पष्टसूर्य उपलब्ध होता है, प्रत्येक दशा की समाप्ति के समय लगभग वही तारीख होती है। इस तारीख में अधिक से अधिक दो दिन का अन्तर हो सकता है। यथार्थ तारीख का निर्णय दशा–समाप्तिकालिक वार द्वारा कर लेना चाहिए (अर्थात् दशा–समाप्तिकालिक वार इस तारीख की समीपस्थ जिस तारीख को हो उसे ही दशा–समाप्तिकालिक यथार्थ तारीख समझना चाहिए)। हमारे उदाहरण में दशा–समाप्तिकालिक स्पष्टसूर्य (2/21/59/41) ई. सन् 1996 (जन्मवर्ष से पूर्ववर्ती वर्ष) में 7 जुलाई को उपलब्ध होता है। अतः यहां प्रत्येक दशा की समाप्ति के समय लगभग 7 जुलाई होगी– यह स्पष्ट है। सभी दशाओं के समाप्तिकालिक वारों के अनुसार दशा–समाप्तिकाल की यथार्थ तारीखों का निर्णय करके उन्हें ऊपर दिए गए **"दशा–समाप्तिकाल–चक्र "** की अन्तिम पंक्ति में लिख दिया गया है।

दशा–समाप्तिकाल में घं. मि. तक की सूक्ष्मता ला सकना क्या सम्भव है ?

दशासमाप्ति के सूक्ष्मकाल कानिर्णय करने की गणितप्रक्रिया ऊपर दे दी गई है। लेकिन इस

⊕ *क्योंकि 7 जुलाई को स्पष्ट सूर्य 2/21/20/55 और 8 जुलाई को 2/22/18/7 है।*

प्रक्रिया द्वारा तभी अपेक्षित सूक्ष्म परिणाम प्राप्त किया जा सकता है, जबकि जन्मकालिक स्पष्ट चन्द्रमा के भोगांश या उसके भयात, भभोग में अपेक्षित सूक्ष्मता हो।

दशा–समाप्ति के काल में मिनट तक की सूक्ष्मता लाना संभव नहीं है, भले ही चन्द्रमा का भोगांश प्रतिविकला तक शुद्ध क्यों न हो ? चन्द्र के भोगांश में एक प्रतिविकला की अशुद्धि होने पर सूर्य के दशासमाप्ति–काल में 1 मिनट और शुक्र के दशा–समाप्तिकाल में 4 मिनट की अशुद्धि आती है।

इष्टकाल में एक सेकण्ड की अशुद्धि से चन्द्रमा के भोगांश में 33 प्रतिविकला की अशुद्धि उत्पन्न होती है, जिससे सूर्य और शुक्र के दशा–समाप्तिकालों में क्रमशः 30 मिनट और 2 घण्टे की अशुद्धि हो जाती है। इसी प्रकार इष्टकाल में 20 सेकण्ड की अशुद्धि (जिससे चन्द्र के भोगांश में 11 विकला की अशुद्धि पैदा होती है) सूर्य एवम् शुक्र के दशा–समाप्तिकालों में क्रमशः 12 और 40 घण्टे की अशुद्धि पैदा करती है।

इष्टकाल में सेकण्ड तक की सूक्ष्मता भी तभी संभव है, जबकि जातक का जन्मकाल एवम् जन्मस्थानीय सूर्योदयकाल सेकण्ड तक शुद्ध हों। क्योंकि जन्मकाल और सूर्योदयकाल घण्टा, मिनटों में ही ज्ञात किए जाते हैं, सेकण्डों की वहां उपेक्षा कर दी जाती है, अतः प्रत्येक जातक के जन्मकाल में एक मिनट तक की अशुद्धि हो सकती है। स्थानीय सूर्योदयकाल में सेकण्ड तक की सूक्ष्मता ला पाना भारी समस्या है।

जन्मकाल, इष्टकाल और सूर्योदयकाल में कितनी अशुद्धि होने पर चन्द्रभोगांश एवम् दशासमाप्ति–काल में कितना अन्तर आता है– यह नीचे दिए गए कोष्ठक में दिखाया गया है–

जन्मकाल, इष्टकाल या सूर्योदयकाल में अशुद्धि	चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अन्तर	शुक्रदशा में अन्तर
सेकण्ड	वि./प्र. वि.	घण्टा	दिन–घण्टा
1	0/33	$\frac{1}{2}$	0/ 2
5	2/45	3	0/10
10	5/30	6	0/20
20	11/00	12	1/16
30	16/30	18	2/12

इस कोष्ठक से स्पष्ट है कि– जन्मकाल, इष्टकाल या सूर्योदयकाल में कुछ सेकण्डों की अशुद्धि से भी ग्रहों के दशा–समाप्तिकाल में इतना अधिक अन्तर आ जाता है, जिससे तात्कालिक लग्न का शुद्ध निर्णय नहीं हो सकता और इसीलिए दशा–प्रवेशकालिक लग्नकुण्डली–द्वारा दशा के शुभाशुभ फल का निर्णय करने वाले सिद्धान्त को क्रियान्वित कर पाना संभव नहीं है।

हमारे प्राचीन ज्योतिषग्रन्थों (ब्रह्मसिद्धान्त, सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव आदि) द्वारा अलग–अलग स्पष्ट किए गए एक ही समय के चन्द्रभोगांशों में परस्पर कई कलाओं तक का अन्तर रहता है। अतः इन विभिन्न ग्रन्थों के अनुसार स्पष्ट किए गए जन्मकालीन चन्द्रभोगांशों में इस अन्तर के कारण जातक के दशा–समाप्तिकालों में दिनों, अनेक स्थितियों में तो मासों का भी अन्तर रहता है– यह बहुत कम दैवज्ञ जानते हैं।

नवीन (चित्रापक्षीय दृक्सिद्ध) पद्धति (जिसके आधार पर भारत के लगभग शत–प्रतिशत पंचांग आजकल तैयार होते हैं) और सूर्यसिद्धान्त आदि प्राचीन पद्धतियों (जिनके अनुसार आज से 50–60 वर्ष पहले तक सभी भारतीय पंचांग तैयार होते रहे हैं) द्वारा स्पष्ट किए गए चन्द्रभोगांशों में 2 अंश से भी अधिक तक का अन्तर पाया जाता है। जिससे इन दोनों (नवीन और प्राचीन) पद्धतियों के अनुसार दशा–समाप्तिकाल अक्सर समान नहीं आते। इनमें 3 वर्ष तक का अन्तर कई बार देखा जाता है। इस अन्तर का

प्रभाव दशा-समाप्तिकाल पर तो पड़ता ही है, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशाओं के समाप्तिकालों पर तो यह प्रभाव अत्यन्त असह्य होता है, जिससे इन दोनों पद्धतियों के अनुसार अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशाओं के स्वामी बिलकुल बदल जाते हैं और दशासम्बन्धी फलादेश बिलकुल उलट–पुलट हो जाता है।

B.V. Raman (बंगलोर) ने जो अयनांश स्वीकार किए हैं, उनके अनुसार स्पष्ट किए गए चन्द्रभोगांश चित्रापक्षीय चन्द्रभोगांशों से तो हमेशा 1 अंश 27 कला अधिक रहते हैं, जिससे B.V. Raman पद्धति और चित्रापक्षीय पद्धति से स्पष्ट किए गए दशा–समाप्तिकालों में 8 से 27 महीनों तक का अन्तर हमेशा रहता ही है, जिसके परिणामस्वरूप अन्तर्दशाओं के स्वामी ग्रह इन दोनों पद्धतियों से अक्सर भिन्न–भिन्न होते हैं। प्रत्यन्तर्दशाओं के स्वामी तो इन दोनों पद्धतियों से कभी मेल खाते ही नहीं हैं। स्पष्ट है– इन दोनों पद्धतियों से स्पष्ट की गई दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के फलादेश में अनेकत्र भारी विरोध रहता है।

भयात, भभोग या चन्द्र की दैनिक गति द्वारा त्रैराशिक से स्पष्ट किए गए इष्टकालिक चित्रापक्षीय दृक्तुल्य चन्द्रभोगांश में भी 4 कला तक की स्थूलता (अशुद्धि) रहती है, जिससे दशासमाप्ति–काल में 11 से 36 दिन तक का अन्तर हो जाता है। इस अन्तर के कारण अधिकतर प्रत्यन्तर्दशाओं के काल तो अशुद्ध हो ही जाते हैं।

स्पष्ट चन्द्रमा में कितनी अशुद्धि से दशासमाप्ति–काल में कम से कम (दशेश सूर्य की स्थिति में) और अधिक से अधिक (दशेश शुक्र की स्थिति में) उत्पन्न होने वाली अशुद्धि कितनी होगी, इसका विवरण नीचे कोष्ठक में दिया गया है–

चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अशुद्धि	शुक्रदशा में अशुद्धि	चन्द्रभोगांश में अशुद्धि	सूर्यदशा में अशुद्धि	शुक्रदशा में अशुद्धि
अं. क.	दिन	दिन	अं. क.	दिन	दिन
0/1	3	9	0/20	54	180
0/2	5	18	0/30	81	270
0/3	8	27	1/00	162	540
0/4	11	36	2/00	324	1080
0/10	27	90	3/00	486	1620

इस विवेचन का सारांश यह है कि– किसी ग्रह के दशासमाप्ति–काल को मिनट या घण्टा तक की सूक्ष्मता से ज्ञात करने का गणितीय प्रयास अर्थहीन है, क्योंकि अनेकत्र तो दिन तक की सूक्ष्मता प्राप्त कर पाना भी सम्भव नहीं है। इतनी सूक्ष्मता प्राप्त करने के लिए जन्मकाल, सूर्योदयकाल और चन्द्रभोगांश में जो सूक्ष्मता अपेक्षित है, उसे प्राप्त कर सकना गणक के सामर्थ्य से बाहिर है। व्यवहार में लाई जाने वाली काल की सूक्ष्मता की भी एक सीमा है, जिसका अतिक्रमण सम्भव नहीं है। अतः स्पष्ट है– दशा–प्रवेशकालिक लग्नकुण्डली द्वारा दशाफल के निर्धारण के लिए जातकशास्त्रों द्वारा किया गया निर्देश कोई अर्थ ही नहीं रखता। इसलिए यही उचित है कि– दशासमाप्ति का लगभग दिन ही ज्ञात कर लिया जाए। दशासमाप्तिकालीन सूर्य के राश्यादि जिस तारीख को पड़ते हैं, उसी तारीख को सभी दशाओं की समाप्तितारीख मान लेना ही ठीक है।

इस उपरोक्त प्रतिपादन से यह सिद्ध होता है कि– " ग्रहों की दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के गणितागत प्रारम्भकाल से ही उनका शुभाशुभ प्रभाव प्रारम्भ हो जाता है" – दैवज्ञों द्वारा इस प्रकार की धारणा रखना सर्वथा अयुक्त है, क्योंकि उल्लिखित अनेक अपरिहार्य कारणों से दशा, अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशाओं के प्रारम्भकाल का मास और अनेकदा वर्ष भी विश्वसनीय,(प्रामाणिक) सिद्ध नहीं होता, दिन और घण्टा–मिनटों की बात तो बहुत दूर की है।

किस ग्रह का रत्न धारण करें ?

लेखक-प्रो. प्रियव्रत शर्मा,

[जो ग्रह अशुभ फल करता है, उसकी शान्ति के लिए उसी ग्रह का रत्न पहना जाए- एक मत यह है। कुछ दैवज्ञ इसे नहीं मानते। वे उस ग्रह के रत्नधारण का परामर्श देते हैं, जन्मकुण्डली में जिसकी स्थिति अशुभफलदायी ग्रह के सर्वथा विपरीत तत्सम्बद्ध शुभफल देने वाली है। कौन-से मत को मान्यता दें-अनेक दैवज्ञ इस दुविधा में हैं। यह लेख इस विषय में उनके सन्देह, भ्रान्ति को दूर करेगा।]

दूसरों के भविष्य-पथ को उजागर करने वाले इस ज्योतिःप्रदीप के नीचे भी कम तमस् नहीं है। इसके साहित्य को गंभीरता और अशेषता से स्वाध्याय करने वाला प्रत्येक तर्कशील व्यक्ति पदे-पदे उपलब्ध होने वाले परस्पर विरुद्ध नियमों से झुंझलाकर इस शास्त्र की प्रामाणिकता को सन्देह की दृष्टि से देखने लगता है। नितान्त आश्चर्य की बात तो यह है कि- इन स्पष्ट तथा परस्पर प्रतिकूल नियमों, सिद्धान्तों के समर्थक दैवज्ञों के भिन्न-भिन्न वर्ग, जो संख्या में भी एक दूसरे के वर्ग से प्रतिद्वन्द्विता करते हैं, अपने-अपने मत को प्रतिज्ञापूर्वक प्रामाणिक, विश्वसनीय (यथार्थ फल देने वाला) बतलाते हैं। क्योंकि दोनों वर्गों द्वारा आदिष्ट (Predicted) फलों में समानरूप से अपवाद और सत्यता मिलती है, यही कारण है कि- दोनों वर्गों में से किसी एक की प्रामाणिकता आज शताब्दियों बाद भी अन्तिमरूप से प्रतिष्ठापित नहीं हो सकी है। उनमें मतभेद वैसे का वैसा स्थिर बना हुआ है। ऐसी अनिश्चयात्मक स्थिति में किसी एक मत की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए शास्त्रवाक्यों का ही अधिकतर सहारा लिया जाता है। जिस पक्ष के समर्थन में अधिकाधिक शास्त्रवाक्य मिलें, उसे प्रामाणिक मानने की भी एक परम्परा है। **वराहमिहिर** ने फलित नियमों, योगायोगों में इस प्रकार के मतभेदों का निर्णय शास्त्रीय बहुमत से ही करके अपने फलित ग्रन्थ लिखे हैं। यद्यपि बहुमत के आधार पर प्रतिष्ठापित सिद्धान्त सर्वत्र तर्कनिकष पर खरे नहीं उतरते, पुनरपि विकल्पान्तर के अभाव में हम भी निर्धारक अन्य कुछ प्रमाणों, तर्कों के साथ इसका भी प्रयोग एक ऐसे ही विवादास्पद फलितशास्त्रीय विषय के निर्धारण में करेंगे, जो फलितज्ञों को दुविधा में डाले हुए है। वह विषय है-" **रत्नधारण।** "

दैवज्ञ लोग जब जातक की कुण्डली से किसी भाव पर कुप्रभाव डाल रहे किसी ग्रह को (जो उस भाव का स्वामी, कारक, द्रष्टा या उस भाव से किसी प्रकार सम्बद्ध है) देखते हैं तो वे उस ग्रह के कुफल को शान्त करने के लिए जातक को उस ग्रह का दान-जप करने के साथ-साथ कोई रत्नधारण करने का भी परामर्श देते हैं। कुछ दैवज्ञ उसी ग्रह का रत्न धारण करने का परामर्श देते हैं, जो भाव को साक्षात् दूषित कर रहा हो। उनका मत है कि- वह कुप्रभावी ग्रह अपने रत्न को धारण करने वाले जातक पर सन्तुष्ट होकर अपना कुफल समेट लेता है। दूसरे कुछ दैवज्ञों का मत है कि- कुप्रभावी ग्रह के रत्न के स्थान पर उस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए, कुण्डली में जिसकी स्थिति उस भाव को पुष्ट कर रही हो। इन दैवज्ञों का तर्क है कि- कुफलदायी ग्रह का रत्न धारण करने से तो वह ग्रह बलशाली बनकर उस भाव को और भी कुप्रभावित करेगा। इसलिए उस ग्रह का रत्न नहीं पहनना चाहिए। वे परामर्श देते हैं कि- उस भाव के लिए शुभ स्थिति वाले ग्रह के रत्न को ही धारण करना चाहिए, ताकि वह ग्रह शक्तिशाली होकर भाव को और भी पुष्ट करे। लेकिन उपलब्ध ज्योतिषशास्त्रीय सिद्धान्त के अनुसार उनका यह तर्क ठीक नहीं हैं। क्योंकि ग्रह तभी कुफल देता है जबकि- वह निर्बल स्थिति में हो। प्रबल ग्रह ही शुभफल देता है, भले ही वह क्रूर (पापी) क्यों न हो। नीचस्थ, अस्त, शत्रुराशिस्थ, शत्रुवर्गस्थ, दुःस्थानस्थ, शत्रु-पापदृष्ट ग्रह निर्बल होता है। ऐसा निर्बल ग्रह जिस भाव से सम्बद्ध होगा, उसे दूषित करेगा, उससे सम्बद्ध अशुभ फल देगा। जो ग्रह उच्चस्थ, शुभ/मित्र-ग्रह-दृष्ट-युत, शुभ-मित्रवर्गस्थ होगा, वह बलवान् होगा। ऐसा ग्रह अपने से सम्बद्ध भाव को पुष्ट करता है। उससे सम्बद्ध शुभ फल देता है। अपनी दशा-अन्तर्दशाओं में मंगलकारी माना जाता है। यह नियम शुभ और पापी दोनों प्रकार के ग्रहों के लिए समान है। जातक एवं संहिता-ग्रन्थ इसमें प्रमाण हैं। " **पापीग्रह बलवान् होने पर अधिक अशुभ करता है**"- इस

आशय के भी कुछ वाक्य हमारे फलित ग्रन्थों में यत्र–तत्र मिलते हैं (शायद इसी के आधार पर अशुभ फलदायी ग्रह के रत्न धारण करने के पक्ष में कुछ दैवज्ञ नहीं हैं)। लेकिन इन वाक्यों का दूसरे ऐसे असंख्य वाक्यों से विरोध पाया जाता है, जो उच्चस्थ, शुभ–मित्र-वर्गस्थ, शुभ–मित्र–दृष्ट–युत, अनस्तंगत, षड्बलयुत पापीग्रहों का दशा–अन्तर्दशा, भाव एवम् राशि में स्थिति का फल पूर्णरूपेण शुभ बतलाते हैं। सबल पापीग्रह की शुभफल देने की शक्ति का निर्देश करने वाले असंख्य वाक्य जातक–मुहूर्त–प्रश्न-ग्रन्थों में पदे–पदे मिलते हैं। सभी जातकपद्धतियां भी बली पापग्रह को शुभफलप्रद ही सिद्ध करती हैं। इन ग्रन्थों में बली और निर्बल ग्रहों के क्रमशः शुभ और अशुभ फलों का स्पष्ट निर्देश बतलाता है कि– ग्रह की **"बलशालिता"** का अर्थ है, उसकी **"शुभफल देने की शक्ति"** और **"बलहीनता"** का अर्थ है, उसकी **"शुभफल दे सकने में असमर्थता"। उदाहरण देखिए–** यदि नवमेश (भाग्येश) चाहे वह मंगल (क्रूरग्रह) हो या गुरु (शुभग्रह) नीच राशि में स्थित, अस्त, शत्रुवर्गगत, शत्रुदृष्ट हो तो वह निर्बल ही होगा। ऐसा भाग्येश जातक को भाग्यहीन ही बनाएगा। यदि वह भाग्येश उच्चराशिस्थ, मूलत्रिकोणगत, उदित, मित्र–शुभवर्गस्थ, शुभ–मित्रदृष्ट, त्रिकोणगत होगा तो वह बलवान् होगा। ऐसा बलवान् भाग्येश जातक को सौभाग्यशाली बनाएगा। इससे यह स्पष्ट है कि– किसी भी भाव का शुभ या अशुभ फल उस भाव के स्वामी की (चाहे वह पापी हो या शुभ ग्रह) क्रमशः सबलता और निर्बलता पर ही आधारित है। ग्रह जितना अधिक निर्बल या सबल होगा, उस द्वारा उत्पन्न फल क्रमशः उतना ही अधिक अशुभ या शुभ होगा। सभी जातक एवम् संहिता ग्रन्थ निरपवादरूप से इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है–" **कुफलप्रद ग्रह के रत्न धारण से वह ग्रह बलशाली होकर कुफल की वृद्धि करता है**"– यह आशंका सर्वथा विपरीत चिन्तन का परिणाम है। इस प्रकार की कल्पना ज्योतिषशास्त्र के प्रणेता ऋषियों, मुनियों द्वारा प्रतिपादित ग्रहसम्बन्धी शुभाशुभ फल के निर्धारक मूलभूत सिद्धान्तों के सर्वथा प्रतिकूल है।

अपि च– ग्रह के कुफल की शान्ति के लिए हमारे ज्योतिषशास्त्र तथा कर्मकाण्ड में ग्रह के जप, पाठ, दान का प्रचुर निर्देश है। सभी दैवज्ञ जानते हैं कि– यह जप, दान, पाठ उसी ग्रह के लिए किया जाता है, जो निर्बल होता है, जो जातक की कुण्डली में नीचादि स्थिति आदि के कारण किसी भावविशेष को दूषित कर रहा होता है। इस प्रकार के अनुष्ठान में कुफलप्रद ग्रह के ही मन्त्रों का जप, पाठ और तत्सम्बद्ध धान्य, स्वर्ण, रत्न आदि का ही दान किया जाता है।

प्रमाणार्थ **'ज्योतिर्निबन्ध'** के ये कुछ वाक्य देखिए, जहां निर्देश है कि– अमुक दुष्ट (दोष–युक्त=कुफलप्रद) ग्रह से उत्पन्न अरिष्ट (कुफल या क्लेश) की निवृत्ति के लिए यह दान करना चाहिए।

इस ग्रन्थ के इस वाक्य में उस सूर्य के लिए लाल वस्त्र, गुड़, स्वर्ण, ताम्बा और माणिक्य रत्न आदि का दान लिखा है, जो जन्मकुण्डली में सदोष स्थिति वाला (दुष्ट=कुफलदायी) हो–

" कौसुम्भवस्त्रं गुड़ –हेमताम्रं माणिक्य–गोधूम–हिरण्य–पद्मम्।
सवत्सगोदानमिति प्रणीतं – दुष्टाय सूर्याय मसूरिकाश्च।।"

इस ग्रन्थ का यह पद्य बतलाता है कि– चन्द्रमा से उत्पन्न अरिष्ट (कुफल) को शान्त करने के लिए घृत, कलश, श्वेत वस्त्र, मोती आदि का दान करना चाहिए–

" घृतकलशं सितवस्त्रं दधि–शंख–मौक्तिक–सुवर्णञ्च।
रजतं च शंखं दद्याच्चन्द्रारिष्टोपशान्तये।।"

इसी ग्रन्थ का यह श्लोक दुष्ट (दोषकारक) मंगल को संतुष्ट करने के लिए मूंगा, गोधूम आदि दान का निर्देश करता है–

" प्रवाल- गोधूम–मसूरिकाश्च वृषश्च ताम्रं करवीरपुष्पम्।
आरक्तवस्त्रं गुड–हेमताम्रं दुष्टाय भौमाय सचन्दनञ्च।।"

इस प्रकार अन्य दोषकारक ग्रहों के दान भी इस ग्रन्थ में लिखे हैं।

अन्य अनेक ज्योतिष–ग्रन्थों में जहां इसी प्रकार जातक की कुण्डली में दुःस्थिति के कारण कुफल–दायी सूर्यादि ग्रहों को प्रसन्न करने के लिए तत्तद्ग्रहों से सम्बद्ध माणिक्य आदि रत्नों तथा अन्य पदार्थों का दान करने के लिए जातक को निर्देश दिए गए हैं, वहां साथ यह भी लिखा है कि– इन कुफलप्रद ग्रहों की सन्तुष्टि के लिए इनके माणिक्य आदि रत्नों का दान ही नहीं, अपितु जातक को इन ग्रहों से सम्बद्ध ये रत्न आदि पदार्थ, जो शरीर पर धारण किए जा सकें, स्वयं भी धारण करने चाहिएं–

"यद् यद् ग्रहस्य यद्द्रव्यं तत्तस्मिन् विषमे स्थिते।
दद्यात्सत्कृत्य विप्रेभ्यः स्वयं च बिभृयात्ततः।।"

[अर्थात् जो ग्रह कुण्डली में विषम स्थिति वाला (दोषकारक) हो, उस ग्रह के लिए शास्त्रों में बतलाए गए माणिक्य आदि रत्न, रक्त, पीत आदि वस्त्र, स्वर्ण, रजत आदि धातुओं का जातक दान भी करे और उन्हें स्वयं भी अपने शरीर पर धारण करें।]

"ज्योतिषतत्त्व–सुधार्णव" का यह वाक्य भी स्पष्ट कहता है कि– जब सूर्य आदि विगुण (सदोष = कुफलप्रद) हों तब उनकी शान्ति के लिए क्रमशः माणिक्य, वैडूर्य, मूंगा, पद्मराग, मोती, हीरा, नीलम, गोमेद और मरकत धारण करना चाहिए–

" माणिक्यं विगुणे सूर्ये वैडूर्यं शशलाच्छने।
प्रवालं भूमिपुत्रे च पद्मरागं शशांकजे।।
गुरौ मुक्तां भृगौ वज्रं इन्द्रनीलं शनैश्चरे।
राहौ गोमेदकं धार्यं केतौ मारकतं तथा।।"

(यहां चन्द्र, गुरु और केतु के रत्न प्रचलित रत्नों से भिन्न लिखे गए हैं, अन्य कई ग्रन्थों में इस प्रकार की भिन्नता मिलती है।)

कालिदास ने भी **" ज्योतिर्विदाभरण"** में रुष्ट सूर्यादि ग्रहों की तुष्टि के लिए उनके रत्न और धातुओं को धारण करने का जातक को इस पद्य में परामर्श दिया है–

" आरेनयोः विद्रुमिन्दु–धिष्ण्ययोः तारं विदः कर्बुरमिन्द्रमन्त्रिणः।
मुक्ताफलं धार्यमयश्च तुष्टये यमस्य लाजावलयं किलान्ययोः ।।"

(अर्थात्– मंगल, सूर्य की तुष्टि के लिए मूंगा; चन्द्र, शुक्र के लिए चान्दी; बुध के लिए सोना; गुरु के लिए मोती; शनि के लिए लोहा और राहु–केतु के लिए लाजावर्त धारण करना चाहिए।)

कश्यप ऋषि भी दोषकारक सूर्यादि की संतुष्टि के लिए उनके माणिक्य आदि धारण करने का परामर्श इस प्रकार देते हैं–

"सूर्यादीनां च सन्तुष्ट्यै माणिक्यं मौक्तिकं तथा
सुविद्रुमं मारकतं पुष्परागं च वज्रकम्।
नील–गोमेद–वैदूर्यं धार्यं स्व–स्व–दृढक्रमात्।।"

सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् **श्रीपति** भी अशुभ फल देने वाले ग्रहों का रोष शान्त करने के लिए उनके अपने–अपने रत्नों के धारण करने का सुझाव देते हैं–

" धार्यं तुष्ट्यै विद्रुमं भौम–भान्वोः।
रूप्यं शुक्रेन्द्वोश्च हेमेन्दुजस्य।।
मुक्ता सूरेः लौहमर्कात्मजस्य।
लाजावर्त्तः कीर्तितः शेषयोश्च।।"

(इस श्लोक का अर्थ वही है, जो ऊपर उद्धृत **" ज्योतिर्विदाभरण"** के पद्य का है।)

इस तरह अन्य सभी भारतीय ज्योतिष–ग्रन्थों में जहां ग्रह के अशुभ फल निवारण के प्रतीकार की बात चर्चित है, निरपवादरूप से यही निर्देश दिया गया है कि– जातक को क्लेशप्रद ग्रह से सम्बद्ध रत्न धारण तथा उस ग्रह के निमित मन्त्र जप–दान करना चाहिए। उस अशुभ फल के विपरीत शुभफल देने वाली स्थिति वाले ग्रह का रत्न धारण कर उसके निमित मन्त्रजप, दान द्वारा शुभफल प्राप्त करने की बात तो उन प्राचीन भारतीय फलित (जातक, मुहूर्त्त, संहिता, प्रश्न आदि) के किसी भी ग्रन्थ में नहीं मिलती।

किंच– विवाह आदि शुभ मंगलकृत्यों के मुहूर्त्तकाल में भी यदि कोई ग्रह लग्न को दूषित कर रहा होता है (जैसे विवाहलग्न में सप्तमस्थ चन्द्र–गुरु, द्वादशस्थ शनि आदि तथा यात्रा में सम्मुख शुक्र आदि), तब उसी दोषकारक गुरु–चन्द्र–शनि–शुक्रादि का ही दान–पूजा करने का शास्त्रीय विधान है। मुहूर्त्त के समय इनसे उत्पन्न दोष के प्रतिकूल शुभफल देने वाले ग्रहों की वहां पूजा करने का कोई निर्देश नहीं है।

अपि च–"अनिष्टकारी ग्रह का रत्न धारण करने से वह ग्रह बलशाली बन कर और भी अधिक अनिष्ट करेगा"– जो लोग यह मत रखते हैं, उनके इस मतानुसार तो अनिष्टकारी ग्रह का मन्त्र–जप, पूजा और दान भी उस ग्रह को बलशाली बनाकर उसके अनिष्टफल की वृद्धि का कारण ही बनेगा। लेकिन ध्यान रहे– अनिष्ट फलप्रद ग्रहों को उनके मन्त्रजाप आदि द्वारा अनुकूल बनाने की इस प्रक्रिया को सर्वथा विपरीत फलकारी बतलाने का एक मात्र अभिप्राय यह होगा कि– भारतीय ज्योतिष एक प्रवंचनाशास्त्र है, जो शताब्दियों, सहस्राब्दियों से लोगों को ग्रहपीड़ानिवारण के लिए इस प्रकार के प्रतीकार का परामर्श देता और उनसे ये प्रतिकार करवाता भी चला आ रहा है। **" यह प्रतिकार–पद्धति सर्वथा विपरीत फलप्रद है"–** यह कोई भी भारतीय दैवज्ञ एवम् ज्योतिष पर आस्था रखने वाला सामान्य–जन भी सोच नहीं सकता, क्योंकि भारतीय ज्योतिष –साहित्य इस प्रकार की प्रतिकार–प्रक्रिया द्वारा ही ग्रहों के अनुग्रह की उपलब्धि पर विश्वास रखता है। इस प्रकार के और भी असंख्य ऐसे प्रमाण भारतीय ज्योतिष–ग्रन्थों से उद्धृत किए जा सकते हैं, जो रत्नधारण, दान, जप आदि द्वारा अशुभ–फलप्रद ग्रह को संतुष्ट करने के सिद्धान्त का एक–स्वर से समर्थन करते हैं। जिनसे यह सर्वथा प्रमाणित हो जाता है कि– **" दुष्ट ग्रह के रत्नधारण से उसके कुफल की वृद्धि होती है"–** यह एक निर्मूल एवम् भ्रामक तथाकथित सिद्धान्त है।

शुभफल देने वाले ग्रह का रत्न धारण करने से शुभफल की वृद्धि होती है– इस सिद्धान्त का भी प्रतिवाद नहीं किया जा सकता। क्योंकि ग्रह भी अपनी पूजा, मन्त्रजप, दान तथा अपने रत्न के धारण से प्रसन्न या बलवान् होकर जातक के प्रति कृपावान् हो जाते हैं– यह बात शास्त्रों द्वारा प्रतिपादित है। जब रुष्ट (कुफलदायी) ग्रह जातक द्वारा किए गए मन्त्रजप, दान तथा रत्न–धारण से संतुष्ट होकर उसे सुफल देने में प्रवृत्त हो जाते हैं तो **'समान न्याय'** से शुभफलदायक ग्रहों को भी जातक द्वारा किए गए स्वमन्त्रजप, दान तथा स्वरत्न–धारण से संतुष्ट होकर जातक को स्वसम्बद्ध शुभफल और भी अधिक मात्रा में देने के लिए प्रवृत्त होना ही चाहिए– इस सिद्धान्त का भी हमारे शास्त्र समर्थन करते हैं। यही कारण है कि– **सभी मांगलिक कृत्यों के प्रारम्भ में नवग्रहपूजन हमारी परम्परा का एक अंग है।** इस नवग्रहपूजा का उद्देश्य यही है कि– कुफलदायी ग्रह प्रसन्न होकर सुफल दें और सुफलदायी ग्रह प्रसन्न होकर अपने सुफल में और वृद्धि करें।

हमारे ज्योतिर्ग्रन्थों में नवरत्न–मुद्रिका–धारण का निर्देश भी इसी उद्देश्य से किया गया है कि– इसके धारण से जातक की कुण्डली में दुःस्थिति वाले ग्रहों के अशुभफल निवृत्त और सुस्थिति वाले ग्रहों के सुफल प्रवृद्ध हों। यदि दुःस्थिति वाले ग्रह का रत्न धारण करने से उसके कुफल की वृद्धि का वह तथाकथित सिद्धान्त यथार्थ होता तो नवरत्नमुद्रिका–धारण का परामर्श हमारे शास्त्र न देते, क्योंकि इस मुद्रिका में कुफलदायी ग्रहों के रत्न भी तो समाविष्ट होते हैं। मेरा विचार है कि– जो लोग ग्रहों द्वारा उत्पादित कुफल और सुफल की रत्नधारण द्वारा निवृति और प्रवृति पर विश्वास रखते हैं, उन्हें नवरत्न–मुद्रिका ही धारण करनी चाहिए। राजा लोग अपने आभूषणों और मुकुट में नवरत्न इसीलिए तो जड़ाते थे।

कई बार एक ही भाव को अनेक ग्रह दूषित करते हैं। ऐसी स्थिति में भाव को सर्वाधिक दूषित करने वाले ग्रह का रत्न धारण करना तो अनिवार्य है ही, इसके साथ ही दूषित भाव के स्वामी ग्रह का भी रत्न यदि जातक पहिने तो परिणाम द्रुत एवम् अधिक अच्छा होगा। यदि कोई जातक अनेक रत्नों को धारण करने से संकोच नहीं करता तो उसे उस भाव के कारक–ग्रह का रत्न भी पहिनना चाहिए, क्योंकि भाव के शुभ–अशुभ फल का सर्वाधिक उत्तरदायित्व भावेश और भावकारक– दोनों की सबलता और निर्बलता पर निर्भर करता है।

रत्न कब धारण करना चाहिए– इसका निर्णय भावों की प्रकृति पर निर्भर करता है। भाव दो प्रकार के हैं– कुछ भावों का सम्बन्ध जातक के समस्त जीवन से (जन्म से मरणपर्यन्त) रहता है। कुछ भाव उसकी (जातक की) आयु, व्यवसाय, स्थिति तथा उसके जीवन की किसी घटना–विशेष से सम्बन्ध रखते हैं।

पहले प्रकार के भावों में लग्न, भाग्य और मृत्यु भाव आते हैं। क्योंकि आरोग्य, सम्पन्नता, यश–प्रतिष्ठा और दीर्घायु– ये सभी जातक के लिए आजीवन अपेक्षित हैं। इन भावों को दूषित करने वाले ग्रह और इन भावों के स्वामी एवम् कारक ग्रहों के रत्न जातक को बाल्यावस्था से ही धारण कर लेने चाहिएं। **" ग्रहों का प्रभाव उनकी दशान्तरदशा में विशेष रूप से होता है।"** इस में सन्देह नहीं है। लेकिन अन्य ग्रहों की महादशा में आने वाली अपनी अन्तर्दशा, प्रत्यन्तर्दशा और सूक्ष्म दशाओं में भी दूषक ग्रह अपना कुप्रभाव जातक पर डालते रहते हैं और ये अल्पकालीन प्रत्यन्तर्दशा एवम् सूक्ष्म दशाएं तो थोड़े–थोड़े अन्तराल पर घटित होती ही रहती हैं। अतः जातक को दोषी ग्रह की इन कुफलप्रद छोटी–छोटी कालावधियों में अपने आपको सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सतर्कता की दृष्टि से उनके रत्न हमेशा पहिने रहना चाहिए। यही कारण है कि–लग्न आदि आजीवन प्रभावी भावों के लिए रत्न भी आजीवन पहिनना हितकर है।

लग्न, भाग्य और मृत्यु भावों के अलावा शेष लगभग सभी भाव दूसरे प्रकार में आते हैं। यदि ये भाव दूषित हों तो जातक को उसी आयु, स्थिति आदि के समय में ही इनसे सम्बद्ध दोषपूर्ण ग्रहों के रत्न धारण करने चाहिएं, जब इन भावों के फल विशेषतः अपेक्षित हों। **उदाहरणार्थ**– यदि शिक्षासम्बन्धी भाव, ग्रह शिथिल है तो 5–6 वर्ष की अवस्था में ही तत्सम्बद्ध रत्न जातक को पहिना देना चाहिए। यदि सन्तान भाव ठीक नहीं है तो सन्तान के प्रतिबन्धक ग्रह का रत्न विवाह से कुछ पूर्व या अनन्तर पहिनना युक्ति–युक्त होगा। यदि एकादश (आय) भाव निर्बल है तो उससे सम्बद्ध ग्रह का रत्न व्यवसाय प्रारम्भ करने से पहले धारण करना लाभप्रद होगा। इस प्रकार दैवज्ञ को स्वबुद्ध्या रत्नधारण–सम्बन्धी निर्णय लेने चाहिएं।

सामान्यतः लगभग 50 प्रतिशत भाव अनेक जातकों के कुछ न कुछ दूषित या निर्बल होते ही हैं। वे यदि एक ही भाव के लिए दो–दो रत्न भी पहिनें तो सभी अंगुलियां रत्नमुद्रिकाओं से भर जाएंगी, जो देखने वालों को शायद रुचिकर न लगें। इसका एकमात्र प्रतिकार नवरत्न–मुद्रिका ही है, लेकिन यह सम्पन्न जातकों के लिए ही साध्य है।

हां, जो अर्थाभाव के कारण रत्न नहीं पहन सकते, वे उन ग्रहों को उनके मन्त्रजाप द्वारा भी अनुकूल बना सकते हैं– शास्त्र इसमें प्रमाण हैं। रत्नधारण के साथ–साथ यदि ग्रह के मन्त्र का जाप भी जातक करे तो परिणाम और भी अच्छा होगा।

यदि आप ज्योतिष का व्यवसाय करते हैं तो आपको आवश्यकता है **'अभिजित प्रकाशन'** की पुस्तकों की। **'अभिजित् प्रकाशन'** की पुस्तकों से सम्बद्ध जानकारी पृष्ठ 273 पर देखिए।

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्) , पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं भी मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

समस्या :– सं. 2072 वि. में 'होलिकादाह के दिन एवं काल' के सम्बन्ध में आपने व्यास मत्तानुसारी प्रामाणिक धर्मशास्त्रीय निर्णयात्मक विस्तृत विवेचन गतवर्षीय पंचांग में प्रकाशित किया। तदनुसार होलिकादाह–काल 23 मार्च, 2016 ई. को सायाह्न के समय आपने निर्धारित किया। अधिकतर पंचांगकारों ने अपने पंचांगों में इसे मान्यता दी। कुछ पंचांगकारों ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस बारे आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?

भंवरलाल,
जोधपुर।

समाधान–उन पंचांगकारों द्वारा वेदव्यास के मत को इसप्रकार निरस्कृत करना वेदव्यास के आर्षत्व की स्पष्ट अवहेलना है। क्योंकि इससे उनके मत का प्रवृत्तिक्षेत्र सर्वथा लुप्त हो जाता है, वह मत सर्वथा निरवकाश हो जाता है। जिसका अभिप्राय यही निकलता है कि– वे पंचांगकार श्री वेदव्यास जैसे पौराणिक महर्षि का आप्त नहीं समझते। बड़ा दुःखद आश्चर्य है।

(कृपया पाठक इस विषय पर लिखे सं. 2072 वि. के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ 285–289 पर दिए गए मेरे लेख को अवश्य पढ़ें। वे जान जाएंगे– इन पंचांगकारों ने क्या अक्षम्य गलती की है।)

समस्या :—सं. 2072 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में आपने 'नागपंचमी' 19 अगस्त, 2015 ई. को लिखी थी। कुछ पंचांगकारों ने इसे 20 अगस्त, 2015 ई. को लिखा था, ऐसा क्यों ?

श्रीयशोधर भट्ट, कैथमाजरी,
अम्बाला सिटी।

समाधान :— यह पर्व परविद्धा श्रावणशुक्ल पंचमी में करने का विधान है— **"श्रावणशुक्ल—पंचमी उदये त्रिमुहूर्त्ता परविद्धा ग्राह्या" – (धर्मसिन्धु)**। इसवर्ष यह पंचमी 20 अगस्त को पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में त्रिमुहूर्त्ता नहीं थी, जिससे यह वहां परविद्धा नहीं हुई। अतः इसे 19 अगस्त को पूर्णा (षष्टिघट्यात्मिका) पंचमी के दिन ही लिखना युक्त था।

ध्यान दें— यहां एक मुहूर्त्त दिनमान का 15वां भाग माना जाएगा। जो स्पष्टमान से होगा। दो घड़ियों का एक मुहूर्त्त **(मुहूर्तो घटिकाद्वयम्)** तो मध्यममान से होता है।

समस्या :—पंचांग में अयनांश केवल मास की पहिली तारीख का दिया रहता है, उसे इष्टकालिक कैसे बनाएं।

पं. राजेश शुक्ला,
चितौरी, इलाहाबाद।

समाधान :— अयनांश की वार्षिक गति केवल 51 विकला है। जिससे इसकी मासिक गति 4.3 विकला और साप्ताहिक गति केवल 1 विकला मात्र है। इस अनुसार आप इसका इष्टकालिक मान त्रैराशिक से जान सकते हैं।

समस्या :— त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला प्रदोष व्रत प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी के दिन किया जाता है। यदि त्रयोदशी दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी न मिले तब यह व्रत किस दिन किया जाए ?

पं. अम्बाप्रसाद मिश्र,
नाका चन्द्रबदनी लश्कर,
ग्वालियर (म.प्र.)।

समाधान :— प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह प्रदोष व्रत किया जाता है। यह नक्त व्रत है। अतः इसका तिथिनिर्णय नक्तव्रत के समान ही है। इस प्रकार दोनों दिन प्रदोष में त्रयोदशी की आंशिक या सम्पूर्ण व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे ही दिन होगा, जैसा कि **'कालमाधवकार'** का यह वचन है—

" प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।"

यहां **'धर्मसिन्धु'कार** का यह निर्णय कि— *"त्रयोदशी दोनों दिन असमान रूप से प्रदोष में व्याप्त हो तो प्रदोषव्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन प्रदोष को तिथि अधिक व्याप्त करती है, बशर्ते कि— वहां देवपूजा, भोजनादि के लिए समय पर्याप्त हो, अन्यथा वहां भी व्रत दूसरे ही दिन किया जाए।"*— तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि देवपूजादि के लिए पर्याप्त काल कितना है, यह निश्चित नहीं किया जा सकता। अतः उपरोक्त **'कालमाधव'कार** का मत ही मान्य है। **किंच**— यहां यह भी ध्यान देने योग्य है—**दोनों दिन त्रयोदशी की प्रदोष में अव्याप्ति की स्थिति में दूसरे दिन त्रयोदशी प्रदोष के गौणकाल (सायंकाल) को तो व्याप्त करती ही है। उस दिन वह प्रातः व्रतसंकल्प के समय भी साक्षात् विद्यमान होती है।**

समस्याएं और समाधान

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा, कोठी नं. 59, सेक्टर–6 (अभिजित्) , पंचकूला–134 109

फलित एवं गणित (सिद्धांत) ज्योतिष से सम्बद्ध अपनी समस्याएं मुझे भेजिए। आवश्यक समझने पर डाक से उत्तर देने का भी मेरा पूरा प्रयास रहता है। लेकिन इसके लिए कृपया जवाबी पत्र न डालिए। यदि मुझे आपकी समस्या का उत्तर पत्र द्वारा देना होगा, मैं अपने व्यय पर ही दे दूंगा। मुझे प्रतिदिन अनेक पाठकों की समस्याएं पत्रों द्वारा प्राप्त होती हैं। सीमित समय आदि के कारण मैं प्रत्येक पाठक को पत्र द्वारा समस्याओं का समाधान भेजने के लिए किसी भी तरह बाधित नहीं होना चाहता ।

विशेष निर्देश– समस्या भेजने वाले को अपना पूरा साफ–साफ पता और फोन नं. दोनों अनिवार्यतः भेजने होंगे। पता एवं फोन नं. के बिना प्राप्त समस्याओं के समाधान न तो पंचांग में प्रकाशित होंगे और न ही उनका उत्तर डाक से दिया जा सकेगा– यह ध्यान रखें।

चार से अधिक समस्याएं न भेजें।

ध्यान दें– मैं ज्योतिष का व्यवसाय नहीं करता हूँ। अतः अपनी ज्योतिषसम्बन्धी व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मुझे कृपया पत्र न लिखें और न ही इसके लिए मुझे कोई फीस वगैरह भेजिए। इस सम्बन्ध में मैं किसी से मिलता भी नहीं हूँ। कृपया कर्मकाण्डसम्बन्धी समस्याएं भी मुझे मत भेजिए। यह मेरा विषय नहीं है।

–प्रियव्रत शर्मा

समस्या :– सं. 2072 वि. में 'होलिकादाह के दिन एवं काल' के सम्बन्ध में आपने व्यास मत्तानुसारी प्रामाणिक धर्मशास्त्रीय निर्णयात्मक विस्तृत विवेचन गतवर्षीय पंचांग में प्रकाशित किया। तदनुसार होलिकादाह–काल 23 मार्च, 2016 ई. को सायाह्न के समय आपने निर्धारित किया। अधिकतर पंचांगकारों ने अपने पंचांगों में इसे मान्यता दी। कुछ पंचांगकारों ने इसे स्वीकार नहीं किया। इस बारे आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?

भंवरलाल,
जोधपुर।

समाधान–उन पंचांगकारों द्वारा वेदव्यास के मत को इसप्रकार निरस्कृत करना वेदव्यास के आर्षत्व की स्पष्ट अवहेलना है। क्योंकि इससे उनके मत का प्रवृत्तिक्षेत्र सर्वथा लुप्त हो जाता है, वह मत सर्वथा निरवकाश हो जाता है। जिसका अभिप्राय यही निकलता है कि– वे पंचांगकार श्री वेदव्यास जैसे पौराणिक महर्षि का आप्त नहीं समझते। बड़ा दुःखद आश्चर्य है।

(कृपया पाठक इस विषय पर लिखे सं. 2072 वि. के 'श्री मार्तण्ड पंचांग' में पृष्ठ 285–289 पर दिए गए मेरे लेख को अवश्य पढ़ें। वे जान जाएंगे– इन पंचांगकारों ने क्या अक्षम्य गलती की है।)

समस्या :–सं. 2072 वि. के 'श्रीमार्त्तण्ड पंचांग' में आपने 'नागपंचमी' 19 अगस्त, 2015 ई. को लिखी थी। कुछ पंचांगकारों ने इसे 20 अगस्त, 2015 ई. को लिखा था, ऐसा क्यों ?

श्रीयशोधर भट्ट, कैथमाजरी,
अम्बाला सिटी।

समाधान :– यह पर्व परविद्धा श्रावणशुक्ल पंचमी में करने का विधान है– **"श्रावणशुक्ल–पंचमी उदये त्रिमुहूर्त्ता परविद्धा ग्राह्या" – (धर्मसिन्धु)।** इसवर्ष यह पंचमी 20 अगस्त को पंजाब, हरियाणा, दिल्ली आदि में त्रिमुहूर्त्ता नहीं थी, जिससे यह वहां परविद्धा नहीं हुई। अतः इसे 19 अगस्त को पूर्णा (षष्टिघट्यात्मिका) पंचमी के दिन ही लिखना युक्त था।

ध्यान दें– यहां एक मुहूर्त दिनमान का 15वां भाग माना जाएगा। जो स्पष्टमान से होगा। दो घड़ियों का एक मुहूर्त्त **(मुहूर्तो घटिकाद्वयम्)** तो मध्यममान से होता है।

समस्या :–पंचांग में अयनांश केवल मास की पहिली तारीख का दिया रहता है, उसे इष्टकालिक कैसे बनाएं।

पं. राजेश शुक्ला,
चितौरी, इलाहाबाद।

समाधान :– अयनांश की वार्षिक गति केवल 51 विकला है। जिससे इसकी मासिक गति 4.3 विकला और साप्ताहिक गति केवल 1 विकला मात्र है। इस अनुसार आप इसका इष्टकालिक मान त्रैराशिक से जान सकते हैं।

समस्या :– त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला प्रदोष व्रत प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी के दिन किया जाता है। यदि त्रयोदशी दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी न मिले तब यह व्रत किस दिन किया जाए ?

पं. अम्बाप्रसाद मिश्र,
नाका चन्द्रबदनी लश्कर,
ग्वालियर (म.प्र.)।

समाधान :– प्रत्येक पक्ष की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह प्रदोष व्रत किया जाता है। यह नक्त व्रत है। अतः इसका तिथिनिर्णय नक्तव्रत के समान ही है। इस प्रकार दोनों दिन प्रदोष में त्रयोदशी की आंशिक या सम्पूर्ण व्याप्ति अथवा अव्याप्ति की स्थिति में यह व्रत दूसरे ही दिन होगा, जैसा कि 'कालमाधवकार' का यह वचन है–

" प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथिः व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।"

यहां **'धर्मसिन्धु'**कार का यह निर्णय कि– *"त्रयोदशी दोनों दिन असमान रूप से प्रदोष में व्याप्त हो तो प्रदोषव्रत उस दिन किया जाए, जिस दिन प्रदोष को तिथि अधिक व्याप्त करती है, बशर्ते कि– वहां देवपूजा, भोजनादि के लिए समय पर्याप्त हो, अन्यथा वहां भी व्रत दूसरे ही दिन किया जाए।"*– तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि देवपूजादि के लिए पर्याप्त काल कितना है, यह निश्चित नहीं किया जा सकता। अतः उपरोक्त **'कालमाधव'**कार का मत ही मान्य है। **किंच– यहां यह भी ध्यान देने योग्य है–दोनों दिन त्रयोदशी की प्रदोष में अव्याप्ति की स्थिति में दूसरे दिन त्रयोदशी प्रदोष के गौणकाल (सायंकाल) को तो व्याप्त करती ही है। उस दिन वह प्रातः व्रतसंकल्प के समय भी साक्षात् विद्यमान होती है।**

समस्या :– 'रक्षाबन्धन पर्व' के प्रसंग में एक प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक में किसी पण्डित ने अपने लेख में यह बतलाया कि बांधी जाने वाली राखी का रंग अमुक राशि वाले के लिए अमुक होना चाहिए। क्या इसे शास्त्रोक्त मानकर मान्यता दी जाए ?

पं. गिरिजाशंकर, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली।

समाधान :– ज्योतिष शास्त्र में इस प्रकार के सैंकड़ों काल्पनिक नियमों का प्रसार है, जो किसी प्रामाणिक शास्त्र में उपलब्ध नहीं हैं। उन्हें कुछ ऐसे दैवज्ञों–जो अपने आपको उस विषय के विशिष्ट विशेषज्ञ प्रख्यापित करने के प्रयास में रहते हैं; ऐसे तद्विषयक पारिभाषिक शब्दजाल से गुम्फित कर उपस्थापित करते हैं कि– सामान्य जन उसे शास्त्रसिद्ध जानकर श्रद्धापूर्वक अनुसरण करने लग जाते हैं। मुहूर्त्तशास्त्र एवं व्रत–पर्वशास्त्र में इन तथोक्त दैवज्ञों, धर्मशास्त्रियों, ज्योतिषियों की ऐसी अनेक कपोल–कल्पनाएं श्रद्धालु साधारण जनसमूह को बुरी तरह जकड़े हुए हैं, जिससे वे उनका उल्लंघन शास्त्रोल्लंघन समझते हैं। उदाहरणार्थ–दीपावली पर श्रीलक्ष्मीपूजन का काल धर्मग्रन्थों में मात्र प्रदोष या निशीथ लिखा है। लेकिन कुछ कर्मकाण्डपरायण दैवज्ञों ने उसके पूजन के काल का निर्णय स्थिर–लग्ननवांश आदि की गणनाजाल में ऐसा उलझा कर रख दिया है कि– उसे अनेक लक्ष्मीभक्त अक्षरशः पालनीय मानते हैं। इसी प्रकार श्रीमद्भागवत–रामायण तथा पुराणों के पारायण के प्रारम्भकाल का मुहूर्त्त भी आपको अनेक पंचांगों में विवाहमुहूर्त्तों की भान्ति भद्रा, क्रान्तिसाम्य, गुरु–शुक्रास्त, ग्रहयुति–वेध, अधिकमास, रिक्तातिथि आदि निरवशेष पंचांगदूषणों से रहित क्षणों में दर्साया मिलेगा। जबकि भगवत्–प्रीत्यर्थ किए जाने वाले धर्मकृत्य के प्रारम्भकाल की इतनी शुद्धिपरीक्षा विहित नहीं है। इन दैवज्ञों को चाहिए, वे इन धर्मकृत्यों में इतना 'ननु नच' न निकालें । परम्परागत प्रामाणिक धर्मशास्त्रों में निर्दिष्ट विधि–निषेधों के अतिरिक्त निकाले जा रहे ये नए से नए ' विधिनिषेध ' धार्मिककृत्यों, अनुष्ठानों को और उलझाते हैं और इससे सामान्य जन की अनास्था को उभरने के लिए सुअवसर मिलता है।

'अमुक राशि वाले को अमुक वर्ण' की राखी पहननी चाहिए' –इस प्रकार का निर्देश भी इन अखबारी दैवज्ञों की ही अपनी बुद्धि की उपज है। शास्त्र का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। शास्त्र का तो यह निर्देश है कि– इस रक्षासूत्र में अक्षत, सिद्धार्थ (श्वेत सर्षप) तथा सुवर्ण का खण्ड छोटी सी–पोटली में बन्धे होने चाहिएं–

"ततोऽपराह्णसमये रक्षापोटलिकांशुभाम्।
कारयेदक्षतैः शस्तैः सिद्धार्थैः हेमभूषितैः॥"

समस्या :–'बृहत्पाराशर होरा' के रश्मिफलाध्याय में लिखा है कि– 50 से अधिक रश्मियोग हो तो जातक चक्रवर्त्ती सम्राट् होता है। 'मानसागरी' का मानना है कि– 46 रश्मिसंख्या होने पर यह योग बन जाता है। ये रश्मियोग कब–कब घटित हो चुके हैं और अब भविष्य में कब–कब घटित होंगे ? कृपया बतलाएं।

पं. योगेश मिश्रा।

समाधान :– यह Computer का युग है, कौन–सा योग कब–कब घटित हुआ या अब वह कब–कब घटित होगा– यह जानना अब अत्यन्त सरल है। अभीष्ट योग के घटक तत्त्वों के आधार पर Programming करने के बाद यह आपकी समस्या हल हो जाएगी। इससे आप व्यतीत एवं आगामी अभीष्ट वर्षों में घटित हुए तथा घटित होने वाले इन योगों की अवधि तुरन्त जान सकेंगे। इससे आप इस योग की सत्य–असत्यता भी परख सकेंगे। इससे यह भी आप जान जाएंगे– इन फलित–ग्रन्थों में निर्दिष्ट ये योग इतने विश्वसनीय नहीं हैं। Computer Programming से प्राप्त परिणामों से आपको आश्चर्य होगा कि– 50 से अधिक रश्मियोग वाले जातक भी दयनीय जीवन व्यतीत करते हैं।

समस्या :– ग्रहण वाला दिन, इससे पूर्वापरवर्त्ती 3–3 दिन– इस प्रकार कुल 7 दिन ग्रहण द्वारा दूषित होते हैं, जिनमें मंगलकृत्य वर्जित हैं– यह 'अंगिरा' का मत है। पंचांगकार इसे मान्यता नहीं देते। किञ्च– " सर्वग्रासेतु सप्ताहमर्धग्रासे दिनत्रयम्। त्रि–द्वयेकांगुली–ग्रासे दिनमेकंतु वर्जयेत्।।" – यह मत मेरी दृष्टि से आज के युग में सही बैठता है। इसे भी पंचांगकार स्वीकार नहीं करते। फिर इस सम्बन्ध में सर्वथा स्वीकार्य मत कौन–सा है ?

पं. जगदीश चन्द्र शर्मा,
म्याबण, P. O. शालाघाट,
(सोलन) H.P.,

समाधान– ग्रहण द्वारा दूषित काल वस्तुतः कितना, कौन सा है– यह विषय भारी मतभेद से आक्रान्त है। विभिन्न प्रान्तों में इस बारे भिन्न–भिन्न मत हैं। इस बारे विभिन्नता एक ही प्रान्त में भी देखी जाती है। इसके लिए आप भारत के विभिन्न प्रान्तों एवं प्रान्तभागों से प्रकाशित पंचांग देखिए– वहां अक्षम्य मतभेद आपको इस सम्बन्ध में मिलेगा। इसके लिए **"बृहद्दैवज्ञ रञ्जन"** का **'ग्रहणप्रकरण'** देखिए। वहां इस बारे मतवैषम्य की भारी मात्रा आप जान पाएंगे। किस मत को प्रामाणिक मानें, किसे अप्रामाणिक– यह निर्णय कर सकना सम्भव नहीं है। बस, लोकपरम्परा के आधार पर ही पंचांगकार अपना मत बनाए हुए हैं। शास्त्रकार भी मतभेद के प्रसंग मे लोकमार्ग के अनुसरण का समर्थन करते हैं– **दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।**

पृष्ठ संख्या 144 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

लघु लग्नसारणी

साईज़-'मार्तण्ड पंचांग' के बराबर

(लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह 'लघुलग्नसारणी' उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फलादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह 'लघुसारणी' सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 ज़िला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। **ध्यान रहे–** भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहां दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अं.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह **'लघु लग्नसारणी'** अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

मूल्य Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Parkashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

समस्या :– 'रक्षाबन्धन पर्व' के प्रसंग में एक प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक में किसी पण्डित ने अपने लेख में यह बतलाया कि बांधी जाने वाली राखी का रंग अमुक राशि वाले के लिए अमुक होना चाहिए। क्या इसे शास्त्रोक्त मानकर मान्यता दी जाए ?

पं. गिरिजाशंकर, विश्वासनगर,
शाहदरा, दिल्ली।

समाधान :– ज्योतिष शास्त्र में इस प्रकार के सैंकड़ों काल्पनिक नियमों का प्रसार है, जो किसी प्रामाणिक शास्त्र में उपलब्ध नहीं हैं। उन्हें कुछ ऐसे दैवज्ञों–जो अपने आपको उस विषय के विशिष्ट विशेषज्ञ प्रख्यापित करने के प्रयास में रहते हैं; ऐसे तद्विषयक पारिभाषिक शब्दजाल से गुम्फित कर उपस्थापित करते हैं कि– सामान्य जन उसे शास्त्रसिद्ध जानकर श्रद्धापूर्वक अनुसरण करने लग जाते हैं। मुहूर्त्तशास्त्र एवं व्रत–पर्वशास्त्र में इन तथोक्त दैवज्ञों, धर्मशास्त्रियों, ज्योतिषियों की ऐसी अनेक कपोल–कल्पनाएं श्रद्धालु साधारण जनसमूह को बुरी तरह जकड़े हुए हैं, जिससे वे उनका उल्लंघन शास्त्रोल्लंघन समझते हैं। उदाहरणार्थ–दीपावली पर श्रीलक्ष्मीपूजन का काल धर्मग्रन्थों में मात्र प्रदोष या निशीथ लिखा है। लेकिन कुछ कर्मकाण्डपरायण दैवज्ञों ने उसके पूजन के काल का निर्णय स्थिर-लग्ननवांश आदि की गणनाजाल में ऐसा उलझा कर रख दिया है कि– उसे अनेक लक्ष्मीभक्त अक्षरशः पालनीय मानते हैं। इसी प्रकार श्रीमद्भागवत–रामायण तथा पुराणों के पारायण के प्रारम्भकाल का मुहूर्त्त भी आपको अनेक पंचांगों में विवाहमुहूर्त्तों की भान्ति भद्रा, क्रान्तिसाम्य, गुरु–शुक्रास्त, ग्रहयुति–वेध, अधिकमास, रिक्तातिथि आदि निरवशेष पंचांगदूषणों से रहित क्षणों में दर्शाया मिलेगा। जबकि भगवत्–प्रीत्यर्थ किए जाने वाले धर्मकृत्य के प्रारम्भकाल की इतनी शुद्धिपरीक्षा विहित नहीं है। इन दैवज्ञों को चाहिए, वे इन धर्मकृत्यों में इतना 'ननु नच' न निकालें । परम्परागत प्रामाणिक धर्मशास्त्रों में निर्दिष्ट विधि–निषेधों के अतिरिक्त निकाले जा रहे ये नए से नए ' विधिनिषेध ' धार्मिककृत्यों, अनुष्ठानों को और उलझाते हैं और इससे सामान्य जन की अनास्था को उभरने के लिए सुअवसर मिलता है।

'अमुक राशि वाले को अमुक वर्ण' की राखी पहननी चाहिए' –इस प्रकार का निर्देश भी इन अखबारी दैवज्ञों की ही अपनी बुद्धि की उपज है। शास्त्र का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। शास्त्र का तो यह निर्देश है कि– इस रक्षासूत्र में अक्षत, सिद्धार्थ (श्वेत सर्षप) तथा सुवर्ण का खण्ड छोटी सी–पोटली में बन्धे होने चाहिएं–

> ''ततोऽपराह्णसमये रक्षापोटलिकांशुभाम्।
> कारयेदक्षतैः शस्तैः सिद्धार्थैः हेमभूषितैः।।''

समस्या :–'बृहत्पाराशर होरा' के रश्मिफलाध्याय में लिखा है कि– 50 से अधिक रश्मियोग हो तो जातक चक्रवर्त्ती सम्राट् होता है। 'मानसागरी' का मानना है कि– 46 रश्मिसंख्या होने पर यह योग बन जाता है। ये रश्मियोग कब–कब घटित हो चुके हैं और अब भविष्य में कब–कब घटित होंगे ? कृपया बतलाएं।

पं. योगेश मिश्रा।

समाधान :– यह Computer का युग है, कौन–सा योग कब–कब घटित हुआ या अब वह कब–कब घटित होगा– यह जानना अब अत्यन्त सरल है। अभीष्ट योग के घटक तत्त्वों के आधार पर Programming करने के बाद यह आपकी समस्या हल हो जाएगी। इससे आप व्यतीत एवं आगामी अभीष्ट काल में घटित हुए तथा घटित होने वाले इन योगों की अवधि तुरन्त जान सकेंगे। इससे आप इस योग की सत्यता–असत्यता भी परख सकेंगे। इससे यह भी आप जान जाएंगे– इन फलित–ग्रन्थों में निर्दिष्ट ये योग कितने विश्वसनीय नहीं हैं। Computer Programming से प्राप्त परिणामों से आपको आश्चर्य होगा कि– इतने अधिक रश्मियोग वाले जातक भी दयनीय जीवन व्यतीत करते हैं।

समस्या :– ग्रहण वाला दिन, इससे पूर्वापरवर्त्ती 3–3 दिन– इस प्रकार कुल 7 दिन ग्रहण द्वारा दूषित होते हैं, जिनमें मंगलकृत्य वर्जित हैं– यह 'अंगिरा' का मत है। पंचांगकार इसे मान्यता नहीं देते। किञ्च– " सर्वग्रासेतु सप्ताहमर्धग्रासे दिनत्रयम्। त्रि–द्व्येकांगुली–ग्रासे दिनमेकंतु वर्जयेत्।।" – यह मत मेरी दृष्टि से आज के युग में सही बैठता है। इसे भी पंचांगकार स्वीकार नहीं करते। फिर इस सम्बन्ध में सर्वथा स्वीकार्य मत कौन–सा है ?

पं. जगदीश चन्द्र शर्मा,
म्याबण, P. O. शालाघाट,
(सोलन) H.P.,

समाधान– ग्रहण द्वारा दूषित काल वस्तुतः कितना, कौन सा है– यह विषय भारी मतभेद से आक्रान्त है। विभिन्न प्रान्तों में इस बारे भिन्न–भिन्न मत हैं। इस बारे विभिन्नता एक ही प्रान्त में भी देखी जाती है। इसके लिए आप भारत के विभिन्न प्रान्तों एवं प्रान्तभागों से प्रकाशित पंचांग देखिए– वहां अक्षम्य मतभेद आपको इस सम्बन्ध में मिलेगा। इसके लिए **"बृहद्दैवज्ञ रञ्जन"** का **'ग्रहणप्रकरण'** देखिए। वहां इस बारे मतवैषम्य की भारी मात्रा आप जान पाएंगे। किस मत को प्रामाणिक मानें, किसे अप्रामाणिक– यह निर्णय कर सकना सम्भव नहीं है। बस, लोकपरम्परा के आधार पर ही पंचांगकार अपना मत बनाए हुए हैं। शास्त्रकार भी मतभेद के प्रसंग मे लोकमार्ग के अनुसरण का समर्थन करते हैं– **दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।**

पृष्ठ संख्या 144 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

लघु लग्नसारणी

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह 'लघुलग्नसारणी' उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फलादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह 'लघुसारणी' सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 ज़िला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। ध्यान रहे– भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) मे भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहां दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अं.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह **'लघु लग्नसारणी'** अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

मूल्य Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Parkashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नही है।

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

समस्या :– 'रक्षाबन्धन पर्व' के प्रसंग में एक प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक में किसी पण्डित ने अपने लेख में यह बतलाया कि बांधी जाने वाली राखी का रंग अमुक राशि वाले के लिए अमुक होना चाहिए। क्या इसे शास्त्रोक्त मानकर मान्यता दी जाए ?

पं. गिरिजाशंकर, विश्वासनगर,
शाहदरा, दिल्ली।

समाधान :– ज्योतिष शास्त्र में इस प्रकार के सैंकड़ों काल्पनिक नियमों का प्रसार है, जो किसी प्रामाणिक शास्त्र में उपलब्ध नहीं हैं। उन्हें कुछ ऐसे दैवज्ञों–जो अपने आपको उस विषय के विशिष्ट विशेषज्ञ प्रख्यापित करने के प्रयास में रहते हैं; ऐसे तद्विषयक पारिभाषिक शब्दजाल से गुम्फित कर उपस्थापित करते हैं कि– सामान्य जन उसे शास्त्रसिद्ध जानकर श्रद्धापूर्वक अनुसरण करने लग जाते हैं। मुहूर्त्तशास्त्र एवं व्रत–पर्वशास्त्र में इन तथोक्त दैवज्ञों, धर्मशास्त्रियों, ज्योतिषियों की ऐसी अनेक कपोल–कल्पनाएं श्रद्धालु साधारण जनसमूह को बुरी तरह जकड़े हुए हैं, जिससे वे उनका उल्लंघन शास्त्रोल्लंघन समझते हैं। उदाहरणार्थ–दीपावली पर श्रीलक्ष्मीपूजन का काल धर्मग्रन्थों में मात्र प्रदोष या निशीथ लिखा है। लेकिन कुछ कर्मकाण्डपरायण दैवज्ञों ने उसके पूजन के काल का निर्णय स्थिर-लग्ननवांश आदि की गणनाजाल में ऐसा उलझा कर रख दिया है कि– उसे अनेक लक्ष्मीभक्त अक्षरशः पालनीय मानते हैं। इसी प्रकार श्रीमद्भागवत–रामायण तथा पुराणों के पारायण के प्रारम्भकाल का मुहूर्त्त भी आपको अनेक पंचांगों में विवाहमुहूर्त्तों की भान्ति भद्रा, क्रान्तिसाम्य, गुरु–शुक्रास्त, ग्रहयुति–वेध, अधिकमास, रिक्तातिथि आदि निरवशेष पंचांगदूषणों से रहित क्षणों में दर्शाया मिलेगा। जबकि भगवत्–प्रीत्यर्थ किए जाने वाले धर्मकृत्य के प्रारम्भकाल की इतनी शुद्धिपरीक्षा विहित नहीं है। इन दैवज्ञों को चाहिए, वे इन धर्मकृत्यों में इतना 'ननु नच' न निकालें। परम्परागत प्रामाणिक धर्मशास्त्रों में निर्दिष्ट विधि–निषेधों के अतिरिक्त निकाले जा रहे ये नए से नए 'विधिनिषेध' धार्मिककृत्यों, अनुष्ठानों को और उलझाते हैं और इससे सामान्य जन की अनास्था को उभरने के लिए सुअवसर मिलता है।

'अमुक राशि वाले को अमुक वर्ण की राखी पहननी चाहिए' –इस प्रकार का निर्देश भी इन अखबारी दैवज्ञों की ही अपनी बुद्धि की उपज है। शास्त्र का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। शास्त्र का तो यह निर्देश है कि– इस रक्षासूत्र में अक्षत, सिद्धार्थ (श्वेत सर्षप) तथा सुवर्ण का खण्ड छोटी सी–पोटली में बन्धे होने चाहिएं–

"ततोऽपराह्णसमये रक्षापोटलिकांशुभाम्।
कारयेदक्षतैः शस्तैः सिद्धार्थैः हेमभूषितैः॥"

समस्या :–'बृहत्पाराशर होरा' के रश्मिफलाध्याय में लिखा है कि– 50 से अधिक रश्मियोग हो तो जातक चक्रवर्त्ती सम्राट् होता है। 'मानसागरी' का मानना है कि– 46 रश्मिसंख्या होने पर यह योग बन जाता है। ये रश्मियोग कब–कब घटित हो चुके हैं और अब भविष्य में कब–कब घटित होंगे ? कृपया बतलाएं।

पं. योगेश मिश्रा।

समाधान :– यह Computer का युग है, कौन–सा योग कब–कब घटित हुआ या अब वह कब–कब घटित होगा– यह जानना अब अत्यन्त सरल है। अभीष्ट योग के घटक तत्त्वों के आधार पर Programming करने के बाद यह आपकी समस्या हल हो जाएगी। इससे आप व्यतीत एवं आगामी अभीष्ट वर्षों में घटित हुए तथा घटित होने वाले इन योगों की अवधि तुरन्त जान सकेंगे। इससे आप इस योग की सत्य–असत्यता भी परख सकेंगे। इससे यह भी आप जान जाएंगे– इन फलित–ग्रन्थों में निर्दिष्ट ये योग इतने विश्वसनीय नहीं हैं। Computer Programming से प्राप्त परिणामों से आपको आश्चर्य होगा कि– 50 से अधिक रश्मियोग वाले जातक भी दयनीय जीवन व्यतीत करते हैं।

समस्या :– ग्रहण वाला दिन, इससे पूर्वापरवर्त्ती 3–3 दिन– इस प्रकार कुल 7 दिन ग्रहण द्वारा दूषित होते हैं, जिनमें मंगलकृत्य वर्जित हैं– यह 'अंगिरा' का मत है। पंचांगकार इसे मान्यता नहीं देते। किञ्च– " सर्वग्रासेतु सप्ताहमर्धग्रासे दिनत्रयम्। त्रि–द्व्येकांगुली–ग्रासे दिनमेकंतु वर्जयेत्।।" – यह मत मेरी दृष्टि से आज के युग में सही बैठता है। इसे भी पंचांगकार स्वीकार नहीं करते। फिर इस सम्बन्ध में सर्वथा स्वीकार्य मत कौन–सा है ?

पं. जगदीश चन्द्र शर्मा,
म्याबण, P. O. शालाघाट,
(सोलन) H.P.,

समाधान– ग्रहण द्वारा दूषित काल वस्तुतः कितना, कौन सा है– यह विषय भारी मतभेद से आक्रान्त है। विभिन्न प्रान्तों में इस बारे भिन्न–भिन्न मत हैं। इस बारे विभिन्नता एक ही प्रान्त में भी देखी जाती है। इसके लिए आप भारत के विभिन्न प्रान्तों एवं प्रान्तभागों से प्रकाशित पंचांग देखिए– वहां अक्षम्य मतभेद आपको इस सम्बन्ध में मिलेगा। इसके लिए **"बृहद्दैवज्ञ रञ्जन"** का **'ग्रहणप्रकरण'** देखिए। वहां इस बारे मतवैषम्य की भारी मात्रा आप जान पाएंगे। किस मत को प्रामाणिक मानें, किसे अप्रामाणिक– यह निर्णय कर सकना सम्भव नहीं है। बस, लोकपरम्परा के आधार पर ही पंचांगकार अपना मत बनाए हुए हैं। शास्त्रकार भी मतभेद के प्रसंग मे लोकमार्ग के अनुसरण का समर्थन करते हैं– **दैवज्ञोऽतो लोकमार्गेण यायात्।**

पृष्ठ संख्या 144 (लगभग)
चिरस्थायी बहुमूल्य कागज़ पर मुद्रित

लघु लग्नसारणी

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

(लेखकः– प्रियव्रत शर्मा,

[साम्पातिककाल के 5–5 मिनट एवम् आधे–आधे अक्षांशों के अन्तर पर विश्वभर की लग्नसारणियां]

हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में लग्नसाधन से सम्बद्ध सभी अपेक्षित छोटे से छोटे बीसों विषयों पर भी विस्तृत प्रकाश डाला गया है। उसकी लग्नसारणियां एक–एक मिनटान्तर पर तथा आधा–आधा अक्षांश (50° अक्षांश के बाद तो 15–15 अक्षांश–कलाओं) के अन्तर पर विकलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट बतलाती हैं। यह 'लघुलग्नसारणी' उसका ही संक्षिप्त रूप है। इसमें आधे–आधे अक्षांश–अन्तर और 5–5 साम्पातिककाल मिनटान्तर पर कलान्त सूक्ष्म लग्नस्पष्ट दिया गया है, जो फलादेश के लिए पर्याप्त सूक्ष्म है। आजतक प्रकाशित राफेल आदि की सभी लग्नसारणियों से हमारी यह **'लघुसारणी'** सूक्ष्मता में काफी आगे है। प्रत्येक पृष्ठ पर प्रत्येक अक्षांश की लग्नसारणी के नीचे साम्पातिककाल के 1 से 5 मिनट तक की लग्नगति दी गई है, जिसके प्रयोग से 5–5 मिनटान्तर पर बनी इन लग्नसारणियों द्वारा एक–एक मिनटान्तर पर बनी विस्तृत लग्नसारणियों के समान ही सूक्ष्मलग्न बिना गणित के तुरन्त ज्ञात हो जाता है।

भारत के सभी (30)प्रान्तों के लगभग 1000 ज़िला, तहसील नगरों तथा अन्य महत्त्वपूर्ण नगरों–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्थानीय मध्यमकाल और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर) दिया गया है, तथा इन सभी (1000) नगर–उपनगरों में मेषादि12 लग्नों का दैनिक प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) ज्ञात करने की एक विस्तृत (33 पृष्ठों की) सारणी दी गई है, जिसकी मदद से केवल दो–तीन मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही अभीष्ट स्थल पर अभीष्ट तारीख को अभीष्ट लग्न का सूक्ष्म प्रारम्भ–समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल आधा मिनट (30 सेकण्ड) में ही आप जान सकते हैं। **ध्यान रहे–** भारत के लगभग सभी प्रसिद्ध नगरों में दैनिक लग्नारम्भ–समाप्तिकाल इतनी सरलता से बतलाने वाली ऐसी सारणी हमारी बड़ी लग्नसारणी (विश्वलग्नसारणी) में भी नहीं है। यह विलक्षण दैनिक लग्नसारणी लेखक के भारी परिश्रम का परिणाम है।

विश्व के लगभग सभी देशों की स्टैण्डर्ड टाईम मेरिडियन्स, अक्षांश, रेखांश तथा उन देशों के स्टैण्डर्ड टाईम का भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम एवम् G.M.T. से अन्तर बतलाने वाली सारणियां भी यहा दी गई हैं। अभीष्ट स्थल एवम् अभीष्ट समय पर दैनिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न (रा.अं.क.) ज्ञात करने के अनेकों भारतीय एवम् विदेशी नगरों के उदाहरण दिए गए हैं, ताकि पाठक को कोई अस्पष्टता न रहे।

संक्षेप– सूक्ष्मता एवम् सरलता से इष्टकालिक लग्नारम्भ–समाप्ति तथा स्पष्ट लग्न बतलाने वाली यह **'लघु लग्नसारणी'** अपने आप में सचमुच अद्भुत है।

मूल्य Rs. 350/– + डाकव्यय Rs. 50/–

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Parkashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

110 वर्ष का सर्वप्रथम खगोलसिद्ध सूक्ष्मतम पंचांग (दो भागों में)

(द्वितीय संस्करण उपलब्ध)

पृष्ठ संख्या 826

गणकमार्त्तण्ड

साईज 24X18 सें. मी.

कम्प्यूटर द्वारा तैयार और मुद्रित किया गया भारत का सबसे पहिला 110 वर्ष (सन् 1941 से 2050 ई. तक) का सूक्ष्मतम पंचांग, जिसकी तुलना विश्व के किसी भी प्रामाणिक Ephemeris से की जा सकती है।

लेखक– प्रियव्रत शर्मा, एम.ए., सिद्धान्तज्योतिषाचार्य, साहित्याचार्य (सम्पादक – श्रीमार्त्तण्डपंचांग),

दो भागों (जिल्दों) में विभाजित इस महाग्रन्थ में जन्मपत्र आदि निर्माण के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, ज्योतिषियों के लिए नितान्त उपयोगी अनेक विषयों में से कुछेक इस प्रकार हैं –

1–भारत के सभी (35) प्रान्तों के प्रसिद्ध 4,000 से भी अधिक नगर–उपनगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैण्डर्ड अन्तर (स्था. म. का. का भा. स्टैं. टा. से अन्तर)।

2–विश्व के प्रमुख 230 नगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैण्डर्ड अन्तर तथा G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से उनके स्टैं.टा. का अन्तर।

3–विश्व के लगभग 120 देशों की स्टैण्डर्ड मेरिडियन्स, उनके स्टैं. टा. का G.M.T. और भा. स्टैं. टा. से अन्तर ।

4–0° से 60° अक्षांश तक के दैनिक सूर्योदयास्तकाल तथा सेकण्ड तक सूक्ष्म सूर्योदयास्तसाधन की विधि।

5–विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री बनाने की सोदाहरण विस्तृत, सरल विधि तथा भारतीय पंचांग के तिथि–नक्षत्र–योग आदि को अन्य देशों के स्टैं. टा. में परिवर्तित करने की सोदाहरण विधियां और Summer Time का विवेचन।

6–इष्टकालिक सूर्यादि ग्रह स्पष्ट करने की अनेक सरल पद्धतियों का सोदाहरण निर्देश एवम् तदर्थ अनेक मौलिक सारणियां।

7–'अन्तर्न्यासपद्धति' द्वारा चन्द्र एवम् बुध जैसे द्रुतगति ग्रहों को सूक्ष्मतापूर्वक इष्टकालिक बनाने की नवीन प्रकिया को अत्यन्त सरल बना देने वाली सारणियां और उनका सोदाहरण स्पष्टीकरण।

8–प्राचीनपद्धति (इष्टकाल और स्पष्टसूर्य) से इष्टकालिक लग्न स्पष्ट करने के लिए सम्पूर्ण भारत (8° से 35° अक्षांश तक) की आधा–आधा अक्षांशान्तर पर लग्नसारणियां एवम् उनसे इष्टकालिक लग्नसाधन का सोदाहरण विस्तृत स्पष्टीकरण।

9–नवीन पद्धति (साम्पातिककाल पद्धति) से लग्नसाधन के लिए अखिल भारतीय लग्नसारणियां, तदनुसार इष्टकालिक लग्नसाधन की सोदाहरण विधि तथा सन् 1941 से 2050 ई. तक का सूक्ष्म साम्पातिक काल और अयनांश।

10– समस्त भारत के नगरों (अक्षांशों) के लिए मेषादि लग्नों का प्रारम्भकाल बतलाने वाली अद्भुत सारणियां, जिनकी मदद से किसी भी नगर में किसी भी दिन अभीष्ट लग्न का प्रारम्भकाल (भा. स्टैं. टा.) केवल एक मिनट में ही बिना गणित किए जाना जा सकता है।

11– *सन् 1941 से 2050 ई. तक (110 वर्षों) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा.स्टैं. टा.) 92 पृष्ठों पर दिया गया है, जिससे जातक की जन्मकुण्डली 2–3 मिनट में ही बनाई जा सकती है।*

12– *220 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के तिथि, नक्षत्र, योगों का दैनिक समाप्तिकाल (भा.स्टैं.टा.) है।*

13– *220 पृष्ठों पर सूक्ष्म दैनिक स्पष्ट सूर्य और चन्द्रमा दिए गए हैं।*

14– *110 पृष्ठों पर सन् 1941 से 2050 ई. तक के साप्ताहिक स्पष्ट मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि एवम् राहु दिए गए हैं। यहां एक विशेष कोष्ठक भी दिया गया है, जिसकी मदद से साप्ताहिक स्पष्टग्रह को तुरन्त ही इष्टकालिक बना सकते हैं। ग्रहों के वक्री–मार्गी होने की तारीखें भी दी गई हैं।*

15– 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों की सूची, गुरु–शुक्र के अस्तोदय की तारीखें, श्रीरामनवमी, जन्माष्टमी, दीपमाला आदि प्रमुख–प्रमुख सभी मासिक पर्व तथा हरिद्वार आदि के चारों महाकुम्भों की तारीखें दी गई हैं।

ध्यान रहे– 110 वर्ष के इस पंचांग की गणित और मुद्रण–दोनों Electronic Computer द्वारा ही किए गए है, जिससे इसमें गणित एवम् मुद्रणसम्बन्धी किसी भी प्रकार की अशुद्धि की तनिक भी गुंजायश नहीं है।

पुस्तक के दोनों भाग उत्कृष्ट Imported Paper पर मुद्रित एवम् आकर्षक टाईटलों में निबद्ध हैं।

मूल्य **Rs. 1150/–** + डाकव्यय **Rs. 60/–**

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य **M.O.**या **D.D.** द्वारा नीचे लिखे पते पर भेजिए।

पुस्तक मिलने का पता :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,

कोठी नं. 59, सैक्टर–6, **P.O.** पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" 59/6, पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

साईज़ 28 × 21 सें. मी. (एटलस साईज़)
पृष्ठसंख्या 722

THE PLANETARY EPHEMERIS FOR HUNDRED YEARS

(1951 To 2050 A.D.)

चिरस्थायी **Imported** पेपर
आकर्षक **Colourful** टाईटल

शताब्दी ग्रहभोगांश

(सन् 1951 से 2050 ई. तक के सूक्ष्म स्पष्ट दैनिक ग्रह एवं उनका राशि–नक्षत्रप्रवेश व वक्र–मार्गकाल)
(इंग्लिश एवं हिन्दी–दोनों भाषाओं में) (इस समय उपलब्ध है।)

बड़े साईज के 722 पृष्ठों के इस विशाल ग्रन्थ में सन् 1951 से 2050 ई. तक के प्रातः 5 घं. 30 मि. (भा.स्टैं.टा.) कालिक विकलान्त सूक्ष्म दृक्सिद्ध दैनिक स्पष्ट सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, मध्यम राहु , स्पष्ट राहु, यूरेनस, नेप्च्यून, प्लूटो दिए गए हैं। चन्द्र के अलावा सभी ग्रहों का भा. स्टैं. टा. में राशि, नक्षत्र–प्रवेशकाल तथा वक्र–मार्गकाल भी दिया गया है। चन्द्र का केवल राशि–प्रवेशकाल ही दिया है। प्रत्येक मास की पहिली तारीख का स्पष्ट अयनांश भी दिया गया है।

इसकी गणित एवं मुद्रण दोनों **Computer Program** द्वारा ही किए गए हैं, जिससे यह किसी भी प्रकार की अशुद्धि से सर्वथा मुक्त है।

ज्योतिर्विदों का मन्तव्य है कि– यह प्रकाशन ज्योतिषजगत् के लिए वरदान है। इसमें वह सभी कुछ है, जिसका चिरकाल से हमारे पञ्चांगों में अभाव खटकता था। भारत के अब तक के ज्योतिषजगत् के इतिहास में यह अपने ढंग का पहला प्रकाशन है, जिसकी तुलना इस विषय के किसी भी पाश्चात्य प्रकाशन से की जा सकती है।

पुस्तक **English** एवं हिन्दी– एक साथ दोनों भाषाओं में है, जिससे इन दोनों भाषाओं के वेत्ता इस एक ही ग्रन्थ से समानरूप में लाभान्वित होंगे।

मूल्य Rs.1000/- + डाकव्यय Rs. 60/-

विशेष छूट– ज्योतिषशिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाले छात्रों, ज्योतिष अनुसंधानरत संस्थाकेन्द्रों एवम् सभी पुस्तकालयों के लिए इसका डाकव्ययसहित मूल्य Rs. 800/- है।

साईज 24 × 18½ सें. मी.
पृष्ठसंख्या 280

शताब्दी विश्व कुण्डली दर्पण

मनोहारी बहुरंगा टाईटल
पुस्तक उपलब्ध है।

[एक ऐसी पुस्तक, जिसकी मदद से आप जातक के जन्मकालिक लग्न का निर्णय और उसकी जन्मकुण्डली का निर्माण कम्प्यूटर की सी द्रुतगति से कर सकते हैं।]

विश्व के किसी भी नगर/ग्राम में सन् 1951 से 2050 ई. के मध्य उत्पन्न हुए/होने वाले जातक की जन्मकुण्डली 3–4 मिनट में ही बनाइए।

इस अद्भुत पुस्तक में 100 वर्ष (1951 से 2050 A.D. तक) का चन्द्रसहित सभी ग्रहों का सूक्ष्म राशिप्रवेशकाल (भा. स्टैं. टा.) दिया गया है, जिसे पुस्तक में दिए गए एक कोष्ठक की मदद से विश्व के किसी भी देश के स्टैं. टा. में तुरन्त बदला जा सकता है। 0° से 66½° अक्षांश तक प्रत्येक अक्षांश–कला के अन्तर पर (अर्थात् 0°–1′, 0°–2′, 0°–3′, 0°–4′, 0°–5′ अक्षांश ...... इस प्रकार विश्व के प्रत्येक अक्षांश–कला के लिए) मेषादि 12 लग्नों का दैनिक उदयकाल सेकण्ड तक सूक्ष्मता से बतला देने वाली 136 पृष्ठों की अपूर्व मौलिक सारणियां Computer द्वारा तैयार करके दी गई हैं, जिनकी मदद से आप विश्व के किसी भी दक्षिण या उत्तर अक्षांशीय नगर/ग्राम में उत्पन्न जातक की जन्मकालिक लग्नराशि अत्यन्त सूक्ष्मतापूर्वक वस्तुतः सिर्फ एक मिनट में ही जान सकते हैं। ध्यान रहे – बच्चे का जन्म जिस ग्राम में हुआ हो, उसी के अक्षांशों (अक्षांश–कलाओं) के अनुसार ही उसके जन्मकालिक लग्न का निर्णय करना चाहिए। उस ग्राम के पार्श्ववर्ती किसी बड़े नगर के अक्षांशों को वहां प्रयोग में लाने पर लग्न के निर्णय में स्थूलता रहती है। इस पुस्तक में विश्व के हर ग्राम की अक्षांशकला की सूक्ष्मतम लग्नसारणी दी गई है, जिसके प्रयोग से यह सथूलता नहीं रहती।

यदि जातक का जन्म लग्नसन्धि में हुआ हो तो इस पुस्तक में दी गई दैनिक लग्नारम्भकाल बतलाने वाली जन्मस्थलीय अक्षांश की सारणी से आप तुरन्त (बिना गुणा–भाग किए, साधारण 2–3 मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही) अधिक से अधिक 1½ मिनट (90 सेकण्ड) में ही यह जान लेंगे कि– यह सन्धिगत लग्न (सन्देहास्पद लग्न) जातक के जन्मस्थल पर कब (कितने बजकर, कितने मिनट और कितने सेकण्ड पर) प्रारम्भ या समाप्त हो रहा है। भूगोल के किसी भी स्थल पर स्थित छोटे से छोटे ग्राम में भी (उस ग्राम के अपने कला तक शुद्ध वास्तविक अक्षांश के आधार पर) लग्नराशि का सेकण्ड तक शुद्ध प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल आश्चर्यजनक सरलता से चुटकियों में बतलाने वाली ऐसी अद्भुत पुस्तक आपको विश्व की किसी भी भाषा में नहीं मिलेगी–यह हम प्रतिज्ञापूर्वक कह सकते हैं।

1951 से 2050 A.D. तक दुनिया के किसी भी कोने में उत्पन्न हुए अथवा उत्पन्न होने वाले किसी भी जातक की जन्मकुण्डली इस विलक्षण पुस्तक द्वारा आप सिर्फ 3–4 मिनटों में ही बिना गुणा–भाग किए आसानी से बना सकते हैं।

स्पष्टता के लिए देश–विदेश के विभिन्न नगरों में उत्पन्न जातकों के जन्मकालिक लग्न एवम् जन्मकुण्डलियां बनाने के 28 उदाहरण दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध–प्रसिद्ध लगभग 1000 तथा विश्व के अन्य सभी देशों के लगभग सभी महानगरों के अक्षांश, रेखांश, स्टैं. अं. (स्था. म. का. और क्षेत्रीय स्टैं. टा. का अन्तर) तथा G.M.T. एवं भा.स्टैं.टा. से उनके क्षेत्रीय स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर दिया गया है।

मूल्य Rs. 500/- + डाकव्यय Rs. 50/-

इन दोनों पुस्तकों का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा 'अभिजित् प्रकाशन' के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. से भेजने की व्यवस्था नहीं है।

पुस्तकों का प्राप्तिस्थान :– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,
कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

पृष्ठ संख्या 271
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

साईज़-24x18½ C.M.
सुदृढ़, आकर्षक टाईटल

व्रतपर्व–विवेक

[व्रतपर्वों की तिथियों (तारीखों) के निर्णायक नियमों पर सरल–सुबोध भाषा–शैली में लिखा एक प्रामाणिक अपूर्व प्रकाशन]

[सन् 2001 से 2050 ई. तक के रामनवमी, दशहरा, दीपावली आदि सभी हिन्दु व्रतपर्वों की तारीखों की तैयार लम्बी सूची।]

इस पुस्तक में हिन्दुओं के चैत्र आदि 12 मासों के व्रतपर्वों के निर्णय का विशद विवेचन, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु आदि धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों के प्रमाण–वाक्यों के आधार पर ऐसी सरल भाषा–शैली में किया गया है कि– हिन्दी जानने वाला कोई भी इसे पढ़कर, रामनवमी आदि किसी भी व्रतपर्व की तारीख का निर्णय आसानी से कर सकता है। विभिन्न पंचांगों में किसी व्रतपर्व की तारीख के बारे में मतभेद होने पर इस पुस्तक में दिए गए नियमों के अनुसार यह निर्णय आप अधिकारपूर्वक कर सकते हैं कि– किस पंचांग की तारीख शुद्ध है।

व्रतपर्वों की तारीख का निर्णय पञ्चाङ्गकार किन नियमों के आधार पर करते हैं– यह सब शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा विस्तारपूर्वक हिन्दी में समझाया गया है। व्रतपर्वों के निर्णायक धर्मशास्त्रीय सैकड़ों संस्कृतवाक्य, श्लोक हिन्दी–अनुवादसहित उद्धृत किए गए हैं। प्रातः, संगव, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष, अरुणोदय, निशीथ, पूर्वविद्धा–परविद्धा तिथि आदि सभी पारिभाषिक कठिन शब्दों की (जिनका प्रयोग व्रतपर्व–निर्णय के प्रसंग में बार–बार आता है) सुस्पष्ट व्याख्या की गई है और इन्हें जानने की गणितप्रक्रिया से मुक्ति दिलाने वाले अनेक कोष्ठक आपको यहां मिलेंगे।

इस पुस्तक में दिए गए अनेक महत्वपूर्ण विषयों में से कुछेक की ओर हम पाठकों का ध्यान यहां आकृष्ट करते हैं:–

(i) हिन्दु व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों–सिद्धान्तों की सरल व्याख्या दी गई है।

(ii) हिन्दु व्रतपर्वों में यदा–कदा पैदा होने वाले मतभेद के कारण और उनके प्रतिकार बतलाए गए हैं।

(iii) चैत्रादि 12 चान्द्रमासों के 24 पक्षों में मनाए जाने वाले नवरात्रारम्भ, श्रीरामनवमी, अक्षयतृतीया, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, श्राद्धारम्भ–समाप्ति, दीपावली आदि सभी व्रतपर्वों के निर्णायक नियमों का विस्तृत विवेचन तथा धर्मशास्त्रों के सभी अपेक्षित व्रतपर्वनिर्धारक संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को उद्धृत कर, इन व्रतपर्वों की तिथि (तारीख) का निर्धारण–प्रकार सोदाहरण स्पष्ट किया गया है।

(iv) किस व्रतपर्व के मनाने का शास्त्रीय–विधान क्या है ? व्रतदिन की चर्या कैसी हो ? व्रतदिन में पूजा–पाठ कैसे किया जाए ? व्रतदेवता की पञ्चोपचार या षोडशोपचार पूजा कैसे, किस मन्त्र से, किन उपकरणों (सामग्री) से की जाए, व्रत में देवता का ध्यानमन्त्र क्या है ? व्रत में क्या खाएं, क्या न खाएं ? व्रती के लिए क्या विधि–निषेध है ? व्रतपारणा (व्रत के अन्त में किए जाने वाले भोजन) का समय क्या है ? पारणा में कौन–कौन से पदार्थ भक्ष्य और कौन से वर्ज्य हैं ? सूतक–पातक में व्रत कैसे किया जाए ? रजस्वला स्त्री व्रत के दिन क्या करे ? व्रतभंग होने पर क्या प्रायश्चित्त है ? सूर्य–चन्द्रग्रहण के समय स्नान–दान–जपादि का क्या विधान है ? – इत्यादि पचासों ज्ञातव्य विषयों पर सप्रमाण पूर्ण प्रकाश डाला गया है।

(v) आधुनिक युग के व्यस्त जीवन को दृष्टि में रखते हुए व्रतदेवता की पूजादि का सारगर्भ संक्षिप्त विधान दिया गया है, जिसे 10–15 मिनटों में ही कोई भी व्यक्ति स्वयं कर्मकाण्डी विद्वान् की सहायता के बिना ही कर सकता है। नवरात्र–घटस्थापन, रामनवमी–पूजा, श्राद्ध–तर्पण, दीपावली पर महालक्ष्मी पूजनादि सभी व्रतपर्वसम्बन्धी अनुष्ठानों को आप स्वयं कर सकें– ऐसी बालबोध शैली में समझाया गया है। लगभग सभी व्रतदेवताओं के संस्कृत–स्तोत्र भी दिए गए हैं।

(vi) करवाचौथ आदि व्रतपर्वों के उद्यापन की सरल प्रक्रिया बिना किसी विशेषज्ञ की मदद के कोई भी गृहिणी स्वयं कर सके–ऐसा सरल विधानसहित निर्देश है।

(vii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के नवरात्रारम्भ, प्रदोषव्रत, एकादशीव्रत, दशहरा, दीपावली आदि लगभग सभी हिन्दु–व्रतपर्वों की अंग्रेजी तारीखों की लम्बी सूची दी गई है।

(viii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सूर्य–चन्द्रग्रहणों, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक, उज्जैन के कुम्भपर्वों की तारीखें।

(ix) सन् 2001 से 2050 ई. तक के गुरु–शुक्रास्तकाल, गजच्छाया, अर्धोदय आदि पर्व।

(x) सन् 2001 से 2050 ई. तक के प्रमुख–प्रमुख जैन–पर्वों की तारीखें।

(xi) सन् 2001 से 2050 ई. तक के चैत्रादि मासो के चन्द्रदर्शन की तारीखें, तदनुसार मुहर्रम आदि मुस्लिम मासों की प्रारम्भ–तारीखें एवम् मुहर्रम, ईद–उल–फित्र आदि मुस्लिम त्योहारों की तारीखों का ज्ञानप्रकार।

(xii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के सिक्ख–गुरुपर्वों की तारीखें।

(xiii) सन् 2001 से 2050 ई. तक के ईस्टर सण्डे, गुडफ्राईडे की तारीखें और तदनुसार अन्य क्रिश्चियन पर्वों की तारीखों का तुरन्त निर्णय करने वाली अद्भुत तालिका।

(xiv) सभी प्रमुख व्रतों की माहात्म्य कथाएं।

(xv) सभी प्रमुख व्रतों के देवी–देवताओं की आरतियां एवं स्तोत्र।

इन उपरोक्त विषयों के अलावा व्रतपर्वों से सम्बद्ध अन्य बीसों विषय आपको इस पुस्तक में मिलेंगे। इसे खरीद लीजिए। बस, आगामी 43 वर्षों तक (सन् 2050 ई. तक) व्रतपर्वों की तारीखें जानने के लिए पंचांग, डायरी या कैलेण्डर खरीदने की आपको ज़रुरत नहीं होगी।

हमारी पुस्तकें केवल "अभिजित् प्रकाशन, कोठी नं. 59/6, पंचकूला से ही मिलेंगी। इन्हें बेचने का अधिकार अन्य किसी भी बुकसेलर को नहीं दिया गया है।

मूल्य Rs. 525/– + Rs. 50/– डाकव्यय

सम्पर्कसूत्र– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6,
P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय के नियम

हमारे यहां जन्मपत्र एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित से बनाए जाते हैं, जिनमें आयु, रोग, सन्तान, स्त्री, धन एवं भाग्योदय, तरक्की आदि का निर्णय किया जाता है। जन्मपत्र आदि कम्प्यूटर से तैयार की गई (स्वनिर्मित) सारणियों से आवश्यक सभी संस्कार देकर बड़ी सावधानी के साथ बनाए जाते हैं। जन्मपत्र आदि बनवाने के लिए जन्म तारीख, मास, सन्, जन्मटाईम, जन्मस्थान, पेशा एवं विशेष विचारणीय विषय लिखना न भूलें। जन्मपत्र एवं वर्षफल हिन्दी में सुन्दर और विस्तृत फलादेशसहित बनाए जाते हैं।

भारतीय साधारण जन्मपत्र की फीस कम से कम 800 रु. और बड़े जन्मपत्र की फीस 1200 रु. है। विदेशी जन्मपत्र की फीस कम से कम 1500 रु. है। भारतीय टेवा की फीस 250 रु. एवं दशामात्र टेवे की फीस 500 रु. है।

यदि आप वर्षफल बनवाना चाहते हैं, तो अपनी जन्मकुण्डली की नकल व पेशा लिखकर भेजें। जिनकी कुण्डली न हो, वे व्यक्ति पत्र लिखने का समय, तारीख एवं अपनी अन्दाजन उम्र, पेशा अवश्य लिखें। वर्षफल का आर्डर देते समय यह लिखना जरुरी है कि– इस वर्ष आपके वर्षफल में किन बातों पर विशेष रूप से विचार किया जाए। भारतीय वर्षफल की फीस 500 रु. व विदेशी वर्षफल की फीस 1,000 रु. है।

प्रत्यक्ष मिलकर शुद्ध विवाहमुहूर्त जानने एवम् कुण्डलीमिलान की फीस 1100 रु. है। फोन द्वारा मुहूर्त एवं मिलान जानने की फीस 1500 रु. है। सर्वसाधारण प्रश्न की फीस 500 रु. है।

नोटः– प्रत्येक काम की पूरी फीस आर्डर के साथ ही भेजें। वी.पी.पी. नहीं की जाएगी। बिना पेशगी के कोई भी कार्य नहीं किया जाएगा। डाकव्यय अलग होगा।

व्यापारियों के लिए चाँस

हम समय–समय पर रुई, बिनौला, सरसों, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि के चांस की लिखित Report देते हैं। वर्षों से अनेकों व्यापारी हमारे परामर्श से लाभ उठाते आ रहे हैं। एक जिन्स (चना, ग्वार आदि अनाज; तिल, तेल, सरसों, बिनौला आदि तिलहन; रुई, गुड़, खाण्ड एवं शेयर मार्कीट आदि तथा सोना, चान्दी, तांबा आदि धातुओं) की लिखित रिपोर्ट की अडवांस फीस 5000 + 50 रुपये डाकव्यय प्रतिमास एवम् वर्षभर की फीस 50000+500 रु. डाकव्यय के हिसाब से चार्ज किए जाते हैं। विस्तृत विज्ञापन 'व्यापार विमर्श' के अन्त में देखें।

पत्रव्यवहार हेतु अपने साफ–साफ डाक पते के साथ PHONE No. एवं Pin Code लिखना न भूलें।

पण्डित जी से मिलने हेतु

क्रमांक (Token) प्राप्ति का समय– 7 से 10 A.M.

पंडित जी से मिलने का समय – 9 A.M. से

दूर से आने वाले सज्जन टेलीफोन से पूज्य पण्डित जी से मिलने का दिन एवं समय निश्चित कर लें।

सिद्ध शनियन्त्र–विधिपूर्वक शुभमुहूर्त में बने इस यन्त्र को धारण करने से शनिजन्य अशुभफल, पीड़ा, चिन्ता आदि से मुक्ति मिलती है, अनुभव करें। भेंट– 2100 रु., डाकव्यय अलग।

श्री लक्ष्मी यन्त्र– अष्टगन्धादि से विधिपूर्वक बनाए गए इस यंत्र को विधिवत् पूजास्थान या गल्ले में रखने से लक्ष्मी की कृपा रहती है, कोष में भारी बरकत रहती है। तुजर्बा लें। भेंट– 3100 रु., डाकव्यय अलग।

अठराहा नाशक यन्त्र– जिन औरतों के प्यारे बच्चे देवदोष, गर्भदोष व अठराहा, मसानदोष के कारण मर जाते हैं, उनके लिए यह यन्त्र वरदानरूप सिद्ध हो चुका है। विधिपूर्वक निर्मित इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चे दीर्घायु होकर, सैंकड़ों माता–पिता को सुखी कर रहे हैं। तुजर्बा करके चमत्कार देखें। विधानपत्र साथ भेजा जाता है। भेंट– 2100 रु., डाकव्यय अलग।

सिद्ध गोपाल यन्त्र– इस सिद्ध यन्त्र को विधिपूर्वक श्रद्धासहित स्त्री धारण करे, तो चिरंजीव पुत्र की प्राप्ति होती है। आर्डर देते समय स्त्री का नाम अवश्य लिखें। विधानपत्र साथ भेजा जाएगा। भेंट– 2100 रु., डाकखर्च पृथक्।

गुरुवार को कार्यालय में अवकाश रहता है।

पत्रव्यवहार के लिए पता–

पं. संयमी शर्मा, M.A., ज्योतिषाचार्य, धर्मशास्त्राचार्य,

सुपुत्र– पं. इन्दुशेखर शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, M.A.,

श्री मार्त्तण्ड ज्योतिष कार्यालय, (नजदीक रेलवे स्टेशन),

मु. पो. कुराली (अजीत नगर–मोहाली), पंजाब, PIN– 140 103.

[PHONE– 0160-264 1277, 264 1577, 09988407010]

Website: www.shrimartand.com

Laser Typesetting by : Gyani Kartar Singh 'Gadh' at Kanwal Video & Photostat, Kurali, Mob.: 07837200420

पृष्ठ संख्या 222
चिरस्थायी बहुमूल्य काग़ज़ पर मुद्रित

मुहूर्त्त गजानन

साईज़-'मार्त्तण्ड पंचांग' के बराबर

लेखकः– प्रियव्रत शर्मा.

(गर्भाधान, पुंसवन, नामकरण, मुण्डन, उपनयन एवम् विवाहादि मुहूर्त्तों के साधन का सरल भाषा/शैली में विस्तृत प्रतिपादन)

वशिष्ठादि संहिताओं, मुहूर्त्तमार्त्तण्ड, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि ग्रन्थों में दिया गया मुहूर्त्त का साधनप्रकार संस्कृत के विद्वान् दैवज्ञों को भी उलझाने वाला है। इस पुस्तक में सभी आवश्यक विभिन्न मुहूर्त्तों के ग्राह्य एवम् वर्ज्य काल आदि का विशद विवेचन किया गया है, जिसे पढ़कर कोई भी व्यक्ति पंचांग में दिए गए तिथ्यादि के अनुसार अभीष्टकाल में अभीष्ट मुहूर्त्त का शुद्धकाल एवम् लग्न जान सकता है। किस मुहूर्त्त में कौन–सा मास–तिथि–वार–नक्षत्र–योग ग्राह्य हैं, कौन–सा काल लग्नमुहूर्त्त के लिए शास्त्रोक्त है, मृताशौच, जननाशौच जैसी प्रतिकूल स्थिति आ पड़ने पर मंगलकृत्य का विधान कैसे हो–इत्यादि मुहूर्त्तसम्बन्धी अनेक उलझे प्रश्नों के सुस्पष्ट समाधान मुहूर्त्तशास्त्रोक्त प्रमाणों द्वारा सुलझाए गए हैं।

शुभकृत्य के मुहूर्त्त को दूषित करने वाले अधिकमास, भद्रा, गुरु–शुक्रास्त, मासान्त–संक्रान्ति, ग्रहणशूल, क्रान्तिसाम्य आदि सभी दोषों का विस्तृत विवरण तथा उनके सम्भव परिहार भी सप्रमाण दिए गए हैं।

देवप्रतिष्ठा, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, वधूप्रवेश, राज्याभिषेक, विपणि, यात्रा, पुनर्विवाह, मन्त्रदीक्षा, पशु आदि का क्रय–विक्रय आदि अनेकों आवश्यक कृत्यों के शुभमुहूर्त्त–ज्ञान का विस्तृत विवेचन शास्त्रीय प्रमाणवाक्यों–सहित किया गया है। सभी उद्धृत संस्कृत–प्रमाणवाक्यों को हिन्दी में सुस्पष्ट किया गया है।

भारतीय पंचांगों में दिए गए विवाहादि लग्न केवल भारत के लिए ही होते हैं। इन्हें भारत से अन्य देशों में प्रयोग में लाना अपराध है। इस पुस्तक में अनेक उदाहरणों द्वारा समझाया गया है कि– किसी अभीष्ट विदेशी नगर में प्रयोग में लाने के लिए इन विवाहादि लग्नों में कौन–कौन से संस्कार कैसे करने चाहिएं। विगत एक वर्ष का पूरा तिथ्यादि पंचांग भी दिया गया है। जिसकी मदद से विभिन्न मुहूर्त्तों के शुद्धकाल एवं लग्न के निर्णय–प्रकार अनेक उदाहरणों द्वारा बालबोध शैली में समझाए गए हैं।

मुहूर्त्तशास्त्रों में उपलब्ध जाति, धर्म, लिंग एवं प्रादेशिक परम्पराओं पर आधारित मतभेदों का पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण किया गया है। अनेक शोधलेख, जो मुहूर्त्तसम्बन्धी अज्ञात रहस्य उद्घाटित करते हैं, इसमें आपको मिलेंगे।

यमघण्ट, क्रकच आदि कुयोग, सर्वार्थसिद्धि, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि सुयोग तथा गृहप्रवेश, गृहारम्भादि में अपेक्षित वृषवास्तु, भूशयन तथा कलशशुद्धि–ज्ञापक आदि बीसों मौलिक कोष्ठक दिए गए हैं।

भारत के प्रसिद्ध 200 नगरों में मेषादि लग्नों की प्रारम्भ–समाप्ति जानने के लिए दो कोष्ठक दिए गए हैं। जिनसे मौखिक जोड़–घटाव द्वारा ही किसी भी दिन इन नगरों में मुहूर्त्तकालिक लग्न का प्रारम्भ–समाप्तिकाल वस्तुतः 30 सेकण्ड में ही जाना जा सकता है।

पुस्तक का डाकव्ययसहित मूल्य नीचे लिखे पते पर M.O. द्वारा अथवा "अभिजित् प्रकाशन" के नाम बनवाए गए D.D.(D.D. drawn in favour of 'Abhijit Prakashan') द्वारा भी भेजा जा सकता है। पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजी जाती हैं। V.P.P. नहीं की जाती।

मूल्य Rs. 500/– + डाकव्यय Rs. 50/–

ध्यान दें– हमारी पुस्तकों को बेचने का अधिकार केवल "अभिजित् प्रकाशन" कोठी नं. 59, सेक्टर–6, P.O. पंचकूला को ही है, अन्य किसी भी विक्रेता को इन्हें बेचने का अधिकार नहीं है।

पता– श्रीमती वीना चतुर्वेदी, M.A., M.Phil., 'अभिजित् प्रकाशन,' कोठी नं. 59, सैक्टर–6, P.O. पंचकूला (हरियाणा) – 134 109, Phone: 0172-2565 303